भ० होवे गो० गौतम प० प्रथम स० समय में सि० कदाचित् आ० आहारिक सि० कदाचित् अ० अनाहा-रिक वि० दूसरे स० समय में सि० कदाचित् आ० आहारिक सि० कदाचित् अ० अनाहारिक त०

भंते ! कं समय मणाहारए भवइ ? गोयमा ! पढमे समये सिय आहारए सिय अणाहारए, बितिए समये सिय आहारए सिय अणाहारए, तइए समए सिय आहारए

जीव प्रथम समय में आहारक होता है और जब विग्रहगति से जाता है तब प्रथम समय में अनाहारक होता है. क्योंकि उत्पत्ति स्थान को प्राप्त नहीं होने से वहां आहार योग्य पुद्गलों का अभाव है. दूसरे समय में जीव क्वचित् आहारक व क्वचित् अनाहारक होता है. जब एक वक्र गति से उत्पन्न होता है तब प्रथम समय में अनाहारक व दूसरे समय में आहारक होता है और जब दो वक्रगति से उत्पन्न होता है तब प्रथम व दूसरे समय में अनाहारक व तीसरे समय में आहारक होता है. इस से दूसरे समय में जीव क्वचित् आहारक व क्वचित् अनाहारक होता है. तीसरे समय में भी जीव आहारक व अनाहारक होता है. जब दो वक्र से जीव उत्पन्न होता है तब तीसरे समय में आहारक होता है और तीन वक्र से जब

[1] त्रस नाडी से बाहिर अधोलोक की विदिशी में रहा हुवा कोई जीव चवकर ऊर्ध्व लोक में उत्पन्न होने वाला होवे तो वह जीव एक समय में विषम श्रेणि से समश्रेणि पर जावे दूसरे समय में त्रस नाडी में प्रवेश करे तीसरे समय में ऊर्ध्व लोक में गमन करे और चतुर्थ समय में त्रस नाडी बाहिर नीकल कर उत्पत्ति स्थान में उत्पन्न होकर आहार करता है.

पदार्थ

तीसरें स० समय में सिं० कदाचित् आ० आहारिक सिं० कदाचित् अ० अनाहारिक च० चौथे स० समय में नि० निश्चय आ० आहारिक ए० ऐसे दं० दंडक जी० जीव ए० एकेन्द्रिय च० चौथे स० समय में से० शेष त० तीसरे स० समय में ॥१॥ जी० जीव भं० भगवन् कं० किस स० समय में स० सर्व से अ० थोडा आ० आहारिक भ० होवे गो० गौतम प० प्रथम समय में उ० उत्पन्न होते च० चरिम समय में भ० भवस्थ ए० यहां जी० जीव स० सर्व से अ० अल्प आ० आहारिक भ० होवे दं० दंडक भा०

मूलार्थ

सिय अणाहारए, चउत्थे समए नियमा आहारए, एवं दंडओ जीवाय एगिंदियाय चउत्थे समए, सेसा तइए समए ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! कं समयं सव्वप्पाहारए भवइ ? गोयमा ! पढम समयोववण्णए वा चरिम समय भवत्थे वा, एत्थणं जीवे

भावार्थ

उत्पन्न होता है तब तीन समय तक जीव अनाहारक रहता है, और चतुर्थ समय में जीव निश्चय ही आहारक बनता है. ऐसेही सब दंडक वाले जीव तीन समय में आहाराक निश्चय ही होवे मात्र समुच्चय जीव व एकेन्द्रिय चतुर्थ समय में आहारक होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! किस समय में जीव अल्प आहार करने वाला होता है ? अहो गौतम! उत्पत्ति होने के प्रथम समय में शरीर छोटा होने से जीव अल्पाहारी होता है और शरीर छोडने के अन्तिम समय में प्रदेशों का संहारन होने से शरीर छोटा होता है इसलिये अल्पाहारी होता है. इन दोनों समय में जीव अल्प आहारी रहता है. ऐसे ही वैमानिक तक

करना जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २ ॥ कि० किस सं० संस्थान से भं० भगवन् लो० लोक प० प्ररूपा गो० गौतम सु० सुप्रतिष्ठक सं० संस्थित लो० लोक हे० अधो वि० विस्तीर्ण जा० यावत् उ० उपर उ० ऊर्ध्व मु० मृदंगाकार सं० संस्थित तं० उस सा० शाश्वत लो० लोक में हे० नीचे वि० विस्तीर्ण जा० यावत् उ० उपर उ० ऊर्ध्व मु० मृदंगाकार सं० संस्थान उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शनधरणहार अ० अर्हंत जि० जिन के० केवली जी० जीव जा० जाने पा० देखे त० पीछे सि० सीझे जा० यावत् अं०

सूत्र

सव्वप्पाहारए भवइ, दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं ॥ २ ॥ किं संठिएणं भंते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए लोए हेट्ठा विच्छिण्णे जाव उप्पिं उड्ढमुइंगागारसंठिए, तंसि चणं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिन्नंसि जाव उप्पिं उड्ढ मुइंगाकार संठियंसि उप्पण्ण नाण दंसण धरे अरहा जिणे केवली जीवेवि जाणइ पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ ३ ॥ समणोवासगस्सणं

भावार्थ

चौविस दंडक का जानना, ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! कैसा संस्थान (आकार) वाला लोक कहा ? अहो गौतम ! शरावले के आकारवाला लोक कहा है. नीचे विशाल, मध्य में संकुचित व उपर विशाल ऊर्ध्वमृदंग के आकारवाला लोक कहा है. ऐसा लोकमें केवलज्ञान केवल दर्शन के धारक अरिहंत जिन केवली जीवों को जानते हैं व देखते हैं और पीछे सीझते हैं, बुझते हैं यावत्

शब्दार्थ अंतकरे ॥ ३ ॥ स० श्रमणोपासक को भं० भगवन् सा० सामायिक क० कियेहुवे स० श्रमणोपाश्रय में अ० रहेहुवे त० उस को भं० भगवन् किं० क्या इ० ईर्यापथिक् क्रिया क० करे सं० सांपरायिक क्रिया क० करे गो० गौतम नो० नहीं इ० ईर्यापथिक क० करे सं० सांपरायिक क० करे से० वह के० कैसे जा० यावत् सं० सांपरायिक गो० गौतम स० श्रमणोपासक सा० सामायिक क० करे हुवे स० श्रमणोपाश्रय में अ० रहेहुवे आ० आत्मा अ० अधिकरणि की भ० होवे आ० आत्मा अ० अधिकरण व० प्रत्यायिक

सूत्र भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अत्थमाणस्स, तस्सणं भंते ! किं ईरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! नो ईरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ ॥ से केणट्ठेणं जाव संपराइया ? गोयमा ! समणोवास- यस्सणं सामाइयकडस्स समणोवस्सए अत्थमाणस्स आया अहिगरणी भवइ, आ-

भावार्थ अंत करते हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! साधु के संसर्ग में रहनेवाला सामायिक व्रत सहित श्रमणोपासक को क्या ईर्यापथिक क्रिया लगती है या सांपरायिक क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! उपाश्रय में बैठा हुआ सामायिक व्रत युक्त श्रावक को ईर्यापथिक क्रिया नहीं लगती है परंतु सांपरायिक क्रिया लगती है. अहो भगवन् ! किस कारन से सामायिक व्रत युक्त श्रमणोपासक को सांपरायिक क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! सामायिक व्रत युक्त श्रमणोपासक की आत्मा अधिकरणि की होती है. इस तरह

शब्दार्थ न० उस को नो० नहीं इ० ईर्यापथिक क्रिया क० करे सं० सांपरायिक क्रिया क० करे ॥ ४ ॥ स० श्रमणोपासक को भं० भगवन् पु० पहिले त० त्रस प्राण का स० समारंभ का प० प्रत्याख्यान भ० होवे पु० पृथ्वी का स० समारंभ में अ० अप्रत्याख्यान भ० होवे से० वह पु० पृथ्वी को ख० खोदता हुवा अ० किसी त० त्रसप्राणी को वि० हणे से० उन को भं० भगवन् तं० उस व० व्रत में अ० अतिक्रमे नो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य नो० नहीं त० उन का अ० अतिपात में आ० वर्तता है॥५॥पूर्ववत्॥६॥

सूत्र याहिगरणवत्तियं च णं तस्स नो ईरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ से तेणट्ठेणं॥४॥ समणोवासगस्सणं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ, पुढवि समारंभे अपच्चक्खाए भवइ सेय पुढविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, सेणं भंते! तं वयं अइचरइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टइ॥५॥

भावार्थ अधिकरणिकी क्रिया प्रत्ययिकी सांपरायिक क्रिया उस को लगती है परंतु ईर्यापथिक क्रिया नहीं लगती है. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! श्रावक को त्रसप्राण के समारंभ का प्रत्याख्यान पहिले से ही है परंतु पृथ्वीकायादिक के समारंभ का प्रत्याख्यान नहीं है. यदि पृथ्वीकाय खोदते हुवे श्रावक किसी त्रसप्राणी की हिंसा करे तो क्या वह व्रतभंग करता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् श्रावक के व्रतका भंग नहीं होता है. क्यों कि उस को त्रसवध का संकल्प नहीं था ॥५॥ श्रावक

शब्दार्थ स० श्रमणोपासक भं० भगवन् त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण फा० फ्राशुक ए० शुद्ध अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम प० देता किं० क्या ल० प्राप्त करे गो० गौतम स० श्रमणोपासक त० तथारूप स० श्रमण को जा० यावत् प० देता त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को स० समाधि

सूत्र

समणोवासयस्सणं भंते ! पुव्वामेव वणप्फइ समारंभे पच्चक्खाए सेय पुढविं खणमाणे अण्णयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, सेणं भंते ! वयं अतिचरति ? णो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टइ ॥ ६ ॥ समणोवासएणं भंते ! तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेणं असणपाण खाइम साइमेणं पडिलाभेमाणे किं लभइ ? गोयमा समणोवासएणं तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे तहारूवस्स

भावार्थ को वनस्पति काया का समारंभ करने का प्रत्याख्यान पहिले से ही है परंतु पृथ्वीकाय के समारंभ का प्रत्याख्यान नहीं हैं. अब पृथ्वीकायको खोदते हुवे वृक्षका मूल छेदाजावे तो क्या उनको व्रतभंग होवे? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. क्योंकी वनस्पति की हिंसामें उनका संकल्प नहीं है. ॥६॥ अहो भगवन्! श्रमणोपासक तथारूप श्रमणको फ्रासुक एषणिक आहार, पान, खादिम व स्वादिम देते हुवे क्या प्राप्त करे? अहो गौतम! श्रमणोपासक तथारूप श्रमण माहण को अशनादि देते हुवे को समाधि (सुख) उत्पन्न करे. और इस तरह

शब्दार्थ उ० उपजाते स० समाधि करने से ता० उसही स० समाधि को प० प्राप्तकरे ॥ ७ ॥ स० श्रमणोपासक भं० भगवन् त० तथारूप स० श्रमण को जा०यावत् प० देता किं० क्या च० त्यजे जी० जीवित च०त्यजे दु० दुःत्याग च० त्यजे दु० दुष्कर क० करे दु० दुर्लभ ल० प्राप्त करे बो० बोधि बु० जाने त० पीछे सि० सीझे जा० यावत् अं० अंत क० करे ॥ ८ ॥ अ० है भं० भगवन् अ० अकर्मवाले को ग० गति

सूत्र

समणस्सवा माहणस्सवा, समाहिं उप्पाएइ, समाहि कारएणं तामेव समाहिं पडिलभइ ॥ ७ ॥ समणोवासएणं भंते ! तहारूवं समणंवा जाव पडिलाभेमाणे किं चयइ ? गोयमा ! जीवियं चयइ, दुच्चयं चयइ, दुक्कर करेइ, दुल्लहं लहइ, बोहिं बुज्झइ, तओ पच्छा सिज्झइ जाव अंतं करेइ ॥८॥ अत्थिणं भंते ! अकम्मस्स गई पण्णायइ

भावार्थ उन को समाधि उत्पन्न करता हुवा स्वयंही वैसाही समाधि प्राप्त कर सकता है. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! तथारूप श्रमण माहण को अशनादि देते हुवे किस का त्याग करे ? अहो गौतम ! कर्म की दीर्घस्थितिरूप जीवित. व कर्म द्रव्य का संचय का त्याग करे. कठिनतासे करने योग्य ऐसा जो अपूर्व करण उस से ग्रन्थिभेद करे, अनिवृत्ति करण की प्राप्ति दुर्लभ है उसे प्राप्त करे, सम्यक्त्वरूप बोधि को जाने, फीर सीझे बुझे व सब दुःखों का अंत करे. ॥ ८ ॥ सब दुःख का अंत करने वाला मुक्तिमें जाता है

शब्दार्थ

प० जानते हैं हं० हां अ० है क० कैसे भं० भगवन् अ० अकर्मवाले की ग० गति प० जानी जाती है गो० गौतम नि० संगरहित नि० रंगरहित ग० गतिस्वभाव से बं० बंधन छेदन से नि० ईंधन रहित पु० पूर्वप्रयोग से अ० अकर्म की ग० गति प० जानी जाती है क० कैसे भं० भगवन् नि० संगरहित नि० रंगरहित ग० गतिस्वभाव से अ० अकर्म की ग० गति प० जानी जाती है गो० गौतम से० वह ज० जैसे के० कोई पुरुष सु० शुष्क तुं० तुंबा नि० छिद्ररहित नि० आघात रहित आ० अनुक्रम से प० संस्कार कराया

सूत्र

हंता अत्थि ॥ कहण्णं भंते ! अकम्मस्स गई पण्णायइ ? गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए, गइपरिणामेणं, बंधणच्छेयणयाए, निरिंधणयाए, पुव्वप्पयोगेण, अकम्मस्स, गई पण्णायइ ॥ कहण्णं भंते ! निस्संगयाए निरंगणयाए, गइपरिणामेण, अकम्मस्स गई पण्णायइ ? गोयमा ! से जहा नामए केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिद्दं निरुवहयं आणुपुव्वीए परिकम्ममाणे २ दब्भेहिय, कुसेहिय, वेढेइ, अट्ठहिं मट्टिया

भावार्थ

इसलिये मुक्ति का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! कर्म रहित जीव की क्या गति है ? हां गौतम ! कर्म रहित जीव की गति है. अहो भगवन् ! कर्म रहित जीव की कैसे गति होती है ? अहो गौतम ! संग नहीं होने से, मोह नहीं होने से, गति परिणाम से, बंध का छेद करने से, एरंड बीज समान कर्म इंधन रहित होने से व पूर्व प्रयोग ऐसे छ कारनों से कर्म रहित जीव की गति है. अहो भगवन् ! संग, मोह नहीं

शब्दार्थ हुवा द० दर्भ से कु० कुश से वे० वेष्टित करे अ० आठ म० मृत्तिका के ले० लेप से लिं० लिंपे उ० ऊष्णता द० देवे भू० वारंवार सु० सुका हुवा अ० अगाध अ० दुस्तर पो० पुरुष प्रमाण उ० पानी में प० डाले से० अथ नू० शंकादर्शी गो० गौतम से० वह तु० तुम्बा ते० उन अ० आठ म० मृत्तिका के लेपकी गु० गुरुता से भा० भार से स०पानी के त०तलको आ० अतिक्रमकर ध० पृथ्वी के त० तल में प०

सूत्र लेवेहिं लिंपइ, उण्हं दलयइ भूइं भूइं सुक्कं समाणं अत्थाहमतारम पोरुसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा ॥ से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टिया लेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयसंभारियत्ताए सलिल तल मइवइत्ता अहे धरंणितल पइट्ठाणे भवइ ? हंता भवइ, अहेणं से तुंबे

भावार्थ होने से व गति परिणाम से, कर्म रहित जीव की कैसे गति होती है ? अहो गौतम ! किसी प्रकार का आघात व छिद्र रहित सुका हुवा तुम्बे को अनुक्रम से संस्कार करता हुवा कोई पुरुष दर्भ से अथवा कुश से वेष्टित करे और आठ मृत्तिका के लेप से लींपे, एक २ मृत्तिका का लेप करके आताप (सूर्य के ताप) में सुकावे. इस तरह पूर्ण सूके पीछे पुरुष प्रमाण से अधिक, नहीं तीर सके ऐसा व अगाध जल में उस तुम्बे को डाले. अब अहो गौतम ! वह तुम्बा आठ मृत्तिका के लेपों के भार से व उस की गुरुता से क्या पानी की नीचे जाकर बैठता है ? हां भगवन् ! वह तुम्बा इस तरह लेप कराया हुवा

शब्दार्थ पीतष्ठान भ० होता है हं० हां भ० होता है ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम नि० संगरहित नि० मोह रहित ग० गति परिणाम से अ० कर्म रहित की ग० गति प० जानी जाती है. क० कैसे भं० भगवन् वं० वंध छेद से अ० कर्म रहित की ग० गति प० प्ररूपी से० अथ ज० जैसे क० कल की फली, मु० मुंगकी फली, मा० ऊडिद की फली सिं० सेवले की फली ए० एरंड के वोंदे उ० ऊष्णता में दि० रखे हुवे सु० शुष्क होते फु० फूटकर ए० एकान्त स्थान में ग० जाते हैं ए० ऐसे गो० गौतम क० कैसे भं०

सूत्र तोसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं परिक्खएणं धराणितल मइवइत्ता उप्पिं सलिलपइट्ठाणे भवइ ? हंता भवइ, एवंखलु गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गई पण्णायइ कहणं भंते ! वंधणच्छेयणयाए अकम्मस्स गई पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए कलसिंवलियाइवा, मुग्गासिंवलियाइवा, मासासिंवलियाइवा,

भावार्थ भारी होने से समुद्र में पानी की नीचे वैठता है. अब उस तुम्बे के आठ लेपों पानी के प्रयोग से गल जावे और उस से नीकल जावे तो क्या वह उपर आता है ? हां भगवन् ! तुम्बा पानी की उपर आजाता है. वैसे ही संग नहीं होने से मोह नहीं होने से व गति परिणाम से कर्म रहित जीव की गति कही है. अहो भगवन् ! वंध का छेद करने से कर्म रहित जीव की कैसे गति होती है ! अहो गौतम ! जैसे कल नामक धान्य की फली, मुंग की फली, ऊडिद की फली, सेवले की फली व एरंड के वोंदे

शब्दार्थ भगवन् नि० इन्धन रहित से अ० कर्म रहित की गति गो० गौतम ज० जैसे धू० धूम्र इ० इन्धन से वि० छूटा हुवा उ० ऊर्ध्व वी० स्वभाव से नि० निर्व्याघात से ग० गति भ० होती है ए० ऐसे गो०गौतम क० कैसे भं०भगवन् पु० पूर्व प्रयोग से अ० अकर्म की ग० गति गो०गौतम ज० जैसे कं० बाण की को० धनुष्य से वि० छूटा हुवा ल० लक्ष्याभिमुख नि० निर्व्याघात से ग० गति प० होती है ए० ऐसे पु० पूर्व

सूत्र सिंबलिसिंबलियाइवा, एरंडमिंजियाइवा, उण्हेदिण्णा सुक्कासमाणी फुडित्ताणं एगंतमंतंगच्छइ ॥ एवं खलु गोयमा ! कहणं भंते ! निरिंधणयाए अकम्मस्सगई? गोयमा ! से जहानामए धूमस्स इंधण विप्पमुक्कस्स उड्ढंवीससाए निव्वाघाएणं गई पवत्तइ ॥ एवं खलु गोयमा ! कहणं भंते ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गईपण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुहं निव्वाघाएणं गई पवत्तइ ॥

भावार्थ को धूप में रखकर सुकाने में आवे तब उन फलीयों का मुख सुकते ही फटकर उस में से दाने बाहिर नीकलते हैं ऐसे ही कर्मबंध का छेद होते ही जीव मुक्त होता है. अहो भगवन् ! कर्मरूप इन्धन नहीं होने से कर्म रहित जीव की कैसे गति होती है ? अहो गौतम ! जैसे इन्धन से नीकलता हुवा धूम्र स्वभाव से ही निर्व्याघातपने ऊंचे जाता है ऐसे ही अहो गौतम ! कर्मरूप इन्धन नहीं होने से अकर्म जीव की गति होती है. अहो भगवन् ! पूर्व प्रयोग से कर्म रहित जीव की कैसे गति होती है ? अहो गौतम !

र्थ प्रयोग से अ० कर्म रहित की ग० गति प० होती है ए० ऐसे गो० गौतम नि० संगरहित नि० रंग रहित जा० यावत् पु० पूर्व प्रयोग से अ० अकर्म की ग० गति प० होती है॥२॥दु० दुःखी भं० भगवन् दु० दुःखसे फु० स्पर्शे अ० अदुःखी दु० दुःखने फु० स्पर्शे गो० गौतम दु० दुःख से फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० अदुःखी दु० दुःख

सूत्र

एवं खलु गोयमा ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गई पवत्तइ ॥ एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए जाव पुव्वप्पओगेणं. अकम्मस्स गई पवत्तइ ॥१॥ दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी दुक्खेण फुडे नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ॥ दुक्खी भंते ! नेरइए दुखेणं फुडे अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं. एवं पंच दंडगा नेयव्वा ॥ दुक्खी

भावार्थ

जैसे धनुष्य पर से नीकला हुवा बाण की निर्व्याघातपने लक्ष्य की तरफ गति होती है वैसे ही पूर्व प्रयोग से कर्म रहित जीव की गति होती है. इसी कारन से अहो गौतम ! संग. मोह नहीं होने से यावत् पूर्व प्रयोग से कर्म रहित जीव की गति होती है ॥ २ ॥ जो कर्म रहित नहीं होता है वह दुःख से स्पर्शता है इसलिये दुःख का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! क्या दुःखी (कर्म सहित) जीव दुःख (कर्म से) स्पर्शता है अथवा अदुःखी (कर्म रहित) जीव दुःख से स्पर्शता है ? अहो गौतम ! दुःखी जीव ही दुःख से स्पर्शता है परंतु अदुःखी जीव दुःख से नहीं स्पर्शता है. अहो भगवन् ! दुःखी नारकी दुःख से

शब्दार्थ

भगवन् नि० इन्धन रहित से अ० कर्म रहित की गति गो० गौतम ज० जैसे धू० धूम्र इ० इन्धन से वि० छूटा हुवा उ० ऊर्ध्व वी० स्वभाव से नि० निर्व्याघात से ग० गति भ० होती है ए० ऐसे गो०गौतम क० कैसे भं०भगवन् पु० पूर्व प्रयोग से अ० अकर्म की ग० गति गो०गौतम ज० जैसे कं० बाण की को० धनुष्य से वि० छुटा हुवा ल० लक्ष्याभिमुख नि० निर्व्याघात से ग० गति प० होती है ए० ऐसे पु० पूर्व

सूत्र

सिंबलिसिंबलियाइवा, एरंडमिंजियाइवा, उण्हेदिण्णा सुक्कासमाणी फुडित्ताणं एगंतमंतंगच्छइ ॥ एवं खलु गोयमा ! कहणं भंते ! निरिंधणयाए अकम्मस्सगई? गोयमा ! से जहानामए धूमस्स इंधण विप्पमुक्कस्स उड्ढंवीससाए निव्वाघाएणं गई पवत्तइ ॥ एवं खलु गोयमा ! कहणं भंते ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गईपण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुहं निव्वाघाएणं गई पवत्तइ ॥

भावार्थ

को धूप में रखकर सुकाने में आवे तब उन फलीयों का मुख सुकते ही फटकर उस में से दाने बाहिर नीकलते हैं ऐसे ही कर्मबंध का छेद होते ही जीव मुक्त होता है. अहो भगवन् ! कर्मरूप इन्धन नहीं होने से कर्म रहित जीव की कैसे गति होती है ? अहो गौतम ! जैसे इन्धन से नीकलता हुवा धूम्र स्वभाव से ही निर्व्याघातपने ऊंचे जाता है ऐसे ही अहो गौतम ! कर्मरूप इन्धन नहीं होने से अकर्म जीव की गति होती है. अहो भगवन् ! पूर्व प्रयोग से कर्म रहित जीव की कैसे गति होती है ? अहो गौतम !

शब्दार्थ — प्रयोग से अ० कर्म रहित की ग० गति प० होती है ए० ऐसे गो० गौतम नि० संगरहित नि० रंग रहित जा० यावत् पु० पूर्व प्रयोग से अ० अकर्म की ग० गति प० होती है॥१॥ दु० दुःखी भं० भगवन् दु० दुःखसे फु० स्पर्शे अ० अदुःखी दु० दुःखसे फु० स्पर्शे गो० गौतम दु० दुःख से फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० अदुःखी दु० दुःख

सूत्र — एवं खलु गोयमा । पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गई पवत्तइ ॥ एवं खलु गोयमा ! निसंगयाए निरंगणयाए जाव पुव्वप्पओगेणं, अकम्मस्स गई पवत्तइ ॥१॥ दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी दुक्खेण फुडे नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ॥ दुक्खी भंते ! नेरइए दुखेणं फुडे अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं, एवं पंच दंडगा नेयव्वा ॥ दुक्खी

भावार्थ — जैसे धनुष्य पर से नीकला हुवा वाण की निर्व्याघातपने लक्ष्य की तरफ गति होती है वैसे ही पूर्व प्रयोग से कर्म रहित जीव की गति होती है. इसी कारन से अहो गौतम ! संग, मोह नहीं होने से यावत् पूर्व प्रयोग से कर्म रहित जीव की गति होती है ॥ १ ॥ जो कर्म रहित नहीं होता है वह दुःख से स्पर्शता है इसलिये दुःख का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! क्या दुःखी (कर्म सहित) जीव दुःख (कर्म से) स्पर्शता है अथवा अदुःखी [कर्म रहित] जीव दुःख से स्पर्शता है ? अहो गौतम ! दुःखी जीव ही दुःख से स्पर्शता है परंतु अदुःखी जीव दुःख से नहीं स्पर्शता है. अहो भगवन् ! दुःखी नारकी दुःख से

शब्दार्थ भगवन् नि० इन्धन रहित से अ० कर्म रहित की गति गो० गौतम ज० जैसे धू० धूम्र इं० इन्धन से वि० छूटा हुवा उ० ऊर्ध्व वी० स्वभाव से नि० निर्व्याघात से ग० गति भ० होती है ए० ऐसे गो० गौतम क० कैसे भं० भगवन् पु० पूर्व प्रयोग से अ० अकर्म की ग० गति गो० गौतम ज० जैसे कं० बाण को को० धनुष्य से वि० छुटा हुवा ल० लक्ष्याभिमुख नि० निर्व्याघात से ग० गति प० होती है ए० ऐसे पु० पूर्व

सूत्र सिंबलिसिंबालियाइवा, एरंडमिंजियाइवा, उण्हेदिण्णा सुक्कासमाणी फुडित्ताणं एगंतमं- तंगच्छइ ॥ एवं खलु गोयमा ! कहणं भंते ! निरिंधणयाए अकम्मस्सगई? गोयमा! से जहानामए धूमस्स इंधण विप्पमुक्कस्स उड्ढंवीससाए निव्वाघाएणं गई पवत्तइ ॥ एवं खलु गोयमा ! कहणं भंते ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गईपण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुहं निव्वाघाएणं गई पवत्तइ ॥

भावार्थ को धूप में रखकर सुकाने में आवे तब उन फल्लीयों का मुख सूकने से फटकर उन में से दाने बाहिर नीकलते हैं ऐसे ही कर्मबंध का छेद होते ही जीव मुक्त होता है. अहो भगवन् ! कर्मरूप इन्धन नहीं होने से कर्म रहित जीव की कैसे गति होती है ? अहो गौतम ! जैसे इन्धन से नीकलता हुवा धूम्र स्वभाव से ही निर्व्याघातपने ऊंचे जाता है ऐसे ही अहो गौतम ! कर्मरूप इन्धन नहीं होने से अकर्म जीव की गति होती है. अहो भगवन् ! पूर्व प्रयोग से कर्म रहित जीव की कैसे गति होती है ? अहो गौतम !

प्रयोग से अ० कर्म रहित की ग० गति प० होती है ए० ऐसे गो० गौतम नि० संगरहित नि० रंग रहित जा० यावत् पु० पूर्व प्रयोग से अ० अकर्म की ग० गति प० होती है॥१॥ दु० दुःखी भं० भगवन् दु० दुःखसे फु० स्पर्शे अ० अदुःखी दु० दुःखसे फु० स्पर्शे गो० गौतम दु० दुःख से फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० अदुःखी दु० दुःख

एवं खलु गोयमा । पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गई पवत्तइ ॥ एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए जाव पुव्वप्पओगेणं, अकम्मस्स गई पवत्तइ ॥१॥ दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी दुक्खेण फुडे नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ॥ दुक्खी भंते ! नेरइए दुखेणं फुडे अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ? गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे एवं दंडओ जाव वेमाणियाणं, एवं पंच दंडगा नेयव्वा ॥ दुक्खी

जैसे धनुष्य पर से नीकला हुवा वाण की निर्व्याघातपने लक्ष्य की तरफ गति होती है वैसे ही पूर्व प्रयोग से कर्म रहित जीव की गति होती है. इसी कारन से अहो गौतम ! संग, मोह नहीं होने से यावत् पूर्व प्रयोग से कर्म रहित जीव की गति होती है ॥ ९ ॥ जो कर्म रहित नहीं होता है वह दुःख से स्पर्शता है इसलिये दुःख का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! क्या दुःखी (कर्म सहित) जीव दुःख (कर्म से) स्पर्शता है अथवा अदुःखी [कर्म रहित] जीव दुःख से स्पर्शता है ? अहो गौतम ! दुःखी जीव ही दुःख से स्पर्शता है परंतु अदुःखी जीव दुःख से नहीं स्पर्शता है. अहो भगवन् ! दुःखी नारकी दुःख से

से फु० स्पर्शे ॥ १० ॥ अ० अनगार भं० भगवन् अ० उपयोग रहित ग० [illegible]
ढता अ० उपयोग रहित व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० [illegible]
भं० भगवन् किं क्या ई० ईर्यापथिक क्रिया क० करे सं० सांपरायिक [illegible]

दुक्खेणं फुडे, दुक्खी दुक्खं परियाइयइ, दुक्खी दुक्खं उदीरेइ, दुक्खी दुक्खं वेदेइ,
दुक्खी दुक्खं निज्जरेइ ॥ १० ॥ अणगारस्सणं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा
चिट्ठमाणस्सवा णिसीयमाणस्सवा, अणाउत्तं वत्थपडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गिण्ह-
माणस्सवा, निक्खिवमाणस्सवा, तस्सणं भंते! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइ-

थवा अदुःखी नारकी दुःख से स्पर्शता है ? अहो गौतम ! [illegible]
नारकी दुःख से नहीं स्पर्शता है. जैसे नारकी का कहा [illegible]
जैसे कर्म सहित जीव कर्म से स्पर्शता है ऐसा जो कहा [illegible]
कर्म को उदीरता है, कर्म को वेदता है, और कर्म को निर्जरता है [illegible]
उतारना ॥ १० ॥ दुःख क्रिया से होता है इसलिये क्रिया का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् !
पयोग से चलनेवाले, खडे रहनेवाले, शयन करनेवाले [illegible]
अनगार को क्या सांपरायिक क्रिया लगती है या ईर्यापथिक क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! [illegible]

शब्दार्थ

नो० नहीं ई० ईर्यापथिक क० करे सं० सांपरायिक क० करे से० वह के० कैसे गो० गौतम ज० जीन के को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ वो० क्षीण हुवे भ० हैं त० उन को ई० ईर्यापथिक क० करे ज० जिस को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ अ० क्षीण नहीं होवे भ० हैं त० उस को सं० सांपरायिक क० करे अ० यथा सूत्र रि० चलतेको ई० ईर्यापथिक ७० विपरीत रि० चलते को सं० सांपरा-

सूत्र

याकिरिया कज्जइ ? गोयमा ! नो ईरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ ॥ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जस्सणं कोहमाणमायालोभा वोच्छिण्णा भवंति तस्सणं ईरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्सणं कोहमाणमायालोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्सणं संपराइया किरिया कज्जइ, अहासुत्तं रियमाणस्स ईरियावहिया किरिया कज्जइ,

भावार्थ

को सांपरायिक क्रिया लगती है परंतु ईर्यापथिक क्रिया नहीं लगती है. अहो भगवन् ! किस कारन से उन को ईर्यापथिक क्रिया नहीं लगती है व सांपरायिक क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! जिन को क्रोध मान, माया, व लोभ का क्षय होवे उन को ईर्यापथिक क्रिया लगती है क्यों कि अकषायी होने से उनको उक्त क्रिया कर्मबंध के कारणभूत नहीं होती है. और जिन को क्रोध, मान माया व लोभ का उदय होता है उन को सांपरायिक क्रिया लगती है. सूत्रानुसार चलने से ईर्यापथिक क्रिया लगती है और सूत्र से

शब्दार्थ से फु० स्पर्शे ॥ १० ॥ अ० अनगार भं० भगवन् अ० उपयोग रहित ग० जाता चि० खडा रहना नि० बैठता अ० उपयोग रहित व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण गे० लेना नि० मूकना त० उस को भं० भगवन् किं क्या ई० ईर्यापथिक क्रिया क० करे सं० सांपरायिक क्रिया क० करे गो० गौतम

सूत्र दुक्खेणं फुडे, दुक्खी दुक्खं परियाइयइ, दुक्खी दुक्खं उदीरेइ, दुक्खी दुक्खं वेएइ, दुक्खी दुक्खं निज्जरेइ ॥ १० ॥ अणगारस्सणं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्सवा चिट्ठमाणस्सवा णिसीयमाणस्सवा, अणाउत्तं वत्थपरिग्गहं कंबलं पायपुंच्छणं गेण्हमाणस्सवा, निक्खिवमाणस्सवा, तस्सणं भंते! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइ-

भावार्थ स्पर्शता है अथवा अदुःखी नारकी दुःख से स्पर्शता है ? अहो गौतम ! दुःखी नारकी दुःख से स्पर्शता है परंतु अदुःखी नारकी दुःख से नहीं स्पर्शता है. जैसे नारकी का कहा वैसे ही वैमानिक तक सब दंडक का जानना. जैसे कर्म सहित जीव कर्म से स्पर्शता है ऐसा जो कहा वैसे ही कर्म सहित कर्म का निधत्तादि बंध करता है, कर्म को उदीरता है, कर्म को वेदता है, और कर्म को निर्जरता है ऐसे पांच दंडक चौवीस ही दंडक पर उतारना ॥ १० ॥ दुःख क्रिया से होता है इसलिये क्रिया का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! विना उपयोग से चलनेवाले, खडे रहनेवाले, शयन करनेवाले व वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरणादि ग्रहण करने वाले अनगार को क्या सांपरायिक क्रिया लगती है या ईर्यापथिक क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! उस

शब्दार्थ ए० उस को स० इंगाल सहित पा० पान भो० भोजन जे० जो नि० साधु नि० साध्वी फा० फ्रासुक ए० शुद्ध अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम प० लेकर म० वडा अ० प्रीति रहित को० क्रोध कि० किलामना क० करता आ० आहार आ० आहारकरे ए० यह गो० गौतम स० धूम्रसहित पा० पान भो० भोजन जे० जो नि० साधु नि० साध्वी जा० यावत् प० लेकर गु० गुण उ० उत्पादकहेतु अ० अन्य द्रव्य स० साथ सं० मीलाकर आ० आहार करे ए० यह गो० गौतम सं० संयोजना दो० दोष दु० दुष्ट पा० पान भो० भोजन ॥ १२ ॥ वी० इंगाल रहित वी० धूम्ररहित सं० संयोजना

सूत्र एसणिज्जं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिग्गहेत्ता महया अप्पत्तिय कोह किलामं करेमाणे आहार माहारेइ, एसणं गोयमा ! सधूमे पाणभोयणे । जेणं निग्गंथेवा जाव पडिग्गाहेत्ता गुणुप्पायणहेउं अण्णदव्वेणं सार्द्धि संजोएत्ता आहार माहारेइ, एसणं गोयमा संजोयणा दोसदुट्टे पाणभोयणे ॥ एएणं गोयमा ! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणा दोसदुट्ठस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥१२॥ अह भंते ! वीइंगालस्स वीयधूम-

भावार्थ एषणिक आहारादिक ग्रहण करके अप्रीति, क्रोध व किलामना करते आहार करे तो उस को धूम्रदोष लगता है, जो साधु साध्वी फ्रासुक व एषणिक अशनादि ग्रहण करके स्वादिष्टपना का गुण बनाने के लिये उस में अन्य द्रव्य मीला कर आहार करे उस को संजोयना दोष लगता है. अहो गौतम ! यह इंगाल, धूम्र, व संजोयना दोष का अधिकार कहा ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! इंगाल, धूम्र व संजोयना दोष रहित आहार

सूत्र

यिक क॰ करे से॰ वह उ॰ विपरीत रि॰ चलता है से॰ वह ते॰ इसलिये ॥ ११ ॥ अ॰ अथ भं॰ भगवन् स॰ इंगाल सहित स॰ धूम्रसहित सं॰ संजोयना दो॰ दोष दु॰ दुष्ट पा॰ पानी भो॰ भोजन का के॰ क्या अ॰ अर्थ प॰ प्ररूपा गो॰ गौतम जे॰ जो नि॰ साधु नि॰ साध्वी फा॰ फासुक ए॰ शुद्ध अ॰ अशन पा॰ पान प॰ लेकर मु॰ मूर्च्छित गि॰ गृद्ध ग॰ स्नेहयुक्त अ॰ एकाग्रता से आहार करे

उस्सुत्तं रियमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ, सेणं उस्सुत्तमेव रियइ सेतेणट्ठेणं ॥ ११ ॥ अह भंते ! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? गोयमा ! जेणं निग्गंथेवा निग्गंथीवा फासुएसणिज्जं असणपाणखाइमसाइमं पडिग्गाहेत्ता संमुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णए आहारं आहारेइ- एसणं गोयमा ! सइंगाले पाणभोयणे । जेणं निग्गंथेवा निग्गंथीवा फासु-

भावार्थ

विरुद्ध चलने से सांपरायिक क्रिया लगती है. और बिना उपयोग से चलनेवाला यावत् बिना उपयोग से वस्त्रपात्रादि रखने वाला उत्सूत्रानुसार चलता है इसलिये उनको सांपरायिक क्रिया लगती है परंतु ईर्यापथिक क्रिया नहीं लगती है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! इंगालदोष, धूम्रदोष व संजोयनादोष वाला आहार किस को कहते हैं ? अहो गौतम ! जो साधु साध्वी फासुक एषणिक अशनादि ग्रहण करके उन में गृद्ध, मूर्च्छित, व लोलीभूत बनता हुआ आहार करे उस को इंगालदोष लगता है, जो साधु साध्वी फासुक

अतिक्रान्त पा० पान भो० भोजन का के० कैसा अ० अर्थ गो० गौतम जे० जो नि० साधु फा० फासुक ए० शुद्ध अ० अशन अ० उदित होते पहिले सू० सूर्य प० लेकर उ० उदित हुवे पीछे आ० आहार करे खे० क्षेत्र अतिक्रान्त जे० जो नि० साधु जा० यावत् सा० स्वादिम प० प्रथम पो० पौरुषी

तस्स, पमाणाइक्कंतस्स, पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? गोयमा ! जेणं निग्गंथेवा फासुएसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं अणुग्गए सूरिए पडिग्गहित्ता उग्गए सूरिए आहार माहारेइ, एसणं गोयमा ! खेत्ताइक्कंते पाण भोयणे ॥ जेणं निग्गंथेवा जाव साइमं पढमाए पोरिसीए पडिग्गहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवायणावित्ता आहार माहारेइ एसणं गोयमा ! कालाइक्कंते पाण भोयणे ॥ जेणं निग्गंथे जाव साइमं पडिग्गहित्ता परंअद्धजोयणमेराए वीइक्कमावइत्ता आहार माहारेइ, एसणं गोयमा ! मग्गाइक्कंते पाण भोयणे ॥ जेणं निग्गंथे वा फासुएसणिज्जेणं जाव साइमं पडिग्गाहित्ता परं बत्तीसाए कु-

हैं ? अहो गौतम ! जो साधु साध्वी सूर्योदय पहिले फासुक एषणिक अशनादिक ग्रहण करके सूर्योदय हुवे पीछे आहार करते हैं, उसे क्षेत्रातिक्रान्त पान भोजन कहते हैं. जो साधु साध्वी प्रथम पौरुषी में फासुक व एषणिक अशनादि ग्रहण करके छेल्ली पौरुषी में आहार करे तो उसे कालातिक्रान्त पान भोजन कहते हैं. जो साधु साध्वी फासुक एषणिक आहारादि ग्रहण करके उत्कृष्ट दो कोश से अधिक

शब्दार्थ दो० दोष वि० रहित ॥ १३ ॥ अ० अथ भं० भगवन् खे० क्षेत्र का० काल म० मार्ग प० प्रमाण *

सूत्र स्स संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? गोयमा ! जेणं निग्गंथे वा जाव पडिग्गहेत्ता असंमुच्छिए जाव आहारेइ, एसणं गोयमा ! वीइंगाले पाणभोयणे ॥ जेणं निग्गंथेवा जाव पडिग्गहेत्ता नो महया अप्पत्तियं जाव आहारेइ, एसणं गोयमा! वीयधूमे पाणभोयणे ॥ जेणं निग्गंथेवा जाव पडिग्गहेत्ता जहा लद्धं तहा आहार माहारेइ, एसणं गोयमा ! संजोयणा दोसविप्पमुक्के पाणभोयणे ॥ एसणं गोयमा ! वीइंगालस्स वीयधूमस्स संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाणभोयण-स्स अट्ठे पण्णत्ते ॥ १३ ॥ अह भंते ! खेत्ताइक्कंतस्स, कालाइक्कंतस्स, मग्गाइक्कं-

भावार्थ किसको कहना ? अहो गौतम ! जो साधु साध्वी फासुक एषणिक आहारादिक ग्रहण करके मूर्च्छा गृद्धि व लोलुपता रहित भोगवे उनको ईंगालदोष नहीं लगता है, जो साधु साध्वी फासुक व एषणिक आहार ग्रहण करके अप्रीति क्रोध व किलामना नहीं करते हुवे भोगवे तो उनको धूम्रदोष नहीं लगता है, जो साधु साध्वी फासुक एषणिक आहारादिक ग्रहण करके जैसा मीले वैसाही आहार करे उनको संयोजना दोष नहीं लगता है. अहो गौतम ! ईंगाल, धूम्र व संजोयना दोष रहित आहार का यह अर्थ कहा ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! क्षेत्रातिक्रांत, मार्गातिक्रान्त कालातिक्रान्त व प्रमाणातिक्रान्त आहार पानी किस को कहते

शब्दार्थ शुद्ध जा० यावत् सा० स्वादिम प० लेकर प० पीछे कु० मुर्गी के अं० अंडे प० प्रमाण मात्र क० कवल आ० आहारकरे ॥ १४ ॥ अ० अथ भं० भगवन् स० शस्त्र अ० अतीत हुवा स० शस्त्र प० परिणमा ए० शुद्ध वे० विशेष शुद्ध स० भिक्षाचरी पा० पान भो० भोजन का के० कौनसा अ० अर्थ गो० गौतम जे० जो नि० साधु नि० साध्वी नि० त्यगा हुवा स० शस्त्र मु० मूशल व० त्यजी है मा० माला व० चंदन

सूत्र खेत्ताइक्कंतरस्स, कालाइक्कंतरस्स, मग्गाइक्कंतरस्स, पमाणाइक्कंतरस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥ १४ ॥ अह भंते ! सत्थातीयस्स, सत्थ परिणामियस्स एसि- यस्स वेसियस्स समुदाणियस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? गोयमा ! जेणं नि- ग्गंथेवा निग्गंथीवा निक्खित्त सत्थ मुसले ववगयमाला वण्णगविलेवणे ववगय चुयं च- इय चत्तदेहं, जीवविप्पजढं, अकय मकारिय मसंकप्पियमणाहूय मकीयकड मणुद्दिट्ठं नव-

भावार्थ ऊनोदरी तप होता है, चौवीस कवल का आहार करनेवाले को अवमोदर्य तप होता है और बत्तीस कवल का आहार करनेवाले को पूर्ण आहार किया कहाजाता है. और कोई साधु एक भी कवल का आहार कम करे तो वह काम, रसभोगी नहीं कहाजाता है. अहो गौतम ! यह क्षेत्रातिक्रान्त, काला- तिक्रान्त, मार्गातिक्रान्त, व प्रमाणातिक्रान्त पान भोजन का अर्थ कहा ॥ १४ ॥ अहो भगवन्! शस्त्रातीत शस्त्रपरिणमित एषणीय, वेषणीय, व सामुदानिक पान भोजन का क्या अर्थ होता है ? अहो गौतम !

में प० लेकर प० पीछे की पो० पोरुषी उ० मास होकर आ० आहार करे ए० इ। को का० कालातिक्रांत जे० जो नि० साधु जा० यावत् सा० स्वादिम प० लेकर प० पीछे अ० अर्ध योजन मे० मर्यादा वी० व्यतीत हुवे आ० आहार करे ए० उस को म० मार्ग अतिक्रान्त जे० जो नि० साधु फा० फ्रासुक ए०

सूत्र

क्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ताणं कवलाणं आहार माहारेइ, एसणं गोयमा ! पमाणाइक्कंते पाणभोयणे ॥ अट्ठकुक्कुडि अंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहार माहारेमाणे अप्पाहारे । दुवालस कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहार माहारेमाणे अवड्ढोमोयरिया । सोलस कुक्कुडि अंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहार माहारेमाणे दुभागपत्ते ॥ चउव्वीसं कुक्कुडि अंडगप्पमाणे जाव आहारमाणे ओमोदरिया । बत्तीसं कुक्कुडि अंडगप्प-माणमेत्ते कवले आहार माहारेमाणे पमाणपत्ते एक्को एगेणवि घासेण ऊणगं आहार माहारेमाणे समणे निग्गंथे नोपकामरसभोइत्ति वत्तव्वंसिया ॥ एसणं गोयमा !

भावार्थ

जाकर आहार करे तो उसे मार्गातिक्रान्त पान भोजन कहते हैं. जो साधु साध्वी फ्रासुक व एषणिक अशनादि ग्रहण करके मूर्गी के अण्डे प्रमाण बत्तीस कवल से अधिक का आहार करे तो उसे प्रमाणाति-क्रान्त पान भोजन कहते हैं. जो आठ कवल का आहार करता है उसे अल्पाहारी कहना, बारह कवलका आहार करनेवाला कुछ कम अर्ध अवमोदरीवाला कहाता है, सोलह कवल का आहार करनेवाले को अर्ध

पदार्थ

रहित अ॰ डाले नहीं अ॰ गाडी की धूरी अ॰अनुलेप अ॰अनुभूत सं॰संयमयात्रा मा॰मात्रा सं॰संयम भा॰ भार वहन केलिये बि॰ बिल में प॰ सर्प जैसे अ॰आत्मा से आ॰आहारकरे ए॰उमको गो॰गौतम॥७॥१॥

से॰ वह भं॰ भगवन् स॰ सर्व प्राण स॰ सर्व भूत स॰ सर्व जीव स॰सर्व सत्व से प॰प्रत्याख्यान व॰ बोलते को सु॰ सुप्रत्याख्यान भ॰ होवे दु॰ दुःप्रत्याख्यान भ॰ होवे गो॰ गौतम ज॰ जिसको स॰ सर्व

सूत्र

यस्स जाव पाणभोयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ तंचेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तमे सए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ १ ॥ ÷ × +

से णूणं भंते ! सव्वपाणेहिं, सव्वभूएहिं, सव्वजीवेहिं, सव्वसत्तेहिं, पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ तहा दुपच्चक्खायं ? गोयमा! सव्व पाणेहिं जाव सव्व सत्तेहिं

भावार्थ

वहिकर के लिये सर्प बिल में प्रवेश करे उस समान आहार करे, तब उसे शस्त्रातीत, शस्त्र परिणामित यावत् सामुदानिक आहार कहते है. अहो गौतम ! शस्त्रातीत यावत् सामुदानिक आहार का यह अर्थ कहा. यह सातवा शतक का पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ७ ॥ १ ॥ *

प्रथम उद्देशे में निर्दोष आहार की वक्तव्यता कही वह प्रत्याख्यान पूर्वक होती है इसलिये प्रत्याख्यान का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! सब प्राण, भूत, जीव व सत्व में प्रत्याख्यान है ऐसा कहनेवाले को सुप्रत्याख्यान होवे या दुःप्रत्याख्यान होवे ? अहो गौतम ! सब प्राण, भूत, जीव व सत्व में प्रत्याख्यान

शब्दार्थ

वि॰ विलेपन व॰ त्यजा है चु॰ पृथक्कीया च॰ नीकाला च॰ त्यक्त दे॰ शरीर को जी॰ अचित्त अ॰ नहीं किया अ॰ नहीं करवाया अ॰ संकल्प नहीं किया अ॰ मोल्लाया नहीं अ॰ अनुद्देशिक न॰ नवकोटि प॰ शुद्ध द॰ दश दोप वि॰ रहित उ॰ उद्गमन उ॰ उत्पाद ए॰ एषणिक प॰ शुद्ध वी॰ अंगार रहित वी॰ धूम्र रहित सं॰ संयोजनादोप वि॰ रहित अ॰ असुरसुर अ॰ अचवचव अ॰ त्वरारहित अ॰ विलम्ब

सूत्र

कोडीपरिसुद्धं दसदोसविप्पमुक्कं उग्गमउप्पायणेसणासुपरिसुद्धं वीइंगालं वीइधूमं संजोयणादोसविप्पमुक्कं असुरसुरं अचवचवं अदुयमविलंबियं अपरिसाडि अक्खोवं-जणवणाणुलेवणभूयं, संजमजायामायावत्तियं संजमभारवहणट्ठयाए बिलमिव पण्ग-गभूएणं अप्पाणेणं आहार माहारेइ, एसणं गोयमा ! सत्थातीयस्स, सत्थ परिणामि-

भावार्थ

मुशलादि शस्त्र रहित, कुसुम की माला व चंदनादि विलेपन के त्यागी जो साधु साध्वी जिस में से जीवों चवगये होवे ऐसा, जीव रहित, अचित्त, साधु के लिये नहीं किया हुवा, नहीं कराया हुवा, संकल्प रहित, अन्य स्थान नहीं लाया हुवा, मोल नहीं लीया हुवा, नहीं बनाया हुवा, अनुद्दिष्ट, नव कोटि से शुद्ध, दश दोष रहित, उद्गम, उत्पात व अनेषणिक दोषों से रहित, ईंगाल, धूम्र व संजोयना दोष रहित, भोजन करते शुरू शब्द नहीं होवे वैसा, चपचपाट नहीं होवे वैसा शीघ्रता व मंदता रहित, भूमि पर कण नहीं डालते हुवे, गाडी के अक्ष का अंजन समान लेप रहित, संयम यात्रा मात्रा की वृत्ति सहित, संयम का भार नि-

पदार्थ

रहित अ० डाले नहीं अ० गाडी की धूरी अ०अनुलेप अ०अनुभूत सं०संयमयात्रा मा०मात्रा सं०संयम भा० भार वहन केलिये बि० बिल में प० सर्प जैसे अ०आत्मा से आ०आहारकरे ए०उसको गो०गौतम॥७॥१॥

से० वह भं० भगवन् स० सर्व प्राण स० सर्व भूत स० सर्व जीव स०सर्व सत्व से प०प्रत्याख्यान व० बोलने को सु० सुप्रत्याख्यान भ० होवे दु० दुःप्रत्याख्यान भ० होवे गो० गौतम ज० जिसको स० सर्व

सूत्र

यस्स जाव पाणभोयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ तंचेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तमे सए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ १ ॥ ÷ × +

से णूणं भंते ! सव्वपाणेहिं, सव्वभूएहिं, सव्वजीवेहिं, सव्वसत्तेहिं, पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ तहा दुपच्चक्खायं ? गोयमा! सव्व पाणेहिं जाव सव्व सत्तेहिं

भावार्थ

वाहकर के लिये सर्प बिल में प्रवेश करे उस समान आहार करे, तब उसे शस्त्रातीत, शस्त्र परिणमित यावत् सामुदानिक आहार कहते है. अहो गौतम ! शस्त्रातीत यावत् सामुदानिक आहार का यह अर्थ कहा. यह सातवा शतक का पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ७ ॥ १ ॥ *

प्रथम उद्देशे में निर्दोष आहार की वक्तव्यता कही वह प्रत्याख्यान पूर्वक होती है इसलिये प्रत्याख्यान का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! सब प्राण, भूत, जीव व सत्व में प्रत्याख्यान है ऐसा कहनेवाले को सुप्रत्याख्यान होवे या दुःप्रत्याख्यान होवे ? अहो गौतम ! सब प्राण, भूत, जीव व सत्व में प्रत्याख्यान

शब्दार्थ प्राण से जा० यावत् स० सर्व सत्व से प० प्रत्याख्यान व० बोलते को नो० नहीं अ० ज्ञान म० है इ० ये जीव अ० अजीव त० त्रस था० स्थावर त० उस को स० सर्व प्राण जा० यावत् स० सर्व सत्व से प०

सूत्र पच्चक्खायमिति वदमाणस्स, सिय सुपच्चक्खायं भवइ. सियदुपच्चक्खायं भवइ, ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सव्व पाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं जाव सियदुपच्चक्खायं भवइ ? गोयमा ! जस्सणं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स नो एवं अभिसमण्णागयं भवइ, इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा. इमे थावरा तस्सणं सव्वपाणेहिं जाव सव्व सत्तेहिं पच्चक्खाय मिति वदमाणस्स नो सुपच्चक्खायं दुपच्चक्खायं भवइ एवं खलु से दुपच्चक्खाई, सव्व पाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय मिति वदमाणे णो सच्चं भासं भासइ मोसंभासं भासइ एवं खलुसे मुसावाई सव्वपाणेहिं

भावार्थ है ऐसा कहनेवाले को क्वचित् सुप्रत्याख्यान होता है व क्वचित् दुःप्रत्याख्यान होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से क्वचित् सुप्रत्याख्यान व क्वचित् दुःप्रत्याख्यान होता है ! अहो गौतम ! सब प्राण, भूत, जीव व सत्व में प्रत्याख्यान है ऐसा बोलने वाले में से जिस को ऐसा ज्ञान नहीं है कि ये जीव हैं ये अजीव हैं, ये त्रस हैं, ये स्थावर हैं उस को सब प्राण, भूत, जीव व सत्व में प्रत्याख्यान है ऐसा बोलते हुवे सुप्रत्याख्यान नहीं होता है परंतु दुःप्रत्याख्यान होता है. इस तरह वह दुष्प्रत्याख्यानी सब प्राण भूत

प्रत्याख्यान व० बोलते को नो० नहीं सु० सुप्रत्याख्यान दु० दुःप्रत्याख्यान भ० होवे से० वह दु०दुःप्र-त्याख्यानी स० सर्वप्राण में जा० यावत् स० सर्व सत्व में प० प्रत्याख्यान व० बोलता नो० नहीं स०

जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं असंजय अविरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबालेयावि भवइ ॥ जस्सणं सव्व पाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय मिति वदमाणस्स एवं अभिसमण्णागयं भवइ, इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्सणं सव्व पाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय मिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ, नो दुपच्चक्खायं भवइ, एवं खलु से सुपच्चक्खाई सव्व-पाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं वयमाणे सच्चं भासं भासइ नो मोसं भासइ, एवं खलु से

अर्थ

जीव व सत्व में प्रत्याख्यान है वैसा बोलता हुवा सत्य नहीं बोलता है परंतु मृषा बोलता है. इस तरह मृषा बोलने वाला सब प्राणादि में तीन करन तीन योग से असंयति, अविरति व प्रत्याख्यान रहित पाप कर्मवाला सक्रिय, असंवरी, एकान्त दंडी व एकान्त बाल होता है. सब प्राण भूत, जीव व सत्व से प्रत्याख्यान है ऐसा बोलते हुए जिस को ये जीव हैं, ये अजीव हैं, ये त्रस हैं, ये स्थावर हैं, ऐसा ज्ञान है, उस को सब प्राणादि में प्रत्याख्यान है ऐसा कहते हुवे सुप्रत्याख्यान है परंतु दुःप्रत्याख्यान नहीं है. और ऐसा सुप्र-त्याख्यानी सब प्राणादि में प्रत्याख्यान है ऐसा बोलता हुवा सत्य भाषा बोलता है परंतु मृषा भाषा नहीं

शब्दार्थ

सत्य भाषा भा० बोले मो० मृषा भाषा भा० बोले से० वह मो० मृषावादी स० सर्व प्राण जा० यावत् स० सर्व सत्व से ति०तीन करण नि० तीनयोग से अ०असंयति अ० अविरति प० प्रतिहत प०प्रत्याख्यान पा० पापकर्म स० क्रिया सहित अ० असंवृत ए० एकांत दंड ए० एकांत बाल भ० होवे ॥ १ ॥ क० कितने प्रकार का भं० भगवन् प० प्रत्याख्यान प० प्ररूपा गो० गौतम दु० दोप्रकार का मू० मूलगुण

सूत्र

सच्चवाई, सव्व पाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंत पंडिए यावि भवइ । सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव सिय दुपच्चक्खायं भवइ ॥ १ ॥ कइविहेणं भंते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे प० तं० मूलगुणपच्चक्खाणेय,

भावार्थ

बोलता है. ऐसा सत्य बोलनेवाला प्राणादि में तीन करन तीन योग से संयति, विरति, प्रत्याख्यान से पाप कर्म का नाश करनेवाला, अक्रिय, संवृत व एकान्त पंडित होता है. इस कारन से अहो गौतम ! ऐसा कहागया है कि सब प्राण, भूत, जीव व सत्व में प्रत्याख्यान हैं ऐसा बोलनेवाले को क्वचित् सुप्रत्याख्यान व क्वचित् दुष्प्रत्याख्यान है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! प्रत्याख्यान के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! प्रत्याख्यान के दो भेद कहे हैं १. मूलगुण प्रत्याख्यान व उत्तर गुण प्रत्याख्यान. अहो भगवन् ! मूलगुण प्रत्याख्यान के कितने भेद कहे हैं ? १. सब मूलगुण प्रत्याख्यान व २. देश मूलगुन प्र-

दार्थ प्रत्याख्यान उ० उत्तरगुण प्रत्याख्यान मू० मूलगुण प्रत्याख्यान दु० दोप्रकार का स० सर्व मूलगुण प्रत्याख्यान दे० देशमूलगुण प्रत्याख्यान स० सर्व मूलगुण प्रत्याख्यान पं० पांच प्रकार का स० सर्व प्राणातिपात से वे० निवर्तना जा० यावत् स० सर्व प० परिग्रह से वे० निवर्तना उ० उत्तरगुण प्रत्याख्यान दु०

सूत्र उत्तरगुण पच्चक्खाणेय ॥ मूलगुण पच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे प० तंजहा सव्वमूलगुण पच्चक्खाणेय देसमूलगुणपच्चक्खाणेय ॥ सव्वमूलगुण पच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, जाव सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ देसमूलगुण पच्चक्खाणेणं भंते कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प० तंजहा थूलाओ पाणाइवाया-

भावार्थ त्याख्यान ऐसेदो भेद हैं. अहो भगवन् ! सब मूलगुन प्रत्याख्यान के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! सब मूलगुण प्रत्याख्यान के पांच भेद कहे हैं ? सर्वथा प्राणातिपात से निवर्तना २ सर्वथा मृषावाद से निवर्तना, ३ सर्वथा अदत्तादान से निवर्तना ४ सर्वथा मैथुन मे निवर्तना और ५ सर्वथा परिग्रह से निवर्तना. देश मूलगुन प्रत्याख्यान के पांच भेद. स्थूल प्राणातिपात से निवर्तना यावत् स्थूल परिग्रह से निवर्तना. अहो भगवन् ! उत्तरगुन प्रत्याख्यान के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उत्तरगुन प्रत्याख्यान के दो भेद सब उत्तरगुन प्रत्याख्यान व देश उत्तरगुन प्रत्याख्यान. अहो भगवन् ! सब उत्तरगुन प्रत्याख्यान के

शब्दार्थ दोप्रकार का स० सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान दे० देश उत्तरगुण प्रत्याख्यान स० सर्व उत्तरगुन प्रत्याख्यान द० दश प्रकार का अ० अनागत अ० अतिक्रान्त को० कोटि सहित नि० नियंत्रित सा० सागार अ०

सूत्र ओ वेरमणं; जाव थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ उत्तरगुण पच्चक्खाणेणं भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे प० तं० सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणेय, देसुत्तरगुण पच्चक्खाणेय ॥ सव्वुत्तरगुण पच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते, तं० अणागय मइक्कंतं, कोडीसहियं नियंठियंचेव ॥ सागारमणागारं परिमाण कडं निरवसेसं (१) संकेयं चेव अद्धा ए पच्चक्खाणं भवे दसहा ॥ देसुत्तरगुण पच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! सत्तविहे प० तंजहा—दिसिव्वयं, उवभोग

भावार्थ कितने भेद ? अहो गौतम ! सर्व उत्तरगुनप्रत्याख्यान के दश भेद कहे हैं, १ जिस दिन तप करना होवे उस दिन आचार्यादिक की वैय्यावृत्य करना होगा इससे पहिले तप करे सो अनागत, २ वैय्यावृत्यादि कारन से पीछे तप करे सो अतिक्रान्त ३ प्रारंभ में व अंत में एक सरिखा तप करे अर्थात् जिस क्रम से तप का प्रारंभ करे उसी क्रम में पूर्ण करे ४ नियंत्रित तप सो अमुक दिन में निश्चय ही तप करना ५ सागारिक आगार सहित तप करे ६ अनागारिक तप सो किसी प्रकार का आगार रहित तप ७ परिमाण कृत तप सो अमुकदिन तक इस प्रमाण का तप करना सो. ८

परिभोग परिमाणं, अणत्थदंडवेरमणं, सामाइयं, देसावगासियं, पोसहोववासो अतिहिसंविभागो ॥ अपच्छिम मारणंतिय संलेहणाझूसणाराहणता ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी उत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणीवि ॥ नेरइयाणं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी पुच्छा ? गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी, नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी ॥ एवं जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया मणुस्साय जहा जीवा, वाणमंतरजोइसि य वेमाणिया जहा नेरइया ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं उत्तरगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खा-

भावार्थ

निर्विशेष तप सो सर्वथाप्रकार से अशनादिक का त्याग करना ९ संकेत तप सो गंठि मुष्ठि आदि और १०अद्धा तप सो पौरुषि आदि का तप करना. यह सर्व उत्तरगुनप्रत्याख्यान हुवा, अब देश उत्तरगुन प्रत्याख्यान के सात भेद बताते हैं. १ दिशिव्रत २ उपभोगपरिमाणव्रत ३ अनर्थदंडविरमण ४ सामायिक ५ देशावगाशिक ६ पौषधोपवास और ७ अतिथिसंविभागव्रत. अंतसमय में मारणान्तिक संलेहना की सेवा आराधना करना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव मूलगुनप्रत्याख्यानी हैं, उत्तरगुनप्रत्याख्यानी हैं, या अप्रत्याख्यानी हैं ? अहो गौतम ! जीव मूलगुन प्रत्याख्यानी, उत्तरगुन प्रत्याख्यानी व अप्रत्याख्यानी

सूत्र

णीणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुण पच्चक्खाणी उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ॥ एएसिणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा सव्वत्थोवा जीवा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया मूलगुण पच्चक्खाणी, उत्तरगुण पच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥ जीवाणं भंते ! सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी देस

भावार्थ

हैं. अहो भगवन् ! क्या नारकी मूलगुन प्रत्याख्यानी, उत्तरगुन प्रत्याख्यानी व अप्रत्याख्यानी हैं ? अहो गौतम ! नारकी मूल व उत्तर गुन प्रत्याख्यानी नहीं हैं परंतु अप्रत्याख्यानी हैं. ऐसे ही दश भुवनपति, पांच स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य का समुच्चय जीव जैसे कहना. अहो भगवन् ! इन मूलगुन, उत्तरगुन प्रत्याख्यानी व अप्रत्याख्यानी में कौन किस से संख्यात गुने असंख्यातगुने यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे मूलगुन प्रत्याख्यानी, उस से उत्तरगुन प्रत्याख्यानी असंख्यातगुने उस से अप्रत्याख्यानी अनंत गुने. पंचेन्द्रिय

सूत्र

मूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणीवि ॥ नेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! नेरइया नो सव्व मूलगुण पच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ॥ एवं जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी देसमूलगुणपच्चक्खाणीवि, अपच्चक्खाणीवि ॥ मणुस्सा जहा जीवा ॥ वाणमंतर जोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥ एएसिणं भंते जीवाणं सव्व मूलगुण पच्चक्खाणीणं, देस मूलगुण पच्चक्खाणीणं अपच्च-

भावार्थ

तिर्यंच में मूलगुन प्रत्याख्यानी, उत्तर गुन प्रत्याख्यानी व अप्रत्याख्यानी में से कौन किस से यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे मूलगुन प्रत्याख्यानी तिर्यंच, उस से उत्तरगुनप्रत्याख्यानी तिर्यंच असंख्यात गुने, उस से अप्रत्याख्यानी अनंत गुने. मनुष्य में सब से थोडे मूलगुन प्रत्याख्यानी, उत्तरगुनप्रत्याख्यानी संख्यात गुने और अप्रत्याख्यानी असंख्यात गुने. अहो भगवन् ! क्या जीव सब मूलगुनप्रत्याख्यानी हैं, देशमूलगुनप्रत्याख्यानी हैं या अप्रत्याख्यानी हैं ? अहो गौतम ! समुच्चय जीव सब मूल गुन प्रत्याख्यानी, देशमूलगुनप्रत्याख्यानी व अप्रत्याख्यानी हैं. नारकी सब मूलगुन व देश मूल गुन प्रत्याख्यानी नहीं हैं परंतु अप्रत्याख्यानी हैं. ऐसे ही दश भुवनपति, पांच स्थावर, तीन

सूत्र

क्खाणीणय कयरे२हिंतो जाव विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूल गुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुण पच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ॥ एवं अप्पाबहुगाणि तिण्णिवि, जहा पढमिल्लए दंडए, णवरं सव्वत्थोवा पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥ जीवाणं भंते ! किं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी, देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी तिण्णिवि ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया मणुस्सा एवंचेव सेसा अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं

भावार्थ

विकलेन्द्रिय, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय देशमूलगुनप्रत्याख्यानी व अप्रत्याख्यानी हैं परंतु सवमूलगुनप्रत्याख्यानी नहीं है. और मनुष्य तीनों हैं. अब इन तीन बोल की जीव में अल्पाबहुत्व कहते हैं? अहो गौतम ! सब से थोडे सर्वमूलगुन प्रत्याख्यानी उस से देश मूल गुन प्रत्याख्यानी असंख्यात गुने, उस से अप्रत्याख्यानी अनंत गुने. वगैरह उक्त कथनानुसार जानना. मात्र तिर्यंच पंचेन्द्रिय में सब से थोडे देश मूल गुन प्रत्याख्यानी उस से अप्रत्याख्यानी असंख्यात गुने. अहो भगवन् ! क्या जीव सब उत्तरगुन प्रत्याख्यानी हैं, देश उत्तरगुन प्रत्याख्यानी हैं, व अप्रत्यानी हैं ? अहो गौतम ! जीव में तीनों भांगे पाते हैं. ऐसे ही मनुष्य व तिर्यंच पंचेन्द्रिय का जानना.

सूत्र

सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीणं अप्पबहुगाणि, तिण्णीवि जहा पढमे दंडए जाव मणुस्साणं॥३॥ जीवाणं भंते! किं संजया, असंजया, संजयासंजया ? गोयमा ! जीवा संजयावि, असंजयावि, संजयासंजयावि॥ एवं जाव जहेव पण्णवणाए तहेव भाणियव्वं जाव वेमाणिया अप्पाबहुगं तहेव तिण्णिवि भाणियव्वं॥४॥ जीवाणं भंते ! किं पच्च-क्खाणी अपच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी एवं तिण्णिवि एवं मणुस्सावि ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविरहिया; सव्वे अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं पच्चक्खाणीणं जाव विसे

भावार्थ

शेष सब दंडकवाले अप्रत्याख्यानी हैं. इस की अल्पाबहुत्व मूलगुन प्रत्याख्यानी, उत्तरगुनप्रत्याख्यानी व अप्रत्याख्यानी की अल्पाबहुत्व जैसे जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव संयति, असंयति अथवा संयतासंयति हैं ? अहो गौतम ! जीव संयति, असंयति व संयतासंयति तीनों हैं. सब से थोडे संयति, असंयति असंख्यात गुने व संयतासंयति अनंत गुने ॥४॥ अहो भगवन् ! क्या जीव प्रत्याख्यानी, अप्रत्याख्यानी व प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी हैं ? अहो गौतम ! जीव तीनों प्रकार के हैं. ऐसे ही मनुष्य में जानना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी व अप्रत्याख्यानी होते हैं और शेष सब दंडकवाले अप्रत्याख्यानी हैं. समुच्चय जीव की अल्पाबहुत्व कहते हैं. सब से थोडे प्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानाप्रत्या-

सूत्र

साहियावा? गोयमा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा अपच्च-क्खाणी अणंतगुणा ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खा-णी संखेज्जगुणा अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! किं सासया असासया ? गोयमा ! जीवा सिय सासया सिय असासया ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवा सिय सासया सिय असासया ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, भाव ट्ठयाए असासया-से तेणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चए जाव सिय सासया सिय असासया

भावार्थ

ख्यानी असंख्यात गुने व अप्रत्याख्यानी अनंत गुने. तिर्यंच पंचेन्द्रिय में सब से थोडे प्रत्याख्यानाप्रत्या-ख्यानी अप्रत्याख्यानी असंख्यात गुने. मनुष्य में सब से थोडे प्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी संख्यात गुने अप्रत्याख्यानी असंख्यात गुने ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव शाश्वत है या अशाश्वत है? अहो गौतम ! जीव क्वचित् शाश्वत व क्वचित् अशाश्वत है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् शाश्वत व क्वचित् अशाश्वत है ? अहो गौतम ! द्रव्य की अपेक्षा से शाश्वत है और नरकादि पर्याय की अपेक्षा से अशाश्वत है. इस से जीव शाश्वत व अशाश्वत कहा गया है. अहो भगवन् ! क्या नारकी शाश्वत है या अशाश्वत है ? अहो गौतम ! क्वचित् शाश्वत व क्वचित् अशाश्वत. द्रव्य की

शब्दार्थ अनागार प० परिमाण क० किया नि० निर्विशेष ॥ २ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ पूर्ववत् ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥७॥२॥ व० वनस्पति काया भं० भगवन् किं० किस का० समय में स० सर्व से अल्पाहारी स० सर्व से बहुत आहारी गो० गौतम पा० प्रावृट् व० वर्षाऋतु में व० वनस्पतिकाया स० सर्व से बहुत आहारी त० पीछे

सूत्र नेरइयाणं भंते ! किं सासया असासया एवं जहा जीवा तहा णेरइयावि. जाव वेमाणिया जाव सिय असासया ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तमसयस्स बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ २ ॥ × × +

वणस्सइकाइयाणं भंते ! कं कालं सव्वप्पहारगा वा, सव्वमहारगावा भवंति ? गोयमा ! पाउसवरिसारत्तेसुणं एत्थणं वणस्सइकाइया सव्वमहाहारगा भवंति,

भावार्थ अपेक्षा से शाश्वत व भाव की अपेक्षा से अशाश्वत है. ऐसे ही वैमानिक तक चौविस ही दंडक का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सातवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ७ ॥ २ ॥

द्वितीय उद्देशे में जीव के शाश्वत व अशाश्वतपने का कथन किया. अब वनस्पति का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! किस समय में वनस्पति अधिक आहार करे और किस समय में अल्प आहार करे ? अहो गौतम ! प्रावृट् व वर्षाऋतु में वनस्पतिकायिक जीवों अधिक आहार करनेवाले होवे. फीर

शब्दार्थ

स० शरद ऋतु में त० पीछे हे० हेमन्त में त० पीछे व० वसन्त में त० पीछे गि० ग्रीष्म में व० वनस्प-तिकाया स० सर्व मे अल्पाहारी भ० होती हैं ॥ १ ॥ ज० यदि भं० भगवन् गि० ग्रीष्म ऋतु में व० वनस्पति काया स० सर्व मे अल्पाहारी भ० होती है क० कैसे भं० भगवन गि० ग्रीष्म में ब० बहुत व० वनस्पति काया प० पत्र पु० पुष्प फ० फल से ह० हरितरंग मे दे० देदीप्त गि० वनश्री मे भ० अतीव उ० सुशोभित उ० रहती है गो० गौतम गि० ग्रीष्म में ब० बहुत उ० ऊष्णयोनिवाले जी० जीव

सूत्र

तयाणंतरंचणं सरए, तयाणंतरं च णं हेमंते, तयाणंतरं च णं वसंते, तयाणंतरं च णं गिम्हासुणं, वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति ॥ १ ॥ जइणं भंते ! गिम्हासु वणस्सइ काइया सव्वप्पहारगा भवंति कम्हाणं भंते ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइ-या पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगारेरिज्जमाणा सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा उवचिट्ठंति ? गोयमा ! गिम्हासुणं बहवे ऊसिणजोणिया जीवाय पोग्गलाय वणस्सइ

भावार्थ

अनुक्रम से शरद, हेमन्त, वसन्त व ग्रीष्मऋतु में अल्प आहार करनेवाले होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जब वनस्पतिकायिक जीवों ग्रीष्मऋतुमें अल्प आहार करनेवाले हैं तब किस कारनसे ग्रीष्म ऋतु में वनस्पतिकायिक जीव पत्रवन्त, पुष्पवन्त, नीले वर्ण से देदीप्यमान और वनस्पति की श्री मे बहुत सुशोभित होवे ? अहो गौतम ! ग्रीष्मऋतु में ऊष्ण योनिवाले बहुत जीव व पुद्गल वनस्पतिकायपने उत्पन्न होते हैं, व चवते हैं.

पो० पुद्गल व० वनस्पतिकायापने व० जाते हैं वि०विशेष जाते हैं च०चेवते हैं उ० उत्पन्न होते हैं ए०ऐसे गो० गौतम गि० ग्रीष्म में व० बहुत व० वनस्पतिकाया प० पत्र से पु० पुष्प से जा० यावत् चि० रहती है ॥२॥ से०वह मू० मूल मू०मूलजीव से फु० स्पर्शे कं० स्कन्द कं०स्कन्द जीव से फु०स्पर्शे बी० बीज बी०

सूत्र

काइयत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति । एवं खलु गोयमा ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया पुप्फिया जाव चिट्ठंति ॥ २ ॥ से णूणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, कंदा कंदजीवफुडा, जाव बीया बीयजीवफुडा ? हंता गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा ॥ जइण भंते ! मूला मूल जीव फुडा जाव बीया बीय जीव फुडा; कम्हाणं भंते ! वणस्सइकाइया आ-

भावार्थ

इसलिये अहो गौतम ! ग्रीष्मऋतु में बहुत वनस्पतिकायिक जीव पत्रवाले पुष्पवाले यावत् सुशोभित रहते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या वनस्पति के मूलको मूल में रहे हुवे जीव स्पर्शे हुवे हैं, कंद को कंद में रहे हुवे जीव स्पर्शे हुवे हैं, यावत् बीज को बीज में रहे हुवे जीव स्पर्शे हुवे हैं ? हां गौतम ! मूल को मूल के जीव स्पर्शे हुवे हैं यावत् बीज को बीज के जीव स्पर्शे हुवे हैं. अहो भगवन् ! जब मूल को मूल के जीव स्पर्श कर रहे हुवे हैं यावत् बीज को बीज के जीव स्पर्श कर रहे हुवे हैं तब वनस्पतिकायिक जीव कैसे आहार करते हैं ? व आहार किये हुवे पुद्गलों को कैसे परिणमाते हैं ? अहो गौतम ! मूल को

शब्दार्थ स० शरद् ऋतु में त० पीछे हे० हेमन्त में त० पीछे व० वसन्त में त० पीछे गि० ग्रीष्म में व० वनस्पतिकाया स० सर्व मे अल्पाहारी भ० होती हैं ॥ १ ॥ ज० यदि भं० भगवन् गि० ग्रीष्म ऋतु में व० वनस्पति काया स० सर्व मे अल्पाहारी भ० होती है क० कैसे भं० भगवन गि० ग्रीष्म में ब० बहुत व० वनस्पति काया प० पत्र पु० पुष्प फ० फल से ह० हरितरंग मे दे० देदीप्यमान गि० वनलक्ष्मी मे अ० अतीव उ० सुशोभित उ० रहती है गो० गौतम गि० ग्रीष्म में व० बहुत उ० ऊष्णयोनिवाले जी० जीव

सूत्र तयाणंतरंचणं सरए, तयाणंतरं च णं हेमंते, तयाणंतरं च णं वसंते. तयाणंतरं च णं गिम्हासुणं, वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति ॥ १ ॥ जइणं भंते ! गिम्हासु वणस्सइ काइया सव्वप्पहारगा भवंति कम्हाणं भंते ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगारेरिज्जमाणा सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा उवचिट्ठंति ? गोयमा ! गिम्हासुणं वहवे ऊसिणजोणिया जीवाय पोग्गलाय वणस्सइ

भावार्थ अनुक्रम से शरद, हेमन्त, वसन्त व ग्रीष्मऋतु में अल्प आहार करनेवाले होते ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जब वनस्पतिकायिक जीवों ग्रीष्मऋतुमें अल्प आहार करनेवाले हैं तब किस कारनसे ग्रीष्म ऋतु में वनस्पतिकायिक जीव पत्रवन्त, पुष्पवन्त, नीले वर्ण से देदीप्यमान और वनस्पति की श्री से बहुत सुशोभित होते ? अहो गौतम ! ग्रीष्मऋतु में ऊष्ण योनिवाले बहुत जीव व पुद्गल वनस्पतिकायपने उत्पन्न होते हैं, व चवते हैं.

व॰वज्रकंद सू॰सूरणकंद खे॰खेलूडकंद अ॰ अर्द्रमूर्च्छा पिं॰हलदीपिंड लो॰लोहानीकंद ह॰ हुथीहूमीभाग वि॰ विभागकंद अ॰ अश्वकर्णकंद सी॰ सिंहकरणी सा॰ सादंडी मु॰ मुसुंडी जे॰ जो अ॰अन्य त॰तैसे स॰सर्व अ॰ अनंत जीव वि॰विविध प्रकार के हं॰ हां गो॰गौतम ॥ ४ ॥ भं॰ भगवन् क॰ कृष्णलेशी ने॰ नारकी

कंदे खेल्लूडे, अद्दमुच्छा पिंडहलिद्दा लोहाणी हूथिहूविभागा अस्सकण्णी, सीहकण्णी, सादंडी, मुसुंडी, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अणंत जीवा विविहसत्ता? हंता गोयमा ! आलूए मूलए जाव अणंत जीवा विविहसत्ता ॥ ४ ॥ सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ? हंता सिय ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए, नीललेसे नेरइए

मुसंडी, और अन्य भी इस प्रकार की कंद वनस्पति में वनस्पति समान वर्णवाले अनंत जीव विविध प्रकार की कर्म की सत्ता से क्या उत्पन्न होते हैं ? हां गौतम ! आलू मूले आदि कंद वनस्पति में वनस्पतिकाय के वर्णवाले अनंत जीव उत्पन्न होते हैं ॥ ४ ॥ जीव लेश्या से उत्पन्न होते हैं इसलिये लेश्या का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या क्वचित् कृष्ण लेश्यावाले नारकी अल्प कर्मवाले व नीललेश्यावाले नारकी महा कर्मवाले होते हैं ? हां गौतम ! कृष्ण लेश्यावाले नारकी क्वचित् अल्प कर्मवाले व नीललेश्यावाले नारकी क्वचित् महा कर्मवाले होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कृष्ण

शब्दार्थ

बीजजीव से फु० स्पर्शे हं० हां ॥ ३ ॥ अ० अथ भं० भगवन् आ० आलू मू० मूली सिं० अदरख हि० हरी हलदी सि० विदारीकंद सि० सिरिकंद कि० किट्टकंद नि० निरिकाकंद छी० क्षीरकंद क० कृष्णकंद

सूत्र

हारंति परिणामंति ? गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा, पुढवी जीव पडिबद्धा तम्हा आहारंति, तम्हा परिणामंति, कंदा कंद जीव फुडा मूल जीव पडिबद्धा तम्हा आहारंति, तम्हा परिणामंति एवं जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारंति तम्हा परिणामंति ॥ ३ ॥ अह भंते ! आलुए, मूलए, सिंगबेरे, हिरिली सिरिली, सिसिरली, किट्टिया, निरिया, छीरविरालिया, कण्हकंदे, वज्जकंदे, सूरण-

भावार्थ

मूल के जीव स्पर्श हुवे हैं परंतु पृथिवी जीव से प्रतिबद्ध है इसलिये मूल के जीव पृथ्वीकाया का आहार करते हैं और उसे परिणमाते हैं. उस आहार में कुछ विभाग कंदके जीव आकर्षते हैं. कुछ स्कंधके जीव आकर्षते हैं, उस में शाखा के जीव, शाखामें प्रतिशाखाके जीव, प्रतिशाखामें पत्र, पत्रमें पुष्प पुष्प में से फल व फलमें से बीज के जीव आकर्षते हैं और शरीर में परिणमाते हैं. इस प्रकार वनस्पति-कायिक जीवों का आहार परिणमता है. ॥ ३ ॥ अब अहो भगवन् ! आलु, मूला, अदरख, हरी हलदी, विदारीकंद, सिरिकंद, किट्टकंद, निरिकाकंद, क्षीरविरालिका, कृष्णकंद, वज्रकंद, सूरण कंद खेलुड, अर्द्धमूर्च्छा पिण्डहरिद्रा लोहाणी, हथिहूविभाग, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, मादंडी.

व०वज्रकंद सू०सूरणकंद खे०खेलूडकंद अ० अर्द्रमूर्च्छा पिं०हलदीपिंड लो०लोहानीकंद ह० हुथीहूमीभाग वि० विभागकंद अ० अश्वकर्णाकंद सी० सिंहकरणी सा० सादंडी मु० मुसुंडी जे० जो अ०अन्य त०तैसे स०सर्व अ० अनंत जीव वि०विविध प्रकार के हं० हां गो०गौतम ॥ ४ ॥ भं० भगवन् क० कृष्णलेशी ने० नारकी

सूत्र

कंदे खेल्लूडे, अद्दमुच्छा पिंडहलिद्दा लोहाणी हूथिहूविभागा अस्सकण्णी, सीह-कण्णी, सादंडी, मुसुंडी, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अणंत जीवा विविहसत्ता? हंता गोयमा ! आलूए मूलए जाव अणंत जीवा विविहसत्ता ॥ ४ ॥ सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ? हंता सिय ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए, नीललेसे नेरइए

भावार्थ

मुसुंडी, और अन्य भी इस प्रकार की कंद वनस्पति में वनस्पति समान वर्णवाले अनंत जीव विविध प्रकार की कर्म की सत्ता से क्या उत्पन्न होते हैं ? हां गौतम ! आलू मूले आदि कंद वनस्पति में वनस्पतिकाय के वर्णवाले अनंत जीव उत्पन्न होते हैं ॥ ४ ॥ जीव लेश्या से उत्पन्न होते हैं इसलिये लेश्या का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या क्वचित् कृष्ण लेश्यावाले नारकी अल्प कर्मवाले व नीललेश्यावाले नारकी महा कर्मवाले होते हैं ? हां गौतम ! कृष्ण लेश्यावाले नारकी क्यचित् अल्प कर्मवाले व नीललेश्यावाले नारकी क्वचित् महा कर्मवाले होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कृष्ण

गोयमा! जाव न सा वेयणा ॥ नेरइयाणं भंते ! जा वेयणा सा निज्जरा, जा निज्जरा सावेयणा ? गोयमा ! णोइणट्ठेसमट्ठे । सेकेणट्ठेणं एवं वुच्चइ नेरइयाणं जावेयणा नसानिज्जरा, जानिज्जरा नसावेयणा ? गोयमा ! नेरइयाणं कम्मवेयणा णोकम्मनिज्जरा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेयणा । एवं जाव वेमाणियाणं ॥६॥ से णूणं भंते ! जं वेदंसु तं निज्जरिंसु जं निज्जरिंसु तं वेदंसु? णो इणट्ठे समट्ठे॥से केणट्ठेणं भंते ! एवं

अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से जो वेदना है वह निर्जरा नहीं है व जो निर्जरा है वह वेदना नहीं है ? अहो गौतम ! उदित कर्मों को वेदना कहते हैं. और कर्मों का अभाव को निर्जरा कहते हैं. इस से वेदना सो निर्जरा नहीं और निर्जरा सो वेदना नहीं है. अहो भगवन् ! नारकी को क्या जो वेदना है वह निर्जरा है और जो निर्जरा है वह वेदना है ! अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. क्योंकि नारकी को उदय आया हुवा कर्म सो वेदना है और कर्म का अभाव सो निर्जरा है. इसलिये ऐसा कहा गया है कि जो वेदना है वह निर्जरा नहीं है व निर्जरा है वह वेदना नहीं है. ऐसे ही वैमानिक तक जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जिसे वेदा उसे क्या निर्जरा कहना अथवा जिसे निर्जरा उसे वेदा कहना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम ! जीवने कर्म वेदे व नोकर्म निर्जरे. इस से वेद को निर्जरे

सूत्र

वुच्चइ जंवेदंसु नोतं निज्जरिंसु, जंनिज्जरिंसु नोतं वेदंसु ?गोयमा ! कम्मवेदंसु नोकम्म-
निज्जरिंसु सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नोतं वेदंसु ॥ नेरइयाणं भंते! जंवेदंसु तंनिज्जरिंसु?
एवं नेरइयावि, एवं जाव वेमाणिया ॥ सेनूणं भंते ! जंवेदंति तंनिज्जरंति जंनिज्जरंति
तंवेदंति ? णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ जाव नो तंवेदंति ? गोयमा !
कम्मवेदंति नो कम्म निज्जरंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तंवेदंति, एवं नेरइ-
यावि जाव वेमाणिया ॥ ७ ॥ सेनूणं भंते ! जंवेदिस्संति तंनिज्जरिस्संति, जंनिज्ज-
रिस्संति, तंवेदिस्संति ? णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं जाव णो तंवेदिस्संति?गोयमा!
कम्मं वेदिस्संति नो कम्मं निज्जरिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव नो तंवेदिस्संति, एवं
नेरइयावि जाव वेमाणिया ॥ ८ ॥ सेणूणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए,

भावार्थ

कहना नहीं व निर्जरे को वेदे कहना नहीं. ऐसे ही नारकी आदि चौवीस ही दंडक में जानना. अहो भगवन् ! जिसको वेदता है उसे क्या निर्जरता है अथवा जिसको निर्जरता है उसे क्या वेदता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्योंकि कर्म को वेदता है और नो कर्म को निर्जरता है. ऐसे ही चौवीस दंडक में जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जिस को वेदेगा उसे क्या निर्जरेगा अथवा जिस को निर्जरेगा उसे क्या वेदेगा ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्योंकि कर्म को वेदेगा व नो

गोयमा! जाव न सा वेयणा ॥ नेरइयाणं भंते ! जा वेयणा सा निज्जरा, जा निज्जरा सावेयणा ? गोयमा ! णोइणट्ठेसमट्ठे । सेकेणट्ठेणं एवं वुच्चइ नेरइयाणं जावेयणा नसानिज्जरा, जानिज्जरा नसावेयणा ? गोयमा ! नेरइयाणं कम्मवेयणा णोकम्मनिज्जरा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेयणा । एवं जाव वेमाणियाणं ॥६॥ से णूणं भंते ! जं वेदंसु तं निज्जरिंसु जं निज्जरिंसु तं वेदंसु? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं

अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से जो वेदना है वह निर्जरा नहीं है व जो निर्जरा है वह वेदना नहीं है ? अहो गौतम ! उदित कर्मों को वेदना कहते हैं. और कर्मों का अभाव को निर्जरा कहते हैं. इस से वेदना सो निर्जरा नहीं और निर्जरा सो वेदना नहीं है. अहो भगवन् ! नारकी को क्या जो वेदना है वह निर्जरा है और जो निर्जरा है वह वेदना है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. क्योंकि नारकी को उदय आया हुआ कर्म सो वेदना है और कर्म का अभाव निर्जरा है. इसलिये ऐसा कहा गया है कि जो वेदना है वह निर्जरा नहीं है व निर्जरा है वह वेदना नहीं है. ऐसे ही वैमानिक तक जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जिसे वेदा उसे क्या निर्जरा कहना अथवा जिसे निर्जरा उसे वेदा कहना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम ! जीवने कर्म वेदे व नोकर्म निर्जरे. इस से वेदे को निर्जरे

नुच्छइ जं वेदेंसु नो तं निज्जरिंसु, जं निज्जरिंसु नो तं वेदेंसु? गोयमा! कम्मं वेदेंसु नोकम्मं निज्जरिंसु से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव नो तं वेदेंसु ॥ नेरइयाणं भंते! जं वेदेंसु तं निज्जरिंसु? एवं नेरइयावि, एवं जाव वेमाणिया ॥ से नूणं भंते! जं वेदेंति तं निज्जरेंति जं निज्जरेंति तं वेदेंति? णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ जाव नो तं वेदेंति? गोयमा! कम्मं वेदेंति नो कम्मं निज्जरेंति, से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव नो तं वेदेंति, एवं नेरइयावि जाव वेमाणिया ॥ ७ ॥ से नूणं भंते! जं वेदिस्संति तं निज्जरिस्संति, जं निज्जरिस्संति तं वेदिस्संति? णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं जाव णो तं वेदिस्संति? गोयमा! कम्मं वेदिस्संति नो कम्मं निज्जरिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव नो तं वेदिस्संति, एवं नेरइयावि जाव वेमाणिया ॥ ८ ॥ से णूणं भंते! जं वेदणासमए से निज्जरासमए,

कहना नहीं व निर्जरे को वेदे कहना नहीं. ऐसे ही नारकी आदि चौवीस ही दंडक में जानना. अहो भगवन्! जिसको वेदता है उसे क्या निर्जरता है अथवा जिसको निर्जरता है उसे क्या वेदता है? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है क्योंकि कर्म को वेदता है और नो कर्म को निर्जरता है. ऐसे ही चौवीस दंडक में जानना ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! जिस को वेदेगा उसे क्या निर्जरेगा अथवा जिस को निर्जरेगा उसे क्या वेदेगा? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है क्योंकि कर्म को वेदेगा व नो कर्म को निर्जरेगा

सूत्र

जे निज्जरासमए, से वेदणासमए ? णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते । एवं वुचइ जे वेदणा समए नसेनिज्जरा समए, जे निज्जरा समए नसेवेदणा समए ? गोयमा ! जं समयं वेदंति नो तंसमयं निज्जरंति, जंसमयं निज्जरंति नो तं समयं वेदंति, अण्णंमि समए वेदंति अण्णंमि समए निज्जरंति, अण्णे मे वेदना समए अण्णे मे निज्जरासमए, से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणा समए ॥ नेरइयाणं भंते ! जे वेदणा समए से निज्जरासमए, जे निज्जरा समए से वेदणा समए ? णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ, नेरइयाणं जे वेदणा समए न से निज्जरा समए जे निज्जरासमए न से वेदणा समए ? गोयमा ! नेरइयाणं जं समयं वेदेंति नो तं समयं निज्जरेंति जंसमयं निज्जरेंति नो तंसमयं वेदेंति, अण्णंमि समए वेदेंति अण्णंमि समए

भावार्थ

कर्म को निर्जरेगा. ऐसे ही चौवीस दंडक का जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! जो वेदना समय है वही निर्जरा समय है अथवा जो निर्जरा समय है वही वेदना समय है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से जो वेदना समय है वह निर्जरा समय नहीं है व जो निर्जरा समय है वह वेदना समय नहीं है ? अहो गौतम ! जिस समय में जीव कर्म वेदते हैं उस समय में निर्जरते नहीं है और जिस समय में निर्जरते हैं उस समय में वेदते नहीं हैं. वेदना व निर्जरा का समय पृथक् है

सूत्र

निजरेंति, अण्णे से वेदणा समए अण्णे से निज्जरासमए से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणा समए । एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ९ ॥ नेरइयाणं भंते ! किंसासया असासया गोयमा ! सिय सासया सिय असासया । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइया सिय सासया सिय असासया ? गोयमा ! अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए सासया वोच्छित्तिनयट्ठयाए असासया से तेणट्ठेणं जाव सिय असासया एवं जाव वेमाणिया सिय सासया सिय असासया सेवं भंते भंतेत्ति ॥ इतिसत्तम सयस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥७॥३॥

भावार्थ

होना है. इसी कारन से जिस समय में जीव कर्म वेदते हैं उस समय में. निर्जरते नहीं हैं व जिस समय में निर्जरते हैं उस समय में वेदते नहीं हैं. ऐसे ही नारकी आदि सब दंडक का जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी शाश्वत हैं या अशाश्वत है ? अहो गौतम ! नारकी क्वचित् शाश्वत व क्वचित् अशाश्वत हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी क्वचित् शाश्वत व क्वचित् अशाश्वत है ? अहो गौतम ! नारकी का कदापि विच्छेद नहीं होनेवाला है इस अपेक्षा से शाश्वत है और वहां उत्पन्न हुए नारकी आयुष्य क्षय से काल करके अन्य स्थान जाते हैं उस अपेक्षा से अशाश्वत है. इस कारन से नारकी शाश्वत व अशाश्वत दोनों रहे हुवे हैं ऐसे ही वैमानिक तक सब दंडक का जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह सातवा शतक का तीसरा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ ७ ॥ ३ ॥

शब्दार्थ रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितने प्रकार के सं० संसारी जी० जीव गो० गौतम छ० छप्रकार के सं० संसारी जी० जीव पु० पृथ्वी काया ज० जैसे जी० जीवाभिगम

सूत्र रायगिहे नयरे जाव एवं वयासी-कतिविहाणं भंते ! संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! छव्विहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तंजहा पुढवि-काइया एवं जहा जीवाभिगमे जाव समत्त किरियंवा मिच्छत्त किरियंवा जीवा छव्विहा

भावार्थ तृतीय उद्देशे में संसारी जीव का शाश्वतपना आदि का स्वरूप कहा. अब चतुर्थ उद्देशे में उस का ही भेद से स्वरूप कहते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदने को आइ व धर्मोपदेश सुनकर पीछी गइ. उस समय में श्री गौतम स्वामीने वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! संसार समापन्न जीव कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! संसारी जीव छ प्रकार के कहे हैं. १ पृथ्वी, २ पानी, ३ अग्नि, ४ वायु, ५ वनस्पति व ६ त्रस. इन का विशेष वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना. और भी जीव के छ भेद कहे हैं. उस में से पृथ्वीकाय के छ भेद १ सण्हा, २ सुद्धा, ३ वालुका, ४ मनःशिला, ५ शर्करा, ६ खर. इन की भव स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष. कायस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल. निर्लेपन

शब्दार्थ में जा० यावत् स० सम्यक्त्वक्रिया मि० मिथ्यात्वक्रिया जी० जीव छ० छप्रकार के पु० पृथ्वी जी०जीव ठि० स्थिति भ० भव स्थिति का० काय नि० निर्लेपन अ० अनगार किं० क्रिया ॥ ७ ॥ ४ ॥ *

सूत्र पुढवी जीवाणठिई, भवट्ठिई, काए निल्लेवण, अणगारे किरिया, समत्तामिच्छत्ते सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तम सए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ ४ ॥ *

भावार्थ किंचित् पृथ्वी काया जीवों में से एक २ जीव नीकालते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे. जैसा पृथ्वीकाय का अधिकार कहा. वैसा ही षड्जीवनिकाय यावत् चौवीस ही दंडक का जानना. ऐसे ही अविशुद्धलेशी अनगार वैक्रेय करके अविशुद्धलेशी देव देवी को व अविशुद्धलेशी अनगार को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. और भी अहो भगवन् ! एक जीव को एक समय में सम्यक्त्व व मिथ्यात्व ऐसी दोनों प्रकार की क्रिया लगती है ऐसा जो अन्यतीर्थिक कहते हैं वह किस तरह है ? अहो गौतम ! उन का ऐसा कथन मिथ्या है. परंतु मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक समय में जीव सम्यक्त्व अथवा मिथ्यात्व ऐसी एक ही प्रकार की क्रिया को स्पर्शता हैं. इस का विस्तार पूर्वक कथन जीवाभिगम सूत्र से जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन तथ्य हैं. यह सातवा शतक का चौथा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ ७ ॥ ४ ॥

×

शब्दार्थ रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितने प्रकार के सं० संसारी जी० जीव गो० गौतम छ० छप्रकार के सं० संसारी जी० जीव पु० पृथ्वी काया ज० जैसे जी० जीवाभिगम

सूत्र रायगिहे नयरे जाव एवं वयासी-कतिविहाणं भंते ! संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! छव्विहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तंजहा पुढवि-काइया एवं जहा जीवाभिगमे जाव समत्त किरियंवा मिच्छत्त किरियंवा जीवा छव्विहा

भावार्थ तृतीय उद्देशे में संसारी जीव का शाश्वतपना आदि का स्वरूप कहा. अब चतुर्थ उद्देशे में उस का ही भेद से स्वरूप कहते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदने को आइ व धर्मोपदेश सुनकर पीछी गइ. उस समय में श्री गौतम स्वामीने वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! संसार समापन्न जीव कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! संसारी जीव छ प्रकार के कहे हैं. १ पृथ्वी, २ पानी, ३ अग्नि, ४ वायु, ५ वनस्पति व ६ त्रस. इन का विशेष वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना. और भी जीव के छ भेद कहे हैं. उस में से पृथ्वीकाय के छ भेद १ सण्हा, २ सुद्धा, ३ वालुका, ४ मनःशिला, ५ शर्करा, ६ खर. इन की भव स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष. कायस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल. निर्लेपन

शब्दार्थ में जा० यावत् स० सम्यक्त्वक्रिया मि० मिथ्यात्वक्रिया जी० जीव छ० छप्रकार के पु० पृथ्वी जी० जीव ठि० स्थिति भ० भव स्थिति का० काय नि० निर्लेपन अ० अनगार किं० क्रिया ॥ ७ ॥ ४ ॥ *

सूत्र

पुढवी जीवाणठिई, भवट्ठिई, काए निल्लेवण, अणगारे किरिया, समत्तामिच्छत्ते *

सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तम सए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ ४ ॥

भावार्थ किंचित् पृथ्वी काया जीवों में से एक २ जीव नीकालते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे. जैसा पृथ्वीकाय का अधिकार कहा. वैसा ही षड्जीवनिकाय यावत् चौवीस ही दंडक का जानना. ऐसे ही अविशुद्धलेशी अनगार वैक्रेय करके अविशुद्धलेशी देव देवी को व अविशुद्धलेशी अनगार को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. और भी अहो भगवन् ! एक जीव को एक समय म सम्यक्त्व व मिथ्यात्व ऐसी दोनों प्रकार की क्रिया लगती है ऐसा जो अन्यतीर्थिक कहते हैं वह किस तरह है ? अहो गौतम ! उन का ऐसा कथन मिथ्या है. परंतु मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक समय में जीव सम्यक्त्व अथवा मिथ्यात्व ऐसी एक ही प्रकार की क्रिया को स्पर्शता है. इस का विस्तार पूर्वक कथन जीवाभिगम सूत्र से जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन तथ्य है. ×

यह सातवा शतक का चौथा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ ७ ॥ ४ ॥

शब्दार्थ रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ख० खेचर प० पचेन्द्रिय तिर्यंच की भं० भगवन् क० कितने प्रकार की योनि सं० संग्रह गो० गौतम ति० तीन प्रकार की जो० योनि० संग्रह अं० अंडज पो० पोतज सं० संमूर्च्छिम ए० ऐसे जा० यावत् जी० जीवाभिगम में जा० यावत् नो० नहीं ते० वे वि० विमान में वी०

सूत्र राघगिहे जाव एवं वयासी-खहयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं भंते ! कइविहे जोणी संगहे पण्णत्ते ? गोयमा! तिविहे जोणी संगहे पण्णत्ते, तंजहा–अंडया, पोयया संमुच्छिमा, एवं जहा जीवाभिगमे, जाव नो चेवणं ते विमाणे वीईवएज्जा, महा-

भावार्थ चतुर्थ उद्देशे में संसारी जीव का कथन किया. संसारी जीव योनि से उत्पन्न होते हैं इसलिये योनिका प्रश्न करते हैं. राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को श्री गौतम स्वामी वंदना नमस्कार कर ऐसा कहने लगे कि अहो भगवन् ! खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की कितने प्रकार की योनि कही ? अहो गौतम ! खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तीन प्रकार की योनि कही. १ अण्डज-अण्डे से उत्पन्न होवे सो २ पोतज थैली से उत्पन्न होवे सो और ३ संमूर्च्छिम स्त्री पुरुष के संयोग बिना उत्पन्न होवे सो. इस में से अण्डज, पोतज के तीन २ भेद कहे हैं स्त्री, पुरुष व नपुंसक और संमूर्च्छिम में मात्र एक नपुंसक वेद पाता है. यह योनिसंग्रहका प्रथम बोल का कथन हुवा. खेचर में छ लेश्या हैं, दृष्टि तीन हैं तीन ज्ञान की भजना है, तीन अज्ञान की भजना है, तीन योग, उपयोग दो, चारों गतिवाले

शब्दार्थ जावे म० बडे गो० गौतम ते० वे वि० विमान प० प्ररूपे जो० योनि सं० संग्रह ले० लेश्या दी० दृष्टि ना० ज्ञान जो० योग उ० उपयोग उ० उपपात ठि० स्थिति स० समुद्घात च० चवन जा० जाति कु० कुल वि० प्रकार ॥७।५॥

सूत्र लयाणं । गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता—जोणी संगहलेस्सा, दीट्ठी नाणेय जोग उव-
ओगे ॥ उववायट्ठिइ समुग्घाय चवण जाइ कुल विहीओ, ॥ १ ॥ सेवं भंते
भंतेत्ति ॥ सत्तम सयस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ ५ ॥ *

भावार्थ का उपपात है, जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्य के असंख्यातवे भाग की स्थिति है, आहारक व केवली समुद्घात छोडकर पांच समुद्घात हैं, चव करके चारों गति में जाते हैं, जाति चार लाख की, कुल बारह लक्ष क्रोड, वगैरह विस्तार पूर्वक कथन जीवाभिगम सूत्रानुसार जानना. यावत् विजयादि पांच अनुत्तर विमान को कोई महर्द्धिक यावत् महानुभाव देव आवर्तना देवे तो क्या उन का अंत कर सके ? अहो गौतम ! तीन चपटिका में इकीस वक्त संपूर्ण जम्बूद्वीप को आवर्तना देनेवाला कोई महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव छ मास पर्यंत परिभ्रमण करे तो भी पांचों विमानों कोआवर्तना देसके नहीं. सर्वार्थसिद्ध विमान जंम्बूद्वीप प्रमाण एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा कहा है. वगैरह सब कथन जीवाभिगम सूत्रसे जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह सातवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥७॥५॥ *

शब्दार्थ

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले जी० जीव भं० भगवन् जे० जो भ० भव्य ने० नरक में उ० उपजने से० वह भं० भगवन् किं० क्या इ० यहां से ने० नरक का आ० आयुष्य प० बांधे उ० उपजता ने० नरक का आ० आयुष्य प० बांधे उ० उत्पन्न हुवा ने० नरक का आ० आयुष्य प० बांधे गो० गौतम इ० यहां से ने० नरक का आ० आयुष्य प० बांधे नो० नहीं उ० उपजता ने० नरक का आ० आयुष्य प० बांधे नो० नहीं उ० उत्पन्न हुवा ने० नरक का आ० आयुष्य प० बांधे ए० ऐसे

रायगिहे जाव एवं वयासी—जीवेणं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! किं इह-गए नेरइयाउयं पकरेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, उववण्णे नेरइयाउयं पकरेइ ? गोयमा ! इयगए नेरइयाउयं पकरेइ नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउयं

भावार्थ

पांचवे उद्देशे में योनि संग्रह का अधिकार कहा हैं. योनि संग्रह आयुष्यवंत जीव को होवे इसलिये आयुष्य का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! जो जीव नरक में उत्पन्न होने योग्य होता है वह क्या यहां रहे हुवे नारकी का आयुष्य बांधता है, उपजता हुआ नारकी का आयुष्य बांधता है अथवा उत्पन्न हुए पीछे नारकी का आयुष्य बांधता है ? अहो गौतम ! जो जीव नारकी में उत्पन्न होने योग्य होता है वह यहां मनुष्य तिर्यंच में रहा हुआ नारकी का आयुष्य बांधता है परंतु उत्पन्न होते या उत्पन्न हुवे पीछे नारकी का आयुष्य नहीं बांधता है ऐसे ही असुरकुमारादि दश भुवनपति यावत् वैमानिक

अर्थ अ० असुरकुमार जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ १ ॥ पूर्ववत् ॥ २-३-४-५ ॥ जी० जीव भं० भगवन्

सूत्र पकरेइ एवं असुरकुमारेसुवि, एवं जाव वेमाणिएसु ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ? गोयमा ! नो इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववन्नेवि नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, एवं जाव वेमाणिएसु ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! किं इहगए महावेयणे, उववज्जमाणे महावेयणे, उववन्ने महावेयणे?

भावार्थ तक का सब अधिकार जानना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जो नरक में नारकी पने उत्पन्न होने योग्य होता है वह क्या यहां रहाहुवा नारकी का आयुष्य वेदता है, वहां उत्पन्न होते नारकी का आयुष्य वेदता है या उत्पन्न हुवे पीछे नारकी का आयुष्य वेदता है ? अहो गौतम ! नारकी में उत्पन्न होने वाला वहां मनुष्य तिर्यंच में रहा हुवा नारकी का आयुष्य नहीं वेदता है परंतु वहां उत्पन्न होते वेदता है व उत्पन्न हुए पीछे नारकी का आयुष्य वेदता है. ऐसे ही वैमानिक तक चौवीस ही दंडकका जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न होने वाला जीव क्या यहां रहा महा वेदना वंत होवे, उत्पन्न होता हुआ महा वेदनावंत होवे अथवा उत्पन्न हुए पीछे महा वेदनावंत होवे ? अहो गौतम ! कितनेक यहां रहेहुवे वेद-

गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे, सिय अप्पवेयणे, उववज्जमाणे सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे अहेणं उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगंतदुक्खं वेयणं वेएइ, आहच्च सायं ॥ ३ ॥ जीवेणं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए पुच्छा । गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, उववज्जमाणे सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे; अहेणं उववन्ने भवइ तओपच्छा एगंत सायं वेयणं वेएइ, आहच्च असायं ॥ एवं जाव थणिय कुमारेसु ॥ ४ ॥ जीवेणं भंते ! जे भविए पुढवि काइएसु उववज्जित्तए पुच्छा ।

नीच कर्मका उदय से महा वेदनावंत होते हैं कितनेक अल्प वेदना वाले भी होते हैं कितनेक उत्पन्न होते कर्मका बाहुल्यतासे महा वेदना वाले होते हैं और कितनेक अल्प वेदना वाले होते हैं और नारकी में उत्पन्न हुवे पीछे एकान्त दुःख होता है परंतु क्वचित् परमाधर्मीका वियोग होने से अथवा तीर्थंकरों का जन्मादि कल्याणक होने से साता वेदना होती है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जो जीव असुरकुमार में उत्पन्न होने वाला है वह क्या यहां रहा हुवा महावेदना वाला होता है उत्पन्न होते महावेदना वाला होता है या उत्पन्न हुए पीछे महावेदना वाला होता है. ? अहो गौतम ! असुरकुमार में उत्पन्न होने वाला यहां रहा हुवा महावेदना वाला होता है और क्वचित् अल्प वेदना वाला भी होता है उत्पन्न होते भी महावेदना व अल्प वेदना वाला होता है परंतु उत्पन्न हुवे पीछे एकान्त साता वेदना वेदने वाला होता है परंतु क्वचित् प्रहारादिक की वेदना वेदता है. ऐसेही स्थनितकुमार तक का जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायिक जीव यहां रहते

शब्दार्थ

कि० क्या आ० आभोगनिर्वर्तित आयुष्य वाले अ० अनाभोगनिर्वर्तित आयुष्य वाले गो० गौतम नो० नहीं आ० आभोगनिर्वर्तित आयुष्य वाले अ० अनाभोगनिर्वर्तित आयुष्य वाले ए० ऐसे ने० नारकी जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ६ ॥ भं० भगवन् जी० जीव क० कर्कश वे० वेदनीय कर्म क० करे हं० हां अ० है क०

सूत्र

गोयमा ! इहगए सिए महावेयणे सियअप्पवेयणे, एवं उववज्जमाणेवि, अहेणं उववन्ने भवइ तओपच्छा वेमायाए वेएइ ॥ एवं जाव मणुस्सेसु ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया अणाभोगनिव्वत्तियाउया ? गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया, एवं नेरइयावि एवं जाव वेमाणिया ॥ ६ ॥ अत्थिणं भंते ! जीवाणं

भावार्थ

कदाचित् महावेदनावाले व कदाचित् अल्पवेदनावाले होते हैं. ऐसे ही उपजते हुवेका जानना. उत्पन्न हुवे पीछे मर्यादा रहित वेदना वेदते हैं. ऐसे ही शेष चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य का जानना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का असुरकुमार जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव जानता हुवा आयुष्य का बंध करे या नहीं जानता हुवा आयुष्य का बंध करे ? अहो गौतम ! जीव जानता हुवा आयुष्य का बंध करे नहीं परंतु नहीं जानता हुवा आयुष्य का बंध करे. ऐसे ही वाणव्यंतर तक चौवीस ही दंडक का जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव कर्कश वेदनीय [रौद्र दुःखवाले] कर्म

शब्दार्थ च० चलते को च० चला उ० उदीरते को उ० उदीरा वे०वेदते को वे० वेदा प० छोडते को प० छोडा छि० छेदने को छि० छेदा भि० भेदते को भि० भेदा द० जलाते को द० जलाया मि० मरते को म०

सूत्र भंते ! चलमाणे चालिए ? उदीरिज्जमाणे उदीरिए ? वेदिज्जमाणे वेदिए ? पहेज्जमाणे पहीणे !

भावार्थ उनकर्मों को क्या चलेही कहना ? + २ जो कर्म उदय में नहीं आये हैं, बहुत आगामिक काल में उदय आवेंगे उनको शुभ अध्यवसाय से आकर्ष कर उदय में लावे उसे उदीरणा कहते हैं. इस तरह प्रथम समय में उदीरणा करते को उदीरेही क्या कहना ? ३ कर्म उदय में आकर प्रथम समय में वेदते होवे उन्हें क्या वेदेही कहना. ? ४ जो कर्म पुद्गल जीव के प्रदेश से अवलम्बन कर रहे थे वे पतन होने लगे उन्हे क्या पतन हुवा कहना ? ५ जो कर्म दीर्घकाल की स्थितिवाले थे उनका छेदन कर अल्प काल की स्थितिवाले बनाये, इस तरह से प्रथम समय में छेदते को छेदा कहना ? ६ जो कर्म तीव्ररस देने वाले थे उनको मंद रस देनेवाले बनाये इस तरह उनकर्मों का प्रथम समयमें भेदतेको भेदे कहना. ? ७ ध्यानरूप ज्वालासे कर्मरूप

+ श्री सुधर्मा स्वामी ने सूत्र की आदि में अन्य अनेक प्रश्नों को छोडकर "चलमाणे चालिए" यह प्रश्न क्यों ग्रहण किया ? समाधान-धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चारों को साधने में उद्यमश्रेष्ठ कहा है. चारों में मोक्ष श्रेष्ठ है वह कर्मक्षय से होता है और कर्म क्षय अनुक्रम से होता है इसलिये प्रधान हेतु की सिद्धि के लिये प्रथम ही "चलमाणे चालिए" इसप्रश्नसे निश्चय किया कि जिनके कर्म अपने अनादि स्वभावकी सिद्धिसे चलित हुवे उन को चले ही कहना मोक्ष प्राप्ति का प्रथम कार्य में ही यह दर्शाया है.

शब्दार्थ अथवा णा० विविध अर्थी वि० विविधउच्चारके णा० विविध व्यंजनके गो० गौतम ए० ये च० चार पद ए० एकअर्थी णा० विविध उच्चार णा० विविध व्यंजन उ० उत्पन्न पक्षके ए० ये पं० पांचपद णा० विविधअर्थी णा० विविध उच्चारके

सूत्र णाणा वंजणा? गोयमा! चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेइज्जमाणे वेइए, पहेज्ज-माणे पहीणे, एएणं चत्तारि पया एगट्ठा णाणा घोसा, णाणावंजणा उप्पण्ण

भावार्थ ये चार पद उत्पन्न पक्ष आश्रित एक अर्थवाले, अनेक घोष, व अनेक व्यंजनवाले हैं यहांपर दो पक्ष ग्रहण किये हैं एक उत्पाद पक्ष और दूसरा विगम पक्ष. उस में उक्त चारों पद केवल ज्ञान सो उत्पाद और मोक्ष सो विगत पद. उस में यह चारों पद केवल उत्पाद विषयक होने से एक अर्थ वाले कहे हैं जैसे केवल ज्ञान पर्याय जीव को पहिले नहीं प्राप्त हुई थी और जीव का प्रयास केवल ज्ञान निमित्त है इसलिये वह ही केवल ज्ञान उत्पत्ति पर्याय कहा. जो कर्म चलायमान होवेंगे वे उदय में आवेंगे और जो उदय में आवेंगे वे वेदे जावेंगे और वेदे पीछे क्षीण होवेंगे, इस लिये उत्पाद पक्ष में ये चारों पद एकार्थ वाची जानना. अथवा स्थिति बंधादि अविशेषित सामान्य आश्रय से एकार्थ है. केवल उत्पादक पक्ष के साधक हैं, क्यों कि उत्पन्न पक्ष में कर्म चिंता का प्रक्षीणपना होता है. छिन्न पद में स्थिति का विगम कहा. भिन्न पद में रसका विगम कहा. दज्झ पद में दाहरूप विगम कहा, मिज्ज पद में आयुष्य कर्म अगारका विगम कहा, णिज्जरिज्ज पद में सब कर्म का निगम कहा इस लिये इन को विगत पक्ष में

शब्दार्थ निर्जरनेको णि० निर्जरा॥५॥ए० येन ० नवपद किं० क्या ए० एक अर्थी णा० विविध उच्चारके णा० विविध व्यंजनके उ०

मूत्र णे ? ॥ हंता गोयमा ! चलमाणे चालिए जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे ॥ ५ ॥ एएणं भंते नवपदा किं एगट्ठा, णाणा घोसा, णाणा वंजणा उदाहु णाणट्ठा, णाणा घोसा,

भावार्थ ७ जो शुभ ध्यानरूप अग्नि से कर्म रूप इन्धन जलानेलगा वह कर्म को जलावेगा ८ जिसके आयुष्य का पुद्गल क्षीण होनेलगा वह मरेगा ९ जिसने कर्म की निर्जरा करनी शरु की वह कर्म की निर्जरा करेगा. इस रीति से इन नव कार्यों को प्रारंभ करते ही बनाहुवा कहना ॥ ५ ॥ पुनः गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! इन नव पद का क्या एक अर्थ या एक प्रयोजन है ? या उदात्त, अनुदात्त व स्वरित घोषवाले हैं ? अनेक व्यंजनमय है ? अथवा विविध प्रकार के अर्थवाले, घोषवाले, या व्यंजनवाले हैं ÷ अहो गौतम ! १ चलमाणे चलिए २ उदीरिज्जमाणे उदीरिए, ३ वेइज्जमाणे वेइए ४ पहेज्जमाणे पहीणं

÷ यहां चौभंगी जानना. १ एक अर्थ एक व्यंजन जैसे क्षीर क्षीर २ एक अर्थ अनेक व्यंजन यथा क्षीरं पयः ३ अनेक अर्थ एक व्यंजन अर्क गोमहिषी का क्षीर ४ अनेक अर्थ अनेक व्यंजन घट पटादि. इस में दूसरा चौथा भांगा यहां ग्रहण किया है, अन्य दोनों भांगे असंभवित होनेसे नहीं ग्रहण किये हैं इस सूत्र में चलमाणआदि चार पद आश्रित दूसरा भांगा जानना और छिज्जमाणे वगैरह पांचपद आश्रित चौथा भांगा जानना.

शब्दार्थ श्वासेल ऊ० ऊंचाश्वासले णी० नीचाश्वासले जं० जैसे उ० ऊश्वासपद में ॥ ८ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् आ० आहाराके अर्थी ज० जैसे प०पन्नवणा में प० प्रथम शतक में आ० आहार उद्देशे में त० तैसे भा० कहना ठि० स्थिति उ० ऊश्वास आ० आहार किं० किंसतरह आ० आहारले स० सर्वसे क० कितना भाग स० सर्व की० किसप्रकार से भु० वारंवार प० परिणमें ॥ ९ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् पु० पूर्व आ०

सूत्र

जहा उस्सासपदे ॥ ८ ॥ णेरइयाणं भंते आहारट्ठी, ? जहा पन्नवणाए पढमसए आहारुद्देसए तहा भाणियव्वं ॥ गाथा ॥ ठिति उस्सासाहारे, किंवाहारेइ सव्वओवावि; कइभागं सव्वाणिव कीसव भुज्जो परिणमंति ॥ १ ॥ ९ ॥ णेरइयाणं भंते पुव्वा-

भावार्थ के जीव निरंतर समय मात्रका विरह रहित-श्वासोश्वास लेते हैं ऐसा कहा है वैसेही यहां जानना. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् नारकी आहार के अर्थी- वांच्छक हैं? इस का पन्नवणा सूत्र में प्रथम शतक के आहार उद्देशे में जैसे कहा है वैसे कहना. नारकी कैसे आहारलेवे? आत्मा के सब प्रदेश से आहार लेवे. नारकी कितना आहार लेवे? आहार निमित्त जितने पुद्गल ग्रहण किये होवे उस के असंख्यातवे भाग का आहार लेवे, अनंत भाग में आस्वादे, अथवा आहार परिणम योग्य सब पुद्गल का आहार करे. जिन पुद्गलों का आहार किया है वे पुद्गलों किस प्रकार से वारंवार परिणमते हैं? वे आहार के पुद्गलों इन्द्रियपने यावत् दुःख पने परिणमते हैं. वगैरह सब अधिकार विस्तार पूर्वक पन्नवणा सूत्र से जानना ॥ ९ ॥ अब नारकी

शब्दार्थ

णा० विविधव्यंजन के वि० विगतपक्ष को॥ ८ ॥ णे० नारकी को भं० भगवन् के० कितने कालकी ठि० स्थिति प० प्ररूपी गो० गौतम ज० जघन्य द० दशवर्षस० सहस्र उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् के० कीतना का० काल में आ० थोडाश्वासले पा० वहुत

सूत्र

पक्खस्स छिज्जमाणे छिण्णे भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए णिज्जरिज्ज-माणे णिज्जिण्णे, एएणं पंचपदा-णाणट्ठा, णाणाघोसा, णाणा वंजणा, विगय पक्ख-स्स ॥ ८ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ७ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ?

भावार्थ

एक कहे हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष की अपेक्षा से विविध प्रकार के अर्थ, घोष, व व्यंजनवाले हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष वाचक हैं. इसका अन्तिम नववा पदमें मोक्षकी कथा कही और वह मोक्ष जीवको होता है. ॥८॥ नरकादिक चौविस दंडक के जीव कहे जाते हैं. उन में से प्रथम नरककी स्थितिका प्रश्न चलता है अहो भगवन् ! नरक के नेरइयों की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! नारकी की प्रथम नरक की अपेक्षासे जघन्य दश हजार वर्ष की और सातवी नरक की अपेक्षासे उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की कही. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् नारकी कितनेकाल तक श्वासोश्वास लेवे ? अहो गौतम जैसे श्वासोश्वासपद में नारकी

द्विसंजोगी १५		त्रिसंजोगी २०		चतुःसंजोगी १५	पंचसंजोगी ६
१२	१२३		२५६	१२३४	१२३४५
१३	१२४		३४५	१२३५	१२३४६
१४	१२५		३४६	१२३६	१२३५६
१५	१२६		३५६	१२४५	१२४५६
१६	१३४		४५६	१२४६	१३४५६
२३	१३५			१२५६	२३४५६
२४	१३६			१३४५	
२५	१४५			१३४६	
२६	१४६			१३५६	छसंजोगी १
३४	१५६			१४५६	१२३४५६
३५	२३४			२३४५	एक संजोगी ६
३६	२३५			२३४६	
४५	२३६			२३५६	१ ४
४६	२४५			२४५६	२ ५
५६	२४६			३४५६	३ ६

करते पो० पुद्गल प० परिणमें प० परिणमते हैं अनाहारी आ० आहार करेंने पो० पुद्गल णो० नहीं प० परिणमें प० परिणमेंगे अ० अनाहारीक अ० आहार नहीं करेंगे पो० पुद्गल णो० नहीं

परिणमंतिय। अणाहारिया आहारिज्जस्समाणा पोग्गला णो परिणया परिणामिस्संति। अणाहारिया अणाहारिज्जस्समाणा पोग्गला णो परिणया णो परिणामिस्संति ॥ १० ॥ णेरइयाणं भंते पुव्वाहारिया पोग्गला त्तिया ॥ पुच्छा ॥

अहो गौतम ! नारकी को पहिले ग्रहण किये हुये पुद्गल परिणमें क्यों कि ग्रहण किये पीछे ही पुद्गल परिणमते हैं पूर्व कालमें ग्रहण किये वर्तमान में ग्रहण करते हैं वैसे पुद्गलों नारकी को परिणमें और परिणमते हैं अतीत काल में पुद्गल नहीं ग्रहण किये हैं और भविष्य में ग्रहण करेंगे वैसे पुद्गल नारकी को परिणमें नहीं हैं परंतु अनागत में ग्रहण किये अनंतर परिणमेंगे, अतीत काल में ग्रहण नहीं किये और भविष्यमेंभी ग्रहण नहीं करेंगे वैसे पुद्गल नारकी को परिणमें नहीं और परिणमेंगे

शब्दार्थ आहारकिये पो० पुद्गल प० परिणमें आ० आहारकिये आ० आहार करते पो० पुद्गल प०परिणमें अ०आ-रनहीं किये आ० आहार करेंगे पो०पुद्गल प०परिणमें अ०आहारनहींकिये अ० नहीं आहार करेंगे पो० पुद्गल प०परिणमें गो०गौतम! णे०नारकी पु०पूर्वेआहारनहींकिये पो०पुद्गल प०परिणमें आ० आहारकिये आ०आहा

सूत्र हारिया पोग्गला परिणया आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया अणाहारिया आहारि ज्जस्समाणा पोग्गला परिणया अणाहारिया अणाहारिज्जस्समाणा पोग्गला परिणया? गोयमा णेरइयाणं पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया, आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया

भावार्थ के आहाराधिकार से आहार विषयिक प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! नारकी को पहिले-शरीर साथ आहार किये हुवे पुद्गल क्या परिणमे ? पूर्वकाल में जिन पुद्गलों का आहार किया होवे अथवा वर्तमान में आहार करते हैं वे पुद्गलों नारकी को क्या परिणमें ? पूर्वकाल में जिन पुद्गलों का आहार नहीं किया और भविष्य में आहार करेंगे वैसे पुद्गलों क्या नारकी को परिणमें ? और पूर्वकाल में आहार के पुद्गलों संग्रहे नहीं और अनागत में भी संग्रह करेंगे नहीं वैसे पुद्गलों क्या नारकी को परिणमें ? यहां चार प्रश्न कहे उस के ६३ भांगे होते हैं. अतीत काल में आहारे, वर्तमान में आहारते हैं और अनागत में आहारेंगे, अतीत काल में आहारे नहीं, वर्तमान में नहीं आहारते हैं और भविष्य में आहारेंगे नहीं इस तरह छ पद के ६३ भांगे होते हैं. अब भगवंत श्री महावीर स्वामी उत्तर देते हैं.

शब्दार्थ अ० आश्री दु० दोप्रकार के पो० पुद्गल चि० चिने अ० सूक्ष्म बा० बादर ए० ऐसे उपाचेन णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल उ०उदीरते हैं गो० गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दोप्रकारके पो०पुद्गल उ०उदीरते हैं उ०अपवर्तनकिये उ०अपवर्तते हैं उ०अपवर्तेंगे सं०संक्रमे सं०संक्रमते हैं सं० संक्रमेंगे नि० बिखरे नि० बिखरते हैं नि० बिखरेंगे नि० एकत्रित हुवे नि० एकत्रित होते हैं नि० एकत्रित

सूत्र कतिविहा पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! आहारदव्व वग्गणमहिकिच, दुविहा पोग्गला चिज्जंति तंजहा अणूचेव बायराचेव. । एवं उवचिज्जंति ॥ णेरइयाणं भंते कतिविहा पोग्गला उदीरंति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमहिकिच्च दुविहा पोग्गला उदीरंति, तंजहा—अणूचेव बायराचेव । सेसावि एवं चेव भाणियव्वा । वेदंति । णिज्जरंति । उयट्टिंसु । उयट्टंति । उयट्टिस्संति ॥ संकामिंसु । संकामंति । संकामिस्संति॥

भावार्थ सेही शरीर संबंधी चय उपचय पहिले कहा. आहार में ही चय उपचय होता है परंतु अन्य द्रव्य से नहीं होता है. उस में सूक्ष्म सो केवलि गम्य और बादर सो चर्मचक्षु ग्राह्य है. ऐसे ही उपचित आश्रित कहना. अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल की उदीरना होवे ? अहो गौतम ! नारकी को कर्मद्रव्य वर्गणा आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल की उदीरणा होवे. क्यों की उदीरनादिक कर्म द्रव्य को होती है ऐसे ही ५ वेदे ६ निर्जरे ७ अपवर्तन हुवे. ८ अपवर्तन होता है, ९ अपवर्तन होवेंगे १०

१ अध्यवसाय से कर्म स्थिति को हीन करना यहां अपवर्तन में उपलक्षण से उद्वर्तन भी ग्रहण करना उद्वर्तन सो स्थिति आदि की वृद्धि करना.

शब्दार्थ प०परिणमें णो०नहीं प०परिणमेंगे॥१०॥णे०नारकीने भं०भगवन् पु०पूर्वाहारी पो०पुद्गल चि०इकठेकिये ज० जैसे प० परिणमें त० तैसे चि० इकठेकिये उ० उपचिने उ० उदीरे वे० वेदे णि० निर्जरे ए० एकेक प० पदमें च०चार प्रकारकेपो०पुद्गल हैं॥११॥णे०नारकी क०कितने प्रकारसे पो०पुद्गल भि०भेदातेहैं गो०गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दोप्रकार के पो० पुद्गल भि० भेदावे अ० सूक्ष्म बा० बादर णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल चि० चिणे गो० गौतम ! आ० आहार द० द्रव्य व० वर्गणा

सूत्र परिणया तहा चियावि एवंचिया उवचिया, उदीरिया, वेइया, णिज्जिणा॥गाथा॥परिणत चियाय उवचिया उदीरिया वेइयाय णिज्जिण्णा, एक्किक्कम्मि पदम्मि चउव्विहा पोग्गलाहोंति ॥ १ ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते कतिविहा पोग्गला भिंजाति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमाहिगिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जंति तंजहा अणूचेव, बायराचेव णेरइयाणं भंते

भावार्थ नहीं.॥१०॥अहो भगवन् नारकीको पहिले आहारे हुवे पुद्गल एकत्रित किये? अहो गौतम इसका सब खुलासा जैसे परिणमें का कहा वैसे ही जानना. और इसी तरह बहुत एकत्रित किये, उदीरे, वेदे और निर्जरे ऐसे एक २ पद में चार २ भेद जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् नारकी को कितने पुद्गल अनुभाग भेद से भेदावे ? अर्थात तीव्रमंद, मध्यभेद से भेदपावे, उद्वर्तन करण से मन्दरस तीव्रहोवे तीव्ररस मंद होवे ? अहो गौतम कर्म द्रव्यवर्गणाके आश्रित दो प्रकारके पुद्गल भेदपावे सूक्ष्म व बादर. उदारिकादि द्रव्यमें कर्म द्रव्यही सूक्ष्म है. अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल चिणे, एकत्रित हुवे ? अहो गौतम आहार द्रव्य वर्गणा के आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल एकत्रित होते हैं क्यों की आहार द्रव्य

शब्दार्थ अ० आश्री दु० दोप्रकार के पो० पुद्गल चि० चिने अ० सूक्ष्म बा० बादर ए० ऐसे उपचिन णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं गो० गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दोप्रकारके पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं उ० अपवर्तनाकिये उ० अपवर्तते हैं उ० अपवर्तेंगे सं० संक्रमे सं० संक्रमते हैं सं० संक्रमेंगे नि० विखरे नि० विखरते हैं नि० विखरेंगे नि० एकत्रित हुवे नि० एकत्रित होते हैं नि० एकत्रित

सूत्र कतिविहा पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! आहारदव्व वग्गणमाहिकिच्च, दुविहा पोग्गला चिज्जंति तंजहा अणूचेव बायराचेव. । एवं उवाचिज्जंति ॥ णेरइयाणं भंते कतिविहा पोग्गला उदीरंति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमाहिकिच्च दुविहा पोग्गला उदीरंति, तंजहा-अणूचेव बायराचेव । सेसावि एवं चेव भाणियव्वा । वेदंति । णिज्जरंति । उयाट्टिंसु । उयट्टंति । उयट्टिस्संति ॥ संकामिंसु । संकामंति । संकामिस्संति॥

भावार्थ सेही शरीर संबंधी चय उपचय पहिले कहा. आहार से ही चय उपचय होता है परंतु अन्य द्रव्य से नहीं होता है. उस में सूक्ष्म सो केवलि गम्य और बादर सो चर्मचक्षु ग्राह्य है. ऐसे ही उपचिन आश्रित कहना. अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल की उदीरना होवे ? अहो गौतम ! नारकी को कर्मद्रव्य वर्गणा आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल की उदीरणा होवे. क्यों की उदीरनादिक कर्म द्रव्य को होती है ऐसे ही ५ वेदे ६ निर्जरे ७ अपवर्तन हुवे. ८ अपवर्तन होता है, ९ अपवर्तन होवेंगे १०

---

१ अध्यवसाय से कर्म स्थिति को हीन करना यहां अपवर्तन में उपलक्षण से उद्वर्तन भी ग्रहण करना उद्वर्तन सो स्थिति आदि की वृद्धि करना.

शब्दार्थ होग स० सर्व मे क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री भे० भेद चि० चिन उ० उपचिन उ० उदीर वे० वेद णि० निर्जरा उ० अपवर्तन सं० संक्रमन नि० निधत्त णि० निकाच ति० तीन प्रकार का का० काल ॥ १२ ॥ न० नारकी जे जो पो० पुद्गल ते० तेजस् क० कार्माणपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं०

सूत्र निहत्तिंसु । निहत्तंति । निहत्तिस्संति निकाइंसु । निकायंति । निकाइस्संति ॥ सव्वे-सुवि कम्म दव्ववग्गण महिकिच्च ॥ गाथा ॥ भेदिय चिता उवचिता, उदीरिता वे-दियाय णिज्जिण्णा । उवट्टण संकामण णिहत्तणिकायणे तिविह कालो ॥ १ ॥ १२ ॥ णेरइयाणं भंते जे पोग्गला तेया कम्मत्ताए गिण्हंति, ते किं तीतकाल समए गिण्हंति?

भावार्थ मूल व उत्तर प्रकृतियों का अध्यवसाय से परस्पर संचार होना उसे संक्रमन कहते हैं. अतीत काल में संक्रमण ११ हुवा, वर्तमान काल में संक्रमण होता है और १२ आगामिक में संक्रमण होगा, भिन्न २ बिखरे हुवे पुद्गलों को निधत्त करना. १३ ऐसे अतीत काल में एकत्रित किये, १४ वर्तमान में कर रहे हैं १५ आगामिक में एकत्रित करेंगे. १६ अतीत काल में निकाचे, १७ वर्तमान में निकाचते हैं और १८ आगामिक में निकाचेंगे उक्तसब १८ भेद कर्म द्रव्य वर्गणा आश्रित जानना. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! नारकी जो पुद्गल तेजस व कार्माण शरीरपने ग्रहण करते हैं वे क्या अतीतकाल में ग्रहण करते हैं, वर्तमान

शब्दार्थ क्या ती० अतीत काल स० समय में गि० ग्रहण करते हैं प० वर्तमान समय में गि० ग्रहण करते हैं अ० अनागत स० समय में गि० ग्रहण करते हैं गो० गौतम णो० नहीं ती० अतीत काल में गि० ग्रहण करते हैं प० वर्तमान काल में गि० ग्रहण करते हैं णो० नहीं अ० अनागत काल में गि० ग्रहण करते हैं णे० नारकी जे० जो पो० पुद्गल ते० तेजस क० कार्माणपने ग० ग्रहाहुवा उ० उदीरते हैं ते० वे किं क्या ती० अतीत काल में ग० ग्रहा हुवा पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं प० वर्तमान काल में घि० लेते

सूत्र पडुप्पण्ण कालसमए गिण्हंति ? अणागय काल समए गिण्हंति ? गोयमा ! णो तीत कालसमए गिण्हंति, पडुप्पण्ण कालसमए गिण्हंति, णो अणागय कालसमए गिण्हंति णेरइयाणं भंते ज पोग्गला तेयाकम्मत्ताए गहिए उदीरंति; ते किं तीत कालसमय गहिए पोग्गले उदीरंति, पडुप्पण्ण काल समय घिप्पमाणे पोग्गले उदीरंति, गहण समय पुरक्खडे पोग्गले उदीरंति ? गोयमा ! तीत काल समय गहिए

भावार्थ में ग्रहण करते हैं या अनागत में ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! अतीत काल में नहीं ग्रहण करे वर्तमान काल में ग्रहण करे और अनागत काल में ग्रहण करे नहीं. अहो भगवन् नारकी जो पुद्गल तेजस कार्माण कर्मपने ग्रहण करके उदीरते हैं. वे क्या अतीत काल के ग्रहण किये पुद्गल उदीरते हैं, वर्तमानकाल में ग्रहण करते पुद्गल उदीरते हैं अथवा ग्रहण समय से आगे के पुद्गल उदीरते हैं ? अहो गौतम!

शब्दार्थ हंता स० सर्व में क० कर्म द्र० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री भे० भेद चि० चिन उ० उपचिन उ० उदीर वे० वेद णि० निर्जरा उ० अपवर्तन सं० संक्रमन नि० निधत्त णि० निकाच ति० तीन प्रकार का का० काल ॥ १२ ॥ न० नारकी ज० जो० पो० पुद्गल ते० तेजस् क० कार्माणपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं०

सूत्र निहत्तिंसु । निहत्तंति । निहत्तिस्संति निकाइंसु । निकायंति । निकाइस्संति ॥ सव्वे-सुवि कम्म दव्ववग्गण महिकिच्च ॥ गाथा ॥ भेदिय चिया उवचिया, उदीरिया वे-दियाय णिज्जिण्णा । उवट्टण संकामण णिहत्तणिकायणे तिविह कालो ॥ १ ॥ १२ ॥ णेरइयाणं भंते जे पोग्गले तेया कम्मत्ताए गिण्हंति, ते किं तीतकाले समए गिण्हंति?

भावार्थ यह व उत्तर प्रकृतियों का अन्योन्य म परस्पर संचार होना उसे संक्रामन कहते हैं. अतीत काल में संक्रमण ११ हुवा, वर्तमान काल में संक्रमण होता है और १२ आगामिक में संक्रमण होवेगा, भिन्न १ विखरे हुवे पुद्गलों को निधत्त करना. १३ ऐसे अतीत काल में एकत्रित किये, १४ वर्तमान में कर रहे हैं १५ आगामिक में एकत्रित करेंगे. १६ अतीत काल में निकाचे, १७ वर्तमान में निकाचते हैं और १८ आगामिक में निकाचेंगे उक्तसब १८ भेद कर्म द्रव्य वर्गणा आश्रित जानना. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! नारकी जो पुद्गल तेजस व कार्माण शरीरपने ग्रहण करते हैं वे क्या अतीतकाल में ग्रहण करते हैं, वर्तमान

अर्थ — संग्रहते स० सर्व में अ० अचलित नो० नहीं च० चलित ने० नारकी जी० जीव किं क्या स० चलित क० कर्म णि० णिर्जरे अ०अचलित गो०गौतम च० चलित क०कर्म णि०णिर्जरे णो० नहीं अ० अचलित क० कर्म णि० णिर्जरे वं० बंध उ०उदय उ०अपवर्त सं० संक्रमन नि० निधत्त नि०निकाच में अ० अचलित क० कर्म भ० होवे च० चलित णिं० निर्जरा में ॥ १४ ॥ अ० असुर कुमार की भं० भगवन् के० कितना का०

सूत्र — उदीरंति, अचलियं कम्मं उदीरंति ? गोयमा णो चलियं कम्मं उदीरंति अचलियं कम्मं उदीरंति । एवं वेदंति उयट्टंति । संकामंति । निहत्तंति । णिकायंति । सव्वेसु अचलियं णो चलियं णेरइयाणं भंते जीवाओ किं चलियं कम्मं णिज्जरेंति अचलियं कम्मं णिज्जरेंति ? गोयमा ! चलियं कम्मं णिज्जरेंति, णो अचलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ गाहा ॥ बंधोदयवेदोवट्ट संकमण णिहत्त णिकाएसु । अचलियं कम्मंतुभवे, चलियं जीवाउ णिज्जरए ॥ १४ ॥ असुरकुमारणं भंते केवइयं कालं

भावार्थ — की उदीरणा करे या अचलित कर्म की उदीरणा करे ? अहो गौतम ! चलित कर्म की उदीरणा करे नहीं परंतु अचलित कर्म की उदीरणा करे. ऐसे ही ३ वेदना, ४ क्षीण करना ५ संक्रमाना ६ धारना ७ निकाचना इन सब में चलित कर्म लेना नहीं परंतु अचलित कर्म लेना ८ अहो भगवन् नारकी जीव-प्रदेश से चलित कर्म की निर्जरा करते हैं या अचलित कर्म की निर्जरा करते हैं ? अहो गौतम ! नारकी

शब्दार्थ पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं ग० ग्रहण समय पु० आगे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं गो० गौतम ! ती० अतीत काल में ग० ग्रहे हुवे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं णो० नहीं प० वर्तमान में घि० लेते हुवे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं णो० नहीं ग्रहण समय पु० आगे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं ए० ऐसे दे० वेदते हैं णि० निर्जरते हैं ॥ १३ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् जी० जीव किं० क्या च० चलित क० कर्म बं० बांधे अ० अचलित क० कर्म बं० बांधे गो० गौतम णो० नहीं च० चलित क० कर्म बं० बांधे अ० अचलित क० कर्म बं० बांधे उ० उदीरे वे० वेदे उ० अपवर्ते सं० संक्रमे नि० निवर्ते नि०

सूत्र पोग्गले उदीरंति णो पडुप्पण्ण काल समय घिप्पमाणे पोग्गले उदीरंति, णो गहण समय पुरक्खडे पोग्गले उदीरंति । एवं वेदंति । णिज्जरंति ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते जीवाओ किंचलियं कम्मंबंधंति, अचलियं कम्मंबंधंति ? गोयमा णोचलियं कम्मंबंधंति अचलियं कम्मं बंधंति णेरइयाणं भंते जीवाओ किंचलियं कम्मं

भावार्थ अतीत काल में ग्रहण किये पुद्गल उदीरते हैं परंतु वर्तमान में ग्रहण करते अथवा ग्रहण समय आगे के पुद्गल उदीरते नहीं हैं ऐसेही वेदन निर्जरा का जानना. ॥ १३ ॥ १ अहो भगवन् ! नारकी जीव प्रदेश मे क्या चलित कर्म का बंधकरे या अचलित कर्म का बंधकरे ? अहो गौतम ! तेजस कर्म के योगसे चलित कर्म का बंधकरे नहीं परंतु अचलित कर्म का बंधकरे अहो भगवन् नारकी जीव प्रदेश से चलित कर्म

अर्थ संग्रहते स० सर्व में अ० अचलित नो० नहीं च० चलित ने० नारकी जी० जीव किं क्या च० चलित क० कर्म णि० णिर्जरे अ०अचलित गो०गौतम च० चलित क०कर्म णि०णिर्जरे णो० नहीं अ० अचलित क० कर्म णि० णिर्जरे वं० बंध उ०उदय उ०अपवर्त सं० संक्रमन नि० निधत्त नि०निकाच में अ० अचलित क० कर्म भ० होवे च० चलित णिं० निर्जरा में ॥ १४ ॥ अ० असुर कुमार की भं० भगवन् के० कितना का०

सूत्र उदीरंति, अचलियं कम्मं उदीरंति ? गोयमा णो चलियं कम्मं उदीरंति अचलियं कम्मं उदीरंति । एवं वेदंति उयट्टंति । संकामंति । निहत्तंति । णिकायंति । सव्वेसु अचलियं णो चलियं णेरइयाणं भंते जीवाओ किं चलियं कम्मं णिज्जरंति अचलियं कम्मं णिज्जरंति ? गोयमा ! चलियं कम्मं णिज्जरंति, णो अचलियं कम्मं णिज्जरंति ॥ गाहा ॥ बंधोदयवेदोवट्ट संकमण णिहत्त णिकाएसु । अचलियं कम्मंतुभवे, चलियं जीवाउ णिज्जरए ॥ १४ ॥ असुरकुमारणं भंते केवइयं कालं

भावार्थ की उदीरणा करे या अचलित कर्म की उदीरणा करे ? अहो गौतम ! चलित कर्म की उदीरणा करे नहीं परंतु अचलित कर्म की उदीरणा करे. ऐसे ही ३ वेदना, ४ क्षीण करना ५ संक्रमाना ६ धारना ७ निकाचना इन सब में चलित कर्म लेना नहीं परंतु अचलित कर्म लेना ८ अहो भगवन् नारकी जीव-प्रदेश से चलित कर्म की निर्जरा करते हैं या अचलित कर्म की निर्जरा करते हैं ? अहो गौतम ! नारकी

शब्दार्थ काल की ठि० स्थिति गो० गौतम ज० जघन्य द० दश वर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट सा० अधिक सा० सागरोपम ॥ २९ ॥ असुर कुमार के० कितनाकाल में आ० थोडा श्वासले पा० बहुत श्वास से ऊ० ऊंचा श्वासले नी० नीचाश्वासले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थो० स्तोक उ० उत्कृष्ट सा० अधिक प० पक्ष

सूत्र ठिई प० गोयमा जहण्णेणं दस वास सहस्साइं ठिई प० उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं ॥ १५ ॥ असुरकुमाराणं भंते केवइयं कालं आणमंतिवा, पाणमंति वा ऊससंतिवा, नीससंतिवा ॥ पुच्छा ॥ गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा, ॥ १६ ॥ असुर-

भावार्थ चलित कर्म की निर्जरा करे अचलित कर्म की निर्जरा करे नहीं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! असुरकुमार की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुछ अधिक कही [उत्तर दिशाके बलेन्द्र आश्रित जानना] ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमारके देव कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार के देव जघन्य सात स्तोक में उत्कृष्ट एक पक्ष से कुछ अधिक में श्वासोश्वास लेवे ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! वे आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! कितने समय में उन को आ-

१ असुरनिकायमें उत्पन्न होनेसे व कुमारकी तरह क्रीडा करनेसे असुरकुमार कहाये गये हैं।

शब्दार्थ ॥ १९ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् आ० आहार के अर्थी हं० हां आ० आहार के अर्थी अ० असुर कुमार को भं० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० असुर कुमार को दु० दोप्रकार का आ० आहार आ० आभोगनिर्वर्तित अ० अनाभोगनिर्वर्तित त० तहां जे० जो अ० अनाभोग निर्वर्तित से० वह अ० समय समय में अ० आंतरा रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे त० तहां जे० जो आ० आभोग निर्वर्तित से वह ज० जघन्य च० चतुर्थभक्त

सूत्र कुमाराणं भंते आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी । असुर कुमाराणं भंते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! असुर कुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा आभोगनिव्वत्तिएय, अणाभोग णिव्वत्तिएय । तत्थणं जे से अणाभोगणिव्वत्तिए से अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ । तत्थणं जे से आभोगणिव्वत्तिए से जहण्णेणं चउत्थ भत्तस्स उक्कोसेणं

भावार्थ १ आहार की इच्छा उत्पन्न होती है ? अहो गौतम ! असुर कुमार को दो प्रकार का आहार कहा. १ आभोग निर्वर्तित सो जानते हुवे आहार लेवे और २ अनाभोग निर्वर्तित सो अनजान से करे. उस में जो अनाभोग निर्वर्तित आहार है उस की इच्छा प्रतिसमय विरह रहित नारकी को उत्पन्न होवे और आभोग निर्वर्तित जो आहार है उस की इच्छा जघन्य चतुर्थ भक्त (एक दिन) में उत्पन्न होवे उत्कृष्ट एक हजार

शब्दार्थ

उ० उत्कृष्ट सा० सातिरेक वा० सहस्र वर्ष में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे ॥ १७ अ० असुर कुमार किं० क्या आ० आहार आ० ग्रहण करते हैं गो० गौतम द० द्रव्य से अ० अनंत प० प्रदेश द० द्रव्य खे० क्षेत्र का० काल भा० भाव से प० पन्नवणा में से० शेष जं० जैसे णे० नारकी को जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीसतरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम सो० श्रोतेन्द्रियपने सु० सुरूपपने सु० अच्छावर्णपने इ० इष्टपने इ० इच्छापने अ० अच्छी वांच्छापने उ० प्रधानपने णो० नहीं अ०

सूत्र

साइरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ. ॥ १७ ॥ असुरकुमाराणं भंते किं आहार माहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं खेत्त काल भाव पण्णवागमेणं सेसं जहा णेरइयाणं जाव तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ता भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोइंदियत्ताए, सुरूवत्ताए, सुवण्णत्ताए, इट्ठत्ताए, इच्छियत्ताए,

भावार्थ

वर्ष से कुच्छ अधिक समय में उत्पन्न होवे ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के देवता क्या आहार करे ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशी द्रव्य का आहार करे, क्षेत्र से, काल से, भाव से आ-हार करने की विधि जैसी पन्नवणा सूत्र में कही है वैसी यहां जानना और शेष सब अधिकार नारकी का कहा वैसे ही यहां कहना. और उनको पुद्गल कीस तरह परिणमते हैं ? उन को पुद्गल श्रोतेन्द्रियपने, सुरूप, सर्वोत्कृष्ट वर्ण, इष्टपने, ईप्सितपने-षड्ऋतु में सुखदायीपना से, वारंवार ऐसाही बना रहुं ऐसी

शब्दार्थ

अधोपने सु० सुखपने णो० नहीं दु० दुःखपने भु० वारंवार प० परिणमते हैं ॥ १८ ॥ अ० असुर कुमार
भं० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमें अ० असुरकुमार के अ० अभिलाप से ज० जैसे णे०
नारकी जा० यावत् च० चलित क० कर्म णि० निर्जरते हैं ॥ १९ ॥ ना० नागकुमार की भं० भगवन्
के० कितना काल की ठि० स्थिति गो० गौतम ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट दे० देशऊण,

सूत्र

अभिज्झियत्ताए, उड्ढत्ताए णो अहत्ताए सुहत्ताए णोदुहत्ताए भुज्जो भुज्जो परिण-
मंति ॥ १८ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ? असुर
कुमाराभिलावेणं जहा णेरइयाणं जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ १९ ॥ णाग
कुमाराणं भंते केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं
उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ॥ २० ॥ नागकुमाराणं भंते केवइय काल

भावार्थ

इच्छापने, ऊर्ध्वपने, अधोपने नहीं, व सुखपने वारंवार परिणमते हैं परंतु दुःखपने नहीं परिणमते हैं ॥१८॥
अहो भगवन् ! असुरकुमार को पूर्व के ग्रहण किये हुवे पुद्गल परिणमें ? वे चलित कर्म की निर्जरा
करते हैं वहां तक असुरकुमारका सब अधिकार नारकीका अधिकार जैसे कहना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् !
नागकुमार जाति के देवता की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! नाग कुमार जाति के
देवता की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट देश ऊना दो पल्योपम की स्थिति कही ॥ २० ॥ अहो भगवन्!

शब्दार्थ

दो० दोपल्योपम की ॥ २० ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् के० कितना काल में आ० थोडाश्वास ले पा० वहुत श्वास ले ऊ० ऊंचा श्वास ले नीचा श्वास ले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थोभ उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त पृथक ॥ २१ ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् आ० आहारके अर्थी हैं० हां आ० आहार के अर्थी णा० नागकुमार को भं० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे गो० गौतम ना० नागकुमार दु० दोप्रकार का आहार आ० आहारे आ० आभोग निर्वर्तित अ० अनाभोग

सूत्र

स्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा. ॥ २१ ॥ नागकुमाराणं भंते आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी । णागकुमाराणं भंते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! णागकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा

भावार्थ

नागकुमार के देवता कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! नाग कुमार देवता जघन्य सात स्तोक उत्कृष्ट मुहूर्त [1] पृथक्में श्वासोश्वास लेते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार जाति के देवता क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! नागकुमार जाति के देवता आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! उन को कितने काल में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! आहार दो प्रकार का है.

१ दो मुहूर्तसे नव मुहूर्ततक. इसको प्रत्येक मुहूर्तभी कहते हैं.

शब्दार्थ निवर्तित त० तहां जे० जो अनाभोग निवर्तित से०उनको अ०समय समयमें अ०आंतरा रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे त० तहां जे० जो आ० आभोग निवर्तित से०उनको ज० जघन्य च० चतुर्थभक्त उ० उत्कृष्ट दिं० दिवस पृथक् आ० आहार की स०इच्छा उत्पन्न होवे से० शेप ज० जैसे अ०असुरकुमार जा० यावत् च० चलित क० कर्म णि० निर्जरते हैं ॥ २२॥ ए० ऐसे सु०सुवर्ण कुमार को भी जा० यावत् थ० स्तनित कुमार को ॥२३॥ पु० पृथ्वी काया की भं० भगवन् के० कितना काल की ठि० स्थिति गो०

सूत्र आभोगाणिव्वत्तिएय, अणाभोगनिव्वत्तिएय । तत्थणं जे से अणाभोग णिव्वत्तिए से से अणुसमयं अविराहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ, तत्थणं जे से आभोग णिव्वत्तिए से-से अणुसमयं अविराहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ, सेसं जहा जहण्णेणं चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेणं दिवस पुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ, सेसं जहा असुरकुमारणं जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ २२ ॥ एवं सुवण्णकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणंति ॥२३॥ पुढविकाइयाणं भंते केवइयंकालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा !

भावार्थ १ आभोग निर्वर्तित, २ अनाभोग निर्वर्तित. उस में अनाभोग निर्वर्तित आहार की निरंतर समय २ में अविच्छिन्नपने इच्छा उत्पन्न होती रहती है और आभोग निर्वर्तित आहार की इच्छा जघन्य चतुर्थ भक्त उत्कृष्ट दिन प्रथक् अर्थात् दो दिन से नव दिन तक शेप चलित कर्म निर्जरे वहां तकका अधिकार असुर कुमार जैसे कहना ॥ २२ ॥ जैसे नागकुमार का कहा वैसे ही सुवर्णकुमार यावत् स्तनित कुमारका

शब्दार्थ

द्वो० दोपल्योपम की ॥ २० ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् के० कितना काल में आ० थोडाश्वास ले पा० बहुत श्वास ले ऊ० ऊंचा श्वास ले नीचा श्वास ले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थोभ उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त पृथक ॥ २१ ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् आ० आहारके अर्थी हं० हां आ० आहार के अर्थी णा० नागकुमार को भं० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स०उत्पन्न होवे गो० गौतम ना० नागकुमार दु० दोप्रकार का आहार आ० आहारे आ० आभोग निवर्तित अ० अनाभोग

सूत्र

स्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा. ॥ २१ ॥ नागकुमाराणं भंते आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी । णागकुमाराणं भंते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! णागकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा

भावार्थ

नागकुमार के देवता कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! नाग कुमार देवता जघन्य सात स्तोक उत्कृष्ट मुहूर्त रो पृथंकूमें श्वासोश्वास लेते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार जाति के देवता क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! नागकुमार जाति के देवता आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! उन को कितने काल में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! आहार दो प्रकार का है.

१ दो मुहूर्तसे नव मुहूर्ततक. इसको प्रत्येक मुहूर्तभी कहते हैं.

शब्दार्थ

उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० समय समय में अ० अंतर रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे पु० पृथ्वी काया भं० भगवन् किं० कौनसा आ० आहार आ० ग्रहण करे गो० गौतम द० द्रव्य से ज० जैसे णे० नारकी णि० निर्व्याघात छ० छदिशि में वा० व्याघात आश्री सि० क्वचित् ति० तीनदिशा में सि० क्वचित् च० चारदिशा में सि० क्वचित् पं० पांचदिशा में व० वर्ण से का० काला नी० नीला

सूत्र

आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! अणुसमयं अविराहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ पुढविकाइयाणं भंते किमाहार माहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ जहा णेरइयाणं. णिव्वाघाएणं छदिसिं वाघायंपडुच्च सियतिदिसिं सियचउदिसिं, सियपंचदिसिं, वण्णओ काल नील लोहिय हालिद्द सुक्किलाणं, गंधओ सुब्भिगंध दुराभिगंधाइं, रसओ तित्ताइं

भावार्थ

कायिक जीव क्या आहार करते हैं ? द्रव्य से अनंत प्रदेशात्मक द्रव्य का आहार करे वगैरह सब अधिकार नारकी जैसे कहना. निर्व्याघातें से छ दिशि का आहार लेवे पूर्वादिचार व ऊर्ध्व और अधो. व्याघात आश्रित अर्थात लोकान्त के ऊपर या नीचे व पूर्व दक्षिण में अलोक होवे वैसे स्थान उत्पन्न होने वाले पृथ्वी कायिक जीव तीन दिशा का आहार लेवें. ऊपर नीचे अलोक होवे वैसे स्थान में उत्पन्न होनेवाले चार दिशाका आहार करें, और छ दिशामें से एक दिशा में ही मात्र अलोक होवे वैसेस्थान उत्पन्न होनेवाले पांच

१ लोकान्त निष्कुट को व्याघात कहते हैं उसको छोडकर अन्यत्र उत्पन्न होनेवाले.

शब्दार्थ

गौतम ज० जघन्य अं० अन्तर्मुहुर्त उ० उत्कृष्ट बा० बावीसवर्ष स० सहस्र की. ॥ २४ ॥ पु० पृथ्वी काया भं० भगवन के० कितना काल आ० थोडा श्वास ले पा०बहुत श्वास ले ऊ०ऊंचा श्वासले नी०नीचा श्वास ले गो० गौतम वे० वेमात्रा ॥ २५ ॥ पु० पृथ्वी काया आ० आहारार्थी हं० हां गो० गौतम आ० आहार के अर्थी पु० पृथ्वी काया को के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स०

सूत्र

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥ २४ ॥ पुढविकाइयाणं भंते केवइयकालस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा ? गोयमा! वेमायाए आणमंतिवा पाणमंतिवा, ऊससंतिवा नीससंतिवा ॥ २५ ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! आहारट्ठी ? हंता गोयमा ! आहारट्ठी । पुढविकाइयाणं भंते केवइय कालस्स

भावार्थ

जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट २२ हजार वर्ष की ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी कायाके जीव वे मात्रा से श्वासोश्वास लेवे अर्थात् उन को श्वासोश्वास लेने की मर्यादा नहीं है ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी कायिक जीवों क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! वे आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! उन को आहार की इच्छा कितने काल में उत्पन्न होती है ? अहो गौतम ! उन को प्रति समय विरह रहित आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. अहो भगवन् ! पृथ्वी

शब्दार्थ उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० समय समय में अ० अंतर रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे पु० पृथ्वी काया भं० भगवन् किं० कौनसा आ० आहार आ० ग्रहण करे गो० गौतम द० द्रव्य से ज० जैसे णे० नारकी णि० निर्व्याघात छ० छदिशि में वा० व्याघात आश्री सि० क्वचित् ति० तीनदिशा में सि० क्वचित् च० चारदिशा में सि० क्वचित् पं० पांचदिशा में व० वर्ण से का० काला नी० नीला

सूत्र आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! अणुसमयं अविराहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ पुढविकाइयाणं भंते किमाहार माहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ जहा णेरइयाणं. णिव्वाघाएणं छदिसिं वाघायंपडुच्च सियतिदिसिं सियचउदिसिं, सियपंचदिसिं, वण्णओ काल नील लोहिय हालिद्द सुक्किलाणं, गंधओ सुब्भिगंध दुरभिगंधाइं, रसओ तित्ताइं

भावार्थ कायिक जीव क्या आहार करते हैं ? द्रव्य से अनंत प्रदेशात्मक द्रव्य का आहार करे वगैरह सब अधिकार नारकी जैसे कहना. निर्व्याघाते से छ दिशि का आहार लेवे पूर्वादिचार व ऊर्ध्व और अधो. व्याघात आश्रित अर्थात् लोकान्त के उपर या नीचे व पूर्व दक्षिण में अलोक होवे वैसे स्थान उत्पन्न होने वाले पृथ्वी कायिक जीव तीन दिशा का आहार लेवे. उपर नीचे अलोक होवे वैसे स्थान में उत्पन्न होनेवाले चार दिशाका आहार करें, और छ दिशामें से एक दिशा में ही मात्र अलोक होवे वैसेस्थान उत्पन्न होनेवाले पांच

१ लोकान्त निष्कुट को व्याघात कहते हैं उसको छोडकर अन्यत्र उत्पन्न होनेवाले.

शब्दार्थ लो० राता हा० पीला सु० शुक्ल गं० गंधसे सु० सुरभिगंध दु० दुरभिगंध र० रस से ति० तिक्तादि फा० स्पर्श से क० कर्कश आदि पे० शेष त० तैसे णा० जानना क० कीतना भाग आ० आहार करते हैं क० कीतना भाग फा० स्पर्शते हैं गो० गौतम अ० असंख्यात में भाग आ० आहार करते हैं अ० अनंत में भाग फा० स्पर्शते हैं जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीस तरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं शे० शेष ज० जैसे ने० नारकी जा०

सूत्र ५, फासओ कक्खडाइं ८, ॥ सेसं तहेव णाणत्तं कइभागं आहारेंति, कइभागं फासेंति ? गोयमा ! असंखेज्जइ भागं आहारेंति अणंतभागं फासेंति । जाव तेणं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो

भावार्थ दिशा का आहार करे. वर्ण से काला, नीला, रक्त, पीला व शुक्ल पुद्गलोंका आहार करें, गंध से सुरभिगंध व दुरभिगंध का आहार करें, रस से तिक्तादि पांचों रस का आहार करें और स्पर्श से कर्कशादि आठों स्पर्श का आहार करें. शेष जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना. परंतु इतना विशेष जानना कि कितना भाग का आहार करे व कितना भाग आस्वादे ? अहो गौतम ! असंख्यात भाग का आहार करे, व अनंत में भाग में आस्वादे. वे पुद्गल कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे पुद्गलों स्पर्शेन्द्रियपने परिणमे अथवा विषम मात्रा या विविध मात्रा से वारंवार परिणमे यावत् चलित कर्म निर्जरे वहां तक का शेष

शब्दार्थ यावत् णो० नहीं अ० अचलित क० कर्म णि० निर्जरते हैं॥२६॥ए० ऐसे जा० यावत् व० वनस्पति काया को ण० विशेष ठि० स्थिति व० कहना जा० जो ज० जिनका उ० ऊश्वास वे० वेमात्रा ॥ २७ ॥ वे० वेन्द्रिय की ठि० स्थिति भाँ० कहना उ० ऊश्वास वे० वेमात्रा ॥ २८ ॥ वे० वे द्वीन्द्रिय को आ० आहारकी पु० पृच्छा अ० अनाभोग निवर्तित त० तैसे त० तहां जे० जो आ० आभोगनिवर्तित अ०

सूत्र परिणमंति, सेसं जहा णेरइयाणं जाव णो अचलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ २६ ॥ एवं जाव वणस्सइ काइयाणं, णवरंठिती वण्णेतव्वा जा जस्स उस्सासो वेमायाए॥ २७ ॥ वेइंदियाणं ठिती भाणियव्वा, ऊसासो वेमायाए. ॥ २८ ॥ वेइंदियाणं आहारे पुच्छा,

भावार्थ सब अधिकार नारकी जैसे कहना ॥ २६ ॥ जैसे पृथ्वी कायिक जीवों का अधिकार कहा वैसे ही अप्कायिक, तेउकायिक, वायुकायिक व वनस्पति कायिक जीवोंका जानना. इस में मात्र स्थिति की भिन्नता बतलाइ है सो कहते हैं—सब की जघन्य अंत मुहूर्त की उत्कृष्ट अप्कायिक जीवों की सात हजार वर्ष की, तेउकायिक जीवों की तीन अहो रात्रि, वायु कायिक जीवों की तीन हजार वर्ष की और वनस्पति कायिक जीवों की दश हजार वर्ष की और श्वासोश्वास मर्यादा रहित ॥ २७ ॥ द्वीन्द्रिय की स्थिति बारह वर्ष की कही और श्वासोश्वास मर्यादा रहित जानना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! द्वीन्द्रिय कैसे आहार करते हैं ? अहो गौतम ! आहार के दो भेद आभोगनिवर्तित व अनाभोगनिवर्तित. उस में आभोग

शब्दार्थ लो० राता हा० पीला सु० शुक्ल गं० गंधसे सु० सुरभिगंध दु० दुरभिगंध र० रस से ति० तिक्तादि फा० स्पर्श से क० कर्कश आदि मे० शेष त० तैसे णा० जानना क० कीतना भाग आ० आहार करते हैं क० कीतना भाग फा० स्पर्शते हैं गो० गौतम अ० असंख्यात में भाग आ० आहार करते हैं अ० अनंत में भाग फा० स्पर्शते हैं जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीस तरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं शेष ज० जैसे ण० नारकी जा०

सूत्र ५, फासओ कक्खडाइं ८, ॥ सेसं तहेव णाणत्तं कइभागं आहारेंति, कइभागं फासेंति ? गोयमा ! असंखेज्जइ भागं आहारेंति अणंतभागं फासेंति । जाव तेणं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो

भावार्थ दिशा का आहार करे. वर्ण से काला, नीला, रक्त, पीला व शुक्ल पुद्गलोंका आहार करें, गंध से सुरभिगंध व दुरभिगंध का आहार करें, रस से तिक्तादि पांचों रस का आहार करें और स्पर्श से कर्कशादि आठों स्पर्श का आहार करें. शेष जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना. परंतु इतना विशेष जानना कि कितना भाग का आहार करे व कितना भाग आस्वादे ? अहो गौतम ! असंख्यात भाग का आहार करे, व अनंत में भाग में आस्वादे. वे पुद्गल कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे पुद्गलों स्पर्शेन्द्रियपने परिणमे अथवा विषम मात्रा या विविध मात्रा से वारंवार परिणमे यावत् चलित कर्म निर्जरे वहां तक का शेष

शब्दार्थ ज० जैसे लो० रोम आहार प० कवल आहार जे० जो पो० पुद्गल लो० रोम आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे स० सर्व अ० निर्विशेष आ० आहारकरे जे० जो० पो०. पुद्गल प० कवल आहारपने गि० ग्रहण करतेहैं पो० पुद्गल को अ०१असंख्यात भाग को अ० आहारकरे अ० अनेक भाग स० सहस्र अ० नहीं भोगवे अ० नहीं स्पर्शे वि० विध्वसंपाते हैं ए० इन पो० पुद्गल को अ० नहीं भोगवा न० नहीं स्पर्शा क० कौन से अ० थोडे व० बहुत तु० सरिखे वि० विशेषाधिक गो० गौतम स०सर्व से थोडा पो०पुद्गल अ० नहीं

सूत्र पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिणं पोग्गलाणं असंखेज्जइ भागं आहारेंति. अणेगाइंचणं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जइ॥ एएसिणं भंते पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाणं य, कयरे २ हिंतो अप्पावा, बहुलावा, तुल्लावा, विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला

भावार्थ ग्रहण करते हैं उन सब पुद्गलों का आहार करते हैं. और जो पुद्गल प्रक्षेप आहारपने ग्रहण किये जाते हैं, उन का असंख्यात में भागमें आहार करते हैं, और अनेक सहस्र भाग नहीं आस्वादते व नहीं स्पर्शते उन का विध्वंस होता है. अहो भगवन्! नहीं आस्वादन किये हुवे व नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों में से कोनसा अल्प व बहुत है ? अथवा तुल्य है या विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से

शब्दार्थ

असंख्यात समय अ० अन्तर्मुहूर्त वे० वेमात्रा आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे से० शेष त० तैसें जा० यावत् अ० अनंत भाग आ० आस्वादे ॥ २९ ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् जे० जो पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं० क्या स० सर्व आ० आहार करते हैं णो० नहीं म० सर्व आ० आहार करते हैं गो० गौतम बे० बेइन्द्रिय को दु० दोप्रकार का आ० आहार प० कहा तं० वह

सूत्र

अणाभोगणिव्वत्तिए तहेव ॥ तत्थणं जेसे आभोगणिव्वत्तिए सेणं असंखेज्ज समइए, अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पजइ. सेसं तहेव जाव अणंतभागं आसायंति ॥ २९ ॥ बेइंदियाणं भंते जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति ? गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा लोमाहारेय पक्खेवाहारेय । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति, जे

भावार्थ

निर्वर्तित आहार असंख्यात समयिक अंतर्मुहूर्त में मर्यादा रहित आहार करे. अन्य यावत् अनंत भाग का आस्वादन करे वहांतक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय जितने पुद्गलों को आहार के लिये ग्रहण करते हैं उन सब का क्या वे आहार करते हैं या सब का आहार नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! द्वीइन्द्रिय के आहार के दो भेद कहे हैं. १. रोम आहार सो ओघ से वर्षादि समय में जो पुद्गलों प्रवेश करे और २ प्रक्षेप आहार सो कवल रूप. इस में जो पुद्गल रोम आहारपने

शब्दार्थ ज॰ जैसे लो॰ रोम आहार प॰ कवल आहार जे॰ जो पो॰ पुद्गल लो॰ रोम आहारपने गि॰ ग्रहण करते हैं ते॰ वे स॰ सर्व अ॰ निर्विशेप आ॰ आहारकरे जे॰ जो॰ पो॰. पुद्गल प॰ कवल आहारपने गि॰ ग्रहण करतेहैं पो॰ पुद्गल को अ॰ असंख्यात भाग को अ॰ आहारकरे अ॰ अनेक भाग स॰ सहस्र अ॰ नहीं भोगवे अ॰ नहीं स्पर्शे वि॰ विध्वंसपाते हैं ए॰ इन पो॰ पुद्गल को अ॰ नहीं भोगवा न॰ नहीं स्पर्शा क॰ कौन से अ॰ थोडे व॰ बहुत तु॰ सरिखे वि॰ विशेपाधिक गो॰ गौतम स॰सर्व से थोडा पो॰पुद्गल अ॰ नहीं

सूत्र भागं आहारेंति. पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिणं पोग्गलाणं असंखेज्जइ भागं आहारेंति. अणेगाइंचणं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जइ॥ एएसिणं भंते पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाणं य, कयरे २ हिंतो अप्पावा, बहुलावा, तुल्लावा, विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला

भावार्थ ग्रहण करते हैं उन सब पुद्गलों का आहार करते हैं. और जो पुद्गल प्रक्षेप आहारपने ग्रहण किये जाते हैं, उन का असंख्यात में भागमें आहार करते हैं, और अनेक सहस्र भाग नहीं आस्वादते व नहीं स्पर्शते उन का विध्वंस होता है. अहो भगवन् ! नहीं आस्वादन किये हुवे व नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों में से कोनसा अल्प व बहुत है ? अथवा तुल्य है या विशेपाधिक है ? अहो गौतम ! सब से

शब्दार्थ

भोगवा अ० नहीं स्पर्शा अ० अनंतगुणा ॥ ३० ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे पो० पुद्गल की० कीसतरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने बे० बेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमा त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३१ ॥ ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय णा० विविध प्रकार की ठि० स्थिति जा० यावत् अ० अनेक भा० भाग सहस्र अ०

सूत्र

अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ॥ ३० ॥ बेइंदियाणं भंते पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! जिब्भिंदिय फासिंदिय बेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ बेइंदियाणं भंते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चालियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ ३१ ॥ तेइंदिय चउरिंदि-

भावार्थ

थोडे आस्वाद नहीं कराये हुवे पुद्गल उस से अस्पर्शमान पुद्गल अनंत गुने कहे हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! जो पुद्गल द्वीइन्द्रिय आहारपने ग्रहण करते हैं वे कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे आहार के पुद्गल बेइन्द्रिय को जिव्हेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने व बमात्रासे परिणमते हैं. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को पाहिले के आहारे हुवे पुद्गल परिणमते हैं यावत् चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वगैरह सब अधिकार पाहिले जैसे कहना ॥ ३१ ॥ तेइन्द्रिय की स्थिति ४९ दिन की न चतुरेन्द्रिय की स्थिति ६ मास की अन्य सब अ-

शब्दार्थ

नहीं सुंघते अ० नहीं स्वादलेते अ० नहीं स्पर्शते वि० विध्वंसपाते हैं पो० पुद्गल को अ० नहीं सुंघेहुवे अ० नहीं स्वादलिये अ० नहीं स्पर्शेहुवे गो० गौतम स० सर्व से थोडा पो० पुद्गल अ० नहीं सुंघेहुवे अ० नहीं स्वादलिये अ० अनंतगुने अ० नहीं स्पर्शेहुवे अ० अनंतगुने ते० तेइन्द्रिय को घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भुं० वारंवार परिणमें च० चतुरिन्द्रिय को च० चक्षु-

सूत्र

याणं णाणत्तं ठिईए जाव अणेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं, अणासाइज्जमाणाइं, अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति. एएसिणं भंते पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाणं, अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्ज माणाणं य पुच्छा ॥ गोयमा ? सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा, अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ॥ तेइंदियाणं घाणेंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो

भावार्थ

धिकार अनेक भाग सहस्र घ्राणेन्द्रिय से नहीं सुंघते, रसनेन्द्रिय से नहीं आस्वादते व स्पर्शेन्द्रिय से नहीं स्पर्शते नष्ट होते हैं वहां तक पहिले जैसे कहना. उन में कोनसा अल्प व बहुत है ? तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे घ्राणेन्द्रियपने नहीं सुंघे हुवे पुद्गलों, इस से रसनेन्द्रियपने नहीं आस्वादे हुवे पुद्गलों अनंत गुने, इस से स्पर्शेन्द्रिपने नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों अनंत गुने, तेइन्द्रिय को आहार के पुद्गल घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रियपने, व विविध प्रकार से परिणमते हैं. वैसे ही चतुरेन्द्रिय को

शब्दार्थ

भोगवा अ० नहीं स्पर्शा अ० अनंतगुणा ॥ ३० ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे पो० पुद्गल की० कीसतरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमा त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३१ ॥ ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय णा० विविध प्रकार की ठि० स्थिति जा० यावत् अ० अनेक भा० भाग सहस्र अ०

सूत्र

अणासाइज्जमाणा, अंफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ॥ ३० ॥ बेइंदियाणं भंते पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! जिब्भिंदिय फासिंदिय बेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ बेइंदियाणं भंते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चालियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ ३१ ॥ तेइंदिय चउरिंदि-

भावार्थ

थोडे आस्वाद नहीं कराये हुवे पुद्गल उस से अस्पर्शमान पुद्गल अनंत गुने कहे हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! जो पुद्गल द्वीइन्द्रिय आहारपने ग्रहण करते हैं वे कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे आहार के पुद्गल बेइन्द्रिय को जिव्हेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने व वमात्रासे परिणमते हैं. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को पाहिले के आहारे हुवे पुद्गल परिणमते हैं यावत् चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वगैरह सब अधिकार पाहिले जैसे कहना ॥ ३१ ॥ तेइन्द्रिय की स्थिति ४९ दिन की व चतुरेन्द्रिय की स्थिति ६ मास की अन्य सब अ-

शब्दार्थ

ए० ऐसे म० मनुष्य को ण० विशेष आ० आभोग निवर्तितपने ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट अ० अठम भक्त सो० श्रोतेन्द्रिय च० चक्षुइन्द्रिय घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमें से० शेप त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे॥३४॥ वा० वाणव्यंतर को ठि० स्थिति णा० नानाप्रकारकी. अ० निरवशेप ज० जैसे णा० नाग कुमार को॥३५॥ ए० ऐसा जो० ज्योतिपी को ण० विशेष उ० उश्वास ज० जघन्य मु० मुहूर्त पृथक् उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त

सूत्र

मुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स सोइंदिय चक्खुंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति सेसं तहेव जाव चलियं कम्मंणिज्जरेंति ॥ ३४ ॥ वाणमंतराणं टिईए णाणत्तं । अवसेसं जहा णाग कुमाराणं ॥३५॥ एवं जोइसियाणं

भावार्थ

मनुष्य को जानना. परंतु आभोग निर्वर्तित आहार की इच्छा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अठम भक्त सो तीन दिन में होवे देव कुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के मनुष्य आश्रित. दोनों को आहार के पुद्गल श्रोतेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रियपने व वे मात्रा से परिणमते हैं. अन्य चलित कर्म की निर्जरा करे वहांतक सब पहिले जैसे कहना ॥ ३४ ॥ वाणव्यंतर देवता की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की अन्य सब नाग कुमार जैसे कहना. ॥ ३५ ॥ ज्योतिपी देवता की स्थिति जघन्य एक पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम व एक लाख वर्ष अधिक जानना. और

अर्थ

ते० उस का० काल ते० उस स० समय में आ० आलंभिका ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त सं० शंखवन चे० उद्यान त० वहां सं० शंखवन चे० उद्यान की अं० पास पो० पुद्गल प० परिव्राजक प० रहताथा रि० ऋग्वेद ज० यजुर्वेद जा० यावत् न० नय में सु० पंडित छ० छठ २ से जा० यावत् आ० आतापनालेते प० प्रकृति भद्रिक से ज० जैसे सि० शिव को जा० यावत् वि० विभंग णा० नामक अ० अज्ञान स० उत्पन्न हुवा से० अब ते० उस वि० विभंग अ० अज्ञान उ० उत्पन्न होने से बं० ब्रह्म

तेणं समएणं आलंभिया णामं णयरी होत्था वण्णओ, संखवणे चेइए वण्णओ, तत्थणं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गलेणामं परिव्वाए परिवसइ, रिउव्वेय जउव्वेय जाव नएसु सुपरिनिट्ठिए, छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं वाहाओ जाव आयावेमाणे विहरइ तएणं तस्स पोग्गलस्स छट्ठं छट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स पगइ-भद्याए जहा सिवस्स जाव विभंगे णामं अण्णाणे समुप्पण्णे, सेणं तेणं विभंगे णामं

भावार्थ

आलंभिका नामक नगरी थी. शंखवन नामक उद्यान था. उस शंखवन उद्यान की पास पुद्गल नामक परिव्राजक रहता था. वह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्वणवेद आदि अनेक शास्त्रों जाननेवाला था. ब्राह्मणों के नय व न्याय शास्त्र आदि में निपुण था और छठ २ की निरंतर तपस्या करके ऊर्ध्व बाहु से यावत् आतापना लेता हुवा विचरता था. इस तरह छठ २ की तपस्या सहित आतापना करते हुवे, प्रकृति भाद्रिकपना से यावत् शिवराजर्षि जैसे विभंग ज्ञान उत्पन्न हुवा. उस विभंग

शब्दार्थ स्थितिपद में त० तैसे भा० कहना स० सर्व जी० जीव का आ० आहार ज० जैसे प० पन्नवणा में प० प्रथम आ० आहार उद्देशे में त० तैसे भा० कहना ए० यहां से आ० लेकर णे० नारकी भं० भगवन् आ० आहार के अर्थी जा० यावत् दु० दुःखपने भु० वारंवार परिणमें ॥ ३७ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या आ० आत्मारंभी प० परारंभी उ० उभयारंभी अ० अनारंभी गो० गौतम अ० कितनेक जी० जीव आ० आत्मारंभी प० परारंभी उ० उभयारंभी णो० नहीं अ० अनारंभी अ० कितनेक जीव णो० नहीं

सूत्र ठिती जहा ठितीपदे तहा भाणियव्वा. सव्व जीवाणं आहारोय जहा पन्नवणाए पढमे आहारुद्देसए तहा भाणेयव्वो। एत्तो आढत्तो णेरइयाणं भंते आहारट्ठी जाव दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ ३७ ॥ जीवाणं भंते किं आयारंभा, परारंभा, तदुभयारंभा, अणारंभा? गोयमा! अत्थेगइया जीवा आयारंभावि, परारंभावि तदुभयारंभावि,

भावार्थ जानना. इसी तरह चौविस दंडक का कहदेना अहो भगवन् ! नारकी को आहार की इच्छा होती है ? यावत् दुःखरूप वारंवार परिणमे. इस में पहिले नारकी की वक्तव्यता कहीं वह आरंभ पूर्वक होती है इस लिये आरंभका निरूपण करते हैं॥३७॥अहो भगवन् ! क्या जीव स्वतः घात करनेवाले हैं, व अन्य की पास घात करानेवाले हैं स्वतः घात करानेवाले व अन्य की पास करानेवाले हैं, या दोनों प्रकार की घात से रहित अनारंभी हैं ? अहो गौतम कितनेक जीव आत्मारंभी हैं, परारंभी भी हैं, आत्मपरारंभी भी हैं. परंतु अनारंभी

तेणं समएणं आलंभिया णामं णयरी होत्था वण्णओ, संखवणे चेइए वण्णओ, तत्थणं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गलेणामं परिव्वाए परिवसइ, रिउव्वेय जउव्वेय जाव नएसु सुपरिनिट्ठिए, छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ जाव आयावेमाणे विहरइ तएणं तस्स पोग्गलस्स छट्ठं छट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स पगइ-भद्दयाए जहा सिवस्स जाव विभंगे णामं अण्णाणे समुप्पण्णे, सेणं तेणं विभंगे णामं

अर्थ—तेणं उस का० काल ते० उस स० समय में आ० आलंभिका ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त सं० शंखवन चे० उद्यान त० वहां सं० शंखवन चे० उद्यान की अं० पास पो० पुद्गल प० परिव्राजक प० रहताथा रि० ऋग्वेद ज० यजुर्वेद जा० यावत् न० नय में सु० पंडित छ० छठ २ से जा० यावत् आ० आतापनालेते प० प्रकृति भद्रिक से ज० जैसे सि० शिव को जा० यावत् वि० विभंग णा० नामक अ० अज्ञान स० उत्पन्न हुवा से० अब ते० उस वि० विभंग अ० अज्ञान उ० उत्पन्न होने से बं० ब्रह्म

भावार्थ—आलंभिका नामक नगरी थी. शंखवन नामक उद्यान था. उस शंखवन उद्यान की पास पुद्गल नामक परिव्राजक रहता था. वह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्वणवेद आदि अनेक शास्त्रों जाननेवाला था. ब्राह्मणों के नय व न्याय शास्त्र आदि में निपुण था और छठ २ की निरंतर तपस्या करके ऊर्ध्व बाहु से यावत् आतापना लेता हुवा विचरता था. इस तरह छठ २ की तपस्या सहित आतापना करते हुवे, प्रकृति भद्रिकपना से यावत् शिवराजर्षि जैसे विभंग ज्ञान उत्पन्न हुवा. उस विभंग

शब्दार्थ अप्रमत्त संयति त० तहां जे० जो अ० अप्रमत्त संयति ते० वे णो० नहीं आ० आत्मारंभी णो० नहीं प० परारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी त० तहां जे० जो प० प्रमत्त संयति ते० वे सु० शुभयोग प० आश्रित णो० नहीं आ० आत्मारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी अ० अशुभयोग प० आश्रित आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी तं० तहां जे० जो० अ० असंयति ते० वे अ० अविरति

सूत्र आयारंभा जाव अणारंभा ॥ तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा, तेदुविहा प०, तं० संजयाय, असंजयाय । तत्थणं जे ते संजया, ते दुविहा प०, तं० पमत्त संजयाय, अपमत्त संजयाय । तत्थणं जे ते अपमत्त संजया तेणं णो आयारंभा, णो परारंभा जाव अणारंभा । तत्थणं जे ते पमत्त संजया ते सुहंजोगं पडुच्च णो आयारंभा,

भावार्थ गतिरूप संसार में अनंत वक्त परिभ्रमण करके समस्त कर्म क्षयरूप स्थानक सो मोक्ष को प्राप्त हुवे उन को सिद्ध कहते हैं. वे सिद्ध आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं. परंतु अनारंभी हैं. और जो संसार समावन्न जीव हैं वे दो प्रकार के कहे हैं संयति सो चारित्र सहित व असंयति सो चारित्र रहित. उस में संयति के दो भेद १ प्रमत्त संयति २ अप्रमत्त संयति. जो सप्तम गुणस्थान वर्ती अप्रमत्त संयति हैं वे आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं. और जो छट्ठे गुणस्थानवर्ती प्रमत्त संयति हैं वे शुभ योग आश्रित आत्मारंभी, परारंभी, व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं,

अर्थ

आकर ति० त्रिदंड कुं० कुंडिका जा० यावत् धा० धारनकर गे० ग्रहणकर जे० जहां आ० आलंभिका न० नगरी जे० जहां प० परिव्राजक आ० आवास ते० तहां उ० आया भं० भंड णि० प्रक्षेप क० करके आ० आलंभिका न० नगरी के सिं० शृंगाटक जा० यावत् प० मार्ग में अ० परस्पर ए० ऐसा आ० कहा जा० यावत् प० प्ररूपा शेष पूर्ववत् ॥ १६ ॥ त० तब आ० आलंभिका ण० नगरी में ए० ऐसे ए० इस

सूत्र

॥ १५ ॥ एवं संपेहेइ २ त्ता, आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ २ त्ता, तिदंडकुंडिया जाव धाउरत्ताउय गेण्हंति २ त्ता, जेणेव आलंभिया णयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागए भंडगणिक्खेवं करेइ २ त्ता आलंभियाए णयरीए सिंगाडग जाव पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ अत्थिणं देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे देवलोएसुणं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्स तहेव जाव वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय ॥ १६ ॥ तएणं

भावार्थ

विचार करके आतापना भूमि में से पीछा आकर त्रिदंड कुंडिका यावत् धारन कर आलंभिका नगरी में परिव्राजक के आवास में आया. वहां भंडोपकरण रखकर आलंभिका नगरी के शृंगाटक यावत् बडे रस्ते में ऐसा कहने यावत् प्ररूपने लगा कि अहो देवानुप्रिय ! मुझे अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा है. जिस से मैं जान सकता हूं कि देवलोक में देवताओं की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट दश सागरोपम की स्थिति है

शब्दार्थ अप्रमत्त संयति त० तहां जे० जो अ० अप्रमत्त संयति तं० वे णो० नहीं आ० आत्मारंभी णो० नहीं प० परारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी त० तहां जे० जो प० प्रमत्त संयति ते० वे सु० शुभयोग प० आश्रित णो० नहीं आ० आत्मारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी अ० अशुभयोग प० आश्रित आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी तं० तहां जे० जो० अ० असंयति ते० वे अ० अविरति

सूत्र आयारंभा जाव अणारंभा ॥ तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा, तेदुविहा प०, तं० संजयाय, असंजयाय । तत्थणं जे ते संजया, ते दुविहा प०, तं० पमत्त संजयाय, अपमत्त संजयाय । तत्थणं जे ते अपमत्त संजया तेणं णो आयारंभा, णो परारंभा जाव अणारंभा । तत्थणं जे ते पमत्त संजया ते सुहंजोगं पडुच्च णो आयारंभा,

भावार्थ गतिरूप संसार में अनंत वक्त परिभ्रमण करके समस्त कर्म क्षयरूप स्थानक सो मोक्ष को प्राप्त हुवे उन को सिद्ध कहते हैं. वे सिद्ध आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं. परंतु अनारंभी हैं. और जो संसार समावन्न जीव हैं वे दो प्रकार के कहे हैं संयति सो चारित्र सहित व असंयति सो चारित्र रहित. उस में संयति के दो भेद १ प्रमत्त संयति २ अप्रमत्त संयति. जो सप्तम गुणस्थान वर्ती अप्रमत्त संयति हैं वे आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं. और जो छट्ठे गुणस्थानवर्ती प्रमत्त संयति हैं वे शुभ योग आश्रित आत्मारंभी, परारंभी, व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं,

ऐसा प० प्ररूपता हू शेष पूर्ववत् ॥ १७ ॥ अ० हैं भं० भगवन् सो० सौधर्म क० देवलोक में द० द्रव्य स० वर्ण सहित अ० वर्ण रहित त० तैसे जा० यावत् हं० हां अ० है ए० ऐसे ई० ईशान में भी जा० यावत् अ० अच्युत ए० ऐसे गे० ग्रैवेयक वि० विमान में अ० अनुत्तर विमान में ई० ईषत्प्राग्भार जा० यावत् हं० हां अ० है ॥ १८ ॥ त० तब सा० वह म० बडी जा० यावत् प० पीछी ॥ १९ ॥ त० तब आ० आलंभिका ण० नगरी में सिं० शृंगाटक ति० त्रिक ण० शेष ज० जैसे सि० शिव जा० यावत् स०

सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते! सोहम्मेकप्पे दव्वाइं सवण्णाइंपि अवण्णाइंपि तहेव जाव हंता अत्थि ॥ एवं ईसाणेवि, एवं जाव अच्चुएवि, एवं गेविज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु ईसिप्पभारा-एवि जाव हंता अत्थि ॥ १८ ॥ तएणं सा महइ महालिया जाव पडिगया ॥ १९ ॥ तएणं आलंभियाए णयरीए सिंगाडगातिग अवसेसं जहा सिवस्स जाव सव्व

स्थिति है और एक, दो, तीन, यावत् दश, संख्यात व असंख्यात समय अधिक करते उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति है. इस मे आगे देवलोक में देवता की स्थिति नहीं है ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में क्या द्रव्य सवर्णवाले या अवर्णवाले हैं ? हां गौतम ! ऐसे ईशान यावत् अच्युत, नवग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान व इषत् प्रागभार पृथ्वी तक कहना ॥ १८ ॥ फीर वह परिषदा पीछी गई ॥ १९ ॥ फीर उस आलंभिका नगरी में शृंगाटकत्रिक चौक यावत् महापथ में ऐसा वार्तालाप होने लगा कि पुद्गल

शब्दार्थ आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी से० वह के० कीसतरह भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम अ० अविरति प० प्रत्ययिक से० वह ते० इसलिये जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी ए० ऐसे जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच म० मनुष्य ज० जैसे जी० जीव ण० विशेष सि० सिद्ध वि० रहित भा० कहना वा० वाणव्यंतर जा०यावत् वे० वैमानिक ज० जैसे णे०नारकी॥३९॥

सूत्र रंभावि जाव णो अणारंभा ॥ से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च. से तेणट्ठेणं जाव णो अणारंभा ॥ एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ मणुस्सा जहा जीवा णवरं सिद्धविरहिता भाणेयव्वा ॥ वाणमंतरा जाव वेमाणिया जहा नेरइया

भावार्थ नारकी आत्मारंभी हैं यावत् अनारंभी उभयारंभी हैं परंतु अनारंभी नहीं हैं. अहो भगवन् ! वह कैसे ? नारकी आत्मारंभी हैं यावत् अनारंभी नहीं हैं. जैसे नारकी नहीं हैं. अहो गौतम नारकी के जीव अविरति होने से आत्मारंभी हैं यावत् अनारंभी नहीं हैं. जैसे नारकी का कहा वैसेही दश भुवनपति, पांच स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय व तिर्यंच पंचेन्द्रियतक जानना. और मनुष्य को सिद्ध भगवान् छोडकर जैसे जीवको संयति, असंयति, प्रमत्त अप्रमत्त ऐसे चार भांगे कहे वैसे ही यहां भांगा अनुसार आत्मारंभी परारंभी, उभयारंभी व अनारंभी के भेद जानना. और जैसे नारकी को कहा वैसे ही वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का जानना. ॥ ३९ ॥ अविराति व सलेशी की साधर्म्यतासे आगे

शब्दार्थ

ऐसा प० प्ररूपता हू शेष पूर्ववत् ॥ १७ ॥ अ० हैं भं० भगवन् सो० सौधर्म क० देवलोक में द० द्रव्य स० वर्ण सहित अ० वर्ण रहित त० तैसे जा० यावत् हं० हां अ० है ए० ऐसे ई० ईशान में भी जा० यावत् अ० अच्युत ए० ऐसे गे० ग्रैवेयक वि० विमान में अ० अनुत्तर विमान में ई० ईषत्प्राग्भार जा० यावत् हं० हां अ० है ॥ १८ ॥ त० तब सा० वह म० बडी जा० यावत् प० पीछी ॥ १९ ॥ त० तब आ० आलंभिका ण० नगरी में सिं० शृंगाटक ति० त्रिक ण० शेष ज० जैसे सि० शिव जा० यावत् स०

सूत्र

सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते ! सोहम्मेकप्पे दव्वाइं सवण्णाइंपि अवण्णाइंपि तहेव जाव हंता अत्थि ॥ एवं ईसाणेवि, एवं जाव अच्चुएवि, एवं गेविज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु ईसिप्पभाराएवि जाव हंता अत्थि ॥ १८ ॥ तएणं सा महइ महालिया जाव पडिगया ॥१९॥ तएणं आलंभियाए णयरीए सिंगाडगतिग अवसेसं जहा सिवस्स जाव सव्व

भावार्थ

स्थिति है और एक, दो, तीन, यावत् दश, संख्यात व असंख्यात समय अधिक करते उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति है. इस से आगे देवलोक में देवता की स्थिति नहीं है ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में क्या द्रव्य सवर्णवाले या अवर्णवाले हैं ? हां गौतम ! ऐसे ईशान यावत् अच्युत, नवग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान व इषत् प्रागभार पृथ्वी तक कहना ॥ १८ ॥ फीर वह परिषदा पीछी गई ॥ १९ ॥ फीर उस आलंभिका नगरी में शृंगाटकत्रिक चौक यावत् महापथ में ऐसा वार्तालाप होने लगा कि पुद्गल

शब्दार्थ प०परभविक उ०उभय भविक ज्ञान दं०दर्शन ए०ऐसे॥४१॥ इ०यह भ०भविक च० चारित्र प० परभविक चारित्र उ०उयभविक चारित्र गो०गौतम इ०यह भविक चारित्र णो०नहीं प०परभविक चारित्र णो०नहीं उ० उभयभविक चारित्र ए०ऐसे त०तपसंयम॥४२॥ अ०असंवृत्त अ० अनगार सि०सिझे बु०बुझे मु०मुक्त होवे प०

सूत्र एवि णाणे, तदुभयभविएवि णाणेय दंसणंपि एवामेव ॥४१॥ इह भविए भंते चारित्ते, परभविए भंते चारित्ते, तदुभय भविए चारित्ते ? गोयमा ! इह भविए चरित्ते, णो पर भविए चरित्ते, णो तदुभय भविए चरित्ते एवं तवे, संजमे ॥ ४२ ॥ असंवुडेणं भंते अणगारे सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिणिव्वाति, सव्वदुक्खाणमंतंकरेति ? गोयमा !

भावार्थ इस भविके ज्ञान होता है, परभविके ज्ञान होता है, अथवा दोनों प्रकार का ज्ञान होता है ? अहो गौतम ! इस भविक, परभविक व तदुभयभविक ज्ञान होता है ऐसे ही दर्शनका जानना. ॥ ४१ ॥ अहो भगवन्! इस भवका चारित्र, परभवका चारित्र, व दोनों भवका चारित्र? अहो गौतम! इस भव संबंधिही चारित्र है परंतु परभविक व उभय भविक चारित्र नहीं है ऐसेही तप व संयम का जानना.॥४२॥ अहो भगवन् असंवृत आश्रवद्धार को नहीं रुंधने वाला अणगार क्या सिझे, बुझे, कर्म से मुक्त होवे निर्वाणको प्राप्त होवे

---

१ जो ज्ञान यहां पर शीखने में आया होवे और परभव में साथ न जावे, २ इस भवमे शीखने मे आया होवे और परभवमें साथ जावे ३ इस भवमे शीखनेमें आया होवे वह परभव में व परतरभव में अनुवर्तसो

शब्दार्थ

इन्द्रिय घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने भु० वारंवार प० परिणमें ॥ ३२ ॥ पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच ठि० स्थिति भ० कहना ऊ० उश्वास वे० वेमात्रा आ० आहार अ० अनाभोग निवर्तित पने अ० समय समय में अ० आंतरा रहित आ० आभोग निवर्तितपने ज०जघन्य अ० अन्तर्मुहूर्त उ०उत्कृष्ट छ० छठ्ठ भक्त में से० शेष ज० जैसे च० चतुरेन्द्रिय जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३३ ॥

सूत्र

परिणमंति चउरिंदियाणं चक्खुंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ ३ २ ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं ठिई भणिऊण ऊसासोवेमायाए आहारो अणाभोगणिव्वत्तिए अणुसमइयं अविरहिओ आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥३ ३॥ एवं मणुस्साणवि. णवरं आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतो-

भावार्थ

चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रियपने परिणमते हैं ॥ ३२ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अंतमुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की. उन का श्वासोश्वास मर्यादा रहित जानना. उन को अनाभोग निवर्तित आहार प्रति समय विरह रहित होता है. और आभोग निवर्तित आहार जघन्य अंत मुहूर्त में उत्कृष्ट छठ भक्त सो दो दिन में. (देवकुरु उत्तर कुरु के क्षेत्र के तिर्यंच आश्रित.) और चलित कर्म की निर्जरा करेंगे वहांतक का शेष सब अधिकार चतुरेन्द्रिय. जैसे कहना ॥ ३३ ॥ ऐसे ही

शब्दार्थ

करे आ० आयुष्य क० कर्म सि० कदाचित् बं० बांधे सि० कदाचित् नो० नहीं बं० बांधे अ० असाता वे० वेदनीय क० कर्म को भु० वारंवार उ० इकट्ठाकरे अ० अनादी अ० अनंत दी० दीर्घकाल चा० चातुरंत सं० संसार कंतार में अ० परिभ्रमणकरे से० उसको ते० इसलिये गो० गौतम अ० असंवृत अ० अनगार णो० नहीं सि० सिझे ॥ ४३ ॥ सं० संवृत अ० अनगार सि० सिझे हं० हां

सूत्र

सिय बंधइ सिय नो बंधइ, असाया वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं अणुपरियट्टति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! असंवुडे अणगारे णो सिज्झइ ॥ ४३ ॥ संवुडेणं भंते अणगारे सिज्झइ ? हंता सिज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! संवुडेणं

भावार्थ

कर्मों को दीर्घ काल की स्थितिवाले बनाता है मंद रस देनेवाले कर्मोंको तीव्ररस देनेवाला करता है, अल्प प्रदेशात्मक कर्मों को बहुत प्रदेशात्मक कर्म करता है. आयुष्य कर्म का बंध किसि समय करता है किसि समय नहीं करता है, असाता वेदनीय कर्म पुनःपुनः संचित करता है, और अनादि अनंत संसार कंतार में परिभ्रमण करता है; इसलिये अहो गौतम ! असंवृत अनगार सिझे नहीं, यावत् संसार का अंतकरे नहीं. ॥ ४३ ॥ अहो भगवन्! आश्रवद्वार का रुंधन करनेवाला संवृत अणगार क्या सिझे यावत् अंतकरे ? हां गौतम ! संवृत अणगार सिझे यावत् अंत करे भगवन् ! किस कारन से संवृत्त अणगार सिझे यावत् अंत

॥ द्वादश शतकम् ॥

शब्दार्थ

सं० शंख ज० जयंति पु० पृथ्वी पो० पुद्गल अ० अतिपात रा० राहु लो० लोक ना० नाग दे० देव आ० आत्मा बा० बारहवे स० शतक में द० दश उ० उद्देशे ॥ १ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में सा० श्रावस्ती णा० नाम नगरी हो० थी व० वर्णन से को० कोष्टक चे० उद्यान व० वर्णन से त० उस सा० श्रावस्ती ण० नगरी में ब० बहुत सं० शंख प० प्रमुख स० श्रमणोपासक प० रहते थे अ०

सूत्र

संखे, जयंति, पुढवी। पोग्गल, अइवाय, राहु, लोगेय ॥ नागेय देवआता । बारसम सए दसुद्देसा ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थीणामं णयरी होत्था, वण्णओ कोट्ठए चेइए वण्णओ, तत्थणं सावत्थीए णयरीए बहवे संखप्पमोक्खा समणोवासगा

भावार्थ

अग्यारहवे शतक में विविध अर्थ कहे, अब आगे भी वैसाही कथन करते हैं. इस बारहवे शतक में दश उद्देशे कहे १ शंख श्रमणोपासक का, २ जयंति श्राविका, ३ रत्नप्रभा पृथ्वी का ४ पुद्गल विचार ५ प्राणातिपात का ६ राहू की वक्तव्यता ७ लोक की वक्तव्यता ८ नाग की वक्तव्यता ९ देवता की वक्तव्यता १० आत्म भेद निरूपण. अब इन में से प्रथम शंख श्रमणोपासक का कथन करते हैं ॥ १ ॥ उस काल उस समय में श्रावस्ती नामक नगरी थी. उस की ईशान कौन में कोष्टक नामक उद्यान था. उस श्रावस्ती नगरी में शंख प्रमुख श्रमणोपासक रहते थे. वे ऋद्धिवंत यावत् अपरिभूत व जीवाजीव के

शब्दार्थ करे आ० आयुष्य क० कर्म सि० कदाचित् बं० बांधे सि० कदाचित् नो० नहीं बं० बांधे अ० असाता वे० वेदनीय क० कर्म को भु० वारंवार उ० इकठाकरे अ० अनादी अ० अनंत दी० दीर्घकाल चा० चातुरंत सं० संसार कंतार में अ० परिभ्रमणकरे से० उसको ते० इसलिये गो० गौतम अ० असंवृत अ० अनगार णो० नहीं सि० सिझे ॥ ४२ ॥ सं० संवृत अ० अनगार सि० सिझे हं० हां

सूत्र सिय बंधइ सिय नो बंधइ, असाया वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं अणुपरियट्टति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! असंवुडे अणगारे णो सिज्झइ ॥ ४२ ॥ संवुडेणं भंते अणगारे सिज्झइ ? हंता सिज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! संवुडेणं

भावार्थ कर्मों को दीर्घ काल की स्थितिवाले बनाता है मंद रस देनेवाले कर्मोंको तीव्ररस देनेवाला करता है, अल्प प्रदेशात्मक कर्मों को बहुत प्रदेशात्मक कर्म करता है. आयुष्य कर्म का बंध किसि समय करता है किसि समय नहीं करता है, असाता वेदनीय कर्म पुनःपुनः संचित करता है, और अनादि अनंत संसार कंतार में परिभ्रमण करता है; इसलिये अहो गौतम ! असंवृत अनगार सिझे नहीं, यावत् संसार का अंतकरे नहीं. ॥ ४२ ॥ अहो भगवन्! आश्रवद्वार का रुंधन करनेवाला संवृत अणगार क्या सिझे यावत् अंतकरे ? हां गौतम ! संवृत अणगार सिझे यावत् अंत करे भगवन् ! किस कारन से संवृत्त अणगार सिझे यावत् अंत

शब्दार्थ सना की ॥ ५ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक इ० इन क० कथा ज० जैसे आ० आलंभिका जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥ ६ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीरने ते० उन स० श्रमणोपासकों को ती० उस म० बडी ध० धर्म कथा जा० यावत् प० परिषदा प०पीछीगइ ॥७॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना की ण० नमस्कार किया प० प्रश्न पु० पूछे अ० अर्थ प० ग्रहणकर उ० उठकर उ० खडे हुवे उ० खडे होकर

सूत्र णोवासगा इमीसे कहाए जहा आलंभियाए जाव पज्जुवासंति ॥ ६ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसेय महइ धम्मकहा, जाव परिसा पडिगया ॥ ७ ॥ तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति पसिणाइं पुच्छंति २ त्ता अट्ठाइं परियादियंति २ त्ता उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स

भावार्थ स्वामी पधारे हैं ऐसी वार्ता सुनी, और जैसे आलंभिका नगरी के श्रावकों दर्शन के लिये आयेथे वैसे ही श्रावस्ती नगरी के श्रावक आये ॥ ६ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उस महती परिषदा में धर्मोपदेश सुनाया. और परिषदा पीछी गई ॥ ७ ॥ फीर वे श्रमणोपासक श्रमण भगवंत

शब्दार्थ पापकर्म इ० यहां से चु० चवकर पे० परलोक में देव सि० होवे गो० गौतम अ० कितनेक दे० देवसि० होवे अ० कितनेक णो० नहीं दे० देव सि० होवे से० वह के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् इ० यहां से चु० चवकर पे० परलोक में अ० कितनेक दे० देव सि० होवे अ० कितनेक णो० नहीं दे० देव सि० होवे गो० गौतम जे० जो जी० जीव गा० ग्राम आ० आगर न० नगर नि० निगम रा० राज्यधानि खे० खेड क० कव्वड मं० मंडप दो० द्रोणमुख प० पट्टण आ० आश्रम स० सन्निवेश में अ० अकाम तृष्णा

सूत्र पच्चक्खाय पावकम्मे; इतो चुते पेच्चा देवे सिया ? गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया अत्थेगइए णो देवे सिया । सेकेणट्ठेणं भंते जाव इतो चुते पेच्चा अत्थेगइए देवेसिया, अत्थेगइए णो देवे सिया? गोयमा! जे इमे जीवा गामागर नगर निगम रायहाणि खेड कव्वड मडंव दोणमुह पट्टणासम सन्निवेसेसु अकामतण्हाए, अकामछुहाए,

भावार्थ में क्या देवता होवे? अहो भगवन्! किस कारण से कितनेक देव होवे और कितनेक देव न होवे. अहो गौतम ! कितनेक देव होवे और कितनेक देव नहोवे ! जो जीव ग्राम, आगर, नगर, निगम, राज्यधानी, खेड, कव्वड, मंडप द्रोणमुख, पट्टण. आश्रम, सन्निवेश में अकाम-विना इच्छा से, तृष्णा, क्षुधा, ब्रह्मचर्य, शीत, आतप, दंश मशक, स्नान नहीं करना, स्वेद नहीं पुछना, शरीर का मेल दूर नहीं करना, मल, पंक व परिदाह से अल्प या बहुत समय तक आत्मा को क्लेश पहुंचावे और इस तरह आत्मा को कष्ट देते

शब्दार्थ करते प० भोगते प० पाक्षिक पो० पौषध प० पालते हुवे वि० विचरेंगे ॥ ९ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० शंख स० श्रमणोपासक की ए० इस अ० बात को वि० विनय से प० सुनी ॥ १० ॥ त० तब त० उस सं० शंख श्रमणोपासक को अ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय स० हुवा णो० नहीं मे० मुझे से० श्रेय तं० उस वि० बहुत अ० अशन जा० यावत् सा० स्वादिम आ० आस्वादते प० पाक्षिक पो० पौषध प० पालते वि० विचरने को से० श्रेय मे० मुझे पो० पौषध वं० ब्रह्मचारी उ० साग म० मणि सु० सुवर्ण व०

सूत्र भुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो ॥ ९ ॥ तएणं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥ १० ॥ तएणं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, णो खलु मे सेयं तं विउलं असणं जाव साइमं आसाएमाणस्सय पक्खिय पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्कमणि सुवण्णस्स, वव-

भावार्थ भोगवेंगे. फीर पखिका पोषध कर जागरणा जागते हुवे विचरेंगे ॥ ९ ॥ उन अन्य श्रावकोंने शंख श्रमणोपासक की इस बात को विनय पूर्वक सुनी ॥ १० ॥ फीर उस शंख श्रमणोपासक को ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि अशन, पान, खादिम व स्वादिम इन .रों का आहार करके पखी पौषध करते हुवे विचरना मुझे श्रेय नहीं है; परंतु पौषधशाला में पौषध युक्त, ब्रह्मचर्य सहित, मणि सुवर्ण का त्याग

शब्दार्थ के दे० देवलोक प० प्ररूपे गो० गौतम इ० यह म० मनुष्य लोकमें अ० अशोक वृक्षके वन स० सप्त पर्णवन चं० चंपकवन चू० आम्रवन ति० तिलकवन ला० वृक्ष विशेष नि० वड के वन छ० छत्राहवन अ० असनवन स० शणकेवन अ० अलसीके वन कु० कुसुंभवन सि० सरसव के वन बं० वृक्ष विशेष नि० नित्य कु० कुसुम वाले मौं० मंजरी ल० वेल थ० फूलजाति गु० लता गो० पत्रसमुह ज० समश्रेणी जु० युगल वि० नमेहुवे प० विशेष नमेहुवे सु० प्रगट पिं० लुम्न मं० मांजर व० नवकुंपल ध० धारन करने वाले सि० शो-

सूत्र लाउयवणेइवा, निग्गोहवणेइवा, छत्तोहवणेइवा; असणवणेइवा, सणवणेइवा, अयासिवणेइवा, कुसुंभवणेइवा, सिद्धत्थवणेइवा, बंधुजीववणेइवा; निचं कुसुमिय माइयलवइयथवइय गुलुइय गोच्छिय जमालिय जुवालिय विणमिय पणमिय सुविभत्त पिंडिमंजरि वडिंगधरे, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ एवामेव तेसिं वाणमंतरा-

भावार्थ युगल वृक्ष के पुष्पों का भार से नमे हुवे, विशेष नमें हुवे, नविन कुंपल रूपी मुकुट को धारण करने वाले व वनलक्ष्मी से बहुत ही शोभनीक हैं वैसेही उन वाणव्यंतर देवता के देवलोक जानना. उस की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की जानना. वे देवलोक बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों से व्याप्त, क्रीडा में आसक्त होनेसे उपरा उपर आच्छादे हुवे, परस्पर बहुत दूर तक खेलनेसे

शब्दार्थ — उ॰ उच्चार पा॰ प्रस्रवण भू॰ भूमि को प॰ देखकर द॰ दर्भ सं॰ संथारा सं॰ संथरकर दु॰ बैठकर पो॰ पौषध शाला में पो॰ पौषध सहित बं॰ ब्रह्मचर्य जा॰ यावत् प॰ पाक्षिक पो॰ पौषध प॰ पालने वि॰ विचरने लगा ॥११॥ त॰ फीर ते॰ वे स॰ श्रमणोपासक जे॰ जहां सा॰ श्रावस्ती न॰ नगरी जे॰ जहां सा॰ अपने २ गि॰ गृह ते॰ वहां उ॰ आकर वि॰ विपुल अ॰ अशन ४ उ॰ तैयार किया अ॰ परस्पर स॰ बोलाये ए॰ ऐसे व॰ बोले ए॰ ऐसे दे॰ देवानुप्रिय अ॰ हमने वि॰ बहुत अ॰ अशन ४ उ॰ तैयार

सूत्र — उच्चार पासवण भूमीओ पडिलेहेइ २ त्ता, दब्भसंथारगं संथरइ २ त्ता, दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता, पोसह सालाए पोसाहिए बंभचारीओ जाव पक्खियं पोसहं पडि जागरमाणे विहरइ ॥ ११ ॥ तएणं ते समणोवासगा जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति २ त्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले

भावार्थ — उच्चार प्रस्रवण भूमि देख कर, दर्भ संथारा संथरकर, दर्भ संथारे पर बैठकर, पौषधशाला में पौषध सहित ब्रह्मचर्य युक्त यावत् पाक्षिक पौषध करते हुवे विचरने लगा ॥ ११ ॥ अब अन्य श्रमणोपासक भी श्रावस्ती नगरी में अपने २ गृह आये और विपुल अशन, पान, खादिम व स्वादिम बनाकर परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! अपनने अशनादि तैयार किये हैं, परंतु शंख श्रमणोपासक आये नहीं हैं: इस में

शब्दार्थ के दे० देवलोक प० मरूपे गो० गौतम इ० यह म० मनुष्य लोकमें अ० अशोक वृक्षके वन स० सप्त पर्णवन चं० चंपकवन चू० आम्रवन ति० तिलकवन ला० वृक्ष विशेष नि० वड के वन छ० छत्राहवन अ० अतसवन स० शणकेवन अ० अलसीके वन कु० कुसुंभवन सि० सरसव के वन वं० वृक्ष विशेष नि० नित्य कु० कुसुम वाले मौं० मंजरी ल० वेल थ० फूलजाति गु० लता गो० पत्रसमुह ज० समश्रेणी जु० युगल वि० नमेहुवे प० विशेष नमेहुवे मु० मगट पिं० लुम्ब मं० मांजर व० नवकुंपल ध० धारन करने वाले सि० शो-

सूत्र लाउयवणेइवा,निग्गोहवणेइवा,छत्तोहवणेइवा;असणवणेइवा,सणवणेइवा,अयासिवणेइवा, कुसुंभवणेइवा, सिद्धत्थवणेइवा, बंधुजीववणेइवा; निच्चं कुसुमिय माइयलवइयथवइय गुलु-इय गोच्छिय जमालिय जुवालिय विणमिय पणमिय सुविभत्त पिंडिमंजरि वडिंगधरे, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ एवामेव तेसिं वाणमंतरा-

भावार्थ युगल वृक्ष के पुष्पों का भार से नमे हुवे, विशेष नमें हुवे, नविन कुंपल रूपी मुकुट को धारण करने वाले व वनलक्ष्मी से बहुत ही शोभनीक हैं वैसेही उन वाणव्यंतर देवता के देवलोक जानना. उस की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की जानना. वे देवलोक बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों से व्याप्त, क्रीडा में आसक्त होनेसे उपरा उपर आच्छादे हुवे, परस्पर बहुत दूर तक खेलनेसे

शब्दार्थ उ० उच्चार पा० प्रस्रवण भू० भूमि को प० देखकर द० दर्भ सं० संथारा सं० संथरकर दु० बैठकर पो० पौषध शाला में पो० पौषध सहित बं० ब्रह्मचर्य जा० यावत् प० पाक्षिक पो० पौषध प० पालने वि० विचरने लगा ॥११॥ त० फीर ते० वे स० श्रमणोपासक जे० जहां सा० श्रावस्ती न० नगरी जे० जहां सा० अपने २ गि० गृह ते० वहां उ० आकर वि० विपुल अ० अशन ४ उ० तैयार किया अ० परस्पर स० बोलाये ए० ऐसे व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय अ० हमने वि० बहुत अ० अशन ४ उ० तैयार

सूत्र उच्चार पासवण भूमीओ पडिलेहेइ २ त्ता, दब्भसंथारगं संथरइ २ त्ता, दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता, पोसह सालाए पोसहिए बंभचारीओ जाव पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ॥ ११ ॥ तएणं ते समणोवासगा जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति २ त्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले

भावार्थ उच्चार प्रस्रवण भूमिदेख कर, दर्भ संथारा संथरकर, दर्भ संथारे पर बैठकर, पौषधशाला में पौषध सहित ब्रह्मचर्य युक्त यावत् पाक्षिक पौषध करते हुये विचरने लगा ॥ ११ ॥ अब अन्य श्रमणोपासक भी श्रावस्ती नगरी में अपने २ गृह आये और विपुल अशन, पान, खादिम व स्वादिम बनाकर परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! अपनने अशनादि तैयार किये हैं, परंतु शंख श्रमणोपासक आये नहीं हैं, इस से

शब्दार्थ जाता है जी० जीव अ० असयंति जा० यावत् दे० देव सि० हावे॥४८॥से० ऐसेही भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर को वं० वंदे ण० नमस्कार किया वं० वंदना करके सं० संयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं. ॥ १ ॥ १ ॥ * रा० राजगृह ण० नगर स० समवसरण प० परिषदाणि निर्गता जा० यावत् ए० ऐसा व० कहा जी० *

सूत्र गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पा- णं भावेमाणे विहरइ इति पढमसए पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ रायगिहे णयरे, समोसरणं, परिसा णिग्गया जाव एवं. वयासी. जीवेणं भंते सय ×

विभार्थ वचनों को बहुत मान देकर गौतम स्वामीने श्रीःश्रमण भगवन्त महावीर को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर के संयम व तपसे आत्मा के स्वरूप को विचारते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १ ॥ १ ॥ + + गत उद्देशे में कर्म के चलनादि प्रश्नोत्तर कहे हैं वे कर्म दुःखरूप होते हैं इसलिये आगे दुःख का प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवन्त श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वांदने को आई, वाणी सुनकर परिषदा पीछीगई. उस समय श्री गौतम स्वामीने भगवन्त को प्रश्न पुछा कि अहो भगवन् ! जीव अपना किया हुवा दुःख वेदता है ? अहो गौतम ! कितनेक स्वकृत कर्मवेदे, कित-

अर्थ उ॰ उच्चार पा॰ प्रस्रवण भू॰ भूमि को प॰ देखकर द॰ दर्भ सं॰ संथारा सं॰ संथरकर दु॰ बैठकर पो॰ पौषध शाला में पो॰ पौषध सहित बं॰ ब्रह्मचर्य जा॰ यावत् प॰ पाक्षिक पो॰ पौषध प॰ पालने वि॰ विचरने लगा ॥११॥ त॰फीर ते॰ वे स॰ श्रमणोपासक जे॰ जहां सा॰ श्रावस्ती न॰ नगरी जे॰ जहां सा॰ अपने २ गि॰ गृह ते॰ वहां उ॰ आकर वि॰ विपुल अ॰ अशन ४ उ॰ तैयार किया अ॰ परस्पर स॰ बोलाये ए॰ ऐसे व॰ बोले ए॰ ऐसे दे॰ देवानुप्रिय अ॰ हमने वि॰ बहुत अ॰ अशन ४ उ॰ तैयार

सूत्र उच्चार पासवण भूमीओ पडिलेहेइ २ त्ता, दब्भसंथारगं संथरइ २ त्ता, दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता, पोसह सालाए पोसहिए बंभचारीओ जाव पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ॥ ११ ॥ तएणं ते समणोवासगा जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति २ त्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले

भावार्थ उच्चार प्रस्रवण भूमि देख कर, दर्भ संथारा संथरकर, दर्भ संथारे पर बैठकर, पौषधशाला में पौषध सहित ब्रह्मचर्य युक्त यावत् पाक्षिक पौषध करते हुवे विचरने लगा ॥ ११ ॥ अब अन्य श्रमणोपासक भी श्रावस्ती नगरी में अपने २ गृह आये और विपुल अशन, पान, खादिम व स्वादिम बनाकर परस्पर ऐसा बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! अपनने अशनादि तैयार किये हैं, परंतु शंख श्रमणोपासक आये नहीं हैं...

शब्दार्थ जाता है जी० जीव अ० असयंति जा० यावत् दे० देव सि० होवे॥४५॥से० ऐसेही भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर को वं० वंदे ण० नमस्कार किया वं० वंदना करके सं० संयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं. ॥ १ ॥ १ ॥ * रा० राजगृह ण० नगर स० समवसरण प० परिषदाणि निर्गता जा० यावत् ए० ऐसा व० कहा जी०

सूत्र गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ इति पढमसए पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ * रायगिहे णयरे, समोसरणं, परिसा णिग्गया जाव एवं. वयासी. जीवेणं भंते सय

भावार्थ वचनों को बहुत मान देकर गौतम स्वामीने श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर के संयम व तपसे आत्मा के स्वरूप को विचारते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १ ॥ १ ॥ + + ×

गत उद्देशे में कर्म के चलनादि प्रश्नोत्तर कहे हैं वे कर्म दुःखरूप होते हैं इसलिये आगे दुःख का प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवन्त श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वांदने को आई, वाणी सुनकर परिषदा पीछीगई. उस समय श्री गौतम स्वामीने भगवन्त को प्रश्न पुछा कि अहो भगवन् ! जीव अपना किया हुवा दुःख वेदता है ? अहो गौतम ! कितनेक स्वकृत कर्मवेदे, कित-

शब्दार्थ क गि० गृह में अ० प्रवेश किया ॥ १३ ॥ त० तब सा० वह उ० उत्पला स० श्रमणोपासिका पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक को ए० आता हुवा पा० देखकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट आ० आसन से अ० उपस्थित हुए स० सात आठ प० पांव अ० जाकर पो० पुष्कली म० श्रमणोपासक को वं० वंदना ण० नमस्कार कर आ० आसन से उ० निमंत्रणाकर ए० ऐसे व० बोले सं० कहो दे० देवानुप्रिय कि० किस लिये आ० आनेका प० प्रयोजन ॥ १४ ॥ त० तब से० वह पु० पुष्कली स० श्रमणोपासक उ० उत्पला

सूत्र विट्ठे ॥ १३ ॥ तएणं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासगं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता सत्तट्ठपयाहिं अणुगच्छइ २ त्ता, पोक्खलिं समणोवासगं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता आसणेणं उवनिमंतेइ २ त्ता एवं वयासी संदिसंतुणं देवाणुप्पिया ! किमागमण पओ-यणं ? ॥ १४ ॥ तएणं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं

भावार्थ पास से नीकलकर श्रावस्ती नगरी के मध्य में होता हुवा शंख श्रमणोपासक के गृह गया ॥ १३ ॥ उस समय में उत्पला श्राविकाने पोखली श्रावक को आता हुवा देखा. देखकर बहुत हर्षित हुई और अपने आसन से उठकर सात आठ पांव (कदम) सन्मुख गई. पोखली श्रमणोपासक को वंदना नमस्कार करके आसन की निमंत्रणा की. फीर आने का प्रयोजन पूछा ॥ १४ ॥ पोखली श्रावकने उत्पला

शब्दार्थ जाता है जी० जीव अ० असयंति जा० यावत् दे० देव सि० होवे॥४५॥से० ऐसेही भ० भगवन् गो० गौतम
स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर को वं० वंदे ण० नमस्कार किया वं० वंदना करके सं० संयम से त०
तपसे अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं. ॥ १ ॥ १ ॥ *
रा० राजगृह ण० नगर स० समवसरण प० परिषदाणि निर्गता जा० यावत् ए० ऐसा व० कहा जी०

सूत्र गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पा-
णं भावेमाणे विहरइ इति पढमसए पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ *
रायगिहे णयरे, समोसरणं, परिसा णिग्गया जाव एवं. वयासी. जीवेणं भंते सय

भावार्थ वचनों को बहुत मान देकर गौतम स्वामीने श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना नमस्कार किया, वंदना
नमस्कार कर के संयम व तपसे आत्मा के स्वरूप को विचारते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का
पहिला उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १ ॥ १ ॥ + + ×
गत उद्देश में कर्म के चलनादि प्रश्नोत्तर कहे हैं वे कर्म दुःखरूप होते हैं इसलिये आगे दुःख का प्रश्न
करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवन्त श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वांदने
को आई, वाणी सुनकर परिषदा पीछीगई. उस समय श्री गौतम स्वामीने भगवन्त को प्रश्न पुछा कि
अहो भगवन् ! जीव अपना किया हुवा दुःख वेदता है ? अहो गौतम ! कितनेक स्वकृत कर्मवेदे, कित-

शब्दार्थ किया सं० शंख स० श्रमणोपासक को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोला पूर्ववत् ॥ १६ ॥ त० तब से० वह सं० शंख स० श्रमणोपासक पु० पुष्कली स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोला णो० नहीं क० कल्पता है मे० मुझे दे० देवानुप्रिय तं० उस वि० बहुत अ० अशन ४ आ० आस्वादते जा० यावत् प० पालते वि० विचरने को क० कल्पता है मे० मुझे पो० पौषध शाला में पो०

सूत्र उवागच्छइ २ त्ता, गमणागमणाए पडिक्कमइ २ त्ता, संखं समणोवासगं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण जाव साइमे उवक्खडाविते तं गच्छामोणं देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं जाव साइमं आस्सादेमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरामो ॥ १६ ॥ तएणं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी णो खलु कप्पइ मे देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स

भावार्थ कर ऐसा बोलने लगा कि अहो देवानुप्रिय ! हमने विपुल अशनादि बनाया है, इस से तुम वहां चलो और अपन सब उस का आस्वादन यावत् पौषध की जागरणा जागते हुवे विचरेंगे ॥ १६ ॥ शंख श्रमणोपासक ऐसा बोला कि अहो देवानुप्रिय ! मुझे अशनादि भोगवकर यावत् पौषध करते हुवे विचरना नहीं कल्पता है परंतु पौषधशाला में यावत पौषध करके विचरना मुझे कल्पता है, इस से अहो देवानुप्रिय ! तुम सुखपूर्वक

ार्थ नहीं उदयमें आया वे० वेदे से० वह ते० इसलिये ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० ऐसा च० चौवीस दं० दंडक को जा० यावत् वे० वैमानीक ज० जैसे दु० दुःख में दो० दोभेद त० तैसे आ० आयुष्य में ए० एकवचन पो० पृथक् ए० एक वचन से जा० यावत् वे० वैमानिक पु० पृथक् तक ॥ १ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सरिखे आहारी स० सर्व स० सरिखे शरीरी स० सर्व स० सरिखे ऊश्वासनी

सूत्र जीवेणं भंते सयं कडं आउयं वेदेंति? गोयमा! अत्थेगइयं वेदेंति, अत्थेगइयं णो वेदेंति जहा दुक्खेणं दो दंडगा तहा आउएणावि. एगत्त पोहत्तिया, एगत्तेणं, जाव वेमाणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे ? सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समुस्सासणिस्सासा? गोयमा! णेरइयां दुविहा पण्ण

भावार्थ नहीं. अहो भगवन् ! किसकारन से ? अहो गौतम ! उदय आयाहुवा वेदे और उदय में नहीं आयाहुवा वेदे नहीं इस कारण से कितनेक जीव स्वकृत आयुष्य वेदे और कितनेक वेदे नहीं. ऐसे ही अनेक जीव आश्रित जानना. और चौविस ही दंडक आश्रित दोनों बोल उतारना ॥ १ ॥ आयुष्य आहार के बलसे ही टिकता है इसलिये आहार संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सारिखे आहार करने वाले हैं ? क्या सब सरिखे शरीर वाले हैं ? क्या सब सरीखे श्वासोश्वास लेने वाले हैं ? अहो गौतम ! यह

शब्दार्थ दे० देवानुप्रिय तु० तुम वि० विपुल अ० अशन जा० यावत् वि० विचरो सं० शंख स० श्रमणोपासक नो० नहीं आ० आता है ॥ १८ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक वि० विपुल अ० अशन ४ आ० आस्वादते जा० यावत् वि० विचरते थे ॥ १९ ॥ त० तब त० उस सं० शंख स० श्रमणोपासक को पु० पूर्व रात्रि में ध० धर्म जागरणा जा० करते अ० यह ए० ऐसा जा० यावत् स० उत्पन्न हुआ से० श्रेय मे० मुझे क० कल पा० प्रभात में जा० यावत् ज० ज्वलंत स० श्रमण भ० भगवन्त

सूत्र पोसहिए जाव विहरइ तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे विउलं असणं ४ जाव विहरह संखेणं समणोवासए णो हव्व मागच्छइ ॥ १८ ॥ तएणं ते समणोवासगा तं विउलं असणं ४ आस्साएमाणा जाव विहरंति ॥ १९ ॥ तएणं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्म जागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था, सेयं खलु मे कल्लं पादु जाव जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता

भावार्थ इच्छानुसार [illegible] पौषध करते हुवे विचरो. शंख श्रमणोपासक अभी नहीं आसकते हैं ॥ १८ ॥ फीर वे श्रमणोपासक उस विपुल अशनादि आस्वादते हुवे विचरने लगे ॥ १९ ॥ उस समय में शंख श्रमणोपासक को पूर्व रात्रि में धर्म जागरणा करते हुवे ऐसा अध्यवसाय हुवा कि कल प्रभात में सूर्योदय होते श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर वहां से आये पीछे पौषध व्रत पालना मुझे

शब्दार्थ नहीं उदयमें आया वे० वेदे से० वह ते० इसलिये ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० ऐसा च० चौवीस दं० दंडक को जा० यावत् वे० वैमानीक ज० जैसे दु० दुःख में दो० दोभेद त० तैसे आ० आयुष्य में ए० एकवचन पो० पृथक् ए० एक वचन से जा० यावत् वे० वैमानिक पु० पृथक् तक ॥ १ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सरिखे आहारी स० सर्व स० सरिखे शरीरी स० सर्व स० सरिखे ऊश्वासनी

सूत्र जीवेणं भंते सयं कडं आउयं वेदेंति? गोयमा! अत्थेगइयं वेदेंति, अत्थेगइयं णो वेदेंति जहा दुक्खेणं दो दंडगा तहा आउएणवि. एगत्त पोहत्तिया, एगत्तेणं, जाव वेमाणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे ? सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समुस्सासणिस्सासा? गोयमा! णेरइयां दुविहा पण्ण

भावार्थ नहीं. अहो भगवन् ! किसकारन से ? अहो गौतम ! उदय आयाहुवा वेदे और उदय में नहीं आयाहुवा वेदे नहीं इस कारण से कितनेक जीव स्वकृत आयुष्य वेदे और कितनेक वेदे नहीं. ऐसे ही अनेक जीव आश्रित जानना. और चौविस ही दंडक आश्रित दोनों बोल उतारना ॥ १ ॥ आयुष्य आहार के बलसे ही टिकता है इसलिये आहार संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सारिखे आहार करने वाले हैं ? क्या सब सरिखे शरीर वाले हैं ? क्या सब सरीखे श्वासोश्वास लेने वाले हैं ? अहो गौतम ! यह

ते० वे स० श्रमणोपासक क० काल पा० प्रातः में जा० यावत् ज० ज्वलंत ण्हा० स्नान किया क० कृत जा० यावत् स० शरीर वाले अ० अपने गि० गृह से प० नीकल कर ए० एकत्रित मि० मीलते हैं से० शेष ज० जैसे प० प्रथम जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥ २१ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० उन स० श्रमणोपासकों को ती० उस ध० धर्मकथा जा० यावत् आ० आज्ञा से आ० आराधक भ० होता है ॥ २२ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अ० पास ध० धर्म सो० सुनकर नि० अवधार कर ह० हृष्ट तु० तुष्ट उ० उठकर स०

सएहिं गिहेहिंतो पडिणिक्खमंति २ त्ता एगयओ मिलायंति २ त्ता, सेसं जहा पढमं जाव पज्जुवासइ ॥ २१ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसेय धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ ॥ २२ ॥ तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता

किया, यावत् अलंकारों से शरीर विभूषित किया अपने २ गृह से नीकलकर एकत्रित हुए. शेष सब पहिले जैसे जानना यावत् पर्युपासना करने लगे ॥ २१ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उन श्रमणोपासकों को उस महती परिषदा में धर्मकथा सुनाइ यावत् आज्ञा का आराधक होता है ॥ २२ ॥ भगवंत श्री महावीर स्वामी की पास से धर्म श्रवण कर के श्रमणोपासकों हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुए और श्रमण

शब्दार्थ — नहीं उदयमें आया वे॰ वेदे से॰ वह ते॰ इसलिये ए॰ ऐसा वु॰ कहा जाता है ए॰ ऐसा च॰ चौवीस दं॰ दंडक को जा॰ यावत् वे॰ वैमानीक ज॰ जैसे दु॰ दुःख में दो॰ दोभेद त॰ तैसे आ॰ आयुष्य में ए॰ एकवचन पो॰ पृथक् ए॰ एक वचन से आ॰ यावत् वे॰ वैमानिक पु॰ पृथक् तक ॥ १ ॥ णे॰ नारकी भं॰ भगवन् स॰ सर्व स॰ सरिखे आहारी स॰ सर्व स॰ सरिखे शरीरी स॰ सर्व स॰ सरिखे ऊश्वासनी

सूत्र — जीवेणं भंते सयं कडं आउयं वेदेंति? गोयमा! अत्थेगइयं वेदेंति, अत्थेगइयं णो वेदेंति जहा दुक्खेणं दो दंडगा तहा आउएणवि. एगत्त पोहत्तिया, एगत्तेणं, जाव वेमाणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे ? सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समुस्सासणिस्सासा? गोयमा! णेरइया दुविहा पण्ण

भावार्थ — नहीं. अहो भगवन् ! किसकारन से ? अहो गौतम ! उदय आयाहुवा वेदे और उदय में नहीं आयाहुवा वेदे नहीं इस कारण से कितनेक जीव स्वकृत आयुष्य वेदे और कितनेक वेदे नहीं. ऐसे ही अनेक जीव आश्रित जानना. और चौविस ही दंडक आश्रित दोनों बोल उतारना ॥ १ ॥ आयुष्य आहार के बलसे ही टिकता है इसलिये आहार संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सारिखे आहार करने वाले हैं ? क्या सब सरिखे शरीर वाले हैं ? क्या सब सरीखे श्वासोश्वास लेने वाले हैं ? अहो गौतम ! यह

शब्दार्थ पृथक् आ० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट दिवस पृथक् ॥ ३६ ॥ वे० वैमानिक को ठि० स्थिति भा० कहना उ० उश्वास ज० जघन्य मु० मुहूर्त पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस प० पक्ष आ० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीसवर्ष स० सहस्र से० शेष तं० तैसे जा० यावत् णि० निर्जरे ए० ऐसे ठि० स्थिति आ० आहार भा० कहना ठि० स्थिति ज० जैसे ठि०

सूत्र वि णवरं उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्त पुहुत्तस्स आहारो जहण्णेणं दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेणवि दिवस पुहुत्तस्स सेसं तंचेव ॥ ३६ ॥ वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वाओहिया, उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं ॥ आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं, सेसं तंचेव जाव णिज्जरेंति. एवं ठिती आहारो य भाणियव्वो.

भावार्थ उश्वास जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक मुहूर्त आहार की इच्छा जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक दिन में होवे ॥ ३६ ॥ वैमानिक देवताओं की स्थिति जघन्य एक पल्योपमकी उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की श्वासोश्वास जघन्य प्रत्येक मुहूर्त में लेवे उत्कृष्ट ३३ पक्ष में लेवे, आभोग निवर्तित आहार की इच्छा जघन्य प्रत्येक दिन में होवे. उत्कृष्ट तेत्तीस हजार वर्ष में होवे शेष चलित कर्म की निर्जरा करे वहांतक सब अधिकार पाहिले जैसे कहना. सब जीवों की स्थिति स्थिति पद से जानना व आहार पन्नवणा सूत्रके पाहिले आहार उद्देशे में जैसा

शब्दार्थ

करे ब० बहुत पो० पुद्गल प० परिणमे व० बहुत पो० पुद्गल ऊ० ऊश्वासे व० बहुत पो० पुद्गल का णी० निश्वास ले अ० वारंवार आ० आहारले अ० वारंवार परिणमे अ० वारंवार ऊ० ऊश्वासले अ० वारंवार णी० निश्वासले त० तहां जे० जो० अ० अल्प शरीरी ते० वे अ० थोडा पो० पुद्गल आ० आहार करे अ० थोडा पो० पुद्गल परिणमें अ० थोडे पो० पुद्गल ऊ० उश्वासले अ० थोडे पो० पुद्गल नी० निश्वासले ॥ २ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समकर्म वाले गो० गौतम णो० नहीं इ०

सूत्र

अप्पतराए पोग्गले ऊससंति, अप्पतराए पोग्गले णीससंति ।. आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च ऊससंति, आहच्च णीससंति. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, णेरइया णो सव्वे समाहारा, जाव णो सव्वे समुस्सास णीसासा ॥ २ ॥ णे-रइयाणं भंते सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, । सेकेणट्ठेणं भंते एवं

भावार्थ

आहारकरे, वारंवार परिणमावे, वारंवार श्वासलेवे, वारंवार श्वास नीकाले, और जो छोटे शरीर वाले हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं, अल्प पुद्गलों परिणमाते हैं, अल्प पुद्गलों का श्वासलेते हैं, अल्प पुद्गलों को श्वासरूप नीकालते हैं अथवा आंतरा सहित आहार करते हैं, परिणमते हैं, श्वास लेते हैं व श्वास नीकालते हैं. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि सब नारकी एक सरिखे शरीर, आहार व उश्वास, निश्वासवाले नहीं हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरिखे कर्म वाले हैं ? अहो

शब्दार्थ

स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोले मा० मत अ० आर्यो तु० तुम सं० शंख म० श्रमणोपासक की ही० हीलनाकरो नि० निंदा करो खि० खिसना करो अ० अवज्ञा करो सं० शंख स० श्रमणोपासक पि० प्रिय धर्मी द० दृढधर्मी सु० अच्छी जा० जागरणा जा० जगा ॥ २४ ॥ भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले क० कितने प्रकार की भं० भगवन् जा० जागरणा गो० गौतम ति० तीन प्रकार की जा० जागरणा प० प्ररूपी बु० बुद्ध जागरिका अ० अबुद्ध जागरिका सु०

सूत्र

वासए एवं वयासी माणं अज्जो ! तुब्भे संखं समणोवासगं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह, अवमण्णह संखेणं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए ॥२४॥ भंतेत्ति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ २ त्ता णमंसइ २ त्ता एवं वयासी कइविहाणं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता तंजहा बुद्धजागरिया; अबुद्ध जागरिया, सुदक्खु जागरिया । से केणट्ठेणं

भावार्थ

अहो आर्यों ! तुम शंख श्रमणोपासक की हीलना, निंदा, खिसना व गर्हा मत करो, क्यों कि शंख श्रमणोपासक प्रिय धर्मी दृढ धर्मी है. इन्होंने प्रमाद रहित जागरणा की है ॥ २४ ॥ फीर भगवान् गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! जागरणा कितने

र्थ

नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समवर्णवाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे वि० विशुद्ध वर्णवाले त० तैसेही से० वह ते० इसलिये ॥ ४ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम लेश्यावाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ त० तहां जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे वि० विशुद्ध लश्यावाले जे० जो प० पीछे

सूत्र

मा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं तहचेव ? गोयमा ! जे ते पुव्वोववण्णगा तेणं विसुद्ध वण्णतरागा तहेव । सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥४॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समलेस्सा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं जाव णो सव्वे समलेस्सा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पुव्वोववण्णगाय, पच्छोववण्णगाय तत्थणं जे ते पुव्वोव

र्थ

वर्ण वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. क्या कारण से ? अहो गौतम ! नारकी के दो भेद पहिले उत्पन्न हुवे और पीछे उत्पन्न, जो पहिले उत्पन्न हुवे वे ,विशुद्ध वर्णवाले होते हैं, और पीछे जो उत्पन्न. हुवे हैं वे विशुद्ध वर्ण वाले नहीं हैं; इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सम वर्ण वाले नहीं हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सरिखि लेश्या वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. क्या कारण से ? अहो गौतम! नारकी के दो भेद१ पहिले उत्पन्न हुवे व २ पीछे उत्पन्न हुवे. जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे विशुद्ध

. की आपेक्षा से दश हजार वर्ष की स्थिति वाला महाकर्मीहोसके ! अर्थात् नहीं होवे.

पदार्थ

स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोले मा० मत अ० आर्यो तु० तुम सं० शंख स० श्रमणोपासक की ही० हीलनाकरो नि० निंदा करो खि० खिसना करो अ० अवज्ञा करो सं० शंख स० श्रमणोपासक पि० प्रिय धर्मी द० दृढधर्मी सु० अच्छी जा० जागरणा जा० जगा ॥ २४ ॥ भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले क० कितने प्रकार की भं० भगवन् जा० जागरणा गो० गौतम ति० तीन प्रकार की जा० जागरणा प० प्ररूपी बु० बुद्ध जागरिका अ० अबुद्ध जागरिका सु०

सूत्र

वासए एवं वयासी माणं अजो ! तुब्भे संखं समणोवासगं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह, अवमण्णह संखेणं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए ॥२४॥ भंतेत्ति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ २ त्ता णमंसइ २ त्ता एवं वयासी कइविहाणं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता तंजहा बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खु जागरिया । से केणट्ठेणं

भावार्थ

अहो आर्यो ! तुम शंख श्रमणोपासक की हीलना, निंदा, खिंसना व गर्हा मत करो, क्यों कि शंख श्रमणोपासक प्रिय धर्मी दृढ धर्मी है. इन्होंने प्रमाद रहित जागरणा की है ॥ २४ ॥ फीर भगवान् गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! जागरणा कितने

शब्दार्थ जे० जो सं० संज्ञी ते० वे म० बहुतवेदना वाले जे० जो अ० असंज्ञी अ० थोडीवेदनावाले ॥६॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी ति० तीनप्रकार के स० सम्यक् दृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० सममिथ्यादृष्टि जे० जो स० समदृष्टि ते० उन को च० चारक्रिया प० प्ररूपी आ०

सूत्र ते असण्णिभूया तेणं अप्पवेयणतरागा से तेणट्ठेणं गोयमा ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! णेरइया तिविहा प० तं० सम्मद्दिट्ठीय, मिच्छादिट्ठीय, सम्मामिच्छादिट्ठीय । तत्थणं जेते सम्मदिट्ठी तेसिणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ तं० आरंभिया, परिग्गहिया,

भावार्थ ऐसा भी अर्थ करते हैं कि संज्ञी पंचेन्द्रिय नारकी में उत्पन्न होवे सो संज्ञीभूत वे बहुत वेदनावाले होवे क्यों कि अशुभ अध्यवसाय से बहुत अशुभ कर्म का बंध कीया और इस से नरक में उत्पन्न हुवे. और असंज्ञी पंचेन्द्रिय प्रथम नरक में असंज्ञीपने उत्पन्न होवे वे अल्प वेदनावाले होवे क्यों कि उनको आति तीव्र अशुभ अध्यवसाय नहीं होते हैं. अथवा संज्ञीभूत सो पर्याप्ता बहुत वेदनावाले और असंज्ञीभूत सो अपर्याप्ता अल्पवेदना वाले, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी वेदनावाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सम क्रियावाले हैं ? अहो गौतम यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यों कि नारकी के तीन भेद कहे हैं. १ समदृष्टी, २ मिथ्यादृष्टी ३ सममिथ्यादृष्टि. उस में जो समदृष्टी हैं उन को चार

शब्दार्थ — स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोले मा० मत अ० आर्यों तु० तुम सं० शंख स० श्रमणोपासक की ही० हीलनाकरो नि० निंदा करो खिं० खिसना करो अ० अवज्ञा करो सं० शंख स० श्रमणोपासक पि० प्रिय धर्मी द० दृढधर्मी सु० अच्छी जा० जागरणा जा० जगा ॥ २४ ॥ भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले क० कितने प्रकार की भं० भगवन् जा० जागरणा गो० गौतम ति० तीन प्रकार की जा० जागरणा प० प्ररूपी बु० बुद्ध जागरिका अ० अबुद्ध जागरिका सु०

सूत्र — वासए एवं वयासी माणं अज्जो ! तुब्भे संखं समणोवासगं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह, अवमण्णह संखेणं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए ॥२४॥ भंतेत्ति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ २ त्ता णमंसइ २ त्ता एवं वयासी कइविहाणं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता तंजहा बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खु जागरिया । से केणट्ठेणं

भावार्थ — अहो आर्यों ! तुम शंख श्रमणोपासक की हीलना, निंदा, खिसना व गर्हा मत करो, क्यों कि शंख श्रमणोपासक प्रिय धर्मी दृढ धर्मी है. इन्होंने प्रमाद रहित जागरणा की है ॥ २४ ॥ फीर भगवान् गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! जागरणा कितने

शब्दार्थ जे० जो सं० संज्ञी ते० वे म० बहुतवेदना वाले जे० जो अ० असंज्ञी अ० थोडीवेदनावाले ॥६॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी ति० तीन प्रकार के स० सम्यक् दृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० समामिथ्यादृष्टि जे० जो स० समदृष्टि ते० उन को च० चारक्रिया प० प्ररूपी आ०

सूत्र ते असण्णिभूया तेणं अप्पवेयणतरागा से तेणट्ठेणं गोयमा ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! णेरइया तिविहा प० तं० सम्मादिट्ठीय, मिच्छादिट्ठीय, सम्मामिच्छादिट्ठीय । तत्थणं जेते सम्मादिट्ठी तेसिणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ तं० आरंभिया, परिग्गहिया,

भावार्थ ऐसा भी अर्थ करते हैं कि संज्ञी पंचेन्द्रिय नारकी में उत्पन्न होवे सो संज्ञीभूत वे बहुत वेदनावाले होवे क्यों कि अशुभ अध्यवसाय से बहुत अशुभ कर्म का बंध कीया और इस से नरक में उत्पन्न हुवे. और असंज्ञी पंचेन्द्रिय प्रथम नरक में असंज्ञीपने उत्पन्न होवे वे अल्प वेदनावाले होवे क्यों कि उनको अति तीव्र अशुभ अध्यवसाय नहीं होते हैं. अथवा संज्ञीभूत सो पर्याप्ता बहुत वेदनावाले और असंज्ञीभूत सो अपर्याप्ता अल्पवेदना वाले, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी वेदनावाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सम क्रियावाले हैं ? अहो गौतम यह अर्थ योग्य नहीं हैं. क्यों कि नारकी के तीन भेद कहे हैं. १ समदृष्टी, २ मिथ्यादृष्टी ३ समामिथ्यादृष्टि. उस में जो समदृष्टी हैं उन को चार

शब्दार्थ

स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोले मा० मत अ० आर्यो तु० तुम सं० शंख स० श्रमणोपासक की ही० हीलनाकरो नि० निंदा करो खिं० खिसना करो अ० अवज्ञा करो सं० शंख स० श्रमणोपासक पि० प्रिय धर्मी द० दृढधर्मी सु० अच्छी जा० जागरणा जा० जगा ॥ २४ ॥ भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले क० कितने प्रकार की भं० भगवन् जा० जागरणा गो० गौतम ति० तीन प्रकार की जा०जागरणा प० प्ररूपी बु० बुद्ध जागरिका अ०अबुद्ध जागरिका सु०

सूत्र

वासए एवं वयासी माणं अज्जो ! तुब्भे संखं समणोवासगं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह, अवमण्णह संखेणं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए ॥२४॥ भंतेत्ति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ २ त्ता णमंसइ २ त्ता एवं वयासी कइविहाणं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता तंजहा बुद्धजागरिया, अबुद्ध जागरिया, सुदक्खु जागरिया । से केणट्ठेणं

भावार्थ

अहो आर्यो ! तुम शंख श्रमणोपासक की हीलना, निंदा, खिसना व गर्हा मत करो, क्यों कि शंख श्रमणोपासक प्रिय धर्मी दृढ धर्मी है. इन्होंने प्रमाद रहित जागरणा की है ॥ २४ ॥ फीर भगवान् गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! जागरणा कितने

शब्दार्थ इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी च० चार प्रकार के अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले वि० विषमो उत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले वि० विषमत्पन्न ॥ ८ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् स० सर्व स० सम आहारी स० सर्व स० सम शरीरी ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कह-

सूत्र णोइणट्ठे समट्ठे। सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा! णेरइया चउव्विहा प०तं० अत्थेगइया समाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥८॥ असुरकुमाराणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा ? जहा णेरइया

भावार्थ एक साथ नहीं उत्पन्न होते हैं ३ कितनेक विषम आयुष्यवाले हैं और एक साथ उत्पन्न होने वाले हैं ४ कितनेक विषम आयुष्य वाले हैं और विषम उत्पन्न होने वाले हैं, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी एक सरिखे आयुष्य व एक साथ उत्पन्न होने वाले नहीं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के सब देवता क्या सरिखे आहार वाले व सरिखे शरीर वाले हैं ? अहो गौतम जैसे नारकी का कहा वैसेही यहां कहना. विशेष इतनाही कि असुरकुमारको भवधारणीय शरीरकी अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यात वे भाग उत्कृष्ट सात हाथकी और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुलका असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट एकलक्ष योजनकी. जो महाशरीर वाले होते

पदार्थ — यावत् वि० विचरते हैं सु० सुदक्षु जागरिका जा० जागते हैं से० वह ते० इसलिये गो० गौतम वु० कहा जाता है ति० तीन प्रकार की जा० जागरिका जा० यावत् सु० सुदक्षु जागरिका ॥ २५ ॥ त० तब से० वह सं० शंख स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले को० क्रोध वश से भं० भगवन् जी० जीव किं० क्या बं० बांधे किं० क्या प० करे कि० चि० चिने किं० क्या उ० उपचिने सं० शंख को० क्रोधवश से जी० जीव आ० आयुष्य व० वर्जकर

सूत्र — जागरति ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तिविहा जागरिया जाव सुदक्खु जागरिया ॥ २५ ॥ तएणं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी कोह वसट्टेणं भंते ! जीवे किं बंधइ किं पकरेइ किं चिणाइ किं उवचिणाइ ? संखा ! कोहवसट्टेणं जीवा आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिल बंधणबद्धाओ एवं जहा पढमेसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणु-

भावार्थ — भाषा समिति यावत् गुप्त ब्रह्मचारी होते हैं वे अबुद्ध जागरणा जागते हैं और जो जीव का स्वरूप जाननेवाले श्रमणोपासक होते हैं वे सुदक्षु जागरणा जागते हैं इस से अहो गौतम ! तीन जागरणा कही गई है॥२५॥ फीर वह शंख श्रमणोपासक श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! क्रोध में वर्तता हुआ जीव क्या बांधता है, क्या करता है, क्या एकत्रित करता है ? अहो

पदार्थ इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी च० चार प्रकार के अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले वि० विषमो उत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले वि० विषमत्पन्न ॥ ८ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् स० सर्व स० सम आहारी स० सर्व स० सम शरीरी ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कह-

सूत्र णोइणट्ठे समट्ठे। सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा! णेरइया चउव्विहा प०तं० अत्थेगइया समाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥८॥ असुरकुमाराणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा ? जहा णेरइया

भावार्थ एक साथ नहीं उत्पन्न होते हैं ३ कितनेक विषम आयुष्यवाले हैं और एक साथ उत्पन्न होने वाले हैं ४ कितनेक विषम आयुष्य वाले हैं और विषम उत्पन्न होने वाले हैं, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी एक सरिखे आयुष्य व एक साथ उत्पन्न होने वाले नहीं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के सब देवता क्या सरिखे आहार वाले व सरिखे शरीर वाले हैं ? अहो गौतम जैसे नारकी का कहा वैसेही यहां कहना. विशेष इतनाही कि असुरकुमारको भवधारणीय शरीरकी अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यात वे भाग उत्कृष्ट सात हाथकी और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुलका असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट एकलक्ष योजनकी. जो महाशरीर वाले होते

शब्दार्थ

सं० शंख स० श्रमणोपासक को वं० वंदन किया न० नमस्कार किया ए० इसअर्थ को वि० विनय से भु० वारंवार खा० क्षमाया ॥ २७ ॥ तव ते० वे स० श्रमणोपासक से० शेष ज० जैसे आ० आलंभिका में जा० यावत् प० पीछे गये ॥ २८ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले प० समर्थ भं० भगवन् सं० शंख स० श्रमणोपासक दे० देवानुप्रिय की अं० पास से० शेष ज० जैसे इ० ऋषि भद्रपुत्र का जा० यावत् अं० अंत का०

सूत्र

उवागच्छंति २ त्ता संखं समणोवासगं वंदंति नमंसंति एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो२ खामेंति ॥ २७ ॥ तएणं ते समणोवासगा सेसं जहा आलंभियाए जाव पडिगया ॥ २८ ॥ भंते त्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी पभूणं भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए सेसं जहाइसि भद्दपुत्तस्स जाव अंतं काहिति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥

भावार्थ

वंदना नमस्कार कर शंख श्रमणोपासक की पास आये और उन की पुनःपुनः क्षमा याची ॥ २७ ॥ फीर वे श्रमणोपासक आलंभिका नगरी के श्रावक की समान जहां से आये थे वहां पीछे चले गये ॥ २८ ॥ भगवान् गौतम स्वामी श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! शंख श्रमणोपासक आप की पास मुंडित बनकर गृहस्थावास से साधुपना अंगीकार करने को क्या

॥ १ ॥ पु० पृथ्वी काया को आ० आहार क० कर्म व० वर्ण लेश्या ज० जैसे णे० नारकी पु० पृथ्वीकाया पं० भगवन् स० सर्व स० समवेदना वाले हैं० हां स० समवेदना वाले से० वह के० कैसे गो० गौतम पु० पृथ्वीकाया स० सर्व अ० असंज्ञि अ० निर्धारविना वे० वेदते हैं से० वह ते० इसलिये पु० पृथ्वीकाया पं० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले हैं० हां स० समक्रिया वाले से० वह के० कैसे पु० पृथ्वी काया गो० गौतम स० सर्व मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि णि० निरंतर पं० पांचक्रिया क० करते हैं आ० आरंभिकी

सूत्र

जहा णेरइयाणं, पुढविकाइयाणं भंते सव्वे समवेदणा? हंता समवेदणा से केणट्ठेणं भंते सव्वे समवेयणा? गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे असण्णिभूया, अणिदाए वेदणं वेदेंति सेतेणट्ठेणं। पुढविकाइयाणं भंते सव्वे समकिरिया? हंता समकिरिया। सेकेण-ट्ठेणं भंते पुढविकाइया? गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे माईमिच्छादिट्ठी ताणंणेय-

अर्थ

काया को आहार, कर्म, वर्ण, व लेश्या नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! क्या सब पृथ्वीकायिक जीव समवेदनावाले हैं? गौतम सब पृथ्वी कायिक जीव समवेदनावाले हैं. अहो भगवन्! किस तरह से वे सब समवेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! सब पृथ्वीकायिक असंज्ञी भूत होने से निर्धार विना वेदना वेदते हैं परंतु वे कर्म पहिले के उपार्जित हैं वैसा जाने नहीं इसलिये अहो गौतम ! सब पृथ्वी कायिकजीव समवेदना वेदते हैं. अहो भगवन् ! सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखी क्रिया वाले हैं. ! हां गौतम वे सब सरिखी

का अ० आत्मज ज० जयंती स० श्राविका का भ० भत्तिजा उ० उदायन रा० राजा हो० था व० वर्णन युक्त ॥ २ ॥ त० उस को० कौशाम्बी न० नगरी में स० शतानीक र० राजा की भ० भार्या चे० चेडा राजा की धू० पुत्री उ० उदायन राजा की मा० माता ज० जयंती स० श्रमणोपासिका की भा० भावज मि० मृगावती दे० देवी हो० थी व० वर्णन युक्त जा० यावत् सु० सुरूप म० श्रमणोपासिका जा० यावत् वि० विचरती थी ॥ ३ ॥ त० उस को० कौशाम्बी ण० नगरी में स० सहस्रानीक राजाकी धू० पुत्री

भात्तिजए, उदायणे णामं राया होत्था, वण्णओ ॥ २ ॥ तत्थणं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदायणस्स रण्णो माया, जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मियावती णामं देवी होत्था वण्णओ, तंजहा जाव सुरूवा समणोवासिया जाव विहरइ ॥ ३ ॥ तत्थणं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया, सयाणीस्स रण्णो भगिणी, उदायणस्स रण्णो

नामक राजा था. उस का वर्णन कुणिक की समान जानना ॥ २ ॥ उस कौशाम्बी नगरी में सहस्रानिक राजा की पुत्रवधू, शतानिक राजा की भार्या, चेटक राजा की पुत्री, उदायन राजा की माता, जयंती श्रमणोपासिका की भावज मृगावती नामक रानी थी. वह वर्णन योग्य यावत् सुरूपा यावत् श्रमणोपासिका थी ॥ ३ ॥ वहां पर कौशाम्बी नगरी में सहस्रानिक राजा की पुत्री, शतानिक राजा की भगिनी,

शब्दार्थ ॥ ९ ॥ पु० पृथ्वी काया को आ० आहार क० कर्म व० वर्ण लेश्या ज० जैसे णे० नारकी पु०पृथ्वीकाया भं० भगवन् स० सर्व स० समवेदना वाले हं० हा स० समवेदना वाले से० वह के० कैसे गो० गौतम पु० पृथ्वीकाया स० सर्व अ० असंज्ञि अ० निर्द्धारविना वे० वेदते हैं पे० वह ते० इसलिये पु०पृथ्वीकाया भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले हं० हां स० सबक्रिया वाले से० वह के० कैसे पु० पुथ्वी काया गो० गौतम स० सर्व मा० मांयी मि० मिथ्यादृष्टि णे० निरंतर पं० पांचक्रिया क० करते हैं आ० आरंभिकी

सूत्र जहा णेरइयाणं, पुढविकाइयाणं भंते सव्वे समवेदणा? हंता समवेदणा से केणट्ठेणं भंते सव्वे समवेयणा ? गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे असण्णिभूया, अणिदाए वेदणं वेदेंति सेतेणट्ठेणं। पुढविकाइयाणं भंते सव्वे समकिरिया ? हंता समकिरिया। सेकेण-ट्ठेणं भंते पुढविकाइया ? गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे माईमिच्छादिट्ठी ताणंणेय-

भावार्थ काया को आहार, कर्म, वर्ण, व लेश्या नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! क्या सब पृथ्वीकायिक जीव समवेदना वाले हैं! गौतम सब पृथ्वी कायिक जीव समवेदनावाले हैं. अहो भगवन् ! किस तरहसे वे सब समवेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! सब पृथ्वीकायिक असंज्ञी भूत होने से निर्धार विना वेदना वेदते हैं परंतु ये कर्म पहिले के उपार्जित हैं वैसा जाने नहीं इसलिये अहो गौतम ! सब पृथ्वी कायिकजीव समवेदना वेदते हैं. अहो भगवन् ! सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखी क्रिया वाले हैं. ! हां गौतम वे सब सरिखी

शब्दार्थ

से० वह उ० उदायन रा० राजा इ० इसकी क० कथा को ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तुष्ट को० कौटुम्बिक पुरुषों को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोला खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय को० कौशाम्बी न० नगरी को स० आभ्यंतर स० सर्व जा० यावत् प० पर्युपासना करे ॥ ८ ॥ त० तब सा० वह ज० जयन्ती स० श्रमणोपासिका इ० इस क० कथाको ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तुष्ट जे० जहां मि० मृगावती दे० देवी ते० तहां उ० आकर ए० ऐसा व० बोली ए० ऐसा ज० जैसे ण० नवमें शतक में उ० ऋषभदत्त जा० यावत भ० होगा त०

सूत्र

से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २त्ता, एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कोसंबिं णयरिं सभिंतर बाहिरियं एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव पज्जुवासइ ॥ ८ ॥ तएणं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ तुट्ठा जेणव मिगावतीदेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी एवं जहा णवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ तएणं सा मियावई देवी

भावार्थ

सुनकर बहुत हर्षित यावत् आनंदित हुए और कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाकर ऐसा बोले कि अहो देवानु- प्रिय ! कौशाम्बी नगरी को आभ्यंतर व बाहिर साफ करो वगैरह वर्णन जैसे कूणिक राजा का कहा वैसे ही जानना ॥ ८ ॥ इस समय में जयंति श्रमणोपासिकाने इस बात को सुनी और हृष्ट तुष्ट बनकर मृगावती रानी की पास गई और जैसे नवये शतक में ऋषभदत्त ब्राह्मणने देवानंदा ब्राह्मणी को कहा

शब्दार्थ मिथ्यादृष्टि स० समिथ्यादृष्टि त० तहां जे० जो स० समदृष्टि ते० वे दु० दोप्रकार के अ० असंयति सं० संयतासंयति त० तहां जे० जो सं० संयतासंयति ते० उनको ति० तीन कि० क्रिया आ० आरंभिकी प० पारिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० असंयति को च० चार मि० तं० वह ज० जैसे

मूल रिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! पंचिंदिय तिरिक्खजो-णिया, तिविहा प० तं० सम्मद्दिट्ठी, मिच्छद्दिट्ठी ! सम्मामिच्छद्दिट्ठी, तत्थणं जे ते सम्मद्दिट्ठी ते दुविहा प० तं० असंजयाय, संजयासंजयाय, तत्थणं जे ते संजयासंजया तेसिणं तिण्णि किरियाओ कज्जति, तंजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया. असंज-

भावार्थ छोटा शरीरको अपनी २ अवगाहना जैसे कहना. विकलेन्द्रियादिक को प्रक्षेप आहार होता है ॥ ११ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय नारकी जैसे कहना. परंतु क्रिया में जो भेद है सो बताते हैं. अहो भगवन् क्या सब तिर्यंच पंचेन्द्रिय सरिख क्रिया वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. किस कारन से ? ति-र्यंच पंचेन्द्रिय के तीन भेद, सम्यक् दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, व समामिथ्यादृष्टि; उस में जो समदृष्टि हैं उनके दो भेद असंयति व संयतासंयति उस में जो संयतासंयति हैं. उनको तीन क्रिया लगती है. १ आरंभिकी, २ पारिग्रहिकी व ३ मायाप्रत्ययिकी, असंयतिको चार, समामिथ्यादृष्टि व मिथ्यादृष्टी को पांच २ क्रियाओं कही

सूत्र

जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धाम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ २त्ता जाव दुरूढा॥९॥ तएणं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धाम्मियं जाणप्पवरं दुरूढासमाणी णियगपरियाल जहा उसभदत्तो जाव धाम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ॥१०॥तएणं सा मियावई देवी जयंतीए समाणोवासियाए सद्धिं बहूहिं खुज्जाहिं जहा देवाणंदा जाव वंदइ णमंसइ, उदायणं रायं पुरओ कट्टु ठिइया चेव पज्जुवासइ ॥११॥तएणं समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रण्णो मियावईए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसेय महइ जाव धम्मं परिकहेइ जाव परिसा पडिगया ॥ उदायणे पडि-

भावार्थ

किया, बहुत कुब्ज वगैरह दासियों के परिवार से अंतःपुर से नीकलकर बाहिर उपस्थान शाला में धार्मिक रथ की पास आकर उस में बैठी ॥ ९ ॥ फीर वह मृगावती देवी जयंती श्रमणोपासिका की साथ वाहन पर बैठी हुइ अपने परिवार सहित वगैरह जैसे ऋषभदत्त का कहा वैसे ही धार्मिक रथसे नीचे उतरे ॥१०॥ वह मृगावती देवी बहुत दासियों के परिवार से जयंति श्राविकाके साथ देवानंदा जैसे वंदना नमस्कार किया और उदायन राजा को आगे करके बैठी ॥ ११ ॥ फीर श्रमण भगवंत महावीरने उदायन राजा मृगावती रानी, व जयंति श्रमणोपासिका को उस महती परिपदा में धर्मकथा सुनाइ यावत् परिपदा

शब्दार्थ — वे० वेदना म० मनुष्य भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रिया वाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम म० मनुष्य ति० तीन प्रकार के स० समदृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० सममिथ्यादृष्टि त० तहां जे० जो स० समदृष्टि ते० वे ति० तीन प्रकार के सं० संयति अ० असंयति सं० संयतासंयति जे० जो सं० संयति ते० वे दु० दोप्रकार के स० सराग संयति वी० वीतराग संयति त० तहां जे० जो वी० वीतराग संयति ते० वे अ० अक्रिया वाले स० सराग संयति दु० दो-

सूत्र — समकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण भंते ? गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता तं० सम्माद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी, तत्थणं जे ते सम्माद्दिट्ठी ते तिविहा प० तं० संजयाय असंजयाय संजया संजयाय । तत्थणंजेते संजया ते दुविहा प० तं० सराग संजयाय वीयराग संजयाय, तत्थणं जे ते वीयरागं संजया तेणं अकिरिया । तत्थणं जे ते सराग संजया ते दुविहा प० तं० पमत्त संजयाय,

भावार्थ — मनुष्य के तीन भेद कहे हैं सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि सममिथ्यादृष्टि; उस में जो सम्यग्दृष्टि हैं उनके तीन भेद कहे हैं संयति, असंयति व संयतासंयति; उसमें संयति के दो भेद सरागसंयति व वीतराग संयति. उसमें जो वीतराग संयति हैं वे अक्रिय हैं अर्थात् उन को किसी भी सांपरायिक क्रिया नहीं लगती है. जो सरागसंयति हैं उनके दो भेद प्रमत्त संयति व अप्रमत्त संयति: अप्रमत्त संयति सातवे गुण स्थानवर्ती हैं उनको फक्त मायाप्रत्ययिकी क्रिया लगतीहै और छठे गुण स्थानवर्ती प्रमत्त संयतिको आरंभिकी व

जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धाम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ २त्ता जाव दुरूढा॥९॥ तएणं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धाम्मियं जाणप्पवरं दुरूढासमाणी णियगपरियाल जहा उसभदत्तो जाव धाम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ॥१०॥तएणं सा मियावई देवी जयंतीए समाणोवासियाए सद्धिं बहूहिं खुज्जाहिं जहा देवाणंदा जाव वंदइ णमंसइ, उदायणं रायं पुरओ कट्टु ठिइया चेव पज्जुवासइ ॥११॥तएणं समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रण्णो मियावईए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसेय महइ जाव धम्मं परिकहेइ जाव परिसा पडिगया ॥ उदायणे पडि-

भावार्थ किया, बहुत कुब्ज वगैरह दासियों के परिवार से अंतःपुर से नीकलकर बाहिर उपस्थान शाला में धार्मिक रथ की पास आकर उस में बैठी ॥ ९ ॥ फीर वह मृगावती देवी जयंती श्रमणोपासिका की साथ वाहन पर बैठी हुइ अपने परिवार सहित वगैरह जैसे ऋषभदत्त का कहा वैसे ही धार्मिक रथसे नीचे उतरे ॥१०॥ वह मृगावती देवी बहुत दासियों के परिवार से जयंति श्राविकाके साथ देवानंदा जैसे वंदना नमस्कार किया और उदायन राजा को आगे करके बैठी ॥ ११ ॥ फीर श्रमण भगवंत महावीरने उदायन राजा मृगावती रानी, व जयंति श्रमणोपासिका को उस महती परिषदा में धर्मकथा सुनाइ यावत् परिषदा

पदार्थ मिथ्या दृष्टि उ० उत्पन्न हुवे अ० अल्प वेदना वाले अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे म० बहुत वेदना भा० कहना जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक को ॥ १४ ॥ स० सलेशी णे० नारकी स० सर्व स० समाहारी औ० औधिक स० सलेशी सु० शुक्लेशी ए० इन ति० तीन में ए० एक सरिखे क० कृ-ष्णलेशी नी० नीललेशी ए० एक सरिखे ण० विशेष वे० वेदना में मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न

सूत्र सुरकुमारा णवरं वेदणाए णाणत्तं । मायी मिच्छदिट्ठी उववण्णगाय अप्पवेयणतरा, अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णगाय महावेयणतरा भाणियव्वा ॥ जोइस वेमाणियाय ॥ १४ ॥ सलेस्साणं भंते णेरइया सव्वे समाहारगा ओहियाणं, सलेस्साणं

भावार्थ प्रकारकी है सो बताते हैं. ज्योतिषी वैमानिक में मायी मिथ्यादृष्टि पने उत्पन्न हुवे सो अल्पवेदनावाले हैं क्यों की उन को साता वेदनीय कर्म अल्प रहता है. और अमायी सम्यक्दृष्टि बहुत वेदनावाले हैं क्यों की उनको साता वेदनीय कर्म विशेष रहना है इतना ज्योतिषी व वैमानिक में असुरकुमार मे विशेष है शेष सब असुरकुमार जैसे कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! लेश्या सहित नारकी क्या सरिखे आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! समुच्चय जीव, सलेशी व शुक्लेशी इन तीन का एक गमा जानना. कृष्ण व नील लेशीका एक गमा जानना,वेदना में इतना विशेषपना कि मायावी, मिथ्यादृष्टी को बहुत वेदना और अमायी सम्यगदृष्टी को अल्पवेदना. मनुष्यपद में, क्रिया सूत्र में व औधिक (समुच्चय) दंडक में सराग, वीतराग,

शब्दार्थ आ॰ आत्मारंभी णो॰ नहीं परारंभी णो॰ नहीं उ॰ उभयारंभी अ॰ अनारंभी से॰ वह के॰ कीसतरह ए॰ ऐसा वु॰ कहा अ॰ कितनेक जी॰ जीव आ॰ आत्मारंभी ए॰ ऐसे प॰ पीछा कहना गो॰ गौतम जी॰ जीव दु॰ दोप्रकार के सं॰ संसारी अ॰ संसार को अप्राप्त त॰ तहां जे॰ जो अ॰ संसार को अप्राप्त ते॰ वे सि॰ सिद्ध णो॰ नहीं आ॰ आत्मारंभी जा॰ यावत् अ॰ अनारंभी त॰ तहां जे॰ जो सं॰ संसारि, ते॰ वे दु॰ दोप्रकार के सं॰ संयति अ॰ असंयति तं॰ तहां जे॰ जो सं॰ संयति ते॰ वे दु॰ दोप्रकार के प॰ प्रमत्त संयति अ॰

सूत्र णो अणारंभा ॥ अत्थेगइया जीवाणो आयारंभा, णो परारंभा, णो तदुभयारंभा, अणारंभा ॥ से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? अत्थेगइया जीवा आयारंभावि ! एवं पडि उच्चारेयव्वं ॥ गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-संसार समावण्णगाय, असंसार समावण्णगाय ॥ तत्थणं जे ते असंसार समावण्णगाय, तेणं सिद्धा. सिद्धा णं णो

भावार्थ नहीं है. कितनेक जीव आत्मारंभी नहीं है, परारंभी नहीं है, उभयारंभी भी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं. अहो भगवन् ! कितनेक जीव आत्मारंभी हैं, परारंभी है और उभयारंभी भी है परंतु अनारंभी नहीं है वैसे ही कितनेक जीव आत्मारंभी नहीं है, परारंभी नहीं है, आत्मपरारंभी दोनों नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं ऐसा जो आपका कथन है वह किस तरह से हैं ? अहो गौतम ! जीव के दो भेद हैं १ संसार में रहनेवाले और २ संसार से मुक्त. उस में जो संसार असमावन्न जीव हैं वे चार

शब्दार्थ मिथ्या दृष्टि उ० उत्पन्न हुवे अ० अल्प वेदना वाले अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे म० बहुत वेदना भा० कहना जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक को ॥ १४ ॥ म० सलेशी णे० नारकी स० सर्व स० समाहारी ओ० औधिक स० सलेशी सु० शुक्लेशी ए० इन ति० तीन में ए० एक सरिखे क० कृष्णलेशी नी० नीललेशी ए० एक सरिखे ण० विशेष वे० वेदना में मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न

सूत्र सुरकुमारा णवरं वेदणाए णाणत्तं । मायी मिच्छदिट्ठी उववण्णगाय अप्पवेयणतरा, अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णगाय महावेयणतरा भाणियव्वा ॥ जोइस वेमाणियाय ॥ १४ ॥ सलेस्साणं भंते णेरइया सव्वे समाहारगा ओहियाणं, सलेस्साणं

भावार्थ प्रकारकी है सो बताते हैं. ज्योतिषी वैमानिक में मायी मिथ्यादृष्टि पने उत्पन्न हुवे सो अल्पवेदनावाले हैं क्यों की उन को साता वेदनीय कर्म अल्प रहता है. और अमायी सम्यक्दृष्टि बहुत वेदनावाले हैं क्यों की उनको साता वेदनीय कर्म विशेष रहता है इतना ज्योतिषी व वैमानिक में असुरकुमार मे विशेष है शेष सब असुरकुमार जैसे कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! लेश्या सहित नारकी क्या सरिखे आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! समुच्चय जीव, सलेशी व शुक्लेशी इन तीन का एक गमा जानना. कृष्ण व नील लेशीका एक गमा जानना, वेदना में इतना विशेषपना कि मायावी, मिथ्यादृष्टी को बहुत वेदना और अमायी सम्यग्दृष्टी को अल्पवेदना. मनुष्यपद में, क्रिया सूत्र में व औधिक (समुच्चय) दंडक में सराग, वीतराग,

सूत्र

सव्वेविणं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ? हंता जयंती ! सव्वेविणं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति । जइणं भंते ! सव्वेवि भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति तम्हाणं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणं खाइण्णं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सव्वेविणं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति णो चेवणं भवसिद्धिय विरहिए लोए भविस्सइ ? जयंती ! से जहा नामए सव्वागाससेढी सिया अणादिया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा साणं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए २ अवहीरमाणी २ अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरइ णो चेवणं अवहिरिया

भावार्थ

जीवों सीझेंगे. अहो भगवन् ! यदि सब भव्य जीवों सीझेंगे तब क्या भवसिद्धिक जीवों से रहित यह लोक होगा ? अहो जयंती ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् सब भवसिद्धिक जीवों से रहित यह लोक नहीं होगा. अहो भगवन् ! यह किस तरह कहाजाय कि सब भवसिद्धिक जीवों सीझेंगे परंतु भवसिद्धिये जीव रहित लोक नहीं होगा ? अहो जयंती ! अनादि अनंत परित्त व समस्त लोकालोक में श्रेण्यांतर परिवृत्त आकाशश्रेणि है. उस में से प्रति समय परमाणु पुद्गल जितना खण्ड नीकालते २ अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी तक नीकाले परंतु वह आकाश श्रेणी खाली नहीं होती है, वैसे ही जयंती सर्व ! भवसि-

शब्दार्थ समवेदना स० समक्रिया स० समायुष्य बो० जानना ॥ १५ ॥ क० कितनी भं० भगवन् लें० लेश्या प० प्ररूपी गो० गौतम छ० छलेश्या प० प्ररूपी ल० लेश्या का बी० दूसरा उ० उद्देशा भा० कहना जा०

सूत्र णियव्वा गाथा ॥ दुक्खाउएउदिण्णे आहारे कम्म वण्ण लेस्साय समवेयण समकिरिया. समाउया चेव बोधव्वा ॥ १ ॥ १६ ॥ कइणं भंते लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा लेस्साणं बीओउ-

भावार्थ उदय में आया हुवा वेदे ? क्या सरिखे आहार, कर्म वर्ण, लेश्या, वेदना, क्रिया व आयुष्यवाले हैं ? वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे कहना. ॥१५॥ नारकी सलेशी हैं ऐसा पहिले कहा इसलिये आगे लेश्याका स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! लेश्या के कितने भेद ? अहो गौतम ! लेश्या के छ भेद कहे हैं इन छहीं लेश्या का वर्णन पन्नवणा सूत्र में लेश्यापद का दूसरा उद्देशा में जैसा कहा है वैसा जानना: अहो भगवन् ! इन लेश्यामेंसे कोनसी लेश्यावाला विशेष ऋद्धि का धारक व कौनसी लेश्यावाला अल्पऋद्धिका धारक होता है ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्या से नील लेश्यावाला अधिक ऋद्धिका धारक होता है, नील लेश्या से कापोत लेश्यावाला अधिक ऋद्धिका धारक होता है, कापोत से तेजो लेश्यावाला अधिक ऋद्धि का धारक होता है, तेजोसे पद्मलेश्यावाला अधिक ऋद्धिका धारक होता है, और पद्म से शुक्ल लेश्यावाला

सूत्र

पाणभूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति ॥ एएणं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणंवा परंवा तदुभयंवा णो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति ॥ एएणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू ॥ जयंती ! जे इमे जीवा धम्मत्थिया धम्माणुगा जाव धम्मेणंचेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसिणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥ एएणं जीवा जागरमाणा बहूणं पाणाणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति ॥ तेणं जीवा जागरासमाणा अप्पाणंवा परंवा तदुभयं॰ वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति ॥ एएणं जीवा जागरमाणा

भावार्थ

अच्छा या जागृत रहना अच्छा ? अहो जयंती ! कितनेक जीवों का सोना अच्छा है और कितनेक जीवों का जागृत रहना अच्छा है. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीवों का सोना अच्छा और कितनेक जीवों का जागना अच्छा कहा ? अहो जयंती ! जो जीव अधर्मी हैं, अधर्म में अनुरक्त हैं, अधर्म इष्टकारी हैं, अधर्म अवतारवाले हैं, अधर्म को ही आचरने रूप देखते हैं, अधर्म का उपदेश करते हैं, अधर्मियों का समुदाय है और अधर्मवृत्ति से ही आजीविका करते हैं ऐसे जीवों सोते हुवे अच्छे हैं क्योंकि वे प्राणियों को दुःख शोक यावत् परितापना उत्पन्न नहीं कर सकते हैं. अपने, अन्य के व उभय के

शब्दार्थ

ति० तीन प्रकार का सु० शून्य काल अ० अशून्य काल ।मि० मिश्रकाल ।ति० तिर्यंच का सं० संसार सं० संचिठण काल पु० पृच्छा गो० गौतम दु० दोप्रकार का अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल म० मनुष्य

सूत्र

संसार संचिट्ठण काले, देव संसार संचिट्ठण काले॥ णेरइय संसार संचिट्ठण कालेणं भंते कइविहे प०? गोयमा! तिविहे प०तं० सुण्णकाले, असुण्णकाले, मिस्सकाले। तिरिक्ख

भावार्थ

संचिठन काल ३ मनुष्य के भव में रहे सो मनुष्य संसार संचिठन काल ४ देवता के भव में रहे सो देव संसार संचिठन काल. अहो भगवन् ! नारकी संसार संचिठन काल के कितने भेद ? अहो गौतम ! नारक संसार संचिठन काल के तीन भेद कहे हैं १. शून्यकाल २ अशून्यकाल और ३ मिश्रकाल * अहो भगवन् ! तिर्यंच संसार संचिठन कालके कितने भेद ? अहो गौतम ! दो भेद. अशून्यकाल

*वर्तमान कालमें सातों नरकमें जो नारकी विद्यमानहैं उनमेंसे कोई उद्वर्तनहीं, और उसमें कोई नविन उत्पन्न होवे नहीं, जितने हैं उतने ही रहे सो नरक गति आश्रित अशून्यकाल. जैसे कहा है आइठ समइयाणं नेरइयाणं न जाव एक्को वि उवट्टइ अण्णोवा उववज्जइ सो असुण्णोउ ॥१॥ उन सातों नरक के नारकी में से जो उद्वर्त वाले होवे उस में एक शेप रहे सो मिश्रकाल और सब उद्वर्ते सो शून्यकाल जैसे उव्वट्टे एक्कंमिवि तामीसो धरइ जाव एक्कोवि णिल्लेवएहिं सव्वेहिं वट्टमाणेहिं सुण्णोउ ॥ १ ॥ यहांपर मिश्र नारक संसारावस्थान काल सूत्र वर्तमान भव आश्रित नहीं ग्रहण किया है परंतु वर्तमान काल के नारकी अन्य गति में

सूत्र

संजोएत्तारो भवंति ॥ एएसिणं जीवाणं वलियत्तं साहू ॥ से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव साहू ॥ १७ ॥ दक्खत्तं भंते! साहू आलसियत्तं साहू? जयंती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव साहू ? जयंती ! जेइमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति, एएसिणं जीवाणं आलसियत्तं साहू, एएसिणं जीवा अलसाउमाणा णो बहूणं जहा सुत्ता तहा अलसा भाणियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा

भावार्थ

यावत् परितापना उत्पन्न नहीं कर सकते हैं और स्वतः को, अन्य को व उभय को अधर्म में नहीं जोड सकते हैं. वगैरह सब सुप्त जीवों जैसे कहना. और बलवन्त को जाग्रत रहते जीवों जैसे कहना.अहो जयंती ! उक्त कारनों से कितनेक जीवों बलवन्त अच्छे हैं और कितनेक जीवों जागृत अच्छे हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! उद्यम अच्छा या आलस्य अच्छा ? अहो जयंती ! कितनेक जीवों को उद्यम अच्छा है और कितनेक जीवों को आलस्य अच्छा है. अहो भगवन् ! यह किस तरह ? अहो जयंती ! जो जीव अधर्मी, अधर्मानुरागी यावत् विचरते हैं उन जीवों को आलस्य अच्छा है, क्यों कि वे सुप्त जीवों समान प्राणियों को दुःख वगैरह नहीं दे सकते हैं और स्वतः को, अन्य को व उभय को अधर्म से नहीं जोड-सकते हैं. और जो धर्मी होते हैं उनको उद्यम अच्छा है क्योंकि वे प्राणियों को सुख वगैरह उत्पन्न करते हैं

शब्दार्थ ति० तीन प्रकार का सु० शून्य काल अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल ति० तिर्यंच का सं० संसार सं० संचिठण काल पु० पृच्छा गो० गौतम दु० दोप्रकार का अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल म० मनुष्य

सूत्र संसार संचिट्ठण काले, देव संसार संचिट्ठण काले॥ णेरइय संसार संचिट्ठण कालेणं भंते कइविहे प०? गोयमा! तिविहे प०तं० सुण्णकाले, असुण्णकाले, मिस्सकाले। तिरिक्ख

भावार्थ संचिठन काल ३ मनुष्य के भव में रहे सो मनुष्य संसार संचिठन काल ४ देवता के भव में रहे सो देव संसार संचिठन काल. अहो भगवन् ! नारकी संसार संचिठन काल के कितने भेद ? अहो गौतम ! नारक संसार संचिठन काल के तीन भेद कहे हैं १. शून्यकाल २ अशून्यकाल और ३ मिश्रकाल * अहो भगवन् ! तिर्यंच संसार संचिठन कालके कितने भेद ? अहो गौतम ! दो भेद. अशून्यकाल

* वर्तमान कालमें सातों नरकमें जो नारकी विद्यमानहैं उनमेंसे कोई उद्वर्तेनहीं, और उसमें कोई नविन उत्पन्न होवे नहीं, जितने हैं उतने ही रहे सो नरक गति आश्रित अशून्यकाल. जैसे कहा है आइट्ठ समइयाणं नेरइयाणं न जाव एक्को वि उवट्टइ अण्णोवा उववज्जइ सो असुण्णोउ ॥१॥ उन सातों नरक के नारकी में से जो उद्वर्त वाले होवे उस में एक शेष रहे सो मिश्रकाल और सब उद्वर्ते सो शून्यकाल जैसे उव्वट्टे एक्कंमिवि तामीसो धरइ जाव एक्कोवि णिल्लेवएहिं सव्वेहिं वट्टमाणेहिं सुण्णोउ ॥ २ ॥ यहांपर मिश्र नारक संसारावस्थान काल सूत्र वर्तमान भव आश्रित नहीं ग्रहण किया है परंतु वर्तमान काल के नारकी अन्य गति में

पदार्थ

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात पु० पृथ्वी प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे प० प्रथमा दो० दूसरी जा० यावत् स० सातवी ॥ १ ॥ प० प्रथमा भं० भगवन् पु० पृथ्वी किं० क्या ना० नाम गो० गोत्र प० प्ररूपा गो० गौतम घ०

सूत्र

हीणा ॥ सेवं भंते भंतेति ॥ दुवालसम सयस्सयाबितीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२॥२॥

रायगिहे जाव एवं वयासी कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा—पढमा दोच्चा जाव सत्तमा ॥ १ ॥ पढमाणं भंते ! पुढवी किं नामा किं गोत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! घम्मा णामेणं, रयणप्पभा गोत्तेणं,

भावार्थ

देवानंदा जैसे कहना यावत् प्रव्रजित हुई और सब दुःखों से रहित हुई. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ २ ॥ ० ०

दूसरे उद्देशे के अंत में कर्मबंध कहा. बहुल कर्मी जीव नरक में जाते हैं इस से तीसरे उद्देशे में नरक का प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही पहिली, दूसरी यावत् सातवी ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! पहिली पृथ्वी का क्या नाम व गौत्र कहा है ? अहो गौतम ! १. पहिली पृथ्वी का घम्मा नाम कहा है और रत्नप्रभा गोत्र कहा है २ दूसरी का वंशा

र्थ

दे० देव ज० जैसे नारकी भं० भगवन् णे० नारकी का सं० संसार संचिठण काल जा० यावत् दे० देव संसार संचिठण काल का जा० यावत् वि० विशेपाधिक गो० गौतम स० सर्व से थोडा म० मनुष्य संसार संचिठण काल णे० नारकी संसार संचिठण काल अ० असंख्यातगुणा दे० देव संसार संचिठण काल अ० असंख्यात गुणा ति० तिर्यंच संसार संचिठण काल अ० अनंतगुणा ॥ १७ ॥ जी० जीव भं०

सूत्र

सुण्णकाले अणंतगुणे, ॥ तिरिक्ख जोणियाणं सव्वत्थोवे असुण्णकाले, मीसकाले अणंतगुणे, ॥ मणुस्साणय, देवाणय जहा णेरइयाणं एयस्सणं भंते णेरइय संसार संचिट्ठण कालस्स जाव देव संसार संचिट्ठण कालस्स जाव विसेसाहिएवा गोयमा ? सव्वत्थोवे मणुस्स संसार संचिट्ठण काले, णेरइय संसार संचिट्ठण काले असंखेज्जगुणे,देव

भावार्थ

थोडा अशून्यकाल है, क्योंकि उत्पाद व उद्वर्तना काल का विरह बारह मुहूर्त का है, उस से मीश्रकाल अनंत गुना, और उस से शून्यकाल अनंत गुना कहा है. तिर्यंच में सब मे थोडा अशून्यकाल उस से मीश्रकाल अनंत गुना. मनुष्य व देवता का नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! चारों संसारसंचिठन कालमें से कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य व विशेपाधिक है अहो ? गौतम ! सब से थोडा मनुष्य संसार संचिठन काल उस से नारकी संसार संचिठन काल असंख्यात गुना, उस से देव संसार संचिठन काल असंख्यात

अर्थ

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात पु० पृथ्वी प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे प० प्रथमा दो० दूसरी जा० यावत् स० सातवी ॥ १ ॥ प० प्रथमा भं० भगवन् पु० पृथ्वी किं० क्या ना० नाम गो० गोत्र प० प्ररूपा गो० गौतम घ०

सूत्र

हीणा ॥ सेवं भंते भंतेति ॥ दुवालसम सयस्सयाबितीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२॥२॥

रायगिहे जाव एवं वयासी कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा—पढमा दोच्चा जाव सत्तमा ॥ १ ॥ पढमाणं भंते ! पुढवी किं नामा किं गोत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! घम्मा णामेणं, रयणप्पभा गोत्तेणं,

भावार्थ

देवानंदा जैसे कहना यावत् प्रव्रजित हुई और सब दुःखों से रहित हुई. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ २ ॥ ० ०

दूसरे उद्देशे के अंत में कर्मबंध कहा. बहुल कर्मी जीव नरक में जाते हैं इस से तीसरे उद्देशे में नरक का प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही पहिली, दूसरी यावत् सातवी ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! पहिली पृथ्वी का क्या नाम व गौत्र कहा है ? अहो गौतम ! १. पहिली पृथ्वी का घम्मा नाम कहा है और रत्नप्रभा गोत्र कहा है २ दूसरी का वंशा

शब्दार्थ

तिर्यंच आ॰ आजीविक आ॰ आभियोगिक स॰ स्वलिंगी दं॰ दर्शन से भ्रष्ट ए॰ इनकी दे॰ देवलोक में उ॰ उपजते क॰ कीसका क॰ कहां उ॰ उपपात प॰ प्ररूपा गो॰ गौतम अ॰ असंयाति भविद्रव्यदेव ज॰ जघन्य भ॰ भवनपति में उ॰ उपरकी ग्रै॰ ग्रैवेयक में अ॰ अविराधिक सं॰ संयति ज॰ जघन्य सो॰ सौधर्म देवलोक उ॰ उत्कृष्ट स॰ सर्वार्थसिद्ध विमान में वि॰ विराधिक संयति ज॰ जघन्य भवनपति में उ॰ उत्कृष्ट सो॰ सौधर्म देवलोक अ॰ अविराधिक सं॰ संयतासंयति ज॰ जघन्य सो॰ सौधर्म देवलोक उ॰ उत्कृष्ट अ॰ अच्युत

सूत्र

किव्विसियाणं, तिरिच्छियाणं, आजीवियाणं, आभिओगियाणं, सलिंगीदंसणवावण्णगा-णं, एएसिणं देवलोएसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाए प॰ ? गोयमा ! असंजय भविय दव्व देवाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिम गेवेज्जएसु, अविरा-हिय संजमाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे विमाणं, विराहिय

भावार्थ

मात्र क्रिया के करने वाले, प्रव्रज्या काल से निरतिचार पूर्वक पूर्ण चारित्र पालने वाले, अविराधिक संयमी

---

१. इसका कितनेक भावि में होनेवाला देव सो भाविद्रव्य देव, चरणपरिणाम शून्य सो असंयति, असंयतिभवि द्रव्य देव अर्थात् असंयति सम्यक्दृष्टी ऐसा अर्थ करते हैं परंतु यह अर्थ यहांपर योग्य नहीं है क्योंकि इन की उत्कृष्ट उपरकी ग्रैवेयक में उत्पात्ति बतलाइ है. और सम्यग् दृष्टि देश विरति की तो मात्र अच्युत देव लोक तकही ली है इसलिये यहां मिथ्यादृष्टी असंयति भव्य अभव्य जीव ग्रहण किये हैं.

साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! दुपदेसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ॥ १ ॥ तिण्णि भंते! परमाणु पोग्गला एगयओ साहणित्तए किं भवइ ? गोयमा ! तिपदेसिए खंधे भवइ से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणु पोग्गला भवंति ॥ २ ॥ चत्तारि भंते! परमाणु पोग्गला पुच्छा? गोयमा! चउपदेसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि, तिहावि, चउहावि कज्जइ, दुहाकज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले,

भावार्थ

कर प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! दो पुद्गल एकत्रित होते हैं और इस तरह एकत्रित बनकर क्या होता है ? अहो गौतम ! दो प्रदेश एकत्रित होने से द्विप्रदेशात्मक स्कंध होता है और जब उस का दो विभाग करते हैं तब एक२ परमाणु पुद्गल ऐसे दो विभाग होते हैं. इस तरह द्विप्रदेशात्मक स्कंधका एक भांगा होता है ॥१॥ अहो भगवन् ! तीन पुद्गल एकत्रित होकर क्या होता है ? अहो गौतम ! तीन प्रदेशात्मक स्कंध होता है. उस के विभाग करते दो व तीन विभाग होते हैं जब दो विभाग होते हैं तब एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध व एक परमाणु पुद्गल और तीन विभाग में एक २ परमाणु पुद्गलों के तीन विभाग होते हैं ॥ २ ॥ अहो

शब्दार्थ

त्रिक अ० अच्युत देवलोक आ० आभियोगिक अ० अच्युत देवलोक में स० सलिंगी दर्शन भ्रष्ट उ० उपर की गे० ग्रैवेयक में ॥ १९ ॥ क० कितने प्रकार का भं० भगवन् अ० असंज्ञी आ० आयुष्य गो० गौतम च० चार प्रकार का अ० असंज्ञी आयुष्य ण० नारकी अ० असंज्ञी आयुष्य ति० तिर्यंच अ० असंज्ञी आयुष्य म० मनुष्य अ० असंज्ञी आयुष्य दे० देव असंज्ञी आयुष्य अ० असंज्ञी भं० भगवन्

सूत्र

याणं लंतगे कप्पे, तिरिच्छियाणं सहस्सारे कप्पे, आजीवियाणं अच्चुएकप्पे, आभिओगिया अच्चुए कप्पे, सलिंगीदंसणवावण्णगा उवरिमगेविज्जएसु ॥ १९ ॥ कइविहे-णं भंते असण्णियाउए, पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे असण्णियाउए प० तं० णेरइय असण्णियाउए तिरिक्खजोणिय असण्णियाउए, मणुस्स असण्णियाउए, देव असण्णियाउए ॥ असण्णीणं भंते ! जीवे किं णेरइयाउयं पकरेइ, तिरिक्ख

भावार्थ

उत्कृष्ट सर्वार्थसिद्ध विमान में, विराधिक साधु जघन्य भवनपति में, उत्कृष्ट सौधर्म देवलोक में अविराधिक श्रावक जघन्य सौधर्म देवलोक में, उत्कृष्ट अच्युत देवलोक में, विराधिक श्रावक जघन्य भवनपति, उत्कृष्ट ज्योतिषि में, असंज्ञी जघन्य भवनपति, उत्कृष्ट वाणव्यंतरमें शेष सब जघन्य भवनपति में उत्पन्न होवे और उत्कृष्ट तापस ज्योतिषीमें, कंदर्पकी कथा करनेवाले सौधर्म देवलोकमें, चरक परिव्राजिक ब्रह्मदेवलोक में ज्ञानादि के अवर्णवाद बोलनेवाले लांतक देवलोकमें तिर्यंच सहस्रार देवलोकमें आजीविक मतानुसारी अच्युत देवलोक में आभियोगिक अच्युत देवलोकमें और दर्शन से भ्रष्ट सलिंगी उपर की ग्रैवेयकमें उत्पन्न होते हैं. ॥ १९ ॥ अब असंज्ञी का आयुष्य कहते हैं. अहो भगवन् ! असंज्ञी परभव योग्य कितने प्रकार का आयुष्य

यओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणु पोग्गला भवंति ॥४॥ छब्भंते! परमाणु पुच्छा? गोयमा! छप्पदेसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव छविहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा, दो तिपदेसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ; अहवा तिण्णि दुपदेसिया खंधा

परमाणु पुद्गल, तीन प्रदेशात्मक स्कंध व दो प्रदेशात्मक स्कंध, तीन टुकडे में एक२ परमाणु पद्गलके दो टुकडे और तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल व दो दोप्रदेशात्मक स्कंध, चारमें तीन परमाणु पुद्गल व एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, पांचमें पांच अलग२परमाणु पुद्गल ॥४॥ अहो भगवन्! छ परमाणु पुद्गलों एकत्रित होनेसे क्या होता है? अहो गौतम! छ परमाणु पुद्गलोंका छ प्रदेशात्मक एक स्कंध होता है. उसके दो, तीन, चार, पांच व छ टुकडे होते हैं. दो टुकडे करे तो पांच प्रदेशात्मक स्कंध व एक परमाणु पुद्गल, चार प्रदेशात्मक स्कंध व दो प्रदेशात्मक स्कंध और तीन प्रदेशात्मक स्कंध के दो टुकडे. तीन करने में एक २ परमाणु पुद्गलों के दो

शब्दार्थ सर्व से दे० देश क० करे स० सर्व से स० सर्व क० करे ॥ १ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय कर्म क० करे हं० हां क० करे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व क० करे ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक दं० दंडक भा० कहना ॥ २ ॥ जी० जीवने भं० भगवन् क० कांक्षा मोहनीय कर्म क० किया हं० हां क० किया तं० उन को भं० भगवन् कि० क्या दे० देश से दे० देश क० किया ए० यह अ०

सूत्र देसेणं सव्वेकडे.णो।सव्वेणं देसेकडे,सव्वेणं सव्वे कडे॥ १ ॥णेरइयाणं भंते !कंखा मोहणिज्जे कम्मेकडे? हंताकडे,जाव सव्वेणं सव्वेकडे । एवं जाव वेमाणियाणं दंडओ भाणियव्वो॥ २॥ जीवाणं भंते ! कंखा मोहणिज्जं कम्मं करिंसु? हंताकरिंसु । तं भंते ! किं देसेणं देसं करिंसु, ? एएणं अभिलावेणं दंडओ जाव वेमाणियाणं । एवंकरंति, एत्थवि दंडओ जाव वेमाणियाणं । एवं करिस्संति, एत्थवि दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ एवं चिए, चिणिंसु, चिणंति, चिणिस्संति । उवचिए,उवचिणिंसु, उवचिणंति, उवचिणिस्संति

भावार्थ संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म करे ॥१॥अहो भगवन् ! क्या नारकी कांक्षा (मिथ्यात्व) मोहनीय कर्म करे ? हां गौतम! नारकी कांक्षा मोहनीय कर्मकरे; यावत् सर्व से सर्व कांक्षा मोहनीय कर्म करे वैसेही चौवीस दंडक का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जीव ने क्या अतीत काल में कांक्षा मोहनीय कर्म किया ? हां गौतम किया. देश से देश यावत् सर्व से सर्व किया वगैरह वैमानिक तक जानना. और वैसे ही वर्तमान काल

यओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणु पोग्गला भवंति ॥ ४ ॥ छब्भंते ! परमाणु पुच्छा ? गोयमा ! छप्पदेसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव छव्विहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा, दो तिपदेसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ; अहवा तिण्णि दुपदेसिया खंधा

परमाणु पुद्गल, तीन प्रदेशात्मक स्कंध व दो प्रदेशात्मक स्कंध, तीन टुकडे में एक२ परमाणु पुद्गलके दो टुकडे और तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल व दो दो प्रदेशात्मक स्कंध, चारमें तीन परमाणु पुद्गल व एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, पांचमें पांच अलग२ परमाणु पुद्गल ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! छ परमाणु पुद्गलों एकत्रित होनेसे क्या होता है ? अहो गौतम ! छ परमाणु पुद्गलोंका छ प्रदेशात्मक एक स्कंध होता है. उसके दो, तीन, चार, पांच व छ टुकडे होते हैं. दो टुकडे करे तो पांच प्रदेशात्मक स्कंध व एक परमाणु पुद्गल, चार प्रदेशात्मक स्कंध व दो प्रदेशात्मक स्कंध और तीन प्रदेशात्मक स्कंध के दो टुकडे. तीन करने में एक २ परमाणु पुद्गलों के दो

शब्दार्थ हनीय कर्म वे० वेदते हैं हं० हां वे० वेदते हैं क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदते हैं गो० गौतम ते० उस २ का० कारनसे सं० शंकित कं० कांक्षा सहित वि० फल में संदेह सहित भे० भेदको प्राप्त क० संक्लिष्ट परिणामी जी०, जीव कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ॥ ४ ॥ तं० वहही स० सत्य णी० शंकारहित जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा हं० हां गो० गौतम त० वहही स० सत्य णी० शंकारहित जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा ॥५॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् ए० ऐसा

सूत्र वेदेंति । कहणं भंते ! जीवा कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? गोयमा ! तेहिं तेहिं कारणेहिं संकिया, कंखिया, वितिगिच्छिया, भेदसमावण्णगा, कलुससमावण्णगा, एवं खलु जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ॥ ४ ॥ सेणूणं भंते ! तमेवसच्चं, णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं? हंता गोयमा ! तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं

भावार्थ ...हनीय कर्म वेदता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जो जिन भगवान्ने कहा है वह क्या निःशंक सत्य है ? ...ं गौतम ! जो जिन भगवान् ने कहा है वह ही निःशंक सत्य है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इस तरह मन में धारता हुवा, ऐसे करता हुवा, ऐसे रहता हुवा ऐसे ही प्राणातिपातादिक से आत्मा को संवरता हुवा पदार्थ में देश से या सर्व से शंका उत्पन्न होवे, अन्य दर्शन ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न होवे, कृत कार्य के फल में संदेह उत्पन्न होवे, द्वैधीभाव उत्पन्न होवे, अथवा मतिभ्रम होवे, इस तरह से जीव कांक्षा

तिपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ पंच पदेसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पए सिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ तिपदेसिएखंधे भवइ,अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा

वार्थ परमाणु पुद्गल और एक छ प्रदेशात्मक स्कंध. अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पंच प्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध. तीन टुकडे करते. परमाणु पुद्गल के दो और पांच प्रदेशात्मक स्कंध का एक अथवा एक परमाणु पुद्गल, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध व एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, एक परमाणु पुद्गल दो तीन २ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल के तीन और चार प्रदेशात्मक स्कंध एक अथवा दो परमाणु पुद्गल के दो, द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक और तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक. अथवा एक

शब्दार्थ — परिणमे ण० नास्तित्व ण० नास्तिरूप प० परिणमे हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० परिणमे जं० जो भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने प० परिणमे न० नास्तित्व न० नास्तिरूप पने प० परिणमे तं० उस को० किं क्या प० प्रयोग से वी० स्वभाव से गो० गौतम प० प्रयोग से वी० स्वभा- वसे ॥ ७ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने ग० प्रकाशने योग्य ज० जैसे प०

सूत्र — नत्थित्ते परिणमइ तं किं पओगसा वीससा? गोयमा ! पओगसावि तं वीससावि तं जहाते भंते! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, तहाते णत्थित्तं णत्थित्ते परिणमइ, जहाते नत्थित्तं नत्थित्ते परि णमइ, तहाते अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ? हंता गोयमा ! जहामे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ तहामे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ. जहामे नत्थित्तं, नत्थित्ते परिणमइ तहामे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ॥ ७ ॥ सेणूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं जहा

भावार्थ — वैसे ही क्या आपके मत में नास्तिपना नास्ति पने परिणमता है ? और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है वैसे ही क्या अस्तिपना अस्तिपने परिणमता है ? हां गौतम ! जैसे हमारे मत में अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है वैसेही नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है ! वैसेही अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है. ॥७॥ अहो भगवन् ! अस्तित्व अस्तिपने गमनीय

चउप्पदेसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपदेसियाखंधा एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ दो तिपदेसियाइं खंधाइं भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु

भावार्थ

पांच प्रदेशात्मक स्कंध एक, दो चार प्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. तीन टुकडे करते दो परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक दो प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो दो प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक दो प्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध. चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक दो प्रदेशात्मक स्कंध एक

शब्दार्थ परिणमे ण० नास्तित्व ण० नास्तिरूप प० परिणमे हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० परिणमे जं० जो भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने प० परिणमे न० नास्तित्व न० नास्तिरूप पने प० परिणमे तं० उस को० किं क्या प० प्रयोग से वी० स्वभाव से गो० गौतम प० प्रयोगसे वी० स्वभा- वसे ॥ ७ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने ग० प्रकाशने योग्य ज० जैसे प०

सूत्र नत्थित्ते परिणमइ तं किं पओगसा वीससा? गोयमा ! पओगसावि तं वीससावि तं।जहाते भंते! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, तहाते णत्थित्त णत्थित्ते परिणमइ, जहाते नत्थित्तं नत्थित्ते परि णमइ,तहाते अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ? हंता गोयमा !जहामे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ तहामे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ. जहामे नत्थित्तं, नत्थित्ते परिणमइ तहामे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ॥ ७ ॥ सेणूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं जहा

भावार्थ वैसे ही क्या आपके मत में नास्तिपना नास्ति पने परिणमता है ? और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है वैसे ही क्या अस्तिपना अस्तिपने परिणमता है ? हां गौतम ! जैसे हमारे मत में अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है वैसेही नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है ! वैसेही अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है. ॥७॥ अहो भगवन् ! अस्तित्व अस्तिपने गमनीय

शब्दार्थ प० आश्रित आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसे वु० कहा जाता है अ० कितनेक जीव जा० यावत् अ० अनारंभी ॥ ३८ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् किं० क्या आ० आत्मारंभी प० परारंभी त० उभयारंभी अ० अनारंभी गो० गौतम णे० नारकी

सूत्र णो परारंभा, जाव अणारंभा । असुहं जोगं पडुच्च आयारंभावि जाव णो अणारंभा । तत्थणं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभावि जाव णो अणारंभा. से तेणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ, अत्थेगइया जीवा जाव अणारंभा ॥३८॥ णेरइयाणं भंते किं आयारंभा, परारंभा, तदुभयारंभा, अणारंभा ? गोयमा ! णेरइया आया-

भावार्थ और अशुभ योग आश्रित आत्मारंभी परारंभी व उभयारंभी हैं परंतु अनारंभी नहीं हैं. और जो असंसंयति हैं. वे अविरति की अपेक्षा से आत्मारंभी, परारंभी, व उभयारंभी हैं परंतु अनारंभी नहीं हैं. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि कितनेक जीव आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी हैं. परंतु अनारंभी नहीं हैं और आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! नारकी आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी हैं या अनारंभी हैं ? अहो गौतम नारकी आत्मारंभी, परारंभी, व

प्रत्युपेक्षणादि करणसो अशुभयोग-पुढवी आऊक्काए । तेऊवाऊ वणस्सइ तसाणं ॥ पडिलेहण पमत्तो । छण्हं विराहणा होइ ॥ १ ॥ प्रमादसे प्रतिलेखना करनेवाला छ ही कायाका घातक होताहै.

शब्दार्थ भं० भगवन् प०प्रमाद किं० किससे प० उत्पन्न होवे गो० गौतम जो० जोगसे प० उत्पन्न होवे जो०जोग कि० किससे प०उत्पन्नहोवे गो०गौतम वी०वीर्यसे प०उत्पन्नहोवे वी०वीर्य कि०किससे प०उत्पन्न होवे स०शरीर से

सूत्र मोहणिज्जं कम्मं बंधंति ? गोयमा ! पमाद पच्चयं, जोगानिमित्तंच ॥ सेणं भंते ! पमादे किंपवहे ? गोयमा ! जोगप्पवहे । सेणं भंते ! जोए किंपवहे ? गोयमा ! वीरियप्पवहे। सेणं भंते ! वीरिए किंपवहे ? गोयमा ! सरीरप्पवहे । सेणं भंते सरीरे किंपवहे !

भावार्थ मोहनीय कर्म बांधता है ? हां गौतम ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म बांधता है. अहो भगवन्! जीव कैसे कांक्षा (मिथ्यात्व) मोहनीय कर्म बांधता है ? अहो गौतम ! प्रमाद प्रत्ययिक व योग निमित्त से. अहो भगवन् ! प्रमाद किस कारन से प्रवर्ते अर्थात् कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! मन प्रमुख योग के व्यापार से प्रमाद उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! योग कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वीर्यांतराय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न हुवा जो जीव परिणाम उन से योग उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! वीर्य कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वीर्य के दो भेद सकरण वीर्य और अकरण वीर्य. उस में अलेशी केवली समस्त पदार्थ जानते व देखते को वैसेही केवल ज्ञान केवल दर्शन प्रयुंजते को जो अप्रतिघाती परिणाम विशेप भाव होवे उसे अकरण वीर्य कहते हैं उस का यहांपर अधिकार नहीं है. परंतु यहां पर मन वचन करण साधन सलेशीजीव प्रदेशात्मक व्यापार सो सकरण वीर्य ग्रहण कीया है और

सूत्र

चउप्पदेसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा-एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपदेसियाखंधा एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ दो तिपदेसियाइं खंधाइं भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ पचपदेसिएखधे भवइ, अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखधे भवइ, एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु

भावार्थ

पांच प्रदेशात्मक स्कंध एक, दो चार प्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. तीन टुकडे करते दो परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक दो प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो दो प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक दो प्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध. चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक दो प्रदेशात्मक स्कंध एक

शब्दार्थ जं० जो भं० भगवन् आ०आत्माने उ०उदीरे ग०निन्दे सं० संवरे तं०उन को किं०क्या उ०उदे आया उ० उदीरे अ०उदे नहीं आया अ०उदीरे उ०उदे नहीं आया उ०उदीरणा योग्य उ०उदीरे उ०उदयान्तर प०पीछे क०कीया कर्म उ० उदीरे गो० गौतम णो० नहीं उ०उदे आया उ०उदीरे णो० नहीं अ०उदे नहीं आया

सूत्र · अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणाचेव संवरइ, तंकिं उदिण्णं उदीरेइ, अणुदिन्नं उदीरेइ अणुदिन्नं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ, उदयाणंतरं पच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ? गोयमा ! नो उदिण्णं उदीरेइ, णो अनुदिण्णं उदीरेइ, अनुदिण्णं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ, नो उदयाणंतरं पच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ॥ जंतंभंते ! अणुदिन्नं उदीरणा

भावार्थ उदय आया हुवा उदीरता है, उदय नहीं आया हुवा उदीरता है, उदय में नहीं आया है परंतु उदीरणा के योग्य जो उसे है उदीरता है, अथवा उदय के अनंतर समय में पश्चात् कृत कर्म को उदीरता है ? अहो गौतम! जो कर्म उदयमें आये हैं उनकी उदीरणा करे नहीं क्योंकी उदयमें आये हुवे कर्मों की उदीरणा नहीं होती है, जो उदय में नहीं आये हैं उन की भी उदीरणा नहीं होती है क्यों की वे बहुत काल में उदय में आवेंगे इस लिये वर्तमान काल में उन की उदीरणा का अभाव है, जो उदय में नहीं आये हैं परंतु उदीरणा के योग्य हुवे हैं उन को उदीरते हैं और उदयांतर कृत कर्म को नहीं उदीरते हैं. अहो भगवन् ! जो उदय में नहीं आये हैं और उदीरणा के योग्य बने हुवे उन को उदीरते हैं तो क्या

सूत्र

एगयओ दुपदेसिएखंधे भवंति; अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणु पोग्गला भवंति ॥७॥ णव भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ? गोयमा ! जाव णवहा कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ, एवं एक्केक्कं संचारिएहिं जाव अहवा एगयओ चउप्पदेसिए खंधे, एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा-एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दो चउप्पदेसिया खंधा भवंति. अहवा-एगयओ दुपदेसिए एगयओ तिपदेसिए एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ. अहवा-

भावार्थ

टुकडे करते छ परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध होता है आठ टुकडे करते आठ परमाणु पुद्गल होते हैं ॥ ७ ॥ अब नव परमाणु पुद्गल की पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! नव प्रदेशात्मक स्कंध होता है और दो यावत् नव टुकडे होते हैं दो टुकडे करते एक परमाणु पुद्गल एक आठ प्रदेशात्मक स्कंध होता है ऐसे एकेक बढाना यावत् अथवा एक चार प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध होता है. तीन टुकडे करते दो परमाणु पुद्गल एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक छ

शब्दार्थ अ० अबल अ० वीर्यरहित अ० पुरुषात्कार पराक्रम रहित ॥१०॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से उ० उपशमावे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हां ए० यहां त० तैसे भा० कहना ण० विशेष अ० उदे नहीं आया उ० उपशमावे से० शेष प० वर्जना ति० तीन जं० जो भं० भगवन् अ० उदे नहीं आया उ० उपशमावे तं० उन को किं० क्या

सूत्र अपुरिसक्कार परक्कमेणं अणुदिन्नं उदीरणा भावियं कम्मं उदीरंति. एवं सइ अत्थि उट्ठाणेइवा, कम्मेइवा, बलेइवा, वीरिएइवा, पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १० ॥ सेणूणं भंते अप्पणाचेव उवसामेइ, अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणाचेव संवरइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि तहेव भाणियव्वं, णवरं अणुदिन्नं उवसामेइ, सेसा पडिसेहियव्वा तिण्णि ॥ जं तं भंते! अणुदिन्नं उवसामेइ तंकिं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा

भावार्थ अनुदिन कर्म को उदीरता है ॥ १० ॥ अब कांक्षा मोहनीय का उपशम कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या जीव स्वयं कांक्षा मोहनीय कर्म उपशमावे, गर्हे, व संवरे ! हां गौतम ! जीव स्वयं ही कांक्षा मोहनीय कर्म उपशमावे यावत् संवरे. यहांपर पूर्वोक्त उदीरणा जैसे कहना, परंतु यहां अनुदित कर्म का उपशम करते हैं और शेष तीन को छोडना. जो उदय में आया है वह अवश्यही वेदाता है इस लिये अनुदित कर्म का उपशम कहा है. अहो भगवन् ! जो अनुदित कर्म का उपशम करता है वह क्या उत्थान, कर्म यावत् पराक्रम से करता है या उत्थानादि विना उपशम करता है ? वगैरह अधिकार पाहिले जैसे

खंधे भवति. अहवा-एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चत्तारि दुपदेसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पदेसिए खंध भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ. अहवा-एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा भवंति. सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणु

भावार्थ शात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करते चार परमाणु पुद्गल एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन

शब्दार्थ

जा० यावत् प० पराक्रम ॥ १३ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदे ज० जैसे ओ० औधिक जीव त० तैसे ने० नारकी जा० यावत् थ० स्तनित कुमार ॥ १४ ॥ पु० पृथ्वीकाया भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदे हं० हां वे० वेदे क० कैसे भं० भगवन् पु० पृथ्वीकाया कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे गो० गौतम ते० उन जी० जीवों को णो० नहीं है ए० ऐसा

सूत्र

णिज्जरेइ एवं जाव परक्कमेइत्ता ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते! कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ? जहा ओहिया जीवा तहा णेरइया जाव थणिय कुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि-काइयाणं भंते! कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ? हंता वेदंति । कहणं भंते ! पुढवि-काइया कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ? गोयमा ! तेसिणं जीवाणं णो एवं तक्काइवा,

भावार्थ

शेप पुरुपात्कार पराक्रम तक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? अहो गौतम ! जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही नारकी का जानना. और वैसे ही स्तनित कुमार तक का जानना ॥ १४ ॥ पंचेन्द्रिय को शंकितादि दोप होवे इस से कांक्षा मोहनीय कर्मकी वेदनादि होवे परंतु एकेन्द्रियादिकको शंकितादि दोप नहीं होने से कांक्षा मोहनीय की वेदना होवे नहीं इस लिये एकेन्द्रिय को विशेपता से कांक्षा मोहनीय का स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी काय कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे ? हां गौतम ! पृथ्वी कायिक जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे.

खंधे भवति. अहवा-एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चत्तारि दुपदेसिया खधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला. एगयओ चउप्पदेसिए खंध भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ. अहवा-एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा भवंति. सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणु

शात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करने चार परमाणु पुद्गल एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन

शब्दार्थ जा० यावत् प० पराक्रम ॥ १३ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदे ज० जैसे ओ० औधिक जीव त० तैसे ने० नारकी जा० यावत् थ० स्तनित कुमार ॥ १४ ॥ पु० पृथ्वी-काया भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदे हं० हां वे० वेदे क० कैसे भं० भगवन् पु० पृथ्वीकाया कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे गो० गौतम ते० उन जी० जीवों को णो० नहीं हैं ए० ऐसा

सूत्र णिज्जेरइ एवं जाव परक्कमेइवा ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते! कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ? जहा ओहिया जीवा तहा णेरइया जाव थणिय कुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि-काइयाणं भंते ! कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ? हंता वेदंति । कहणं भंते ! पुढवि-काइया कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ? गोयमा ! तेसिणं जीवाणं णो एवं तक्काइवा,

भावार्थ शेष पुरुषात्कार पराक्रम तक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? अहो गौतम ! जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही नारकी का जानना. और वैसे ही स्तनित कुमार तक का जानना ॥ १४ ॥ पंचेन्द्रिय को शंकितादि दोष होवे इस से कांक्षा मोहनीय कर्मकी वेदनादि होवे परंतु एकेन्द्रियादिकको शंकितादि दोष नहीं होने से कांक्षा मोहनीय की वेदना होवे नहीं इस लिये एकेन्द्रिय को विशेषता से कांक्षा मोहनीय का स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी काय कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे ? हां गौतम ! पृथ्वी कायिक जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे.

खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ सत्तपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चउप्पदेसिए खंधे, एगयओ पंच पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे, एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ दो चउप्पदेसिया खंधा भवंति, अहवा-एगयओ दो तिपदेसिया खंधा एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ सत्तपदेसिएखंधे, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ

भावार्थ टुकडे करते दो परमाणु पुद्गल व एक आठ प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक छप्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध

पदार्थ — निर्ग्रंथ कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे हं० हां क० कैसे भ० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे गो० गौतम ते० उस का० कारन से ना० ज्ञानांतरसे दं० दर्शनांतर से च०

सूत्र — मोहणिज्जं कंमं वेदंति ? हंता अत्थि । कहणं भंते ? समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कंमं वेदंति ? गोतमा ! तेहिं तेहिं कारणेहिं, नाणंतरेहिं, दंसणंतरेहिं, चरित्तंतरेहिं

भावार्थ — जीवोंको मिथ्यात्व मोहनीय कर्म वेदना कहा परंतु वह निग्रंथ को नहीं होता है क्यों कि जिनागम जाननेवाले को निर्मल बुद्धि रहती है, इस लिये निग्रंथ संबंधी पृच्छा करते हैं. अहो भगवन् ! बाह्याभ्यंतर परिग्रह रहित श्रमण तपस्वी कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ? हां गौतम ! वे वेदते हैं. अहो भगवन् ! वे श्रमण निग्रंथ किस प्रकार से कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ? अहो गौतम ! इस का कारण मैं बताता हूं. १ ज्ञानांतर से - एक ज्ञान से दूसरे ज्ञान में शंका उत्पन्न होवे जैसे अवधि ज्ञानवाला परमाणु वगैरह सकल रूपी द्रव्य अवधि ज्ञान से जाने और मनःपर्यव ज्ञानी अढाइद्वीप में रहे हुवे संज्ञी के मन का भाव जाने. इस में मन द्रव्य रूपी होने से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान से मन का भाव जाने जब मनः पर्यव ज्ञान में क्या विशेषता ? ऐसी शंका करे. २ दर्शनांतर से अर्थात् एक दर्शन से दूसरे दर्शन में शंका उत्पन्न होवे जैसे चक्षुदर्शन व अचक्षुदर्शन को भिन्न क्यों कहा ? अथवा सम्यक् दर्शन में शंका उत्पन्न होवे ३ चारित्रांतरसे - अर्थात् एक चारित्र से दूसरे चारित्र में शंका उत्पन्न होवे जैसे सामायिक चारित्र

एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ पंचपएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ चउप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा पंच दुपदेसिया खंधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला

भावार्थ दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करते चार परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल, तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा पांच द्विप्रदेशात्मक स्कंध. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल और पांच प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा चार परमाणु पुद्गल, एक

शब्दार्थ मतांतरसे भं० भंगोकेअंतरमे ण० नयांतर से णि० नियमांतरसे प० प्रमाणांतरसे सं० शंकित कं० वांच्छा वाला वि० संदेह वाला कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ॥ १७ ॥ भं० भगवन् तं० वहही स० सत्य नी० शंकारहित जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥१॥३॥ *

सूत्र

णयंतरेहिं, णियमंतरेहिं, पमाणंतरेहिं, संकिया कंखिया, वितिगिंच्छिया, भेदसमावण्णा, कलुससमावण्णा, एवं खलु समणा निग्गंथा कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ॥ १७ ॥ सेणूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं? हंता गोयमा तमेव सच्चं नीसंकं एवं जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ सेवंभंते भंते ! त्ति पढमसए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ३ ॥ × +

भावार्थ

यिकादिक का प्रत्याख्यान है तो पहरसी वगैरह की क्या विशेषता है ऐसी शंका करे १३ प्रमाणान्तर से-प्रत्यक्ष प्रमाण व आगम प्रमाणमें भेद क्यों ? आगम प्रमाण मे सूर्य ८०० योजन ऊंचे उदित होता है और चक्षु दृष्टि से जमीन में से नीकलता हुवा दीखता है इस में शंका उत्पन्न होवे. इस तरह तेरह प्रकार की शंका उत्पन्न होवे, मिथ्या दर्शन की वांच्छा होवे, धर्म करणी में फलका संदेह लावे, सत्य असत्यका भेद करे, मतिभ्रम होने से कालुष्यतावाले बने, इसी कारण से श्रमण निर्ग्रंथ कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वह सत्य है ? हां गौतम ! जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वहही निःशंक सत्य है. ऐसे ही पुरुषात्कार पराक्रमतक कहना. श्री गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! जैसे आप प्ररूपते हैं वह सब सत्य है. यह पहिला शतकका तीसरा उद्देशा.

एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ पंचपएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ चउप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा पंच दुपदेसिया खंधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला

भावार्थ

दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करते चार परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल, तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा पांच द्विप्रदेशात्मक स्कंध. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल और पांच प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा चार परमाणु पुद्गल, एक

पदार्थ मतांतरसे भं० भंगोकेअंतरसे ण० नयांतर से णि० नियमांतरसे प० प्रमाणांतरसे सं० शंकित कं० वांच्छा वाला वि० संदेह वाला कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ॥ १७ ॥ भं० भगवन् तं० वहही स० सत्य नी० शंकारहित जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥१॥३॥ *

सूत्र णयंतरेहिं, णियमंतरेहिं, पमाणंतरेहिं, संकिया कंखिया, वितिगिंच्छिया, भेदसमावण्णा, कलुससमावण्णा, एवं खलु समणा निग्गंथा कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ॥ १७ ॥ सेणूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं? हंता गोयमा तमेव सच्चं नीसंकं एवं जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ सेवंभंते भंते ! त्ति पढमसए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ३ ॥

× +

भावार्थ यिकादिक का प्रत्याख्यान है तो प्रहरसी वगैरह की क्या विशेषता है ऐसी शंका करे १३ प्रमाणान्तर से-प्रत्यक्ष प्रमाण व आगम प्रमाणमें भेद क्यों ? आगम प्रमाण मे सूर्य ८०० योजन ऊंचे उदित होता है और चक्षु दृष्टि से जमीन में से नीकलता हुवा दीखता है इस में शंका उत्पन्न होवे. इस तरह तेरह प्रकार की शंका उत्पन्न होवे, मिथ्या दर्शन की वांच्छा होवे, धर्म करणी में फलका संदेह लावे, सत्य असत्यका भेद करे, मतिभ्रम होने से कालुष्यतावाले बने, इसी कारण से श्रमण निर्ग्रंथ कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जो जिन भगवानने प्ररूपा है वह सत्य है ? हां गौतम ! जो जिन भगवानने प्ररूपा है वहही निःशंक सत्य है. ऐसे ही पुरुषात्कार पराक्रमतक कहना. श्री गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! जैसे आप प्ररूपते हैं वह सब सत्य है. यह पहिला शतकका तीसरा उद्देशा.

भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्तपरमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति। णवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ। दसहा कज्जमाणे दसपरमाणुपोग्गला भवंति ॥ ९ ॥ संखेज्जाणं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति एए किं भवंति ? गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, से भिज्ज-माणे दुहावि जाव दसहावि संखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए

वार्थ छ परमाणु पुद्गल व दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध, नव टुकडे करते आठ परमाणु पुद्गल और एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध. और दश टुकडे करते दश परमाणु पुद्गल ॥ ९ ॥ संख्यात प्रदेश एकत्रित करने से संख्यात प्रदे-शात्मक स्कंध होता है और इस के दो यावत् दश यावत् संख्यात टुकडे होते हैं. दो टुकडे करने से एक परमाणुपुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मकस्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसेही तीन चार यावत् दश प्रदेशात्मक स्कंध व एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध और दो संख्यात प्रदेशात्मक

शब्दार्थ क०कर्म उ०उदय सेके उ०अंगीकारकरे हं०हां गो०गौतम उ०अंगीकारकरे से०वह भं०भगवन् किं०क्या वी० वीर्यपने उ० अंगीकार करे अ० अवीर्यपने उ०अंगीकार करे गो०गौतम वी० वीर्यपने उ० अंगीकार करे णो० नहीं अ० अवीर्यपने उ० अंगीकार करे ज० यदि वी० वीर्यपने उ० अंगीकार करे किं० क्या, बा० बाल वीर्यपने उ० अंगीकार करे पं० पंडितवीर्य पने उ० अंगीकार करे बा० बाल पंडित वीर्यपने उ०

सूत्र णं उवट्ठाएज्जा ? हंता गोयमा ! उवट्ठाएज्जा । से भंते! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, णो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥ जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, किं बाल वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, पंडित वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, बालपंडित वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोयमा ! बाल वी-

भावार्थ कर्मों के उदय से क्या जीव परलोक क्रिया अंगीकार करे अर्थात् अन्य दर्शनी बने ? हां गौतम ! अन्य दर्शनी बने. अहो भगवन् ! जीव वीर्य सहित अन्य दर्शन अंगीकार करे अथवा वीर्य रहित अंगीकार करे ? अहो गौतम ! जीव वीर्य से परलोक क्रिया अंगीकार करे परंतु वीर्य रहितपने अंगीकार करे नहीं. अहो भगवन् ! यदि वीर्य से परलोक क्रिया अंगीकारकरे तो क्या बल वीर्य से, पंडित वीर्य से अथवा बालपंडित वीर्य से परलोक क्रिया अंगीकार करे ? अहो गौतम ! मिथ्यात्व के उदय से मिथ्या-दृष्टिपना से जीव को जो बाल वीर्य स्थिर रहता है उस से ही अन्य दर्शन अंगीकार करता है, पंडित

सिएखंधे एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति । अहवा तिण्णि संखेज्ज पएसिया खंधा भवंति ॥ चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे, एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ ॥ एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दसपएसिएखंधे, एगयओ संखेज्जपएसिएखंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति ॥ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा

भावार्थ चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल व एकसंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसेही दो परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एकसंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मकस्कंध इस क्रमसे एक परमाणुपुद्गल एक दशप्रदेशात्मकस्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मकस्कंध

शब्दार्थ सि० कदाचित् बा०बालपंडित वीर्यपने अ० अतिक्रमे ॥ ३ ॥ ज० जैसे उ०उदयमें दो० दोआलापक त० तैसे उ० उपशांत में दो० दोआलापक भा० कहना ण० विशेष उ० अंगीकार करे पं० पंडित वीर्यपने अ० अतिक्रमे बा० बालपंडित वीर्यपने अ० अतिक्रमे ॥ ४ ॥ से वह भं० भगवन् किं० क्या आं० आ.

सूत्र वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, ॥ ३ ॥ जहा उदिन्नेणं दो आलावगा, तहा उवसंतेणावि दो आलावगा भाणियव्वा, णवरं उवट्ठाएज्जा, पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, बाल पंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥ ४ ॥ से भंते ! किं आयाए अवक्कमइ, अणायाए

भावार्थ वीर्य से अपक्रमे अर्थात् बाल पंडित वीर्य से देशविरति (श्रावक) होता है. पाठान्तर ऐसा भी है कि मात्र बालवीर्यपने मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उदयसे अपक्रमे परंतु अन्य दो वीर्य सहित अपक्रमे नहीं ॥ ३ ॥ जैसे उदय का दो आलापक कहा वैसेही उपशान्तका दो आलापक जानना. इन में विशेष इतना कि पहिला आलापक में क्रिया करते सर्वथा मोहनीय उपशान्त रहे इसलिये उपशान्त मोह अवस्था में पंडित वीर्य का भाव है और अन्य दो का अभाव है. दूसरा आलापक मे संयतपना से मोह-नीय कर्म उपशमा और बाल पंडित वीर्य से पीछा पडकर देश विरति हुवा उनको मोहनीय कर्म के उप-शम का सद्भाव है परंतु मिथ्यात्वी नहीं हुवा है क्यों कि मोह के उदय से ही मिथ्यात्वी होवें परंतु यहां पर मोह मिथ्यात्व के उपशम का अधिकार है ॥ ४ ॥ अब सामान्य से अपक्रम का अधिकार चलता

सूत्र

णवसंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, अहवा दससंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति । संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ॥ १० ॥ असंखेज्जहाणं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, एगयओ साहणित्ता किं भवंति ? गोयमा ! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि, संखेज्जहावि असंखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्ज-

भावार्थ

संख्यात परमाणु पुद्गल जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असंख्यात पुद्गल एकत्रित होने से क्या होता है ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध होता है. उस का विभाग करने से दो तीन यावत् दश संख्यात असंख्यात विभाग होते हैं. अब दो विभाग करने से एक परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. तीन टुकडे करने से दो परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा

शब्दार्थ

की ति० तिर्यच म० मनुष्य दे० देव जे० जो क० किये पा० पापकर्म ण० नहीं हैं त० उसका अ० विना- भोगवा मो० मोक्ष हं० हां गो० गोतम ने० नारकी ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव को जा० यावत् मो० मोक्ष से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे वु० कहाजाता है ने० नारकी जा० यावत् मो०

सूत्र

णियस्सवा, मणुस्सस्सवा, देवस्सवा जे कडे पावे कम्मं णत्थि तस्स अवेइयत्ता मोक्खो ? हंता गोयमा ! णेरइयस्सवा, तिरिक्ख मणुस्स देवस्सवा जाव मोक्खो। सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, नेरइयस्सवा जाव मोक्खो ? एवं खलुमए गोयमा !

भावार्थ

सामान्य कर्म की चिन्तवना कहते हैं अहो भगवन् ! नरक, तिर्यंच, मनुष्य, व देवताने अशुभाचरण से जो पापकर्म किये हैं उन को वेदे विना क्या वे मुक्त नहीं हो सकते हैं? हां गोतम ! नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवताने जो पापकर्म किये हैं उन को विना वेदे वे मुक्त नहीं हो सकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी तिर्यंच, मनुष्य व देवता किये हुवे कर्मों से विना वेदे नहीं छूट सकते हैं ? अहो गौतम ! कर्म के दो भेद मैंने कहे हैं. प्रदेश कर्म व अनुभाग कर्म. उस में से जो प्रदेश कर्म हैं वे निश्चय ही जैसे किये वैसे ही वेदते हैं. और अनुभाग कर्म को कितनेक वेदते हैं, और कितनेक नहीं वेदते हैं. जैसे मिथ्यात्व क्षयोपशम काल में प्रदेश कर्म वेदे परंतु अनुभाग कर्म वेदे नहीं. कर्म वेदने के प्रकार अरिहंत देवने ही जाने हैं, अरिहंतने उपदेशे हैं, उनोंने ही उन का चिन्तवन किया है, व द्रव्य क्षेत्र काल भा-

शब्दार्थ स० लेश्या सहित ज० जैसे ओ०औधिक कि०कृष्णलेश्या नी०नीललेश्या का०कापुत लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त भा० कहना ते० तेजो लेश्या प० पद्मलेश्या सु० शुक्ल लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष सि० सिद्ध णा० नहीं भा० कहना ॥४०॥ इ० यह भ० भविक भ० भगवन णा० ज्ञान प० परभविक ज्ञान उ० उभय भविक गो० गौतम इ० यह भ० भविक ज्ञान

सूत्र ॥ ३९ ॥ सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स, काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा । णवरं पमत्त अपमत्ताण भाणियव्वा । तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा । णवरं सिद्धा ण भाणियव्वा ॥ ४० ॥ इह भविए भंते णाणे, परभविए णाणे, तदुभय भवि एणाणे ? गोयमा ! इह भविए वि णाणे, परभवि-

भावार्थ लेश्या का प्रश्नकहते हैं. अहो भगवन्! सलेशी जीव आरंभी हैं? अहो गौतम जैसे समुच्चय जीव का कहा. वैसा कहना. कृष्ण, नील व कापोत लेश्यावालेको समस्त जीव जैसे कहना परंतु इसमें प्रमत्त व अप्रमत्तका कथन करना नहीं तेजु, पद्म, व शुक्ल लेश्या वाले औधिक जीव (सब जीव) जैसे कहना यहां पर सिद्ध को कहना नहीं क्योंकि सिद्ध अलेशी हैं ॥ ४० ॥ अब आरंभ का हेतुभूत ज्ञानका स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् !

शब्दार्थ लिये गो॰ गौतम ने॰ नारकी जा॰ यावत् मो॰ मोक्ष ॥ ६ ॥ ए॰ यह भं॰ भगवन् पो॰ पुद्गल ती॰ अतीत काल में अ॰ अनंत सा॰ शाश्वत स॰ काल भु॰ हुवा इ॰ ऐसे व॰ कहना हं॰ हां गो॰ गौतम ए॰ यह पो॰ पुद्गल ती॰ अतीत काल में अ॰ अनंत सा॰ शाश्वत स॰ काल भु॰ हुवा इ॰ ऐसा व॰ कहना ए॰ यह भं॰ भगवन् पो॰ पुद्गल प॰ वर्तमान काल में सा॰ शाश्वत स॰ काल भ॰ है इ॰ ऐसा व॰ कहना

सूत्र गरणं, जहा जहा तं भगवया दिट्ठं तहा तहा तंविपरिणमिस्सतीति. सेतेणट्ठेणं गोयमा ! नेरइयस्सवा जाव मोक्खो ॥ ६ ॥ एसणं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वंसिया ? हंता गोयमा ! एसणं पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया । एसणं भंते ! पोग्गले पडुप्पण्णसासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! तंचेव उच्चारेयव्वं । एसणं भंते ! पोग्गले

भावार्थ नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता किये हुवे कर्मों से मुक्त नहीं हो सकते हैं ॥ ६ ॥ उपर कर्म की चिन्तवना की यह कर्म पुद्गल रूप हैं इस लिये परमाणु आदि पुद्गल की चिन्तवना कहते हैं. अथवा परिणाम अधिकार से पुद्गल परिणाम कहते हैं. अहो भगवन् ! अतीत काल में सब पुद्गल अनंत, शाश्वत थे ऐसा कहना ? हां गौतम ! परमाणु पुद्गल अतीत काल में सदा थे. ऐसा कदापि नहीं हुवा कि अतीत काल में शून्य समय [काल] हुवा. अहो भगवन् ! वर्तमान काल में सब पुद्गल क्या शाश्वत है ऐसा

सूत्र

णवसंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, अहवा दससंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ॥ १० ॥ असंखेज्जहाणं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, एगयओ साहणित्ता किं भवंति? गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि, संखेज्जहावि असंखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्ज-

भावार्थ

संख्यात परमाणु पुद्गल जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असंख्यात पुद्गल एकत्रित होने से क्या होता है ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध होता है. उस का विभाग करने से दो तीन यावत् दश संख्यात असंख्यात विभाग होते हैं. अब दो विभाग करने से एक परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. तीन टुकडे करने से दो परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा

शब्दार्थ स० काल के० संपूर्ण संयम से के० संपूर्ण संवर से के० संपूर्ण ब्रह्मचर्य से के० संपूर्ण प्रवचन माता से सि० सिद्धे बु० बुझे जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख का अं० अंतक्रिया गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है जा० यावत् अं० अंत क० किया गो० गौतम जे० जो के० कोइ अं० अंत करने वाले अ० चरम शरीरी स० सर्व दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे स० सब ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं बु० बुझते हैं मु० मुक्त होते हैं प० निर्वाणपाते

सूत्र केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलीहिं पवयणमायाहिं, सिज्झिसु, बुज्झिसु जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिंसु ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवंवुच्चइ, तंचेव जाव अंतं करिंसु ? गोयमा ! जेकेइ अंतकरावा अंतिम सरीरियावा सव्व दुक्खाणमंतं करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा, सव्वे

भावार्थ केवल संवर से, केवल ब्रह्मचर्य से व केवल आठ प्रवचन माता से सिझे, बुझे, यावत् सब दुःखों का अंत किया ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से छद्मस्थ मनुष्य सिझे, बुझे नहीं यावत् सब दुःखों का अंत किया नहीं ? अहो गौतम ! संसार के अंत करनेवाले व चरम शरीरी ने सब दुःखों का अंत किया, करते हैं, व करेंगे. वे सब केवलज्ञान, केवलदर्शन के

सूत्र

णवसंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, अहवा दससंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ॥ १० ॥ असंखेज्जहाणं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, एगयओ साहणित्ता किं भवंति? गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि, संखेज्जहावि असंखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्ज-

भावार्थ

संख्यात परमाणु पुद्गल जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असंख्यात पुद्गल एकत्रित होने से क्या होता है? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध होता है. उस का विभाग करने से दो तीन यावत् दश संख्यात असंख्यात विभाग होते हैं. अब दो विभाग करने से एक परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. तीन टुकडे करने से दो परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा

ार्थ स०काल के०संपूर्ण संयम से के०संपूर्ण संवर से के०संपूर्ण ब्रह्मचर्य से के०संपूर्ण प्रवचन माता से सि० सिझे बु० बुझे जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख का अं० अंतक्रिया गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स०समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है जा० यावत् अं० अंत क० किया गो० गौतम जे० जो के० कोइ अं० अंत करने वाले अ० चरम शरीरी स० सर्व दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे म० सब ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं बु० बुझते हैं मु० मुक्त होते हैं प० निर्वाणपाते

सूत्र केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलीहिं पवयणमायाहिं, सिज्झिसु, बुज्झिसु जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिंसु ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवंवुच्चइ, तंचेव जाव अंतं करिंसु ? गोयमा ! जेकेइ अंतकरावा अंतिम सरीरियावा सव्व दुक्खाणमंतं करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा, सव्वे

भावार्थ केवल संवर से, केवल ब्रह्मचर्य से व केवल आठ प्रवचन माता से सिझें, बुझें, यावत् सब दुःखों का अंत किया ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से छद्मस्थ मनुष्य सिझें, बुझें नहीं यावत् सब दुःखों का अंत किया नहीं ? अहो गौतम ! संसार के अंत करनेवाले व चरम शरीरी ने सब दुःखों का अंत किया, करते हैं, व करेंगे. वे सब केवलज्ञान, केवलदर्शन के

एगयओ दो असंखेज्ज पदेसिया खंधा भवंति, अहवा तिण्णि असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ असंखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, एवं चउक्क संजोगो जाव दससंजोगो; एवं जहेव असंखेज्ज पएसियस्स णवरं असंखेज्जयं एगं अब्भहियं जाणियव्वं जाव अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति, संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया खंधा एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्ज पएसिया खंधा एगयओ

ख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही संपूर्ण चार संयोग यावत् दश संयोग का जैसे संख्यात प्रदेशी का कहा वैसे ही असंख्यात प्रदेशी का कहना. मात्र इस में असंख्यात प्रदेशी जानना यावत् दश असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. अब संख्यात टुकडे करते संख्यात परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा संख्यात द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, ऐसे ही संख्यात दश प्रदेशा-

अन्वार्थ — काल जा० यावत् अं० अंत किया हं० हां गो० गौतम जा० यावत् अं० अंतक्रिया ए० ये ति० तीन आ० आलापक भा० कहना छ० छद्मस्थ को ज० जैसे ण० विशेष सि० सिझें सि० सिझते हैं सि० सिझेंगे ॥ ११ ॥ से० वह भं० भगवन् ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल प० वर्तमान सा० शाश्वत स० समय अ० अनागत अ० अनंत सा० शाश्वत स० समय जे० जो के० कोई अं० अंत करने वाले

सूत्र — गोयमा सिज्झिसु जाव अंतंकरिंसु एते तिन्नि आलावगा भाणियव्वा छउमत्थस्स जहा णवरं सिज्झंसु सिज्झंति, सिज्झिस्संति॥ ११॥ सेणूणं भंते! तीतमणंतं सासयं समयं पडुप्पन्नंवा सासयंसमयं अणागय मणंतंवा सासयं समयं जेकेइ अंतकरावा अंतिम सरीरियावा सव्व दुक्खाण.

भावार्थ — भगवन् ! केवली अतीत शाश्वत काल में सिझे, बुझे यावत् सब दुखों का अंत किया ? हां गौतम ! सिझे यावत् अंत किया. ऐसे अतीत, अनागत व वर्तमान के तीन २ आलापक जानना. जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही केवली का जानना मात्र विशेषता यह है कि अतीत काल में सिझें, वर्तमान में सिझते हैं और आगामिक में सिझेंगे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अतीत काल में अनंत शाश्वत समय में वर्तमान को भी शाश्वत समय में, अनागत काल के अनंत शाश्वत समय में जो कोई अंत करनेवाले अन्तिम शरीरीने सब दुःखों का अंत किया, करते हैं व करेंगे वे क्या सब उत्पन्न केवल ज्ञान, केवल दर्शन के धारक अरिहंत केवली हुवे पीछे सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ? हां गौतम ! अतीत

पएसिए खंधे एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, एवं जाव एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ संखेज्ज पएसिए खंधे एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, अहवा तिण्णि अणंतपएसिया खंधा भवंति, । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, एवं

॥भावार्थ॥ एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध एक [illegible] स्कंध, एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही दो अनंत प्रदेशात्मक स्कंध होवे. तीन विभाग [illegible] परमाणु पुद्गल एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक [illegible] प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक परमाणु पुद्गल एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत [illegible] अथवा एक परमाणु पुद्गल दो अनंत प्रदेशात्मक स्कंध एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो अनंत प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो अनंत प्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध दो अनंत प्रदेशात्मक,एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध दो अनंत प्रदे-

शब्दार्थ नाम० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए उतना व० कहना से० ऐसे ही भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ४ ॥ ÷ ÷ ÷
क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात पु० पृथ्वी प० प्ररूपी र० रत्न प्रभा जा० यावत् त० तमतम इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा पृथ्वी में क० कितने नि० नरकावास

सूत्र

नाण दंसण धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया सेवं भंते भंतेत्ति पढमसए चउत्थोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ४ ॥ * *

कइणं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—रयणप्पभा जाव तमतमा। इमीसेणं भंते। रयणप्पभाए पुढवीए कइ निरयावास ×

भावार्थ वह वैसे ही है अन्यथा नहीं है. यह पहिला शतकका चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ४ ॥

पहिले उद्देशे के अंत में अरहंतादिक कहे वे पृथ्वी पर हुवे इस लिये इस उद्देशे में पृथ्वी संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! कितनी पृथ्वी कहीं? अहो गौतम! पृथ्वी सात कहीं उन के नाम १ रत्नप्रभा इस में रत्नों की प्रभा २ शर्कर प्रभा इस में कंकरों की प्रभा ३ वालु प्रभा जिस में वालु की कान्ति ४ पंक प्रभा जिस में अशुचि रूप कर्दम की कान्ति ५ धूम प्रभा जिस में धूम्र सरिखी कान्ति ६ अंधकार की प्रभा सो तम प्रभा और ७ महा अंधकार की प्रभा. सो तमतम प्रभा. अहो भगवन्!

खंधा एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। अणंतहा कज्जमाणं अणंता परमाणुपोग्गला भवंति(५७५)॥११॥ एएसिणं भंते! परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेदाणुवाएणं अणंताणं पोग्गलपरियट्टाणं अणंताणंता पोग्गल परियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया? हंता गोयमा! एएसिणं परमाणुपोग्गलाणं साह-णणाभेदाणु जाव मक्खाया ॥ १२ ॥ कइविहेणं भंते! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ? गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तंजहा ओरालिय पोग्गलपरियट्टे, वेउव्विय

भावार्थ ख्यात. असंख्यात असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध अथवा असंख्यात अनंत प्रदेशात्मक स्कंध. अनंत विभाग करने से अनंत परमाणु पुद्गल होते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन्! क्या भगवन्तने ऐसा कहा है कि परमाणु पुद्गलों के संहनन (एकत्रित मीलना) व भेद (पृथक् होना) के योग से अनंत को अनंत गुने करे इतने पुद्गल परावर्त जानना ? हां गौतम! परमाणु पुद्गलों के संहनन व भेद के योग से अनंतगुने करे इतने पुद्गल परावर्त होते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! पुद्गल परावर्त कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! सात पुद्गल परावर्त कहे हैं उदारिक पुद्गल परावर्त, वैक्रेय पुद्गल परावर्त, तेजस

शब्दार्थ तीन स० सात वि० विमान स० शत च० चार क० देवलोक में ए० अग्यारह उ०उत्तर हे० नीचे की स० सात उ० उत्तर म० मध्यकी स० शत उ० उपर की पं० पांच अ० अनुत्तर विमान में ॥ ३ ॥ पु० पृथ्वी ठि० स्थिति ओ० अवगाहना स० शरीर सं० संघयण सं० संठाण ले० लेश्या दि० दृष्टि णा० ज्ञान जो० जोग उ० उपयोग द० दश स्थान इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के ती०

सूत्र एक्कारसुत्तरहेट्ठिमए सत्तुत्तरंच मज्झिमए ॥ सयमेगं उवरिमए ॥ पंचेवय अणुत्तर-विमाणा ॥ ३ ॥ १ ॥ पुढवि ठिइ ओगाहण सरीर संघयण मेव संठाणे ॥ लेस्सा दिट्ठी णाणे, जोगुवओगे य दसठाणा ॥ १ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए

भावार्थ अच्युत इन दोनों में तीनसो. नवग्रैवेयक की प्रथम त्रिक में १११, दूसरी त्रिक में १०७, तीसरी त्रिक में १०० और उपर पांच अनुत्तर विमान के पांच सब मीलकर ८४९७०२३ विमान हुवे ॥ ३ ॥ अब आगे उद्देशा के लीये द्वार गाथासे बताते हैं. १ स्थिति २ अवगाहना ३ शरीर ४ संघयण ५ संठान ६ लेश्या ७ दृष्टि ८ ज्ञान ९ जोग १० उपयोग, इस में प्रथम स्थिति द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में तीस लाख नरकावासमें स प्रत्येक नरकावास में नारकी के कितने स्थिति स्थान कहे हैं ? अहो गौतम ! प्रत्येक नरकावास में असंख्याते स्थिति स्थान कहे हैं क्योंकी प्रथम पृथ्वी की अपेक्षासे नारकी की जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति है. और एक २ समय बढाते उत्कृष्ट एक सागरोपम की

असंखेज्जावा अणंतावा ॥ एगमेगस्सणं भंते! असुरकुमारस्स केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा एवं चेव, एवं जाव वेमाणियस्स ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स केवइया वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा अतीता? गोयमा! अणंता एवं जहेव ओरालिय पोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा, एवं जाव वेमाणियस्स ॥ एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टा, एए एगइया सत्तदंडगा भवंति ॥ २५ ॥ णेरइयाणं भंते! केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता? गोयमा! अणंता।

भावार्थ अथवा अभव्य जीवहैं उनको पुद्गल परावर्त है और जो नरक से नीकलकर मुक्त सिद्ध होवेंगे अथवा जो संख्यात असंख्यात भव में सीझनेवाले होंगे उनको पुद्गल परावर्त नहीं है क्योंकि पुद्गल परावर्त में अनंत भव होते हैं. जिस को पुद्गल परावर्त होता है उस को जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात व अनंत पुद्गल परावर्त होते हैं. अहो भगवन्! एक २ असुर कुमार को कितने पुद्गल परावर्त कहे हैं? अहो गौतम! जैसे नारकी का कहा वैसे ही असुर कुमारका जानना. और ऐसे ही वैमानिकतक जानना. अहो भगवन्! एक २ नारकी को कितने वैक्रेय पुद्गल परावर्त अतीत काल में हुए? अहो गौतम! अनंत पुद्गल परावर्त हुए. वगैरह जैसे उदारिक का कहा वैसे ही वैक्रेय का जानना. ऐसे ही श्वासोश्वास तक सातों पुद्गल परावर्त का चौविस दंडक आश्री जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन्! समस्त नारकीने अतीत काल में कितने

शब्दार्थ वास स० शत सहस्र में ए० एकेक नि० नरका वास में ज० जघन्य ठि० स्थिति वाले व० वर्तते ने०

सूत्र सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ठिईए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्ज. कोहोवउत्ता, अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ताय, । अहवा कोहोवउत्ताय मायोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय मायोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय लोभोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, लोभोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय, मायोवउत्तेय; । कोहोवउत्ताय,

भावार्थ प्रकार का है. ॥ ४ ॥ अब इन स्थिति स्थान में क्रोधादि विषय का विभाग कर बताते हैं. अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासमें से प्रत्येक नरकावास में जघन्य स्थितिवाले नारकीरहे हैं उनमें से क्या क्रोधवाले ज्यादा हैं, ? मानवाले ज्यादा हैं ? मायावाले ज्यादा हैं ? अथवा लोभवाले ज्यादा हैं ? अहो गौतम! प्रत्येक नरक में जघन्य स्थिति वाले नारकी सदैव रहते हैं उन में क्रोध युक्त विशेष रहते हैं. इस से उन के २७ भांगे किये हैं. और एकादि से संख्यात समयाधिक जघन्य स्थितिवाले नारकी हैं वे कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं भी हैं. इसलिये उसमें क्रोध सहित एक भी होवे अनेकभी होवे इससे

एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गल परियट्टा अतीता ? अणंता, केवइया पुरक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि. जस्सत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा एवं जाव मणुस्सत्ते, वाणमंतर जोइसिय वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥ १७ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! असुरकुमारस्स णेरइयत्ते केवइया, ओरालियपोग्गल परियट्टा एवं जहा णेरइयस्स वत्तव्वया भणिया तहा असुरकुमारस्सवि भाणियव्वा जाव वेमाणि-

भावार्थ

भी नहीं ऐसे ही स्थनित कुमार तक सब भुवनपति का जानना. अहो भगवन् ! एक नारकीने पृथ्वी-कायापने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में किये ? अहो गौतम ! अनंत उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में किये. अहो भगवन् ! आगामिक काल में कितने करेंगे ? अहो गौतम ! कितनेक करेंगे और कितनेक नहीं करेंगे जो करेंगे वे जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात व अनंत पुद्गल परावर्त करेंगे. ऐसे ही मनुष्य तक जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥१७॥अहो भगवन् ! एक २ असुर कुमारने नारकीपने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त किये ? अहो गौतम ! जैसे नारकी का कहा वैसे ही असुर कुमार का जानना. और ऐसे ही स्थनित कुमारतक सब

शब्दार्थ वास स० शत सहस्र में ए० एकैक नि० नरका वास में ज० जघन्य ठि० स्थिति वाले व० वर्तते ने०

सूत्र सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ठिईए वट्टमाणा नेरइया किं को-होवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्ज. कोहोवउत्ता, अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ताय, । अहवा कोहोवउत्ताय मायोवउत्तेय, । अहवा कोहो-वउत्ताय मायोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय लोभोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, लोभोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय, मायोवउत्तेय; । कोहोवउत्ताय,

भावार्थ प्रकार का है. ॥ ४ ॥ अब इन स्थिति स्थान में क्रोधादि विषय का विभाग कर बताते हैं. अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासमें से प्रत्येक नरकावास में जघन्य स्थितिवाले नारकीरहे हैं उनमें से क्या क्रोधवाले ज्यादा हैं, ? मानवाले ज्यादा हैं? मायावाले ज्यादा हैं? अथवा लोभवाले ज्यादा हैं? अहो गौतम! प्रत्येक नरक में जघन्य स्थिति वाले नारकी सदैव रहते हैं उन में क्रोध युक्त विशेष रहते हैं. इस से उन के २७ भागे किये हैं. और एकादि से संख्यात समयाधिक जघन्य स्थितिवाले नार-की हैं वे क्वचित् हैं और क्वचित् नहीं भी हैं. इसलिये उसमें क्रोध सहित एक भी होवे अनेकभी होवे इससे

एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गल परियट्टा अतीता ? अणंता, केवइया पुरक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि. जस्सत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा एवं जाव मणुस्सत्ते, वाणमंतर जोइसिय वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥ १७ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! असुरकुमारस्स णेरइयत्ते केवइया, ओरालियपोग्गल परियट्टा एवं जहा णेरइयस्स वत्तव्वया भणिया तहा असुरकुमारस्सवि भाणियव्वा जाव वेमाणि-

भावार्थ

भी नहीं ऐसे ही स्थनित कुमार तक सब भुवनपति का जानना. अहो भगवन् ! एक नारकीने पृथ्वी-कायापने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में किये ? अहो गौतम ! अनंत उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में किये. अहो भगवन् ! आगामिक काल में कितने करेंगे ? अहो गौतम ! कितनेक करेंगे और कितनेक नहीं करेंगे जो करेंगे वे जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात व अनंत पुद्गल परावर्त करेंगे. ऐसे ही मनुष्य तक जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥१७॥अहो भगवन् ! एक २ असुर कुमारने नारकीपने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त किये ? अहो गौतम ! जैसे नारकी का कहा वैसे ही असुर कुमार का जानना. और ऐसे ही स्थनित कुमारतक सब

शब्दार्थ हो० होवे ए० ऐसे स० सत्तावीस भं० भांगा ने० जानना॥८॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पु०पृथ्वी में ती०तीस

सूत्र अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ते. अहवा कोहोव-
उत्ता माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता, एवं सत्तावीसं भंगा नेयव्वा ॥ ५ ॥

भावार्थ मायावंत एक ११ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व मायावंत बहुत. १२ बहुत मानवंत एक व लोभवंत एक १३ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक व लोभवंत बहुत १४ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व लोभवंत एक १५ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व लोभवंत बहुत १६ क्रोधवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत एक १७ क्रोधवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत बहुत १८ क्रोधवंत बहुत मायावंत बहुत व लोभवंत एक १९ क्रोधवंत बहुत मायावंत बहुत व लोभवंत बहुत २० क्रोधवंत बहुत मानवंत एक, मायावंत एक व लोभवंत एक २१ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक मायावंत एक व लोभवंत बहुत २२ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक मायावंत बहुत व लोभवंत एक २३ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत एक २४ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत एक २५ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत बहुत २६ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत मायावंत बहुत व लोभवंत एक २७ क्रोधवंत बहुत, मानवंत बहुत मायावंत बहुत व लोभवंत बहुत ये सब मीलकर २७ भांगे जघन्य स्थिति वाले नारकी में होते हैं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! एक समय से अधिक समय

सूत्र

मणपोग्गल परियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगुत्तरिया, विगलिंदिएसु णत्थि, वइ पोग्गल परियट्टा एवं चेव, णवरं एगिंदिएसु णत्थि भाणियव्वा ॥ आणापाणु पोग्गल परियट्टा सव्वत्थ एगुत्तरिया एवं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥ २० ॥ णेरइयाणं भंते ! णेरइयत्ते केवइया ओरालिय पोग्गल परियट्टा अतीता ? णत्थि, केवइया पुरक्खडा ? णत्थि एक्कोवि ॥ एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥ पुढवीकाइयत्ते पुच्छा ? अणंता केवइया पुरक्खडा ? अणंता एवं मणुस्सत्ते, वाणमंतर जोइसिय वेमाणियत्ते जहा णेरइयत्ते. एवं सत्तवि पोग्गल परियट्टा भाणियव्वा, जत्थ अत्थि तत्थ अतीतावि पुरक्खडावि

भावार्थ

वैमानिक तक सब दंडक का कहना ॥ १९ ॥ तेजस व कार्मण पुद्गल का वर्णन मन को जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात व अनंत कहना. मन पुद्गल परावर्त सब पंचेन्द्रिय में होता है वचन पुद्गल परावर्त एकेन्द्रिय वर्ज कर सब जीव म है और श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त सब जीवों में जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात अनंत तक जानना.॥२०॥ अहो भगवन् ! बहुत नारकीने नारकीपने अतीतकाल में कितने उदारिक पुद्गल परावर्त किये ?अहो गौतम ! बहुत नारकीने अतीत में नहीं किये और आगामिक काल में नहीं करेंगे क्यों की उदारिक शरीर उन में नहीं हैं ऐसे ही स्थनित कुमार तक जानना.

शब्दार्थ गौतम को० क्रोधयुक्त मा० मानयुक्त मा० मायायुक्त लो० लोभयुक्त ए० ऐसे अ० अस्सी भं० भांगा ने० जानना ए० ऐसे जा० यावत् सं० संख्यात स० समयाधिक ठि० स्थिति वाले अ० असंख्यात स० समयाधिक स्थिति वाले त० उसयोग्य उ० उत्कृष्ट ठि० स्थिति वाले स० सत्तावीस भं० भांगे भा० कहना. ॥६॥

सूत्र कोहोवउत्तेय, माणोवउत्तेय, अहवा कोहोवउत्तेय माणोवउत्ताय एवं असीइ भंगा नेयव्वा ॥ एवं जाव संखेज्ज समयाहिया ठिई, असंखेज्ज समयाहिया ठिईए, तप्पाउग्गुक्कोसियाए ठिईए सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा॥६॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास

भावार्थ एक १२ क्रोधवंत बहुत लोभवंत बहुत १३ मानवंत एक मायावंत एक १४ मानवंत एक मायावंत बहुत १५ मानवंत बहुत मायावंत एक १६ मानवंत बहुत मायावंत बहुत १७ मानवंत एक लोभवंत एक १८ मानवंत एक लोभवंत बहुत १९ मानवंत बहुत लोभवंत एक २० मानवंत बहुत व लोभवंत बहुत २१ मायावंत एक लोभवंत एक २२ मायावंत एक लोभवंत बहुत २३ मायावंत बहुत लोभवंत एक २४ मायावंत बहुत व लोभवंत बहुत. त्रिसंयोगी भांग ३२-१ क्रोधवंत, मानवंत, मायावंत एक, अनेक ऐसे मीलकर ३२ भांगे होते हैं और चतुःसंयोगी के १६ भांगे होते हैं यों सब मील कर जघन्य स्थिति के नारकी में एक से अस्सी पर्यंत भांगे होते हैं. और संख्यात समय से अधिक समय तक के जघन्य स्थिति वाले नारकी से लगाकर उत्कृष्ट स्थिति वाले तक सत्तावीस भांगे होते हैं यह प्रथमद्वार हुआ

एवं वेउव्विय पोग्गल परियट्टेवि णवरं वेउव्विय सरीरवट्टमाणेणं वेउव्वियसरीर पाउग्गाइं सेसं तंचेव । एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टेवि, णवरं आणापाणु पाउग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए सेसं तंचेव ॥ २२ ॥ ओरालिय पोग्गलपरियट्टेणं भंते ! केवइयं कालं णिव्वत्तिज्जइ? गोयमा ! अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं एवइय कालस्स णिव्वत्तिज्जइ ॥ एवं वेउव्विय पोग्गलपरियट्टेवि, एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टेवि ॥ २३ ॥ एयस्सणं भंते! ओरालिय पोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणा॰ कालस्स, वेउव्वियपोग्गल जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणा कालस्स कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा?

भावार्थ वैक्रेय पुद्गल परावर्तका जानना परंतु इसमें वैक्रेय शरीर योग्य पुद्गल ग्रहण किये यावत् छोडे कहना. ऐसे ही श्वासोश्वास तक जानना ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक पुद्गल परावर्त की कितने काल में निवृत्ति होती है ? अहो गौतम ! अनंत काल में निवृत्ति होती है क्योंकि जीव एक है और पुद्गल अनंत है ऐसे ही वैक्रेय पुद्गल परावर्त यावत् आन पान पुद्गल परावर्त का जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! इन उदारिक पुद्गल परावर्त निवर्तन काल, वैक्रेय पुद्गल परावर्त निवर्तन काल यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त निवर्तन काल में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा कार्माण

शब्दार्थ गति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गोतम स० सर्व ता० तैसे हो० होवे ए० ऐसे जी० जीव ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर ति० तीन भांग ॥ ८ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक म० ज्योतिवंत म० बलवंत म० यशस्वी म० महासुखी म० महानुभाव अ० नजदीक च० चवता किं० थोडाकाल हि० लज्जा दु० दुर्गं-

सूत्र समावण्णगा अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! सव्वेवि तावहोज्जा. अविग्गहगइ समावण्णगा, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णगेय, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय विग्गहगइ समावण्णगाय एवं जीव एगिंदिय वज्जो तिय भंगो ॥ ८ ॥ देवेणं भंते ! महड्ढिए, महज्जुइए, महब्बले, महाजसे, महेसक्खे, महाणुभावे, अविउक्कंतियं चयमाणे किंचिकालं हिरवत्तियं, दुगं-

भावार्थ गति करनेवाले हैं या अविग्रह गति करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! नारकी में अविग्रहगतिवाले विशेष होने से अविग्रहगति में बहुवचन लीया है. और विग्रह गतिवाले थोडे होवे अथवा न होवे इसलिये एक वचन लिया है. इस के तीन भांगे होते हैं १. नारकी में सब जीव अविग्रहगति संयुक्त २ अविग्रहगतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त एक ३ अविग्रह गतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त बहुत. ऐसे ही एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर अन्य सब दंडक में उक्त तीनों भांगे पाते हैं. एकेन्द्रिय में विग्रहगतिवन्त व अविग्रहगति-वंत बहुत होने से भांगा नहीं होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक, महाद्युतिवन्त, महाबलवन्त, महा

शब्दार्थ स० लेश्या सहित ज० जैसे ओ०औधिक कि०कृष्णलेश्या नी०नीललेश्या का०कापुत लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त भा० कहना ते० तेजो लेश्या प० पद्मलेश्या सु० शुक्ल लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष सि० सिद्ध णा० नहीं भा० कहना ॥४०॥ इ० यह भ० भविक भ० भगवन णा० ज्ञान प० परभविक ज्ञान उ० उभय भविक गो० गौतम इ० यह भ० भविक ज्ञान

सूत्र ॥ ३९ ॥ सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स, काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा । णवरं पमत्त अपमत्ताण भाणियव्वा । तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा । णवरं सिद्धा ण भाणियव्वा ॥ ४० ॥ इह भविए भंते णाणे, परभविए णाणे, तदुभय भवि एणाणे ? गोयमा ! इह भविए वि णाणे, परभवि-

भावार्थ लेश्या का प्रश्नकहते हैं. अहो भगवन्! सलेशी जीव आरंभी हैं? अहो गौतम जैसे समुच्चय जीव का कहा. वैसा कहना. कृष्ण, नील व कापोत लेश्यावालेको समस्त जीव जैसे कहना परंतु इसमें प्रमत्त व अप्रमत्तका कथन करना नहीं तेजु, पद्म, व शुक्ल लेश्या वाले औधिक जीव (सब जीव) जैसे कहना यहां पर सिद्ध को कहना नहीं क्योंकि सिद्ध अलेशी हैं ॥ ४० ॥ अब आरंभ का हेतुभूत ज्ञानका स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन्!

शब्दार्थ उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित् अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

सूत्र अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

भावार्थ स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती हैं. इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले अ० अथ भं० भगवन् पा० प्राणातिपात मु० मृषा वाद अ० अदत्तादान मे० मैथुन प० परीग्रह ए० इन का क० कौनसा व० वर्ण क० कौनसा गंध क०

सूत्र

परियट्टा अणंतगुणा, जाव आणापाणुपोग्गल परियट्टा अणंतगुणा; ओरालिय पोग्गल परियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गल परियट्टा कम्मापोग्गल परियट्टा अणंतगुणा ॥ २५ ॥ सेवं भंते भंते त्ति ! भगवं जाव विहरइ ॥ दुवालसम सयस्सय चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ४ ॥ * * * *

रायगिहे जाव एवं वयासी-अह भंते पाणाइवाए, मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे,

भावार्थ

परावर्त इससे वचन पुद्गल परावर्त अनंतगना इनसे मनपुद्गल परावर्त अनंतगुना इससे श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त अनंतगुना इमसे उदारिक पुद्गल परावर्त अनंत गुना,इससे तेजस पुद्गल परावर्त अनंत गुना,इससे कार्माण पुद्गक परावर्त अतंन गुना ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं कहकर भगवान् गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कारकर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे. यह वारहवा शतक का चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ४ ॥ ० ०

चतुर्थ उद्देशे में पुद्गल का कथन किया. पुद्गल रूपी अरूपी दोनों होते हैं इसलिये पांचवे उद्देशे में रूपी अरूपी दोनों का कथन करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर

शब्दार्थ

आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्बीषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम जं० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥१३॥ जी० जीव को भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

सूत्र

वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किव्विसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

भावार्थ

है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्बिष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

सूत्र

अवक्कासे, उण्णए उण्णामे दुण्णामे एसणं कइवण्णे ४ पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचवण्णे जहा कोहे तहेव ॥ ३ ॥ अह भंते ! माया, उवही, नियडी, वलए, गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए, झिम्मे, किव्विसे, आयरणया, गूहणया, वंचणया, पलिउंचणया, सातिजोगेय, एसणं कइवण्णे ४ पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचवण्णे जहेव कोहे ॥ ४ ॥

भावार्थ

जैसा करडा रहना ५ गर्व [अन्य से कीर्ति कराना] ६ अनुक्रोश (अन्य को हलका करना) ७ परपरिवाद [अन्य की निन्दा करना] ८ उत्कर्ष [अपनी श्रेष्ठता बतलाना] ९ अपकर्ष [अपनी लघुता छिपाना १० उन्नत [नमना नहीं] ११ उन्नाम [जो आकर नमा होवे उसपर गर्व करे] १२ दुन्नाम (दुष्टपने नमे) (ये मानके बारह पर्याय वाची नाम कहे हैं.) इन में कितने वर्ण यावत् स्पर्श कहे हैं. ? अहो गौतम ! पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श यों १६ बोल क्रोध जैसे कहना. ॥ ३ ॥ १ माया २ उपाधि [समीप जाकर ठगना] ३ नियडी [कार्यकर छिपाना] ४ वलय (वक्र रहना) ५ गहन (छिपी हुई) ६ णूम [गुप्ताश्रयी] ७ कर्कश (कठोर रहना ८ करात [कुचेष्टा] करना ९ झिम (अन्य को ठगना) १० किल्विष (मायावी किल्विष में उत्पन्न होवे) ११ आदरणता, १२ गुह्य १३ वंचन १४ प्रतिकुंचन [सरल वचन का खंडन करना] १५ शाति योग (विश्वास रहित) यह माया के १५ पर्याय वाची नाम कहे हैं. अहो भगवन् इन पंदरह में कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श पावे ? अहो गौतम ! क्रोध की तरह १६ बोल पाते हैं. ॥ ४ ॥ लोभ इच्छा, मूर्च्छा,

शब्दार्थ — आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्विषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम जं० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥ १३॥ जी० जीव को भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

सूत्र — वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किब्बिसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

भावार्थ — है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

एसणं कइवण्णा ४ पण्णत्ता? तंचेव जाव अफासा पण्णत्ता ॥ ८ ॥ अह भंते! उग्गहे ईहा अवाए धारणा एसणं कइवण्णा ४ पण्णत्ता? एवंचेव जाव अफासा पण्णत्ता ॥ ९ ॥ अह भंते! उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे एसणं कइ-वण्णे ४ पण्णत्ते? तंचेव जाव अफासे पण्णत्ते ॥ १० ॥ सत्तमेणं भंते! उवासंतरे कइवण्णे ४ पण्णत्ते? तंचेव जाव अफासे पण्णत्ते ॥ ११ ॥ सत्तमेणं भंत्ते तणुवाए कइवण्णे ४ प०? जहा पाणाइवाए णवरं जाव अट्ठफासे पण्णत्ते ॥ एवं जहा

भावार्थ

रस, स्पर्श उन में नहीं हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! उत्पाति वैनयिकी, कार्मिकी व पारिणामिकी इन में कितने वर्ण, गंध रस व स्पर्श पाते हैं? अहो गौतम! इन में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श नहीं पाते हैं क्यों की वे जीव परिणाम है. ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! अवग्रह ईहा. अपाय व धारणा इन में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हैं? अहो गौतम! इन में वर्ण गंधादि नहीं कहे हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कारपराक्रम में कितने वर्णादि कहे हैं? अहो गौतम! इन में वर्ण गंधादि नहीं कहे हैं ॥१०॥ अहो भगवन्! सातवी नरक नीचे सातवा आकाश अंतर में कितने वर्ण गंधादि कहे हैं? अहो गौतम! वर्ण गंधादि नही हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन्! सातवा तनुवात में कितने वर्णादि कहे हैं? अहो गौतम! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श कहे हैं. जैसे सातवा तनुवात का कहा वैसे सातवा

शब्दार्थ

भगवन् ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

सूत्र

कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा-जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ अभिक्खण आहारेइ अभिक्खणं परिणामेइ अभिक्खणं उस्ससइ अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

भावार्थ

कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, निश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा क्वचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है. यह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है. उस से वह जीव

सूत्र

जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता. एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवी-काइयाणं पुच्छा ? ओरालिय तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठ फासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता, जहा नेरइयाणं, जीवं पडुच्च तहेव. ॥ एवं जाव चउरिंदिया णवरं वाउकाइया, ओरालिय वेउव्विय तेयगाइं पडुच्चपंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता सेसं जहा णेरइयाणं, पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया जहा वाउकाइया ॥ ॥ मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! ओरालिय वेउव्विय आहारग तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं जीवं

भावार्थ

चार स्पर्श कहे हैं. और जीव आश्री वर्णादि रहित है. ऐसे ही स्थनित कुमारतक जानना. पृथ्वीकायामें उदारिक तेजस् आश्री पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श और कार्माण आश्री पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श. जीव आश्री अरूपी ऐसे ही अप्, तेउ, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. वायुकायामें उदारिक वैक्रेय व तेजस् आश्री पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श और कार्माण व जीव आश्री नारकी जैसे जानना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय वायुकाया जैसे जानना. मनुष्य में उदारिक, वैक्रेय आहारक व तेजस् आश्री पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श और कार्माण व जीव आश्री नारकी जैसे जानना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक

शब्दार्थ अंग गो०गौतम त०तीन पे०पिता के अंग अ० हड्डि अ०हड्डिकीमिंज के०केश मं०श्मश्रु रो०रोम न०नख॥१७॥ अ० माता पिता का भं०भगवन् स०शरीर के०कितना का०काल सं० रहे गो०गौतम जा० जितना का०काल भ० भवधारणीय स० शरीर अ० नाश न पावे ए० इतना का० काल सं० रहे अ० अब स०समय २ में वो० हीन होता च० चरिम का० काल स०समय में वो० नाश भ० होवे॥ १८ ॥ जी० जीव भं० भगवन्

सूत्र णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयंगा पण्णत्ता तंजहा अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएणं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतियं कालं संचिट्ठइ. अहेणं समए समए वोयसिज्जमाणे चरिम काल समयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेणं

भावार्थ शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं. १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अंग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं. ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं. अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है. जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

सरीरे एयाणि अट्ठफासाणि, कम्मग सरीरे चउफासे; मण जोगेय वइ जोगेय चउफासे, कायजोगे अट्ठफासे । सागारोवओगेय अणागारोवओगेय अवण्णा ॥ १९ ॥ सव्वदव्वाणं भंते ! कइवण्णा ? गोयमा ! अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा एगवण्णा एगगंधा एगरसा दुफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, ॥ एवं सव्वपएसावि, सव्व पज्जवावि ॥

भावार्थ ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान व केवल ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान, आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा व परिग्रह संज्ञा, इन में वर्णादि नहीं पाते हैं ॥ १८ ॥ उदारिक शरीर वैक्रेय शरीर, आहारक शरीर, तेजस् शरीर में पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श ऐसे २० बोल और कार्माण शरीर में पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श यों १६ बोल. मन योग व वचन योग में चार स्पर्श और काय योग में आठ स्पर्श साकारोपयोग व अनाकारोपयोग में वर्णादि नहीं है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! सब द्रव्य में कितने वर्ण यावत् स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! कितनेक द्रव्य में पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श हैं कितनेक द्रव्य में पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श हैं, कितनेक द्रव्य में एक वर्ण, एक गंध, एक रस, व दो स्पर्श हैं और कितनेक द्रव्य में वर्णादि नहीं हैं ऐसे ही सब प्रदेश व पर्यव का जानना. अतीत काल, अनागत

अन्वार्थ

सा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भावार्थ

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे. द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा. धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

शब्दार्थ

रा० राजगृह में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ब० बहुत ज० मनुष्य भं० भगवन् अ० अन्योन्य ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ए० ऐसा प० प्ररूपते हैं रा० राहु चं० चंद्रको गे० ग्रहण करता है से० वह क० कैसे ए० ऐसे भं० भगवन् गो० गौतम जे० जो ब० बहुत मनुष्य अ० अन्योन्य जा० यावत् मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् प० प्ररूपताहूं रा० राहु दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखी व० प्रधान व० वस्त्रधारी म० माला

सूत्र

रायगिहे जाव एवं वयासी बहुजणणं भंते ! अण्णमण्णस्स एव माइक्खइ जाव एवं परूवेइ एवं खलु राहू चंदं गेण्हइ एवं २ से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जंणंसे बहुजणे अण्णमण्णस्स जाव मिच्छं ते एव माहंसु, अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि-एवं खलु राहू देवे महिड्डीए जाव महेसक्खे वरवत्थधरे

भावार्थ

पांचवे उद्देशे के अंत में जीव कर्म से गति परिणाम को परिणमता है. उक्त जीवों का कर्म संयोग चंद्र व राहू कोभी होता है इस से आगे उद्देशे में चंद्र व राहू का कथन करते हैं. राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! बहुत मनुष्यों परस्पर ऐसा वार्तालाप करते हैं कि राहू चंद्रमा को ग्रहण करता है तो यह कथन किस तरह है ? अहो गौतम ! बहुत मनुष्यों जो ऐसा कहते हैं कि राहू चंद्रमा को ग्रहण करता है

शब्दार्थ — कैसे गो० गौतम स० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव-धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

सूत्र — वजेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धाम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए, मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ — कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव धर्मिष्ट स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया. फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

पदार्थ

है पी० पीला रा० राहु का विमान हा० हालिद्र जैसा अ० है सु० शुक्ल रा० राहु का विमान भा०भस्म राशि जैसा प०ग्रूपा॥२॥ ज० जब रा०राहु आ० आते ग०जाते वि०विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते चं० चंद्र लेश्याको पु० पूर्व से आ० आवर्त कर प० पश्चिम में वी० जावे त०तब पु० पूर्व में चं० चंद्र उ० देखावे प० पश्चिम में रा० राहु ज० जब रा० राहु आ० आते ग० जाते वि० विकुर्वणा करते प० परि-

सूत्र

पण्णत्ते ॥ अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते ॥ अत्थि सुक्किलए राहु विमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते ॥ २ ॥ जदाणं राहू आगच्छमाणेवा, गच्छमाणेवा, विउव्वमाणेवा, परियारेमाणेवा, चंदलेस्सं पुरच्छिमेणं आवरेत्ताणं पच्चच्छिमेणं वीईवयाति, तदाणं पुरच्छिमेणं चंदं उवदंसेति पच्चच्छिमेणं राहू ॥ जदाणं

भावार्थ

वाला ४ पीत वर्णवाला और ५ शुक्ल वर्णवाला. जो कृष्ण वर्णवाला विमान है वह दीपक का काजल जैसी कान्ति वाला है. जो विमान नील वर्णवाला है वह कच्चे तुम्बे की कान्ति जैसा नीला है जो रक्त वर्ण वाला है वह मजीठ वर्ण जैसा है, जो पीला विमान वह हलदी समान है और जो विमान शुक्ल वर्णवाला है वह भस्म के ढग समान वर्ण वाला है ॥ २ ॥ जब राहू आता हुवा व जाता हुवा [स्वाभाविक गति] वैक्रिय करता हुवा या परिचारणा करता हुवा [अस्वाभाविक गति] चंद्र की कान्ति को पूर्व में आवरणकर पश्चिम में जाता है तब चंद्रपूर्व में दीखता है और पश्चिम में राहू दीखता है और जब आते, जाते,

शब्दार्थ — फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० वैठे तु० सोवें मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवे जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिर्च्छा आ०

सूत्र — अंबखुजएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ — जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान वैठा रहता है, खडा होता है, वैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

पदार्थ

रा० राहु आ० आते ग० जाते वि० विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते चं० चंद्र लेश्या को आ० आवरण करता चि० रहे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु चं० चंद्र को गे० ग्रहण करता है ज० जब रा० राहु आ० आते चं० चंद्र लेश्या आ० आवर्त कर पा० पास से वी० जावे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं चं० चंद्रने रा० राहु की कु० कुक्षी भि० भेदी ज० जब रा० राहु आ० आते चं० चंद्र लेश्या को आ० आवर्तकर प० पीछा फीरे त० तब म०

सूत्र

एवं चेव जाव तदाणं उत्तर पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति दाहिण पुरच्छिमेणं राहू ॥ जदाणं राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा चंदलेस्सं आवरे माणे २ चिट्ठइ, तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति एवं खलु राहू चंदं गिण्हइ ॥ एवं जदाणं राहू आगच्छमाणेवा ४ चंदलेस्सं आवरेत्ताणं पासेणं वीईवयइ तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिणाए ॥ एवं जदाणं

भावार्थ

करते व परिचारणा करते जब राहू चंद्र की कांति को ढकता है तब मनुष्य लोक में मनुष्यों बोलते हैं कि राहू चंद्र को ग्रहण करता है. जब राहू जाते, आते, वैक्रेय करते, परिचारणा करते चंद्रकी कान्ति का आवरण कर बाजु से जाता है तब मनुष्य लोक में मनुष्य कहते हैं कि चंद्र राहू की कुक्षि में गया. ऐसे ही राहू जाते, आते, वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्र की कान्ति को ढक कर पीछा जाता है तब मनुष्य

शब्दार्थ फल जैसे अ० होवे चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवे जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिच्छी आ०

सूत्र अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

पदार्थ

प्रकृपे धु० ध्रुवराहु प० पर्वराहु त० तहां जे० जो धु० ध्रुवराहु व० कृष्ण प० पक्ष के प० प्रतिपदा प० पन्नरवा भाग से प० पन्नरवा भाग को चं० चंद्रलेश्या को आ० आवरणकर चि० रहे तं० वह ज० जैसे प०प्रथमा में प०प्रथम भाग त्रि०दूसरा में वि०दूसरा भाग जा०यावत् प० पन्नरवा में प०पन्नरवा भाग च० चरम समय में चं० चंद्र र० आच्छादित भ० होवे अ० अवशेष म० समय चं० चंद्र र० आच्छादित वि० खुला भ० होवे ता० तैसे ही सु० शुक्रपक्ष में उ० देखाता चि० रहे प० प्रथमा में प० प्रथम भाग जा०

सूत्र

जं से धुवराहू सेणं बहुलस्स पक्खस्स पाडिवए पण्णरसति भागेणं पण्णरसभागं चंदलेस्सं आवरेमाणे २ चिट्ठइ, तंजहा-पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं, जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं. चरमसमए चंदे रत्ते भवइ अवसेसे समए चंदे रत्तेवा

भावार्थ

रहता है. अब जो ध्रुव राहू है वह कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से पन्नरह * भाग का एक भाग ढकता हुवा रहता है. प्रथम तीथि में प्रथम भाग यावत् पन्नरहवी तिथि में पन्नरहवा भाग. चरम समय में चंद्र रक्त रहता है और शेष समय में रक्त विरक्त दोनों रहता है, अर्थात् आच्छादित अनाच्छादित रहता है. वैसेही शुक्र पक्ष में दीखता हुवा प्रथम तिथि में एक भाग यावत् पंदरवी तिथि में पन्नरहवा भाग दीखता है. चरम

* अन्य स्थान चंद्र मंडल के सोलह विभाग किये है और सोलहवा विभाग सदैव खुला रहता है. परंतु एक भाग का अल्पपना से यहां उस की विवक्षा नहीं करते पन्नरह भाग ग्रहण किये हैं.

शब्दार्थ अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुके प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

सूत्र अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वेशुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × × +

मनोहर दे० देवी कं० मनोहर आ० आसन स० सयन खं० स्तंभ भं० भंडपात्र उ० उपकरण अ० आप चं० चंद्र जो० ज्योतिषी राजा सो० सौम्य कं० मनोहर सु० सुभग पि० प्रियदर्शन सु० सुरूप से० वह ते० इसलिये जा० यावत् स० शशी ॥ ६ ॥ भं० वह कें० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है सू० सूर्य आ० आदित्य गो० गौतम स० समय आ० आवलिका जा० यावत् उ० उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी से० वह ते० इसलिये गो० गौतम आ० आदित्य ॥ ७ ॥ चं० चंद्र भं० भगवन् जो० ज्योतिषी

सूत्र

देवीओ, कंताइं आसण सयण खंभ भंडमत्तोवगरणाइं अप्पणा वियणं चंदे जोइ-सिंदे जोइसिराया सोमे कंते सुभगे पियदंसणे सुरूवे से तेणट्ठेणं जाव ससी ॥ ६ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-सूरे आइच्चे सूरे २ ? गोयमा ! सूरादियाणं समयाइवा, आवलियाइवा जाव उस्सप्पिणीइवा अवसप्पिणीइवा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव आइच्चे ॥ ७ ॥ चंदस्सणं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसिरण्णो कइ अग्गमहिसीओ

भावार्थ

विमान है, मनोहर देव, मनोहर देवियों, मनोहर आसन, शयन, स्तंभ, भंड, पात्र व उपकरण है और स्वयंमेव ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा सोम, कांत, सुभग, प्रिय दर्शनीय व सुरूप है इस से चंद्र को शशी कहा है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सूर्य को आदित्य क्यों कहा ? अहो गौतम ! सूर्यआदित्य से समय, आवलिका, यावत् उत्सर्पिणी अवसर्पिणी है इस से अहो गौतम ! सूर्य आदित्य कहा गया है ॥७॥

शब्दार्थ ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करक ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य कि० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणु-देवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ; तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध करे नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

शब्दार्थ

निर्वाणपामे स० सर्व दुःख का अं० अंत करे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० केसे भं० भगवन् जा० यावत् अंत न०नहीं क० करे गो० गौतम अ० असंवृत अनगार आ० आयुष्य व० वर्जकर स० सात कर्म प्रकृति सि० शिथिल बं० बंधन ब० बंधिहुइ को ध० निकाचित बं० बंधनसे ब० बद्ध प० करे ह० ह्रस्वकाल की ठि० स्थिति को दी० दीर्घकाल की ठि० स्थिति प० करे मं० मंद अनुभाग को ति० तीव्र अनुभाग प० करे अ० अल्प प्रदेश को ब० बहुत प्रदेश प०

सूत्र

पोइणइ समेइ ॥ से केणट्ठेणं भंते जाव अंतं न करेति ? गोयमा ! असंवुडे अण-
गारे आउय वज्जाओ सत्तकम्म [1]पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणिय बंधण
बद्धाओ पकरेइ; हस्सकालट्ठितीयाओ दीहकालट्ठितीयाओ पकरेइ; मंदाणुभावाओ
तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्प पदेसग्गाओ बहुप्पदेसग्गाओ पकरेइ, आउयंचणं कम्मं

भावार्थ

व सब दुःखों का अंत करे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् ऐसा नहीं होता है. पुनः गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! किस कारणसे असंवृत अणगार सिद्ध नहीं, बुद्ध नहीं यावत् सब दुःख का अंतकरे नहीं? अहो गौतम ! असंवृत अणगार आयुष्य कर्म छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का शिथिल बंधन हुवा होवे तो उन का निकाचित बंध करता है, इस काल की स्थिति वाले

१ आयुष्य कर्मका बंध भव आश्रित एकही वक्त होता है.

शब्दार्थ ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणु-देवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

शब्दार्थ

विदेश जावे त० तहां से ल० अर्थ प्राप्त कर क० कार्य कर अ० विघ्न रहित णि० अपना गि० गृह को ह० शीघ्र आ० आया ण्हा० स्नान किया क० बलीकर्म कीया क० तिलमसादि किये स० सर्वालंकार वि० विभूषित म० मनोज्ञ था० स्थालीपाक सु० शुद्ध अ० अठारह वं० प्रकार का भो० भोजन भु० भोगवते तं० उस ता० तैसे वा० गृह में व० वर्णन युक्त म० महावल जा० यावत् स० सयन उ० उपचार क० युक्त ता० तैसी भा० भार्या से सिं० श्रृंगार आ० गृह चा० मनोहर जा० यावत् क० कलावन्त अ० अनुरक्त अ०

सूत्र

कयबलिकम्मे कयकोउयमंगल पायाच्छित्ते सव्वालंकार विभूसिए, मणुण्णं थालीपाक सिद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्तेसमाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि वण्णओ-महव्वले जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसयाए भारियाए सिंगारागार चारुवेसाए जाव कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धिं इट्ठे सद्दे फरिसे जाव पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥ तासेणं गोयमा ! पुरिसे

भावार्थ

अल्प समय में विवाह करके धनप्राप्ति के लिये सोलह वर्ष पर्यंत परदेश गया. वहां पर इच्छित द्रव्य तथा सामग्री प्राप्त कर पुनः अपने गृह पीछा आया. स्नान किया, चंदन प्रमुखादिक का विलेपन किया, कांगले किये, तिलमसादिक किये, सर्वालंकार से विभूषित बना. और उत्तम भाजन में पकाये हुवे अठारह प्रकार के व्यंजनादि युक्त भोजन करके महाबल के भुवन गृह समान भुवन में शृंगार के गृह समान मनो-

शब्दार्थ

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अं० अंतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह ते० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ०उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा०बाल पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

सूत्र

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

भावार्थ

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही. इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

पदार्थ — अनंत गुणा व० श्रेष्ठ का०काम भाग अ० असुरेन्द्र व०वेजकर भ०भवनवासी दे० देवका का०काम भोग से अ० असुर कुमार दे० देवका अ० अनंत गुणा वि० श्रेष्ठ काम भोग अ० असुर कुमार दे० देव का का० काम भोग से ग० ग्रह ग० गण ण० नक्षत्र ता० तारारूप जो० ज्योतिषी का अ० अनंतगुणा वि० श्रेष्ठ का० काम भोग ग० ग्रह ग० गण ण० नक्षत्र जा० यावत् का० काम भोग से चं० चंद्र सू० सूर्य जो० ज्योतिषी जो० ज्योतिषी राजा का अ० अनंत गणा वि० श्रेष्ठ काम भोग चं० चंद्र सू० सूर्य गो० गौतम

सूत्र — गहगणणक्खत्त ताराखाणं जोइसियाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा गहगणणक्खत्तताराखाणं जोइसियाण कामभोगेहिंतो चंदिम सूरियाणं जोइसियाणं जोइसिरायाणं एत्तो अणंतगुण विसिट्ठतराचेव कामभोगा, चंदिम सूरियाणं गोयमा ! जोइसिंदा जोइसिरायाणो एरिसए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ? भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव विहरइ ॥

भावार्थ — वाणव्यंतर के कामभोगों अनंतगुणे विशिष्टतर होते हैं. और वाणव्यंतर के कामभोगों से असुरेन्द्र छोडकर अन्य भवनवासी देवों के कामभोग श्रेष्ठ कहे हैं. असुरेन्द्र छोडकर अन्य सब भुवनपति के कामभोगों से असुरेन्द्र के कामभोग अनंतगुने श्रेष्ठ हैं असुर कुमार के कामभोग से ग्रह, नक्षत्र तारा रूप ज्योतिषियों के कामभोग अनंतगुने श्रेष्ठ हैं और ग्रह नक्षत्र व तारा रूप ज्योतिषियों के कामभोगों से ज्योतिषीके

शब्दार्थ द्रह उ० पानी द० द्रव्य व० वलय णू० गुप्तस्थान ग० गहन वि० विषम प० पर्वत प० पर्वत वि० विषम स्थान व० वन व० वनविषम स्थान मि० मृगवृत्ति वाला मि० मृगसंकल्प वाला मि० मृगकेवध का अध्यवसायी मि० मृग व० वधकरने को गं० गया हुवा मि० मृग त्ति० ऐसा का० करके अ० अन्य कोई मि० मृग व० मारने को कू० कूटपाश उ० बनावे त० तब भं० भगवन् से० उस पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया च० चारक्रिया पं० पांचक्रिया से० वह के० कैसे भं०

सूत्र वा दहंसिवा, उदगंसिवा, दवियंसिवा, वलयंसिवा, णूमंसिवा, गहणंसिवा, गहण विदुग्गंसिवा, पव्वयंसिवा, पव्वय विदुग्गंसिवा, वणंसिवा, वणविदुग्गंसिवा, मियवित्तीए मियसंकप्पे, मियपणिहाणे, मियवहाए गंताए एमिएत्ति काओ, अण्णयरस्सामियवहाए, कूडपासं उद्दाइ। तओणं भंते! से पुरिसे कइकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए,

भावार्थ नारकी, तिर्यंच व मनुष्य का आयुष्य बांधे नहीं परंतु देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ आयुष्य बंध के कारन भूत क्रियाओं हैं इसलिये क्रिया के संबंध में प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन्! कच्छ, द्रह, उदक, द्रव्य, वलय, नूम, गहन, गहनविदुर्ग, पर्वत, पर्वत विदुर्ग, वन; व वनविदुर्ग में मृग की वृत्तिवाला, मृग के वध का अध्यवसायवाला, मृग को मारने के लिये एकाग्र चित्त करनेवाला

१ नदी का पानी व वृक्षादि से घेराया हुवा भूमिभाग २ तडागादि में कुंड ३ अल्पजल ४ तृणादिसमुदाय ५ वर्तुलाकार नदी के जल की कुटिलगति वाला प्रदेश ६ गुफाआदिगुप्त स्थान.

शब्दार्थ

अनंत गुणा व० श्रेष्ठ का०काम भाग अ० असुरेन्द्र व०वर्जकर भ०भवनवासी दे० देवका का०काम भोग से अ० असुर कुमार दे० देवका अ० अनंत गुणा वि० श्रेष्ठ काम भोग अ० असुर कुमार दे० देव का का० काम भोग से ग० ग्रह ग० गण न० नक्षत्र ता० तारारूप जो० ज्योतिषी का अ० अनंतगुणा वि० श्रेष्ठ का० काम भोग ग० ग्रह ग० गण न० नक्षत्र जा० यावत् का० काम भोग से चं० चंद्र सू० सूर्य जो० ज्योतिषी जो० ज्योतिषी राजा का अ० अनंत गणा वि० श्रेष्ठ काम भोग चं० चंद्र सू० सूर्य गो० गौतम

सूत्र

गहगणणक्खत्त ताराख्वाणं जोइसियाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा गहगणणक्खत्तताराख्वाणं जोइसियाण कामभोगेहिंतो चंदिम सूरियाणं जोइसियाणं जोइसिरायाणं एत्तो अणंतगुण विसिट्ठतराचेव कामभोगा, चंदिम सूरियाणं गोयमा ! जोइसिंदा जोइसिरायाणो एरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ? भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव विहरइ ॥

भावार्थ

वाणव्यंतर के कामभोगों अनंतगुणे विशिष्टतर होते हैं. और वाणव्यंतर के कामभोगों से असुरेन्द्र छोडकर अन्य भवनवासी देवों के कामभोग श्रेष्ठ कहे हैं. असुरेन्द्र छोडकर अन्य सब भुवनपति के कामभोगों से असुरेन्द्र के कामभोग अनंतगुने श्रेष्ठ हैं असुर कुमार के कामभोग से ग्रह, नक्षत्र तारा रूप ज्योतिषियों के कामभोग अनंतगुने श्रेष्ठ हैं और ग्रह नक्षत्र व तारा रूप ज्योतिषियों के कामभोगों से ज्योतिषीके

शब्दार्थ

मारने से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरण की प० प्रद्वेपिकी प० परितापनिकी च० चार कि० क्रिया पु० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से बं० बंधन करने से मा० मारने से ता० वहांलग से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये जा० यावत पं० पांच कि० क्रिया ॥ ४ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत व० वन वि० विपम त० तृण ऊ० ऊंचा करके अ० अग्निकाय

सूत्र

से पुरिसे काइयाए अहिगरणयाए, पाओसियाए, परियावणियाए, चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, मारणयाएवि तावंचणंसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाय किरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेणं जाव पंचकिरिए ॥ ४ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा, जाव वणाविदुग्गंसिवा, तणाइं ऊसविय २ अ-

भावार्थ

जितने काल पर्यंत कूटपाश बनाने का व मृग बांधने का भाव है परंतु मारनेका भाव नहीं है उस को उतने कालतक चार क्रिया लगती हैं. उक्त तीनों में उस मृग को परिताप दुःख दिया सो परितापनिकी क्रिया वढी. जिस को जितने कालतक कूटपाश बनाने का, बांधने का व मारने का भाव है उस को उतने कालतक पांच क्रिया ओं लगती हैं. कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेपिकी, परितापनिकी व प्राणातिपातिकी. इसी कारन से अहो गौतम ! उक्त पुरुष को क्वचित् तीन, क्वचित् चार व क्वचित् पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ एं०ऐसे उ०ऊर्ध्व अ०अधो अ०असंख्यात जो०योजन को०क्रोडाक्रोडी आ०लंबा वि०चौडा॥१॥सरलशब्दार्थ

सूत्र उड्ढंवि, अहे असंखेज्जाओ जोअण कोडा कोडीओ आयाम विक्खंभेणं ॥ १ ॥ एयंसिणं भंते ! ए महालयंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जत्थणं अयं जीवे न जाएवा न मएवावि ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ-एयंसिणं महालयंसि लोगंसि णत्थि केइ परमाणु पोग्गलमेत्तेवि पदेसे जत्थणं एयं जीवे ण जाएवा ण मएवावि ? गोयमा ! से जहा णामए केइ पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा, सेणं तत्थ जहण्णेणं एगंवा दोवा तिण्णिवा,

भावार्थ गौतम ! यह लोक बहुत बडा कहा बहुत पदार्थ का स्थान कहा. पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर ऊर्ध्व व अधो में असंख्यात योजन का लम्बाचौडा लोक कहा. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इतना बडा लोक में एक परमाणु मात्रभी कोई प्रदेश है कि जहां यह जीव न जन्मा होवे और न मरा होवे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् किस कारन से ऐसा कहा गया है कि इतना बडा लोक में ऐसा कोइभी परमाणु जितना प्रदेश नहीं हैं कि जहां यह जीव जन्मा व मरा न होवे ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष सैंकडो अजा (बकरियों) के लिये एक अजाव्रज (बाडा) बनावे. उस में एक दो तीन

शब्दार्थ पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ॥ ५ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत् व० वन वि० विषम मि० मृगवृत्ति वाला मि० मृगसंकल्प वाला मि० मृग मारने का अध्यवसाय वाला मि० मृगवध केलिये गं० गया हुवा मि० मृग ति० ऐसे का० करके अ० किसी एक मि० मृग का व० वधकेलिये उ० बाण नि० निकाले त० तब भं० भगवन् क०

सूत्र उस्सवणयाएवि, निसिरणयाएवि, दहणयाएवि, तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! ॥ ५ ॥ पुरिसेणं कच्छंसिवा जाव वणविदुग्गंसिवा मियवित्तीए मियसंकप्पे, मिय पणिहाणे, मियवहाए गंताए, एमिए-त्तिकाउं अन्नयरस्स मियस्स वहाए उसुं निसिरइ. ततोणं भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सियचउकिरिए, सियपंचकिरिए । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा !

भावार्थ इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहागया है कि उक्त पुरुष को कदाचित् तीन, चार, व पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! कच्छ यावत् वनदुर्ग में मृगकी वृत्तिवाला, मृगवध का संकल्पवाला, मृग-वध का चिन्तवन करनेवाला, यह मृग है ऐसा कहकर मृग मारने के लिये निकलाहुवा किसी पुरुषने किसी एक मृग को मारने के लिये बाण छोडा. उस समय अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं

सूत्र

एयंसि ए महालयंसि लोगस्स सासयं भावं, संसारस्स अणादिभावं, जीवस्सय णिच्च-भावं, कम्म वहुत्तं जम्म.ण मरण बाहुलंच पडुच्च णत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जत्थणं अयंजीवे ण जाएवा ण मएवावि से तेणट्ठेणं तंचेव जाव ण मएवावि॥२॥ कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जहा पढमसए पंचमोद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव अणुत्तरविमाणेत्ति जाव अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे ॥ ३ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावाससयसहस्सेसु एग-मेगंसि णिरयावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए णरगत्ताए णेरइ-

भावार्थ

हुवे होवे. क्योंकी महालोक शाश्वत अनादि, नित्य है वैसे ही संसारी जीव भी अनादि से कर्म की बाहुल्यता से जन्म मरण कर रहे हैं. अहो गौतम! इसी कारन से ऐसा कहा गया है कि इतना बडा लोक में एक परमाणु जितना भी प्रदेश ऐसा नहीं है कि जहां जीवने जन्म मरण न किया होवे ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वियों कितनी कही ? अहो गौतम ! जैसे प्रथम शतक के पांचवे उद्देशे में आवास तक कहा वैसे सब अनुत्तर विमान में अपराजित व सर्वार्थसिद्ध तक कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से एक २ नरकावास में पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पतिकाया-

दार्थ कानतक उ० वाण को आ० खींचकर चि० खडारहे अ० अन्य कोई पु० पुरुष म० पीछेसे आ० आकर स० अपने पा० हस्त से अ० आसिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे से० वह उ० वाण ता० उस पु० पूर्वाकर्षण से तं० उस मि० मृगको विं० विंधे से० वह भं० भगवन् पु० पुरुष किं मि० मृग वैरसे पु० स्पर्शा पु० पुरुष वे० वैरसे पु० स्पर्शा गो० गौतम जे० जो मि० मृगको मा० हने से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शा जे० जो पु० पुरुष को मा० हने से० वह पु० पुरुष वैरसे पु० स्पर्शा से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र आयय कण्णाययं उसुं आयामेत्ता चिट्ठिज्जा. अन्नयरे पुरिसे मग्गओ आगम्म सय-पाणिणा असिणा सीसं छिंदेज्जा, सेय उसू ताएचेव पव्वायामणयाए तंमियं विंधेज्जा। सेणं भंते ! पुरिसे किं मियवेरेण य पुट्ठे पुरिसवेरेणं पुट्ठे ? गोयमा ! जेमियं मारेइ, से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे। सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ

भावार्थ अहो भगवन् ! कच्छ यावत् वनदुर्ग में मृग का वध के लिये कोई पुरुष धनुष्य में वाण रखकर कान पर्यंत प्रत्यंचा खींच कर खडारहे; उतने में पीछे से अन्य कोई पुरुष आकर अपने हस्त में खड्गलेकर उस मृग वधक का मस्तक छेदे. उस समय उस मृग को उद्देशकर खींचा हुवा वाण उस पुरुष के हस्त में से छुटकर उसी मृग को भेदे. अब अहो भगवन् ! उस मस्तक छेदनेवाला पुरुष को क्या मृग का वैर हुआ अथवा पुरुष का वैर हुआ ? अहो गौतम ! जिसने पुरुष को मारा उस को पुरुष का वैर हुवा और जिसने

सूत्र

मेगांसि असुरकुमारावासांसि पुढवीकाइयत्ताए जाव घणस्सइ काइयत्ताए देवत्ताए देविस्ताए आसणसयण भंडमत्तोवगरणत्ताए उववण्णपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो ॥ सव्वजीवावीणं भंते ! एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारेसु, णाणत्तं आवासेसु आवासा पुव्वभणिया ॥ ७ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु पुढवी-काइयावास सयसहस्सेसु एगमेगांसि पुढवीकाइयावासांसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववण्ण पुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव क्खुत्तो ॥ एवं सव्व जीवावि ॥ एवं जाव वणस्सइ-काइएसु ॥ ८ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु बेइंदियावास सयसहस्सेसु एगमे-

भावार्थ

बडे महा नरकावास का जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! चौसठ लाख असुरकुमार के आवास में से एक २ आवास में पृथ्वीकाय पने यावत् वनस्पतिकाय पने, देवपने, देवीपने, आसन, शयन, भंड, पात्र उपकरणपने क्या पहिले यह जीव उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न हुवा. सब जीवों आश्री वैसे ही जानना जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्थनित कुमारोंतक का अपने आवास अनुसार कहना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव पृथ्वीकाया के असंख्यात लाख में से एक २ आवास में क्या पृथ्वी-कायापने यावत् वनस्पतिकायापने पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न

शब्दार्थ: अंदर में छ० छमास की म० मरे का० कायिकी जा० यावत् पं० पांचक्रिया पु० स्पर्शे बा० बाहिर छ० छमास की म० मरे च० चारक्रिया पु० स्पर्शे ॥ ७ ॥ पुं० पुरुष भं० भगवन् पु० पुरुष को स० भाला से सं० संधे स० स्वतः के पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे त० तब से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जब से० वह पु० पुरुष तं० उस पु० पुरुष को स०

मूल: काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे : बाहिं छण्हं मासाणं मरइ, काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ७ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसं सत्तीए समभिसंधेज्जा सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदेज्जा । तओणं भंते ! से पुरिसे कइकि-

भावार्थ: मारनेवाले को पुरुष का वैर लगता है. वह मृग यदि छ मास की अंदर मरजावे तो घातक पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं क्यों की छ मासतक मृग को प्रहार हेतुक मरण होता है. छ मास पीछे यदि वह मृग मरजावे तो प्राणातिपातिकी क्रिया छोडकर अन्य चार क्रियाओं लगती हैं * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष शक्ति (भाला) से, अथवा अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से किसी पुरुष का शिरच्छेदन करे तब

* यहांपर व्यवहारकी अपेक्षासे प्राणातिपातिकी क्रिया मात्र व्यपदेश बतानेको कहाहै. अन्यथा जब प्रहारहेतुक मरण होवे उस समय उस वधकको कायिकी यावत् प्राणातिपातिकी पांच क्रिया लगती हैं.

सूत्र

वेमाणियावासंसि, पुढवीकाइया सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो णो चेवणं देवित्ताए, एवं सव्वजीवावि ॥ एवं जाव आणयपाणएसु एवं आरणच्चुएसुवि अयण्णं भंते! जीवे तिसुवि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जगविमाणावाससएसु एवंचेव ॥१०॥ अयण्णं भंते! जीवे पंचसु अणुत्तर विमाणेसु एगमेगांसि अणुत्तर विमाणंसि पुढवि तहेव जाव अणंतखुत्तो, णो चेवणं देवत्ताए देवित्ताए एवं सव्वजीवावि ॥ ११ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पित्तित्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जात्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए, उववण्ण पुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंत खुत्तो

भावार्थ

गौतम ! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न हुवा. किन्तु इस में देवियोंकी उत्पत्ति नहीं होने से देवी ग्रहण नहीं की है. ऐसे ही सब जीवोंका जानना. जैसे सनत्कुमार का कहा वैसे ही माहेन्द्र यावत् आरण अच्युत तक का जानना. ऐसे ही नवग्रैवेयक के ३१८ विमान का जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! यह जीव पांच अनुत्तर विमान के एक २ अनुत्तर विमान में पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पतिकायापने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न हुवा. परंतु देवपने या देवीपने उत्पन्न नहीं हुवा. ऐसे ही सब जीव आश्री जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव सब जीवों की माता, पिता,

अंदर में छ० छमास की म० मरे का० कायिकी जा० यावत् पं० पांचक्रिया पु० स्पर्शे बा० बाहिर छ० छमास की म० मरे च० चारक्रिया पु० स्पर्शे ॥ ७ ॥ पुं० पुरुष भं० भगवन् पु० पुरुष को स० भाला से सं० बांधे स० स्वतः के पा० हस्त में अ० असिमे सी० शीर्ष छिं० छेदे त० तब से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जब से० वह पु० पुरुष तं० उस पु० पुरुष को स०

काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे : बाहिं छण्हं मासाणं मरइ, काइयाए जाव पा- रियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ७ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसं सत्तीए समभि- संधेज्जा सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदेज्जा । तओणं भंते ! से पुरिसे कइकि-

मारनेवाले को पुरुष का वैर लगता है. वह मृग यदि छ मास की अंदर मरजावे तो घातक पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं क्यों की छ मासतक मृग को प्रहार हेतुक मरण होता है. छ मास पीछे यदि वह मृग मरजावे तो प्राणातिपातिकी क्रिया छोडकर अन्य चार क्रियाओं लगती हैं * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष शक्ति भाले से, अथवा अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से किसी पुरुष का शिरच्छेदन करे तब

* यहांपर व्यवहारकी अपेक्षासे प्राणातिपातिकी क्रिया मात्र व्यपदेश बतानेको कहा है. अन्यथा जब प्रहारहेतुक मरण होवे उस समय उस वधकको कायिकी यावत् प्राणातिपातिकी पांच क्रिया लगती हैं.

सूत्र

भावार्थ

पदार्थ

ते० उस काल ते० उस समय में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखी अ० अनंतर च० चवकर वि० विशरीरी ना० नाग में उ० उत्पन्न होवे हं० हां

सूत्र

खुत्तो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ जाव विहरइ ॥ दुवालसमसयस्सय सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ७ ॥ ० ० ०

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी-देवेणं भंते ! महिड्डीए जाव महेसक्खे

भावार्थ

क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार यावत् अनंतवार पहिले उत्पन्न हुवा. ऐसे ही सब जीवों का जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का सातवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ १२ ॥ ७ ॥ ० ० ०

सातवे उद्देशे में जीव की उत्पत्ति कही आठवे उद्देशे में उस का ही अन्य प्रकार से स्वरूप कहते हैं. उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा ऐश्वर्यवंत देव अपना शरीर छोडकर अंतर रहित दो शरीरवाला + नागपने क्या उत्पन्न होता है ? हां गौतम ! उत्पन्न होता है. वह नाग क्या अर्चनीय,

+ दो शरीर दो भव आश्री लिया गया है एक भव नाग का व एक भव वहां से चवकर मनुष्य होवे सो. नाग का अर्थ हाथी व सर्प दोनों होते हैं.

पदार्थ

लो० लोकस्थिति गो० गौतम अ० आठ प्रकार की लो० लोकस्थिति आ० आकाश प० प्रतिष्ठित वा० वायु वा० वायु प० प्रतिष्ठित पु० पृथ्वी पु० पृथ्वी प० प्रतिष्ठित त० त्रस था० स्थावर प्राणी अ० अजीव जी० जीव प्रतिष्ठित जी० जीव क० कर्म प० प्रतिष्ठित अ० अजीव जी० जीव सं० संग्रहित जी० जीव क० कर्म सं० संग्रहित ॥ १६ ॥ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० आठ प्रकार की जा० यावत् जी० जीव क० कर्म सं० संग्रहित गो० गौतम से० वह ज० जैसे के० कोइ पुरुष

सूत्र

वाय पइट्ठिइए उदही, उदहि पइट्ठिया पुढवी, पुढवी पइट्ठिया तसा, थावरा पाणा, अजीवा जीव पइट्ठिया, जीवा कम्मपइट्ठिया, अजीवा जीव संगहिया, जीवा कम्म संगहिया ॥ १५ ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, अट्ठविहा जाव जीवा कम्म संगहिया ? गोयमा ! सेजहा नामए केइपुरिसे वत्थिमाडोवेइ . २ त्ता उप्पिं सिइं

भावार्थ

धार से जीव है ७ जीवने अजीव ग्रहण किया, मन भाषा के पुद्गलों जीवने ग्रहण किये ८ कर्म संग्रहीत संसारी जीव हैं. उदय में आये हुवे कर्मों के वश से जो प्रवर्तते हैं, जो जिस में रहते हैं, वे उस में प्रतिष्ठित हैं जैसे घटादि में रूप रहने से घटादि प्रतिष्ठित रूप कहाजाता है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! किस कारन से आठ प्रकार की लोक स्थिति कही ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष चमडे की मशक में वायु भरे और फीर उस का उपर का मख बंध कर [illegible] मध्य भाग में

शब्दार्थ

मणि में उ० उत्पन्न होवे ए० ऐसे ज० जैसे ना० नागका ॥ २ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक जा० यावत् वि० विशरीरी रु० वृक्ष में उ० उत्पन्न होवे ए० ऐसे ही ण० विशेष जा० यावत स० सन्निहित पा० प्रातिहार्य ला० सुंवाली करना लो० माफ करना प० पूजा भ० होवे से० शेष तं० तैसे जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ ३ ॥ गो० बडा वानर कु० कुकुटवृषभ मं० मंडुकवृषभ णि० निःशील नि० व्रतरहित णि०

सूत्र

रेसु मणीसु उववज्जेज्जा एवं चेव जहा नागाणं ॥ २ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डीए जाव विसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ? एवं चेव, णवरं इमं णाणत्तं जाव सण्णिहिय पाडिहेरे लाउल्लोइय महइयावि भवेज्जा, सेसं तंचेव जाव अंतं करेज्जा ॥ ३ ॥ अह भंते ! गोणं गुलवसभे कुक्कुडवसभे मंडुक्कवसभे, एएणं णिस्सीला, णिव्वया, णिग्गुणा,

भावार्थ

गौतम ! इस का सब अधिकार नाग जैसे कहना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या महर्द्धिक देव दो शरीरी वृक्ष में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! इस का सब अधिकार नाग जैसे कहना विशेष में उस वृक्ष के नजदिक पूर्व संगति देवता से किया हुवा प्रतिहार्य कर्म से छाना गोबरादि से भूमिका साफकरे खडीचूनादि लगावे और इस से वह वृक्ष पूजनीय होवे यावत् मनुष्य बनकर सब दुःखों का अंतकरे. ॥ ३ ॥ अब नरक गामी का कथन कहते हैं. अहो भगवन् ! सब वानरों में बडा वानर, कुकुट वृषभ, मण्डूक वृषभ ये तीन

पदार्थ — ते० तैसे जा० यावत् जी० जीव क० कर्म संग्रहित से० वह ज० जैसे के० कोइ पुरुष व० मशक को आ० भरे क० कटि से बं०बांधेअ०अगाध म०तल अ०बहुत पु० पुरुषप्रमाण उ०पानी में ओ० प्रवेश करे से० वह णू० निश्चय गो० गौतम से० वह पु० पुरुष त० उस आ० पानी की उ० उपर चि० रहे हं० हां चि० रहे ए० ऐसे अ० आठ प्रकार की लो० लोकस्थिति प० प्ररूपी जा० यावत् जी० जीव क० कर्म संग्रहित ॥ १६ ॥ अ० है भं० भगवन् जी० जीव पो० पुद्गल अ० अन्योन्य व० बंधाये हुवे अ० अन्योन्य

सूत्र — जहावा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ २ त्ता कडीए बंधइ अत्थाह मतारम पोरिसियं उदगंसि ओग्गाहेज्जा ॥ सेणूणं गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ ॥ एवं वा अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, जाव जीवा कम्म संगहिया ॥१६॥ अत्थिणं भंते ! जीवा य पोग्गला य अण्णमण्ण बद्धा, अण्णमण्ण

भावार्थ — करके आगे जावे तो क्या गौतम ! वह पुरुष पानी पर तीरता हुवा रहता है ? गौतम स्वामी कहते हैं कि वह पुरुष पानी पर ही तीरता हुवा रहता है. जैसे वह पानी पर ही तीरता हुवा रहता है वैसे ही अहो गौतम ! आकाश प्रतिष्ठित वायु वगैरह आठ प्रकार की लोक स्थिति कही है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जीव व पुद्गल परस्पर क्या बंधे हुवे हैं ! परस्पर एक २ को स्पर्शे हुवे हैं ? परस्पर चिकनाइ से लगे

पदार्थ

॥ ५ ॥ अ० अथ भं० भगवन् ढं० ढंक कं० कंक पि० पीलक मं० मंडूक सि० मोर णि० निःशील से० शेष तं० तैसे जा० यावत् व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १२ ॥ ८ ॥

क० कितने प्रकार के भं० भगवन् दे० देव प० प्ररूपे गो० गौतम पं० पांच प्रकार के दे० देव प० प्ररूपे तं० वह ज० जैसे भ० भविक द्रव्यदेव न० नरदेव ध० धर्मदेव दे० देवादिदेव भा० भावदेव ॥ १ ॥

सूत्र

सेसं तंचेव जाव वत्तव्वं सिया ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ! जाव विहरइ ॥ दुवालसम-सयस्सय अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ८ ॥ + +

कइविहेणं भंते! देवा पण्णत्ता? गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तंजहा भवियदव्वदेवा, नरदेवा, धम्मदेवा, देवाधिदेवा, भावदेवा ॥ १ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ

भावार्थ

भगवन् ! ढंक, कंक, पीलक, मण्डुक, मयूर, शीलादि रहित होने से रत्नप्रभा पृथ्वी में एक सागरोपम की स्थिति से क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? भगवंतने उत्तरदिया कि हां गौतम ! वे नरक में उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे भगवान् गौतम स्वामी विचरने लगे. यह बारहवा शतक का आठवा उद्देशा पूर्ण हुआ. ॥ १२ ॥ ८ ॥ ÷

आठवे उद्देशे में देवों की उत्पत्ति कही. नववे उद्देशे में देवका ही कथन करते हैं. अहो भगवन् ! देव के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम ! देव के पांच भेद कहे हैं. १ भविकद्रव्य देव २ नरदेव ३ धर्मदेव

शब्दार्थ सदा आश्रव स० शतच्छेद ओ० प्रवेशकरे गो० गौतम ना० वह ना० वो० उछलता वो० वीकसता स०मम घ० घडापने चि० रहे हं० हां चि० रहे से० वह ते० ऐसे गो० गौतम अ० है जी० जीव जा० यावत् चि० रहे ॥ १७ ॥ अ० है भं० भगवन् स० सदैव सु० सुक्ष्म सि० अप्काय प० गीरता है हं० हां अ० है से० वह भं० भगवन् किं० क्या उ० ऊर्ध्व प० गीरे अ० अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प० गीरे गो०

सूत्र वोसट्टमाणासभमर घडत्ताए चिट्ठइ! हंता चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं गोयमा!अत्थिणं जीवाय जाव चिट्ठंति ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते सदासमियं सुहुम सिणेहकाये पवडइ ? हंता अत्थि । से भंते ! किंउड्ढे पवडइ, अहेपवडइ, तिरिए पवडइ ? गोयमा उड्ढेवि पवडइ, अहेवि पडवइ, तिरिएवि पवडइ, ॥ १८ ॥ जहा से बादरे आउयाए अण्णमण्ण

भावार्थ भगवन् ! वह नावां पानी भराने से नीचे बैठे. ऐसे ही अहो गौतम ! जीव व पुद्गल परस्पर बंधे हुवे, मीले हुवे, यावत् लोलीभूत बने हुवे हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! सदैव सूक्ष्म पानी पडता है ? हां गौतम ! सदैव सूक्ष्म अप्काय पडती है. अहो भगवन् ! क्या वह उपर पडती है, नीचे पडती है, या तिर्यक पडती है ! अहो गौतम ! ऊर्ध्व लोक में वाटलादि पर्वत पर पडती है, अधो लोक में अधोगामिनी विजय में पडती है और तिर्यक् लोक में भी पडती है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जैसे बादर पानी की वर्षा होने से वह पानी तडागादि में एकत्रित होकर बहुत काल पर्यंत टिकता है वैसे ही क्या सूक्ष्म अप्काय

शब्दार्थ सि० सिझे यावत् अं० अंतकरे से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है पूर्ववत् ॥ ४४ ॥ जी० जीव भं० भगवन् अ० असंयति अ० अविरति अ० अप्रतिहत प० प्रत्याख्यान पा०

सूत्र अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणिय बंधण बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठितीयाओ हस्सकालट्ठितीयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ, आउयंचणं कम्मं न बंधइ, असायावेयणिज्जं च णं कम्मं णो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ. अणादीयंचणं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं वीईवयइ. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं संवुडे अणगारे सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ॥ ४४ ॥ जीवेणं भंतेअसंजए, अविरए, अप्पडिहय

भावार्थ करे ? अहो गोतम ! संवृत्त अणगार आयुष्य छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का निकाचित बंधन किया होवे तो उन को शिथिलकरे, दीर्घ काल की स्थिति वाले कर्मों को ह्रस्व काल की स्थिति वाले बनावे तीव्र रसवाले कर्मों को अल्प रसवाले बनावे, बहुत प्रदेशात्मक कर्मों को अल्प प्रदेशात्मक बनावे, आयुष्य कर्म का बंध करे नहीं, असाता वेदनीय कर्म को वारंवार संचित करे नहीं व अनादि अनंत संसार में परिभ्रमण करे नहीं; इसलिये अहो गौतम! संवृत्त अणगार सिझे यावत् दुःखों का अंतकरे ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! असंयति, अविरति, व प्रत्याख्यान से पापकर्म नहीं तोडने वाला यहां से चवकर परलोक

०दर्थ सदा आश्रव स० शतच्छेद ओ० प्रवेशकरे गो० गौतम मा० वह ना० वो० उछलता वो० वीकसता स० मम घ० घडापने चि० रहे हं० हां चि० रहे से० वह ते० ऐसे गो० गौतम अ० है जी० जीव जा० यावत् चि० रहे ॥ १७ ॥ अ० है भं० भगवन् स० सदैव सु० सुक्ष्म सि० अप्काय प० गीरता है हं० हां अ० है से० वह भं० भगवन् किं० क्या उ० ऊर्ध्व प० गीरे अ० अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प० गीरे गो०

सूत्र वोसट्टमाणासभमर घडत्ताए चिट्ठइ! हंता चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं गोयमा!अत्थिणं जीवाय जाव चिट्ठंति ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते सदासमियं सुहुम सिणेहकाये पवडइ ? हंता अत्थि । से भंते ! किंउड्ढे पवडइ, अहेपवडइ, तिरिए पवडइ ? गोयमा उड्ढेवि पवडइ, अहेवि पडवइ, तिरिएवि पवडइ, ॥ १८ ॥ जहा से बादरे आउयाए अण्णमण्ण

भावार्थ भगवन् ! वह नावां पानी भराने से नीचे बैठे. ऐसे ही अहो गौतम ! जीव व पुद्गल परस्पर बंधे हुवे, मीले हुवे, यावत् लोलीभूत बने हुवे हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! सदैव सूक्ष्म पानी पडता है ? हां गौतम ! सदैव सूक्ष्म अप्काय पडती है. अहो भगवन् ! क्या वह उपर पडती है, नीचे पडती है, या तिर्यक् पडती है ! अहो गौतम ! ऊर्ध्व लोक में वाटआदि पर्वत पर पडती है, अधो लोक में अधोगामिनी विजय में पडती है और तिर्यक् लोक में भी पडती है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जैसे बादर पानी की वर्षा होने से वह पानी तडागादि में एकत्रित होकर बहुत काल पर्यंत टिकता है वैसे ही क्या सूक्ष्म अप्काय

शब्दार्थ द्वीपका अ० अधिपति म० मनुष्येन्द्र से० वह ते० इसलिये जा० यावत् न० नरदेव-से० वह के० कैसे भं० भगवन् ध० धर्मदेव गो० गौतम जे० जो अ० अनगार भ० भगवन्त इ० ईर्यासमितिवाले जा० यावत् गु० गुप्तब्रह्मचारी से० वह ते० इस लिये जा० यावत् ध० धर्मदेव से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है दे० देवाधिदेव गो० गौतम जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं० दर्शन धारक जा० यावत् स० सर्वदर्शी से० वह ते० इसलिये, जा० यावत् दे० देवाधिदेव से० वह

सूत्र नरदेवा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ धम्मदेवा ? धम्मदेवा गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो इरियासमिया जाव गुत्तबंभयारी से तेणट्ठेणं जाव धम्मदेवा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवाधिदेवा ? देवाधिदेवा गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्ण णाणदंसणधरा जाव सव्वदरिसी, से तेणट्ठेणं जाव देवाधिदेवा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-भावदेवा ? भावदेवा गोयमा ! जे इमे, भवणवइ

भावार्थ रत्नों प्रधान चौदह रत्न, नवनिधान समृद्ध भंडार वाला है बत्तीस हजार राजा जिनकी सेवा करते होवे समुद्रकी मेखला पर्यंत के स्वामी, मनुष्य के इन्द्र जो होते हैं वे नरदेव कहाते हैं. अहो भगवन् ! धर्मदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम! जो अनगार ईर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हैं वे धर्मदेव कहाते हैं. अहो भगवन् ! देवाधिदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक यावत् सर्व दर्शी

शब्दार्थ दे० देश से दे० देश उ० उपजे नो० नहीं दे० देशसे स० सर्व ड० उपजे नो० नहीं स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स०सर्व उ०उपजे ज० जैसे ने० नारकी ए० ऐसे जा० यावत् वे०वैमानिक ॥१॥

सूत्र वज्जइ, नोदेसेणं सव्वं उववज्जइ, णोसव्वेणं देसं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ॥ ... जहा नेरइए, एवं जाव वेमाणिए॥ १ ॥नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे

भावार्थ है. अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न होता * हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न होता है ! क्या अपना एक देश से नारकीका सर्वांगपने उत्पन्न होता है ? क्या अपना सर्वांग से नारकी का एक देशपने उत्पन्न होता है ? अथवा क्या अपना सर्वांग से नारकी का सर्वांगपने उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! नारकी में उत्पन्न होता जीव देश से देश नहीं उत्पन्न होता है, देश से सर्व नहीं उत्पन्न होता है, सर्व से देश नहीं उत्पन्न होता है, परंतु सर्व से सर्व उत्पन्न होता है अर्थात् संपूर्ण जीव नारकी के सर्वांगपने उत्पन्न होता है. जैसे नरकका कहा है वैसे ही असुर कुमारादिक से वैमानिक तक के सब दंडक का कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न होता जीव क्या अपना देश से देश को

* यहांपर उत्पन्न होताहुवा कहनेसे उत्पन्नहुवा ऐसाही जानना. क्योंकी नारकीके आयुष्यका उदय होनेसे अन्य तिर्यंचादिकके आयुष्यका अभावहै

शब्दार्थ पृथ्वी का अ० अधिपति म० मनुष्येन्द्र से० वह ते० इसलिये जा० यावत् न० नरदेव-से० वह के० कैसे भं० भगवन् ध० धर्मदेव गो० गौतम जे० जो अ० अनगार भ० भगवन्त इ० ईर्यासमितिवाले जा० यावत् गु० गुप्तब्रह्मचारी से० वह ते० इस लिये जा० यावत् ध० धर्मदेव से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है दे० देवाधिदेव गो० गौतम जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं० दर्शन धारक जा० यावत् स० सर्वदर्शी से० वह ते० इसलिये, जा० यावत् दे० देवाधिदेव से० वह

सूत्र नरदेवा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ धम्मदेवा ? धम्मदेवा गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो इरियासमिया जाव गुत्तबंभयारी से तेणट्ठेणं जाव धम्मदेवा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवाधिदेवा ? देवाधिदेवा गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्ण णाणदंसणधरा जाव सव्वदरिसी, से तेणट्ठेणं जाव देवाधिदेवा से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-भावदेवा ? भावदेवा गोयमा ! जे इमे, भवणवइ

भावार्थ रत्नों मधान चौदह रत्न, नवनिधान समृद्ध भंडार वाला है बत्तीस हजार राजा जिनकी सेवा करते होवे समुद्रकी मेखला पर्यंत के स्वामी, मनुष्य के इन्द्र जो होते हैं वे नरदेव कहाते हैं. अहो भगवन् ! धर्मदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम! जो अनगार ईर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हैं वे धर्मदेव कहाते हैं. अहो भगवन् ! देवाधिदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक यावत् सर्व दर्शी

र्थ एं० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश से दे०देश उ० चवे ज० जैसे उ० उपजने में त० तैसे उ० चवने में दं०दंडक भा०कहना॥३॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश से दे० देश.आ० आहार करे त०

सूत्र

वा देसं आहारेइ, सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ, एवं जाव वेमाणिए ॥ २ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे, किंदेसेणं देसं उव्वट्टइ? जहा उववज्जमाणे, तहेव उ-व्वट्टमाणेवि दंडगो भाणियव्वो ॥ ३ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेणं देसं आहारेइ? तहेव जाव सव्वेणं वा देसं आहारेइ, सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ॥

भावार्थ

दंडक का जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या अपने देश से देशकी उद्वर्तना करे, देशसे सर्व की उद्वर्तना करे, सर्व से देश की उद्वर्तना करे, या सर्व से सर्व की उद्वर्तना करे? अहो गौतम ! जैसे उत्पन्न आश्रित कहा वैसे ही उद्वर्तन आश्रित जानना. इस में सर्व से सर्व उद्वर्तता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या देश से देश पुद्गलों का आहार करे? देश से सर्व पुद्गलों का आहार करे? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आहार करे? अहो गौतम ! सर्वसे देश का आहार करे व सर्व से सर्व का आहार करे, शेष सब पहिले उपजने के समय आहार का कहा वैसे ही यहां कहना. जैसे नरक का उद्वर्तन व आहार का कहा वैसे ही शेष सब

सिद्धवज्जं जाव अपराजिय देवेहिंतोवि उववज्जंति। णरदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइए पुच्छा? गोयमा! णेरइएहिंतो उववज्जंति, णो तिरि णो मणु, देवेहिंतो उववज्जंति॥ जइ णेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभा पुढवि णेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहे सत्तमाए पुढविए णेरइएहिंतोवि उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभा पुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति, णो सक्कर जाव णो अहे सत्तम पुढवि णेरइएहिंतो उववज्जंति। जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! भवणवासि देवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतर एवं सव्व-

भावार्थ

भूमि, अंतरद्वीप व सर्वार्थ सिद्ध में से चवकर भविक द्रव्य देव नहीं होते हैं क्यों की अकर्म भूमि व अंतर द्वीप के मनुष्य देवलोक में उत्पन्न होते हैं और सर्वार्थ सिद्ध वाले मनुष्य में आकर सिद्ध होते हैं. अहो भगवन्! नरदेव कहां से आकर उत्पन्न होते हैं? क्या नरक में से उत्पन्न होते हैं यावत् देवलोक में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक व देव इन दोनों में से नरदेव उत्पन्न होते हैं परंतु मनुष्य तिर्यंच में से आकर उत्पन्न नहीं होते हैं. जब नरक में से नरदेव उत्पन्न होते हैं तो क्या रत्नप्रभा में से यावत् तमतम प्रभा में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! रत्नप्रभा में से उत्पन्न होते हैं परंतु शेष छ नरक में से नहीं

थें ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश से दे०देश उ० चवे ज० जैसे उ० उपजनेमें त० तैसे उ० चवने में दं०दंडक भा०कहना॥३॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश से दे० देश आ० आहार करे त०

सूत्र

वा देसं आहारेइ, सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ, एवं जाव वेमाणिए ॥ २ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे, किं देसेणं देसं उव्वट्टइ? जहा उववज्जमाणे, तहेव उ-व्वट्टमाणेवि दंडगो भाणियव्वो ॥ ३ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेणं देसं आहारेइ? तहेव जाव सव्वेणं वा देसं आहारेइ, सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ॥

भावार्थ

दंडक का जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या अपने देश से देशकी उद्वर्तना करे, देशसे सर्व की उद्वर्तना करे, सर्व से देश की उद्वर्तना करे, या सर्व से सर्व की उद्वर्तना करे? अहो गौतम ! जैसे उत्पन्न आश्रित कहा वैसे ही उद्वर्तन आश्रित जानना. इस में सर्व से सर्व उद्वर्तता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या देश से देश पुद्गलों का आहार करे ? देश से सर्व पुद्गलों का आहार करे ? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आहार करे ? अहो गौतम ! सर्वसे देश का आहार करे व सर्व से सर्व का आहार करे, शेप सब पहिले उपजने के समय आहार का कहा वैसे ही यहां कहना. जैसे नरक का उद्वर्तन व आहार का कहा वैसे ही शेप सब

सूत्र

सव्वेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठ सिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा। भावदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वं ॥ ३ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ णरदेवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं सत्तवाससयाइं उक्कोसेणं चउरासीति पुव्व सयसहस्साइं। धम्मदेवाणं भंते! पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणाइं पुव्वकोडी। देवाहिदेवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइ पुव्व सयसहस्साइं। भावदेवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोव-

भावार्थ

वैमानिक में से उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! भावदेव कहां से उत्पन्न होते हैं? कहो गौतम! जैसे पन्नवणा सूत्र में छठे पद का कहा वैसे कहना. यह तीसरा उत्पत्ति द्वार हुआ ॥ ३ ॥ अहो भगवन् भविक द्रव्य देव की कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की कही. नरदेव की स्थिति जघन्य सातसो वर्ष की उत्कृष्ट चौरासी लक्ष पूर्व की, धर्मदेव की स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्ट देशऊणा क्रोड पूर्व, देवाधिदेव की स्थिति जघन्य बहोत्तर वर्ष उत्कृष्ट चौरासी लक्ष पूर्व. भावदेव की

पदार्थ

यह अ० अभिलाप से उ० उत्पन्न हुवा उ० चवा में ने० जानना ॥ ५ ॥ ने०नारकी भं० भगवन् ने०नरक में उ० उपजता किं० क्या अ० अर्ध से अ० अर्ध उ० उपजे अ० अर्ध से स०सर्व उ० उपजे स० सर्व से अ० अर्ध उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे ज० जैसे प० प्रथम अ० आठ दं० दंडक त० तैसे अ० अर्ध में अ० आठ दं० दंडक भा० कहना ण० विशेष ज० जहां दे० देश से दे० देश उ० उपजे त० तहां अ० अर्ध से अ० अर्ध उ० उपजे भा० कहना ए० ऐसे णा० नानाप्रकार स० सर्व सो० सोलह

सूत्र

आहारइ, एएणं अभिलावेणं उववण्णे उव्वट्टेवि नेयव्वं ॥ ५ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं अद्धेणं अद्धं उववज्जइ, अद्धेणं सव्वं उववज्जइ, सव्वेणं अद्धं उववज्जइ, सव्वेण सव्वं उववज्जइ ? जहापढमिल्लेणं अट्ठदंडगा तहा अद्धेणवि अट्ठ दंडगा भाणियव्वा. णवरं जहिं देसेणं देसं उववज्जइ तहिं अद्धेणं अद्धं उववज्जइ त्ति-

भावार्थ

से सब का आहार करे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नरक में उत्पन्न होता जीव क्या अपना अर्ध से अर्ध नारकीपने उत्पन्न होता है, अर्ध मे सर्व उत्पन्न होता है, सर्व से अर्ध उत्पन्न होता है, सर्व से सर्व उत्पन्न होता है? अहो गौतम ! जैसे पहिले देश के आठ दंडक कहे वैसे ही यहां अर्ध के आठ दंडक जानना. इतनी भिन्नता कि देश के स्थान में यहां पर अर्ध कहना. * ऐसे सब मीलकर सोलह दंडक हुवे ॥ ६ ॥ उत्पन्न

* यहां कोइ प्रश्न करे कि देश व अर्धमें क्या भिन्नता है? देशके थोडे, बहुत ऐसे अनेक भेद होते हैं, और अर्धके दो विभागही होते हैं

सूत्र

विउव्विसुवा विउव्वितिवा, विउव्विस्संतिवा। भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा ॥ ५ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति, किं णेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! णो णेरइएसु उववज्जंति, णो तिरि णोमणु, देवेसु उववज्जंति, ॥ जइ देवेसु उववज्जंति सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति। णरदेवाणं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा? गोयमा ! णेरइएसु उववज्जंति, णोतिरि णोमणु णोदेवेसु उववज्जंति ॥ जइ णेरइएसु उववज्जंति सत्तसुवि पुढवीसु उववज्जंति ॥ धम्मदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा ? गोयमा ! णो

भावार्थ

परंतु उत्सुकता रहित होने से गत काल में इतने रूप किये नहीं, करते नहीं हैं व करेंगे नहीं. भाव देव का भविक द्रव्य देव जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव चवकर क्या नरक यावत् देवलोक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! भविक द्रव्य देव नरक, तिर्यंच व मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं. परंतु देवलोक में उत्पन्न होते हैं और देवलोक में सब देवलोक में यावत् सर्वार्थ सिद्ध में उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! नरदेव चवकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक में उत्पन्न होते हैं परंतु तिर्यंच, मनुष्य व देव में नहीं उत्पन्न होते हैं जब नरक में उत्पन्न होते हैं तब सातों नरक में से किसी

सूत्र

समावण्णगा अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! सव्वेवि तावहोज्जा. अविग्गहगइ समावण्णगा, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णगेय, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय विग्गहगइ समावण्णगाय एवं जीव एगिंदिय वज्जो तिय भंगो ॥ ८ ॥ देवेणं भंते ; महड्डिए, महज्जुइए, महब्बले, महाजसे, महेसक्खे, महाणुभावे, अविउक्कंतियं चयमाणे किंचिकालं हिरवत्तियं, दुगं-

शब्दार्थ

गति म० प्राप्त अ० अविग्रहगति स०प्राप्त गो०गौतम स० सर्व ता० तैसे हो० होवे ए० ऐसे जी० जीव ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर ति० तीन भांगे ॥ ८ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महार्द्धिक म०ज्योतिवंत म०बलवंत म० यशस्वी म० महासुखी म०महानुभाव अ० नजदीक च० चवता किं० थोडाकाल हि० लज्जा दु० दुगं-

भावार्थ

गति करनेवाले हैं या अविग्रह गति करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! नारकी में अविग्रहगतिवाले विशेष होने से अविग्रहगति में बहुवचन लीया है. और विग्रह गतिवाले थोडे होवे अथवा न होवे इसलिये एक वचन लिया है. इस के तीन भांगे होते हैं १. नारकी में सब जीव अविग्रहगति संयुक्त २ अविग्रहगतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त एक ३ अविग्रह गतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त बहुत. ऐसे ही एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर अन्य सब दंडक में उक्त तीनों भांगे पाते हैं. एकेन्द्रिय में विग्रहगतिवन्त व अविग्रहगतिवंत बहुत होने से भांगा नहीं होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक, महाद्युतिवन्त, महाबलवन्त, महा

सूत्र

विउव्विसुवा विउव्विंतिवा, विउव्विस्संतिवा । भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा ॥ ५ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति, किं णेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! णो णेरइएसु उववज्जंति, णो तिरि णोमणु, देवेसु उववज्जंति, ॥ जइ देवेसु उववज्जंति सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति । णरदेवाणं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा? गोयमा ! णेरइएसु उववज्जंति, णोतिरि णोमणु णोदेवेसु उववज्जंति ॥ जइ णेरइएसु उववज्जंति सत्तसुवि पुढवीसु उववज्जंति ॥ धम्मदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा ? गोयमा ! णो

भावार्थ

परंतु उत्सुकता रहित होने से गत काल में इतने रूप किये नहीं, करते नहीं हैं व करेंगे नहीं. भाव देव का भविक द्रव्य देव जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव चवकर क्या नरक यावत् देवलोक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! भविक द्रव्य देव नरक, तिर्यंच व मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं. परंतु देवलोक में उत्पन्न होते हैं और देवलोक में सब देवलोक में यावत् सर्वार्थ सिद्ध में उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! नरदेव चवकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक में उत्पन्न होते हैं परंतु तिर्यंच, मनुष्य व देव में नहीं उत्पन्न होते हैं जब नरक में उत्पन्न होते हैं तब सातों नरक में से किसी

शब्दार्थ गति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स०प्राप्त गो०गोतम म० सर्व ता० तैसे हो० होवे ए० ऐसे जी० जीव ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर ति० तीन भांगे ॥ ८ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक म०ज्योतिवंत म०बलवंत म० यशस्वी म० महासुखी म०महानुभाव अ० नजदीक च० चवता किं० थोडाकाल हि० लज्जा दु० दुगं-

सूत्र समावण्णगा अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा. अविग्गहगइ समावण्णगा, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णगेय, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय विग्गहगइ समावण्णगाय एवं जीव एगिंदिय वज्जो तिय भंगो ॥ ८ ॥ देवेणं भंते ; महड्ढिए, महज्जुइए, महब्बले, महाजसे, महेसक्खे, महाणुभावे, अविउक्कंतियं चयमाणे किंचिकालं हिरवत्तियं, दुगं-

भावार्थ गति करनेवाले हैं या अविग्रह गति करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! नारकी में अविग्रहगतिवाले विशेष होने से अविग्रहगति में बहुवचन लीया है. और विग्रह गतिवाले थोडे होवे अथवा न होवे इसलिये एक वचन लिया है. इस के तीन भांगे होते हैं १. नारकी में सब जीव अविग्रहगति संयुक्त २ अविग्रहगतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त एक ३ अविग्रह गतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त बहुत. ऐसे ही एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर अन्य सब दंडक में उक्त तीनों भांगे पाते हैं. एकेन्द्रिय में विग्रहगतिवन्त व अविग्रहगति-वंत बहुत होने से भांगा नहीं होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक, महाद्युतिवन्त, महाबलवन्त, महा

चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं, एवं जच्चेव तिची सच्चेव संचिट्ठणावि जाव भावदेवा, णवरं धम्मदेवस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणाइं पुव्वकोडी ॥ ७ ॥ भवियदव्व देवस्सणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंत कालं, वणस्सइकालो नरदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतकालं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं । धम्मदेवस्सणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ३० ॥ देवाधिदेवाणं पुच्छा ?

भावार्थ

भविक द्रव्य देव भविक द्रव्य देवपने कितना कालतक रहता है ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम यों जैसे पहिले भव स्थिति कही वैसे संचिठना काल जानना. परंतु धर्मदेव की जघन्य एक समय उत्कृष्ट देश ऊना क्रोड पूर्व ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव को कितना अंतर कहा ! अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति आश्री, नरदेव का अंतर जघन्य एक सागरोपम अधिक, उत्कृष्ट अनंत काल अथवा देश ऊना अर्ध पुद्गल परावर्त कहना. धर्म

शब्दार्थ उपजता कि० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता कि०

सूत्र अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

भावार्थ स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है. इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा; हेट्ठिम गेवेज्जा संखेज्जगुणा, अच्चुयकप्पे देवा संखेज्जगुणा, जाव आणतकप्पे भावदेवा एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिस अप्पाबहुयं जाव जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा ॥ १० ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ दुवालसम सयस्सयं णवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ९ ॥ ० * *

कइविहाणं भंते ! आता पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा आता पण्णत्ता, तंजहा

भावार्थ — अहो गौतम ! सब मे थोडे अनुत्तरोपपातिक भावदेव उस से उपर की ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुने, उस से मध्यम ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुने उस से नीचे की ग्रैवेयक के भावदेव संख्यातगुने उस से अच्युत देवलोकवाले संख्यातगुने यावत् आनत देवलोक के भावदेव संख्यातगुने इस तरह जैसे जीवाभिगम में देव पुरुष की अल्पाबहुत्व कही वैसे कहना. यावत् ज्योतिषी देव असंख्यातगुने. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का नववा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ९ ॥ ०

नववे उद्देशे में देवता का कथन किया. देव आत्मावाले होने से इस उद्देशे में आत्मा का कथन करते हैं, अहो भगवन् ! आत्मा के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जो अपर पर्याय को सतत जाता है अथवा उपयोग लक्षण से जो सतत जानता है उसे आत्मा कहते हैं. इस के आठ भेद कहे हैं.

शब्दार्थ उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

सूत्र अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

भावार्थ स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निर्वृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है. इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

सूत्र

यव्वा ॥ जस्सणं भंते ! दवियाता तस्स उवओगाता एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा? गोयमा ! जस्स दवियाता तस्स उवओगाया णियमं अत्थि, जस्सवि उवओगाता तस्सवि दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्स दवियाता तस्स णाणाता भयणाए, जस्स पुण णाणाता तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्स दवियाता तस्स दंसणाता णियमं

भावार्थ

क्वचित् होता है और क्वचित् नहीं भी होता है. क्योंकी अनुपशान्त कषायी को द्रव्यात्मा व कषायात्मा दोनों हैं और उपशांत कषायी को कषायात्मा नहीं है परंतु द्रव्यात्मा है और जिस को कषायात्मा है उस को द्रव्य आत्मा निश्चय ही होता है. अहो भगवन् ! जिस को द्रव्य आत्मा है उस को क्या योगात्मा है और जिस को योगात्मा है उस को क्या द्रव्यात्मा है ? अहो गौतम ! जो सयोगी है उस को द्रव्यात्मा व योग आत्मा दोनों हैं और जो अयोगी है उस को मात्र द्रव्य आत्मा है इस से द्रव्य आत्मा को योग आत्मा क्वचित् होता है और क्वचित् नहीं होता है और योग आत्मावाले को द्रव्य आत्मा अवश्य मेव होता है; क्यों की द्रव्यात्मा बिना योगोंकी प्रवृत्ति नहीं है. अहो भगवन् ! द्रव्य आत्मा वाले को क्या उपयोग आत्मा और उपयोग आत्मा वाले को क्या द्रव्य आत्मा होता है ? अहो गौतम ! जिन को द्रव्य आत्मा है उन को उपयोग आत्मा अवश्यमेव होता है और जिनको उपयोग आत्मा है उन को द्रव्य आत्मा अवश्यमेव होता है क्यों की जीव उपयोग लक्षण वाला कहाता है, और

शब्दार्थ — आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम जं० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥ १३ ॥ जी० जीव का भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

सूत्र — वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिटुं कलुसं किव्विसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयरस

भावार्थ — है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

सूत्र

यव्वा ॥ जस्सणं भंते ! दवियाता तस्स उवओगाता एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा? गोयमा ! जस्स दवियाता तस्स उवओगाया णियमं अत्थि, जस्सवि उवओगाता तस्सवि दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्स दवियाता तस्स णाणाता भयणाए, जस्स पुण णाणाता तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्स दवियाता तस्स दंसणाता णियमं

भावार्थ

क्वचित् होता है और क्वचित् नहीं भी होता है. क्योंकी अनुपशान्त कषायी को द्रव्यात्मा व कषायात्मा दोनों हैं और उपशांत कषायी को कषायात्मा नहीं है परंतु द्रव्यात्मा है और जिस को कषायात्मा है उस को द्रव्य आत्मा निश्चय ही होता है. अहो भगवन् ! जिस को द्रव्य आत्मा है उस को क्या योगात्मा है और जिस को योगात्मा है उस को क्या द्रव्यात्मा है ? अहो गौतम ! जो सयोगी है उस को द्रव्यात्मा व योग आत्मा दोनों हैं और जो अयोगी है उस को मात्र द्रव्य आत्मा है इस से द्रव्य आत्मा को योग आत्मा क्वचित् होता है और क्वचित् नहीं होता है और योग आत्मावाले को द्रव्य आत्मा अवश्य मेव होता है; क्यों की द्रव्यात्मा विना योगोंकी प्रवृत्ति नहीं है. अहो भगवन् ! द्रव्य आत्मा वाले को क्या उपयोग आत्मा और उपयोग आत्मा वाले को क्या द्रव्य आत्मा होता है ? अहो गौतम ! जिन को द्रव्य आत्मा है उन को उपयोग आत्मा अवश्यमेव होता है और जिनको उपयोग आत्मा है उन को द्रव्य आत्मा अवश्यमेव होता है क्यों की जीव उपयोग लक्षण वाला कहाता है, और

शब्दार्थ

आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम जं० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥ १३ ॥ जी० जीव को भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

सूत्र

वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किब्बिसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

भावार्थ

है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृता-दिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

शब्दार्थ सि० सिझे यावत् अं० अंतकरे से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है पूर्ववत् ॥ ४४ ॥ जी० जीव भं० भगवन् अ० असंयति अ० अविरति अ० अप्रतिहत प० प्रत्याख्यान पा०

सूत्र

अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणिय बंधण बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठितीयाओ हस्सकालट्ठितीयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावा-ओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ, आउयंचणं कम्मं न बंधइ, असायावेयणिज्जं च णं कम्मं णो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ. अणादीयंचणं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं वीईवयइ. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं संवुडे अणगारे सिज्झइ जाव अंतकरेइ ॥ ४४ ॥ जीवेणं भंतेअसंजए, अविरए, अप्पडिहय

भावार्थ

करे ? अहो गोतम ! संवृत्त अणगार आयुष्य छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का निकाचित बंधन किया होवे तो उन को शिथिलकरे, दीर्घ काल की स्थिति वाले कर्मों को ह्रस्व काल की स्थिति वाले बनावे तीव्र रसवाले कर्मों को अल्प रसवाले बनावे, बहुत प्रदेशात्मक कर्मों को अल्प प्रदेशात्मक बनावे, आयुष्य कर्म का बंध करे नहीं, असाता वेदनीय कर्म को वारंवार संचित करे नहीं व अनादि अनंत संसार में परिभ्रमण करे नहीं; इसलिये अहो गौतम! संवृत्त अणगार सिझे यावत् दुःखों का अंतकरे ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! असंयति, अविरति, व प्रत्याख्यान से पापकर्म नहीं तोडने वाला यहां से चवकर परलोक

पदार्थ भगवन् ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

सूत्र कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा- जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ अभिक्खण आहारेइ अभिक्खणं परिणामेइ अभिक्खणं उस्ससेइ अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

भावार्थ कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, नीश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा कदाचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है. यह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है. उस से वह जीव

अत्थि सिय णत्थि ॥ एवं उवओगाएवि समं कसायाता णेयव्वा कसायाता णाणाताय परोप्परं दोवि भइयव्वाओ जहा कसायाताय उवओगाथाय तहा कसायाया, दंसणाताय कसायाता चरित्ताताय दोवि परोप्परं भइयव्वाओ, जहा कसायाता जोगाता तहा कसायाता वीरियाताय भाणियव्वाओ एवं जहा कसायाता वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाएवि उवरिमाहिं समं

भावार्थ

में करण वीर्य है वहां द्रव्यात्मा अवश्य ही है. इस तरह द्रव्यात्मा की साथ अन्य सात आत्माओं का संबंध कहा.॥२॥अब कपायात्मा की साथ अन्य छ का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! क्या कपायात्मा वाले को योगात्मा और योगात्मा वाले को कपायात्मा है ? अहो गौतम ! जिसको कपायात्मा है उस को योगात्मा की नियमा है और योगात्मावाले को कपायात्मा की भजना है क्यों की कषाय दशवा गुणस्थान पर्यंत है और योग तेरहवा गुणस्थान पर्यंत है. कपाय आत्मा वाले को उपयोग आत्मा अवश्यमेव होता है क्यों कि उपयोग शून्य आत्मा कदापि होता नहीं है और उपयोग आत्मा वाले को कपायात्मा की भजना होती है क्यों की उपशांत कपायी और क्षीण कपायी को उपयोग होता है परंतु कपाय नहीं होती है. कपायात्मा को ज्ञानात्मा की भजना है और ज्ञानात्मा को कपायात्मा की भजना है क्यों की सम्यक् दृष्टि कपायात्मा को ज्ञानात्मा है और मिथ्यादृष्टि कपायात्मा को ज्ञानात्मा नहीं है. वैसे ही उपशांत व क्षीण कपायी ज्ञानात्मा को कपाय नहीं है और शेप संसारी कपाय ज्ञानात्मा को कपायात्मा होता है. कपायात्मा को दर्शनात्मा की नियमा है क्यों की दर्शन शून्य आत्मा नहीं होता है और दर्शनात्मा को कपायात्मा की भजना है उपयोग आत्मा

शब्दार्थ अंग गो०गौतम त०तीन पे०पिता के अंग अ० हड्डि अ०हड्डिकीमिंज के०केश मं०श्मश्रु रो०रोम न०नख॥१७॥ अ० माता पिता का भं०भगवन् स०शरीर के०कितना का०काल सं० रहे गो०गौतम जा० जितना का०काल भ० भवधारणीय स० शरीर अ० नाश न पावे ए० इतना का० काल सं० रहे अ० अब स०समय २ में वो० हीन होता च० चरिम का० काल स०समय में वो० नाश भ० होवे॥ १८ ॥ जी० जीव भं० भगवन्

सूत्र पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयंगा पण्णत्ता तंजहा आट्ठि, आट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएणं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतियं कालं संचिट्ठइ. अहेणं समए समए वोयासिज्जमाणे चरिम काल समयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेणं

भावार्थ शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं. १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अंग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं. ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं. अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है. जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

सूत्र

सिय णत्थि ॥ जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया णियमं अत्थि ॥ णाणाता वीरियाता दोवि परोप्परं भयणाए, जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दोवि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाता णियमं

भावार्थ

चारित्र आत्मा की भजना है अविरति व विरति आश्री और चारित्रात्मा को योगात्मा की भजना है सयोगी अयोगी होने से, योगात्मा को वीर्यात्मा की नियमा है और वीर्यात्मा को योगात्मा की भजना है. यह योगात्मा का कथन किया. अब उपयोगात्मा का कथन करते हैं जैसे द्रव्यात्मा का कहा वैसे उपयोगात्मा का जानना. अर्थात् उपयोगात्मा को ज्ञानात्मा की भजना है सम्यग् दृष्टि व मिथ्या दृष्टि होने से और ज्ञानात्मा को उपयोगात्मा की नियमा है. उपयोगात्मा व दर्शनात्मा दोनों की परस्पर नियमा है अविनाभूत संबंध होने से उपयोगात्मा को चारित्रात्मा की भजना और चारित्रात्मा को उपयोगात्मा की नियमा है. उपयोगात्मा को वीर्यात्मा की भजना है संसारी व सिद्ध आश्री और वीर्यात्मा को उपयोगात्मा की नियमा है. यह उपयोगात्मा का कथन किया. अब ज्ञानात्मा का कथन करते हैं. ज्ञानात्मा को दर्शनात्मा की नियमा, दर्शन शून्य जीव नहीं होने से और दर्शन आत्मा को ज्ञानात्मा की भजना सम्यग् दृष्टि व मिथ्या दृष्टि आश्री. ज्ञानात्मा को चारित्रात्मा की भजना विरति अविरति आश्री और चारित्रात्मा को ज्ञानात्मा की नियमा ज्ञान विना चारित्र का उदय नहीं होने से. ज्ञानात्मा को वीर्यात्मा की भजना

शब्दार्थ — अंग गो॰गौतम त॰तीन पे॰पिता के अंग अ॰हड्डि अ॰हड्डिकीमिंज के॰केश मं॰श्मश्रु रो॰रोम न॰नख॥१७॥ अ॰ माता पिता का भं॰भगवन् स॰शरीर के॰कितना का॰काल सं॰ रहे गो॰गौतम जा॰ जितना का॰काल भ॰ भवधारणीय स॰ शरीर अ॰ नाश न पामे ए॰ इतना का॰ काल सं॰ रहे अ॰ अब स॰समय २ में वो॰ हीन होता च॰ चरिम का॰ काल स॰समय में वो॰ नाश भ॰ होवे॥ १८ ॥ जी॰ जीव भं॰ भगवन्

सूत्र — ण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयंगा पण्णत्ता तंजहा आट्ठि, आट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएणं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतियं कालं संचिट्ठइ. अहेणं समए समए वोयासिज्जमाणे चरिम काल समयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेणं

भावार्थ — शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं. १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अंग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं. ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं. अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है. जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

सूत्र

सिय णत्थि ॥ जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया णियमं अत्थि ॥ णाणाता वीरियाता दोवि परोप्परं भयणाए, जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दोवि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाता णियमं

भावार्थ

चारित्र आत्मा की भजना है अविरति व विरति आश्री और चारित्रात्मा को योगात्मा की भजना है सयोगी अयोगी होने से, योगात्मा को वीर्यात्मा की नियमा है और वीर्यात्मा को योगात्मा की भजना है. यह योगात्मा का कथन किया. अब उपयोगात्मा का कथन करते हैं जैसे द्रव्यात्मा का कहा वैसे उपयोगात्मा का जानना. अर्थात् उपयोगात्मा को ज्ञानात्मा की भजना है सम्यग् दृष्टि व मिथ्या दृष्टि होने से और ज्ञानात्मा को उपयोगात्मा की नियमा है. उपयोगात्मा व दर्शनात्मा दोनों की परस्पर नियमा है अविनाभूत संबंध होने से उपयोगात्मा को चारित्रात्मा की भजना और चारित्रात्मा को उपयोगात्मा की नियमा है. उपयोगात्मा को वीर्यात्मा की भजना है संसारी व सिद्ध आश्री और वीर्यात्मा को उपयोगात्मा की नियमा है. यह उपयोगात्मा का कथन किया. अब ज्ञानात्मा का कथन करते हैं. ज्ञानात्मा को दर्शनात्मा की नियमा, दर्शन शून्य जीव नहीं होने से और दर्शन आत्मा को ज्ञानात्मा की भजना सम्यग् दृष्टि व मिथ्या दृष्टि आश्री. ज्ञानात्मा को चारित्रात्मा की भजना विरति अविरति आश्री और चारित्रात्मा को ज्ञानात्मा की नियमा ज्ञान विना चारित्र का उदय नहीं होने से. ज्ञानात्मा को वीर्यात्मा की भजना

शब्दार्थ चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र रूछुभइ, वेउव्विय समुग्घाएण समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भावार्थ वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे. द्रव्य की अभिलापावाला राज्यऋद्धि की अभिलापावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलापावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलापावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा. धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

सूत्र

णाणे ? गोयमा ! आया सिय णाणे सिय अण्णाणे, णाणे पुण णियमं आया ॥ ५ ॥ आयाणं भंते! णेरइयाणं णाणे अण्णे णेरइयाणं णाणे ? गोयमा! आया णेरइयाणं सिय णाणे सिय अण्णाणे, णाणे पुण ते णियमं आया, एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ आया भंते! पुढवी काइयाणं अण्णाणे अण्णे पुढवी काइयाणं अण्णाणे,? गोयमा ! पुढवीकाइयाणं णियमं अण्णाणे अण्णाणे णियमं आया, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ॥ बेइंदिया तेइंदिया जाव वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ ६ ॥ आया भंते ! दंसणे अण्णे दंसणे ? गोयमा !

भावार्थ

वन् ! क्या आत्मा ही ज्ञान है या आत्मा से अन्य ज्ञान है ? अहो गौतम ! सम्यक्त्व होने से आत्मा क्वचित् ज्ञान है और मिथ्यात्व होने से आत्मा क्वचित् अज्ञान है. परंतु ज्ञान में आत्मा निश्चय ही होता है क्यों कि आत्मा का ज्ञान गुण रहा है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी का आत्मा क्या ज्ञान है या अन्य ज्ञान है ? अहो गौतम ! नारकी का आत्मा क्वचित् ज्ञानमय है और क्वचित् अज्ञानमय है. ज्ञान में आत्मा निश्चयही होता है. ऐसे ही असुर कुमार यावत् स्थनित कुमार पर्यंत दश भुवनपति का जानना. अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया का क्या आत्मा अज्ञान है या अन्य अज्ञान है ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया में नियमा अज्ञान होता है और अज्ञान में नियमा आत्मा होता है. ऐसे ही वनस्पति काया

पदार्थ

चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

[illegible] गर्भस्थ जी[illegible] ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात [illegible] आत्मप्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों [illegible] कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की [illegible] करे, [illegible] को [illegible] राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग [illegible], [illegible] कामकी [illegible] धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, [illegible] से आसक्त बना हुवा, धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय [illegible] धर्मानुराग में रक्त बनगया. फोर वह [illegible]

आयातिय णो आयातिय ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभय आदिट्ठे अवत्तव्वं, रयणप्पभा पुढवी आयातिय णो आयातिय से तेणट्ठेणं तंचेव जाव णो आयातिय ॥ आया भंते ! सक्करप्पभा पुढवी जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभावि एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ आया भंते ! सोहम्मे कप्पे पुच्छा ? गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय णो आया जाव णो आयातिय; से केणट्ठेणं भंते ! जाव णो आयातिय ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभय आदिट्ठे अवत्तव्वं, आयातिय णो आया-

भावार्थ

असद्रूपा है और क्वचित् सद्रूपा व असद्रूपा पने करने को अशक्य वस्तु है. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि रत्नप्रभा पृथ्वी क्वचित् सद्रूपा क्वचित् असद्रूपा और क्वचित् सद्रूप व असद्रूप पने करने में अशक्य वस्तु है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा स्वतः के वर्णादि पर्याय अर्थात् स्वपर्याय अपेक्षा से आत्मा है अन्य के वर्णादि पर्याय की अपेक्षा से अनात्मा असद्रूपा है और दोनों की अपेक्षा से आत्मा अनात्मा करने में अशक्य वस्तु है. अर्थात् रत्नप्रभा पृथ्वी क्वचित् आत्मा क्वचित् नो आत्मा है. इस से अहो गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी क्वचित् सद्रूपा क्वचित् असद्रूपा और सदसद्रूपपने

शब्दार्थ कैसे गो० गौतम स० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव-धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

सूत्र वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धाम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए; मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव धर्मिष्ट स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया. फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

सूत्र

आयातिय ६, ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवंचेव जाव णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय? गोयमा! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं दुपदेसिए खंधे आयातिय णो आयातिय, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे दुपदेसिए खंधे आयातिय णो आयातिय देसे अब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे उभओपज्जवे दुपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ५, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपदेसिए खंधे णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ६, से तेणट्ठेणं तंचेव जाव णो आयातिय ॥ आया भंते! तिपदेसिए खंधे अण्णे तिपदेसिए खंधे? गोयमा! तिपदेसिए खंधे

भावार्थ

असत्तागत पर्याय से क्वचित् आत्मा क्वचित् नहीं आत्मा ५ क्वचित् आत्मा अवक्तव्य और ६ क्वचित् नो आत्मा अवक्तव्य. अहो भगवन्! यह किस तरह है? अहो गौतम! अपनी पर्यायापेक्षा द्विप्रदेशिक स्कंध आत्मा है पर पर्यायापेक्षा द्विप्रदेशिक स्कंध अनात्मा है और दोनों की अपेक्षा से अवक्तव्य, एक देश स्वपर्याय की अपेक्षा से आत्मा दूसरा देश पर पर्याय की अपेक्षा से अनात्मा इस से दोनों का मीला हुवा द्विप्रदेशात्मक स्कंध आत्मा अनात्मा दोनों है. ५ एक देश सद्भाव पर्यायवाला है और दूसरा देश सद्भाव व असद्भाव ऐसी उभय पर्यायवाला है इस से दोनों का

पदार्थ

कैसे गो० गौतम स० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव-धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

सूत्र

वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धाम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए; मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ

... जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव धर्मिष्ट ... संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण ... आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व ... और वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

आयातिय णो आयातिय ११, सिय णो आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १२, सिय आयाय, णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १३, ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तिपदेसिए खंधे सिय आया एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ॥ देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयातिय णो आयातिय ४, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसा आदिट्ठा अस-

वचन में आत्मा इति नोआत्मा इति कदाचित् नो आत्मा एकवचन में अवक्तव्य ११ अनेक वचनमें आत्मा इति नोआत्मा इति एक वचन में आत्मा अवक्तव्य है १२ एक वचन में आत्मा इति यहां बहुवचन अवक्तव्य और १३ कदाचित् आत्मा एक वचन में. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तीन प्रदेशिक स्कंध आत्मा है यावत् एकवचन में आत्मा, नो आत्मा, व अवक्तव्य ऐसे तेरह भांगे पाते हैं. ? अहो गौतम ! अपनी पर्यायापेक्षा आत्मा, परपर्यायापेक्षा नोआत्मा, उभय पर्यायापेक्षा आत्मा नोआत्मा ४ देश आश्री स्वपर्याय देश आश्री परपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा इति ५ एक देश आश्री

फल जैसे अ० होवे चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवे जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिर्च्छा आ०

सूत्र

अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ

जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे, देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे तिपदेसिए खंधे णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १०, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठा, तदुभय-पज्जवा तिपदेसिए खंधे णो आयाय अवत्तव्वाइं, आयातिय णो आयातिय ११, देसा आदिट्ठा असब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे णो आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १२, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १३, । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-तिपदेसिए खंधे सिय आया

भावार्थ आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध नो आत्मा अवक्तव्य १२ अनेक देश आश्री परपर्याय एक देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध नो आत्मा अवक्तव्य १३ देश आश्री स्वपर्याय, देश आश्री पर पर्याय और देश आश्री उभय पर्याय होनेसे त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य. अहो गौतम ! इस कारन से एसा कहा गया है कि त्रिप्रदेशिक स्कंध में तेरह भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! आत्मा चतुष्क प्रदेशिक स्कंध है या अन्य चतुष्क प्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! चतुष्क प्रदेशी स्कंध में १९ भांगे पाते हैं. १ चतुष्क प्रदेशी स्कंध कदाचित् आत्मा २ कदाचित् नो आत्मा ३ कदाचित् अवक्तव्य

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं व० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

सूत्र

अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ

रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वेशुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १५, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ चउप्पदेसिए खंधे सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वं, तंचेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं, गोयमा! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णोआया, तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो। सब्भावेणं तदुभएणय चउभंगो। असब्भावेणं तदुभएणं चउभंगो। देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे, तदुभयपज्जवे चउप्पदेसिए खंधे आयाय णो आयाय अवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय १६,॥ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे, देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पदेसिए खंधे आयाय णो आयाय अवत्तव्वाइं आयाय णो आयाय १७, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पदेसिए खंधे आयाय णो आया-

भावार्थ १६ देश आश्री स्वपर्याय देश आश्री पर पर्याय और देश आश्री उभय पर्याय चतुष्क प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य १७ एक देश आश्री स्वपर्याय एक देश आश्री पर पर्याय अनेक देश आश्री उभय पर्याय चतुष्क प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ऐसे अनेक वचन में अवक्तव्य १८ देश आश्री स्वपर्याय अनेक देश आश्री पर पर्याय एक देश आश्री उभय पर्याय चतुष्क प्रदेशी स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य १९ अनेक देश आश्री स्वपर्याय एक देश आश्री पर पर्याय एक देश आश्री उभय

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥

× × ×

सूत्र

अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥

* *

भावार्थ

रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वे शुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥

× × +

च्चव्वं, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे-देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे, एवं दुयसंजोगे सव्वेपडंति, तिया संजोगे एक्कोनपडंति ॥ छप्पदेसिया सव्वेपडंति ॥ जहा छप्पदेसिए एवं जाव अणंतपदेसिए ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ! जाव विहरइ ॥ दुवालसम सयस्सय दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ १० ॥ दुवालसमं सयं सम्मत्तं ॥ १२ ॥

१२ भांगे होते हैं. सब मीलकर १५ हुवे और तीन संयोगी में पहिला एक भांगा छोडना. शेष सात भांगे होवे. छ प्रदेशिक स्कंध में २३ भांगे होते हैं. जैसे छ प्रदेशी स्कंध का कहा वैसे ही अनंत प्रदेशी स्कंधका जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ १२ ॥ १० ॥ यह बारहवा शतक संपूर्ण हुवा ॥ १२ ॥

अर्थ — ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र — लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयं कि- देवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ — कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

पदार्थ — अ० अकामक्षुधा अ० अकाम ब्रह्मचर्य अ० अकाम सी० शीत आ०आतप दं० दंश म० मशक अ० स्नान रहित से० स्वेद ज० जल म० मल पं० कर्दम प० परिदाह अ० थोडे मु० बहुत का० काल अ० आत्मा को प० कष्टदेवे प० कष्टदेकर का० काल के अवसर में का० काल कि० करके अ० अन्यतर वा० वाणव्यंतर दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न भ० होवे के० कैसे भं० भगवन् वा० वाणव्यंतर दे० देवता

मूत्र — अकाम बंभचेरवासेगं, अकामसीतातवदंसमसगं, अण्हाणगसेयजल्लुमल पंकपरिदाहेणं अप्पतरोवा भुज्जतरोवा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति परिकिलेसइत्ता; कालमासे कालंकिच्चा, अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥ केरिसाणं भंते तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा प०? गोयमा! से जहा नामए इह मणुस्स लोगंमि असोगवणेइवा सत्तवण्णवणेइवा, चंपयवणेइवा, चूयवणेइवा, तिलगवणेइवा,

भावार्थ — काल के अवसर में काल करे तो वाणव्यंतर देवलोक में देवतापने उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! उन वाणव्यंतर देवता के देवलोक कैसे हैं ? अहो गौतम जैसे मनुष्य लोक में अशोकवन, सप्तपर्णवन, चंपकवन आम्रवन, तिलक वन, अलंबुक (तुम्बी का) वन, न्यग्रोधवन, छत्राहवन, अशनवृक्षवन, शणवृक्ष के वन अलसीका वन, कुसुमवन, सिद्धत्थ-श्वेतसरसवका वन, बंधजीव सो मध्यान्हे के कुसुमका वन वगैरह वनों सदैव कुसुमों से फुले हुवे, मंजरी, गुच्छा, गुलम, बेल, पत्र, अन्य अनेक वृक्षोंकी श्रेणियों के समुह व

र्थ

ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणु-देवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध करे नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

गोयमा ! तीसं णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥ २ ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्ज-वित्थडा असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडावि, असंखेज्जवित्थडावि ॥ ३ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु एगसमए केवइया णेरइया उववज्जंति १ केवइया काउलेस्सा उववज्जंति पुच्छा २ केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति ३, केवइया सुक्कपक्खिया उववज्जंति ४, केवइया सण्णी उववज्जंति ५ केवइया असण्णी उववज्जंति ६, केवइया भवसिद्धिया जीवा उववज्जंति ७, केवइया अभवसिद्धिया जीवा उववज्जंति ८,

भावार्थ गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास कहे हैं. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वे नरकावास संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तार वाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं और असंख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं ॥ ३ ॥ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से संख्यात योजन के विस्तार वाले एक २ नरकावास में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं, कितनेक कापुत लेश्या वाले हैं, कितने कृष्ण पक्ष वाले[1] उत्पन्न होते हैं, कितने

१ अर्धपुद्गलपरावर्तन से अधिक संसार परिभ्रमण करने का जिन को होता है वे कृष्ण पक्षी कहाते हैं.

शब्दार्थ ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

सूत्र

गोयमा ! तीसं णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥ २ ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्ज-वित्थडा असंखेज्जवित्थडा ? गोयमा ! संखेज्जवित्थडावि, असंखेज्जवित्थडावि ॥ ३ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु एगसमए केवइया णेरइया उववज्जंति १ केवइया काउलेस्सा उववज्जंति पुच्छा २ केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति ३, केवइया सुक्कपक्खिया उववज्जंति ४, केवइया सण्णी उववज्जंति ५ केवइया असण्णी उववज्जंति ६, केवइया भवसिद्धिया जीवा उववज्जंति ७, केवइया अभवसिद्धिया जीवा उववज्जंति ८,

भावार्थ

गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास कहे हैं. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वे नरकावास संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तार वाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं और असंख्यात योजन के विस्तार वाले भी हैं ॥ ३ ॥ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से संख्यात योजन के विस्तार वाले एक २ नरकावास में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं, कितनेक कापुत लेश्या वाले हैं, कितने कृष्ण पक्ष वाले उत्पन्न होते हैं, कितने

१ अर्धपुद्गलपरावर्तन से अधिक संसार परिभ्रमण करने का जिन को होना है वे कृष्ण पक्षीकहाते हैं.

र्थ

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अं० अंतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह ते० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा० बाल पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

सूत्र

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

भावार्थ

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही. इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

सूत्र

केवइया पुरिसवेदगा उववज्जंति २३, केवइया णपुंसगवेदगा उववज्जंति २४, केवइया कोहकसायी उववज्जंति २५, जाव केवइया लोभकसायी उववज्जंति २८, केवइया सोइंदियोवउत्ता उववज्जंति २९, जाव केवइया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति ३३, केवइया णोइंदियोवउत्ता उववज्जंति ३४, केवइया मणजोगी उववज्जंति ३५, केवइया वइजोगी उववज्जंति ३६, केवइया कायजोगी उववज्जंति ३७, केवइया सागारोवउत्ता उववज्जंति ३८, केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ३९? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णेरइयावास सयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु णरएसु जहण्णणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा णेरइया उववज्जंति, जहण्णेणं

भावार्थ

गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में के संख्यात योजन के नरकावास में जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात नारकी उत्पन्न होते हैं, जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्याते कापुत लेश्यावाले उत्पन्न होते हैं, जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्याते कृष्ण पक्षवाले उत्पन्न होते हैं ऐसे ही, शुक्लपक्षी, संज्ञी, असंज्ञी, भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, और अवधि ज्ञानीका जानना, चक्षुदर्शनी नारकी नहीं उत्पन्न होते हैं. क्यों की उत्पन्न होते शरीर पर्याय का बंध किये विना इन्द्रिय का अभाव होता है. अचक्षुदर्शनी जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्याते उत्पन्न

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अं० अंतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह ते० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ वा० वाल पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० वांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० वांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही. इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

सूत्र

उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति, मणजोगी ण उववज्जंति, एवं वइजोगीवि, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति, एवं जाव सागारोवउत्तावि, एवं अणागारोवउत्तावि, ॥ ४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु णरएसु एग समएणं केवइया णेरइया उव्वट्टंति, केवइया काउलेस्सा उव्वट्टंति जाव केवइया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ? गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्ज

भावार्थ

संख्याते उत्पन्न होते हैं. मन योगी व वचन योगी उत्पन्न नहीं होते हैं. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्याते काय योगी उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही साकारोपयोग व अनाकारोपयोग का जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में के संख्यात योजन वाले नरकावास में से एक समय में कितने नारकी उद्वर्तते हैं कितने कापुत लेश्या वाले उद्वर्तते हैं यावत् कितने अनाकारोपयोग वाले उद्वर्तते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से जो संख्यात योजन के विस्तार वाले हैं, उन में से जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात नारकी उद्वर्तते हैं, जघन्य एक दो तीन

शब्दार्थ मारने से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरण की प० प्रद्वेषिकी प० परितापनिकी च० चार कि० क्रिया पु० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से बं० बंधन करने से मा० मारने से ता० वहांलग से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये जा० यावत पं० पांच कि० क्रिया ॥ ४ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत् व० वन वि० विषम त० तृण ऊ० ऊंचा करके अ० अग्निकाय

सूत्र से पुरिसे काइयाए अहिगरणयाए, पाओसियाए, परियावणियाए, चउहिं किरियाहिं पुट्ठे। जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, मारणयाएवि तावंचणंसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाय किरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। से तेणट्ठेणं जाव पंचकिरिए ॥ ४ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा, जाव वणाविदुग्गंसिवा, तणाइं ऊसंविय २ अ-

भावार्थ जितने काल पर्यंत कूटपाश बनाने का व मृग बांधने का भाव है परंतु मारनेका भाव नहीं है उस को उतने कालतक चार क्रिया लगती हैं. उक्त तीनों में उस मृग को परिताप दुःख दिया सो परितापनिकी क्रिया कही. जिस को जितने कालतक कूटपाश बनाने का, बांधने का व मारने का भाव है उस को उतने कालतक पांच क्रियाओं लगती हैं. कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेषिकी, परितापनिकी व प्राणातिपातिकी. इसी कारन से अहो गौतम ! उक्त पुरुष को क्वचित् तीन, क्वचित् चार व क्वचित् पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥

सूत्र

एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काय जोगी उव्वट्टंति, एवं सागारोवउत्तावि, एवं अणागारोवउत्तावि, ॥ ५ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सय सहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु केवइया णेरइया पण्णत्ता, केवइया काउलेस्सा पण्णत्ता जाव केवइया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ३९, केवइया अणंतरोववण्णगा पण्णत्ता, केवइया परंपरोववण्णगा पण्णत्ता, केवइया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता, केवइया परंपरोवगाढा पण्णत्ता, केवइया अणंतराहारा पण्णत्ता, केवइया परंपराहारा पण्णत्ता, केवइया अणंतर पज्जत्ता पण्णत्ता, केवइया

भावार्थ

योगी नहीं उद्वर्तते हैं और काय योगी जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात उद्वर्तते हैं. ऐसे ही साकारोपयोग और अनाकारोपयोग का जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास में कितने नारकी यावत् अनाकारोपयुक्त रहे हुवे हैं और कितने अनंतर उत्पन्न, कितने परंपरा से उत्पन्न, कितने अनंतर अवगाढ, कितने परंपरा अवगाढ, कितने अनंतर आहारी, कितने परंपरा आहारी, कितने अनंतर पर्याप्त, कितने परंपरा पर्याप्त, कितने चरिम और कितने अचरिम रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में

शब्दार्थ अंदर में छ० छमास की म० मरे का० कायिकी जा० यावत् पं० पांचक्रिया पु० स्पर्शे बा० बाहिर छ० छमास की म० मरे च० चारक्रिया पु० स्पर्शे ॥ ७ ॥ पुं० पुरुष भं० भगवन् पु० पुरुष को स० भालासे सं० बांधे म० स्वतः के पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे त० तब से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जब से० वह पु० पुरुष तं० उस पु० पुरुष को स०

सूत्र काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे : बाहिं छण्हं मासाणं मरइ, काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ७ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसं सत्तीए समभिसंधेज्जा सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदेज्जा । तओणं भंते ! से पुरिसे कइकि-

भावार्थ मारनेवाले को पुरुष का वैर लगता है. वह मृग यदि छ मास की अंदर मरजावे तो घातक पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं क्यों की छ मासतक मृग को प्रहार हेतुक मरण होता है. छ मास पीछे यदि वह मृग मरजावे तो प्राणातिपातिकी क्रिया छोडकर अन्य चार क्रियाओं लगती हैं * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष शक्ति भाला से, अथवा अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से किसी पुरुष का शिरच्छेदन करे तब

* यहांपर व्यवहारकी अपेक्षासे प्राणातिपातिकी क्रिया मात्र व्यपदेश बतानेको कहीहै. अन्यथा जब प्रहारहेतुक मरण होवे उस समय उस वधकको कायिकी यावत् प्राणातिपातिकी पांच क्रिया लगती हैं.

एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काय जोगी उव्वट्टंति, एवं सागारोवउत्ताव्वि, एवं अणागारोवउत्तावि, ॥ ५ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सय सहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु केवइया णेरइया पण्णत्ता, केवइया काउलेस्सा पण्णत्ता जाव केवइया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ३९, केवइया अणंतरोववण्णगा पण्णत्ता, केवइया परंपरोववण्णगा पण्णत्ता, केवइया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता, केवइया परंपरोवगाढा पण्णत्ता, केवइया अणंतराहारा पण्णत्ता, केवइया परंपराहारा पण्णत्ता, केवइया अणंतर पज्जत्ता पण्णत्ता, केवइया

भावार्थ योगी नहीं उद्वर्तते हैं और काय योगी जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात उद्वर्तते हैं. ऐसे ही साकारोपयोग और अनाकारोपयोग का जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास में कितने नारकी यावत् अनाकारोपयुक्त रहे हुवे हैं और कितने अनंतर उत्पन्न, कितने परंपरा से उत्पन्न, कितने अनंतर अवगाढ, कितने परंपरा अवगाढ, कितने अनंतर आहारी, कितने परंपरा आहारी, कितने अनंतर पर्याप्त, कितने परंपरा पर्याप्त, कितने चरिम और कितने अचरिम रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में

शब्दार्थ प० पराजयपामे से० वह क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम स० वीर्यवन्त प० जीते अ० अवीर्यवन्त प० पराजयपामे वी० वीर्य व० वधयोग्य क० कर्म नो० नहीं व० बंधे नो० नहीं पु० स्पर्शे जा० यावत् नो० नहीं अ० सन्मुख हुवे णो० नहीं उ० उदयआये उ० उपशान्तपामे से० वह प० जीतता है ज० जिस का वी० वीर्य व० वधयोग्य क० कर्म ब० बंधे जा० यावत् उ० उदयआये नो० नहीं उ० उपशमें भ० हैं

सूत्र एवं गोयमा ! सवीरिए पराइणइ, अवीरिए पराइज्जइ । से केणट्ठेणं जाव पराइज्जइ ? गोयमा ! जस्सणं वीरियवज्झाइं कम्माइं णो बद्धाइं णो पुट्ठाइं जाव नो अभिसमण्णागयाइं, णो उदिण्णाइं उवसंताइं भवंति, सेणं पराइणइ. जस्सणं वीरियवज्झाइं कम्माइं बद्धाइं

भावार्थ करणवाले दो पुरुष परस्पर संग्राम करे; उस में से एक पुरुष का जय होवे और दूसरा पुरुष का पराजय होवे. अहो भगवन् ! इस तरह जय पराजय होनेका क्या कारन ? अहो गौतम ! वीर्यवंत पुरुष का जय हुवा और वीर्य रहित पुरुष का पराजय हुवा. अहो भगवन्त ! वीर्यवन्त पुरुष का जय और वीर्य रहित पुरुष का पराजय होने का क्या कारन ? अहो गौतम ! वीर्य की घात करनेवाले कर्म पुद्गलों का बंध जिसने नहीं किया होवे, जिन को नहीं स्पर्शे होवे, यावत् उदय में नहीं आये होवे वैसे ही उदीरणा से उदय में नहीं लाये होवे परंतु उपशान्त रहे हुवे होवे, उस को जय होता है और जिस पुरुपको वीर्य की घात करनेवाले कर्म पुद्गलों बंधे हुवे होवे यावत् उदीरणा से उदय में आये होवे उस पुरुष का पराजय

सूत्र

इंदियोवउत्ता जहा असण्णी, संखेज्जा मणजोगी, एवं जाव अणागारोवउत्ता ३९, अणंतरोववण्णगा सिय अत्थि सिय णत्थि जइ अत्थि जहा असण्णी संखेज्जा परंपरोववण्णगा एवं जहा अणंतरोववण्णगा तहा अणंतरोवगाढा. अणंतराहारगा, अणंतर पज्जत्तगा चरिमा, परंपरोवगाढा, जाव अचरिमा, जहा परंपरोववण्णगा ॥ ६ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु असंखेज्ज वित्थडेसु णरएसु एगसमएणं केवइया णेरइया उववज्जंति, जाव केवइया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ? गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु असंखेज्ज

भावार्थ

मन योगी ऐसे ही अनाकारोपयोग पर्यंत जानना अनंतर उत्पन्न क्वचित् हैं क्वचित् नहीं हैं यदि है तो जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात हैं, संख्यात परंपरा से उत्पन्न हुवे हैं. ऐसे ही अनंतरावगाढ, अनंतराहारी, अनंतर पर्याप्त, चरिम, परंपरावगाढ, यावत् अचरिम का जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से असंख्यात योजनवाले नरकावास में एक समय में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं यावत् कितने अनाकारोपयोगवाले उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से असंख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास में एक समय में जघन्य

शब्दार्थ ते० वे दु० दोप्रकार के से० निश्चल आत्मा वाले अ० निश्चल आत्मा रहित त० तहां जे० जो से० शैलेशी युक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य त० तहां जे० जो अ० अशैलशीयुक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से०

सूत्र तत्थणं जे ते असंसार समावण्णगा तेणं सिद्धा, सिद्धाणं अवीरिया तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा सेलेसि पडिवण्णगाय, असेलेसि पडिवण्णगाय । तत्थणं जे ते सेलेसि पडिवण्णगा तेणं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया । तत्थणं जे ते असेलेसि पडिवण्णगा, तेणं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरियावि अवीरियावि. सेतेणट्ठेणं गोयमा

भावार्थ अभाव है इसलिये वे वीर्य रहित हैं और जो संसार समापन्नक हैं उन के दो भेद कहे हैं. १ शैलेशी प्रतिपन्न सो चउदहवे गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली के जीव और २ अशैलेशी सो प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती जीव. उस में चउदहवे गुणस्थानवर्ती शैलेशी जीव लब्धि वीर्य की अपेक्षा से वीर्य सहित और करण वीर्य की अपेक्षा से वीर्य रहित हैं. प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती अशैलेशी प्रतिपन्न जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं. इस कारन से अहो

१ वीर्यांतराय के क्षय से जो वीर्य होता है सो लब्धिवीर्य २ उत्थानादि क्रिया सो करण वीर्य.

सूत्र

अमंखेज्ज वित्थडा, एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाएवि णवरं असण्णी तिसुवि गमएसु नभण्णति, सेसं तचेव ॥ ८ ॥ वालुयप्पभाएणं पुच्छा ? गोयमा ! पण्णरसाणिरयावास सयसहस्सा पण्णत्ता, सेसं जहा सक्करप्पभाए, णाणत्तं लेस्सासु लेस्साओ जहा पढमसए ॥ ९ ॥ पंकप्पभाएणं भंते ! णिरयावास सयसहस्सा पुच्छा ? गोयमा ! दस णिरयावासमयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा सक्करप्पभाए, णवरं ओहिणाणी ओहिदंसणी ण उव्वट्टंति, सेसं तंचेव ॥ १० ॥ धूमप्पभाएणं पुच्छा ? गोयमा ! तिण्णि णिरयावाससयसहस्सा एवं जहा पंकप्पभाए ॥ ११ ॥ तमाएणं भंते ! पुढवीए केवइया णिरयावास पुच्छा ? गोयमा ! एगे पंचूणे

भावार्थ

गौतम ! जैसे रत्नप्रभा कहा वैसे ही शर्कर प्रभा का जानना. परंतु असंज्ञी तीनों आलापक में कहना नहीं ॥ ८ ॥ वालु प्रभा की पृच्छा. वालु प्रभा में १५ लाख नरकावास कहे शेष सब अधिकार रत्नप्रभा जैसे कहना लेश्या में जो भिन्नता है वह प्रथम शतक से जानना ॥ ९ ॥ पंक प्रभा में दश लाख नरकावास हैं इस का अधिकार भी शर्कर प्रभा जैसा कहना परंतु इन में से अवधि ज्ञानी व अवधि दर्शनी उद्वर्तते नहीं है ॥ १० ॥ धूम्रप्रभा में तीन लाख नरकावास हैं उस का सब कथन पंकप्रभा जैसे कहना ॥११॥ अहो

शब्दार्थ ते० वे दु० दोप्रकार के से० निश्चल आत्मा वाले अ० निश्चल आत्मा रहित त० तहां जे० जो से० शैलेशी युक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य त० तहां जे० जो अ० अशैलशीयुक्त तें० वे ल० लब्धिवीर्य मे स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से०

सूत्र तत्थणं जे ते असंसार समावण्णगा तेणं सिद्धा, सिद्धाणं अवीरिया तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा सेलेसि पडिवण्णगाय, असेलेसि पडिवण्णगाय । तत्थणं जे ते सेलेसि पडिवण्णगा तेणं लाद्धवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया । तत्थणं जे ते असेलेसि पडिवण्णगा, तेणं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरियावि अवीरियावि. सेतेणट्ठेणं गोयमा

भावार्थ अभाव है इसलिये वे वीर्य रहित हैं और जो संसार समापन्नक हैं उन के दो भेद कहे हैं. १ शैलेशी प्रतिपन्न सो चउदहवे गुणस्थानवर्ती अयोगी कवली के जीव और २ अशैलेशी सो प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती जीव. उस में चउदहवे गुणस्थानवर्ती शौलेशी जीव लब्धि वीर्य की अपेक्षा से वीर्य सहित और करण वीर्य की अपेक्षा से वीर्य रहित हैं. प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती अशैलेशी प्रतिपन्न जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं. इस कारन से अहो

१ वीर्यांतराय के क्षय से जो वीर्य होता है सो लब्धिवीर्य २ उत्थानादि क्रिया सो करण वीर्य.

सूत्र

भाणियव्वा ॥ १३ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु णरएसु किं सम्मदिट्ठी णेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी णेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी णेरइया उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी णेरइया उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी णेरइया उववज्जंति, णो सम्मामिच्छदिट्ठी णेरइया उववज्जंति ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु किं सम्मदिट्ठी णेरइया उव्वट्टंति ? एवं चेव ॥ १४ ॥ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु

भावार्थ

उत्पन्न होते हैं और चवते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में क्या समदृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं, मिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं या सममिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं मिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं परंतु समामिथ्यादृष्टि नारकी नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से क्या समदृष्टि नारकी उद्वर्तते हैं मिथ्यादृष्टि नारकी उद्वर्तते हैं या सम मिथ्यादृष्टि नारकी उद्वर्तते हैं ? अहो गौतम ! जैसे उत्पन्न होने का कहा वैसे ही उद्वर्तने का जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरका-

शब्दार्थ

उत्थान जा० यावत् प० पराक्रम ते० वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य से० वह ते० इसलिये ज० जैसे ने० नारकी जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच म० मनुष्य ज० जैसे ओ० औधिक जीव न० विशेष सि० सिद्ध व० वर्जना भा० कहना वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे ने० नारकी से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १ ॥ ८ ॥

सूत्र

वि सवीरिया । जेसिणं नेरइयाणं नात्थि उट्ठाणे जाव परक्कमे तेणं नेरइया लाद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया । से तेणट्ठेणं जहा नेरइया एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया । मणूसा जहा ओहिया जीवा नवरं सिद्ध वज्जा भाणियव्वा । वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा नेरइया ॥ सेवं भंते २ त्ति ॥ पढमेसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ८ ॥ * * *

भावार्थ

वीर्य से वीर्य सहित हैं परंतु करण वीर्य से वीर्य रहित हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहागया है कि नारकी के जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित है. जैसा नारकी का कहा वैसे ही मनुष्य छोडकर अन्य सब दंडक का कहना मनुष्य का समुच्चय जीव जैसे कहना परंतु समुच्चय जीव के दंडक में सिद्ध है यह यहां नहीं कहना अहो भगवन् ! आपने जो कहा व सत्य है यह पहिला शतकका आठवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ८ ॥ * *

सूत्र

उववज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी णेरइया णउववज्जंति, एवं उव्वट्टंतिवि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए ॥ एवं असखेज्ज वित्थडेसु तिण्णि गमा ॥१५॥ से णूणं भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता, कण्हलेस्से णेरइएसु उववज्जंति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जति ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ? गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु संकिलिस्समाणेसु कण्हलेस्सं परिणमइ कण्हलेस्सं परिणममाणेसु कण्हलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जंति से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता णीललेस्सेसु

भावार्थ

पृच्छा ? अहो गौतम ! समदृष्टि नहीं उत्पन्न होते हैं, मिथ्यादृष्टि नारकी उत्पन्न होते हैं, समामिथ्यादृष्टि नारकी नहीं उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही उद्वर्तन व अविरहित का जानना. संख्यात योजन के विस्तार वाले में जैसे तीन गमा कहे वैसे ही असंख्यात योजन के विस्तार वाले में तीन गमा जानना. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णलेशी, नीललेशी यावत् शुक्लेशी होकर क्या कृष्णलेशी नारकी में उत्पन्न होते हैं ? हां गौतम ! कृष्णलेशी यावत् उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहते हो ? अहो गौतम ! लेश्या स्थान के भेद में निर्मलता व मलिनता को प्राप्त होते हैं. इस तरह अशुद्ध लेश्या परिणमते कृष्ण

र्थ

जा० यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के वे० निवर्तने से ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम जी०जीव ल० लघुत्व को आ० आते हैं ॥ २ ॥ ए० ऐसे सं० संसार आ० बहुत क० करे प० थोडा क० करे दी० दीर्घ क० करे ह० छोटा क० करे अ० वारंवार भ्रमण करे वी० तीरे प० प्रशस्त च० चार अ० अप्रशस्त च०

सूत्र

गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्ल वेरमणेणं एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ २ ॥ एवं संसार आउली करेंति, एवं परित्ती करेंति, दीही करेंति, हस्सी करेंति, एवं अणुपरियट्टंति, एवं

भावार्थ

अवर्णवाद बोलना १७ माया मृषा और १८ मिथ्यादर्शन शल्य-देवगुरु धर्म से भी मन का मिथ्यात्व नाश नहीं होवे, इन अठारह कारनों से जीव अधोगति गमनरूप गुरुत्व धारण करता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव लघुत्व कैसे धारण करता है ? अहो गौतम ! प्राणातिपात से निवर्तना यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से निवर्तना इन अठारह कारनों से जीव लघुत्व प्राप्त कर सकता है ॥ २ ॥ उक्त अठारह पाप स्थानों के आचारण से जीव संसार प्रचुर करे, संसार परत्त करे, दीर्घ करे, ह्रस्व करे, संसार में वारंवार परिभ्रमण करे और संसार से उत्तीर्ण होवे. इन आठ में से लघुत्व, परित्त, ह्रस्वत्व व संसार का उल्लंघन ऐसे चार बोल प्रशस्त और गुरुत्व, संसार का प्रचूर करना, दीर्घ करना व संसार का उल्लंघन

शब्दार्थ भतिक अ० अतीव उ० सुंदर वि० है ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति से उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से ब० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित सं० संस्तीर्ण फु० स्पर्शा अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीव २ उ० सुंदर शोभते चि० है ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्रज्ञप्त सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र णं देवाणं देवलोया जहण्णेणं दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिईएहिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फुडा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभमाणा उवसोभमाणा चिट्ठंति ॥ ए-रिसगाणं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे णं असंजए जाव देवेसिया ॥ ९५ ॥ सेवं भंते ! भंते त्ति भगवं

भावार्थ संथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं. अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं. और इसी कारण से कितनेक असंयति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहीवे ॥ ९८ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पूछा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है. आप जैसा कहते हैं वैसा ही है अन्यथा नहीं है. इस प्रकार भगवन्त के

दर्थ जा० यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के वे० निवर्तने से ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम जी०जीव ल० लघुत्व को आ० आते हैं ॥ २ ॥ ए० ऐसे सं० संसार आ० बहुत क० करे प० थोडा क० करे दी० दीर्घ क० करे ह० छोटा क० करे अ० वारंवार भ्रमण करे वी० तीरे प० प्रशस्त च० चार अ० अप्रशस्त च०

सूत्र

गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्ल वेरमणेणं एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ २ ॥ एवं संसार आउली करेंति, एवं परित्ती करेंति, दीही करेंति, हस्सी करेंति, एवं अणुपरियट्टंति, एवं

भावार्थ

अवर्णवाद बोलना १७ माया मृपा और १८ मिथ्यादर्शन शल्य-देवगुरु धर्म से भी मन का मिथ्यात्व नाश नहीं होवे, इन अठारह कारनों से जीव अधोगति गमनरूप गुरुत्व धारण करता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव लघुत्व कैसे धारण करता है ? अहो गौतम ! प्राणातिपात से निवर्तना यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से निवर्तना इन अठारह कारनों से जीव लघुत्व प्राप्त कर सकता है ॥ २ ॥ उक्त अठारह पाप स्थानों के आचारण से जीव संसार प्रचुर करे, संसार परत्त करे, दीर्घ करे, ह्रस्व करे, संसार में वारंवार परिभ्रमण करे और संसार से उत्तीर्ण होवे. इन आठ में से लघुत्व, परित्त, ह्रस्वत्व व संसार का उल्लंघन ऐसे चार बोल प्रशस्त और गुरुत्व, संसार का प्रचूर करना, दीर्घ करना व संसार का उल्लंघन

पदार्थ — सातवा उ० आकाशान्तर ज० जैसे त० तनुवात ए० ऐसे ग० गुरुलघु ग० घनवात घ० घनोदधि पु० पृथ्वी दी० द्वीप स० सागर वा० क्षेत्र ॥ ४ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या ग० गुरु जा० यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु से० वह के०

सूत्र — घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी, उवासंतराइं सव्वाइं जहा सत्तमे उवासंतरे। जहा तणुवाए एवं गरुयलहुए घणवाय घणउदहि, पुढवी, दीवाय, सागरा, वासा, ॥ ४ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं गरुया जाव अगरुलहुया ? गोयमा! नो गुरुया, नोलहुया, गुरुयलहुयावि, अगरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! वेउव्विय

भावार्थ — आकाशान्तर जैसे कहना. अर्थात् जैसे सातवा आकाशान्तर गुरु, लघु, व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है वैसेही इस का जानना. जैसे तनुवात का कहा वैसेही घनवात, घनोदधि, पृथ्वी, द्वीप, सागर व भरतादि क्षेत्र का जानना अर्थात् जैसे तनुवात गुरुलघु है वैसे ही उक्त सब पदार्थों गुरुलघु हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या गुरु, लघु, गुरुलघु या अगुरुलघु हैं ? अहो गौतम ! गुरु भी नहीं हैं, लघु भी नहीं हैं, परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी गुरु व लघु नहीं हैं परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय व तेजस शरीर की अपेक्षा से नारकी गुरुलघु हैं परंतु

शब्दार्थ ॥ ५ ॥ ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् जी० जीव च० चौथापद में ॥ ६ ॥ पो० पुद्गलास्ति काया भं० भगवन् किं० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गु० गुरु नो० नहीं ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु से० वह के० कैसे गो० गौतम गु० गुरुलघु द० द्रव्य प० प्रत्यय नो० नहीं गुरु नो० नहीं ल० लघु गु० गुरु लघु नो० नहीं अ० अगुरुलघु अ० अगुरु लघु द० द्रव्य प० प्रत्यय नो० नहीं

सूत्र त्थिकाए चउत्थपएणं ॥ ६ ॥ पोग्गलत्थि काएणं भंते ! किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगुरुयलहुए ? गोयमा! नो गुरुए, नोलहुए, गुरुयलहुएवि, अगुरुयलहुएवि सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! गुरुयलहुय दव्वाइं पडुच्च णो गरुए णो लहुए, गरुय लहुए, नो अगुरुयलहुए । अगुरुयलहुय दव्वाइं पडुच्च णो गुरुए, नोलहुए, नोगुरुयल-

भावार्थ अगुरुलघु जानना. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! पुद्गलास्ति काय क्या गुरु, लघु, गुरुलघु या अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! पुद्गलास्ति काय गुरु नहीं है, लघु नहीं है परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो भगवन् ! किस तरह से पुद्गलास्तिकाय गुरु नहीं है लघु नहीं है परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! औदारिक, वैक्रेय, आहारक व तेजस इन गुरुलघु द्रव्य आश्रित पुद्गलास्तिकाय गुरु नहीं है, लघु नहीं है, परंतु गुरुलघु है. व अगुरुलघु नहीं है और कार्माण, मन व भाषा इन तीन अगुरुलघु द्रव्यकी अपेक्षा से पुद्गलास्तिकाय गुरु

शब्दार्थ

मनिक अ० अतीव उ० सुंदर नि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति से उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से ब० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित सं० संस्तीर्ण फु० स्पर्श अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीव २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम तें० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्रज्ञप्त सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र

णं देवाणं जहण्णणं दस वास सहस्स ठिईइ, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिईइ-हिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फु-डा, अवगाढगाढ सिरिए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥ ए-रिसगाणं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे णं असंजए जाव देवेसिया ॥ ४५ ॥ सेवं भंते ! भंते त्ति भगवं

भावार्थ

संथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग में भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं. अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं. और इसी कारण से कितनेक असंयति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहीवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है. आप जैसा कहते हैं, वैसा ही है अन्यथा नहीं है. इस प्रकार भगवन्त के

शब्दार्थ लेश्या ॥ ९ ॥ दि० दृष्टि दं० दर्शन ना० ज्ञान अ० अज्ञान स० संज्ञा च० चौथे पद में ने० जानना हे० नीचे के च० चार स० शरीर ना० जानना त० तीसरे पदमें क० कार्माण च० चौथा पद में० म० मनजोग व० वचनजोग च० चौथा पद में का० कायाजोग त० तीसरापद में सा० साकारोपयोग अ० अनाकारोपयोग च० चौथापद में स० सर्व द्रव्य स० सर्व प्रदेश स० सर्व पर्यव ज० जैसे पो० पुद्गलास्ति काय ती०

सूत्र चउत्थपएणं । एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ ९ ॥ दिट्ठी--दंसण--नाण--अन्नाण--सण्णाओ चउत्थपएणं णेयव्वाइं , हेट्ठिल्ला चत्तारि सरीरा नायव्वा तइएणं पएणं ॥ कम्मय चउत्थएणं पएणं, ॥ मणजोगे, वइजोगे, चउत्थएणं पदेणं ॥ कायजोगो तइयएणं पएणं ॥ सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थपदेणं ॥ सव्वदव्वा, सव्वपदेसा,

भावार्थ कृष्ण लेश्याका कहा वैसे ही नील, कापुत, तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्या का जानना. ॥ ९ ॥ दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान व संज्ञा में अगुरुलघुत्व जानना. उदारिक, वैक्रेय, आहारक व तेजस शरीर में गुरु लघुत्व और कार्माण शरीर में अगुरु लघुत्व जानना. मनयोग वचन योग में अगुरु लघुत्व और काय योग में गुरुलघुत्व जानना. साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त उपयोग में अगुरु लघुत्व. धर्मास्तिकायादि षड्द्रव्य, उन के सब प्रदेश, व सब पर्यवको पुद्गलास्तिकाय जैसे गुरुलघु व अगुरुलघु दोनों कहना.

शब्दार्थ

भनिक अ० अतीव उ० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति से उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से ब० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित सं० संस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीत २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र

णं देवाणं देवलोया जहण्णेणं दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिईए-हिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फु-डा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥ ए-रिसगाणं गोयमा ! तोसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे णं असंजए जाव देवोसिया ॥ ४५ ॥ सेवं भंते ! भंते ति भगवं

भावार्थ

संथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं. अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं. और इसी कारण से कितनेक असंयाति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है. आप जैसा कहते हैं; वैसा ही है अन्यथा नहीं है. इस प्रकार भगवन्त के

शब्दार्थ लेश्या ॥ ९ ॥ दि० दृष्टि दं० दर्शन ना० ज्ञान अ० अज्ञान स० संज्ञा च० चौथे पद में ने० जानना हे० नीचे के च० चार स० शरीर ना० जानना त० तीसरे पदमें क० कार्माण च० चौथा पद में० म० मनजोग व० वचनजोग च० चौथा पद में का० कायाजोग त० तीसरापद में सा० साकारोपयोग अ० अनाकारोपयोग च० चौथापद में स० सर्व द्रव्य स० सर्व प्रदेश स० सर्व पर्यव ज० जैसे पो० पुद्गलास्ति काय ती०

सूत्र चउत्थपएणं । एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ ९ ॥ दिट्ठी—दंसण—नाण—अन्नाण—सण्णाओ चउत्थपएणं णेयव्वाइं , हेट्ठिल्ला चत्तारि सरीरा नायव्वा तइएणं पएणं ॥ कम्मय चउत्थएणं पएणं, ॥ मणजोगे, वइजोगे, चउत्थएणं पदेणं ॥ कायजोगो तइयएणं पएणं ॥ सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थपदेणं ॥ सव्वदव्वा, सव्वपदेसा,

भावार्थ कृष्ण लेश्याका कहा वैसे ही नील, कापुत, तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्या का जानना. ॥ ९ ॥ दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान व संज्ञा में अगुरुलघुत्व जानना. उदारिक, वैक्रेय, आहारक व तेजस शरीर में गुरु लघुत्व और कार्माण शरीर में अगुरु लघुत्व जानना. मनयोग वचन योग में अगुरु लघुत्व और काय योग में गुरुलघुत्व जानना. साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त उपयोग में अगुरु लघुत्व. धर्मास्तिकायादि षड्द्रव्य, उन के सब प्रदेश, व सब पर्यवको पुद्गलास्तिकाय जैसे गुरुलघु व अगुरुलघु दोनों कहना.

शब्दार्थ भनिक अ० अतीव उ० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति से उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से व० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित सं० संस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीत २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र णं देवाणं देवलोया जहण्णेणं दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिईए-हिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फु-डा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥• ए-रिसगाणं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे णं असंजए जाव देवेसिया ॥ ४५ ॥ सेवं भंते ! भंते ति भगवं

भावार्थ संथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं. अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं. और इसी कारण से कितनेक असंयति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है. आप जैसा कहते हैं; वैसा ही है अन्यथा नहीं है. इस प्रकार भगवन्त के

पदार्थ — करने वाले अं० चरिम शरीरी ब० बहुत मोहवाले पु० पाहिले वि० विचरकर अ० अथ प० पीछे सं० संवृत का० कालकरे त० पीछे सि० सिझे बु० बुझे मु० मुक्त होवे जा० यावत् अं० अंतकरे हं० हां गो० गौतम कं० कांक्षा प० द्वेष खी० क्षीण जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ १३ ॥ अ० अन्य तीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं भा० विशेष कहते हैं प० कहते हैं प० प्ररूपते हैं ए० एक जी० जीव ए० एक

सूत्र — गोयमा ! अकोहत्तं जाव पसत्थं ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! कंखापदोसे खीणे समणे णिग्गंथे अंतकरे भवइ अंतिम सारीरिएवा, बहुमोहे विय णं पुव्विं विहरित्ता, अह पच्छा संवुडे कालं करेइ तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, जाव अंतं करेइ ? हंता गोयमा ! कंखापदोसे खीणे जाव अंतंकरेइ ॥ १३ ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति, एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आ-

भावार्थ — कांक्षा-मिथ्यात्व-मोहनीय कर्मक्षय करनेवाला श्रमण क्या दुःख का अंत करनेवाला होवे ? अथवा चरिम शरीरी व पहिले मोह में रमण करके पुनः लघुभूत शुद्ध बना हुवा काल करें तो क्या सिझता, बुझता, मुक्त होता यावत् सब दुःखों का अंत करता है ? हां गौतम ! कांक्षा प्रद्वेष का क्षय करनेवाला, चरिम शरीरी व मोहका क्षय करनेवाला संसार का अंत करे ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं, बोलते हैं, हेतु सहित कहते हैं, व प्ररूपते हैं कि एकही जीव एक समय में दो प्रकार के आयुष्य का बंध करता है:

शब्दार्थ जीव भं० भगवन् स० स्वकृत दु० दुःख वे० वेदता है गो० गौतम अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वे० वेदे से० वह के० कीसतरह भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वेदे गो० गौतम उ० उदयमें आया वे० वेदे णो० नहीं अ०

सूत्र कडं दुक्खं वेदेइ ? गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं नो वेदेइ । सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुचइ अत्थेगइयं वेदेइ अत्थेगइयं नोवेदेति ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेति णो अणुदिण्णं वेदेति. सेतेणट्ठेणं एवं वुचइ गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं णोवेदेइ एवं चउवीसदंडएणं जाव वेमाणिए ॥ जीवाणं भंते सयं कडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया वेदेंति, अत्थेगइया णो वेदेंति. । से केणट्ठेणं भंते एवं वुचइ ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेंति. णो अणुदिण्णं वेदेंति ॥ एवं जाव वेमाणिया

भावार्थ नेक स्वकृत कर्मवेदे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक स्वकृत कर्मों वेदते हैं और कितनेक नहीं वेदते हैं. अहो गौतम ! उदय में आये हुवे कर्म वेदते हैं और उदय में नहीं आये हुवे कर्म नहीं वेदते हैं और इसी कारण से ऐसा कहा है कि कितनेक जीव स्वकृत दुःखवेदे और कितनेक जीव स्वकृत दुःख नहीं वेदे. ऐसे ही पृथक् २ चौविसही दंडक आश्रित जानना. उपर जैसे एक जीव आश्रित कहा है वैसेही अनेक जीव आश्रित जानना. अहो भगवन् जीव स्वकृत आयुष्य वेदे ? अहो गौतम ! कितनेक वेदे और कितनेक वेदे

शब्दार्थ — से प० परभव का आयुष्य प० बांधे प० परभवका आयुष्य प० बांधने से इ० यह भवका आ० आयुष्य प० बांधे ए० ऐसे ए० एक जीव ए० एक समय में दो० दो आयुष्य प० बांधे इ० इस भवका आ० आयुष्य प० परभवका आयुष्य से० वह क० कैसे ए० इस भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम जं० जो अ० अन्यती-

सूत्र — गोयमा ! जण्णंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव परभवियाउयंच, जे ते एव माहंसु मिच्छंते एव माहंसु ॥ अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेइ. तंजहा—इहभवियाउयंवा, परभवियाउयंवा. । जं समयं इह भवियाउयं पकरेइ णो तं समयं परभवियाउयं पकरेइ, जं समयं परभवियाउयं पकरेइ णो तं समयं इह भवियाउयं पकरेइ, इह भविया-उयस्स पकरणयाए णो परभवियाउयं पकरेइ, परभवियाउयस्स पकरणयाए णो

भावार्थ — करता है तो अहो भगवन् ! यह किस तरह से है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थी जो ऐसा कहते हैं कि एक जीव एक समय में इस भव व परभव का आयुष्य बांधता है वगैरह जो कहते हैं सो मिथ्या है. परंतु अहो गौतम ! मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक जीव एक समय में इस भवका अथवा परभव का ऐसे दोनों में से एक भवका आयुष्य बांधता है. जिस समय में इस भवका आयुष्य बांधता है उस समय में परभव का आयुष्य नहीं बांधता है और जिस समय में परभव का आयुष्य बांधता है उस

शब्दार्थ जीव भं० भगवन् स० स्वकृत दु० दुःख वे० वेदता है गो० गौतम अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वे० वेदे से० वह के० कीसतरह भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वेदे गो० गौतम उ० उदयमें आया वे० वेदे णो० नहीं अ०

सूत्र कडं दुक्खं वेदेइ ? गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं नो वेदेइ । सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ अत्थेगइयं वेदेइ अत्थेगइयं नोवेदेति ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेति णो अणुदिण्णं वेदेति. सेतेणट्ठेणं एवं वुच्चइ गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं णोवेदेइ एवं चउवीसदंडएणं जाव वेमाणिए ॥ जीवाणं भंते सयं कडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया वेदेंति, अत्थेगइया णो वेदेंति. । से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेंति. णो अणुदिण्णं वेदेंति ॥ एवं जाव वेमाणिया

भावार्थ नेक स्वकृत कर्म वेदे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक स्वकृत कर्मों वेदते हैं और कितनेक नहीं वेदते हैं. अहो गौतम ! उदय में आये हुवे कर्म वेदते हैं और उदय में नहीं आये हुवे कर्म नहीं वेदते हैं और इसी कारण से ऐसा कहा है कि कितनेक जीव स्वकृत दुःख वेदे और कितनेक जीव स्वकृत दुःख नहीं वेदे. ऐसे ही पृथक् २ चौविसही दंडक आश्रित जानना. उपर जैसे एक जीव आश्रित कहा है वैसेही अनेक जीव आश्रित जानना. अहो भगवन् जीव स्वकृत आयुष्य वेदे ? अहो गौतम ! कितनेक वेदे और कितनेक वेदे

शब्दार्थ उस समय में पा० पार्श्वनाथ के अ० शिष्य का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० तहां उ० आये उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व०कहा थे० स्थविर सा० सामायिक ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर सा० सामायिक का अ० अर्थ ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान का अर्थ ण०नहीं या०जानते हैं थे०स्थविर सं०संयम व संयम का अर्थ न०नहीं जानते हैं थे०स्थविर सं० संवर ण०

सूत्र थेरा सामाइयं ण याणंति, थेरा सामाइयस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा पच्चक्खाणं नयाणंति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा संयमं णयाणंति, थेरा संजमस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा संवरं णयाणंति, थेरा संवरस्स अट्ठं नयाणंति, थेरा विवेगं णयाणंति, थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा विउस्सग्गं णयाणंति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठं नयाणंति ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी, जाणामोणं

भावार्थ भगवन्त को ऐसा कहने लगे. अहो स्थविर ! तुम समताभाव रूप सामायिक नहीं जानते हो, कर्म का अनुपादान व निर्जरारूप सामायिक का प्रयोजन को नहीं जानते हो, पोरिशी वगैरह प्रत्याख्यान तुम नहीं जानते हो, आश्रव द्वार निरोध रूप प्रत्याख्यानका प्रयोजन तुम नहीं जानते हो, पृथिव्यादि का संरक्षण रूप संयम तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संयम का अर्थ तुम नहीं जानते हो, इन्द्रिय

शब्दार्थ श्वासले गो॰ गौतम णो॰ नहीं इ॰ यह अर्थ स॰ समर्थ से॰ वह के॰ कैसे भं॰ भगवन् ए॰ ऐसा वु॰ कहा जाता है णे॰ नारकी णो॰ नहीं स॰ सर्व स॰ समाहारी णो॰ नहीं स॰ सर्व स॰ समशरीरी णो॰ नहीं स॰ सर्व स॰ सरिखा उ॰ उश्वास णि॰ निश्वासले गो॰ गौतम णे॰ नारकी दु॰ दोप्रकार के प॰ प्ररूपे म॰ महा शरीरी अ॰ अल्प शरीरी त॰ तहां जे॰ जो म॰ महा शरीरी ते॰ वे ब॰ बहुत पो॰ पुद्गल आ॰ आहार

सूत्र चा।तंजहा महासरीराय अप्पसरीराय। तत्थणं जेते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले ऊससंति, बहुतराए पोग्गले णीससंति, अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खणं परिणामेंति, अभिक्खणं ऊससंति, अभिक्खणं णीससंति, ॥ तत्थणं जेते अप्पसरीरा तेणं अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति,

भावार्थ अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से सब नारकी सरिखे आहार, शरीर, श्वासोश्वास वाले नहीं हैं ? अहो गौतम ! नारकी दोप्रकार के कहे हैं. १ बडे शरीर वाले और २ छोटे शरीर वाले. * जो बडे शरीर वाले हैं. वे बहुत दुःखी होते हुवे बहुत पुद्गलों का आहार करे, बहुत पुद्गलों परिणमावे बहुत पुद्गलों को उश्वास रूप से ग्रहण करे, बहुत पुद्गलों को निश्वासरूप से नीकाले और भी वारंवार

* नारकी की भवधारनीय अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट ५०० धनुष्य और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन प्रमाण.

शब्दार्थ — उस समय में पा० पार्श्वनाथ के अ० शिष्य का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० तहां उ० आये उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व०कहा थे० स्थविर सा० सामायिक ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर सा० सामायिक का अ० अर्थ ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान का अर्थ ण०नहीं या०जानते हैं थे०स्थविर सं०संयम व संयम का अर्थ न०नहीं जानते हैं थे०स्थविर सं० संवर ण०

सूत्र — थेरा सामाइयं ण याणंति, थेरा सामाइयस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा पच्चक्खाणं नयाणंति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा संयमं णयाणंति, थेरा संजमस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा संवरं णयाणंति, थेरा संवरस्स अट्ठं नयाणंति, थेरा विवेगं णयाणंति, थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा विउस्सग्गं णयाणंति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठं नयाणंति ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी, जाणामोणं

भावार्थ — भगवन्त को ऐसा कहने लगे. अहो स्थविर ! तुम समताभाव रूप सामायिक नहीं जानते हो, कर्म का अनुपादान व निर्जरारूप सामायिक का प्रयोजन को नहीं जानते हो, पोरिशी वगैरह प्रत्याख्यान तुम नहीं जानते हो, आश्रव द्वार निरोध रूप प्रत्याख्यानका प्रयोजन तुम नहीं जानते हो, पृथिव्यादि का संरक्षण रूप संयम तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संयम का अर्थ तुम नहीं जानते हो, इन्द्रिय

शब्दार्थ — यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम णे० नारकी दु० दोप्रकार के पु० पहिले के उत्पन्न प० पश्चात् उ० उत्पन्न त० तहां जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे अ० अल्प कर्म वाले त० तहां ज० जो प० पश्चात् उ० उत्पन्न ते० वे म० महाकर्म वाले ॥ ३ ॥ णे०

सूत्र — वुच्चइ? गोयमा! णेरइयादुविहाप०तं० पुव्वोववण्णगाय पच्छोववण्णगाय तत्थणं जे ते पुव्वोववण्णगा तेणं अप्पकम्मतरा तत्थणं जे ते पच्छोववण्णगा तेणं महाकम्मतरा सेतेणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समवण्णगा? गोय-

भावार्थ — गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम! नारकी के दो भेद १ पूर्वोत्पन्न-पहिले उत्पन्न हुवे २ पश्चादुत्पन्न-पीछे से उत्पन्न हुवे उस में जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे अल्पकर्मवाले हैं क्योंकि उनों ने आयुःकर्म तथा अन्य कर्म भेद हुवे हैं व जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे बहुत कर्मवाले हैं क्योंकि उनों ने आयुष्य कर्म बहुत थोडा छेदा हुवा है ÷ इसलिये सब नारकी सरीखे कर्म वाले नहीं हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरीखे

÷ यहां सरीखे स्थिति वाले नारकी को अंगीकार करके यह सूत्र कहा है; अन्यथा कोई एक सागरोपम की स्थिति वाला नारकी बहुत स्थिति भोगव कर शेष एक पल्योपम रहे पीछे दूसरा दश हजार वर्ष की स्थिति वाला नारकी उत्पन्न होवे तो; क्या पहिले उत्पन्न हुवा शेष पल्योपम के आयुष्य वाला नारकी

शब्दार्थ यावत् जा० जानता हूं अ० आर्य वि० कायोत्सर्ग का अर्थ त० तब का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० कहा ज० यदि अ० आर्य तु० तुम जा० जानते हो सा० सामायिक जा० जानते हो सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् जा० जानते हो वि० कायोत्सर्ग का अर्थ के० क्या अ० आर्य सा० सामायिक के० क्या सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् के० क्या वि० कायोत्सर्ग का अर्थ त० तब थे० स्थविर भ० भगवन् का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार को

सूत्र अट्ठे ? तएणं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—आयाणे अज्जो! सामाइए, आयाणे अज्जो सामाइयस्स अट्ठे, जाव विउस्सग्गस्स अट्ठे॥ तएणं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते एवं वयासी—जइ भे अज्जो ! आया सामाइए आया सामाइयस्स अट्ठे जाव आया विउस्सग्गस्स अट्ठे, अवहट्टु कोह माणमाया लोभे, किमट्ठं अज्जो गरहह ? कालासा ! संजमट्ठयाए । से भंते ! किं गरहासंजमे, अग-

भावार्थ ऐसे बोले की यदि तुम सामायिक, सामायिकका अर्थ यावत् कायोत्सर्ग का अर्थ जानते हो तो अहो आर्य! सामायिक क्या है, सामायिक का अर्थ क्या है, यावत् कायोत्सर्ग का अर्थ क्या है ? तब स्थविर भगवंत कालासवेशित पुत्र नामक अनगार को ऐसे बोले की अहो आर्य ! हमारे मतमें सामायिक गुण प्रतिपन्न जीव को ही सामायिक कही है, आत्मा को ही सामायिक का अर्थ कहा है यावत् आत्मा को ही कायो

शब्दार्थ यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम णे० नारकी दु० दोप्रकार के पु० पहिले के उत्पन्न प० पश्चात् उ० उत्पन्न त० तहां जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे अ० अल्प कर्म वाले त० तहां ज० जो प० पश्चात् उ० उत्पन्न ते० वे म० महाकर्म वाले ॥ ३ ॥ णे०

सूत्र वुच्चइ? गोयमा ! णेरइया दुविहा प० तं० पुव्वोववण्णगाय पच्छोववण्णगाय तत्थणं जे ते पुव्वोववण्णगा तेणं अप्पकम्मतरा तत्थणं जे ते पच्छोववण्णगा तेणं महाकम्मतरा सेतेणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समवण्णगा ? गोय-

भावार्थ गौतम ? यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम! नारकी के दो भेद १ पूर्वोत्पन्न-पहिले उत्पन्न हुवे २ पश्चादुत्पन्न-पीछे से उत्पन्न हुवे उस में जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे अल्पकर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयुःकर्म तथा अन्य कर्म भेदे हुवे हैं व जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे बहुत कर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयुष्य कर्म बहुत थोडा छेदा हुवा है ÷ इसलिये सब नारकी सरीखे कर्म वाले नहीं हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरीखे

÷ यहां सरिखि स्थिति वाले नारकी को अंगीकार करके यह सूत्र कहा है; अन्यथा कोइ एक सागरोपम की स्थिति वाला नारकी बहुत स्थिति भोगव कर शेष एक पल्योपम रहे पीछे दूसरा दश हजार वर्ष की स्थिति वाला नारकी उत्पन्न होवे तो; क्या पहिले उत्पन्न हुवा शेष पल्योपमके आयुष्य वाला नारकी

शब्दार्थ

क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ किं० क्या अ० आर्य ग० गर्हते हो का० कालासवेसित सं० संयम केलिये से० वह भं० भगवन् किं० क्या ग० गर्हा सं० संयम अ० अगर्हा सं० संयम का० कालासवेसित ग० गर्हा सं० संयम नो० नहीं अ० अगर्हा सं० संयम ग० गर्हा स० सब दो० दोष प० क्षपावे स० सब वा० मिथ्यात्व प० जानकर ए० ऐसे आ० आत्मा स० संयम में उ० स्थिर भ० होवे उ० पुष्ट भ० होवे उ० उपस्थित भ० होवे ए० यहां से० वह का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार सं० स्वयं बुद्ध थे०

सूत्र

अणभिगमेणं, अदिट्ठाणं अस्सुयाणं असुयाणं, अविण्णायाणं अव्वोगडाणं अव्वोच्छिण्णाणं, अणिज्जूढाणं, अणुवधारियाणं, एयमट्ठं णो सद्दहिए, णोपत्तिइए णोरोइए, इयाणिं भंते ! एएसिणं पयाणं जाणणयाए, सवणयाए, बोहियाए, अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाणं मुयाणं विण्णायाणं, वोगडाणं, वोच्छिण्णाणं, णिज्जूढाणं उवधारियाणं; एयमट्ठं सद्दहामि, पत्तियामि, रोएमि, एवमेयं सेजहेयं तुब्भे वयह ॥ तएणंते थेरा भगवंतो कालासवेसिय पुत्त अणगारं एवं वयासी

भावार्थ

अहो अनगार ! गर्हा संयम है परंतु अगर्हा संयम नहीं है. गर्हा से सब रागादि दोषों अथवा पूर्व कृत पाप क्षय होता है और सब मिथ्यात्व ज्ञान परिज्ञान से जानकर प्रत्याख्यान परिज्ञान से छूटता है इस तरह से हमारे मत में आत्मा स्थिर व पुष्ट होता है. ऐसा सुनकर कालासवेशित पुत्र नामक अनगारने स्थविर भगवन्त को वंदना नमस्कार किया. वंदना नमस्कार करके कहने लगे कि अहो भगवन् ! मुझे

शब्दार्थ

उत्पन्न हुवे ते० वे अ० अविशुद्ध लेश्यावाले ॥ ८ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समवेदनावाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी दु० दोप्रकार के स० संज्ञी अ० असंज्ञी

सूत्र

वण्णगा तेणं विसुद्धलेसतरागा । तत्थणं जे ते पच्छोववण्णगा तेणं अविसुद्ध लेसतरागा । सेतेणट्ठेणं गोयमा ! ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समवेदणा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्णिभूयाय, असण्णिभूयाय । तत्थणं जेते सण्णिभूया तेणंमहावेदणा, तत्थणं जे

भावार्थ

लेश्या वाले होते हैं; क्यों की उन को अल्प कर्म रहते हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अशुद्ध लेश्या वाले हैं क्यों कि उन को बहुत कर्म रहते हैं इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी लेश्या वाले नहीं हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी को सरिखी वेदना है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. किस कारण से ? अहो गौतम ! नारकी के दो भेद १. संज्ञीभूत सो समदृष्टि व असंज्ञीभूत सो मिथ्यादृष्टि. उस में जो संज्ञी भूत समदृष्टि हैं वे बहुत वेदना वाले हैं क्यों कि सम्यग् ज्ञान से पूर्वकृत कर्म विपाक की स्मृति होनेसे अती दुःख होवे और पश्चाताप करे कि मैंने अरिहंत प्ररूपित धर्म पाला नहीं इस कारण से उन को मानसिक दुःख बहुत होवे. और जो असंज्ञीभूत-मिथ्यादृष्टि हैं वे अल्पवेदना वाले हैं क्यों कि वे अपने कृतकर्म को नहीं जानते हैं इस से उन को मानसिक दुःख अल्प रहता है. कितनेक

पदार्थ

ए० यह प० पद जा० जाने त० सुने उ० अवधारे ए० यह अर्थ स० श्रद्धता हूं प० प्रतीति करताहूं ए० ऐसे ज० जैसे तु० तुम व० कहते हो त० तब थे० स्थविर भ० भगवान् का० कालासवेसित अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहा स० श्रद्धा करो अ० आर्य प० प्रतीति करो रो० रुचिकरो ज० जैसे अ० मैं व० कहता हूं त० तब का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवन्त को वं० वंदनकर न० नमस्कारकर इ० इच्छता हूं तु० तुमारी अं० पास चा० चार महाव्रत ध० धर्म से पं० पांच म० महाव्रत स० प्रतिक्रमण सहित ध० धर्म उ० अंगीकार करके वि० विचरने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० नहीं

सूत्र

मा पडिबंधं करेह, तएणं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंप-ज्जित्ताणं विहरइ ॥ तएणं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणिवासाणि सामण्ण परि-

भावार्थ

यह अर्थ अच्छी तरह से मैंने स्वीकार किया है, अब मैं इन की श्रद्धा, प्रतीति व रुचि करता हूं आपने जो कहा है वैसाही भाव है. तब स्थविर भगवंत कालासवेशित पुत्र नामक अनगार को बोले की अहो आर्य! जो मैं कहताहूं उन वचनों की तुम श्रद्धा प्रतीति व रुचि करो. तब कालासवेशित पुत्र नामक अनगार श्री स्थविर भगवंत को वंदना नमस्कार कर के बोले की अहो भगवन्! मैं आपकी समीप चार महाव्रत रूप धर्म से प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत रूप धर्म अंगीकार करने को-इच्छता हूं. तब स्थ-

शब्दार्थ आरंभिकी प० प० पारिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांच क्रिया आ० आरंभिकी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ए० ऐसे स० समामिथ्या दृष्टि को भी ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम आयुष्यवाले स० सम उत्पन्न गो० गौतम णो० नहीं

सूत्र मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, । तत्थणं जे ते मिच्छद्दिट्ठी तेसिणं पंचकिरिया ओ कज्जंति तं० आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवंसम्मामिच्छदिट्ठीणंपि. सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥७॥ णेरइयाणं भंते सव्वेसमाउया सव्वे समोववण्णगा? गोयमा!

भावार्थ क्रिया लगती हैं १. पृथिव्यादिक का आरंभसो आरंभिकी २ शरीरादिपर ममत्व सो पारिग्रहिकी ३ वक्रपना व क्रोध, मान व माया युक्त स्वभावसो मायाप्रत्ययिकी और ४ निवृत्ति के अभाव से जो क्रिया लगेसो अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टी नारकी को पांच क्रिया लगे. उक्त चार क्रियायों में मिथ्यादर्शन प्रत्यायिक क्रिया बढी. और ऐसे ही समपिथ्यादृष्टी को जानना. इस कारण से अहो गौतम! नारकी को सरिखि क्रिया नहीं हैं. ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! सब नारकी सरीखे आयुष्य वाले हैं? और सब सरीखे-एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन्! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं हैं? अहो गौतम! नारकी के चार भेद कहे हैं. १. कितनेक सम आयुष्य वाले हैं और एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं २ कितनेक. सम आयुष्यवाले हैं विषम उत्पन्न होते हैं अर्थात्

शब्दार्थ

धे आ० आराधकर च० चरम उ० श्वासोश्वास से सि० सिद्ध बु० बुद्ध मु० मुक्त प० परिनिवृत्त स० सर्व दुःख से प०मुक्त भं० भगवन् त्ति० ऐसा ॥ १५ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वंदना कर न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले भं० भगवन् से० शेठ त० दरिद्री कि० रंक ख० क्षत्रिय स० सरिखी अ० अप्रत्याख्यान कि० क्रिया क० करे हं० हां० गो० गौतम

सूत्र

अहियासिज्जइ; तमट्ठं आराहेइ आराहेइत्ता चरमेहिं उस्सास नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुए सव्वदुक्खप्पहीणे भंतेत्ति ॥ १५ ॥ भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता एवं वयासी सेणूणं भंते ! सेट्ठिस्सय तणुयस्स,

भावार्थ

पना, भूमिशैय्या, काष्टशैय्या, केशलोचन, ब्रह्मचर्य, परघर प्रवेश, प्राप्ति, अप्राप्ति, ऊंच नीच इन्द्रियों के समूह और बावीस परिषह के उपसर्ग सहन करते थे; उसे आराधकर चरम श्वास नीश्वास में सिद्ध बुद्ध यावत् सब दुःखों से रहित हुवे. अहो भगवन् ! यह आपका वचन सत्य है ॥ १५ ॥ क्रिया रहित होने से सिद्ध होते हैं इसलिये क्रिया का प्रश्न करते हैं. गौतम स्वामीने महावीर भगवंत को वंदना नमस्कार करके ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! श्रेष्टि, दरिद्री, कृपण व क्षत्रिय को क्या एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है ? हां गौतम ! श्रेष्टि, दरिद्री, कृपण व क्षत्रिय को एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है. अहो भगवन् ! सब को एक सरिखी क्रिया लगनेका क्या कारन ? अहो गौतम !

शब्दार्थ आरंभिकी प० प० पारिग्रहिकी मा० मायाप्रत्यिकी अ० अप्रत्याख्यानिकिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांच क्रिया आ० आरंभिकी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ए० ऐसे स० समभिथ्या दृष्टि को भी ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम आयुष्यवाले स० सम उत्पन्न गो० गौतम णो० नहीं

सूत्र मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, । तत्थणं जे ते मिच्छदिट्ठी तेसिणं पंचकिरिया ओ कज्जंति तं० आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवंसम्मामिच्छदिट्ठीणंपि. सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥७॥ णेरइयाणं भंते सव्वेसमाउया सव्वे समोववण्णगा ? गोयमा !

भावार्थ क्रिया लगती है १ पृथिव्यादिक का आरंभसो आरंभिकी २ शरीरादिपर ममत्व सो पारिग्रहिकी ३ वक्रपना व क्रोध, मान व माया युक्त स्वभावसो मायाप्रत्ययिकी और ४ निवृत्ति के अभाव से जो क्रिया लगती अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टि नारकी को पांच क्रिया लगे. उक्त चार क्रियाओं में मिथ्यादर्शन प्रत्ययिक क्रिया बढी. और ऐसे ही समभिथ्यादृष्टि को जानना. इस कारण से अहो गौतम ! नारकी को सरिखि क्रिया नहीं है. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सरीखे आयुष्य वाले है ? और सब सरीखे-एक साथ उत्पन्न होनेवाले है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम ! नारकी के चार भेद कहे है. १ कितनेक सम आयुष्य वाले है और एक साथ उत्पन्न होनेवाले है २ कितनेक. सम आयुष्यवाले है विषम उत्पन्न होते है अर्थात्

शब्दार्थ अ० परिभ्रमण से० वह के० कैसे जा० यावत् आ० आधाकर्मी भुं० भोगवता जा० यावत् अ० परिभ्रमण करे गो० गौतम आ० आधाकर्मी भुं० भोगवता आ० आत्मा से ध० धर्म अ०अतिक्रमे आ०आत्मा से ध० धर्म अ०अतिक्रमता पु०पृथ्वी कायाकी ण०नहीं अ०अनुकंपाकरे जा०यावत् त०त्रसकाया की, ण०नहीं अ०

सूत्र वद्धाओ धाणिय बंधण बद्धाओ पकरेइ, जाव अणुपरियट्टइ। से केणट्ठेणं जाव आहाकम्मंणं भुंजमाणे जाव अणुपरियट्टइ? गोयमा! आहाकम्मंणं भुंजमाणे आयाए धम्मं अइक्कमइ आयाए धम्मं अइक्कममाणे पुढविकायं णावकंखइ जाव तसकायं णावकंखइ, जेसिंपियणं जीवाणं

भावार्थ [अनुभाग की अपेक्षा से] और प्रदेश बंध की अपेक्षा से क्या उपाचिने ! अहो गौतम ! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला श्रमण निर्ग्रंथ आयुष्य कर्म वर्जकर अन्य सात कर्म प्रकृतियों यदि शिथिल बंधनवाली होवे तो दृढ बंधनवाली बनावे, अल्प काल की स्थितिवाली को दीर्घ काल की स्थितिवाली बनावे, यावत् अनंत कालतक चतुर्गति रूप संसार में परिभ्रमण करे. अहो भगवन् ! किस कारन से आधाकर्मी भोगवनेवाला साधु सात कर्म प्रकृतियों को दृढ बंधनवाली बनावे यावत् चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण करे ? अहो गौतम ! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला आत्मासे धर्म अतिक्रमता है, आत्मा से धर्म अतिक्रमते पृथ्वीकायादि षट्काया की अनुकम्पा रहित होता है और जिन जीवों के शरीर का

शब्दार्थ ना प०विशेष क०कर्म व०वर्ण ले० लेश्या प०कहना पु०पूर्वोत्पन्न म०बहुत कर्मवाले अ०अविशुद्धवर्ण वाले अ० अविशुद्ध लेश्यावाले प०पीछे उत्पन्न हुवे प०प्रशस्त से०शेष तं० तैसे ए० ऐसे जा० यावत् थ०स्थनित कुमार

सूत्र तहा भाणियव्वा, णवरं कम्म, वण्ण, लेस्साओ, परिवण्णेयव्वाओ पुव्वोववण्णगा महाकम्मतरा, अविसुद्ध वण्णतरा, अविसुद्ध लेसतरा, पच्छोववण्णगा पसत्था से-संतंचेव. एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ ९ ॥ पुढविकाइयाणं आहारकम्म वण्ण लेस्सा

भावार्थ हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, और जो छोटे शरीर वाले होते हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं. जघन्य चतुर्थभक्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे. जघन्य सातस्तोक में उत्कृष्ट एकपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं, जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे महाकर्मी, अविशुद्ध वर्ण वाले, अविशुद्धलेश्या वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अल्प कर्म वाले, विशुद्ध वर्ण व विशुद्ध लेश्या वाले हैं. क्यों की पहिले उत्पन्न हुवे देवताओ अतिलुब्धता से दीव्य सुखों को भोगवकर बहुत शुभ कर्म का क्षय करते हैं और अशुभ कर्म का संचय करते हैं इस से कितनेक तिर्यंच पृथ्वी पानी वनस्पति में उत्पन्न होते हैं. और पीछे से उत्पन्न होने वाले के पुण्य के दल रह जाने से विशुद्ध वर्ण लेश्या वाले होते हैं शेष सब अधिकार नारकी जैसे कहना जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार का जानना. ॥ ९ ॥ पृथ्वी

पदार्थ

सि॰शिथिल वं॰बंधन ब॰बंधीहुइ प॰करे ज॰जैसे सं॰संवृति ण॰ विशेष आ॰ आयुष्य क॰ कर्म सि॰ कदाचित् वं॰ बांधे सिं॰ कदाचित् नो॰ नहीं वं॰ बांधे से॰ शेष त॰ तैसे जा॰ यावत् वी॰ तीरे से॰ वह के॰ केसे जा॰ यावत् वी॰ तीरे गो॰ गौतम फा॰ प्रासुक ए॰ शुद्ध भुं॰ भोगनता स॰ श्रमण नि॰ निर्ग्रंथ आ॰ आत्मा से ध॰ धर्म ना॰ अतिक्रमे नहीं आ॰ आत्मा से ध॰ धर्म अ॰ नहीं अ॰ अतिक्रमनेसे से पु॰ पृथ्वी काया की अ॰ अनुकंपाकरे जा॰ यावत् त॰ त्रसकाया की अ॰ अनुकंपाकरे जे॰ जिस जी॰

सूत्र

ओ पकरेइ जहा से संवुडेणं णवरं आउयंचणं कम्मं सि बंधइ सिय नो बंधइ सेसं तहेव जाव वीईवयइ । सेकेणट्ठेणं जाव वीईवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्कमइ, आयाए धम्मं अणइक्कममाणे पुढविकायं

भावार्थ

छोडकर अन्यसात कर्मों यदि दृढ बंधनवाले होवे तो शिथिल बंधनवाले बनावे और आयुष्य कर्म क्वचित् बांधे क्वचित् बांधे नहीं. उस में यदि आयुष्य कर्म का बंध करे तो वैमानिक देवता होवे और आयुष्य का बंध नहीं करे तो मुक्तिगामी जीव होवे. अहो भगवन् ! ऐसा किस तरह से होता है ? अहो गौतम ! प्रासुक एषणिक आहार भोगनेवाला आत्मधर्म का उल्लंघन नहीं करता है इस तरह उल्लंघन नहीं करता हुवा पृथ्वीकायादि षट्कायाकी अनुकम्पावाला होता है यावत् जिन जीवों के शरीर का आहार करता है, उन जीवों की भी अनुकम्पावाला होता है. इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि प्रासुक एषणिक

शब्दार्थ ना ण० विशेष क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या प० कहना पु० पूर्वोत्पन्न म० बहुत कर्मवाले अ० अविशुद्धवर्ण वाले अ० अविशुद्ध लेश्यावाले प० पीछे उत्पन्न हुवे प० प्रशस्त से० शेष तं० तैसे ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार

सूत्र तहा भाणियव्वा, णवरं कम्म, वण्ण, लेस्साओ, परिवण्णेयव्वाओ पुव्वोववण्णगा महाकम्मतरा, अविसुद्ध वण्णतरा, अविसुद्ध लेसतरा, पच्छोववण्णगा पसत्था सेसंतंचेव. एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ ९ ॥ पुढविकाइयाणं आहारकम्म वण्ण लेस्सा

भावार्थ हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, और जो छोटे शरीर वाले होते हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं. जघन्य चतुर्थभक्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे. जघन्य सातस्तोक में उत्कृष्ट एकपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं, जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे महाकर्मी, अविशुद्ध वर्ण वाले, अविशुद्धलेश्या वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अल्प कर्म वाले, विशुद्ध वर्ण व विशुद्ध लेश्या वाले हैं. क्यों की पहिले उत्पन्न हुवे देवताओं अतिलुब्धता से दीव्य सुखों को भोगवकर बहुत शुभ कर्म का क्षय करते हैं और अशुभ कर्म का संचय करते हैं इस से कितनेक तिर्यंच पृथ्वी पानी वनस्पति में उत्पन्न होते हैं. और पीछे से उत्पन्न होने वाले के पुण्य के दल रह जाने से विशुद्ध वर्ण लेश्या वाले होते हैं शेष सब अधिकार नारकी जैसे कहना जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार का जानना. ॥ ९ ॥ पृथ्वी

शब्दार्थ सि० शिथिल वं० बंधन व० बंधीहुइ प० करे ज० जैसे सं० संवृति ण० विशेष आ० आयुष्य क० कर्म सि० कदाचित् वं० बांधे सिं० कदाचित् नो० नहीं वं० बांधे से० शेष त० तैसे जा० यावत् वी० तीरे से० वह के० कैसे जा० यावत् वी० तीरे गो० गौतम फा० प्रासुक ए० शुद्ध भुं० भोगवता स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आत्मा से ध० धर्म ना० अतिक्रमे नहीं आ० आत्मा से ध० धर्म अ० नहीं अ० अतिक्रमनेसे से पु० पृथ्वी काया की अ० अनुकंपाकरे जा० यावत् त० त्रसकाया की अ० अनुकंपाकरे जे० जिस जी०

सूत्र ओ पकरेइ जहा से संवुडेणं णवरं आउयंचणं कम्मं सि वंधइ सिय नो बंधइ सेसं तहेव जाव वीईवयइ । सेकेणट्ठेणं जाव वीईवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्कमइ, आयाए धम्मं अणइक्कममाणे पुढविकायं

भावार्थ छोडकर अन्यसात कर्मों यदि दृढ बंधनवाले होवे तो शिथिल बंधनवाले बनावे और आयुष्य कर्म क्वचित् बांधे क्वचित् बांधे नहीं. उस में यदि आयुष्य कर्म का बंध करे तो वैमानिक देवता होवे और आयुष्य का बंध नहीं करे तो मुक्तिगामी जीव होवे. अहो भगवन् ! ऐसा किस तरह से होता है ? अहो गौतम ! प्रासुक एषणिक आहार भोगनेवाला आत्मधर्म का उल्लंघन नहीं करता है इस तरह उल्लंघन नहीं करता हुवा पृथ्वीकायादि षट्कायाकी अनुकम्पावाला होता है यावत् जिन जीवों के शरीर का आहार करता है, उन जीवों की भी अनुकम्पावाला होता है. इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि प्रासुक एषणिक

शब्दार्थ ना ण० विशेष क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या प० कहना पु० पूर्वोत्पन्न म० बहुत कर्मवाले अ० अविशुद्ध वर्ण वाले अ० अविशुद्ध लेश्यावाले प० पीछे उत्पन्न हुवे प० प्रशस्त से० शेष तं० तैसे ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार

सूत्र तहा भाणियव्वा, णवरं कम्म, वण्ण, लेस्साओ, परिवण्णेयव्वाओ पुव्वोववण्णगा महाकम्मतरा, अविसुद्ध वण्णतरा, अविसुद्ध लेसतरा, पच्छोववण्णगा पसत्था से-संतंचेव. एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ ९ ॥ पुढविकाइयाणं आहारकम्म वण्ण लेस्सा

भावार्थ हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, और जो छोटे शरीर वाले होते हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं. जघन्य चतुर्थभक्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे. जघन्य सातस्तोक में उत्कृष्ट एकपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं, जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे महाकर्मी, अविशुद्ध वर्ण वाले, अविशुद्धलेश्या वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अल्प कर्म वाले, विशुद्ध वर्ण व विशुद्ध लेश्या वाले हैं. क्यों की पहिले उत्पन्न हुवे देवताओ अतिलुब्धता से दीव्य सुखों को भोगवकर बहुत शुभ कर्म का क्षय करते हैं और अशुभ कर्म का संचय करते हैं इस से कितनेक तिर्यंच पृथ्वी पानी वनस्पति में उत्पन्न होते हैं. और पीछे से उत्पन्न होने वाले के पुण्य के दल रह जाने से विशुद्ध वर्ण लेश्या वाले होते हैं शेष सब अधिकार नारकी जैसे कहना जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार का जानना. ॥ ९ ॥ पृथ्वी

शब्दार्थ बालक वा० बालपना अ० अशाश्वत सा० शाश्वत पं० पंडित पं० पंडितपना अ० अशाश्वत हं० हां गो० गौतम अ० अस्थिर प० परिवर्तन होवे जा० यावत् पं० पंडितपना अ० अशाश्वत स० वह ए० ऐसा भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १ ॥ ९ ॥ + ×

सूत्र असासयं सासए पंडिए पंडियत्तं असासयं ? हंता गोयमा ! अथिरे पलोट्टइ जाव पंडियत्तं असासयं सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढमेसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ९ ॥ * * *

भावार्थ अस्थिर भेद्य स्वभाव वाले हैं आध्यात्म चिन्ता में अस्थिर कर्म भेदावे, लोहकी शलाका अभेद्य स्वभाव वाली है और शाश्वतपना से जीव के टुकडे होवे नहीं. व्यवहार से बालक शाश्वत है और निश्चय से जीव शाश्वत, व्यवहार से बालक भाव अशाश्वत निश्चय से असंयत भाव अशाश्वत, निश्चय से पंडित तत्त्व के ज्ञान-शाश्वत, व्यवहार से संयती जीव शाश्वत, व्यवहार से पंडितपना अशाश्वत और निश्चय से संयत भाव अशाश्वत होवे. अहो भगवन् ! आपने कहा वह सब सत्य है अन्यथा नहीं है ऐसा कहकर वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे. यह पहिला शतक का नववां उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ९ ॥ * * *

जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन प्रत्यायका स० वह ते० इसलिये पु० पृथ्वी काया स० समायुष्य वाले स० समवर्ण वाले ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कहना ॥ १० ॥ ज० जैसे पु० पृथ्वी काया त० तैसे जा० यावत् च० चतुरेन्द्रिय ॥ ११ ॥ पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच ज० जैसे णे० नारकी णा० नानाप्रकार कि० क्रियामें पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रिया वाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच ति० तीन प्रकार के स० समदृष्टि मि०

सूत्र

तियाणं पंचकिरियाओ कज्जंति, तंजहा - आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया. सेतेणट्ठेणं. पुढविकाइया समाउया समोववण्णगा? जहा णेरइया तहा भाणियव्वा ॥ १० ॥ जहा पुढविकाइया तहा जाव चउरिंदिया ॥ ११ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया जहा णेरइया, णाणत्तं किरियासु ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं भंते सव्वे समाकि-

भावार्थ

क्रिया वाले हैं. ? अहो भगवन् ! वह कैसे ? अहो गौतम ! सब पृथ्वीकायिक जीव मायावी व मिथ्या दृष्टी हैं, उनको अवश्यही आरंभिकी यावत् मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी पांच क्रियायों लगती हैं. इसी से पृथ्वी कायिक जीव समक्रिया वाले हैं. सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखे आयुष्य वाले व साथ उत्पन्न होने वाले हैं? इसका सब अधिकार नारकी जैसे कहना ॥१०॥ जैसे पृथ्वी कायाका अधिकार कहा वैसेही अप्काय तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, द्वीन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. यहांपर बडा शरीर व

शब्दार्थ को अ० है सि० स्निग्धपना त० इसलिये ति० तीन प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित मा० मीले ते० वे भि० भेदाते दु० दोप्रकार से ति० तीन प्रकार से क० कर दु० दोप्रकार से कि० करते ए० एक तरफ दि० देढ प० परमाणु पुद्गल भ० होवे ए० एक तरफ दि० देढ प० परमाणु पुद्गल भ० होवे ति० तीन प्रकार से क०करते ति०तीन प०परमाणु पुद्गल ह०होवे ए०ऐसे जा० यावत् च० चार पं० पांच प०परमाणु पुद्गल ए०एक बाजु से सा०मीले ए०एक बाजुमे मा०मीलकर दु०दुःखपने क० करे दु०दुःख सा०शाश्वत स०

सूत्र साहणंति, तिण्णि परमाणु पोग्गलाणं अत्थि सिणेह काए, तम्हा तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति, ते भिज्जमाणा दुहावि तिहावि कज्जंति. दुहा किज्जमाणा एगयओ दिवड्ढे परमाणु पोग्गले भवइ, एगयओ दिवड्ढे परमाणु पोग्गले भवइ, तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणु पोग्गला हवंति एवं जाव चत्तारि पंच परमाणु

भावार्थ गुण है वह उन परमाणु पुद्गलों में नहीं है. परंतु तीन परमाणु पुद्गल मीलकर स्कंधरूप बनजाते हैं क्यों की इसमें स्निग्धता रही हुइ है. उस तीन परमाणु पुद्गल का स्कन्ध को भेदने में आवेतो इस के दो अथवा तीन विभाग होसकते हैं. जब दो विभाग किया जाता है तब देढ २ परमाणु का एक २ विभाग होता है और जब तीन विभाग किया जाता है तब एक २ परमाणु का तीन विभाग होता है. जैसे दो परमाणु का स्कंध होता है वैसे ही तीन, चार पांच परमाणुओं का स्कंध बनता है वे स्कंध रूप बनकर

शब्दार्थ मिथ्यादृष्टिको पं०पांच स०सममिथ्यादृष्टि को पं०पांच॥१२॥ म०मनुष्य ज०जैसे णे०नारकी णा० नानाप्रकार म०महाशरीरी आ० कदाचित् आ०आहार करते हैं जे० जो अ० अल्प शरीरी ते० वे अ० थोडे पो० पुद्गल आ० आहार करते हैं अ० वारंवार आ० आहार करते हैं से० शेष ज० जैसे णे० नारकी जा० यावत्

सूत्र याणं चत्तारि, मिच्छद्दिट्ठीणं पंच सम्ममिच्छद्दिट्ठीणं पंच॥ १२॥ मणुस्सा जहा णेरइया, णाणत्तं जे महासरीरा ते आहच्च आहारेंति ४ । जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए पोग्गले आहारेंति ४ । अभिक्खणं आहारेंति. सेसं जहा णेरइयाणं जाव वेदणा. मणुस्साणं भंते . सव्वे

भावार्थ ॥१२॥ मनुष्य का अधिकार नारकी जैसे कहना. विशेष इतना कि-क्या सब मनुष्य सारिखे आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य के दो भेद; बडे शरीरवाले व छोटे शरीरवाले. उस में जो बडे शरीर वाले हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, बहुत पुद्गल परिणमते हैं, वैसे ही श्वासोश्वास लेते हैं. यहां नरकमें वारंवार आहार करने का कहा है, परंतु देवकुरु उत्तरकुरु के युगलिये तीन दिन में आहार लेते हैं. छोटे शरीर वाले अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं, उस के दो भेद संमूर्च्छिम व बालक वे दोनों वारंवार आहार करते हैं. बाकी का सब अधिकार नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! सब मनुष्य सरिखि क्रिया वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम !

शब्दार्थ मा० वह पु० पहिली कि० क्रिया दु० दुःख क० करते कि० क्रिया अ० अदुःख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीतहुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दुःख क० करण दु० दुःख अ० अकरण दु० दुःख० णो० नहीं सा० वह क० करण दु० दुःख व० कहना अ० नहीं क्रिया दु० दुःख अ० नहीं स्पर्शा अ० नहीं करते पा० प्राण भू० भूत

सूत्र भासा,अभासओ?भासा अभासओणं साभासा णो खलुसा भासओ भासा।पुव्विं किरिया दुक्खा,कज्जमाणी किरिया अदुक्खा,किरिया समयवीतिक्कंतं चणं कडा किरिया दुक्खा,जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणा किरिया अदुक्खा किरिया समय वींइक्कंतंचणं कडा किरिया दुक्खा। सा किं करणओ दुक्खा अकरणओ दुक्खा ? अकरणओणं सा दुक्खा, णो खलु सा करणओ दुक्खा, सेव वत्तव्वं सिया, आकिच्चं दुक्खं, अफुसं-

भावार्थ बोलाइ जो भापा उसे भापा कहना, तव क्या वह भापा भापकको होती है या अभापक को होती है ? तव अन्यतीर्थिक ऐसा उत्तर देते हैं कि भापक को भापा नहीं; परंतु अभापक को भापा होती है· और भी अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं कि जहां तक कायिकादि क्रिया नहीं की जावे वहांतक ही वह क्रिया दुःख के हेतु भूत होती है, और क्रिया करने लगे तव वह दुःख के हेतु भूत नहीं होती है, क्रिया समय व्यतीत हुवे पीछे कराइ हुइ क्रिया दुःख के हेतु भूत है, और जो पहिले की क्रिया दुःख के हेतु भूत है, कराती हुई क्रिया दुःख के हेतु भूत नहीं है और क्रिया समय व्यतीत हुए पीछे कराइ क्रिया दुःख के हेतु

शब्दार्थ प्रकार के प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त जे० जो अ० अप्रमत्त संयति ते० उनको ए० एक मा० मायाप्रत्ययिकी क्रिया जे० जो प० प्रमत्त संयति ते० उनको दो० दोक्रिया आ० आरंभिकी मा० मायाप्रत्ययिकी जे० जो सं० संयतासंयति ते० उनको आ० पहिली ति० तीन कि० क्रिया अ० असंयति को, च० चारक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांचक्रिया स० सममिथ्यादृष्टि को पं० पांचक्रिया ॥ १३ ॥ वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे अ० असुरकुमार न० विशेष वे० वेदना में णा० नानाप्रकार मा० मायी मि०

सूत्र अपमत्त संजयाय, ॥ तत्थणं जे ते अपमत्तसंजया तेसिणं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ । तत्थणं जे ते पमत्तसंजया तेसिणं दो किरिया कज्जइ तं० आरंभियाय मायावत्तियाय. तत्थणं जे ते संजयासंजया तेसिणं आदिमाओ तिण्णि किरियाओ कज्जंति । असंजयाणंचत्तारि किरियाओ कज्जंति मिच्छदिट्ठीणं पंच सम्ममिच्छदिट्ठीणं पंच ॥ १३ ॥ वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा अ-

भावार्थ मायाप्रत्ययिकी ऐसी दो क्रियाओं लगती हैं. जो संयतासंयति-श्रावक हैं उन को आरंभिकी माया प्रत्ययिकी व परिग्रहिकी ऐसी तीन क्रियाओं लगती हैं. असंयति को चार क्रियाओं लगती हैं. उपर्युक्त तीन और चौथी अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टि व सममिथ्यादृष्टि को पांच क्रियाओं. उपर्युक्त क्रियाओंमें मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी क्रिया पांचवी बढी ॥ १३ ॥ वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक को असुरकुमार जैसे कहना. शरीर का अल्पपना व बहुतपना अपने २ शरीर की अवगाहना के अनुसार जानना. वेदना विविध

शब्दार्थ सा० वह पु० पहिली कि० क्रिया दु० दुःख क० करते कि० क्रिया अ० अदुःख कि० क्रिया स० समय वी० व्यती-तहुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दुःख क० करण दु० दुःख अ० अकरण दु० दुःख० णो० नहीं सा० वह क० करण दु० दुःख व० कहना अ० नहीं क्रिया दु० दुःख अ० नहीं स्पर्शा अ० नहीं करते पा० प्राण भू० भूत

सूत्र भासा,अभासओ?भासा अभासओणं साभासा णो खलुसा भासओ भासा।पुव्विं किरिया दुक्खा,कज्जमाणी किरिया अदुक्खा,किरिया समयवीतिकंतं चणं कडा किरिया दुक्खा,जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणा किरिया अदुक्खा किरिया समय वीइकंतंचणं कडा किरिया दुक्खा । सा किं करणओ दुक्खा अकरणओ दुक्खा ? अकरणओणं सा दुक्खा, णो खलु सा करणओ दुक्खा, सेव वत्तव्वं सिया, अकिच्चं दुक्खं, अफुसं-

भावार्थ बोलाइ जो भाषा उसे भाषा कहना, तब क्या वह भाषा भाषकको होती है या अभाषक को होती है ? तब अन्यतीर्थिक ऐसा उत्तर देते हैं कि भाषक को भाषा नहीं; परंतु अभाषक को भाषा होती है. और भी अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं कि जहां तक कायिकादि क्रिया नहीं की जावे वहांतक ही वह क्रिया दुःख के हेतु भूत होती है, और क्रिया करने लगे तब वह दुःख के हेतु भूत नहीं होती है, क्रिया समय व्यतीत हुवे पीछे कराइ हुइ क्रिया दुःख के हेतु भूत है, और जो पहिले की क्रिया दुःख के हेतु भूत है, कराती हुई क्रिया दुःख के हेतु भूत नहीं है और क्रिया समय व्यतीत हुए पीछे कराइ क्रिया दुःख के हेतु

शब्दार्थ

हुवे अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे भा० कहना म० मनुष्य कि० क्रिया में स० सरागी वी० वीतरागी अ० अप्रमत्त प० प्रमत्त भा० कहना का० कापुतलेशी ए० ऐसे ण० विशेष णे० नारकी ज० जैसे ओ० औधिक दं० दंडक त० तैसे भा० कहना ते० तेजु लेशी प० पद्मलेशी ज० जिनको अ० है ज० जैसे ओ० औधिक त० तैसे भा० कहना ण० विशेष म० मनुष्य स० सरागी वी० वीतरागी भा० कहना दु० दुःख आ० आयुष्य उ० उदीरणा आ० आहार क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या स०

सूत्र

सुक्कलेस्साणं एएसिणं तिण्हं एक्कोगमो कण्हलेसणीललेस्साणंपि एगोगमो ॥ णवरं वेदणाए मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णगाय, अमायीसम्मदिट्ठी उववण्णगाय भाणियव्वा मणुस्सा किरियासु सराग वीतराग अपमत्ता पमत्ताण भाणियव्वा ॥ काउलेस्साणवि एवमेवगमो णवरं णेरइए जहा ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा जस्स अत्थि जहा ओहिओ तहा भाणियव्वा णवरं मणुस्सा सराग वीतरागा ण भा-

भावार्थ

अपमत्त व प्रमत्त कहा है, परंतु कृष्ण नीललेश्यावाले मनुष्य में यह कहना नहीं; क्योंकि दोनों लेश्यावाले को संयम का अभाव होता है. कापुत लेश्या में वैसा जानना परंतु नारकी को औधिक दंडक जैसे कहना. तेजो लेश्या व पद्मलेश्या जिन को हैं; उन को औधिक दंडक जैसे कहना. मनुष्य सराग वीतराग कहे हुवे हैं वे यहांपर कहना नहीं; क्यों की तीनों लेश्यावालों को वीतरागपने का अभाव होता है. अब उद्देश के प्रारंभ से जो अधिकार आयासो गाथासे बतातेहैं. एक वचन व बहुवचन आश्रित क्या दुःख व आयुष्य

थे कहता हूं च० चलते को च० चला जा० यावत् नि० निर्जरते को नि० निर्जरा दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित

सूत्र

साहणंति? दोण्हं परमाणु पोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए तम्हा दो परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति तेभिज्जमाणा दुहा कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओवि परमाणु पोग्गले एगयओ परमाणु पोग्गले भवइ, तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति, कम्हा तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति? तिण्हं परमाणु पोग्गलाणं अत्थि सिणेह काए तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, ते भिज्जमाणा दुहावि तिहावि कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दु पदेसिए खंधे भवइ, तिहा

भावार्थ

निर्जरने लगे को निर्जरे कहना. और भी दो परमाणु पुद्गल एकत्रित होकर स्कंध रूप बनजाते हैं क्यों की उस में स्नेह का गुण रहा हुवा है. एक परमाणु में शीत, ऊष्ण, स्निग्ध व रुक्ष ऐसे चार स्पर्श में से अविरोधी दो स्पर्श पाते हैं. इसलिये दो परमाणु में स्निग्धता होने से एकत्रित मीलकर स्कन्ध रूप बन जाते हैं. वैसे ही दो परमाणु को पृथक् करने से उस के एक २ परमाणु के दो विभाग होसकते हैं, वैसे ही तीन परमाणु मीलकर भी स्निग्धता के कारण से स्कन्ध होता है. उस का यदि भेद किया जावे तो दो य तीन होसकते हैं. दो में एक परमाणु का एक विभाग और द्विप्रदेशी स्कन्ध का दूसरा विभाग, तीन विभाग एक २ परमाणु पृथक् २ होजाने से होते हैं. ऐसे ही तीन चार पांच आदि परमाणु राशिका

शब्दार्थ

हुवे अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे भा० कहना म० मनुष्य कि० क्रिया में स० सरागी वी० वीतरागी अ० अप्रमत्त प० प्रमत्त भा० कहना का० कापुतलेशी ए० ऐसे ण० विशेष णे० नारकी ज० जैसे ओ० औधिक दं० दंडक त० तैसे भा० कहना ते० तेजु लेशी प० पद्मलेशी ज० जिनको अ० है ज० जैसे ओ० औधिक त० तैसे भा० कहना ण० विशेष म० मनुष्य स० सरागी वी० वीतरागी भा० कहना दु० दुःख आ० आयुष्य उ० उदीरणा आ० आहार क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या स०

सूत्र

सुक्कलेस्साणं एएसिणं तिण्हं एक्कोगमो कण्हलेसणीललेस्साणंपि एगोगमो ॥ णवरं वेदणाए मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णगाय, अमायीसम्मदिट्ठी उववण्णगाय भाणियव्वा मणुस्सा किरियासु सराग वीतराग अपमत्ता पमत्ताण भाणियव्वा ॥ काउलेस्साणवि एवमेवगमो णवरं णेरइए जहा ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा जस्स अत्थि जहा ओहिओ तहा भाणियव्वा णवरं मणुस्सा सराग वीतरागा ण भा-

भावार्थ

अपमत्त व प्रमत्त कहा है, परंतु कृष्ण नीललेश्यावाले मनुष्य में यह कहना नहीं; क्योंकि दोनों लेश्यावाले को संयम का अभाव होता है. कापुत लेश्या में वैसा जानना परंतु नारकी को औधिक दंडक जैसे कहना. तेजो लेश्या व पद्मलेश्या जिन को हैं; उन को औधिक दंडक जैसे कहना. मनुष्य सराग वीतराग कहे हुवे हैं वे यहांपर कहना नहीं; क्यों की तीनों लेश्यावालों को वीतरागपने का अभाव होता है. अब उद्देशे के प्रारंभ से जो अधिकार आयासो गाथासे बतातेहैं. एक वचन व बहुवचन आश्रित क्या दुःख व आयुष्य

शब्दार्थ पुद्गल में अ० है० स्निग्धपना॥१॥अ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ए० एक जी० जीव ए० एक स० समय में दो० दो क्रिया प० करे इ० ईर्यापथिक सं० संपरायिकी जं० जिस स० समय में इ० ईर्यापथिक प० करे तं० उस स० समय में सं० संपरायिकी प० करे जं० जिस स० समय में सं० संपरायिकी प० करे तं० उस स० समय में इ० ईर्यापथिक प० करे इ० ईर्यापथिक प० करते सं० संपरायिकी प० परे

सूत्र पुव्विं किरिया अदुक्खा जहा भासा तहा भाणियव्वा, किरियावि जाव करणओणं सा दुक्खा नो खलु सा अकरणओ दुक्खा, सेवं वत्तव्वं सिया, किच्चं दुक्खं, फुसं दुक्खं; कज्जमाणकडं दुक्खं कट्टु कट्टु पाणभूयजीवसत्ता वेदणं वेदंति त्ति वत्तव्वं सिया ॥१॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेइ तंजहा—इरियावहियंच, संपराइयंच, जं समयं इरियावहियं पकरेइ

भावार्थ देनेवाली होती है शेप सब अधिकार भाषा जैसे कहना यावत् करण से दुःख परंतु अकरण से दुःख नहीं है. किया हुवा दुःख है, स्पर्शा हुवा दुःख है. करने लगा किया वही दुःख करके प्राण भूत जीव व सत्व वेदना वेदते हैं यह चारों प्रश्नोंका उत्तर हुवा ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं कि एक समय में ईर्यापथिक व सांपरायिक ऐसी दो क्रियाओं जीव करता है, जिस समय में जीव ईर्या-पथिक क्रिया करता है उस समय में ही सांपरायिक क्रिया करता है और जिस समय में सांपरायिक

देसओ भाणेयव्वो जाव इड्ढी ॥ १६ ॥ जीवस्सणं भंते तीयद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे संसार संचिट्ठण काले पण्णत्ते ? गोयमा! चउव्विहे संसार संचिट्ठण काले पण्णत्ते, तंजहा णेरइए संसार संचिट्ठण काले, तिरिक्ख जोणिय संसार संचिट्ठण काले, मणुस्स

शब्दार्थ — यावत् इ० ऋद्धि ॥ १५ ॥ जी० जीव का ती० अतीत काल आ० कहा हुवा क० कितना सं० संसार सं० संचिठण काल प० प्ररूपा गो० गौतम च० चार प्रकार का सं० संसार संचिठन काल णे० नारकी सं० संसार संचिठन काल ति० तिर्यंच संसार सं० संचिठन काल म० मनुष्य संसार सं० संचिठण काल दे० देवसंसार सं० संचिठण काल णे० नारकी सं० संसार संचिठण काल क० कितना प्रकार का गो० गौतम

भावार्थ — अधिक ऋद्धि का धारक होता है ॥ १६ ॥ सलेशी जीव संसार में रहते हैं इसलिये संसार में रहनेका प्रश्न करते हैं. ÷ अहो भगवन् ! नारकी आदि जीवों को अतीत काल में कितने प्रकार के संसार[1] संचिठनकाल कहे हैं ? अहो गौतम ! उपाधिभेद से एक भव से भवान्तर में रहने की क्रिया का काल के चार भेद कहे हैं. १. नारकी के भव में जीव रहे सो नरक संसार संचिठनकाल २ तिर्यंच के भव में रहे सो तिर्यंच संसार

÷ कितनेक की ऐसी मान्यता होती है कि मनुष्य मरकर मनुष्य व पशु मरकर पशु ही होता है इसका निर्णय यहांपर किया गया है.

१ एक भवसे दूसरे भव में रहने की क्रिया का काल.

शब्दार्थ एक जी॰ जीव ए॰ एक स॰ समय में ए॰ एक कि॰ क्रिया प॰ करे स॰ स्वसमय व॰ व्यक्तव्यता ने॰ जानना जा॰ यावत् इ॰ ईर्यापथिक सं॰ संपरायिकी ॥ २ ॥ नि॰ नरकगति में भं॰ भगवन् के॰ कितना काल वि॰ विरह उ॰ उत्पन्न होने का प॰ प्ररूपा ज॰ जघन्य ए॰ एक समय उ॰ उत्कृष्ट बा॰ बारह मु॰ मुहूर्त ए॰

सूत्र क्खामि ४ । एवं खलु एगे जीवे एगसमए एकं किरियं पकरेइ, ससमयवत्तव्वयाए नेयव्वं ॥ जाव इरियावहियं संपराइयंवा ॥ २ ॥ निरयगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहु-

भावार्थ मात्र योग से होती है और सांपरायिक क्रिया योग व कषाय दोनों से होती है. जिस समय सांपरायिक क्रिया होती है उस समय ईर्यापथिक नहीं होती है. और जिस समय ईर्यापथिक होती है उस समय सांपरायिक नहीं होती है, वगैरह उक्त प्रकार से जिन शासन के कथनानुसार कहना. ॥ २ ॥ यहां क्रिया कही; क्रियावंत पुरुष की उत्पत्ति होती है इसलिये उत्पात विरहका प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन्! नरक में उत्पन्न होने का विरह कितना कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त. इस की सब वक्तव्यता पन्नवणाजी सूत्र के छठे पद जैसे कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य व देवता में उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का विरह. इस प्रकार चवन का विरह जानना. एक समय में जघन्य एक, दो, तीन का उत्पन्न होना व चवना होता है उत्कृष्ट एक समय में संख्याते असंख्याते जानना. यों सब पन्नवणा सूत्र से जानना.

शब्दार्थ दे० देवता को न० जैसे णे० नारकी ए० यह भं० भगवन् णे० नारकी का सं० संसार संचिठण काल सु० शून्य अ० अशून्य मि० मिश्र क० कौन क० किससे अ० अल्प ब० बहुत तु०तुल्य वि० विशेपाधिक गो० गौतम स० सब से थोडा अ० अशून्य काल मी० मिश्रकाल अ० अनंत गुणा सु० शून्य काल अ० अनंतगुणा ति० तिर्यंच का स० सर्व से थोडा अ० अशून्य काल मी० मिश्रकाल अनंतगुणा म० मनुष्य

सूत्र जोणिय संसार संचिट्ठण काल पुच्छा ? गोयमा ! दुविहे प० तं० असुण्णकालेय, मिस्सकालेय. मणुस्साणय देवाणय जहा णेरइयाणं । एयस्सणं भंते णेरइय संसार संचिट्ठण कालस्स सुण्णकालस्स, असुण्णकालस्स मीसकालस्स, कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा, बहुएवा, तुल्लेवा, विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुण्णकाले, मीसकाले अणंतगुणे,

भावार्थ व मिश्रकाल. मनुष्य व देवता में तीनों काल जानना. अहो भगवन् ! इस नरक संसार संचिठन काल के शून्य, अशून्य व मिश्रकाल में से कोन किससे अल्प, बहुत तुल्य व विशेपाधिक है ! अहो गौतम सब से

जाकर पुनः नरक गति में उत्पन्न होवे उन जीवों आश्रित लिया गया है. यदि उसी नरक भव आश्रित कहा जावे तो अल्प बहुत्व सूत्र में अशून्य कालकी अपेक्षा से मीश्र काल को अनंत गुना कहा है वह नहीं हो सकता है जैसे एयं पुण ते जीवे पडुच्च सुत्तं न तब्भवं चेव। जइ होज्जंत भवंतो अणंतकालो न संभवइ॥ ॥ १ ॥

॥ द्वितीयं शतकम् ॥

शब्दार्थ उ० उश्वास खं० खंदक पु० पृथ्वी इं० इंन्द्रिय अ० अन्यतीर्थिक भा० भापा दे० देव च० चमर चंचा स० समय खे० क्षेत्र अ० अस्तिकाय वी० दूसरे शतक में ॥ * ॥ तं० उस काल तं० उम समय में

सूत्र ऊसासे खंदए विय । पुढविंदिय अण्णउत्थिभासाय ॥ देवाय चमरचंचा । समय खित्तत्थिकाय बीयसए ॥ १ ॥ * ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं, रायगिहे नामं

भावार्थ मथम शतक के अंतमें जीवों का उत्पन्न होने का व चवन का विरह कहा. अब दूसरे शतक में उत्पन्न व चवन के मध्य का श्वासोश्वास का प्रश्न चलता है. इस शतक के सब मीलकर दश उद्देशे हैं. पहिले उद्देशे में उश्वास व खंदक का अधिकार है, दूसरे में पृथिवी का अधिकारहै. तीसरे में इन्द्रिय का अधिकार है, चौथे में अन्य तीर्थियों का अधिकार है, पांचवे में भापा का अधिकार है, छट्ठे में देव का अधिकार, सातवे में चमर चंचाका अधिकार, आठवे में समय क्षेत्र सो अढाइ द्वीप का अधिकार, नववे में क्षेत्राधिकार और दशवे में अस्तिकाया का स्वरूप ॥*॥ उस काल सो चौथे आरे में उस समय सो महावीर स्वामी विचरने के समय में राजगृही नामक नगर अत्यंत सुशोभित था. उस का वर्णन उववाइ सूत्र में जैसा चंपा नगरी का वर्णन किया है वैसा जानना. राजगृही के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवन्त

शब्दार्थ

भगवन् अं० अंतक्रिया क० करे गो० गौतम अ० कितनेक क० करे अ० कितनेक णो० नहीं करे अ० अंतक्रिया पद णे० जानना ॥ १८ ॥ अ० अहो भं० भगवन् अ० असंयति भ० भविद्रव्य देव अ० अविराधिक सं० संयति वि० विराधिक संयति अ० अविराधिक संयतासंयति वि० विराधिक सं० संयता संयति अ० असंज्ञी ता० तापस कं० कंदर्पिक च० चरक परिव्राजक कि० अशुभ परिणाम वाले ति०

सूत्र

संसार संचिट्ठण काले असंखेज्जगुणे, तिरिक्ख जोणिय संसार संचिट्ठण काले अणंतगुणे ॥ १७ ॥ जीवेणं भंते अंत किरियं करेज्जा? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए णो करेज्जा. अंतकिरिया पदं णेतव्वं ॥ १८ ॥ अहभंते असंजय भविय दव्व देवाणं, अविराहिय संजमाणं, विराहिय संजमाणं, अविराहिय संजमासंजमाणं, विराहिय संजमासंजमाणं, असण्णीणं, तावसाणं, कंदप्पियाणं, चरगपरव्वायगाणं,

भावार्थ

गुना उस से तिर्यंच संसार संचिठन काल अनंत गुना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जीव अंतक्रिया करे ? अहो गौतम ! कितनेक जीव अंतक्रिया करे और कितनेक अंतक्रिया करे नहीं इस का विशेष अधिकार पन्नवणा के वीस वे अंतक्रिया पद में जानना. ॥ १८ ॥ अंतक्रियाके अभावसे कोई जीव देवलोक में उत्पन्न होवे इसलिये उस का विशेष स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् ! चारित्र परिणाम से शून्य मिथ्यादृष्टि,

शब्दार्थ ए० उनका आ० श्वास पा० विशेष श्वास उ० उश्वास नि० निश्वास ण० नहीं जा० जानते हैं ण० नहीं पा० देखते हैं ए० वे भं० भगवन् जी० जीव आ० श्वासलेते हैं पा० बहुत श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं हं० हां गो० गौतम ए० वे जी० जीव आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं कि० किसका ए० ये जी० जीव आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते है नि० निश्वासलेते हैं गो० गौतम द० द्रव्य से अ० अनंत प० प्रदेश

सूत्र जाव वणप्फइकाइया, एगिंदिया जीवा एएसिणं आणामंवा, पाणामंवा, उस्सासंवा, निस्सासंवा, ण जाणामो ण पासामो ॥ एएसिणं भंते ! जीवा आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा ? हंता गोयमा ! एएविणं जीवा आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा । किण्णं भंते ! एते जीवा आणमंतिवा पाण-

भावार्थ प्रमाण से प्रतीति है तथापि उन पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेउकायिक, वायुकायिक, व वनस्पति कायिक जीवों का श्वासोश्वास मैं नहीं जानसकता हूं नहीं देखसकता हूं. तो अहो भगवन् ! क्या वे जीव श्वासोश्वास लेते हैं ? हां गौतम ! वे जीवों भी श्वासो श्वास लेते हैं. अहो भगवन् ! वे किस प्रकार श्वासो श्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशी अनंत पुद्गल का श्वासोश्वास लेते हैं क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश को अवगाहकर रहनेवाले पुद्गलों का, कालसे एक समय यावत् असंख्यात

देवलोक वि० विराधिक सं० संयतासंयति ज० जघन्य भवनपति उ० उत्कृष्ट जो० ज्योतिषी अ० असंज्ञी ज० जघन्य भ० भवनपति उ० उत्कृष्ट वा० वाणव्यंतर अ० बाकी के स० सब ज० जघन्य भ० भवनपति में उत्कृष्ट ता० तापस जो० ज्योतिषी में कं० कंदर्पिक सो० सौधर्म देवलोक में च० चरक परिव्राजिक बं० ब्रह्मदेवलोक में कि० क्लिष्टपरिणामी लं० लंतक देवलोक में ति० तिर्यंच स० सहस्रार देवलोक में आ० आजी

संजमाणं जहण्णणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोहम्मेकप्पे; अविराहिय संजमासंजमाणं जहण्णेणं सोहम्मेकप्पे, उक्कोसेणं अच्चुएकप्पे, विराहिय संजमासंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोइसिएसु, असण्णीणं जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वाणमंतरेसु अवसेसा सव्वे जहण्णणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वोच्छामि—तावसाणं जोइसिएसु, कंदप्पियाणं सोहम्मे कप्पे, चरग परिव्वायगाणं बंभलोए कप्पे, किव्विसि-

विराधिक संयमी, अविराधिक संयमासंयमी विराधिक संयमासंयमी, असंज्ञी, तापस, कंदर्प कथा करने वाले, त्रिदंडिये, कपिल मुनि के संतानिये, ज्ञानादिक के अवर्णवाद बोलने वाले, तिर्यंच, आजीविक धर्म वाले व्यवहार में चारित्रवंत होते हुवे मंत्र यंत्रादिक के करने वाले आभियोगिक, और साधु वेष होने पर सम्यक्त्व से भ्रष्ट निन्हव देवलोक में उत्पन्न होते किस २ स्थान पर उत्पन्नहोवे ? अहो गौतम असंयति भवि द्रव्य देव जघन्य भवनपति में उत्कृष्ट उपर की ग्रैवेयक में. अविराधिक साधु जघन्य सौधर्म देवलोक में

शब्दार्थ

गमो ने० जानना जा० यावत् पं० पांचदिशि में कि० कैसे भं० भगवन् णे० नारकी आ० श्वासले पा० विशेष श्वासले उ० उश्वासले नि० निश्वासले तं० तैसे जा० यावत् छ० छदिशा में आ० श्वासले पा० बहुत श्वासले उ० उश्वासले नि० निश्वासले ए० एकेन्द्रिय जी० जीव वा० व्याघात नि० निर्व्याघात भा० कहना से० शेष नि० निश्चय छ० छदिशा में ॥ १ ॥ वा० वायुकाय भं० भगवन् वा० वायु आ० श्वासले पा० बहुत श्वासले उ० उश्वासले नि० निश्वासले हं० हां गो० गौतम वा० वायुकाय जा० यावत् नि०

सूत्र

नेयव्वो जाव पंचदिसं ॥ किण्णं भंते ! णेरइया आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा तं चेव जाव नियमा छद्दिसिं आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंति वा निस्ससंतिवा । जीवे एगिंदिया वाघाया निव्वाघाया भाणियव्वा सेसा नियमा छद्दिसिं ॥१॥ वाउयाएणं भंते ! वाउयाए चेव आणमंतिवा, पाणमंतिवा,

भावार्थ

नरक के जीव कैसे पुद्गलों का श्वासोश्वास लेते हैं ? इस का सब अधिकार पहिले जैसे कहना यावत् निश्चय ही छ दिशिका श्वासोश्वास लेते हैं. एकेन्द्रिय जीव में व्याघात निर्व्याघात कहना. अन्य किसी दंडक में कहना नहीं. क्योंकी वे छ दिशिका श्वासोश्वास लेते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय श्वासोश्वास ग्रहण करे ? हां गौतम ! वायुकाय श्वासोश्वास लेता है. अहो भगवन् ! क्या वायुकाय के जीव अनेक

शब्दार्थ जी जीव भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म क० करे हं० हां क० करे से० वह भं० भगवन् कि० क्या दे० देशसे दे० देश क० करे दे० देश से स० सर्व क० करे स० सर्व से दे० देश क० करे स० सर्व से स० सर्व क० करे गो० गौतम णो० नहीं दे० देशसे दे० देश क० करे णो० नहीं दे० देशसे स० सर्व क० करे णो० नहीं स०

सूत्र जीवाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ? हंता कडे. से भंते ! किं देसेणं देसे कडे देसेणं सव्वे कडे सव्वेणं देसे कडे सव्वेण सव्वे कडे ? गोयमा! णो देसेणंदेसेकडे णो

भावार्थ द्वितीय उद्देशे में आयुष्य का स्वरूप कहा. वह मोहनीय कर्म से होवे इसलिये आगे मोहनीय कर्म का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या जीव कांक्षा मोहनीय कर्म (मिथ्यात्व मोहनीय कर्म) करे ? हां गौतम! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करे. अहो भगवन्! जैसे १ हस्तादि देश से किसी वस्तुका देश आच्छादे, २ हस्तादि देशसे समस्त वस्तु आच्छादे, ३ समस्त शरीर से वस्तुका देश आच्छादे, ४ समस्त शरीर से समस्त वस्तु का आच्छादन करे; वैसे ही क्या जीव का देश कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, जीव का एक देश सब कांक्षा मोहनीय कर्म करे, संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, अथवा संपूर्ण जीव संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म करे? अहो गौतम! जीव का एक देश कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, जीव का एक देश संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म नहीं करे, संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, परंतु संपूर्ण जीव

शब्दार्थ नि० निकले से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम वा० वायुकायाको च० चार स० शरीर प० प्ररूपे उ० उदारिक वे० वैक्रेय ते० तेजस क० कार्माण उ० उदारिक वे० वैक्रेय वि० छोडकर ते० तेजस क० कार्माण सहित नि० निकले से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहाजाता है ॥ २ ॥ म० प्रासुक भोजन करने वाला नि० निर्ग्रंथ नो० नहीं नि० रुंधा हुवा भ० भव नो०

सूत्र

एवं वुच्चइ सियससरीरी निक्खमइ सियअसरीरी निक्खमइ ? गोयमा ! वाउकायस्सणं चत्तारि सरीरया प० तं० उरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए । उरालिय वेउव्वियाइं विप्पजहाय, तेय कम्मएहिं निक्खमइ. सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सियससरीरी, सिय असरीरी निक्खमइ ॥ २ ॥ मडाईणं भंते नियंठे नो निरुद्ध भवे, नो

भावार्थ नीकलते हैं और कथंचित् शरीर रहित नीकलते हैं. अहो भगवन् ! वायुकाय के जीव किस तरह से कथंचित् सशरीरी व कथंचित् अशरीरी नीकलते हैं ? अहो गौतम ! वायुकाय को उदारिक, वैक्रेय, तेजस और कार्माण ऐसे चार शरीर होते हैं. उस में से उदारिक वैक्रेय को छोडकर नीकले इस लिये अशरीरी और तेजस, कार्माण शरीर सहित नीकले इसलिये सशरीरी, इसी से अहो गौतम ! वायुकाय के जीव कथंचित् शरीर सहित नीकले और कथंचित् शरीर रहित नीकले ॥ २ ॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ

जी जीव भं० भगवान् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म क० करे हं० हां क० करे से० वह भं० भगवन् कि० क्या दे० देशसे दे० देश क० करे दे० देश से स० सर्व क० करे स० सर्व से दे० देश क० करे स० सर्व से स० सर्व क० करे गो० गौतम णो० नहीं दे० देशसे दे० देश क० करे णो० नहीं दे० देशसे स० सर्व क० करे णो० नहीं स०

सूत्र

जीवाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ? हंता कडे. से भंते ! किं देसेणं देसे कडे देसेणं सव्वे कडे सव्वेणं देसे कडे सव्वेण सव्वे कडे ?गोयमा! णो देसेणंदेसेकडे णो

भावार्थ

द्वितीय उद्देशे में आयुष्य का स्वरूप कहा. वह मोहनीय कर्म से होवे इसलिये आगे मोहनीय कर्म का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या जीव कांक्षा मोहनीय कर्म (मिथ्यात्व मोहनीय कर्म) करे ? हां गौतम! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करे. अहो भगवन्! जैसे १ हस्तादि देश से किसी वस्तुका देश आच्छादे, २ हस्तादि देशसे समस्त वस्तु आच्छादे, ३ समस्त शरीर से वस्तुका देश आच्छादे, ४ समस्त शरीर से समस्त वस्तु का आच्छादन करे; वैसे ही क्या जीव का देश कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, जीव का एक देश सब कांक्षा मोहनीय कर्म करे, संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, अथवा संपूर्ण जीव संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म करे? अहो गौतम! जीव का एक देश कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, जीव का एक देश संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म नहीं करे, संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, परंतु संपूर्ण जीव

शब्दार्थ स० सत्त्व वि० विज्ञ वे० वेदक व० कहना पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व वि० विज्ञ वे० वेदक व० कहना से० वह के० कैसे पा० प्राण जा० यावत् वे० वेदक व० कहना ज० जिसलिये आ० श्वासलेता है पा० विशेष श्वासलेता है उ० उश्वासलेता है नि० निश्वासलेता है त० इसलिये पा० प्राण व० कहना ज० जिसलिये भू० हुवा भ० होता है भ० होगा त० इसलिये भू० भूत व० कहना ज० जिसलिये जी० जीव जी० जीता है जी० जीवपना आ० आयुष्य क० कर्म उ० अनुभवे त० इसलिये जी० जीव व०

सूत्र सिया. पाणे भूये जीवे सत्ते विण्णूवेदेति वत्तव्वंसिया ॥ से केणट्ठेणं पाणेतिव त्तव्वं-सिया जाव वेदेतिवत्तव्वंसिया? जम्हा आणमंतिवा पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, निस्ससं-तिवा, तम्हा पाणेतिवत्तव्वंसिया। जम्हा भूए भवइ भविस्सइ, तम्हा भूएतिवत्तव्वं-सिया, जम्हा जीवे जीवइ जीवत्तं आउयं च कम्मं उवजीवइ तम्हा जीवेति वत्तव्वं-

भावार्थ विस्तार का अंत नहीं करनेवाला यावत् अपूर्ण प्रयोजन की करणीवाला निर्ग्रंथ पुनः मनुष्यादि गति में आता है. अहो भगवन्! जो ऐसा निर्ग्रंथ मनुष्यादि गति में आता है उन को क्या कहना? अहो गौतम! उन को प्राण, भूत, जीव, सत्व, विज्ञ व वेदक कहना. अहो भगवन्! किस कारन से उन को प्राण, भूत यावत् वेदक कहना? अहो गौतम! वह श्वासोश्वास लेता है इस लिये प्राण कहाता है, वह अतीत काल में था, वर्तमान में है और आगामिक में होगा इस लिये भूत कहाता है, वह आत्मा जीता

शब्दार्थ अभिलाप से दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे क० करता है ए० इस का दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक ए० ऐसे क० करेंगे ए० यह दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक ए० ऐसे क० किरे चि० इकठे किरे उ० विशेष इकठे किरे उ० उदीरे वे० वेदे नि० निर्जरे आ० आदिके ति० तीनके च० चारभेद ति० तीनभेद प० पीछेके ति० तीन के ॥३॥ जी० जीव भं० भगवन् कं० कांक्षा मो-

सूत्र उदीरेंसु, उदीरेंति, उदीरिस्संति, वेदेंसु, वेदेंति, वेदिस्संति । णिज्जरेंसु, णिज्जरेंति, णिज्जरिस्संति गाहा॥ कडे चिए य उवचिए, उदीरिया वेदियाय णिज्जिण्णा॥आदितिए चउभेया, तियभेया पच्छिमातिण्णि ॥ १ ॥ ३ ॥ जीवाणं भंते ! कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? हंता-

भावार्थ आश्रित जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करता है, और भविष्यकाल आश्रित जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करेगा, वगैरह चौवीस दंडक में जानना. ऐसे ही चिय, उपचिय, का सामान्य, भूत भविष्य व वर्तमान काल आश्रित जानना. और उदीरणा, वेद व निर्जरा इन तीन बोल को भूत, भविष्य व वर्तमान काल आश्रित चौवीस दंडक पर उतारना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? हां गौतम ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है. अहो भगवन् ! किस तरह से जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? अहो गौतम ! मिथ्यात्व की संगति से या परदर्शन के वचन श्रवण से श्री वीतराग प्ररूपित

शब्दार्थ ह० शीघ्र आ० आते हैं हं० हां गो० गौतम म० मृतभोजी नि० निर्ग्रंथ जा० यावत् नो० नहीं पु० फीर इ० यहां ह० शीघ्र आ० आते हैं से० उनको भं० भगवन् किं० क्या व० कहना सि० सिद्ध बु० बुद्ध मु० मुक्त पा० पारंगत प० परंपरा तग व० कहना सि० सिद्ध मु० मुक्त प० परिनिवृत्त अ० अंतकृत स० सर्व दु० दुःख से प० मुक्तहुवे व० कहना स० वह ए० ऐसा भं० भगवन् भ० भगवान्

सूत्र राणिज्जे णो पुणरवि इच्छत्तं हव्व मागच्छइ ? हंता गोयमा ! मडाईणं नियंठे जाव नो पुणरवि इत्थत्तं हव्वं आगच्छइ ॥ सेणं भंते ! किं वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! सिद्धेत्ति वत्तव्वं सिया, बुद्धेत्ति वत्तव्वं सिया, मुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया, पारगएत्ति वत्तव्वं सिया, परंपरगएत्ति वत्तव्वं सिया, सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे, अंतकडे सव्व दुक्खप्प-

भावार्थ सुक भोजन करनेवाले यावत् निष्ठितार्थ करणीवाले पुनः मनुष्यादि गति में नहीं आते हैं ? हां गौतम ! प्रा-तार्थ करणीकरनेवाले निर्ग्रंथ क्या पुनः मनुष्यादि गति में नहीं आते हैं, अहो भगवन् ! उन को क्या कहना ? अहो गौतम ! उन को सब कार्य की सिद्धि होने से सिद्ध कहना, चराचर पदार्थ के ज्ञाता होने से बुद्ध कहना, समस्त कर्म से मुक्त होने से मुक्त कहना, संसार सागरको उत्तीर्ण होने से पारंगत कहना, मिथ्यात्वादि गुणस्थान अथवा मनुष्यादि गति को परंपरा से जानने से अर्थात् भव समुद्र के पार पहुंचने से परम्परागत कहना, कषाय से निवर्तने से परिनिवृत्त, संसार का अंत करने से अंतकृत

शब्दार्थ मनमें अ० धारता प० करता चि० रहता सं० संवरता आ० आज्ञा आ०आराधक भ० होवे हं०हां गो० गौतम ए०ऐसा म०मनमें अ० धारता जा यावत् भ०होवे. ॥६॥ से० वह भं०भगवान् अ० अस्तिरूप पने प०

सूत्र ॥ ५ ॥ सेणूणं भंते ! एवं मणे धारेमाणे एवं पकरेमाणे, एवं चिट्ठेमाणे, एवं संवरेमाणे, आणाए आराहए भवइ ? हंता गोयमा ! एवं मणे धारेमाणे जाव भवइ ॥ ६ ॥ सेणूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, णत्थित्तं णत्थित्ते परिणमइ ? हंता गोयमा ! जाव परिणमइ ॥ जंतंभंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्तं

भावार्थ क्या आज्ञा का आराधक होता है ? हां गौतम ! ऐसा करने वाला आज्ञा का आराधक होवे ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! अस्तित्व अस्तिरूपपने (वस्तु का पर्यायान्तर होने पर जो मूल गुण है वह होना) परिणमे ? जैसे अंगुली ऋजुता, वक्रता, धारन करे तो भी अंगुलीपने परिणमे और नास्तित्व सो नास्तिरूपपने परिणमे ? हां गौतम ! जो अस्ति रूप वस्तु है वह अस्तिपने परिणमती है, जैसे अंगुली को अंगुली ही कही जाति है और अछती वस्तु नास्तित्व पने परिणमाति है जैसे जो पट नहीं है वह कदापि पट नहीं है. अहो भगवन् ! क्या वह प्रयोग सो जीव का व्यापारसे या स्वभाव से परिणमे ? हां गौतम ! प्रयोग से भी परिणमे जैसे कुंभकार मृत्तिका का घट बनावे और स्वभाव से भी परिणमे जैसे आकाश में बदल होवे. अहो भगवन् ! जैसे आपके मत में प्रयोग या स्वाभाव से अस्तिपना अस्तिपने परिणमताहै

शब्दार्थ दिशा में छ० छत्रपलाश चे० चैत्य हो० था व० वर्णन युक्त स० श्रमण भं० भगवान् म० महावीर उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दर्शन युक्त जा० यावत् स० समवसरण प० परिषदा नि० निर्गता ॥६॥ ती० उस क० कयंगला न० नगरी की अ० नजदीक सा० सावत्थी ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णनयुक्त त० तहां सा० सावत्थी ण० नगरी में ग० गर्दभाली का अं० अंतेवासी खं० खंदक ना० नामका क० कात्यायन गोत्रीय प० परिव्राजक प० रहता है रि० ऋग्वेद ज० यजुर्वेद सा० सामवेद अ० अथर्ववेद इ०

सूत्र छत्तपलासए णामं चेइए होत्था, वण्णओ । तएणं समणे भगवं महावीरे उप्पन्नणाण दंसणधरे जाव समोसरणं परिसा निग्गया ॥ ६ ॥ तीसेणं कयंगलाए नयरीए अदूर-सामंते सावत्थीणामं नयरीहोत्था. वण्णओ तत्थणं सावत्थीए णयरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी खंदए नाम कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ रिउव्वेय, जजुव्वेय, साम-

भावार्थ में चंपा नगरी का वर्णन कहा है वैसा कहना. उस कयंगला नामक नगरी के बाहिर उत्तरपूर्व-ईशान कौन में छत्र पलाश नामक यक्षका चैत्य है, उस का भी वर्णन उववाइ से जानना. यहांपर केवल ज्ञान केवल दर्शन के धारक श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे. परिषदा वंदन करने को आइ. भगवन्त से धर्मकथा सुनकर परिषदा पीछी गई. ॥ ६ ॥ उस कयंगला नगरी की पास एक सावत्थी नामकी नगरी थी. उस का वर्णन भी उववाइ में से जानना. उस सावत्थी नगरी में गर्दभाली नामक तापस का

शब्दार्थ परिणमे में दो० दोआलापक त० तैसे ग० प्रकाशने में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ॥ ८ ॥ जी० जीव भं० भगवान् कं० कांक्षा मोहनीय कर्म बं० बांधे हं० हां गो० गौतम बं० बांधे क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव कं० कांक्षा मोहनीय कर्म बं० बांधे गो० गौतम प० प्रमाद प्रत्यय जो० जोगनिमित्त से० वह

सूत्र परिणमइ दो आलावगा,तहा गमणिज्जेणवि दो आलावगा भाणियव्वा,जाव तहामे अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं जहा ते भंते! एत्थं गमणिज्जं तहाते इह गमणिज्जं जहाते इह गमणिज्जं तहाते इत्थं गमणिज्जं?हंता गोयमा!जहामे इत्थं गमणिज्जं तहामे इहगमणिज्जं॥८॥ जीवाणं भंते कंखा मोहणिज्जं कम्मं बधंति ? हंता गोयमा ! बंधंति । कहणं भंते ! जीवा कंखा

भावार्थ अर्थात् छती वस्तु छतेपने ही प्रकाशने योग्य है अन्य को जनाने योग्य है ? यहां पर जैसे परिणमते के दो आलापक कहे वैसे ही प्रकाशने के हमारे मतमें अस्तित्व अस्तिपने प्रकाशने योग्य है वहां तक दो आलापक कहना. और भी अहो भगवन् ! जैसे आप के मत में मेरे जैसे सुशिष्य को वस्तु प्ररूपी वैसेही क्या आपके मन में पाखंडी गृहस्थादिक को प्ररूपी ? और जैसे पाखंडी गृहस्थादिक को वस्तु प्ररूपी वैसेही क्या मेरे जैसे सुशिष्यको वस्तु प्ररूपी ? हां गौतम ! जैसे मेरे मत में सुशिष्यादिक को वस्तु स्वरूप प्ररूपा वैसे ही पाखंडी गृहस्थादिक को वस्तु स्वरूप प्ररूपा और जैसे पाखंडी को वस्तु स्वरूप प्ररूपा वैसेही सुशिष्य को वस्तु स्वरूप प्ररूपा ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! जीव कांक्षा

शब्दार्थ सा० श्रवण करनेवाला अ० कोई वक्त जे० जहां खं० खंदक क०कात्यायन गोत्री ते०तहां उ० आये आ० आकर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्री को इ० यह अ० आक्षेप से पु० पूछे मा० मागध किं०क्या स० अन्त वाला लो०लोक अ०अनंतलोक स०अंतसहित जी०जीव अ०अनंत जी०जीव स०अन्त सहित सिद्धी अ० अनंत सिद्धी स० अंत सहित सिद्ध अ० अनंत सि० सिद्ध के० किस म० मरण से म० मरता जी० जीव व० वृद्धिपामें हा० हानीपामें ए० इतना आ० कहो वु० बोलते ए० ऐसा से० वह खं० खंदक

सूत्र सावए परिवसइ ; तएणं से पिंगलए नामं नियंठे वेसालिय सावए अण्णया कयाइं जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं इण मक्खेवं पुच्छे, मागहा ! किं सअंतेलोए अणंतेलोए ? सअंतेजीवे, अणंते जीवे ? सअंतासिद्धी, अणंतासिद्धी ? सअंतेसिद्धे, अणंतेसिद्धे ? केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे

भावार्थ छंद निमित्त सो शब्द उत्पत्ति का शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, व अनेक ब्राह्मण सन्यासी संबंधी नीति शास्त्र में निपुण थे ॥ ७ ॥ उस सावत्थी नगरी में श्री महावीर के वचन सुनने में रसिक पिंगलक नामक निर्ग्रंथ रहता था. महावीर भगवन्त के वचन सुनने में रसिक ऐसे पिंगलक निर्ग्रन्थ एकदा कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक की पास आये, आकर के उन को ऐसा प्रश्न पुछा कि अहो मागधे ! क्या

१ मगध देश में उत्पन्न होनेवाले.

शब्दार्थ प०उत्पन्नहोवे स०शरीर किं०किससे प०उत्पन्न होवे जी०जीवसे प०उत्पन्नहोवे ए०ऐसे स०होते अ० है उ० उत्थान क०कर्म व० बल वी०वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ॥२॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् अ० आत्मा से उ० उदीरे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हां गो० गौतम आ० आत्मा से तं० तैसे ही उ० कहना

सूत्र गोयमा! जीवप्पवहे एवंसइ अत्थि उट्ठाणेइवा. कम्मेइवा, बलेइवा वीरिएइवा पुरिसकार परक्कमेइवा ॥ ९ ॥ सेणूणं भंते , अप्पणाचेव उदीरेइ, अप्पणाचेव . गरहइ, अप्पणा चेव संवरइ ? हंता गोयमा ! अप्पणा चेव उच्चारेयव्वं ॥ जंतंभंते । अप्पणा चेव उदीरेइ,

भावार्थ वह शरीर के व्यापार से होता है. अहो भगवन् ! शरीर कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम जीव से उत्पन्न होवे+ यदि ऐसा होवे तो उट्ठान—कार्य साधन के लिये खडे होना, कर्म—गमनादि कर्म करना, बल-शरीर की सामर्थ्यता, वीर्य—उत्साह, पुरुषात्कार—पुरुषका अभिमान, व पराक्रम—कार्य पूर्ण करना, इस में भी जीव की प्रधानता है. ॥२॥ अहो भगवन् ! कर्मबंधादिक में जीव की प्रधानता है तो क्या स्वयंही कर्म की उदीरणा करे, स्वयंही कृत कर्म की निन्दाकरे और स्वयंही संवरे, अर्थात् कर्म करे नहीं ? हां गौतम; स्वयंही कर्मकी उदीरणा करे यावत् स्वयं कर्म करे नहीं. अहो भगवन् जब जीव स्वयं उदीरता है, गर्हता है, व संवरता है तो क्या

+ यद्यपि शरीर में कर्म भी कारण है निष्केवल जीव ही कारण नहीं है, तथापि कर्म का कर्ता जीव होने से जीव से शरीर उत्पन्न होना कहा है.

शब्दार्थ

क्या स० अंतसहित लोक जा० यावत् के० किस म० मरण से म० मरता जी० जीव व० वृद्धिपामे हा० हानिपामे ए० इतना आ० कहो वु० बोलता त० तब ते० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय पिं० पिंगलक निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला दो०दो त०तीन वक्त इ०यह अ०आक्षेप से पु० पूछते सं० शंकित कं० कांक्षित वि० संदेहवाला भे० भेद को प्राप्त क० कालुष्य वाला नो०. नहीं सं० शक्तिमान

सूत्र

तएणं से पिंगलए नियंठे वेसालीसावए खंदयं कच्चायणसगोत्तं दोच्चंपि इणमक्खेवं पुच्छे मागहा! किं सअंतेलोए जाव·केणवा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्डइवा, हायइवा, एतावंताव आइक्खाहि वुच्चमाणो एवं तएणं तेखंदए कच्चायणसगोत्तं पिंगलएणं नियंठेणं वेसालीसावएणं दोच्चंपि तच्चंपि इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिंछिए,

भावार्थ

जानने की कांक्षा, अन्य को 'उत्तर देने में प्रतीति होवे वैसी वितिगिच्छा उत्पन्न हुई. वैसे ही मैंने इस का उत्तर नहीं जाना सो मतिभंग, भेद व मन में कालुष्यता हुई. वैसे ही वैसालिय श्रावक पिंगलक अनगार के एक ही प्रश्नों का उत्तर देने को असमर्थ हुवा. और मौन खडा रहा. तब उन वैसालिय श्रावक पिंगलक निर्ग्रंथने पुनःयही प्रश्न पूछा की अहो मागध! अंत सहित लोक है यावत् किस मरण से संसार की वृद्धि होती है और किस मरणसे संसार का क्षय होता है? इस तरह पिंगलक निर्ग्रंथने दो

शब्दार्थ प०उत्पन्नहोवे स०शरीर किं०किससे प०उत्पन्न होवे जी०जीवसे प०उत्पन्नहोवे ए०ऐसे स०होते अ० है उ० उत्थान क०कर्म ब० बल वी०वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ॥२॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् अ० आत्मा से उ० उदीरे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हां गो० गौतम आ० आत्मा से तं० तैसे ही उ० कहना

सूत्र गोयमा! जीवप्पवहे एवंसइ अत्थि उट्ठाणेइवा. कम्मेइवा, बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ ९ ॥ सेणूणं भंते, अप्पणाचेव उदीरेइ, अप्पणाचेव . गरहइ, अप्पणा चेव संवरइ ? हंता गोयमा! अप्पणा चेव उच्चारेयव्वं ॥जंतंभंते। अप्पणा चेव उदीरेइ,

भावार्थ वह शरीर के व्यापार से होता है. अहो भगवन्! शरीर कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम जीव से उत्पन्न होवे+ यदि ऐसा होवे तो उट्ठान–कार्य साधन के लिये खडे होना, कर्म–गमनादि कर्म करना, बल-शरीर की सामर्थ्यता, वीर्य–उत्साह, पुरुषात्कार–पुरुषका अभिमान, व पराक्रम–कार्य पूर्ण करना, इस में भी जीव की प्रधानता है. ॥२॥ अहो भगवन्! कर्मबंधादिक में जीव की प्रधानता है तो क्या स्वयंही कर्म की उदीरणा करे, स्वयंही कृत कर्म की निन्दाकरे ओर स्वयंही संवरे, अर्थात् कर्म करे नहीं ? हां गौतम; स्वयंही कर्मकी उदीरणा करे यावत् स्वयं कर्म करे नहीं. अहो भगवन् जब जीव स्वयं उदीरता है, गर्हता है, व संवरता है तो क्या

+ यद्यपि शरीर में कर्म भी कारण है निष्केवल जीव ही कारण नहीं है, तथापि कर्म का कर्ता जीव होने से जीव से शरीर उत्पन्न होना कहा है.

शब्दार्थ आत्मविषय चिं० स्मरणरूप प० प्रार्थनारूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसा स० श्रमण अ० भगवन् म० महावीर क० कयंगला न० नगरी की ब० बाहिर छ० छत्रपलास चे० चैत्य में सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते वि० विचरते हैं तं० उनकीपास गं० जाऊं स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कारकर स० सत्कारकर स० सन्मानदेकर

सूत्र वीरे कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देव- यं चेइयं पज्जुवासेत्ता इमाइंचणं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं वागरणाइं पु-

भावार्थ कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक को ऐसा चिन्तवन व मनोगत संकल्प हुवा कि कयंगला नगरी के छत्र पलाश उद्यान में संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे श्री श्रमण भगवंत महावीर विचरते हैं इसलिये उन की समीप मैं जाऊं और श्री श्रमण भगवन्त को वंदना नमस्कार करूं. श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना, नमस्कार, सत्कार व सन्मान कर वैसे ही कल्याणकारी, मंगलकारी, देव व साक्षात् महाज्ञानके धारक ऐसे श्री श्रमण भगवंत की पर्युपासना करके जो मेरे मन में संदेह रहा हुवा है वैसे प्रश्नों पुछकर निर्णय करना मुझे श्रेय है. ऐसा विचार करके जहां परिव्राजक संन्यासीओं का आश्रम था वहां आया वहां

शब्दार्थ उ० उदीरे अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य क० कर्म उ० उदीरे नो० नहीं उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया कर्म उ० उदीरे जं० जो भं० भगवन् अ० उदे नहीं आया उ० उदीरना योग्य क० कर्म उ० उदीरे तं० उन को उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार पराक्रम से अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य उ० उदीरे उ० अथवा तं० उन को अ० अनुत्थान अ० अकर्म

सूत्र भवियं कम्मं उदीरेइ तंकिं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार परक्कमेणं अणुदिन्नं उदरिणा भवियं कम्मं उदीरेति. उादहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं; अबलेणं अवीरिएणं, अपुरिसक्कार परक्कमेणं; अणुदिण्णं उदीरणा भावियं कम्मं उदीरेइ ?, गोयमा ! तं उट्ठाणेणवि, कम्मेणवि, बलेणवि, वीरिएणवि, पुरिसक्कार परक्कमेणवि, अणुदिन्नं उदीरणा भावियं कम्मं उदीरेइ नो, तं अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं

भावार्थ उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम से उदीरता है ? अथवा उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम विना उदीरता है ? अहो गौतम ! उत्थान यावत् पराक्रम से उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म उदीरता है. परंतु उत्थान यावत् पराक्रम विना उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म को नहीं उदीरता है. इस लिये उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम में आस्ति है जिस से उदीरणा योग्य

शब्दार्थ — में लेकर छ० छत्र वा० पगरखा सं० युक्त धा० धातुरक्त व० वस्त्र प० पहनकर सा० सावत्थी न० नगरी की म० मध्य से नि० निकलकर जे० जहां क० कयंगला न० नगरी जे० जहां छ० छत्रपलास चे० चैत्य जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां पा० निश्चय किया ग० जाने को ॥ १ ॥ गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले द०

सूत्र — छत्तोवाहण संजुत्ते, धाउरत्त वत्थ परिहिए, सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छइत्ता जेणेव कयंगला नगरी, जेणेव छत्तापलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पाहारेच्छ गमणाए॥१॥ गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी दच्छिासिणं गोयमा! पुव्वसंगइयांकं तं, कं भंते? खंदयं नाम। से काहेवा, कि-

भावार्थ — नीकलकर त्रिदंड, कमंडल, रुद्राक्षमाला, मृत्तिका का भाजन, मृत्तिका आसन विशेष, प्रमार्जन करने का कपडा, पड्नालिका, वृक्ष पल्लव को छेदनेवाला अंकुश, ताम्बेकी मुद्रिका व कालाचिका इत्यादि हस्त में धारन करके, शिरपर छत्र रखकर, पांव में उपानह रखकर, भगवे वस्त्र पहिन कर, सावत्थी नगरी के मध्य में से नीकलकर जहां कयंगला नामक नगरी के छत्र पलाश उद्यान में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आनेका अभिलाषी हुवा ॥ १ ॥ उस समय श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने गौतम स्वामी को बोलाकर कहा कि अहो गौतम! तूं तेरा पूर्व संगातिवाला मित्र को देखेगा. तव गौतम स्वामी वोले की

शब्दार्थ

उ० उत्थान जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रमसे ॥ ११ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से वे० वेदे ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां सं० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदेआया वे० वेदे णो० नहीं अ० उदे नहीं आया वे० वेदे ए० ऐसे जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से णि० निर्जरे अ० आत्मा से ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां स० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया क० कर्म नि० निर्जरे ए० ऐसे

सूत्र

॥ ११ ॥ सेणूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेइ, अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सव्वेवि परिवाडी, णवरं उदिण्णं वेदेइ, णो अणुदिन्नं वेदेइ. एवं जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! अप्पणा चेव णिज्जरेइ अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सव्वेवि परिवाडी, णवरं उदयाणंतरं पच्छा कडं कम्मं

भावार्थ

कहना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जीव स्वयं वेदता है, स्वयं गर्हता है ? हां गौतम ! यहांपर सब परिपाटी पहिले जैसे कहना. इस में उदय आये हुवे कर्म वेदते हैं इतना ही विशेष हैं और पुरुषात्कार पराक्रमतक पहिले जैसे कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या स्वयं कर्म की निर्जरा करता है व नहीं करता है ! हां गौतम ! यहांपर उदयान्तर समय पश्चात् कृतकर्म निर्जरे इतना विशेष जानना

शब्दार्थ गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर व० बोले प० समर्थ भं० भगवन् खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय दे० देवानुप्रियाकी अं० पास मुं० मुंड भ० होकर अ० अगारसे अ० अनगार को प० प्रव्राजित होनेको हं० हां प० प्रभु॥११॥ जा० जितना काल स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम की पास ए० यह अर्थ प० करते हैं ता० उस वक्त में खं० खंदक

सूत्र —भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी पहूणं भंते ! खंदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू ! ॥ ११ ॥ जावंचणं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ तावंचणं खंदए कच्चायणसगोत्ते तं देसं हव्वमागए. तए-

भावार्थ स्वामी महावीर भगवंत को वंदना नमस्कार करके ऐसा पूछने लगे की अहो भगवन् ! क्या कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक आपकी पास दीक्षा ग्रहण कर मुंड होने को समर्थ है ? हां गौतम ! वह खंदक परिव्राजक दीक्षा लेने को समर्थ है ॥ ११ ॥ श्री महावीर भगवन्त गौतम स्वामी को ऐसा कह रहे थे इतने में कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक उस बगीचे के एक देश में आ पहुंचे. उस समय श्री गौतम स्वामी कात्यायन गोत्रीय स्कंदक मुनि को पास आये जानकर उपस्थित हुवे,* उपस्थित होकर

* श्री गौतम स्वामी स्कंदक परिव्राजक असंयतीको देखकर खडेहुवे जिसका कारन यह है कि वह आगे

त्वन अ० अन्ह कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदन हं० हंत गो० गौतम नी० संकाइति नं० नो ति० जिनने प० प्रवेदित जं० जो जं० जाव प० पुरुष जा० यावत् च० चतुरिन्द्रिय ॥ १५ ॥ पं० पंचेन्द्रिय जंत ओ० औधिक जीव ॥ १६ ॥ भं० भगवन स० श्रमण नि०

अा० ...

...गाइवा, पण्णाइवा, मणेइवा, वइइवा, अम्हेणं कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदेमो वे-देंति । पुणते सेणूणंभंते ! तमेवसच्चं णीसंकंजंजिणेहिं पवेइयं सेसं तंचेव जाव परिसकार-परक्कमेइवा एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ १५ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा ओहिया जीवा ॥ १६ ॥ अत्थिणं भंते ! समणा निग्गंथा कंखा

भगवन्! वे कैसे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे ? अहो गौतम ! उन जीवोंको तर्क, संज्ञा, प्रज्ञा, मन, वचन व मैं कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता हूं ऐसा ज्ञान नहीं हैं. तथापि वे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे. इस कारन से ऐसे स्थान में साधु को ऐसा कहना कि जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वहही निःशंक सत्य है. शेष पुरुषात्कार पराक्रम तकका सब अधिकार पूर्ववत् जानना और ऐसे ही अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय तक कहना ॥ १५ ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का औधिक (समुच्चय) जीव जैसे कहना ॥ १६ ॥ सब

शब्दार्थ पिंगरुक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० श्रवण करनेवाला इ० इस अ० आक्षेप पु० पूछा मा० मागध कि० अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है त० तब से०वह खं०खंदक क०कात्यायन गोत्रीय भ०भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० कहा से० वह के० कौन गो० गौतम त० तथारूप णा० ज्ञानी त० तपस्वी जे० जिससे त० तुमने ए० यह अर्थ म० मेरा र० रहस्य ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे तु० तुम जा० जानते हो त० तब भ० भगवान् गो० गौतम खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा

सूत्र वएणं इणमक्खेवं पुच्छिए मागहा ! किं सअंतेलोए, एवं तंचेव जेणेव इहं तेणेव हव्व मागए; सेणूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—से केसिणं गोयमा ! तहारूवे णाणीवा, तवस्सीवा, जेणं तव एसअट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओणं तुमं जाणासि तएणं

भावार्थ होती है ? उस का उत्तर नहीं आने से तुम महावीर भगवन्त की पास से सुनने को आये हो. अहो स्कंदक क्या यह सत्य है ? स्कंदकने उत्तर दिया की हां यह सत्य है. तब कात्यायन गोत्रीय स्कंदकने पुछा कि अहो गौतम ! ऐसा कौन तथारूप ज्ञानी व तपस्वी है कि जिनोंने मेरे मन का रहस्य तुम को कहा ? अहो स्कंदक ! मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक धर्मगुरु श्री श्रमण भगवंत केवल ज्ञान केवल दर्शन के

शब्दार्थ त० तर्क सं० संज्ञा प० प्रज्ञा म० मन व० वचन अ० अम्हे कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदते हैं वे० जानते हैं पु० फीर तं० वहही स० सत्य नी० शंकारहित जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा. से० शेष तं० तैसे जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम ए० ऐसे जा० जावत् च० चतुरेन्द्रिय ॥ १५ ॥ पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच जा० यावत् वे० वैमानिक ज० जैसे ओ० औधिक जीव ॥ १६ ॥ भं० भगवन् स० श्रमण नि०

सूत्र सण्णाइवा, पण्णाइवा, मणेइवा, वइइवा, अम्हेणं कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदेमो वेदेंति। पुणते सेणूणंभंते! तमेवसच्चं णीसंकंजंजिणेहिं पवेइयं सेसं तंचेव जाव परिसक्कार परक्कमेइवा एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ १५ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा ओहिया जीवा ॥ १६ ॥ अत्थिणं भंते! समणा निग्गंथा कंखा

भावार्थ अहो भगवन्! वे कैसे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे? अहो गौतम! उन जीवोंको तर्क, संज्ञा, प्रज्ञा, मन, वचन व मैं कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता हूं ऐसा ज्ञान नहीं हैं तथापि वे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे. इस कारन से ऐसे स्थान में साधु को ऐसा कहना कि जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वहही निःशंक सत्य है. शेप पुरुषात्कार पराक्रम तकका सब अधिकार पूर्ववत् जानना और ऐसे ही अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय तक कहना ॥ १५ ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का औधिक (समुच्चय) जीव जैसे कहना ॥ १६ ॥ सब

शब्दार्थ पिंगलक नि० निग्रंथ वे० वैशालिक सा० श्रवण करनेवाला इ० इस अ० आक्षेप पु० पूछा मा० मागध किं० अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० कहा से० वह के० कौन गो० गौतम त० तथारूप णा० ज्ञानी त० तपस्वी जे० जिससे त० तुमने ए० यह अर्थ म० मेरा र० रहस्य ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे तु० तुम जा० जानते हो त० तब भ० भगवान् गो० गौतम खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा

सूत्र वएणं इणमक्खेवं पुच्छिए मागहा ! किं सअंतेलोए, एवं तंचेव जेणेव इहं तेणेव हव्व मागए; सेणूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—से केसिणं गोयमा ! तहारूवे णाणीवा, तवस्सीवा, जेणं तव एसअट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओणं तुमं जाणासि तएणं

भावार्थ होती है ? उस का उत्तर नहीं आने से तुम महावीर भगवन्त की पास से सुनने को आये हो. अहो स्कंदक क्या यह सत्य है ? स्कंदकने उत्तर दिया की हां यह सत्य है. तब कात्यायन गोत्रीय स्कंदकने पुछा कि अहो गौतम ! ऐसा कौन तथारूप ज्ञानी व तपस्वी है कि जिनोंने मेरे मन का रहस्य तुम को कहा ? अहो स्कंदक ! मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक धर्मगुरु श्री श्रमण भगवंत केवल ज्ञान केवल दर्शन के

शब्दार्थ चारित्रांतरसे लिं० लिंगांतरसे प० प्रवचनांतरसे पा० प्रावचनांतरसे क० कल्पांतरसे म० मार्गांतरसे म०

सूत्र लिंगंतरेहिं, पवयणंतरेहिं पावयणंतरेहिं कप्पंतरेहिं, मग्गंतरेहिं, मयंतरेहिं, भंगंतरेहिं,

भावार्थ में सब सावद्यका प्रत्याख्यान है और छेदोपस्थापनीय में पंचमहाव्रत का आरोपण किया है. ४ लिंगांतर से - लिंग जो साधु का वेष उस में शंका उत्पन्न होवे जैसे बावीस तीर्थंकर के साधु जैसे शुद्ध वस्त्र मीले वैसा ग्रहण करे और प्रथम व अन्तिम तीर्थंकर के साधु प्रमाण युक्त वस्त्र धारन करे. इस तरह जो भिन्नता है वह क्यों होवे ऐसी शंका होवे ५ प्रवचनान्तर से - प्रवचन सो आगम इस में भिन्नता होने से शंका उत्पन्न होवे. जैसे बावीस तीर्थंकर के साधुओंको चार महाव्रत और प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के साधुओं को पांच महाव्रत ऐसी भिन्नता ६ प्रावचनान्तर से - अर्थात् गीतार्थ के वचन में भिन्नता होने से शंका करे जैसे एक आचार्य थोडी क्रिया करते हैं और दूसरे विशेष क्रिया करते होवे. ७ कल्पान्तर से - अर्थात् कल्प २ में भिन्नता देखकर शंका होवे जैसे जिन कल्पी नग्नत्वपना वगैरह अतिकष्ट सहन करते हैं और स्थविर कल्पी वस्त्रादि सहित प्रवर्ते. ये दोनों किस प्रकार से कर्मक्षय करे वैसी शंका उत्पन्न होवे ८ मार्गान्तर से - अर्थात् पूर्वापर समाचारी में भिन्नता होने से शंका उत्पन्न होवे ९ मतांतर से - आचार्य के अभिप्राय में भिन्नता होने से शंका उत्पन्न होवे १० भंगान्तरसे - अर्थात् द्वीभंगी चौभंगी की विचारना उस में भिन्नता की समझ नहीं होने से शंका उत्पन्न होवे ११ नयांतर से द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक नय में नित्यानित्य वस्तु का स्वरूप जानकर शंका उत्पन्न होवे, १२ नियमान्तर से - जब यावज्जीव पर्यंत सामा-

शब्दार्थ त० तुमारे ध० धर्माचार्य पास की ध० धर्मोपदेशक की पास स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वांदे नं० नमस्कार कर जा० यावत् प० पूजे अ० यथासुखम् दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रति बंध क० करो त० तब भ० भगवान् गो० गौतम खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय की स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां प० निश्चय कीया ग० जाने को ॥ १३ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर वि० निस भोजी हो० थे त० तब स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर वि० नित्यभोजी का स० शरीर को उ० उदार सिं० शो-

सूत्र धम्मोवदेसयं समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंधंकरेह ॥ तएणं भगवं गोयमे खंदएणं कच्चायणसगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेनेव पहारेच्छ गमणाए॥ १३॥तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वियट्टभोजीयावि होत्था॥ तएणं समणस्स भगवओ महावीर-स्स वियट्टभोइस्स सरीरयं उरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकिय विभू-

भावार्थ वीर स्वामी को वंदना नमस्कार करूं. अहो स्कंदक ! जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो, विलम्ब मत करो. तब श्री गौतम स्वामी स्कंदक परिव्राजक को साथ लेकर जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी थे. वहां आये ॥ १३ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर नित्यभोजी थे. उन का शरीर

शब्दार्थ क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृति प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ कर्म प्रकृति प० प्ररूपी क० कर्म प्रकृतिका प० पहिला उद्देशा ने० जानना जा० यावत् अ० अनुभाग क० कितनी क० कर्म प्रकृति क० कैसे बं० बांधे क० कितने ठा० स्थानमें बं० बांधे प० प्रकृति क० कितनी वे० वेदे प० प्रकृति अ० अनुभाग क० कितना प्रकारका क० किसका ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये

सूत्र कतिणं भंते ! कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्म पगडीओ पण्णत्ताओं, । कम्म पयडीए पढमोउद्देसो नेयव्वो ॥ जाव अणुभागो सम्मत्तो ॥ गाहा—कति पगडी कहिं बंधइ । कतिहिं ठाणेहिं बंधए पगडी ॥ कइ वेदेइ य पगडी । अणुभागो कतिविहो कस्स ॥ १ ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णे-

भावार्थ गत उद्देशे में कर्म की वेदना उदीरणा आदिका कथन किया है. अब इस उद्देशे में कर्म का स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृतियों कही ? अहो गौतम ! कर्म की मूल आठ प्रकृति कही. इन का विस्तार पूर्वक कथन पन्नवणा सूत्र के तेत्तीसवा पद के प्रथम उद्देशे में कहा है. उस में से अनुभाग तक का जानना. उस का संक्षेप में अर्थ बतानेवाली संग्रह गाथा कहते हैं. १ कितनी कर्म प्रकृतियों २ प्रकृति कैसे बांधे ३ कितने स्थानक में प्रकृति बांधे, ४ कितनी प्रकृति वेदे और ५ कितने प्रकार का अनुभाग होवे ऐसे पांच द्वार कहे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्यात्व मोहनीय से कराये हुवे

शब्दार्थ वि० विस्तार हि० हृदय वाला जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त महावीर को ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके जा० यावत् प० पूजनेलगे ॥ ८ ॥ स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम को खं० खंदक सा०सावत्थी ण० नगरी में पिं०पिंगलक निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुनने वाला इ० इस अ० प्रश्न से मा० मागध किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनंत-

सूत्र तेणेव उवागच्छइ२त्ता, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ जाव पज्जुवासइ ॥ १५ ॥ खंदयाइ समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी सेणूणंतुमं खंदया ! सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालिसावएणं इणमक्खेवं, मागहा ! किं सअंतेलोए, अणंतेलोए एवं तंचेव जाव जेणेव मम अंति-

भावार्थ हर्षित बनाहुआ जहां श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आये; आकर श्री श्रमण भगवंत महावीर को तीन आदान व प्रदक्षिणा की, यावत् सेवाभक्ति की ॥ १५ ॥ तब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने कात्यायन गोत्रीय खंदक को पूछा कि अहो खंदक ! श्रावस्ती नगरी में महावीर के वचन सुनने का रसिक पिंगल निर्ग्रन्थने ऐसा पूछा कि अहो मागध ! अंत सहित लोक है या अंत रहित लोक है यावत् किस मरण से जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है ? उस का उत्तर नहीं दे सकनेसे तू शीघ्र मेरी

शब्दार्थ क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृति प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ कर्म प्रकृति प० प्ररूपी क० कर्म प्रकृतिका प० पहिला उद्देशा ने० जानना जा० यावत् अ० अनुभाग क० कितनी क० कर्म प्रकृति क० कैसे बं० बांधे क० कितने ठा० स्थानमें बं० बांधे प० प्रकृति क० कितनी वे० वेदे प० प्रकृति अ० अनुभाग क० कितना प्रकारका क० किसका ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये

सूत्र कतिणं भंते ! कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ, । कम्म पयडीए पढमोउद्देसो नेयव्वो ॥ जाव अणुभागो सम्मत्तो ॥ गाहा—कति पगडी कहिं बंधइ । कतिहिं ठाणेहिं बंधए पगडी ॥ कइ वेदेइ व पगडी । अणुभागो कतिविहो कस्स ॥ १ ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णे-

भावार्थ गत उद्देशे में कर्म की वेदना उदीरणा आदिका कथन किया है. अब इस उद्देशे में कर्म का स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृतियों कही ? अहो गौतम ! कर्म की मूल आठ प्रकृति कही. इन का विस्तार पूर्वक कथन पन्नवणा सूत्र के तेत्तीसवा पद के प्रथम उद्देशे में कहा है. उस में से अनुभाग तक का जानना. उस का संक्षेप में अर्थ बतानेवाली संग्रह गाथा कहते हैं. १ कितनी कर्म प्रकृतियों २ प्रकृति कैसे बांधे ३ कितने स्थानक में प्रकृति बांधे, ४ कितनी प्रकृति वेदे और ५ कितने प्रकार का अनुभाग होवे ऐसे पांच द्वार कहे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्यात्व मोहनीय से कराये हुवे

शब्दार्थ को० कोडा कोडा आ० लंबा वि० चौडा अ० असंख्यात जो० योजन को० कोडा कोड प० परधि में अ० है से० उस का अं० अंत का० काल मे लो० लोक न० नहीं क० कदापि न० नहीं आ० हुवा न० नहीं कदापि न० नहीं है न० नहीं कदापि न० न होगा भु० हुवा भ० होता है भ० होगा धु० ध्रुव नि० नित्य सा० शाश्वत अ० अक्षय अ० अव्यय अ० अवस्थित णि० नित्य ण० नहीं है से० उस का अं० अंत भा० भाव से लो० लोक अ० अनंत वर्ण प० पर्यव गं० गंध र० रस फा० स्पर्श अ० अनंत सं०

सूत्र खेत्तओणं लोए असंखेज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ आयामविक्खंमेणं, असंखेज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पण्णत्ता, आत्थि पुण सेअंते. ॥ कालओणं लोए न कयाइ न आसि, न कदाइ न भवइ, न कदाइ न भविस्सइ, भुविंसु य, भवतिय, भविस्सइय धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे, णात्थिपुणसे अंते, भावओणं लोए अणंतावण्ण पज्जवा, गंधरसफास, अणंता संट्ठाण पज्जवा, अणंता गुरुय लहुय

भावार्थ है और परिधि भी उस की असंख्यात योजन की है तथापि वह लोक अंत सहित है. काल से, पहिला लोक नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं, भविष्य में नहीं होगा वैसा नहीं; परंतु अतीतकाल में था, वर्तमान में है और भविष्य में होगा. और भी वह ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित व नित्य है. इसलिये कालसे लोक का अंत नहीं है. भाव से लोक के अनंत वर्ण पर्यव गंध, रस व स्पर्श

शब्दार्थ अंगीकारकरे गो० गौतम वा० बालवीर्य पने उ० अंगीकार करे णो० नहीं पं० पंडित वीर्यपने नो० नहीं बा० बाल- पंडित वीर्यपने ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये क० कर्म के उ० उदयसे अ० अतिक्रमे हं० हां अ० अतिक्रमे से० वह भं० भगवन् जा० यावत् बा० बाल पंडित वीर्य पने अ० अतिक्रमे

सूत्र रियत्ताए उवट्ठाएज्जा णो पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, णो बाल पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिन्नेणं अवक्कमेज्जा? हंता अवक्कमेज्जा. से भंते ! जाव बालपंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? गोयमा ! बाल वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, नो पंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा. सिय बाल पंडिय

भावार्थ वीर्य व बाल पंडित वीर्य से अंगीकार नहीं करता है ॥ २ ॥ अब अपक्रमण सो पीछा पडना उस संबंध में प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! जीव मोहनीय कर्म के उदय से अपक्रमता है, उपर के गुणस्थान पर गया हुवा पीछा पडता है ? हां गौतम! जीव मोहनीय कर्म के उदय से उत्तम गुणस्थान से हीन गुणस्थान को जाता है. अहो भगवन् ! क्या वीर्य सहित जाता है या वीर्य रहित जाता है ? अहो गौतम ! वीर्य सहित जाता है. यदि वीर्य सहित जाता है तो क्या बाल वीर्य से, पंडित वीर्य से या बाल पंडित वीर्य से जाता है. ? अहो गौतम ! बाल वीर्य से अपक्रमे परंतु पंडित वीर्य से अपक्रमे नहीं कदाचित् बाल पंडित

शब्दार्थ अवगाहिक अ० है मे० उसका अं० अंत का०काल से जी० जीव न० नहीं क०कदापि नहीं हुवा णि० नित्य न० नहीं हैं से० उसका अं० अंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ना० ज्ञान पर्यव अ० अनंत द० दर्शन पर्यव अ० अनंत च०चारित्र पर्यव अ० अनंत गु० गुरुलघु पर्यव अ० अनंत अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अं० अंत द० द्रव्य मे जी० जीव स० अंतसहित खे० क्षेत्र से स० अंतसहित का० काल से अ० अनंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ॥ १७ ॥ जे० जो खं०

सूत्र नत्थि पुणसे अंते, भावओणं जीवे अणंता णाणपज्जवा, अणंता दंसण पज्जवा, अणंता चरित्तपज्जवा, अणंता गुरुय लहुय पज्जवा, अणंता अगुरुय लहुय पज्जवा, नत्थि पुण से अंते । सेत्तं दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओजीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते ॥ १७ ॥ जेवियणं तेखंदया पुच्छा अंतासिद्धी,

भावार्थ ख्यात प्रदेशात्मक है इसलिये अंत सहित है, कालसे जीव पहिले नहीं था वैसा नहीं, नहीं है वैसा नहीं व नहीं होगा वैसा नहीं, परंतु अतीत कालमें था, वर्तमानमें है और आगामिकमें होगा, वैसे ही वह नित्य, शाश्वत है, इसलिये काल से जीव अंत रहित है. भावसे जीव को अनंत ज्ञान पर्यव, अनंत दर्शन पर्यव, अनंत चारित्र पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव है, इसलिये जीव अंत रहित है. इस तरह द्रव्यसे जीव अंत सहित है, क्षेत्र से जीव अंत सहित है, काल से व भाव से जीव अंत रहित है ॥ १७ ॥ अहो खंदक !

शब्दार्थ त्मा से अ० अतिक्रमे अ० परात्मा से अतिक्रमे गो० गौतम आ० आत्मासे अ० अतिक्रमे णो० नहीं अ० परात्मासे अ० अतिक्रमे मो० मोहनीय क० कर्म वे० वेदता से० वह क० कैसे ए० यह भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम पु० पहिले से वह ए० यह ए० ऐसा रो० रुचे इ० पीछे से० वह ए० यह ए० ऐसा णो० नहीं रो० रुचे ए० ऐसे ख० निश्चय ए० यह ॥८॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् ने० नार-

सूत्र अवक्कमइ ? गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, णो अणायाए अवक्कमइ ! मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे । सेकहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! पुव्विं से एयं एवं रोयइ, इयाणिं से एयं एवं नो रोयइ, एवं खलु एयं एवं ॥ ९ ॥ सेणूणं भंते ! नेरइयस्सवा, तिरिक्ख जो-

भावार्थ अहो भगवन् ! जीव अपनी आत्मासे अपक्रमता है या अन्य की आत्मा से अपक्रमता है. अहो गौतम ! जीव मिथ्यात्व मोहनीय व चारित्र मोहनीय वेदता हुवा अपनी आत्मा से अपक्रमे परंतु अन्यकी आत्मा से अपक्रमे नहीं. अहो भगवन् ! मोहनीय कर्म वेदनेवाले को पहिले पंडितपने की रुचि थी और फीर मिथ्यात्व की रुचि हुई वह कैसे ? अहो गौतम ! अपक्रमण से पहिले अपक्रमणकारी जीव इस जीवादि पदार्थ अथवा अहिंसादि वस्तु को जैसे जिनेश्वर भगवान्ने कहीं वैसे ही श्रद्धता था; अब मोहनीय कर्म के उदय से जीवादि पदार्थ व अहिंसादिक वस्तु को जैसे तीर्थंकरने कहीं वैसे श्रद्धे नहीं इसलिये निश्चय में उक्त प्रकार से मोहनीय कर्म वेदते हुवे जीव स्वात्मा से अपक्रमे ॥ ८ ॥ मोहनीय कर्म के अधिकार से

शब्दार्थ — अवगाहिक अ० है से० उसका अं० अंत का० काल से जी० जीव न० नहीं क० कदापि नहीं हुवा णि० नित्य न० नहीं है से० उसका अं० अंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ना० ज्ञान पर्यव अ० अनंत द० दर्शन पर्यव अ० अनंत च० चारित्र पर्यव अ० अनंत गु० गुरुलघु पर्यव अ० अनंत अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अं० अंत द० द्रव्य से जी० जीव स० अंतसहित खे० क्षेत्र से स० अंतसहित का० काल से अ० अनंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ॥ १७ ॥ जे० जो खं०

सूत्र — नत्थि पुणसे अंते, भावओणं जीवे अणंता णाणपज्जवा, अणंता दंसण पज्जवा, अणंता चरित्तपज्जवा, अणंता गुरुय लहुय पज्जवा, अणंता अगुरुय लहुय पज्जवा, नत्थि पुण से अंते । सेत्तं दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओजीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते ॥ १७ ॥ जेवियणं तेखंदया पुच्छा अंतासिद्धी,

भावार्थ — ख्यात प्रदेशात्मक है इसलिये अंत सहित है, कालसे जीव पहिले नहीं था वैसा नहीं, नहीं है वैसा नहीं व नहीं होगा वैसा नहीं, परंतु अतीत कालमें था, वर्तमानमें है और आगामिकमें होगा, वैसे ही वह नित्य, शाश्वत है, इसलिये काल से जीव अंत रहित है. भावसे जीव को अनंत ज्ञान पर्यव, अनंत दर्शन पर्यव, अनंत चारित्र पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव है, इसलिये जीव अंत रहित है. इस तरह द्रव्यसे जीव अंत सहित है, क्षेत्र से जीव अंत सहित है, काल से व भाव से जीव अंत रहित है ॥ १७ ॥ अहो स्कंदक !

शब्दार्थ मोक्ष ए० ऐसे म० मैंने दु० दोप्रकारे क० कर्म प० प्रदेशप०प्रदेश कर्म अ० अनुभाग कर्म त० तहां जं० जो प० प्रदेश कर्म तं० उस को णि० निश्चय वे० वेदे जं० जो अ० अनुभाग कर्म तं० उस को अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक नो० नहीं वे० वेदे णा० जाना अ० अरिहंतने सु० सूना अ० अरिहंतने वि० विशेषजाना अ० अरिहंतने इ० इस कर्म को अ० यह जीव उ० उदय आये वे० वेदना वे० वेदेगा अ० जैसे कर्म अ० बांधे हैं ज० जैसे तं० उनको भ० भगवन्तने दि० देखे त० तैसे प० परिणमेंगे से० इस

सूत्र दुविहे कम्मे पण्णत्ते तंजहा, पएसकम्मेय, अणुभागकम्मेय । तत्थणं जं तं पएसकम्मं तं नियमा वेदेइ, तत्थणं जं तं अणुभागकम्मं तं अत्थेगइयं वेदेइ अत्थेगइयं नो वेदेइ णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, इमं कम्मं अयंजीवे अब्भोवगमियाए वेयणाए वेयइस्सइ, इमंकम्मं अयं जीवे उवक्कमियाए वेयणाए वेयइस्सइ, अहाकम्मं अहाणि

भावार्थ वादिक अनेक प्रकार से भिन्न प्रकार के विभाग करके जाने हैं, अरिहंत को 'यह कर्म है, यह जीव है' ऐसा प्रत्यक्ष है. प्रवर्ज्या काल से लेकर ब्रह्मचर्य भूमिशयन, केशलोचनादिक का अंगीकार से निवर्तना सो अभ्युपगमिकी वेदना उस को यह जीव वेदेगा. स्वयमेव उदय में आये हुवे अथवा उदीरणा से उदय में लाये हुवे कर्मों को वेदना सो औपक्रमिकी वेदना, उस को यह जीव वेदेगा. जैसे कर्म बांधे हैं, जैसे कर्म के देश कालादि है और जैसे २ भगवन्तने कर्म देखे वैसे २ परिणमेंगे. इसलिये अहो गौतम !

शब्दार्थ — आ० थी भा० भाव से ज० जैसे लो० लोक का त० तैसे भा० कहना त० उस में द्रव्य से सि० सिद्धि स० अंतसहित खे० क्षेत्र से स० अंतसहित का० काल से अ० अनंत भा० भाव से अ० अनंत॥१८॥ जे० जो खं० खंदक जा० यावत् किं० क्या अ० अनंत सिद्ध जा० यावत् द० द्रव्य से ए० एकसिद्ध स० अंतसहित खे० क्षेत्र से सि० सिद्ध अ० असंख्यात प्रदेशात्मक अ० असंख्यात प० प्रदेशावगाहिक अ० है अं० अंत

सूत्र — लोयस्स तहा भाणियव्वा। तत्थ दव्वओ सिद्धी सअंता, खेत्तओ सिद्धी सअंता, कालओ सिद्धी अनंता भावओ सिद्धी अणंता॥ १८॥ जेवियते खंदया ! जाव किं अनंते सिद्धे तंचेव जाव दव्व-ओणं एगे सिद्धे सअंते, खेत्तओणं सिद्धे असंखेज्ज पएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थिपुण अंते. कालओणं सिद्धे सादीए अपज्जवसिए नत्थिपुणसे अंते, भाव

भावार्थ — से अंतरहित है, और भाव से अनंत वर्ण, गंध रस व स्पर्श के पर्यव, अनंत संठानादिक अनंत गुरुलघु व अनंत अगुरुलघु के पर्यव होने से अंत रहित है. इस तरह सिद्ध शिला द्रव्यव क्षेत्रसे अंत सहित है, और काल व भाव से अंत रहित है. ॥ १८ ॥ अहो खंदक सिद्ध अंत सहित है या अनंत है उस के प्रश्न के उत्तर में सिद्ध के पूर्वोक्त प्रकार के द्रव्यादि चार भेद कहे हैं. द्रव्य से सिद्ध एक होने से अंत सहित है, क्षेत्रसे असंख्यात प्रदेशात्म सिद्ध होने से भी अंत सहित है, काल से एक सिद्ध आश्री आदि सहित व अंत रहित है इसलिये अनंत है और भाव से अनंत

शब्दार्थ हं० हां गो० गौतम तं० तैसे व० कहना ए० यह भं० भगवन् पो० पुद्गल अ० अनागत में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल भ० होगा इ० ऐसा व० कहना हं० हां गो० गौतम तं० तैसे ही उ० कहना. ए० ऐसे खं० स्कन्ध में ति० तीन आ० आलापक ॥ ७ ॥ ए० ऐसे जी० जीव में ति० तीन आ० आलापक भा० कहना ॥ ८ ॥ छ० छद्मस्थ भं० भगवन् म० मनुष्य अ० अतीत काल में अ० अनंत. सा० शाश्वत

सूत्र अणागयमणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया? हंता गोयमा ! तंचेवं उच्चारेयव्वं ॥ एवं खंधेणवितिण्णि आलावगा ॥ ७ ॥ एवं जीवेणवि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ॥ ८ ॥ छउमत्थेणं भंते ! मणूसे तीतमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं,

भावार्थ कहना ? हां गौतम ! वर्तमान काल में सब पुद्गल शाश्वत है. अहो भगवन् ! अनागत काल में सब पुद्गल अनंतपना से शाश्वत रहेंगे ? हां गौतम ! सब पुद्गल शाश्वत रहेंगे. (परमाणु पुद्गल का संयोग मीलने से स्कंध होता है उन पर भी तीन आलापक जानना ॥ ७ ॥ पुद्गल का प्रतिपक्षी जीव है इस लिये जीव का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! अतीत काल में जीव था ? अहो गौतम ! जैसे तीन काल के तीन आलापक पुद्गल के कहे वैसे ही भूत, भविष्य व वर्तमान काल की अपेक्षा से जीव के भी तीन आलापक जानना ॥ ८ ॥ अब जीव के अधिकार से उद्देशा के अंत तक यथोत्तर प्रधान जीव की वक्तव्यता करते हैं. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य अतीत, अनंत व शाश्वत काल में संपूर्ण शुद्ध संयम से,

१ इसमें केवल ज्ञान व अवधिज्ञान ऐसे दोनोंज्ञान रहितको लेना क्योंकि अवधिज्ञानका अधिकार आगेआवेगा

शब्दार्थ दु० दोप्रकार के म० मरण बा० बाल मरण प० पंडित मरण कि० कैसे बा० बाल मरण बा० बाल मरण दु० बारह प्रकारका व० क्षुधासे मरण व० इन्द्रिय वश मरण अं० अंतः शल्यमरण त० तद्भवमरण गि० गिरिपडन त० तरुपडन ज० जल प्रवेश ज० अग्निप्रवेश वि० विप भक्षण स० शस्त्र से मरना वे० फांसी देकर गि० गृद्ध के पृष्ठ में प्रवेश करना खं० खंदक दु० बारह प्रकारका बा० बालमरण से म० मरता जी०

सूत्र तस्सावियणं अयमट्ठे एवं खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते तंजहा-बालमरणेय, पंडियमरणेय. । से किं तं बालमरणे ? बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते तंजहा वलयमरणे, वसट्टमरणे, अंतोसल्लमरणे, तब्भवमरणे, गिरिपडणे, तरुपडणे, जलप्पवेसे, जलणप्पवेसे विसभक्खणे, सत्थोवाडणे, वेहाणसे, गिद्धपिट्ठे । इच्चेएणं खंदया ? दुवालस-विहेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ,

भावार्थ तिर्यंच होना सो तद्भव मरण ५ पर्वत से पडकर मरना सो गिरिपडण मरण ६ वृक्ष से गिरकर मरना सो तरुपडण मरण ७ पानी में प्रवेश कर मरे सो जलप्रवेश मरण ८ अग्नि में प्रवेश कर मरना सो जलन प्रवेश मरण ९ विप खाकर मरना सो विप भक्षण मरण १० शस्त्रसे छेदकर मरना ११ वृक्षकी शाखादिक से फांसो खाकर मरना सो वेहानस और १२ गृद्धप्रमुख के मृतक शरीर में प्रवेश कर मरना. इस तरह बारह प्रकार के व अन्य भी बाल मरण से जीव अनंत बार नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव का भव ग्रहण करता

शब्दार्थ

है जा० यावत् स० सब दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे से० वह ते० इस लिये गो० गौतम जा० यावत् स० सब दु० दुःखों का अं० अंतक्रिया प० वर्तमान में ए० ऐसे न० विशेष सि० सिझते हैं भा० कहना अ० अनागत में ए० ऐसे न० विशेष सि० सिझेंगे भा० कहना ॥ ९ ॥ ज० जैसे छ० छद्मस्थ त० तैसे अ० अवधि त० तैसे प० परमावधि ति० तीन २ आ० आलापक भा० कहना ॥ १० ॥ के० केवली भं० भगवन् म० मनुष्य ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स०

सूत्र

ते उप्पन्न नाणदंसणधरा अरहा जिणे केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झंति, बुज्झंति, मुचंति, परिनिव्वायंति, जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिंसुवा करितिवा करिस्संतिवा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव सव्व दुक्खाणमंतं करिंसु । पडुपन्नेवि एवं चेव, नवरं सिज्झंति भाणियव्वं. अणागएवि एवंचेव, नवरं सिज्झिस्संति भाणियव्वं ॥ ९ ॥ जहा छउमत्थो तहा आहोहिओवि, तहा परमोहिओवि तिन्नितिन्नि आलावगा भाणियव्वा ॥ १० ॥ केवलीणं भंते ! मणूसे तीतमणंतं सासयं समयं जाव अंतं करेंसु ? हंता

भावार्थ

धारक जिन हुवे पीछे सिझते हैं, बुझते हैं व निर्वाण को प्राप्त होते हैं यावत् सब दुःखों का अंत किया, करते हैं व करेंगे. इसलिये अहो गौतम ! सब दुःखों का अंत किया वहां वर्तमान काल में सिझते हैं व भविष्य काल में सिझेंगे कहना शेष सब पहिले जैसे कहना ॥ ९ ॥ जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही अवधि व परम अवधिज्ञानी का जानना ॥ १० ॥ अब केवल ज्ञानी की पृच्छा करते हैं. अहो

दार्थ दु० दोप्रकार के म० मरण वा० बाल मरण प० पंडित मरण किं० कैसे वा० बाल मरण बा० बाल मरण दु० बारह प्रकारका व० क्षुधासे मरण व० इन्द्रिय वश मरण अं० अंतः शल्यमरण त० तद्भवमरण गि० गिरिपडन त० तरुपडन ज० जल प्रवेश ज० अग्निप्रवेश वि० विष भक्षण स० शस्त्र से मरना वे० फांसी देकर गि० गृद्ध के पृष्ठ में प्रवेश करना खं० खंदक दु० बारह प्रकारका वा० बालमरण से म० मरता जी०

सूत्र तस्सावियणं अयमट्ठे एवं खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते तंजहा-बालमरणेय, पंडियमरणेय. । से किं तं बालमरणे ? बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते तंजहा वलयमरणे, वसट्टमरणे, अंतोसल्लमरणे, तब्भवमरणे, गिरिपडणे, तरुपडणे, जलप्पवेसे, जलणप्पवेसे विसभक्खणे, सत्थोवाडणे, वेहाणसे, गिद्धपिट्ठे । इच्चेएणं खंदया ? दुवालस-विहेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ,

भावार्थ तिर्यंच होना सो तद्भव मरण ५ पर्वत से पडकर मरना सो गिरिपडण मरण ६ वृक्ष से गिरकर मरना सो तरुपडण मरण ७ पानी में प्रवेश कर मरे सो जलप्रवेश मरण ८ अग्नि में प्रवेश कर मरना सो जलन प्रवेश मरण ९ विष खाकर मरना सो विष भक्षण मरण १० शस्त्रसे छेदकर मरना ११ वृक्षकी शाखादिक से फांसी खाकर मरना सो वेहानस और १२ गृद्धप्रमुख के मृतक शरीर में प्रवेश कर मरना. इस तरह बारह प्रकार के व अन्य भी बाल मरण से जीव अनंत बार नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव का भव ग्रहण करता

शब्दार्थ अं० चरिम शरीरी स० सर्व दुःख का अं० अंतक्रिया क० करता है क० करेगा स० सर्व ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं जा० यावत् अं० अंत क० करेंगे हं० हां गो० गौतम ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए उतना व० कहना हं० हां गो० गौतम उ० उत्पन्न

सूत्र

मंतं करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा ॥ सव्वेते उप्पण्ण नाण दंसण धरा अरहा जिणे केवली भवित्ता, तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करिस्संतिवा ? हंता गोयमा! तीत मणंतं सासयं जाव अंतंकरिस्संतिवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! उप्पण्णं नाण दंसण धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! उप्पण्ण

भावार्थ काल के अनंत शाश्वत समय में सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक, अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हुवे? उन से अधिक ज्ञान प्राप्त करने को अन्य कोई भी समर्थ नहीं है ? हां गोतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हैं अन्य कोई इस से अधिक ज्ञानी नहीं है. अहो भगवन् ! आपने कहा

शब्दार्थ वह पा० पादोपगमन भ० भक्त प्रत्याख्यान दु० दोप्रकार का नी० नीहारिम अ० अनीहारिम नि०निश्चय स० प्रतिक्रमण भ० भक्त प्रत्याख्यान खं० खंदक दु० दोप्रकार का पं० पंडित मरण से म० मरता जी० जीव अ० अनंत ने० नारकी भ० भव से अ० आत्मा को वि०पृथक्करे जा० यावत् वी० तीरे इ० इन खं० खंदक दु० दोप्रकार के म० मरण मे म० मरता जीव व० वृद्धि पावे हा० हानीपावे ॥ २० ॥ से०

सूत्र रिमेय. नियमा अपडिक्कमे. सेत्तं पाओवगमणे । से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे प० तं० नीहारिमेय, अनीहारिमेय, नियमा सपडिक्कमे. सेत्तं भत्त पच्चक्खाणे इच्चेतेणं खंदया ! दुविहेणं पंडियमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ जाव वीयिवियइ. सेतं मरमाणे हायइ. सेतं पंडियमरणे ॥ इच्चेएणं खंदया! दुविहेणं मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढइ वा,हायइ वा॥ २०॥

भावार्थ नहीं करता है. भक्त प्रत्याख्यान के दो भेद कहे हैं नीहारिम और अनीहारिम. यह प्रतिक्रमण करता है क्यों कि इन को हलन चलनादि क्रिया होती है. इस तरह अहो खंदक! दो प्रकार के पंडित मरण मरने वाला नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव के भव में अनंतवार उत्पन्न नहीं होता है यावत् संसार में परिभ्रमण नहीं करता है. इसतरह मरण मरने वाला संसार का क्षय करता है. अहो खंदक! ऐसे दो मरण मरनेसे जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है. ॥ २० ॥ इस तरह उत्तर सुनकर. कात्यायन गोत्रीय खंदक परिव्राजक

शब्दार्थ अं० चरिम शरीरी स० सर्व दुःख का अं० अंतक्रिया क० करता है क० करेगा स० सर्व ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन वाले अ० अरिहंत जिं० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं जा० यावत् अं० अंत क० करेंगे हं० हां गो० गौतम ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए उतना व० कहना हं० हां गो० गौतम उ० उत्पन्न

सूत्र मंतं करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा ॥ सव्वेते उप्पण्ण नाण दंसण धरा अरहा जिणे केवली भवित्ता, तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करिस्संतिवा ? हंता गोयमा! तीत मणंतं सासयं जाव अंतंकरिस्संतिवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! उप्पण्ण नाण दंसणं धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! उप्पण्ण

भावार्थ काल के अनंत शाश्वत समय में सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक, अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हुवे? उन से अधिक ज्ञान प्राप्त करने को अन्य कोई भी समर्थ नहीं है ? हां गोतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हैं अन्य कोई इस से अधिक ज्ञानी नहीं है. अहो भगवन् ! आपने कहा

शब्दार्थ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीरकी अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर नि० अवधारकर हृ० हृष्ट तु०तुष्ट जा० यावत् ह० हर्षहुवा हि० हृदयमें उ० स्थान से उ० खडे हुवे उ० खडे होकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा की क० करके ए० ऐसा व० बोले स० श्रद्धताहूं भं० भगवन् नि० निर्ग्रंथ पा० प्रवचन को प० प्रतीत करता हूं रो० रुचि करता हूं अ० उद्यम करता हूं ए० ऐसे ही भं० भगवन् त० तैसे भं० भगवन् अ० सत्य अ० संदेहरहित इ० इच्छित प०

सूत्र तएणंसे खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करेइत्ता एवंवयासी, सद्दहामिणं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामिणं भंते निग्गंथं पावयणं रोएमिणं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमिणं भंते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयंभंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छिय

भावार्थ समीप धर्म सुनकर व अवधार कर अत्यंत हर्षित हुए. और तत्काल उठकर श्रमण भगवंत महावीर को तीन आदान प्रदक्षिणा कर के ऐसा कहा कि अहो भगवन् ! निर्ग्रन्थ वचन को मैं श्रद्धता हूं, उन की रुचि करता हूं, उन प्रवचनों की मैं प्रतीति करता हूं, उन प्रवचनों में मैं उद्यमवन्त बना हुआ हूं, अहो भगवन्! निर्ग्रंथ प्रवचन वैसे ही यथायोग्य है, संदेह रहित, इष्ट है. प्रतीच्छित है. ऐसा कहकर श्री महावीर स्वामी

शब्दार्थ

जो० ज्योतिषी वि० विमान वास स० शत सहस्र सो० सौधर्म में भं० भगवन् क० कितने वि० विमान वास स० शतसहस्र गो० गौतम व० बत्तीस विमानवास स० शतसहस्र ए० ऐसे व० बत्तीस अ० अट्ठावीस व० बारह अ० आठ च० चार स० शतसहस्र प० पचास च० चालीस छ० छ स० सहस्र स० सहस्रार में आ० आनत पा० प्राणत क० देवलोक च० चार स० शत आ० आरण अ० अच्युत में ति०

सूत्र

प० ॥ सोहम्मेणं भंते ! कइविमाणा वास सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीसं विमाणावास सयसहस्सा प० । एवं (गाथा) बत्तीसट्ठावीसा, बारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा ॥ पण्णा चत्तालीसाछच्चसहस्सा सहस्सारे ॥१॥ आणय पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ॥ सत्त विमाण सयाइं, चउसुवि एएसु कप्पेसु ॥ २ ॥

भावार्थ

अप्, तेऊ, वायु, वनस्पतिकायिक जीव द्वीन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यंतर व ज्योतिषी के असंख्यात स्थान कहे हैं. अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में कितने वास कहे हैं ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख विमान वास कहे हैं. दूसरे ईशान देवलोक में अट्ठावीस लाख विमान कहे हैं तीसरे सनत्कुमार में बारह लाख विमान कहे हैं, चौथे माहेन्द्र देवलोक में आठ लाख पांचवे ब्रह्म देवलोक में चार लाख छठे लांतक में ५० हजार, सातवे महाशुक्र में ४० हजार, आठवे सहस्रार में छ हजार नववे आणत दशवे प्राणत में इन दोनों देवलोक में चारसो अग्यारवे आरण बारवे

शब्दार्थ कोई गा० गाथापति आ० गृह में जि० जलते जे० जो त० तहां भं० भंडोपकरण भ० होवे अ० अल्पभार मो० बहुमूल्यवाली तं० उस को ग० ग्रहणकर आ० आत्मा से ए० एकान्त अ० अतिक्रमे. ए० यह नि० निकालते प० पीछे पु० पहिले हि० हितके लिये सु० सुख के लिये ख० क्षमाकेलिये नि० मुक्तिकेलिये अ० अनुगामिक भ० होगा ए० ऐसा दे०देवानुप्रिय म० मेरा आ०आत्मा ए० एकभंड इ० इष्ट कं० कान्त पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनाम धि० धैर्य वि० विश्वास स० स्वमत व० बहुमत अ० अनुमत भं० आभरण क०

सूत्र आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए, आलित्तपलित्तेणं भंते ! लोए जराए मरणेणय से जहा नामए केइ गाहावई आगारंसि झियायमाणांसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ, एस मे नित्थारिए समाणे पच्छापुराए हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ. एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झवि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे धिज्जे विस्सासिए

भावार्थ बना हुवा देखकर उस में जो अल्प भार व बहुत मूल्यवाली वस्तु होती हैं उन्हें नीकालता है, और नीकाल कर एकान्त स्थान में रखता है. और ऐसा विचारता है कि इस अग्नि में से नीकाली हुई वस्तु पीछे से हित, सुख, कल्याण की कर्ता व दारिद्य को हरनेवाली होगी. इस प्रकार अहो देवानुप्रिय ! मुझे, मेरा आत्मारूप एक बहु मूल्य पदार्थ इष्टकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ, मन को गमता, धैर्यता, स्थिरता व

शब्दार्थ तीस न० नरकावास स० शत सहस्र में ए० एकेक नि० नरकावास में ने० नारकी क० कितने ठि० स्थिति स्थान प० प्ररूपे गो० गौतम अ० असंख्यात ठि० स्थिति स्थान प० प्ररूपे तं० वह ज० जघन्य ठि० स्थिति स० समयाधिक ज० जघन्य स्थिति दु० दो समयाधिक जा० यावत् अ० असंख्यात समयाधिक ज० जघन्य स्थिति त० तत्प्रायोग्य उ० उत्कृष्ट ठि० स्थिति ॥४॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी में ती० तीन नि० नरका

सूत्र तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ठिइ-ट्ठाणा प० ? गोयमा ! असंखेज्जा ठिइट्ठाणा प० तं० जहण्णिया ठिई समयाहिया, जहण्णिया ठिई दुसमयाहिया, जाव असंखेज्ज समयाहिया जहण्णिया ठिई. तप्पाउ-ग्गुक्कोसिया ठिई ॥ ४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास

भावार्थ स्थिति होती है. उन में असंख्यात समय होते हैं इसलिये असंख्यात स्थिति स्थान होवे. वैसेही प्रत्येक नरकावास की अपेक्षासे भी असंख्याते स्थिति स्थान होवे. जो रत्नप्रभा के पहिले पाथडे में जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ९० हजार वर्ष की स्थिति है वह एक स्थिति स्थान वह भी प्रत्येक नरक में भिन्न है. उन से एक समय अधिक सो दूसरा जघन्य स्थिति स्थान वह भी अनेक प्रकार का है. ऐसेही असंख्यात समय अधिक जघन्य स्थिति स्थान वह भी अनेक प्रकार का है. स्थिति स्थानक प्रत्येक नरक व प्रत्येक पाथडे में भिन्न है. ऐसेही विवक्षित नरकावास को योग्य उत्कृष्ट स्थिति स्थानक भी अनेक

शब्दार्थ कोई गा० गाथापति आ० गृह में जि० जलते जे० जो त० तहां भं० भंडोपकरण भ० होवे अ० अल्पभार मो० बहुमूल्यवाली तं० उस को ग० ग्रहणकर आ० आत्मा से ए० एकान्त अ० अतिक्रमे. ए० यह नि० निकालते प० पीछे पु० पहिले हि० हितके लिये सु० सुख के लिये ख० क्षमाकेलिये नि० मुक्तिकेलिये अ० अनुगामिक भ० होगा ए० ऐसा दे०देवानुप्रिय म० मेरा आ०आत्मा ए० एकभंड इ० इष्ट कं० कान्त पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनाम धि० धैर्य वि० विश्वास स० स्वमत व० बहुमत अ० अनुमत भं० आभरण क०

सूत्र आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए, आलित्तपलित्तेणं भंते ! लोए जराए मरणेणय से जहा नामए केइ गाहावई आगारंसि झियायमाणांसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ, एस मे नित्थारिए समाणे पच्छापुराए हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ. एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झावि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे धिज्जे विस्सासिए

भावार्थ बना हुवा देखकर उस में जो अल्प भार व बहुत मूल्यवाली वस्तु होती हैं उन्हें नीकालता है, और नीकाल कर एकान्त स्थान में रखता है. और ऐसा विचारता है कि इस अग्नि में से नीकाली हुई वस्तु पीछे से हित, सुख, कल्याण की कर्ता व दारिद्र्य को हरनेवाली होगी. इस प्रकार अहो देवानुप्रिय ! मुझे, मेरा आत्मारूप एक बहु मूल्य पदार्थ इष्टकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ, मन को गमता, धैर्यता, स्थिरता व

शब्दार्थ नारकी किं० क्या को० क्रोधयुक्त मा० मा युक्त मा० मायायुक्त लो० लोभयुक्त स० सर्व ता० तैसां

सूत्र माणोवउत्तेय मायोवउत्ता । कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्तेय । कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता ॥ एवं कोहेणंमाणेणं लोभेणं चत्तारि भंगा ॥ अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ते मायोवउत्ते, लोभोवउत्ते. । अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ते, मायोवउत्ते लोभोवउत्ता । अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ते, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ते. अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता । अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ते, लोभोवउत्ते. । अहवा कोहोवउत्ता. माणोवउत्ता मायोवउत्ते, लोभोवउत्ता

भावार्थ इसमें अस्सी भांगे होते हैं. एकेन्द्रिय में चारों कषायवाले बहुत हैं इस से इन में भांगा नहीं होता है. × अब भांगे के भेद कहते हैं १ क्रोधवाले बहुत २ क्रोधके बहुत मान के एक ३ क्रोध के बहुत मान के बहुत ४ क्रोध के बहुत माया के एक ५ क्रोध के बहुत माया के बहुत ६ क्रोध के बहुत लोभ के एक ७ क्रोध के बहुत लोभ के बहुत (असंयोगी एक व द्विसंयोगी ६ मील ७ हुवे) ८ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक मायावंत एक ९ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक व मायावंत बहुत १० क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व

+ जहां विरह है वहां अस्सीभांगे और जहां विरह नहीं है वहां सत्ताइस भांगे होते हैं. यह विरह उत्पाद की अपेक्षा से नहीं ग्रहण किया है क्यों की वहांपर चौविस मुहूर्त का उत्पाद विरह कहा है और भांगे भी सत्तावीस ही कहे हैं

शब्दार्थ आ० आचार गो० गोचर वि० विनय वे० करता च० चरण क० करण जा० संयम यात्रा मा० मर्यादा ध० धर्म आ० कहो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को स० स्वतःने प० प्रव्रजा दी जा० यावत् ध० धर्म आ० कहा ए० ऐसा दे० देवानुप्रिय चि० खडा रहना गं० जाना ए० ऐसे नि० बैठना तु० सोना भुं० भोजन करना भा० बोलना ए० ऐसे उ० उठकर पा० प्राण भू० भूत

सूत्र मेवआयारगोयरं विणय वेणयिय चरणकरण जाया मायावत्तियं धम्ममाइक्खियं तएणं समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं सयमेव पव्वावेइ, जाव धम्म-माइक्खाइ एवं देवाणुप्पिया ! चिट्ठियव्वं, गंतव्वं, एवं निसीइयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं, भूतेहिं, जीवेहिं, सत्तेहिं

भावार्थ देनेवाला होगा. इसलिये अहो देवानुप्रिय ! मैं स्वयं मुंडित होने को, आचार क्रिया करने को, सूत्रार्थ ग्रहण करने को, आचार, गोचर, विनय करने को, चरण, करण संयम की मर्यादा करने को और जैसे आप धर्म कहते हो वैसा अंगीकार करने को वांच्छता हूं. तब श्री श्रमण भगवन्तने दीक्षा दी यावत् सब जिन धर्मका स्वरूप कहा कि अहो देवानुप्रिय खंदक ! युग प्रमाण भूमि देखकर चलना, ऐसे ही निर्गम प्रवेश रूप स्थान देखकर खडे रहना, भूमि पूंजकर बैठना, यत्नापूर्वक शयन करना, यत्नापूर्वक भोजन करना

शब्दार्थ नि० नरका वास स० शत सहस्र में ए० एकेक नि०नरका वास में स० समयाधिक ज० जघन्य ठि० स्थिति में व० वर्तते ने० नारकी किं० क्या को० क्रोधयुक्त मा० मानयुक्त मा० मायायुक्त लो० लोभयुक्त गो०

सूत्र इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि समयाहियाए जहण्णट्ठिईए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता ? गोयमा ! कोहोवउत्तेय, माणोवउत्तेय, मायोवउत्तेय, लोभोवउत्तेय। कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ताय, मायोवउत्ताय, लोभोवउत्ताय॥ अहवा

भावार्थ की जघन्य स्थितिवाले नारकी क्या क्रोधवाले ज्यादा है? मानवालेज्यादे हैं मायावाले ज्यादा है? या लोभवाले ज्यादा है? अहो गौतम ! एक समय से अधिक समय की व संख्यात समय से अधिक समय की जघन्य स्थिति वाले नारकी होवे और नभी होवे इसलिये इस में अस्सी भांग होते हैं. उस में असंयोगी आठ भांगे १ क्रोध का एक २ मान का एक ३ माया का एक ४ लोभ का एक ५ क्रोध का बहुत ६ मान का बहुत ७ माया का बहुत व ८ लोभ का बहुत. द्वि संयोगी भांगे २४-१ क्रोधवंत एक मानवंत एक २ क्रोधवंत एक मानवंत बहुत ३ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक ४ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत ५ क्रोधवंत एक मायावंत एक ६ क्रोधवंत एक मायावंत बहुत ७ क्रोधवंत बहुत मायावंत एक ८ क्रोधवंत बहुत मायावंत बहुत ९ क्रोधवंत एक लोभवंत एक १० क्रोधवंत एक लोभवंत बहुत ११ क्रोधवंत बहुत लोभवंत

शब्दार्थ ॥ २२ ॥ से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय अ० अनगार जा० हुवा इ० ईर्यासमिति भा० भाषासमिति ए० एषणा समिति आ० आदान भंड मात्र निक्षेपन समिति उ० उच्चार प्रश्रवण खेल सिंघाण ज० जल परिस्थापनिक समिति म० मनसमिति व० वचन समिति का० काय समिति म० मनगुप्ति व० वचनगुप्ति का० कायगुप्ति गु० गुप्त गु० गुप्तेन्द्रिय गु० गुप्त ब्रह्मचारी च० त्याग ल० लज्जा सहित ध० धन खं० क्षमा ख० सहनकरे जि० जितेन्द्रिय सो० मैत्रीभाव अ० निदान रहित अ० प्रार्थना रहित अ०

सूत्र तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाए इरिया समिए, भासा समिए, एसणा समिए, आयाण भंडमत्त निक्खेवणा समिए, उच्चारपासवणखेल सिंघाणजल्ल पारिट्ठा-वणिया समिए, मणसामिए, वयसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्ति-

भावार्थ मिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान भंडमात्र निक्षेपना समिति, उच्चार प्रश्रवण खेलजल परिस्थापनीय समिति, मन समिति, वचन समिति, काय समिति, मन गुप्ति, वचन गुप्ति व काय गुप्तिवाले, गुप्त, गुप्तेन्द्रिय, गुप्त ब्रह्मचारी, त्यागी, लज्जायुक्त, धर्मरूप धन का संग्रह करनेवाला, शान्ति क्षमा के धारक, जितेन्द्रिय, नियाना नहीं करनेवाले, उत्सुकपना रहित, संयम में लेश्यावन्त, श्रामण्य-साधुपना में रत व दमितेन्द्रिय कात्यायन गोत्रीय खंदक अनगार जिन प्रवचन को आगे करके विचरने लगे अर्थात् जैसे

शब्दार्थ — द० दडकी भा० कहना ॥ ६ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रहगति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम सि० कदाचित् वि० विग्रहगति स० प्राप्त सि० कदाचित् अ० अविग्रहगति स० प्राप्त ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ७ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रह-

सूत्र — भाणियव्वं ॥ एवं णाणत्तं, एवं सव्वेवि सोलसदंडगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते किं विग्गहगइ समावण्णए, अविग्गहगइ समावण्णए? गोयमा! सियविग्गह गइ समावण्णए, सिय अविग्गहगइ समावण्णए एवं जाव वेमाणिए॥ जीवाणं भंते! किं विग्गहगइ समावण्णगा, अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! विग्गहगइ समावण्णगावि, अविग्गहगइ समावण्णगावि ॥ ७ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं विग्गहगइ

भावार्थ — व चवण प्रायःगति पूर्वक होता है. इसलिये आगे गति का वर्णन कहते हैं. अहो भगवन् ! गति करते जीव क्या विग्रह गति से जाता है या अविग्रह गति से जाता है ? अहो गौतम ! किसी समय जीव विग्रह गति मे जाता है और किसी समय जीव अविग्रह गति से जाता है. ऐसा वैमानिक तक का जानना अब बहुत जीव आश्री प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीव विग्रह गतिवाले हैं या अविग्रह गतिवाले हैं ? विग्रहगतिवाले भी हैं और अविग्रहगतिवाले भी हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी विग्रह

शब्दार्थ म० महावीर ते० तहां उ० आये उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त जा० यावत् न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुमारी अ० आज्ञामिलते दो० दोमास की भि० भिक्षु प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरने को अ० यथासुखम् दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंधकरो ए० ऐसे दो० दोमास की ति० तीनमास की च० चार मास की पं० पांच छ० छ स० सात

सूत्र समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समणं भगवं जाव नमंसित्ता, एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया! मापडिबंधं. तंचेव एवं दोमासियं, तिमासियं, चाउम्मासियं, पंचछसत्त पढमं सत्तराइंदियं, दोच्चं सत्तराइंदियं, तच्चं

भावार्थ भगवन्त को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन्! आपकी आज्ञा होवे तो दो मास की भिक्षु प्रतिमा अंगीकार कर विचरुं. अहो देवानुप्रिय ! जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो. विलम्ब मत करो. तब सहर्ष आज्ञा लेकर दो मास पर्यंत दो दात आहार की व दो दात पानी की ग्रहण की. वैसे ही तीसरी तीन मास की भिक्षु प्रतिमा में तीन दात आहारकी व तीन दात पानीकी ग्रहण की. चार मासकी चौथी भिक्षु प्रतिमा में चार दात आहार की व चार दात पानी की ग्रहण की वैसेही पांच छ व सात मास की भिक्षु प्रतिमाओं में पांच, छ व सात मास तक पांच छ व सात दात आहार की व सात दात पानी की

शब्दार्थ च्छा प० परीषह आ० आहार नो० नहीं आ० आहार करे आ० आहारकरे आ० आहार करता आ० आहार करे प० परिणमता प०परिणमे प० क्षीण आ० आयुष्य वाला भ० होवे ज०जहां उ० उपजे त० उस आ० आयुष्य प०अनुभवे तं० उस ति०तिर्यंच आयुष्य म०मनुष्य आयुष्य गो० गौतम दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० मनुष्य आ० आयुष्य ॥ ९ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व०

सूत्र छावत्तियं, परिसह वत्तियं, आहारं नो आहारेइ, अहेणं आहारेइ आहारेज्जमाणे आहारिए,परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणेय आउए भवइ, जत्थ उववज्जइ, तमाउयं पडिसंवेदेइ तिरिक्ख जोणियाउयंवा, मणुस्साउयंवा ? हंता गोयमा ! देवेणं महड्ढिए जाव मणुस्साउयं वा ॥९॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ,

भावार्थ सुखवाले, व महानुभाव देवों चवन होने का समय पास आया हुवा जानकर माता पिता का क्रीडा स्थान देख लज्जा आने से, शुक्र शोणित का आहार की दुर्गच्छा आने से व पुद्गल ग्रहणरूप अरति परिषह से किंचित्कालतक आहार करे नहीं परंतु चवे पीछे क्षुधा वेदनीय के उदय से आहार करे. ऐसा आहार किये हुवे, परिणमाये हुवे व प्रक्षीण आयुष्यवाले देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य क्या वेदे ? हां गौतम ! ऐसा महर्द्धिक देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य वेदे ॥ ९ ॥ गर्भ में उत्पन्न होने के कारन से गर्भ की अव-

शब्दार्थ म० महावीर ते० तहां उ० आये उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त जा० यावत् न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुमारी अ० आज्ञामिलते दो० दोमास की भि० भिक्षु प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरने को अ० यथासुखम् दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंधकरो ए० ऐसे दो० दोमास की ति० तीनमास की च० चार मास की पं० पांच छ० छ स० सात

सूत्र समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समणं भगवं जाव नमंसित्ता, एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया! मापडिबंधं. तंचेव एवं दोमासियं, तिमासियं, चाउम्मासियं, पंचछसत्त पढमं सत्तराइंदियं, दोच्चं सत्तराइंदियं, तच्चं

भावार्थ भगवन्त को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन्! आपकी आज्ञा होवे तो दो मास की भिक्षु प्रतिमा अंगीकार कर विचरूं. अहो देवानुप्रिय ! जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो. विलम्ब मत करो. तब सहर्ष आज्ञा लेकर दो मास पर्यंत दो दात आहार की व दो दात पानी की ग्रहण की. वैसे ही तीसरी तीन मास की भिक्षु प्रतिमा में तीन दात आहारकी व तीन दात पानीकी ग्रहण की. चार मासकी चौथी भिक्षु प्रतिमा में चार दात आहार की व चार दात पानी की ग्रहण की वैसेही पांच छ व सात मास की भिक्षु प्रतिमाओं में पांच, छ व सात मास तक पांच छ व सात दात आहार की व सात दात पानी की

शब्दार्थ — च्छा प० परीषह आ० आहार नो० नहीं आ० आहार करे आ० आहारकरे आ० आहार करता आ० आहार करे प० परिणमता प०परिणमे प० क्षीण आ० आयुष्य वाला भ० होवे ज०जहां उ० उपजे त० उस आ० आयुष्य प०अनुभवे तं० उस ति०तिर्यंच आयुष्य म०मनुष्य आयुष्य गो० गौतम दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० मनुष्य आ० आयुष्य ॥ ९ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व०

सूत्र — छावत्तियं, परिसह वत्तियं, आहारं नो आहारेइ, अहेणं आहारेइ आहारेज्जमाणे आहारिए,परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणेय आउए भवइ, जत्थ उववज्जइ, तमाउयं पडिसंवेदेइ तिरिक्ख जोणियाउयंवा, मणुस्साउयंवा ? हंता गोयमा ! देवेणं महड्डिए जाव मणुस्साउयं वा ॥९॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ,

भावार्थ — सुखवाले, व महानुभाव देवों चवन होने का समय पास आया हुवा जानकर माता पिता का क्रीडा स्थान देख लज्जा आने से, शुक्र शोणित का आहार की दुर्गंच्छा आने से व पुद्गल ग्रहणरूप अराति परिषह से किंचित्कालतक आहार करे नहीं परंतु चवे पीछे क्षुधा वेदनीय के उदय से आहार करे. ऐसा आहार किये हुवे, परिणमाये हुवे व प्रक्षीण आयुष्यवाले देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य क्या वेदे ? हां गौतम ! ऐसा महर्द्धिक देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य वेदे ॥ ९ ॥ गर्भ में उत्पन्न होने के कारन से गर्भ की अव-

शब्दार्थ उपवास से बा० बारवा मास में छ० बारउपवास से ते० तेरहमास में अ० तेरह उपवास से चो० चौदह मास में ती० चौदह उपवास से प० पन्नरह मास व० पन्नरह उपवास सो० सोलह मास में च० सोलह उपवास अ० निरंतर त० तप कर्म से दि० दिनको ठा० स्थान उ० उत्कट सू० सूर्य की सन्मुख आ० आतापना भू० भूमि में आ० आतापना लेते हुवे र० रात्रि में वी० वीरासन अ० नग्न त० तब खं० खंदक अ० अनगार गु० गणरत्न सं० संवत्सर त० तप कर्म अ० जैसा सुना अ० कल्प अनुसार जा० यावत् आ० आराध कर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर ते० वहां उ० आय उ० आकर व०

सूत्र मासं अट्ठावीसइमं अट्ठवीसइमेणं, चोद्दसमंमासं तीसइमं तीसइमेणं, पन्नरसमं मासं बत्तीसइमं बत्तीसइमेणं, सोलसमंमासं चउत्तीसइमं चउत्तीसइमेणं, अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे, आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरा-सणेणं अवाउडेणं, ॥ तएणंसे खंदए अणगारे गुणरयणं संवच्छरं तवोकम्मं अहा-सुत्तं, अहाकप्पं, जाव आराहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ

भावार्थ करे. इस तरह सोलह मास तक आंतरा रहित तप करे. दिन को उत्कट आसन करे, सूर्य की आता-पना लेवे और रात्रि में वीरासन से वस्त्र रहित रहे. इस तरह सूत्र व कल्प अनुसार गुणरत्न संवत्सर तप कर्म को आराधकर जहां श्रमण भगवन्त महावीर थे वहां आये. वहां आकर भगवन्त महावीर

शब्दार्थ क्या स० सशरीरी व० उपजे अ० अशरीरी व० उपजे गो० गौतम सि० कदाचित् म० सशरीरी व० उपजे सि० कदाचित् अ० अशरीरी व० उपजे से० वह के० कैसे गो० गौतम ओ० उदारीक वे० वैक्रेय आ० आहारक प० प्रत्यय अ० अशरीरी ते० तेजस क० कार्माण प० प्रत्यय म० सशरीरी व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ ११ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता प० प्रथम कं० कौनसा आ०

सूत्र असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ, सिय असरीरी वक्कमइ । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! ओरालिय वेउव्विय आहारयाइं पडुच्च असरीरी वक्कमइ ! तेया कम्माइं पडुच्च ससरीरी वक्कमइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं

भावार्थ शरीर को होती है इसलिये शरीर का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! क्या जीव शरीरी उत्पन्न होता है अथवा अशरीरी उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! जीव क्वचित् शरीरी उत्पन्न होता है और क्वचित् अशरीरी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारण से ? अहो गौतम ! उदारिक वैक्रेय व आहारक इन तीनों शरीर की अपेक्षा से अशरीरी क्यों की ये तीनों शरीर एक स्थान से चवकर अन्य स्थान में उत्पन्न हुवे पीछे जीव को पाते हैं. गमन करते मार्ग में इन तीनों शरीर का अभाव है. तेजस व कार्माण शरीर की अपेक्षा से सशरीरी उत्पन्न होते हैं क्यों कि ये दोनों शरीर जीव को संसार अवस्था में सदैव रहते हैं इसलिये ऐसा कहा गया है कि कदाचित् शरीर सहित और कदाचित् शरीर रहित उत्पन्न होता

दार्थ आस्थ च० चमडा से अ० बंधा हुवा कि० कडकडाटभूत कि० कृश ध० नाडीयों की सं० संतती जा० हुइ हो० थी ॥ २७ ॥ जी० जीव से ग० जाता है चि० बैठता है भा० भाषा भा० बोलकर गि० ग्लानी पाता है भा० भाषा भा० बोलते गि० ग्लानि पाता है भा० भाषा भा० बोलूंगा गि० ग्लानि पाता है से० अथ ज० जैसे क० काष्टका स० गाडा प० पत्र का स० शकट प० पत्र ति० तील भं० भाजन का स० शकट ए० एरंड काष्ट का स० शकट इं० कोयला स० शकट उ० उष्ण दि० दिनको सु०

सूत्र तवोकम्मेणं, सुक्के, लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियभूए, किसे, धमणिसंतए जाए यावि होत्था॥२७॥जीवं जीवेणं गच्छइ,जीवं जीवेणं चिट्ठइ,भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ भासं भासिस्सामीति गिलाइ।से जहा नामए कट्ठसगडियाइवा,पत्तस गाडियाइवा, पत्तातिलभंडगसगडियाइवा,एरंडकट्ठ सगाडियाइवा, इंगालसगाडियाइवा, उण्हे

भावार्थ महानुभाग तप कर्म से शुष्क, रूक्ष, मांस विना का अस्थि व चर्म से बंधाया हुवा, बैठते खडे होते कटकडाट होवे वैसे, कृश, नाडियोंकी कीलियोंवाला होगया ॥२७॥ उन का शरीर इतना दुर्बल होगया कि जीव मात्र जीवकी सहायता से जाता है. जीव जीव की सहायता से खडा रहता है, भाषा बोलकर ग्लानि होती, भाषा बोलते ग्लानि होती, और भाषा बोलनेका विचार आते ग्लानि होती. जैसे कोई काष्ट से भरा हुवा गाडा,पलाश पत्र से भरा हुवा गाडा, पत्र सहित तील का भरा हुवा गाडा, मृत्तिका के भाजन से भरा हुवा गाडा, एरंड की

शब्दार्थ वडीनीत पा० लघुनीत खे० थूंक सिं० श्लेष्म वं० वमन पि० पित्त गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गयाहुवा जं० जो आ० आहार करता है तं० उसको चि० इकठा करता है तं० उसको सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ० हड्डि अ० हड्डिकीमिंजी के० केश मं०श्मश्रु रो०रोम न०नखपने से०वह ते०इसलिये ॥ १४ ॥ जी०जीव भं०

मूल समाणस्स अत्थि उच्चारेइवा, पासवणेइवा, खेलेइवा, सिंघाणेइवा, वंतेइवा, पित्तेइवा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे ! से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जमाहारेइ तं चिणाइ, तं सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए, अट्ठि अट्ठिमिंज केस मंसुरोम नहत्ताए से तेणट्ठेणं ॥ १४ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे पभूमुहेणं

भावार्थ रूप ओज आहार करता है. ॥ १३ ॥ जहां आहार होता है वहां निहार होता है इसलिये निहार संबंधि प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव को वडीनीत, लघुनीत खेंकार, श्लेष्म, वमन व पित्त क्या होता है ? अहो गौतम ! गर्भ में रहे हुवे जीव को यह नहीं होता है. अहो भगवन् ! ऐसा नहीं होने का क्या कारण है ? अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव जो आहार करता है वह सब आहार श्रोत्रेन्द्रियादि पांचो इन्द्रियपने, हड्डी, हड्डी की मिंजी, केश, श्मश्रु रोम व नखपने परिणमता है इस लिये उन जीवों को लघुनीत वडीनीत वगैरह नहीं होते हैं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या

अस्थि च० चमडा से अ० बंधा हुवा कि० कडकडाटभूत कि० कृश ध० नाडीयों की सं० संतती जा० हुइ हो० थी ॥ २७ ॥ जी० जीव से ग० जाता है चि० बैठता है भा० भाषा भा० बोलकर गि० ग्लानी पाता है भा० भाषा भा० बोलते गि० ग्लानि पाता है भा० भाषा भा० बोलूंगा गि० ग्लानि पाता है से० अथ ज० जैसे क० काष्टका स० गाडा प० पत्र का स० शकट प० पत्र ति० तील भं० भाजन का स० शकट ए० एरंड काष्ट का स० शकट इं० कोयला स० शकट उ० उष्ण दि० दिनको सु०

सूत्र

तवोकम्मेणं, सुक्के, लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियभूए, किसे, धमणिसंतए जाए यांवि होत्था॥ २७॥ जीवं जीवेणं गच्छइ, जीवं जीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ भासं भासिस्सामीति गिलाइ। से जहा नामए कट्ठसगडियाइवा, पत्तसगडियाइवा, पत्तातिलभंडगसगडियाइवा, एरंडकट्ठ सगडियाइवा, इंगालसगडियाइवा, उण्हे

भावार्थ

महानुभाग तप कर्म से शुष्क, रूक्ष, मांस विना का अस्थि व चर्म से बंधाया हुवा, बैठते खडे होते कटकडाट होवे वैसे, कृश, नाडियोंकी कीलियोंवाला होगया ॥२७॥ उन का शरीर इतना दुर्बल होगया कि जीव मात्र जीवकी सहायता से जाता है. जीव जीव की सहायता से खडा रहता है, भाषा बोलकर ग्लानि होती, भाषा बोलते ग्लानि होती, और भाषा बोलनेका विचार आते ग्लानि होती. जैसे कोई काष्ट से भरा हुवा गाडा, पलाश पत्र से भरा हुवा गाडा, पत्र सहित तील का भरा हुवा गाडा, मृत्तिका के भाजन से भरा हुवा गाडा, एरंड की

शब्दार्थ

जीव प० प्रतिबद्ध पु० पुत्रका जीव फु० स्पर्शा हुवा त० इसलिये आ० आहार करे प० परिणमे अ० अथवा पु० पुत्रका जीव प० प्रतिबद्ध मा०माता का जीव से फु० स्पर्शा हुवा त० इस लिये चि०चिने उ० उपचेने से० वह ते० इसलिये जा० यावत् नो० नहीं मु० मुख से का० कवल आ० आहार आ० आहार करे ॥ १५ ॥ क० कितने भं० भगवन् मा० माता के अंग गो० गौतम त० तीन मा० माता के अंग प० प्ररूपे मं० मांस सो० रुधिर म० मस्तक ॥ १६ ॥ क० कितने भं० भगवन् पे० पिता के

मूल

फुडा, तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ, अविराविंयणं पुत्तजीव पडिबद्धा माउजीव फुडा, तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ. से तेणट्ठेणं जाव नो पभू मुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए ॥ १५ ॥ कइणं भंते ! माइअंगा पण्णत्ता ?. गोयमा ! तओ माइयंगा पण्णत्ता तंजहा मंससोणिए मत्थुलुंगं ॥ १६ ॥ कइणं भंते ! पेइयंगा प-

भावार्थ

आहार करता है और शरीर में परिणमाता है. दूसरी पुत्रजीवरसहरणी नाडी पुत्रके जीव की साथ बंधी हुई व माता की साथ स्पर्शी हुई है. इस से गर्भस्थ जीव के शरीर की वृद्धि होती है. इसीसे अहो गौतम ! कवल आहार लेने को गर्भस्थ जीव नहीं समर्थ होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! माता के कितने अंग कहे हैं ? अहो गौतम ! माता के तीन अंग कहे हैं. मांस, रुधिर व मस्तक की मींजी. फेफसा अथवा कलेजा ऐसा भी अर्थ कितनेक करते हैं. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पिता के कितने अंग हैं ? अहो गौतम !

पदार्थ — खं० खंदक अ० अनगार को अ० अन्यदा क० कदापि पु० पूर्व रात्रिके का० काल में ध० धर्म जा० जागरणा जा० करते इ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय चि० चिन्तवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे ख० निश्चय अ० मैं इ० इस उ० उदार जा० यावत् कि० कृश ध० नाडियों की सं० संतती जा० यावत् जी० जीव जी० जीव से ग० जाता हूं चि० खडा रहता हूं जा० यावत् गि० ग्लानि करता हूं जा० यावत् ए० ऐसे अ० मैंभी स० शब्द सहित ग० जाता हूं चि० खडा रहता हूं

सूत्र — तस्स खंदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्त काल समयंसि धम्म जागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जेत्था, एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं उरालेणं जाव किसे धमाणिसंतए जाव जीवं जीवेणं गच्छामि जीवं जीवेणं चिट्ठामि, जाव गिलामि. एवामेव अहंपि ससद्दगच्छामि, ससद्दंचिट्ठामि तं अत्थि तामे उट्ठाणे

भावार्थ — सुनकर पीछी गइ ॥ २९ ॥ उस समय में एकदा मध्यरात्रि में धर्म जागरणा करते खंदक अनगार को ऐसा अध्यवसाय यावत् चिंतवन उत्पन्न हुवा कि ऐसा उदार व प्रधान तपकर्म से मैं कृश बन गया हूं मेरी सब नाडियों दीख रही है, शरीर से मुझे कुच्छ भी होता नहीं है, हलन चलनादि क्रियाओं जो होती हैं वे सब जीव से होती है, यावत् भाषा बोलते भी मैं खेदित होता हूं, और काष्ट का गाडा यावत्

शब्दार्थ ग० गर्भ में ग० रहाहुवा ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे गो० गौतम स० संज्ञीपंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्तिसे प० पर्याप्त वी० वीर्यलब्धिसे वे० वैक्रेयलब्धिसे प० शत्रुसैन्य आ० आया हुवा सो० सुनकर नि० अवधारकर प० प्रदेश नि० बहार निकाले वे० वैक्रेय समुद्घात से स० ग्रहण करे स० ग्रहण करके

सूत्र भंते गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा॥ सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीएहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए पराणियं आगयं सोच्चा निसम्म पएसे नि-

भावार्थ नष्ट होजाते हैं॥ १८॥ अब गर्भस्थ जीव कदाचित् गर्भ में ही काल अवस्था को प्राप्त होवे तो कहां पर उत्पन्न होता है उस संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भस्थ जीव आयुष्य पूर्ण होने से कालकर क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह से गर्भस्थ जीव नारकी में उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राणी की कुक्षि में उत्पन्न होवे अर्थात् राजपुत्र होवे. वहां उन को पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे. पूर्व करणी के प्रभाव से वीर्य लब्धि व वैक्रेय लब्धि की प्राप्ति होवे.

शब्दार्थ हुवे अ० अनंतर पं० पाण्डुर प० प्रभात में र० रक्त अ० अशोक प० प्रकाश किं० किंशुक सु० शुकमुख गुं० गुंजार्ध रा० रंग स० सदृश क० कमल का आ० गृह (द्रह) स० नलिनी खंड के० बोधक उ० उदित होते सू० सूर्य स० सहस्र किरणों वाला दि० दिनकर ते० तेजस ज० ज्वलंत स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को अ० आज्ञा देते स० स्वयं पं० पांच म० महाव्रत की आ० आराधना कर स० साधु स० साध्वी से खा० क्षमा याचकर त० तथारूप थे० स्थविर क० कृतयोगी की स० साथ वि०

सूत्र कमालगार संडबोहए उट्ठियंमि सूरे सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासेत्ता, समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंचमहव्वयाणि आरोहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं २ दुरूहित्ता मेहघण संनिगासं,

भावार्थ प्रभात में, रक्त वर्णवाले अशोककी प्रभा समान, किंशुक व शुक मुख व गुंजार्ध के रंग समान, कमल का आगर सो द्रह में कमलों को विकशित करनेवाला व सहस्र किरणवाला दिनकरमणि सूर्य उदय होते श्री श्रमण भगवन्त को वंदना नमस्कार कर श्रमण भगवन्त की आज्ञा से स्वयं पांच व्रत की आराधना करके, गौतम स्वामी प्रमुख सब साधु व चंदन बाला प्रमुख सब साध्वीयों की क्षमा याचकर, तथारूप कृत-योगी स्थविर को साथ लेकर, बडा पर्वत पे शनैः २ चडकर, मेघ समान श्याम व देवताओं का संनिपात

शब्दार्थ ग० गर्भ में ग० रहाहुवा ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे गो० गौतम स० संज्ञीपंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्तिने प० पर्याप्त वी० वीर्यलब्धिसे वे० वैक्रेयलब्धिसे प० शत्रुसैन्य आ० आया हुवा सो० सुनकर नि० अवधारकर प० प्रदेश नि० बहार निकाले वे० वैक्रेय समुद्घात से स० ग्रहण करे स० ग्रहण करके

सूत्र भंते गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीएहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए पराणियं आगयं सोच्चा निसम्म पएसे नि-

भावार्थ नष्ट होजाते हैं. ॥ १८ ॥ अब गर्भस्थ जीव कदाचित् गर्भ में ही काल अवस्था को प्राप्त होवे तो कहां पर उत्पन्न होता है उस संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भस्थ जीव आयुष्य पूर्ण होने से कालकर क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह से गर्भस्थ जीव नारकी में उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राणी की कुक्षि में उत्पन्न होवे अर्थात् गजपुत्र होवे. वहां उन को पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्ता हुवे पीछे पूर्व करणी के प्रभाव से वीर्य लब्धि व वैक्रेय लब्धि की प्राप्ति होवे.

शब्दार्थ इ० ये ए० ऐसा अ० अध्यवसाय च० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे अ० मैं इ० इस ए० ऐसा उ० उदार वि० विपुल जा० यावत् का० काल को अ० नहीं वांछते वि० विचरते को त्ति० ऐसा क० करके ए० ऐसा सं० विचारकरके क० कल प० प्रकट प० प्रभात में जा० यावत् ज० ज्वलंत जे० जहां म० मेरी अं० समीप ते० वहां ह० शीघ्र आ० आया हुवा है. से० अथ णू० शकादर्शी खं० खंदक

सूत्र तव खंदया ! पुव्वरत्तावरत्तं जाव जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु अहंइमेणं एयारूवेणं उरालेणं विउलेणं तंचेव जाव कालं अणवकंख-माणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता, कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते जेणेव ममअंतिए तंणेव हव्वमागए ॥ सेणूणं खंदया ! अट्ठेसमट्ठे ? हंताअत्थि.

भावार्थ गार को ऐसा बोले की अहो स्कंदक ! मध्य रात्रि में धर्म जागरणा करते तुम को ऐसा अध्यवसाय यावत् संकल्प हुवा कि मेरा शरीर क्षीण होगया है, यावत् मेरी सब नाडियों दीखती है, परंतु उत्थानादि होने से प्रभात में मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जाकर वंदना नमस्कार कर काल की वांच्छा नहीं करता हुवा संलेखना करना मुझे श्रेय है. और ऐसा विचार करके सूर्य का उदय होते ही तुम मेरी पास आये हो. अहो खंदक ! क्या यह बात सत्य है ? हां, भगवन् ! यह बात सत्य है. अहो देवानु-

शब्दार्थ अर्थयुक्त अ० रहाहुवा करण भा० भावना भं० भावता ए० इन अं० अंतर में का० काल क० करे ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे से० वह ने० इस लिये गो० गौतम जा० यावत् अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे. ॥ १९ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० रहाहुवा दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उपत्न्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के०

सूत्र

कंखिए, अत्थ पिवासिए, रज्जपिवासिए भोगपिवासिए काम पिवासिए, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेस्से, तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते, तदप्पिय करणे तब्भावणा भाविए एयंसिणं अंतरंसि कालं करेज्जा नेरइएसु उववज्जइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥ १९ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उव-

भावार्थ बनाहुवा, तीन अशुद्ध लेश्या से ध्यानयुक्त, काम भोगों की भावना भावता हुवा व करण करावण व अनुमोदन रूप अध्यवसाय की प्रबलता करता हुवा वह जीव यदि उसी समय काल कर जावे अर्थात् आयुष्य पूर्ण कर के चवे तो वह नरक गतिमें उत्पन्न होवे इसलिये अहो गौतम! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं होते हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव यदि आयुष्य पूर्ण कर जावे तो क्या देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और

शब्दार्थ इ० ये ए० ऐसा अ० अध्यवसाय च० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे अ० मैं इ० इस ए० ऐसा उ० उदार वि० विपुल जा० यावत् का० काल को अ० नहीं वांच्छते वि० विचरते को त्ति० ऐसा क० करके ए० ऐसा सं० विचारकरके क० कल प० प्रकट प० प्रभात में जा० यावत् ज० ज्वलंत जे० जहां म० मेरी अं० समीप ते० वहां ह० शीघ्र आ० आया हुवा है. से० अथ णू० शकादर्शी खं० खंदक

सूत्र तत्र खंदया ! पुव्वरत्तावरत्तं जाव जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु अहंइमेणं एयारूवेणं उरालेणं विउलेणं तंचेव जाव कालं अणवकंख-माणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता, कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते जेणेव ममअंतिए तणेव हव्वमागए ॥ सेणूणं खंदया ! अट्ठेसमट्ठे ? हंताअत्थि.

भावार्थ गार को ऐसा बोले की अहो स्कंदक ! मध्य रात्रि में धर्म जागरणा करते तुम को ऐसा अध्यवसाय यावत् संकल्प हुवा कि मेरा शरीर क्षीण होगया है, यावत् मेरी सब नाडियों दीखती है, परंतु उत्थानादि होने से प्रभात में मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जाकर वंदना नमस्कार कर काल की वांच्छा नहीं करता हुवा संलेखना करना मुझे श्रेय है. और ऐसा विचार करके सूर्य का उदय होते ही तुम मेरी पास आये हो. अहो खंदक ! क्या यह बात सत्य है ? हां, भगवन् ! यह बात सत्य है. अहो देवानु-

शब्दार्थ का कांक्षी पु० पुन्य का कांक्षी स० स्वर्ग का कांक्षी मो० मोक्ष का कांक्षी ध० धर्म पि० पिपासु पु० पुन्य पिपासु स० स्वर्ग पिपासु मो० मोक्ष पिपासु त० उस में चित्त वाला म० मनवाला ले० लेश्या वाला अ० अध्यवसाय वाला अ० अर्थयुक्त अ० अर्पित करण वाला उ० उस भा० भावना से भा० भावता ए० इस अं० अंतर में का० काल क० करे दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे से० वह ते० इस लिये गो० गौतम ॥ २० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गया हुवा उ० उलटा होवे पा० पसली जैसे अं० आम्र

मूत्र पुण्णकंखिए, सग्गकंखिए, मोक्खकंखिए; धम्मपिवासिए, पुण्णपिवासिए, सग्गपिवासिए, मोक्खपिवासिए, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेसे तदज्झवसिए, तदट्ठोवउत्ते, तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसिणं अंतरंसि कालं करेज्जा देवलोएसु उववज्जइ सेतेणंट्ठेणं गोयमा ॥ २० ॥ जीवेणं भंते गब्भगए समाणे उत्ताणएवा, पासल्लएवा

भावार्थ कामी, स्वर्ग का कामी व मोक्ष का कामी; धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्षका कांक्षी; धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्ष का पिपासु, धर्मादिमें तथा प्रकारका चित्तवाला, तन्मय, तीनशुभ लेश्यावन्त, वैसेहीं अध्यवसाय युक्त, उस अर्थ प्रयोजन युक्त, उसी अर्थ में आत्मा को अर्पण करनेवाला व वैसा भाव को चिन्तवनेवाला यदि उसी समय काल कर जावे तो देवलोक में देवतापने उत्पन्न होता है. इस कारन से अहो गौतम! कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ॥ २० ॥ अब

शब्दार्थ भगवन्त म० महावीर की अं० समीप स० सब पा० प्राणातिपात का प० प्रत्याख्यान करता हूं जा० जीवन पर्यंत जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन शल्य का प० प्रत्याख्यान करता हूं स० सब अ० अशन पा०पान खा०खादिम सा०स्वादिम च०चार प्रकार का आ०आहार का प०प्रत्याख्यान करता हूं जं०जो इ० यह स० शरीर इ० इष्ट कं० कान्त पि० प्रिय जा० यावत् फु० स्पर्शी ति० ऐसा क० करके ए० इसे भी च० चडिम उ० उश्वास नि० निश्वास से वो० त्यजता हूं सं० संलेखना की झू० सेवासे झू० सेवित भ० भक्त पा० पान प० प्रत्याख्यान कराया हुवा पा० पादोपगम का० काल को अ० नहीं वांच्छता हुवा

सूत्र

यणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणपाणखाइमसाइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जं पियं इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव फुसंतु त्तिकट्टु, एयंपिणं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु संलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपाण पडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ

भावार्थ स्वादिम ऐसे चारों आहार का मैं प्रत्याख्यान करता हूं. इष्टकारी, कान्तकारी, और प्रियकारी ऐसा जो मेरा शरीर है उसे जीवन पर्यंत त्यजता हूं. और संलेखना से भक्तपान का प्रत्याख्यान करता हुवा व काल को नहीं वांच्छता हुवा विचरता हूं ॥ ३३ ॥ उस समय में खंदक अनगारने श्री श्रमण

सूत्र

च्छइ, त्रिणिहाय मावज्जइ, वण्णवज्झाणिय से कम्माइं बद्धाइं, पुट्ठाइं, णिहित्ताइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, आभिनिविट्ठाइं, आभिसमण्णगयाइं उदिण्णाइं, णोउवसंताइं भवंति, तओ भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गंधे, दुरसे, दुफासे, आणिट्ठे, अकंते, अप्पिए, असुभे, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे आणिट्ठस्सरे, अकंतस्सरे अप्पियस्सरे, असुभस्सरे,

शब्दार्थ

आवे वि० विनाश आ० पावे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म ब० बांधे हुवे पु० स्पर्शे हुवे णि० निकाचित बांधे क० कीये प० स्थापे अ० तीव्र स्थापे अ० सन्मुख आये उ० उदय आये णो० नहीं उ० उपशांत हुवे दु० कुरूप दु० खराववर्ण वाला दु० दुर्गंधी दु० खराबरस वाला दु० खराब स्पर्श वाला अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम ही० हीनस्वर वाला दी० दीनस्वर

भावार्थ

प्राप्त होता है तब कितनेक जीव मस्तक से नीकलते हैं, और कितनेक पांव से नीकलते हैं, अथवा माता व जीव दोनों की घात न होवे वैसे नीकलते हैं, और अशुभ कर्मोदय से कदाचित् तिर्च्छा होजाता है तो नीकलने व नीकालने के अभाव से मृत्यु को प्राप्त होजाता है. अब गर्भ से नीकले बाद जो होता है सो कहते हैं. जिनोंने पूर्व भव में पापाचरण व अयोग्य कर्तव्य से निकाचित कर्मों का बंध किया है वैसेही जिन को मनुष्य तिर्यंचादि गति, पंचेंद्रियादि जाति, त्रसादि नामकर्म से व्यवस्थापित किये, तीव्र अनुभाव से स्थापित किये, उदय सन्मुख हुवे, स्वतः की उदीरना से उदय में आये और उपशान्त न हुवे, उन को अशुभ वर्ण, गंध,

शब्दार्थ का० कायोत्सर्ग क० करे प० पात्र ची० उपकरन गि० ग्रहण करे वि० वडे प० पर्वत से स० शनैः २ प० उतरकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना कर न० नमस्कार कर व० बोले दे० देवानुप्रिय का अं० अंतेवासी खं० खंदक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रक प० प्रकृति उ० उपशांत प० पतला को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ मि० मृदु म० मार्दव सं० युक्त अ० अलीन भ० भद्रक वि० विनीत से० वह दे० देवानुप्रिय से

सूत्र सगं करेइ, पत्तचीवराणि गिण्हंति, विपुलाओ पव्वयाओ साणियं २ पच्चोरुहंति पच्चोरुहइत्ता जेणेवसमणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु- देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए णामं अणगारे पगइभदए पगइउवसंते पगइ पयणु कोहमाण माया लोभे, मिउ मद्दव संपण्णे, अल्लीणे, भदए, विणीए सेणं देवाणुप्पिएहिं

भावार्थ ॥ ३४ ॥ उस समय में उन की पास रहे हुवे स्थविर भगवन्त खंदक अनगार को काल प्राप्त हुए जानकर निर्वाण संबंधि कायोत्सर्ग[1] करके व खंदक अनगार के पात्र वस्त्रादि लेकर उस पर्वत से उतरे. उतरकर श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास आये और भगवन्त को वंदना नमस्कार करके ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! आपका अंतेवासी भद्रिक प्रकृतिवाले, उपशान्त प्रकृतिवाले, स्वभाव से क्रोधादि को

१ साधु निर्वाण हुवे पीछे कायोत्सर्ग करना सो

शब्दार्थ — आवे वि० विनाश आ० पावे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म ब० बांधे हुवे पु० स्पर्शे हुवे णि० निकाचित बांधे क० कीये प० स्थापे अ० तीव्र स्थापे अ० सन्मुख आये उ० उदय आये णो० नहीं उ० उपशांत हुवे दु० कुरूप दु० खराबवर्ण वाला दु० दुर्गंधी दु० खराबरस वाला दु० खराब स्पर्श वाला अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम ही० हीनस्वर वाला दी० दीनस्वर

सूत्र — च्छइ, विणिहाय मावज्जइ, वण्णवज्झाणिय से कम्माइं बद्धाइं, पुट्ठाइं, णिहित्ताइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमण्णगयाइं उदिण्णाइं, णोउवसंताइं भवंति, तओ भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गंधे, दुरसे, दुफासे, अणिट्ठे, अकंते, अप्पिए, असुभे, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे, अकंतस्सरे अप्पियस्सरे, असुभस्सरे,

भावार्थ — प्राप्त होता है तब कितनेक जीव मस्तक से नीकलते हैं, और कितनेक पांव से नीकलते हैं, अथवा माता व जीव दोनों की घात न होवे वैसे नीकलते हैं, और अशुभ कर्मोदय से कदाचित् तिर्छा होजाता है तो नीकलने व नीकालने के अभाव से मृत्यु को प्राप्त होजाता है. अब गर्भ से नीकले बाद जो होता है सो कहते हैं. जिनोंने पूर्व भव में पापाचरण व अयोग्य कर्तव्य से निकाचित कर्मों का बंध किया है वैसेही जिन को मनुष्य तिर्यंचादि गति, पंचेंद्रियादि जाति, त्रसादि नामकर्म से व्यवस्थापित किये, तीव्र अनुभाव से स्थापित किये, उदय सन्मुख हुवे, स्वतः की उदीरना से उदय में आये और उपशान्त न हुवे, उन को अशुभ वर्ण, गंध,

शब्दार्थ गये क० कहां उ० उत्पन्न हुवे गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम को व० बोले गो० गौतम म० मेरा अं० अंतेवासी खं० खंदक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रक जा० यावत् म० मेरी अ० आज्ञामिलते स० स्वयं पं० पांच महाव्रत आ० आराधकर स० सर्व अ० अव-शेष ने० जानना जा० यावत् आ० आलोचकर प० प्रतिक्रमणकर स० समाधि को प्राप्त का० काल के अवसर में का० काल करके अ० अच्युत दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवे त० तहां अ० कितनेक दे० देवताकी वा० बावीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी खं० खंदक दे० देव

सूत्र समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी खंदए णामं अणगारे पगइभद्दए जाव सेणं मए अब्भणुणाए समाणे सयमेव पंचमहव्वयाइं आरा-हेत्ता तंचेव सव्वं अवसेसयं नेयव्वं जाव आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे. तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं बावसिं सागरोवमाइं

भावार्थ देवानुप्रिय ! आपका अंतेवासी खंदक अनगार काल कर कहां गये, और कहां उत्पन्न हुवे ? अहो गौतम ! मेरा अंतेवासी खंदक नामक अनगार मेरी आज्ञा से पांच महाव्रत की आराधना यावत् संलेखनादि कर आलोचना प्रातिक्रम साहित काल करके अच्युत देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुवे. वहांपर कितनेक देवताओं की बावीस सागरोपम की स्थिति कही. उस में खंदक देवता की भी बावीस सागरोपम की

शब्दार्थ

ए० एकान्त बा० अज्ञानी भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच का आ०आयुष्य प०बांधे म०मनुष्य का आ०आयुष्य प०बांधे दे०देव का आ० आयुष्य प०बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उपजे ति० तिर्यंच का आ० आयुष्य कि० करके ति० तिर्यंच में उ० उपजे म० मनुष्य का आ० आयुष्य कि० करके म० मनुष्य में उ० उपजे दे० देव का आ० आयुष्य कि०करके दे०देवलोक में उ०उपजे गो० गौतम ए०एकान्त बा०अज्ञानी म० मनुष्य

सूत्र

एगंत बालेणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, तिरिआउयं पकरेइ, मणुआउयं पकरेइ, देवाउयं पकरेइ, नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जइ, मणुयाउयं किच्चा मणुएसु उववज्जइ, देवाउयं किच्चा देव-

र्थ

सातवे उद्देश में गर्भ की वक्तव्यता कही. गर्भ आयुष्य से होता है इसलिये आगे आयुष्य संबंधि प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! एकान्त बाल (मिथ्यात्वी) मनुष्य क्या नरक के आयुष्य का बंध करता है, मनुष्य के आयुष्य का बंध करता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध करता है, या देव के आयुष्य का बंध करता है ! और नरक के आयुष्य का बंध कर के क्या नरक में उत्पन्न होता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध कर के तिर्यंच में उत्पन्न होता है, मनुष्य के आयुष्य का बंधकर के मनुष्य में उत्पन्न होता है या देव

शब्दार्थ क० कितनी भं० भगवन् स० समुद्घात प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात स० समुद्घात प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे वे० वेदना समुद्घात ए० ऐसे स० समुद्घात प० पद छ० छद्मस्थ समुद्घात व० वर्ज कर भा० कहना जा० यावत् वे० वैमानिक क० कषाय समुद्घात अ० अल्पाबहुत ॥ १ ॥ अ० अनगार

सूत्र कइणं भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा समुग्घाए, एवं समुग्घायपयं, छउमात्थिय समुग्घाय वज्जं भाणियव्वं, जाव वेमाणियाणं, कसाय समुग्घाया अप्पाबहुयं ॥ १ ॥ अणगारस्सणं भंते ! भावि-

भावार्थ पहिले उद्देशे के अंत में किस मरण से मरनेवाला जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है ऐसा मरण का अधिकार कहा. वह मरण मारणान्तिक समुद्घात से होता है इसलिये मरण समुद्घात का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! समुद्घात कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! समुद्घात सात प्रकार की कही है. १ वेदना समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणान्तिक समुद्घात ४ वैक्रेय समुद्घात ५ तेजस समुद्घात ६ आहारक समुद्घात और ७ केवली समुद्घात. इन सातों समुद्घात में शरीर से जीव प्रदेश का निर्गम होता है. केवली समुद्घात करते आठ समय लगता है और अन्य समुद्घात में अंतर्मुहूर्त काल व्यतीत होता है. नरक व वायुकाय में चार समुद्घात. चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय में तीन समुद्घात, देवता व तिर्यंच पंचेन्द्रिय में पांच समुद्घात, और मनुष्य व समुच्चय जीव में सात

शब्दार्थ

मि० कदाचित् प० बांधे मि० कदाचित् नो० नहीं प० बांधे ज० यदि प० बांधे नो० नहीं णे० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे नो० नहीं ति० तिर्यंच का आ० आयुष्य प० बांधे नो० नहीं म० मनुष्य का आ० आयुष्य प० बांधे दे० देवता का आ० आयुष्य प० बांधे णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे णो० नहीं ति० तिर्यंच नो० नहीं म० मनुष्य दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे जा० यावत् दे० देवका

सूत्र

यं सिय पकरेइ सिय णो पकरेइ। जइ पकरेइ णो णेरइयाउयं पकरेइ णो तिरियाउयं पकरेइ णो मणुयाउयं पकरेइ देवाउयं पकरेइ णो नेरइयाउयं किच्चा णेरइएसु उववज्जइ, णो तिरि नो मणु देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ। सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडियस्सणं मणुस्सस्स केवलमेव दोगईओ पंण्णायंति तंजहा—अंत-

भावार्थ

पंडित मनुष्य किसी समय आयुष्य का बंध करता है और किसी समय आयुष्य का बंध नहीं करता है. जब आयुष्य का बंध करता है, तब नरक तिर्यंच व मनुष्य का आयुष्य नहीं बांधता है और वहां नहीं उत्पन्न होता है परंतु मात्र एक देवगति का आयुष्य बांधता है और वहां उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से एकान्त पंडित नरक तिर्यंच व मनुष्य का आयुष्य नहीं बांधता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य को केवल दो गति कही. १. सब कर्मों का अंत करना सो अंतक्रिया और समस्त कर्म क्षय नहीं होने से व पुण्य की वृद्धि होने से

पदार्थ क० कितनी भं० भगवन् स० समुद्घात प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात स० समुद्घात प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे वे० वेदना समुद्घात ए० ऐसे स० समुद्घात प० पद छ० छद्मस्थ समुद्घात व० वर्ज कर भा० कहना जा० यावत् वे० वैमानिक क० कषाय समुद्घात अ० अल्पबहुत ॥ १ ॥ अ० अनगार

सूत्र कइणं भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा समुग्घाए, एवं समुग्घायपयं, छउमत्थिय समुग्घाय वज्जं भाणियव्वं, जाव वेमाणियाणं, कसाय समुग्घाया अप्पाबहुयं ॥ १ ॥ अणगारस्सणं भंते ! भावि-

भावार्थ पहिले उद्देशे के अंत में किस मरण से मरनेवाला जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है ऐसा मरण का अधिकार कहा. वह मरण मारणान्तिक समुद्घात से होता है इसलिये मरण समुद्घात का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! समुद्घात कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! समुद्घात सात प्रकार की कही है. १ वेदना समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणान्तिक समुद्घात ४ वैक्रेय समुद्घात ५ तेजस समुद्घात ६ आहारक समुद्घात और ७ केवली समुद्घात. इन सातों समुद्घात में शरीर से जीव प्रदेश का निर्गम होता है. केवली समुद्घात करते आठ समय लगता है और अन्य समुद्घात में अंतर्मुहूर्त काल व्यतीत होता है. नरक व वायुकाय में चार समुद्घात. चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय में तीन समुद्घात, देवता व तिर्यंच पंचेन्द्रिय में पांच समुद्घात, और मनुष्य व समुच्चय जीव में सात

शब्दार्थ वे० वह के० कैसे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम बा० श्रावक त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० सुवचन सो० सुनकर नि० अवधारकर दे० देशसे उविरमे दे० देशसे नो० नहीं उविरमे दे० देश प० प्रत्याख्यान करे दे० देश नो० नहीं प० प्रत्याख्यान करे ते० इस लिये दे० देश विरति से दे० देश प्रत्याख्यान से नो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् क० कच्छ द०

सूत्र पंडिएणं मणुस्से तहारूवस्स समणस्सवा,माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म देसं उवरमइ, देसं णो उवरमइ; देसं पच्चक्खाइ, देसं णो पच्चक्खाइ; से तेणं देसोवरमइ, देसपच्चक्खाणेणं णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । से तेणट्ठेणं जाव देवेसु उववज्जइ ॥ ३ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसि-

भावार्थ बांधे नहीं परंतु देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे. अहो भगवन्! किस कारन से बाल पंडित मनुष्य देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य तथारूप श्रमण माहण की पास से एकान्त आर्यधर्म श्रवणकर अवधारकर देश से निवर्ते, देशसे निवर्ते नहीं, देशसे प्रत्याख्यान करे, देश से प्रत्याख्यान करे नहीं; इस तरह देश से निवर्तने से व प्रत्याख्यान करने से

शब्दार्थ दूसरा उ० उद्देशा णे० जानना पु० पृथ्वी अ० अवगाहकर कर नि० नरकावास सं० संस्थान बा० जाडपना वि० चौडा प० परिधि व० वर्ण गं० गंध फा स्पर्श कि० क्या स० सर्व पा० प्राणी उ० उत्पन्न

सूत्र बितीओ उद्देसो सो नेयव्वो ॥ गाहा ॥ पुढवी ओगाहित्ता निरयासंठाणमेव बाहल्लं, विक्खंभ परिक्खेवो, वण्णो गंधोय फासोय ॥ किं सव्वपाणा उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो पुढवी उद्देसो ॥ बीईयसए तइओ उद्देसो

भावार्थ लाख नरकावास रहे हुवे हैं. ऐसे ही सब सातों पृथ्वी का कथन करना. जो आवलिका (पंक्ति) बंध नरकावास हैं वे वर्तुलाकार, त्र्यंस, चउरंस हैं और दूसरे विविध प्रकार के हैं. नरक का जाडपना तीन हजार योजनका है नीचे एक हजार योजन का घन है. बीच में एक हजार योजन का सुसिर है, और उपर एक हजार योजन का संकुचित है. नरक का विष्कंभपना. संख्यात योजनवाले नरकावास का संख्यात योजन का है, और परिधि भी संख्यात योजन की है. जो असंख्यात योजन के हैं उन का विस्तार व परिधि असंख्यात योजन की है. नरक के वर्ण, गंधरस व स्पर्श अनिष्ट है इस का सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र के नरक नामक द्वितीय उद्देशे में कहा है वैसा जानना. रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में क्या सब प्राणी उत्पन्न हुवे हैं ? हां गौतम! उन नरकावासों में सब प्राणी एकवार नहीं परंतु अनेक वार

शब्दार्थ भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया पं० पांचक्रिया गो० गौतम जे० जो भ० भव्य उ० वनाने से णो० नहीं वं० वंधन करने से णो० नहीं मा० मारने से ता० तव से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरणी की पा० प्रद्वेषिकी ति० तीन कि० क्रिया प० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० वनाने मे वं० वंधन करने से नो० नहीं म०

सूत्र सिय चउकिरिए, सियपंचकिरिए । से केणट्ठेणं भंते ? एवं वुच्चइ सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए, सिय पंच किरिए ? गोयमा ! जे भविए उड्डवणयाए णो बंधणयाए, णो मारणयाए, तावं चणं से पुरिसे काइयाए अहिगरणियाए, पाउसियाए, तिहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उड्डवणयाएवि बंधणयाएवि, णोमारणयाए तावंचणं

भावार्थ कोई पुरुष मृग को मारने के लिये कूटपाश करे; तब अहो भगवन् ! उस मृगपाश करनेवाले पुरुष को कितनी क्रिया लगती हैं ? अहो गौतम ! उस मृगपाश वनानेवाले को तीन, चार व पांच क्रिया लगती हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से तीन चार व पांच क्रिया उस पुरुप को लगती हैं ? अहो गौतम ! जिस को जितने कालतक कूटपाश करने का भाव है परंतु वंधन करने का व मारने का भाव नहीं है उस पुरुष को उतने कालतक तीन क्रियाओं लगती हैं. १ गमनादि रूप सो कायिकी क्रिया, कूटपाशादिक को उत्पन्न करना सो अधिकरणकी और मृग में दुष्ट भाव रखना सो प्रद्वेषिकी जिस पुरुष को

पदार्थ — दूसरा उ० उद्देशा णे० जानना पु० पृथ्वी अ० अवगाहकर कर नि० नरकावास सं० संस्थान बा० जाडपना वि० चौडा प० परिधि व० वर्ण गं० गंध फा स्पर्श किं० क्या स० सर्व पा० प्राणी उ० उत्पन्न

सूत्र — बितीओ उद्देसो सो नेयव्वो ॥ गाहा ॥ पुढवी ओगाहित्ता निरयासंठाणमेव बाहल्लं. विक्खंभ परिक्खेवो, वण्णो गंधोय फासोय ॥ किं सव्वपाणा उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो पुढवी उद्देसो ॥ बीईयसए तइओ उद्देसो

भावार्थ — लाख नरकावास रहे हुवे हैं. ऐसे ही सब सातों पृथ्वी का कथन करना. जो आवालिका (पंक्ति) बंध नरकावास हैं वे वर्तुलाकार, त्र्यंस, चउरंस हैं और दूसरे विविध प्रकार के हैं. नरक का जाडपना तीन हजार योजनका है नीचे एक हजार योजन का घन है. बीच में एक हजार योजन का सुसिर है, और ऊपर एक हजार योजन का संकुचित है. नरक का विष्कंभपना. संख्यात योजनवाले नरकावास का संख्यात योजन का है, और परिधि भी संख्यात योजन की है. जो असंख्यात योजन के हैं उन का विस्तार व परिधि असंख्यात योजन की है. नरक के वर्ण, गंधरस व स्पर्श अनिष्ट हैं इस का सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र के नरक नामक द्वितीय उद्देशे में कहा है वैसा जानना. रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में क्या सब प्राणी उत्पन्न हुवे हैं ? हां गौतम! उन नरकावासों में सब प्राणी एकवार नहीं परंतु अनेक वार

शब्दार्थ भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया पं० पांचक्रिया गो० गौतम जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से णो० नहीं बं० बंधन करने से णो० नहीं मा० मारने से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरणी की पा० प्रद्वेषिकी ति० तीन कि० क्रिया प० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से बं० बंधन करने से नो० नहीं म०

सूत्र सिय चउकिरिए, सियपंचकिरिए। से केणट्ठेणं भंते ? एवं वुच्चइ सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए, सिय पंच किरिए ? गोयमा ! जे भविए उड्डवणयाए णो बंधणयाए, णो मारणयाए, तावं चणं से पुरिसे काइयाए अहिगरणियाए, पाउसियाए, तिहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उड्डवणयाएवि बंधणयाएवि, णोमारणयाए तावंचणं

भावार्थ कोई पुरुष मृग को मारने के लिये कूटपाश करे; तब अहो भगवन् ! उस मृगपाश करनेवाले पुरुष को कितनी क्रिया लगती हैं ? अहो गौतम ! उस मृगपाश बनानेवाले को तीन, चार व पांच क्रिया लगती हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से तीन चार व पांच क्रिया उस पुरुष को लगती हैं ? अहो गौतम ! जिस को जितने कालतक कूटपाश करने का भाव है परंतु बंधन करने का व मारने का भाव नहीं है उस पुरुष को उतने कालतक तीन क्रियाओं लगती हैं. १ गमनादि रूप सो कायिकी क्रिया, कूटपाशादिक को उत्पन्न करना सो अधिकरणकी और मृग में दुष्ट भाव रखना सो प्रद्वेषिकी जिस पुरुष को

वन् ए० ऐसा गो० गौतम ज० जो अ० अन्य तीर्थिक ए० ऐसे आ० कहते हैं जा० यावत् इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद जे० जो ए० ऐसे आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् प० प्ररूपता हूं नि० निर्ग्रंथ का० काल को प्राप्तहुवे अ० अन्यतर दे० देवलोक में दे०देवपने उ०उत्पन्न भ०होवे म०महर्द्धिक जा०यावत् म०महाशक्तिवंत दु०ऊंचे देवलोक में चि० लंबी स्थिति वाले त० तहां दे० देव भ० होवे म० महर्द्धिक जा० यावत् द० दशादिशा

सूत्र

वत्तव्वया णेयव्वा जाव इत्थिवेयंच, पुरिसवेयंच ॥ से कहमेयं भंते एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एव माइक्खंति जाव इत्थिवेयंच पुरिसवेयंच, जे ते एव माहंसु मिच्छा ते एव माहंसु ॥ अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु नियंठे कालगए समाणे अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उव-

भावार्थ

तीर्थिक एक समय में एक जीव दो वेद वेदने का बोलते हैं वे मिथ्या हैं अर्थात् उन का कथन असत्य है. क्योंकि देवको स्त्रीरूप करने पर भी पुरुषपना होने से पुरुष वेद का ही उदय होता है परंतु स्त्री वेद का उदय नहीं होता है. अहो गौतम ! मेरा कथन ऐसा ही कि कोई निर्ग्रंथ काल करके किसी महर्द्धिक यावत् महानुभाग बहुत स्थितिवाले उपर के देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुवा. वहां पर वह देव महर्द्धिक,

शब्दार्थ

नि० डाले ता० तब भं० भगवन् से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया सि० कदाचित् पं० पांचक्रिया से० वह के० कैसे गो० गौतम जे०जो भ० योग्य उ० ऊंचा करने से ति० तीन उ० ऊंचा करने से नि० डालने से नो० नहीं द० जलाने से च० चार जे० जो० भ० योग्य उ० ऊंचा करने से नि० फेंकने से द० जलाने से से० उस

सूत्र

गणिकायंसि निसिरइ तावंचणं भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जे भवि-ए उस्सवणयाए तिहिं, उस्सवणयाएवि निसिरणयाएवि नोदहणयाए चउहिं, जेभविए

भावार्थ

अहो भगवन् ! कोई पुरुष कच्छ में यावत् वनदुर्ग में तृणका ढग करके उस में अग्निकाय का प्रक्षेप करे तो उन को कितनी क्रिया लगती हैं ? अहो गौतम ! उन को तीन, चार व पांच क्रियाओं लगती हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से उन को तीन, चार, व पांच क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! जितना काल पर्यंत तृणका समुदाय एकत्रित करता है उतना कालतक उन को कायिकी. अधिकरणकी व प्रद्वेपिकी ऐसी तीन क्रियाओं लगती हैं और तृण एकत्रित कर अग्नि में डाले परंतु जले नहीं वहांतक कायिकी, अधिकरण की, प्रद्वेपिकी, व परितापनिकी ऐसी चार क्रियाओं लगती हैं, और जो तृण एकत्रित करके अग्नि में डालता है और उस में जलता है उसको कायिकी आदि पांचों क्रियाओं लगती हैं.

शब्दार्थ पुरुष वेद णो॰ नहीं तं॰ उस समय में इ॰ स्त्रीवेद वे॰ वेदे इ॰ स्त्रीवेद का उ॰ उदय से नो॰ नहीं पु॰ पुरुष वेद वे॰ वेदे पु॰ पुरुष वेदका उ॰ उदय से नो॰ नहीं इ॰ स्त्रीवेद वे॰ वेदे ए॰ ऐसे ए॰ एक जीव ए॰ एक समय में ए॰ एक वेद वे॰ वेदे इ॰ स्त्रीवेद पु॰ पुरुष वेद इ॰ स्त्री इ॰ स्त्रीवेद का उ॰ उदय मे पु॰ पुरुष की प॰ प्रार्थना करे पु॰ पुरुष पु॰ पुरुष वेदका उ॰ उदय से इ॰ स्त्रीकी प॰ प्रार्थना करे दो॰ दोनों अ॰ अन्योन्य प॰ प्रार्थना करे इ॰ स्त्री पु॰ पुरुष को पु॰ पुरुष

सूत्र पुरिसवेदंवा. जं समयं इत्थिवेदं वेदेइ णो तं समयं पुरिसवेदं वेदेइ, जं समयं पुरिसवेदं वेदेइ णो तं समयं इत्थिवेदं वेएइ. इत्थिवेयस्स उदएणं नो पुरिसवेदं वेदेइ, पुरिसवेदस्स उदएणं णो इत्थिवेदं वेदेइ । एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ. तंजहा-इत्थिवेदंवा पुरिसवेदंवा. इत्थी इत्थिवेएणं उदिण्णेणं पुरिसं पत्थेइ, पुरिसो पुरिसवेदेणं उदिण्णेणं इत्थिं पत्थेइ; दो वेते अण्णमण्णं पत्थेइ. तंजहा इत्थीवा पुरिसं,

भावार्थ वेद वेदता है. जिस समय में स्त्री वेद वेदता है उस समय में पुरुष वेद नहीं वेदता है, और जिस समय में पुरुष वेद वेदता है उस समय में स्त्री वेद नहीं वेदता है. स्त्री वेद के उदय में पुरुष वेद नहीं और पुरुष वेद के उदय में स्त्री वेद नहीं. इस तरह एक जीव एक समय में एक वेद वेदता है. क्यों कि स्त्री वेद के उदय में पुरुष की वांच्छा होती है और पुरुष वेद के उदय में स्त्री की वांच्छा होती है. इस तरह

शब्दार्थ

कितनी कि० क्रिया गो० गौतम सि० कदाचित् ति० तीन क्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया सि० कदाचित् पं० पांचक्रिया जं० जो भ० योग्य नि० निकालनेसे ति० तीन जं० जो भ० योग्य नि० निकालने से वि० विध्वंस करने से नो० नहीं मा० मारने से च० चार जं० जो भ० योग्य नि० निकालने से वि० विध्वंस करने से मा० मारने से से० उस पु० पुरुष को जा० यावत् पं० पांचक्रिया ॥ ७ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् क० कच्छ जा० यावत् अ० किसी एक मि० मृग का व० वध के लिये आ०

सूत्र

जे भविए निसिरणयाए तिहिं, जेभविए निसिरणयाएवि, विद्धंसणयाएवि, णोमारणयाए चउहिं, जे भविए निसिरणयाएवि, विद्धंसणयाएवि, मारणयाएवि, तावंचणं सेपुरिसे जाव पंचकिरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! सियतिकिरिए, सिय चउकिरिए, सियपंच किरिए ॥ ६ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा जाव अन्नयरस्सामियस्स वहाए

भावार्थ

कही ? अहो गौतम ! क्वचित तीन क्रिया. क्वचित चार क्रिया व क्वचित पांच क्रिया कही है. अहो भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा ? अहो गौतम ! जो बाण छोडता है उस को कायिकादि तीन क्रिया. जहांलग जो बाण छोडकर उस मृग को दुःखी करता है वहांलग उस को चार क्रिया और जो पुरुष बाण छोडता है, मृग को दुःखी करता है, और मार डालता है वहांलग उस पुरुष को पांच क्रियाओं लगती है इसलिये अहो गौतम ! उक्त पुरुष को क्वचित तीन चार व पांच क्रिया ओं लगती है ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट बा० बारह सं० संवत्सर ॥ ४ ॥ का० काय भव में रहा हुवा का० कालमें के० कितना काल हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट च० चौवीस सं० संवत्सर ॥ ५ ॥ म० मनुष्य पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच बी० बीज से भं० भगवन् जो० योनिमें

सूत्र

गब्भेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नं अंतो मुहुत्तं उक्कोसं बारस संवच्छराइं ॥ ४ ॥ कायभवत्थेणं भंते ! कायभवत्थेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्ण मंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउवीसं संवच्छराइं ॥ ५ ॥ मणुस्सपंचिं-दिय तिरिक्ख जोणिय बीएणं भंते ! जोणियब्भूए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? जहन्नेणं

भावार्थ

मनुष्य का गर्भ कितने कालतक रहता है ? अहो गौतम ! मनुष्य का गर्भ जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! कायभवस्थ जीव कायभवस्थ में कितना कालतक रहे ? अहो गौतम ! कायभवस्थ जीव जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चौवीस वर्ष. स्त्री के गर्भ में एक जीव बारह वर्ष रहकर काल कर जावे और पुनः वहांही उत्पन्न होकर बारह वर्ष रहे अथवा उस बारह वर्ष रहकर चवाहुवा जीव के शरीर में अन्य जीव आकर बारह वर्ष रहे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य व संज्ञी पंचे-

१ जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेह एव यो भवो जन्म स कायभवः तत्र तिष्ठति यः स कायभवस्थः। अर्थात् माताके उदरमें रहवाहुा निजदेहरूप भवमें रहनेवाला सो कायभवस्थ. ॥

शब्दार्थ

जाता है जा० यावत् से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा से० वह गो० गौतम क० करते को क० किया सं० सांधते को सं० सांधा नि० खींचते को नि० खींचा नि० निकलते को नि० निकला व० कहना हं० हां भं० भगवन् क० करते को किया जा० यावत् नि० निकला जे० जो मि० मृगको मा० हने से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शे जे० जो पु० पुरुष को मा० हने से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शे अं०

सूत्र

जाव से पुरिसवेरेणं पुट्ठे । सेणूणं गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे संधिए, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया । हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जे मियंमारेइ से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे. अंतो छण्हं मासाणं मरइ-

भावार्थ

मृग को मारा उस को मृग का वैर हुआ. अहो भगवन्! यह अर्थ किस तरह से है ? अहो गौतम ! 'कज्जमाणे कडे' करते हुवे को किया अर्थात् धनुष्य बाण करने लगा सो किया, 'संधिज्जमाणे संधिए' धनुष्य बाण सांधनेलगा सो संधा, 'निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए' धनुष्य खींचने लगा सो खींचा व 'निसरिज्जमाणे निसिट्ठे' धनुष्य में से बाण नीकलनेलगा सो नीकला ऐसा कहा जा सकता है. हां भगवन् ! करते को किया हुवा यावत् नीकलने को निकला हुवा कहा जा सकता है. इसी से अहो गौतम ! जो मृग मारता है वह मृग का वैर से स्पर्शाता है अर्थात् उस मृग मारनेवाले को मृग का वैर लगता है और पुरुष

दार्थ जी० जीव पु० पुत्रपने ह० शीघ्र आ० आवे से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है जा० यावत् ह० शीघ्र आ० आवे गो० गोतम इ० स्त्री पु० पुरुषका क० किये कर्म जो० योनि में मे० मैथुन संबंधि सं० संयोगमें स० उत्पन्न होवे ते० वे दु० दोनों सि० स्निग्धता चि० इकठी करे त० तहां ज० जघन्य ए० एक दो० दो ति० तीन उ० उत्कृष्ट स० प्रत्येक लक्ष जी० जीव पु० पुत्रपने ह०

सूत्र इक्कोवा, दोवा, तिण्णिवा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवाण पुत्तत्ताए हव्वमाग-च्छंति ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! इत्थीएय पुरिसस्सय कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नामं संजोए समुप्पज्जइ, ते दुहओ सिणेहं चि-णंति, तत्थणं जहन्नेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं सयसहस्स पुहत्तं जीवाणं

भावार्थ गोतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट प्रत्येक लाख [नव लाख] जीव पुत्रपने उत्पन्न होवे. मत्स्यादिक को एक संयोग में माछली की योनि में नव लाख जीव गर्भपने उत्पन्न होवे और निष्पन्न भी होवे. मनुष्य को बहुत उत्पन्न होवे परंतु बहुत निष्पन्न नहीं होवे. अहो भगवन् ! एक भव में एक ही जीव को नव लाख जीव पुत्रपने किस तरह से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! नाम कर्म निवर्तित (मदनोद्दीपक व्यापारवाली) योनि में स्त्री और पुरुषका मैथुन संबंधी संयोग हुवा, उस समय उन दोनों का स्नेह एकत्रित हुवा. उस में जघन्य एक दो, तीन उत्कृष्ट नवलक्ष जीव पुत्रपने उत्पन्न होवे इसलिये अहो गोतम ! नवलाख जीव

शब्दार्थ

सर्वकाल ए० ऐसे उ० उपर का ए० एकेक को सं० जोडना जो० जो हे० निचे का तं० उन को छ० छोडना ने० जानना जा० यावत् अ० अतीत अ० अनागतकाल प० पीछे स० सर्वकाल जा० यावत् अ० अननुक्रम से सा० वह रो० रोहा से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥१४॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार की भं० भगवन्

सूत्र

एकेकं संजोयं, तेणं जो जो हेट्ठिल्लो तं तं छड्डेतेणं नेयव्वं जाव अतीय अणागयद्धा, पच्छासव्वद्धा. जाव अणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेवं भंते २ जाव विहरइ ॥ १४ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवं वयासी कइविहाणं भंते ! लोयट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, तंजहा — आगासपइट्ठिए वाए

भावार्थ

भी वैसे ही कहना. इस में कोई पहिले पीछे नहीं, सब अनुक्रम रहित बराबर हैं. सदा शाश्वत है. फीर रोहक अनगार बोले की अहो भगवन् ! आपने जो कहा वह वैसे ही है यों कहकर तप संयम से आत्माको भावते हुवे विचरने लगे ॥ १४ ॥ श्री गौतम स्वामीने प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! लोक स्थिति कितने प्रकार की है ? अहो गौतम ! लोक स्थिति आठ प्रकार की है. १ आकाश प्रतिष्ठित वायु अर्थात् आकाश के आधार से घनवात तनुवात ऐसे दोनों वायु रहे हैं. २ वायु के आधार से उदधि है ३ उदधि प्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित त्रस स्थावर प्राणी ५ जीव के आधार से अजीव रहे हैं ६ कर्म के आ-

अर्थ महावीर रा० राजगृह न० नगरके गु० गुणशील चे० उद्यान से प० निकलकर व० बाहिर में वि० विचरनेलगे ॥ १० ॥ ते० उस काल ते० उस समय में तुं० तुंगीया न० नगरी हो० थी. व० वर्णनयुक्त ॥ ११ ॥ ती० उस तुं० तुंगीया नगरी व० बाहिर उ० ईशान कौन में पु० पुष्पवती चे० उद्यान हो० था त० तहां तुं० तुंगीया न० नगरी में ब० बहुत स० श्रमणोपासक प० रहते हैं अ० ऋद्धि-

सूत्र

समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइत्ता बाहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगिया नामं नयरी होत्था, वण्णओ, तीसेणं तुंगियाए नयरीए बाहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुप्फवइए नामं चेइए होत्था. वण्णओ ॥ ११ ॥ तत्थणं तुंगियाए नयरीए बहवे समणोवासया परिवसंति. अड्ढा, दित्ता, विच्छिण्ण

भावार्थ

तब श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी राजगृह नगरके गुणशील नामक उद्यान में से नीकलकर अन्यदेशमें विचरने लगे ॥ १० ॥ उस काल उस समय में तुंगिया नाम की नगरी थी. उस का वर्णन उववाई सूत्र में चंपा नगरी का वर्णन जैसे कहना. उस तुंगिया नगरी की ईशान कौन में पुष्पवती नामक उद्यान था. उस का वर्णन उववाई में से जानना ॥ ११ ॥ उस तुंगीयां नगरी में बहुत श्रमणोपासक (श्रावक) रहते थे. वे धन धान्य से परिपूर्ण, बलवंत, विस्तार युक्त बहुत भवन, शयन

शब्दार्थ व० मशक को आ० भरकर उ० उपर सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य में गं० गांठ बं० बांधे उ० उपर की गं० गांठ को मु० छोडे उ० उपर के दे० भाग का वा० नीकाले उ० उपला दे० भाग में आ० पानी पू० भरे उ० उपर का सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य की गं० गांठ को मु० छोडे से० वह गो० गौतम आ० पानी वा० वायु की उ० उपर चि० रहे हं० हां चि० रहे से० वह

सूत्र वंधइ २ त्ता, मज्झे गंठिं बंधइ २ त्ता, उवरिल्लं गंठिं मुयइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं वामेइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं आउयायस्स पूरेइ २ त्ता, उप्पिं सियं बंधइ २ त्ता, मज्झिल्लं गंठिं मुयइ ॥ सेणूणं गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पिं उवरितले चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं जाव जीवा कम्मसंगहिया, ॥ से

भावार्थ दूसरा बंध बांधे, मध्य में बंध बांधकर उपर का मुख खोलकर वायु नीकाल देवे और पानी भरे. फीर उस का मुख बांधकर बीच का बंध छोड देवे तो क्या गौतम ! उस मशक में रहे हुवे नीचे के वायु से पानी रह सकता है ? हां भगवन् ! उपर के विभाग में वायु के आधार से पानी रह सकता है. तब भगवन्तने कहा कि जैसे वायु के आधार से मशक में पानी रहा वैसे ही आकाश के आधार से वायु, वायु के आधार से पानी यावत् कर्म संग्रहीत जीव है. दूसरा दृष्टान्त जैसे कोई पुरुष वायु से पूरित चमडे की मशक को कटि से बांधकर पुरुष प्रमाण से अधिक अगाध पानीवाले द्रह में प्रवेश

शब्दार्थ आ॰ आश्रव सं॰ संवर नि॰ निर्जरा कि॰ क्रिया अ॰ अधिकरण बं॰ बंध मो॰ मोक्ष कु॰ कुशल अ॰ सहे नहीं दे॰ देव अ॰ असुर ना॰ नाग सु॰ सुवर्ण ज॰ यक्ष र॰ राक्षस कि॰ किन्नर किं॰ किंपुरुष ग॰ गरुड गं॰ गंधर्व म॰ महोरगादि दे॰ देवगण से नि॰ निर्ग्रंथके पा॰ प्रवचन को अ॰ अतिक्रमे नहीं नि॰ निर्ग्रंथ पा॰ प्रवचन में नि॰ शंकारहित नि॰ कांक्षारहित वि॰ संदेहरहित ल॰ प्राप्त-

सूत्र जक्ख रक्खस किण्णर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगादीएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा ॥ निग्गंथे पावयणे निस्संकिया, निक्कंखिया, निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिंजपेम्माणुरायरत्ता ॥ अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे,

भावार्थ पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बंध व मोक्ष को जानने में बहुत कुशल थे. आपत्ति काल में देव, असुर, नाग, सुवर्ण, यक्ष, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व व महोरगादिक की सहायता नहीं लेने वाले थे. स्वयं कृत कर्म भोगने की मनोवृत्तिवाले थे, वैसे ही उक्त देवों निर्ग्रंथ के प्रवचन से चलित करने पर भी वे श्रमणोपासक चलित नहीं होते थे. वैसे ही वे जीवादि तत्व है या नहीं ऐसी शंका, कांक्षा व अन्य दर्शनी की वांच्छा रहित थे. वैसे ही शास्त्र के अर्थ का उन को लाभ हुवा था. उनोंने अच्छी तरह सम्यक् प्रकार से ग्रहण किया था. किसी प्रकार का संशय उत्पन्न होने पर,

शब्दार्थ

पु० स्पर्शाये अ० अन्योन्य ओ० अवगाहे हुवे अ० अन्योन्य सि० स्निग्ध प० बंधाये अ० अन्योन्य घ० घडापने चि० रहते हैं हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम से० वह ज० जैसे ह० द्रह भि० होवे पु० पूर्ण प० प्रतिपूर्ण वो० उछलता वो० विकसता स० सम घ० घडापने चि० रहे अ० अब के० कोइ पु० पुरुष तं० उस ह० द्रहमें ए० एक अ० बडा ना० नाव स०

सूत्र

पुट्ठा, अण्णमण्ण मोगाढा, अण्णमण्ण सिणेह पडिबद्धा, अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! जाव चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहा नामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभर घडत्ताए चिट्ठइ ॥ अहेणं केइपुरिसे तंसि हरदंसि एगं महं नावं सदासवं सयच्छिद्दं ओगाहेज्जा, सेणूणं गोयमा ! सानावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा

भावार्थ

हुवे हैं ? भगवन्त कहते हैं कि हां गौतम ! जीव पुद्गल परस्पर बन्धे हुवे रहते हैं यावत् लोली भूत रहते हैं. अहो भगवन् ! किस प्रकार से जीव अजीव दोनों बंधे हुवे हैं यावत् लोलीभूत हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई द्रह पानी से परिपूर्ण होवे किंचिन्मात्र खाली न होवे, उस में पानी उछलता होवे, और बहुत सुशोभित होवे, वैसे द्रह में कोई पुरुष एक बडी छिद्रवाली नाव सहित प्रवेश करे. अब अहो गौतम ! छिद्रों से आता हुवा पानी से भरकर वह नावा भरे हुवे घडे समान क्या नीचे बैठे ? हां

शब्दार्थ आ० आश्रव सं० संवर नि० निर्जरा कि० क्रिया अ० अधिकरण बं० बंध मो० मोक्ष कु० कुशल अ० सहे नहीं दे० देव अ० असुर ना० नाग सु० सुवर्ण ज० यक्ष र० राक्षस कि० किन्नर किं० किंपुरुष ग० गरुड गं० गंधर्व म० महोरगादि दे० देवगण से नि० निर्ग्रंथके पा० प्रवचन को अ० अतिक्रमे नहीं नि० निर्ग्रंथ पा० प्रवचन में नि० शंकारहित नि० कांक्षारहित नि० संदेहरहित ल० प्राप्त-

सूत्र जक्ख रक्खस किण्णर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगादीएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा ॥ निग्गंथे पावयणे निस्संकिया, निक्कंखिया, निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिजपेम्माणुरायरत्ता ॥ अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे;

भावार्थ पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, आधिकरण, बंध व मोक्ष को जानने में बहुत कुशल थे. आपत्ति काल में देव, असुर, नाग, सुवर्ण, यक्ष, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व व महोरगादिक की सहायता नहीं लेने वाले थे. स्वयं कृत कर्म भोगने की मनोवृत्तिवाले थे, वैसे ही उक्त देवों निर्ग्रंथ के प्रवचन से चलित करने पर भी वे श्रमणोपासक चलित नहीं होते थे. वैसे ही वे जीवादि तत्व है या नहीं ऐसी शंका, कांक्षा व अन्य दर्शनी की वांच्छा रहित थे. वैसे ही शास्त्र के अर्थ का उन को लाभ हुवा था. उनोंने अच्छी तरह सम्यक् प्रकार से ग्रहण किया था. किसी [illegible] का संशय उत्पन्न होने पर,

शब्दार्थ पु० स्पर्शाये अ० अन्योन्य ओ० अवगाहे हुवे अ० अन्योन्य सि० स्निग्ध प० बंधाये अ० अन्योन्य घ० घडापने चि० रहते हैं हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम से० वह ज० जैसे ह० द्रह सि० होवे पु० पूर्ण प० प्रतिपूर्ण वो० उछलता सो० विकसता स० सम घ० घडापने चि० रहे अ० अब के० कोइ पु० पुरुष तं० उस ह० द्रहमें ए० एक अ० बडा ना० नाव स०

सूत्र पुट्ठा, अण्णमण्ण मोगाढा, अण्णमण्ण सिणेह पडिबद्धा, अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! जाव चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहा नामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभर घडत्ताए चिट्ठइ ॥ अहेणं केइपुरिसे तांसि हरदंसि एगं महं नावं सदासवं सयच्छिद्दं ओग्गाहेज्जा, सेणूणं गोयमा ! सानावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा

भावार्थ हुवे हैं ? भगवन्त कहते हैं कि हां गौतम ! जीव पुद्गल परस्पर बन्धे हुवे रहते हैं यावत् लोली भूत रहते हैं. अहो भगवन् ! किस प्रकार से जीव अजीव दोनों बंधे हुवे हैं यावत् लोलीभूत हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई द्रह पानी से परिपूर्ण होवे किंचिन्मात्र खाली न होवे, उस में पानी उछलता होवे, और बहुत सुशोभित होवे, वैसे द्रह में कोई पुरुष एक बडी छिद्रवाली नाव सहित प्रवेश करे. अब अहो गौतम ! छिद्रों से आता हुवा पानी से भरकर वह नावा भरे हुवे घडे समान क्या नीचे बैठे ? हां

शब्दार्थ सम्यक् अ० पालते स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ फा० प्रासुक ए० एषनिक अ० अशन पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण पी० आसन फ० पाट से० शैय्या सं० संथारा ओ० औषध भे० भेषज प० प्रतिलाभते अ० यथा प० ग्रहण किये त० तप कर्म से आ० आत्मा को भा० भावते वि०विचरते हैं ॥ १२ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में पा० पार्श्वनाथ के शिष्य थे० स्थविर भ० भगवन्त जा० जातिसंपन्न कु० कुलसंपन्न व० बलसंपन्न रू० रूपसंपन्न वि० विनय संपन्न

सूत्र खाइम साइमेणं वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुंछणेणं, पीढफलग सेज्जा संथारएणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणा अहापरिग्गाहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ १२ ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा, कुलसंपण्णा, बलसंपण्णा, रूवसंपण्णा, विणयसंपण्णा, णाणसंपण्णा

भावार्थ होते थे. वे श्रावकों बहुत शीलव्रत, अनुव्रत, गुनव्रत, प्रत्याख्यान, पोषध उपवास वगैरह करते थे. चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या व पूर्णिमा को प्रतिपूर्ण पोषध सम्यक् प्रकार से करते थे. अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कंबल, रजोहरण, बाजोठ, पटिया, शैय्या, संथारा, व औषधादि श्रमण निर्ग्रंथ को प्रतिलाभते हुवे (देते हुवे) वैसे ही जैसा ग्रहण किया वैसा तप कर्म से आत्माको चिंतवते हुवे विचरते थे ॥ १२ ॥ उस काल उस समय में जाति संपन्न, कुल सम्पन्न, बल सम्पन्न, रूप सम्पन्न

शब्दार्थ

गौतम उ० ऊर्ध्व प०गीरे अ०अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प०गीरे॥१८॥ ज० जैसे से०वह बा० बादर आ० अपूकाय अ० अन्योन्य स० रहता चि० चिरकाल दी० दीर्घकाल चि० रहे त० तैसे से० वह नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह खि० शीघ्र वि० विध्वंस आ० आता है से० ऐसे भं०भगवन्॥१॥६॥

ने० नारकी भं० भगवन् ने०नरकमें उ० उपजता किं०क्या दे०देशने दे० देश उ० उपजे दे०देश से स० सर्व उ० उपजे स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे गो० गौतम नो० नहीं

सूत्र

समाउत्ते चिरंपि दीहकालं चिट्ठइ, तहाणं सेवि? णोइणट्ठे समट्ठे। सेणं खिप्पामेव वि-द्धंसमागच्छइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१॥६॥

नेरइएणं भंते! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणं देसं उववज्जइ, देसेणं सव्वं उवव-ज्जइ, सव्वेणं देसं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ? गोयमा! नो देसेणं देसं उव

भावार्थ

भी बहुत काल तक टिकती है? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों की सूक्ष्म अप्काय बहुत काल पर्यंत नहीं टिकती है. अल्प समय में नष्ट होती है. गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन्! आपका वचन सत्य है. अन्यथा नहीं है. यह पहिले शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१॥६॥

छठे उद्देशे में विध्वंस की कथा कही अब सातवे उद्देशे में इससे विपरीत उत्पन्न होने की वक्तव्यता करते

शब्दार्थ यथा आ० अनुक्रम से च० विचरते गा० ग्रामानुग्राम दु० जाते सु० सुखसे वि० विचरते जे० जहां तुं० तुंगियानगरी जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान ते० तहां उ० आकर अ० यथाप्रतिरूप उ० अवग्रह ओ० ग्रहण कर सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावतेहुवे वि० विचरते हैं ॥१३॥ त० तब तुं० तुंगिया न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीनरस्ता च० चार रस्ता च० बहुत म० राजमार्ग में जा० यावत् ए० एकदिशा तरफ णि० जाते हैं ॥ १४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक इ० इस क० कथा ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् स० बोलाकर ए० ऐसे वं० बोले दे० देवानुप्रिय पा०

सूत्र चेइए, तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ १३ ॥ तएणं तुंगियाए नयरीए सिंघाडग- तिगचउक्कचच्चरच उम्मुहमहापहपहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्जायंति, ॥ १४ ॥ तएणं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव सद्दावेति

भावार्थ यथाक्रम से ग्रामानुग्राम सुखपूर्वक विचरते तुंगिया नगरी के पुष्पवती उद्यान में आये. वहां आकर यथा- योग्य अवग्रह याचकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ १३ ॥ तब सिंघाडे के आका- रवाले रस्ते में, तीन रस्ता मिले वैसे स्थान में, चौक, बहुत रस्ते मीले वैसे स्थान व राजमार्ग में उन स्थविर भगवन्त के दर्शन केलिये एक ही दिशा में बहुत लोक जा रहे थे ॥ १४ ॥ तब वे श्रमणोपासक ऐसा

शब्दार्थ

गौतम उ० ऊर्ध्व प०गीरे अ०अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प०गीरे॥१८॥ ज० जैसे से०वह बा० बादर आ० अप्काय अ० अन्योन्य स० रहता चि० चिरकाल दी० दीर्घकाल चि० रहे त० तैसे से० वह नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह खि० शीघ्र वि० विध्वंस आ० आता है से० ऐसे भं०भगवन्॥१॥६॥

ने० नारकी भं० भगवन् ने०नरकमें उ० उपजता किं०क्या दे०देशसे दे० देश उ० उपजे दे०देश से स० सर्व उ० उपजे स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे गो० गौतम नो० नहीं

सूत्र

समाउत्ते चिरंपि दीहकालं चिट्ठइ, तहाणं सेत्रि? णोइणट्ठे समट्ठे। सेणं खिप्पामेव वि-द्धंसमागच्छइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१॥६॥ ✓

नेरइएणं भंते! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणं देसं उववज्जइ, देसेणं सव्वं उववज्जइ, सव्वेणं देसं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ? गोयमा! नो देसेणं देसं उव

भावार्थ

भी बहुत काल तक टिकती है? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों की सूक्ष्म अप्काय बहुत काल पर्यंत नहीं टिकती है. अल्प समय में नष्ट होती है. गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन्! आपका वचन सत्य है. अन्यथा नहीं है. यह पहिले शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१॥६॥

छठे उद्देशे में विध्वंस की कथा कही अब सातवे उद्देशे में इससे विपरीत उत्पन्न होने की वक्तव्यता करते

शब्दार्थ यथा आ० अनुक्रम से च० विचरते गा० ग्रामानुग्राम दु० जाते सु० सुखम वि० विचरते जे० जहां तुं० तुंगियानगरी जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान ते० तहां उ० आकर अ० यथाप्रतिरूप उ० अवग्रह ओ० ग्रहण कर सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावतेहुवे वि० विचरते हैं ॥१३॥ त० तव तुं० तुंगिया न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीनरस्ता च० चार रस्ता म० बहुत म० राजमार्ग में जा० यावत् ए० एकदिशा तरफ णि० जाते हैं ॥ १४ ॥ त० तव ते० वे स० श्रमणोपासक इ० इस क० कथा ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् स० बोलाकर ए० ऐसे व० बोले दे० देवानुप्रिय पा०

सूत्र चेइए, तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ १३ ॥ तएणं तुंगियाए नयरीए सिंघाडग-तिगचउक्कचच्चरच उम्मुहमहापहपहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्जायंति, ॥ १४ ॥ तएणं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव सद्दावेति

भावार्थ यथाक्रम से ग्रामानुग्राम सुखपूर्वक विचरते तुंगिया नगरी के पुष्पवती उद्यान में आये. वहां आकर यथा-योग्य अवग्रह याचकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ १३ ॥ तव सिंघाडे के आका-रवाले रस्ते में, तीन रस्ता मिले वैसे स्थान में, चौक, बहुत रस्ते मीले वैसे स्थान व राजमार्ग में उन स्थविर भगवन्त के दर्शन केलिये एक ही दिशा में बहुत लोक जा रहे थे ॥ १४ ॥ तव वे श्रमणोपासक ऐसा

शब्दार्थ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक में उ० उपजता किं० क्या दे० देश से दे० देश आ० आहारकरे दे० देश से स० सर्व आ० आहार करे स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं दे० देश से दे० देश आ० आहार करे नो० नहीं दे० देश से स० सर्व आ० आहारकरे स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे

सूत्र किं देसेणं देसं आहारेइ, देसेणं सव्वं आहारेइ, सव्वेणं देसं आहारेइ, सव्वेणं सव्वं आहारेइ ? गोयमा ! णो देसेणं देसं आहारेइ, णो देसेणं सव्वं आहारेइ, सव्वेणं

भावार्थ आहार करे ? देश से सर्वका आहार करे ? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आहार करे ? अहो गौतम ! जीव एक देश से देश पुद्गलों का आहार नहीं करता है, जीव एक देश से सब पुद्गलों का आहार नहीं करता है, परंतु उत्पन्न होने के दूसरे समय में ही सब प्रदेश से नरक के देश पुद्गलों का आहार करता है, और जीव के समस्त प्रदेश से समस्त पुद्गलों का आहार करता है. जैसे ऊष्ण किया हुवा तेल की कडाइ में पुरी को डालते पहिले पास के तेल को चूस लेती है फीर थोडा बहुत ग्रहण करती है और थोडा बहुत छोडती है. इस प्रकार उत्पन्न होने के समय में आहार के ग्रहण योग्य जितने पुद्गलों होवे उन सब को खींच लेता है फीर कितनेक पुद्गलों ग्रहण करता है और कितनेक छोडता है, इन तरह दो प्रकार से नरक के जीव आहार करते हैं. जैसे नरक का कहा वैसे ही अन्य सब

र्थ उनकी पास ग० जावे दे० देवानुप्रिय थे० स्थविर भ० भगवन्त को वं० वंदनकरे ण० नमस्कारकरे जा० यावत् प० पूजे इ० यह भव में प० परभव में जा० यावत् आ० आनुगामिक भ० होगा ति० ऐसा करके अ० अन्योन्यको अं०पा र ए०यः अर्थ प० सूनकर जे० जहां स० अपने गे० गृह ते० तहां उ० आकर ण्हा०स्नानकीया क०पीठी लगायी क०कोगले किये पा०तिलक कीया सु०शुद्ध पो०प्रवेश करनेयोग्य मं०मांगलीक व०वस्त्र पं०पहिनकर अ०अल्प म०मूल्यवंत आ० आभरण अ० पहिनकर स०अपने गे०गृह से

सूत्र णयाए जाव गहणयाए तं गच्छामोणं देवाणुप्पिया थेरे भगवंते वंदामो णमं सामो जाव पज्जुवासामो । एयण्णे इहभवे परभवे जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु ॥ अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति पडिसुणित्ता जेणेव सयाइं गेहाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगल पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकिय सरीरा

भावार्थ सुना. सुनकर अपने गृह गये. वहां जाकर स्नान किया, पीठी प्रमुख का विलेपन किया, अंजली भरकर पानी के कोगले किये, तिलक मसादिक किये, और राजसभा में प्रवेश करने योग्य शुद्ध वस्त्र पहिने. फीर अल्प भार व बहुत मूल्यवाले आभरणों से अलंकृत बनकर अपने २ गृह से नीकले, और पांव से चलते हुवे तुंगिया नगरी के मध्य बजार से होकर जहां पुष्पवती नामक उद्यान था वहां आये.

शब्दार्थ तैसे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक॥४॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक में उ० उत्पन्न हुवा किं० क्या दे० देश से दे० देश उ० उत्पन्न हुवा ए० यह त० तैसे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा ज० जैसे उ० उपजता उ० चवता में च० चार दं० दंडक त० तैसे उ० उत्पन्न हुवा उ० चवा च० चार दं० दंडक भा० कहना स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहारकरे ए०

सूत्र एवं जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेणं देसं उववण्णे ? एसोवि तहेव जाव सव्वेणं सव्वं उववण्णे जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणेय चत्तारि दंडगा तहा उववण्णे उव्वट्टणेवि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, सव्वेणं सव्वं उववण्णं सव्वेण वा देसं आहारेइ सव्वेणं सव्वं

दंडक में जानना ॥ ४ ॥ अब उत्पन्न हुवा व उत्पन्न हुए का आहार संबंधी दो दंडक कहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न हुवा यावत् सर्व से सर्वपने उत्पन्न हुवा ? अहो गौतम ! इस का अधिकार उत्पन्न होते हुवे में जैसा कहा वैसा यहां पर कहना. उत्पन्न होते व उद्वर्तते के चार दंडक जैसे कहा वैसे ही उत्पन्न हुवे व उद्वर्ते का आहार की साथ चार दंडक जानना. इस में सब से सब उत्पन्न हुवा, उत्पन्न हुए जीव सब से देश का आहार करे, सब

शब्दार्थ अ० अंजलि प० जोडकर म० मन से ए० स्थिर करके जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ०ते तहां उ० आकर ति० तीनवार अ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करे जा० यावत् ति० त्रिविध प० सेवना से प० सेवे ॥१५॥ त० तब ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक को ती० उस म० बडी प० परिषदा में चा० चार या० याम ध० धर्म कहे ज० जैसे के० केशीस्वामी जा० यावत् स० श्रावकपना आ० आज्ञा आ० आराहित भ० होवे जा० यावत् ध० धर्म क० कहा ॥ १६ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त की

सूत्र मणसा एगत्ती करणेणं, जेणेवथेरे भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणंवा करेंति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ॥ ॥ १५ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं तीसेय महइ महालियाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति जहा केसिसामिस्स जाव समणोवासइत्ताए, आणाए आराहए भवइ जाव धम्मो कहिओ ॥ १६ ॥ तएणं ते समणोवासया

भावार्थ सेवा भक्ति की ॥ १५ ॥ तब उन स्थविर भगवन्तने श्रावकों को उस महती परिषदा में चार याम वाला धर्म कहा. जैसे रायप्रसेणी सूत्र में केशी अनगारने प्रदेशी राजा को धर्मोपदेश कहा था वैसे यावत् धर्म की सम्यक् प्रकार से आराधना करनेवाला श्रमणोपासक आराधक होता है वगैरह धर्मोपदेश कहा ॥ १६ ॥ तब उन स्थविर भगवन्त की पास धर्म सुनकर श्रमणोपासक हृष्ट तुष्ट चित्तवाले

शब्दार्थ तैसे जा०यावत् स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे ए० ऐसे जा०यावत् वे० वैमानिक॥४॥ ने० नारकी भं०भगवन् ने० नरक में उ० उत्पन्न हुवा किं० क्या दे० देश से दे० देश उ० उत्पन्न हुवा ए०यह त० तैसे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा ज० जैसे उ० उपजता उ० चवता में च० चार दं० दंडक त० तैसे उ० उत्पन्न हुवा उ० चवा च० चार दं० दंडक भा० कहना स० सर्व से सं० सर्व उ० उत्पन्न हुवा ग० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहारकरे ए०

सूत्र एवं जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेणं देसं उववण्णे ? एसोवि तहेव जाव सव्वेणं सव्व उववण्णे जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणेय चत्तारि दंडगा तहा उववण्णे उव्वट्टणेवि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, सव्वेणं सव्वं उववण्णं सव्वेण वा देसं आहारेइ सव्वेणं सव्वं

भावार्थ दंडक में जानना ॥ ४ ॥ अब उत्पन्न हुवा व उत्पन्न हुए का आहार संबंधी दो दंडक कहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न हुवा यावत् सर्व से सर्वपने उत्पन्न हुवा ? अहो गौतम ! इस का अधिकार उत्पन्न होते हुवे में जैसा कहा वैसा यहां पर कहना. उत्पन्न होते व उद्वर्तते के चार दंडक जैसे कहा वैसे ही उत्पन्न हुवे व उद्वर्ते का आहार की साथ चार दंडक जानना. इस में सब से सब उत्पन्न हुवा, उत्पन्न हुए जीव सब से देश का आहार करे, सब

शब्दार्थ अं० अंजलि प० जोडकर म० मन से ए० स्थिर करके जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ०ते तहां उ० आकर ति० तीनवार अ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करे जा० यावत् ति० त्रिविध प० सेवना से प० सेवे॥१५॥ त० तब ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक को ती० उस म० बडी प० परिषदा में चा० चार या० याम ध० धर्म कहे ज० जैसे के० केशीस्वामी जा० यावत् स० श्रावकपना आ० आज्ञा आ० आराहित भ० होवे जा० यावत् ध० धर्म क० कहा ॥ १६ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त की

सूत्र मणसा एगत्ती करणेणं, जेणेवथेरे भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणंवा करेंति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ॥ ॥ १५ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं तीसेय महइ महालियाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति जहा केसिसामिस्स जाव समणोवासइत्ताए, आणाए आराहए भवइ जाव धम्मो कहिओ ॥ १६ ॥ तएणं ते समणोवासया

भावार्थ सेवा भक्ति की ॥ १५ ॥ तब उन स्थविर भगवन्तने श्रावकों को उस महती परिषदा में चार याम वाला धर्म कहा. जैसे रायप्रसेणी सूत्र में केशी अनगारने प्रदेशी राजा को धर्मोपदेश कहा था वैसे यावत् धर्म की सम्यक् प्रकार से आराधना करनेवाला श्रमणोपासक आराधक होता है वगैरह धर्मोपदेश कहा ॥ १६ ॥ तब उन स्थविर भगवन्त की पास धर्म सुनकर श्रमणोपासक हृष्ट तुष्ट चित्तवाले

शब्दार्थ द० दंडकी भा० कहना ॥ ६ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रहगति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम सि० कदाचित् वि० विग्रहगति स० प्राप्त सि० कदाचित् अ० अविग्रहगति स० प्राप्त ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ७ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रह-

सूत्र भाणियव्वं ॥ एवं णाणत्तं, एवं सव्वेवि सोलसदंडगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते किं विग्गहगइ समावण्णए, अविग्गहगइ समावण्णए? गोयमा! सियविग्गह गइ समावण्णए, सिय अविग्गहगइ समावण्णए एवं जाव वेमाणिए॥ जीवाणं भंते! किं विग्गहगइ समावण्णगा, अविग्गहगइ समावण्णगा? गोयमा! विग्गहगइ समावण्णगावि, अविग्गहगइ समावण्णगावि ॥ ७ ॥ नेरइयाणं भंते! किं विग्गहगइ

भावार्थ न नवण प्रायःगति पूर्वक होता है. इसलिये आगे गति का वर्णन कहते हैं. अहो भगवन्! गति करते जीव क्या विग्रह गति से जाता है या अविग्रह गति से जाता है? अहो गौतम! किसी समय जीव विग्रह गति से जाता है और किसी समय जीव अविग्रह गति से जाता है. ऐसा वैमानिक तक का जानना अब बहुत जीव आश्री प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! बहुत जीव विग्रह गतिवाले हैं या अविग्रह गतिवाले हैं? विग्रहगतिवाले भी हैं और अविग्रहगतिवाले भी हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! क्या नारकी विग्रह

शब्दार्थ

का फल त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० बोले ज० यदि भं० भगवन् सं० संयम मे अ० अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदना फल किं० क्या प० प्रत्येक अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक उ० उत्पन्न होवे त० तहां का० कालिक पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर तं० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले पु० पूर्व तप से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे त० तहां म० महिल थे० स्थविर स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले पु० पूर्व

सूत्र

ते समणोवासया थेरे भगवंते एवं वयासी जइणं भंते ! संजमे अणण्हयफले तवे वोदाणफले किंपत्तियं भंते देवा देवलोएसु उववज्जंति ? तत्थणं कालिय पुत्तेनामं अनगारे थेरे समणोवासए एवं वयासी पुव्वतवेणं अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं महिलेनामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी पुव्वसंजमेणं अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं आणंदरक्खिए नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी

भावार्थ

अलग २ दिया. उन में से कालिक पुत्र नामक अनगारने कहा कि अहो श्रमणोपासको ! * पूर्व तप से देवता में देवपने उत्पन्न होते हैं २ मेहल नामक स्थविर बोले की पूर्व संयम-सराग संयम से

* यहां पूर्व शब्द वीतराग अवस्था की अपेक्षा से लिया है. अर्थात् पूर्व तप सो सरागभाव से तप करना. क्यों कि वीतराग अवस्था से सराग अवस्था पूर्व होती है इससे उसमें कराया हवा तप सो पूर्वतप.

शब्दार्थ द० दंडकी भा० कहना ॥ ६ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रहगति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम सि० कदाचित् वि० विग्रहगति स० प्राप्त सि० कदाचित् अ० अविग्रहगति स० प्राप्त ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ७ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रह-

सूत्र भाणियव्वं ॥ एवं णाणत्तं, एवं सव्वेवि सोलसदंडगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते किं विग्गहगइ समावण्णए, अविग्गहगइ समावण्णए? गोयमा! सिय विग्गहगइ समावण्णए, सिय अविग्गहगइ समावण्णए एवं जाव वेमाणिए॥ जीवाणं भंते! किं विग्गहगइ समावण्णगा, अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! विग्गहगइ समावण्णगावि, अविग्गहगइ समावण्णगावि ॥ ७ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं विग्गहगइ

भावार्थ च्यवन प्रायःगति पूर्वक होता है. इसलिये आगे गति का वर्णन कहते हैं. अहो भगवन् ! गति करते जीव क्या विग्रह गति से जाता है या अविग्रह गति से जाता है ? अहो गौतम ! किसी समय जीव विग्रह गति से जाता है और किसी समय जीव अविग्रह गति से जाता है. ऐसा वैमानिक तक का जानना अब बहुत जीव आश्री प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीव विग्रह गतिवाले हैं या अविग्रह गतिवाले हैं ? विग्रहगतिवाले भी हैं और अविग्रहगतिवाले भी हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी विग्रह

शब्दार्थ — तु० तुष्ट हु० स्थविर भं० भगवन्त को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर प० प्रश्न पु० पूछे अ० अर्थ उ० ग्रहण करे उ० स्थान से उ० उठकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को ति० तीन वार जा० यावत् वं० वंदना कर न० नमस्कार कर थे० स्थविर भ० भगवन्त की अं० पास से पु० पुष्पवती चे० उद्यान से प० नीकलकर जा० जिसदिशि से पा० आये ता० उसादिशा में प० पीछे गये ॥ १६ ॥ त० तब ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त अ० कोइ वक्त तुं० तुंगीआ न० नगरी के पु० पुष्पवती चे० उद्यान से प० नीकलकर प०

सूत्र — वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति वंदइत्ता नमंसइत्ता पसिणाइं पुच्छंति अट्ठाइं उवाहियंति, उट्ठाए उट्ठेंति थेरे भगवंते तिक्खुत्तो जाव वंदंति णमंसंति वंदित्ता नमंसइत्ता थेराणं भगवंताणं अंतियाओ पुप्फवईयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइत्ता जामेवादिसं पाउब्भूया तामेवादिसं पडिगया ॥१६॥ तएणं ते थेरा भगवंतो अण्णयाकयाइं तुंगियाओ नयरीओ पुप्फवईयाओ

भावार्थ — भगवन्त से पूछेहुवे प्रश्नोंका उत्तर सुनकर हृष्ट, तुष्ट हुवे और स्थविर भगवंत को, अन्य भी प्रश्न पूछे, उन के अर्थ की धारणा की. फीर उठकर तिन वार आदान प्रदाक्षिणा करके पुष्पवती उद्यान में से नीकलकर जिसदिशा में से आये थे उसी दिशा में अपने २ स्थान पीछे गये. ॥ १६ ॥ स्थविर भग-

शब्दार्थ उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित् अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह कं० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

सूत्र अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

भावार्थ स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है. इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

शब्दार्थ पारणा में प० प्रथम पो० पोरसी में स० स्वाध्याय क० करे बी० दूसरी पो० पोरसी में झा० ध्यान करे त० तीसरी पो० पोरसी में अ० धीमे स अ० अचपल अ० असंभ्रांत मु० मुखवस्त्रिका प० देखकर भा० भाजन व० वस्त्र प० देखकर भा० भाजन को प० पुंजकर भा० भाजन उ० ग्रहणकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुमारी आ० आज्ञा होवेतो छ० छठ भक्त पा० पारणा में रा०

सूत्र छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाए, तइयाए पोरिसीए अतुरिय मचवलमसंभंते, मुहपोत्तियं पडिलेहेइ पडिलेहेइत्ता, भायणाइं वत्थाइं पडिलेहेइ पडिलेहेइत्ता भायणाइं पमज्जइ पमज्जइत्ता, भायणाइं उग्गाहेइ उग्गाहेइत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुण्णाए समाणे

भावार्थ पारणे के दिन प्रथम प्रहर में भगवन्त गौतमने स्वाध्याय की, दूसरे प्रहर में ध्यान किया और तीसरे प्रहर में धैर्यता सहित व चपलता रहित मुख वस्त्रिका का प्रतिलेखन किया, भाजन वस्त्रकी प्रतिलेखना की. फीर भाजन को गोच्छेसे पुंजकर ग्रहण किये और श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास आये. महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! आपकी आज्ञा होवे तो इत्यादि

शब्दार्थ उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित् अ० अनिन्द्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

सूत्र अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

भावार्थ स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि [illegible] स्पर्शेन, रस, घ्राण, चक्षु व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित होता है क्यों कि ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है. इसलिये अहो गौतम ! [illegible] सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

शब्दार्थ जाकर रा० राजगृह न० नगर में उ० ऊंच नी० नीच म० मध्यम कु० कुल के घ० गृह स० समुदानकी भि० भिक्षा के लिये अ० विचरते हैं ॥२०॥ त० तब भ० भगवान् गो० गौतम रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् अ० विचरते ब० बहुत ज० मनुष्यों के स० शब्द नि० सुने ए० ऐसे ख० निश्चय दे० देवानुप्रिय तुं० तुंगिया न० नगरी की ब० बाहिर पु० पुष्पवती चे० उद्यान में पा० पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक इ० इसरूप से वा० प्रश्न पु० पूछे सं० संयम से भं० भगवन् किं० क्या

सूत्र रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता, रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं परघरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ॥ २० ॥ तएणं से भगवं गोयमे रायगिहे नयरे जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईयाए चेइयाए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया संजमेणं भंते ! किं फले, तवे किं फले ?

भावार्थ नगरी में गये. और वहां ऊंच नीच व मध्यम कुल के घरों में भिक्षाचरी की ॥ २० ॥ उस समय में राजगृह नगर में गोचरी करते भगवन्त गौतम स्वामीने बहुत मनुष्यों से ऐसा सुना कि तुंगिया नगरी के बाहिर पुष्पवती नामक उद्यान में श्री पार्श्वनाथ भगवन्त के शिष्यानुशिष्य स्थविर भगवन्त को श्रमणोपासक (श्रावकों) ने ऐसा प्रश्न पूछा कि संयम का क्या फल व तप का क्या फल ? तब स्थविर भग-

शब्दार्थ

आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीपरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम जं० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥१३॥ जी० जीव को भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

सूत्र

वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किव्विसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

भावार्थ

है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विप रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

शब्दार्थ कथा का ल० प्राप्त होते अर्थ जा० श्रद्धा उत्पन्न हुइ जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा को० कुतुहल अ० यथा पर्याप्त स० भिक्षा गि०ग्रहणकर रा०राजगृह न०नगरसे प०नीकलकर अ०शीघ्रता रहित मे जा०यावत् सो० शोधते जे० जहां गु० गुणशील चे० उद्यान जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां

सूत्र जाव समुप्पन्न कोउहल्ले अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ गिण्हइत्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ अतुरिय जाव सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ एसण मणेसणं आलोएइ, भत्तपाणं पडिदंसेइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं जाव एवं वयासी एव खलु भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहे नयरे उच्चनीय मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे

भावार्थ होने पर यथापर्याप्त [चाहिये उतना] आहार ग्रहण करके शीघ्रता व मंदता रहित युगप्रमाण आगे भूमि देखते राजगृह नगर की बाहिर गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवन्त महावीर की पास आये. वहां आकर महावीर स्वामी की पास गमन, आगमन में जो कोई जीव की विराधना हुई होवे उसकी निवृत्यर्थ कायोत्सर्ग करके जो आहार लाये थे उस के शुद्धाशुद्ध ऐसे दोनों को विचार कर भक्त पान बतलाया. बतलाकर श्री श्रमण भगवन्त महावीर को ऐसा कहा अहो भगवन् ! आपकी

शब्दार्थ भगवन् ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

सूत्र कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा- जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ आभिक्खण आहारेइ आभिक्खणं परिणामेइ आभिक्खणं उस्ससइ अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

भावार्थ कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, निश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा कदाचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है. यह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है. उस से वह जीव

दार्थ विचरता व० बहुत म० मनुष्यों का स० शब्द नि० सुने दे० देवानुप्रिय तुं० तुंगिया न० नगरी की ब० बाहिर पु० पुष्पवती चे० उद्यान में पा० पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक ए० ऐसे वा० प्रश्न पु० पूछे सं० संयम से किं० क्या फ० फल त० तप से किं० क्या फ० फल तं० तैसे जा० यावत् स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता प०

सूत्र तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु असमिया ? आउज्जियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए उदाहु अणाउज्जिया ? पलिउज्जियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अपलिउज्जिया ? पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति.

भावार्थ भगवन् ! उन श्रावकोंने पूछे हुवे प्रश्नों का शास्त्र विधि से उत्तार देने को क्या वे समर्थ हैं या असमर्थ हैं ? अथवा वे स्थविर भगवन्त उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने में सम्यक् प्रकार से अभ्यासवाले हैं या अभ्यासवाले नहीं है ? अथवा उन श्रावकों के प्रश्नों कहने को वे स्थविर भगवन्त क्या ज्ञानवन्त हैं या ज्ञानवन्त नहीं हैं ? अथवा उन के प्रश्नों के उत्तार देने में वे स्थविर भगवन्त क्या परिज्ञानवाले हैं या परिज्ञान-

शब्दार्थ भगवन् ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

सूत्र कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा- जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ अभिक्खण आहारेइ अभिक्खणं परिणामेइ अभिक्खणं उस्ससइ अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

भावार्थ कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, नीश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा क्वचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है. यह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है. उस से वह जीव

शब्दार्थ

विचरता ब० बहुत म० मनुष्यों का स० शब्द नि० सुने दे० देवानुप्रिय तुं० तुंगिया न० नगरी की ब० बाहिर पु० पुष्पवती चे० उद्यान में पा० पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक ए० ऐसे वा० प्रश्न पु० पूछे सं० संयम से किं० क्या फ० फल त० तप से किं० क्या फ० फल तं० तैसे जा० यावत् स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता प०

सूत्र

तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु असमिया ? आउज्जियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए उदाहु अणाउज्जिया ? पलिउज्जियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अपलिउज्जिया ? पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति.

भावार्थ

भगवन् ! उन श्रावकोंने पूछे हुवे प्रश्नों का शास्त्र विधि से उत्तर देने को क्या वे समर्थ हैं या असमर्थ हैं ? अथवा वे स्थविर भगवन्त उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने में सम्यक् प्रकार से अभ्यासवाले हैं या अभ्यासवाले नहीं है ? अथवा उन श्रावकों के प्रश्नों कहने को वे स्थविर भगवन्त क्या ज्ञानवन्त हैं या ज्ञानवन्त नहीं हैं ? अथवा उन के प्रश्नों के उत्तर देने में वे स्थविर भगवन्त क्या परिज्ञानवाले हैं या परिज्ञान-

शब्दार्थ अंग गो०गौतम त०तीन पे०पिता के अंग अ० हड्डि अ०हड्डिकीमिंज के०केश मं०श्मश्रु रो०रोम न०नख॥१७॥ अ० माता पिता का भं०भगवन् स०शरीर के०कितना का०काल सं० रहे गो०गौतम जा० जितना का०काल भ० भवधारणीय स० शरीर अ० नाश न पामे ए० इतना का० काल सं० रहे अ० अब स०समय २ में वो० हीन होता च० चरिम का० काल स०समय में वो० नाश भ० होवे॥ १८ ॥ जी० जीव भं० भगवन्

सूत्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयंगा पण्णत्ता तंजहा आट्ठि, आट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएणं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतियं कालं संचिट्ठइ. अहेणं समए समए वोयसिज्जमाणे चरिम काल समयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेणं

भावार्थ शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं. १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अंग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं. ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं. अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है. जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

शब्दार्थ त०तपसे अ० असमर्थ त०तैसे ने०जानना अ०अवशेष जा०यावत् प० समर्थ स० सम्यक् अ० अभ्यास वाले जा० यावत स०सत्य ए०यह अर्थ णो०नहीं आ०आत्मभाव व०वक्तव्यता ॥ २३ ॥ अ०मैं गो०गौतम ए० ऐसा आ० कहताहूं भा० बोलताहूं प० विशेष कहताहूं प० प्ररूपताहूं पु० पूर्व त० तप से पु० पूर्व संयम से दे० देव दे० देवलोकमें उ० उत्पन्न होवे क० कर्म मे सं० संगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होते हैं स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता ॥ २४ ॥ त० तथारूप

सूत्र सच्चेणं एसमट्ठे, णो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥ २३ ॥ अहंपिणं गोयमा ! एव माइक्खामि, भासेमि, पन्नवेमि, परूवेमि पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति. पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं कम्मियाए, संगियाए अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति. सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए

भावार्थ यह अर्थ सत्य है आत्म कल्पित नहीं है ॥ २४ ॥ यह सुनकर गौतम स्वामी साधु की सेवा से क्या फल होता है ऐसा प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! तथारूप श्रमण की सेवा करने वाले को क्याफल होवे ? अहो गौतम ! तथारूप श्रमण की सेवा करने से शास्त्र श्रवण का फल होवे. अहो भगवन् ! शास्त्र श्रवण से क्या फल होवे ? अहो गौतम ! शास्त्र श्रवण से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है. अहो भगवन् ! ज्ञान से

शब्दार्थ

चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०माथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भावार्थ

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे. द्रव्य की अभिलापावाला राज्यऋद्धि की अभिलापावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलापावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलापावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा. धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

शब्दार्थ त०तपसे अ० असमर्थ त०तैसे ने०जानना अ०अवशेष जा०यावत् प० समर्थ स० सम्यक् अ० अभ्यास वाले जा० यावत स०सत्य ए०यह अर्थ णो०नहीं आ०आत्मभाव व०वक्तव्यता ॥ २३ ॥ अ०मैं गो०गौतम ए० ऐसा आ० कहताहूं भा० बोलताहूं प० विशेष कहताहूं प० प्ररूपताहूं पु० पूर्व त० तप से पु० पूर्व संयम से दे० देव दे० देवलोकमें उ० उत्पन्न होवे क० कर्म से सं० संगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होते हैं स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता ॥ २४ ॥ त० तथारूप

सूत्र सच्चेणं एसमट्ठे, णो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥ २३ ॥ अहंपिणं गोयमा ! एव माइक्खामि, भासेमि, पन्नवेमि, परूवेमि पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति. पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं कम्मियाए, संगियाए अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति. सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥ २४ ॥

भावार्थ यह अर्थ सत्य है आत्म कल्पित नहीं है ॥ २४ ॥ यह सुनकर गौतम स्वामी साधु की सेवा से क्या फल होता है ऐसा प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! तथारूप श्रमण की सेवा करने वाले को क्याफल होवे ? अहो गौतम ! तथारूप श्रमण की सेवा करने से शास्त्र श्रवण का फल होवे. अहो भगवन् ! शास्त्र श्रवण से क्या फल होवे ? अहो गौतम ! शास्त्र श्रवण से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है अहो भगवन् ! ज्ञान से

शब्दार्थ

चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भावार्थ

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे. द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा. धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

शब्दार्थ वो० कर्म छेदनफल वो० कर्म छेदनसे अ० अक्रिया फल भं० भगवन् अ० अक्रिया से किं० क्याफल सि० सिद्धि पर्यवसान फल प० प्ररूपा ॥ २८ ॥ अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसे आ० कहते हैं प० प्ररूपते हैं रा० राजगृह न० नगरकी व० बाहिर वे० वेभार प० पर्वत की अ० नीचे ए० तहां म० बडा ए० एकद्रह अ० पानीका अं० अनेक जो० योजन का आ० लम्बा वि० चौडा ना० नानाप्रकार

सूत्र सिद्धिपज्जवसाण फला पण्णत्ता गोयमा ! ॥ गाथा ॥ सवणे णाणेय विण्णाणे, पच्चक्खाणेय संजमे ॥ अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥ १ ॥ २५ ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एव माइक्खंति भासंति पण्णवंति परूवंति एवं खलु रायगिहस्स नयरस्स बाहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे एत्थणं महं एगे हरए अप्पे पण्णत्ते अणेगाइं

भावार्थ कर्मों का क्षय होने से अक्रिया का फल होवे अर्थात् योग निरुंधन रूप फल होवे. अक्रिया से क्या फल? अहो गौतम ! अक्रिया से समस्त फल में सर्वोत्कृष्ट कर्मक्षयरूप मोक्षफल होवे. यों अनुक्रम से श्रवण, ज्ञान, विज्ञान, प्रत्याख्यान, संयम, आश्रवनिरोध तप, निर्जरा, अक्रिया, व मुक्ति का फल होता है. ॥ २८ ॥ अब साधु सेवा नहीं करने से विपरीत भाषी होते हैं सो बताते हैं ? अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि राजगृह नगर की बाहिर वेभार नामक पर्वत है उस की नीचे एक महान द्रह अनेक योजन की लम्बाइ व चौडाइ वाला है. विविध प्रकार के वृक्ष, व वनखंड

शब्दार्थ

कैसे गो० गौतम स० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव-धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

सूत्र

वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए, मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ

कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव धर्मिष्ट स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया. फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

अ० नजदीक ए० तहां म० महातपोपतीरप्रभव पा० झरण प० प्ररूपा पं०पांच सो धनुष्य आ० लंबा वि० चौडा ना० नाना प्रकार दु० वृक्षवन खंड से मं०मंडित दे०प्रदेश स० शोभायमान पा०प्रसन्न चित्त करने वाला द० देखने योग्य अ० अभिरूपं प० प्रतिरूप त० तहां व० बहुत उ० ऊष्ण जो० योनिवाले जी० जीव पो० पुद्गल उ० पानीपने व० उत्पन्न होते हैं वि० विणसते हैं च० चवते हैं उ० पुष्ट होते हैं त० भरा

सूत्र — णयरस्स बहिया वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते एत्थणं महातवोवतीरप्पभवे नामं पासवणे पण्णत्ते पंच धणुसयाइं आयाम विक्खंभेणं नाणा दुमखंडमंडिउद्देसे, सस्सिरिए पासादीए दरिसणिज्जे, अभिरूवे पडिरूवे। तत्थणं बहवे उसिणजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति, चयंति उवचयंति। तव्वतिरित्तेवियणं सयासमियं उसिणे उसिणे आउआए अभिनिस्सवइ, एसणं गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवे पासवणे, एसणं

भावार्थ — मिथ्या है. मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि राजगृह नगर की बाहिर वेभार पर्वत की पास अति ऊष्ण क्षेत्र है. उस की समीप एक महातपोपतीरप्रभव नामक ऊष्ण पानी का झरणा है. पांचसो धनुष्य का लम्बा व चौडा है. विविध प्रकार के वृक्ष, वनखंड से सुशोभित, प्रासादीक, दर्शनीय, अभिरूप यावत् प्रतिरूप है. उस में बहुत ऊष्ण योनिवाले जीव पानीपने उत्पन्न होते हैं. चवते हैं. उस में पानी भराये पीछे जो अधिक होता है वह ऊष्ण अप्कायपने झरता है. अहो गौतम ! यह महातपोपतीर

शब्दार्थ

कैसे गो० गौतम स० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव-धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

सूत्र

वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेणं? गोयमा! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए; मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ

कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! कोई जीव धर्मिष्ट स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया. फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

शब्दार्थ

क० कितने भं० भगवन् दे० देव प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार प्रकार के दे० देव प० प्ररूपे भ० भुवनपति वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक क० कहां भं० भगवन् भ० भुवनपति दे० देव के ठा० स्थान प० कहे गो० गौतम इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की ज० जैसे ठा० स्थान पद में

सूत्र

कइविहाणं भंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता तंजहा—भवणवइ, वाणमंतर, जोइस, वेमाणिया, । कहिणं भंते ! भवणवासीणं देवाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे देवाणं वत्तव्वया ,

भावार्थ

विशुद्ध भाषा बोलने से देव होवे इसलिये देवता का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! देवता के कितने भेद कहे हैं ? देवताओं के चार भेद कहे हैं. १ भुवनपति २ वाणव्यंतर ३ ज्योतिषी और ४ वैमानिक. अहो भगवन् ! भुवनपति देवों के स्थान कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा के दूसरे स्थान पद में इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड कहा है. उसमें एक२ हजार उपर व नीचे छोडने से एक लाख अठत्तर हजार योजन की पोलार है. उस में बारह आंतरे व तेरह पाथडे हैं. इस के आंतरे में भवनपति देवता के सात क्रोड बहोत्तर लाख भुवन कहे हैं. भवनपति देवलोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होते हैं. मारणान्तिक समुद्घातवर्ती लोक के असंख्यातवे भाग में भवनपति वर्तते हैं. स्वस्थान आश्री सात क्रोड बहोत्तर लाख भवन कहे हैं. वे भी लोक के असंख्यातवे

दार्थ फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवें मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवें जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिच्छी आ०

सूत्र अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

शब्दार्थ वे० वैमानिक उ० उद्देशा भा० कहना ॥ २ ॥ ७ ॥ * *

क० कहां भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर कुमार राजा की स० सुधर्मा सभा गो० गौतम जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र वि० उलंघ कर अ० अरुणवर द्वीप की वा० बाहिर की वे० वेदिका से अं० अरुणोदय स० समुद्र में बा० बीयालीस जो० योजन सहस्र ओ० अवगाह कर च० चमर का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का ति० तिगिच्छकूट

सूत्र

उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ७ ॥ * * *

कहिणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्ज दीव समुद्दं विईवइत्ता अरुणवर दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयअंताओ अरुणोदयं समुद्दं

भावार्थ उद्देशे से जानना. यह दूसरा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ ७ ॥ × +

सातवे उद्देशे में देवता का अधिकार कहा. इसलिये प्रथम भवनपति देवता संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार के राजा चमर नामक असुरेन्द्र की सुधर्मा सभा कहां है ? अहो गौतम ! जंम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण दिशा में तिर्च्छी असंख्याते द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे तो वहां अरुण वर द्वीप आता है. उस की बाहिर की वेदिकासे बेतालीस हजार योजन अवगाह कर अरुणोदय समुद्र

शब्दार्थ फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवे जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० मसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिर्च्छा आ०

सूत्र अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

दार्थ

वे० वैमानिक उ० उद्देशा भा० कहना ॥ २ ॥ ७ ॥ * *

क० कहां भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर कुमार राजा की स० सुधर्मा सभा गो० गौतम जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दाक्षिण में ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र वि० उलंघ कर अ० अरुणवर द्वीप की वा० बाहिर की वे० वेदिका से अं० अरुणोदय स० समुद्र में वा० बीयालीस जो० योजन सहस्र ओ० अवगाह कर च० चमर का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का ति० तिगिच्छकूट

सूत्र

उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ७ ॥ * * *

कहिणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूदीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्ज दीव समुद्दं विईवइत्ता अरुणवर दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयअंताओ अरुणोदयं समुद्दं

भावार्थ

उद्देशे से जानना. यह दूसरा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ ७ ॥ × +

सातवे उद्देशे में देवता का अधिकार कहा. इसलिये प्रथम भवनपति देवता संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार के राजा चमर नामक असुरेन्द्र की सुधर्मा सभा कहां है ? अहो गौतम ! जंम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण दिशा में तिर्च्छा असंख्याते द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे तो वहां अरुण वर द्वीप आता है. उस की बाहिर की वेदिकासे बेतालीस हजार योजन अवगाह कर अरुणोदय समुद्र

अर्थ अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

सूत्र अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वे शुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अर्थ तीन जो० योजन स० सहस्र दो० दो छ० छत्तीस जो० योजनशत किं० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि म० मध्य में ए० एक जो० योजन स० सहस्र ति० तीन इ० इकतालीस जो० योजनशत किं० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि उ० उपर दो०दो जो० योजन स० सहस्र दो० दो छ० छियासी जो० योजन शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि जा० यावत् मू० मूल में वि० विस्तार म० मध्य में सं० संक्षिप्त उ० उपर वि० विशाल म० मध्य में व० प्रधान व० वज्र वि० आकार व० वडा य० मृदंग

सूत्र क्खंभेणं, मज्झे चत्तारि चउव्वीसे जोयणसए विक्खंभेणं, उवरिं सत्ततेवीसे जोयणसए विक्खंभेणं, मूले तिण्णि जोयण सहस्साइं दोण्णिय छत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, मज्झे एगं जोयणसहस्सं तिण्णियइगयाले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, उवरिं दोण्णिय जोयण सहस्साइं दोण्णिय छलसीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं जावमूले वित्थेड मज्झे संखित्ते

भावार्थ जानना. उस की परिधि मूलमें ३२३६ योजन से कुच्छ कम, मध्य में १,३४१ योजन से कुच्छ कम, और उपर २,२८६ योजन से किंचित् विशेष जानना. मूलमें विस्तार वाला, मध्य में संकुचित और उपर फीरं विस्तार वाला है. वीचमें श्रेष्ठवज्रके आकार वाला है. महामुकुंद. डमरु के आकार वाला सब रत्नमय शोभनिक यावत् प्रतिरूप है. उस पर्वत को एक पद्मवरवेदिका और एक वनखंड है. वह

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

सूत्र

अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ

रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वेशुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

शब्दार्थ जो० योजन स० शत वि० चौडा पा० देखने योग्य व० वर्णन युक्त उ० उपर की भू० भूमि व० वर्णन युक्त अ० आठ जो० योजन की म० मणिपीठिका च० चमर का सी० सिंहासन स० परिवार सहित भा० कहना ॥ २ ॥ त० उस ति० तिगिच्छकूट की दा० दक्षिण में छ० छसो क्रोड प० पंचावन क्रोड प० पेंतीस लक्ष प० पच्चास सहस्र जो० योजन अ० अरुणोदय स० समुद्र में ति० तिर्च्छा वी० अतिक्रम से अ० अधो र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में च० चालीस जो० योजन स० सहस्र आ० अवगाहकर कर

सूत्र

पण्णत्ते, अड्ढाइज्जाइं जोयण सयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं, पणवीसं जोयण सयाइं विक्खंभेणं पासायवन्नओ-उल्लोय भूमिवन्नओ; अट्ठजोयणाणि मणिपेढिया चमरस्स सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं ॥ २ ॥ तस्सणं तिगिच्छि कूडस्स दाहिणेणं छक्कोडिसए पणवण्णंच कोडीओ पणतीसंच सयसहस्साइं पण्णासंच सहस्साइं जोयणाइं अरु-णोदए समुद्दे तिरियं वीतिवइत्ता. अहे रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीसं जोयणं

भावार्थ

में सब प्रासादों में श्रेष्ट ऐसा एक प्रासाद है. वह २५० योजन का ऊंचा है १२५योजन का चौडा है, और बहुत ऊंचा है. उस प्रासाद के मध्य में आठ योजन की मणिपिठिका है. उसमें चमरेन्द्र का सिंहासन व अन्य देव देवियों के सिंहासन रहे हुवे हैं ॥ २ ॥ उस तिगिच्छ कूट से दक्षिण दिशामें छसो पंचावन क्रोड पेंतीस लाख पच्चास हजार (६५५,३५,५०,०००) योजन अरुणोदय समुद में तिर्च्छा जाते चालिस हजार

अर्थ — ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य कि० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र — लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ — के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

शब्दार्थ — अर्धयोजन उ० उंचे उ० उंचपने ए० परस्पर बा० बाजु पं० पांच दा० द्वार स० शत अ० अढाइसो जो० योजन उ० उंचे उ० उंचपने ए० एक प० पचहत्त जो० योजन वि० चौडे उ० उपर त० तलमें सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लंबा वि० चौडा प० पचास जो०योजन स०सहस्र पं० पांच स०सत्तानव जो० योजन शत किं० किंचित् वि० विशेष ऊन प० परिधि स० सर्व प्रमाण वे० वैमानिक का प० प्रमाण का अ० अर्ध ने० जानना ॥ २ ॥ ८ ॥ ÷ ÷ ÷

सूत्र — एगं पणहत्तरी जोयणाइं विक्खंभेणं, उवरियतलेणं सोलस जोयण सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, पन्नासं जोयण सहस्साइं पंचयसत्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं सव्वप्पमाणं वेमाणियस्स पमाणस्स अद्धं नेयव्वं ॥ इइ बिईयसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ८ ॥ * *

भावार्थ — के चौडे कहे हैं. घरके पीठ सोलह हजार योजन के चौडे कहे हैं. उसकी परिधि५०५९७योजन में कुछ कम की जानना. सब प्रमाण सौधर्मादि वैमानिक से आधा जानना. यह दूसरे शतक का आठवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ८ ॥ + + ÷ +

गत उद्देशे में देवता का अधिकार कहा अब मनुष्य का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन्! समय-क्षेत्र क्यों कहता है? अहो गौतम! अढाइ द्वीप व दो समुद्र को समय क्षेत्र कहते हैं. समय का अर्थ काल

अर्थ — ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र — लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ — के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध करे नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

शब्दार्थ अर्धयोजन उ० उंचे उ० उंचपने ए० परस्पर बा० बाजु पं० पांच दा० द्वार स० शत अ० अढाइसो जो० योजन उ० उंचे उ० उंचपने ए० एक प० पच्चहत्त जो० योजन वि० चौडे उ० उपर त० तलमें सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लंबा वि० चौडा प० पचास जो० योजन स० सहस्र पं० पांच स० सत्तानव जो० योजन शत किं० किंचित् वि० विशेष ऊन प० परिधि स० सर्व प्रमाण वे० वैमानिक का प० प्रमाण का अ० अर्ध ने० जानना ॥ २ ॥ ८ ॥ ÷ ÷ ÷

सूत्र एगं पणहत्तरी जोयणाइं विक्खंभेणं, उवरियतलेणं सोलस जोयण सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, पन्नासं जोयण सहस्साइं पंचयसत्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं सव्वप्पमाणं वेमाणियस्स पमाणस्स अद्धं नेयव्वं ॥ इइ विईयसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ८ ॥ * *

भावार्थ के चौडे कहे हैं. घरके पीठ सोलह हजार योजन के चौडे कहे हैं. उसकी परिधि ५०५९७ योजन में कुछ कम की जानना. सब प्रमाण सौधर्मादि वैमानिक से आधा जानना. यह दूसरे शतक का आठवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ८ ॥ + + ÷ +

गत उद्देशे में देवता का अधिकार कहा अब मनुष्य का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन्! समय-क्षेत्र क्यों कहता है? अहो गौतम! अढाइ द्वीप व दो समुद्र को समय क्षेत्र कहते हैं. समय का अर्थ काल

दर्थ

ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

शब्दार्थ क० कितनी भं० भगवन् अ० अस्तिकाय गो० गौतम पं० पांच अ० अस्तिकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्ति काय आ० आकाशास्ति काय जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्ति काय ॥ १ ॥ ध० धर्मा-

सूत्र कइणं भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता तंजहा, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थि काए

भावार्थ गत उद्देशे में क्षेत्रका स्वरूप कहा है, उस में आस्तिकाय होने से अस्तिकाया का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! अस्तिकाय कितनी कही ! अहो गौतम ! अस्तिकाय पांच कही. अस्ति शब्द से प्रदेश ग्रहण करना और कायशब्द से राशि अर्थात् प्रदेशों की राशि–समुदाय सो अस्तिकाय. अथवा अस्ति शब्द काल त्रय वाची अव्यय है इस से जो प्रदेश अतीत काल में थे, वर्तमान में हैं और आगामिक में होंगे सो आस्तिकाय. उस के नाम धर्मास्तिकाय * अधर्मास्ति काय, आकाशास्तिकाय, जीवास्ति काय

* धर्मास्तिकाय पद मांगलीक होने से प्रथम ग्रहण किया है, तत्पश्चात् धर्मास्काय का विपरीत स्वभाव वाला अधर्मास्तिकाय, इन को आधार भूत आकाशास्तिकाय, अनंत अमूर्तत्व का साधर्म्य स्वभाव होने से जीवास्ति काय, और उस का उपष्टंभ करने वाला पुद्गल होने से पुद्गलास्ति काय ऐसा क्रम रक्खा गया है.

अर्थ

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अं० अंतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह ते० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा० बाल पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य कि० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

सूत्र

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

भावार्थ

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही. इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

शब्दार्थ नहीं क० कदापि न० नहीं हैं जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से ग० गमन गुण अ० अधर्मास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष गु० गुण से ठा० स्थानगुण आ० आकाशास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष खे० क्षेत्र से लो० लोकालोक प्रमाण अ० अनंत जा० यावत् गु० गुण से अ० अवगाहना गुण जी० जीवास्तिकाय में भं० भगवन् क० कितना व० वर्ण गं० गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम अ० अवर्ण जा० यावत् अ० अरूपी जी० जीव सा०

सूत्र न आसि न कयाइ नत्थि जाव निच्चे, भावओ अवन्ने अगंधे, अरसे,अफासे, गुणओ गमणगुणे अहम्मत्थि काएवि एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे ॥ आगासत्थि काएवि एवं चेव, नवरं खेत्तओणं आगासत्थिकाए, लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणंतेचेव, जाव गुणओ अवगाहगुणे ॥ जीवत्थिकाएणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधे,

भावार्थ संपूर्ण लोक प्रमाण, काल से अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं, और अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में था, वर्तमान है और अनागत में होगा यावत् नित्य रहेगा. भाव से धर्मास्तिकाय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं होते हैं और गुण से धर्मास्तिकाया में गमन गुण जैसे मत्स्य को जल का आश्रय रहता है वैसे ही जीव पुद्गलको धर्मास्ति कायगति कराता है. अधर्मास्ति कायाका भी वैसे ही जानना मात्र स्थिर गुण ग्रहण करना. आकाशास्ति काय में भी धर्मास्ति

शब्दार्थ मारने से ता० तव से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरण की प० प्रद्वेपिकी प० परितापनिकी च० चार कि० क्रिया पु० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० वनाने से बं० बंधन करने से मा० मारने से ता० वहांलग से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये जा० यावत पं० पांच कि० क्रिया ॥ ४ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत व० वन वि० विपम त० तृण ऊ० ऊंचा करके अ० अग्निकाय

सूत्र से पुरिसे काइयाए अहिगरणयाए, पाओसियाए, परियावणियाए, चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, मारणयाएवि तावंचणंसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाय किरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेणं जाव पंचकिरिए ॥ ४ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा, जाव वणाविदुग्गंसिवा, तणाइं ऊसविय २ अ-

भावार्थ जितने काल पर्यंत कूटपाश बनाने का व मृग बांधने का भाव है परंतु मारनेका भाव नहीं है उस को उतने कालतक चार क्रिया लगती हैं. उक्त तीनों में उस मृग को परिताप दुःख दिया सो परितापनिकी क्रिया कही. जिस को जितने कालतक कूटपाश बनाने का, बांधने का व मारने का भाव है उस को उतने कालतक पांच क्रियाओं लगती हैं. कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेपिकी, परितापनिकी व प्राणातिपातिकी. इसी कारन से अहो गौतम ! उक्त पुरुष को कदाचित् तीन, कदाचित् चार व कदाचित् पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥

पदार्थ

नहीं क० कदापि न० नहीं हैं जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से ग० गमन गुण अ० 'अधर्मास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष गु० गुण से ठा० स्थानगुण आ० आकाशास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष खे० क्षेत्र से लो० लोकालोक प्रमाण अ० अनंत जा० यावत् गु० गुण से अ० अवगाहना गुण जी० जीवास्तिकाय में भं० भगवन् क० कितना व० वर्ण गं० गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम अ० अवर्ण जा० यावत् अ० अरूपी जी० जीव सा०

सूत्र

न आसि न कयाइ नत्थि जाव निच्चे, भावओ अवन्ने अगंधे, अरसे,अफासे, गुणओ गमणगुणे अहम्मत्थि काएवि एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे ॥ आगासत्थि काएवि एवं चेव, नवरं खेत्तओणं आगासत्थिकाए, लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणंतेचेव, जाव गुणओ अवगाहगुणे ॥ जीवत्थिकाएणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधे,

भावार्थ

संपूर्ण लोक प्रमाण, काल से अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं, और अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में था, वर्तमान है और अनागत में होगा यावत् नित्य रहेगा. भाव से धर्मास्तिकाय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं होते हैं और गुण से धर्मास्तिकाया में गमन गुण जैसे मत्स्य को जल का आश्रय रहता है वैसे ही जीव पुद्गलको धर्मास्ति कायगति कराता है. अधर्मास्ति कायाका भी वैसे ही जानना मात्र स्थिर गुण ग्रहण करना. आकाशास्ति काय में भी धर्मास्ति

शब्दार्थ जाता है जा० यावत् से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा से० वह गो० गौतम क० करते को क० किया सं० सांधते को सं० सांधा नि० खींचते को नि० खींचा नि० निकलते को नि० निकला व० कहना है० हां भं० भगवन् क० करते को किया जा० यावत् नि० निकला जे० जो मि० मृगको मा० हने से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शे जे० जो पु० पुरुष को मा० हने से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शे अं०

सूत्र जाव से पुरिसवेरेणं पुट्ठे । सेणूणं गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे संधिए, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया । हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जे मियंमारेइ से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे. अंतो छण्हं मासाणं मरइ-

भावार्थ मृग को मारा उस को मृग का वैर हुआ. अहो भगवन् ! यह अर्थ किस तरह से है ? अहो गौतम ! 'कज्जमाणे कडे' करते हुवे को किया अर्थात् धनुष्य बाण करने लगा सो किया, 'संधिज्जमाणे संधिए' धनुष्य बाण सांधनेलगा सो संधा, 'निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए' धनुष्य खींचने लगा सो खींचा व 'निसरिज्जमाणे निसिट्ठे' धनुष्य में से बाण नीकलनेलगा सो नीकला ऐसा कहा जा सकता है. हां भगवन् ! करते को किया हुवा यावत् नीकलते को निकला हुवा कहा जा सकता है. इसी से अहो गौतम ! जो मृग मारता है वह मृग का वैर से स्पर्शाता है अर्थात् उस मृग मारनेवाले को मृग का वैर लगता है और पुरुष

र्थ शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से अ० अनंत द्रव्य खे० क्षेत्र से लो० लोक प्रमाण मात्र का० काल से न० नहीं क० कदापि व० व आ० था जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से व० वर्ण वाला गं० गंधवाला र० रसवाला फा० स्पर्श वाला गु० गुण से ग०

सूत्र अट्ठफासे, रूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे. से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ।दव्वओणंपोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं, खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते,कालओ नकयाइ न आसि जाव निच्चे भावओ वण्णमंते,

भावार्थ नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं है और अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में था, वर्तमान में है, और अनागत में होगा यावत् नित्य है. भाव से वर्ण,गंध,रस, स्पर्श रहित अरूपी है. गुण से उपयोग लक्षण वाला है. अहो भगवन् ! पुद्गलास्ति काय में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं? अहो गौतम! पुद्गलास्ति कायमें पांचवर्ण, पांचरस, दो गंध, और आठ स्पर्श हैं. वह रूपी, अजीव, शाश्वत, अवस्थित यावत् लोक द्रव्य है. उस के द्रव्य से यावत् गुण से ऐसे पांच भेद किये हैं. द्रव्य से पुद्गलास्तिकाय अनंत है, क्षेत्र से लोक प्रमाण है, काल से अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है भाव से वर्ण, गंध, रस स्पर्श सहित है, और गुण से ग्रहणगुण वाला है अर्थात् परस्पर मीलते परिण

शब्दार्थ शक्तिमे स० सांधे स० स्वतः के पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि०.क्रिया पु० स्पर्शे आ० नजदीक व० वध करने वाला अ० आकांक्षा रहित पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा ॥ ८ ॥ दो० दो भं०भगवन् पु० पुरुष स० सरिखे स० सरिखी त्वचावाले स० सरिखी वयवाले स० सरिखे भं० भंडोपकरणवाले अ० अन्योन्य स० साथ सं० संग्राम सं० करे त० तहां ए० एक पु० पुरुष प० जीते ए० एक पु० पुरुष

सूत्र रिए? गोयमा! जावंचणं से पुरिसे तं पुरिसं सत्तीए समभिसंधेइ सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदइ तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाए पंचहिंकिरियाहिं पुट्ठे। आसण्ण वहएणय अणवकंखवत्तीएणं पुरिसवेरेणं पुट्ठे ॥ ८ ॥ दो भंते! पुरिसा सरिसया, सरित्तया, सारिसव्वया, सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेणं सद्धिं संगामं संगामेइ, तत्थणं एगे पुरिसे पराइणइ, एगे पुरिसे पराइज्जइ, से कहमेयं भंते!

भावार्थ अहो भगवन्! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगती हैं.? अहो गौतम! जितने कालतक वह पुरुष किसी अन्य पुरुष का शक्ति या खड्गसे शीर्ष का छेदन करता है उतनाकाल तक उस पुरुष को कायिकीआदि पांच क्रियाओं लगती हैं. आसन्न वधक पाप की निवृत्ति के लिये निरपेक्ष वृत्ति से वैर का बंधन करता है. ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! शरीर के प्रमाण में व कुशलता में सरिखे, सरीखी वयवाले, सरीखे भंडोप

शब्दार्थ ऊणा को ध० धर्मास्तिकाय व० कहना णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० एक ध० धर्मास्तिकाया के प्रदेश को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना जा० यावत् ए० एक प्रदेश ऊणा ध० धर्मास्ति काया को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो० गौतम खं० खंडित च० चक्र स० संपूर्ण च० चक्र भ० भगवन् नो० नहीं खं० खंडित चक्र सं० संपूर्ण चक्र ए०

सूत्र त्रियणं धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ एगे धम्मत्थिकायप्पदेसे नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदे- सूणे त्रियणं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया, ॥ सेणूणं गोयमा ! खंडे चक्के सगले चक्के ? भगवं ! नो खंडे चक्के सगले चक्के । एवं छत्ते, चम्मे, दंडे,

भावार्थ अहो भगवन् ! किस कारनसे धर्मास्तिकाय के एक प्रदेश को धर्मास्तिकाय नहीं कहना. ऐसे ही दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, संख्यात, असंख्यात यावत् एक प्रदेश कम को धर्मास्ति काय नहीं कह सकते है ? अहो गौतम ! चक्र के टुकडे को क्या चक्र कहना ? अहो भगवन् ! चक्र के टुकडे को चक्र नहीं कहना परंतु पूर्ण चक्र को ही चक्र कहना और भी चमर के अमुक विभाग को क्या चमर कहना, छत्र के अमुक विभाग को क्या छत्र कहना, दंडके

शक्तिसे स० सांधे स० स्वतः के पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे ता० तत्र से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि०.क्रिया पु० स्पर्शे आ० नजदीक व० वध करने वाला अ० आकांक्षा रहित पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा ॥ ८ ॥ दो० दो भं०भगवन् पु० पुरुष स० सरिखे स० सरिखी त्वचावाले स० सरिखी वयवाले स० सरिखे भं० भंडोपकरणवाले अ० अन्योन्य स० साथ सं० संग्राम सं० करे त० तहां ए० एक पु० पुरुष प० जीते ए० एक पु० पुरुष

रिए ? गोयमा ! जावंचणं से पुरिसे तं पुरिसं सत्तीए समभिसंधेइ सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदइ तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाए पंचाहिंकिरियाहिं पुट्ठे । आसण्ण वहएणय अणवकंखवत्तीएणं पुरिसवेरेणं पुट्ठे ॥ ८ ॥ दो भंते ! पुरिसा सरिसया, सरित्तया, सरिसव्वया, सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेणं सद्धिं संगामं संगामेइ, तत्थणं एगे पुरिसे पराइणइ, एगे पुरिसे पराइज्जइ, से कहमेयं भंते !

अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! जितने कालतक वह पुरुष किसी अन्य पुरुष का शक्ति या खड्गसे शीर्ष का छेदन करता है उतनाकाल तक उस पुरुष को कायिकीआदि पांच क्रियाओं लगती हैं. आसन्न वधक पाप की निवृत्ति के लिये निरपेक्ष वृत्ति से वैर का बंधन करता है. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! शरीर के प्रमाण में व कुशलता में सरिखे, सरीखी वयवाले, सरीखे भंडोप

शब्दार्थ ऊणा को ध० धर्मास्तिकाय व० कहना णो० नहीं इ० यह अर्थ स०समर्थ से० पढ के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० एक ध० धर्मास्तिकाया के प्रदेश को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो०गौतम यावत् ए० एक प्रदेश ऊणा ध० धर्मास्ति काया को .नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो०गौतम खं० खंडित च० चक्र स० संपूर्ण च० चक्र भ० भगवन् नो० नहीं खं० खंडित चक्र सं० संपूर्ण चक्र ए०

सूत्र त्रियणं धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ एगे धम्मत्थिकायप्पदेसे नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणेत्रियणं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया, ॥ सेणूणं गोयमा ! खंडे चक्के सगले चक्के ? भगवं ! नो खंडे चक्के सगले चक्के । एवं छत्ते, चम्मे, दंडे,

भावार्थ अहो भगवन् ! किस कारनसे धर्मास्तिकाय के एक प्रदेश को धर्मास्तिकाय नहीं कहना. ऐसे ही दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, संख्यात, असंख्यात यावत् एक प्रदेश कम को धर्मास्ति काय नहीं कह सकते है ? अहो गौतम ! चक्र के टुकडे को क्या चक्र कहना ? अहो भगवन् ! चक्र के टुकडे को चक्र नहीं कहना परंतु पूर्ण चक्र को ही चक्र कहना और भी चमर के अमुक विभाग को क्या चमर कहना, छत्र के अमुक विभाग को क्या छत्र कहना, दंडके

शब्दार्थ

से० वह पु० पुरुष प० पराजित है से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० एसा क० कहा जाता है स० वीर्यवन्त प० जीतता है अ० वीर्यरहित प० पराजय पामता है ॥९॥ जी०जीव भं०भगवन् किं०क्या स० सवीर्य अ० अवीर्य गो० गौतम स० सवीर्य अ अवीर्य से० वह के० कैसे भं०भगवन् ए०ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम जी० जीव दु० दोप्रकार के सं० संसार को प्राप्त अ० संसार से रहित त० तहां जे० जो अ० संसार रहित ते० वे सि० सिद्ध सि० सिद्ध अ० अवीर्य त० तहां जे० जो सं० संसारो

सूत्र

जाव उदिण्णाइं नो उवसंताइं भवंति सेणं पुरिसे पराइज्जइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सवीरिए पराइणइ, अवीरिए पराइज्जइ ॥ ९ ॥ जीवाणं भंते किंसवीरिया अवीरिया ? गोयमा ! सवीरियावि, अवीरियावि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता तंजहा संसारसमावण्णगाय असंसारसमावण्णगाय ।

भावार्थ

होता है. इसलियें ऐसा कहागया है कि वीर्यवंत पुरुष का जय और वीर्य रहित पुरुष का पराजय होता है ॥ ९ ॥ अब वीर्य का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ? जीव क्या वीर्य सहित है या वीर्य रहित है ? अहो गौतम ? वीर्य सहित भी है और वीर्य रहित भी है. अहो भगवन् ! जीव वीर्य सहित भी है और वीर्य रहित भी है यह किस तरह से ? अहो गौतम ? जीव के दो भेद कहे हैं. संसार समापन्नक और असंसार समापन्नक. जो असंसार समापन्नक हैं वे सिद्ध कहाते हैं. उन को करण वीर्य का

शब्दार्थ ग० ग्रहित को गो० गौतम ध० धर्मास्ति काय व० कहना ए० ऐसे अ० अधर्मास्ति काय आ० आकाशास्ति काय जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्ति ए० ऐसे ही न० विशेष ति० तीन का प०प्रदेश अ० अनंत भा० कहना ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् स० उत्थान सहित स० कर्म सहित स० बलसहित स वीर्यसहित स० पुरुषात्कार पराक्रम सहित आ० आत्म भाव से उ० देखाडे व० कहना हं० हां गो०

सूत्र गोयमा ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया एवं अहम्मत्थिकाएवि, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकाय, पोग्गलत्थि काएवि एवं चेव नवरं तिण्हंपि पएसा अणंता भाणियव्वा सेसं तंचेव ॥ ३ ॥ जीवेणं भंते ! सउट्ठाणे, सकम्मे, सबले, सवीरिए, सपुरिसकार परक्कमे, आयभावेणं जीवभावं उवदंसेईति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा !

भावार्थ तब अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय किसको कहते हैं ? असंख्यात प्रदेशात्मक धर्मास्ति काय है यह सब कृत्स्न, प्रतिपूर्ण, निरविशेष और एकही शब्द कहनेमें सब आजावे वैसे होवे उसी ही धर्मास्तिकाया कहते हैं. ऐसेही अधर्मास्तिकाय. आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय व पुद्गलास्ति कायका जानना. विशेष इतना कि आकाशास्तिकायादिक में प्रदेश अनंत होनेसे अनंत कहना. ॥ ३ ॥ उपयोग लक्षण वाला जीवास्ति काय पहिले कहा. अब जीव के उत्थानादि गुणों बताते हैं. अहो भगवन् ! उत्थान, कर्म, बल,

शब्दार्थ — वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है ॥ १.८ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् कि० क्या स० सवीर्य अ० अवीर्य गो० गौतम ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से० वह के० कैसे गो० गौतम जे० जिस ने० नारकी को अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ते० वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य जे० जो ने० नारकी को न० नहीं है उ०

सूत्र — एव वुच्चइ जीवा दुविहा प० तं० सवीरियावि, अवीरियावि ॥ १.० ॥ नेरइयाणं भंते किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा नेरइया लाद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरियाय अवीरियाय। सेकेणट्ठेणं? गोयमा! जेसिणं नेरइयाणं अत्थि उट्ठाणे, कम्मे बले, वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे तेणं नेरइया लाद्धि वीरिएणवि सवीरिया, करणवीरिएण

भावार्थ — गौतम ! ऐसा कहा है कि जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं ॥ १.० ॥ अहो भगवन् ! क्या नरक के जीव वीर्य सहित हैं या वीर्य रहित हैं ? अहो गौतम ! नरकके जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहागया है ! अहो गौतम ! जिन नारकियों को उत्थान, कर्म, बल, वीर्य पुरुषात्कार व पराक्रम हैं वे नारकी लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से भी वीर्य सहित हैं. और जो नारकी उत्थानादि रहित हैं वे लब्धि

दार्थ — उत्थानसहित जा० यावत् व० कहना इसलिये ए० ऐसा वु० कहाजाता है गो० गौतम जी० जीव स० उत्थानसहित जा० यावत् व० कहना ॥ ४ ॥ क० कितना प्रकारका भं० भगवन् आ० आकाश गो० गौतम दु० दोप्रकार का आ०आकाश लो० लोक आकाश अ० अलोक आकाश लो०लोकाकाश में किं० क्या जी०जीव जी० जीवदेश जी० जीवप्रदेश अ० अजीव अ० अजीवदेश अ० अजीव प्रदेश गो० गौतम जी० जीव जी० जीवदेश जी० जीवप्रदेश अ० अजीव अ० अजीवदेश अ० अजीव प्रदेश जे० जो जी०जीव ते० वे नि०निश्चय ए०एकेन्द्रिय वे० वेइन्द्रिय

सूत्र — पज्जवाणं, केवलदंसण पज्जवाणं, उवओगं गच्छइ, "उवओग लक्खणेणं जीवे" सेतेणट्ठे-णं एवं वुच्चइ, गोयमा ! जीवे सउट्ठाणे जाव वत्तव्वं सिया ॥ ४ ॥ कइविहेणं भंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प० तं० लोयागासेय, अलोया-गासेय । लोयागासेणं भंते ! किं जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा; अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि, जीवदेसावि, जीव पदेसावि; अजीवावि, अजीव-

भावार्थ — उपयोग लक्षण वाला जीव कहाता है इससे अहो गौतम ! उत्थानादि सहित जीव आत्म-भाव से चैतन्यपना बताता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! आकाश के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आकाश के दो भेद कहे हैं १. लोकाकाश और २ अलोकाकाश. अहो भगवन् ! लोकाकाश में क्या जीव, जीव के देश, जीव के प्रदेश, व अजीव, अजीव के देश या अजीव के प्रदेश हैं ? अहो गौतम !

शब्दार्थ वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है ॥ १८ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् कि० क्या स० सवीर्य अ० अवीर्य गो० गौतम ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से० वह के० कैसे गो० गौतम जे० जिस ने० नारकी को अ० है उ० उत्थान क० कर्म व० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प०पराक्रम ते०वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स०सवीर्य जे०जो ने०नारकी को न० नहीं है उ०

सूत्र एव वुच्चइ जीवा दुविहा प० तं० सवीरियावि, अवीरियावि ॥ १० ॥ नेरइयाणं भंते किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा नेरइया लाद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरियाय अवीरियाय। सेकेणट्ठेणं?गोयमा! जेसिणं नेरइयाणं आत्थि उट्ठाणे, कम्मे बले, वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे तेणं नेरइया लाद्धि वीरिएणवि सवीरिया, करणवीरिएण

भावार्थ गौतम ! ऐसा कहा है कि जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या नरक के जीव वीर्य सहित हैं या वीर्य रहित हैं ? अहो गौतम ! नरकके जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहागया है ? अहो गौतम ! जिन नारकियों को उत्थान, कर्म, बल, वीर्य पुरुषात्कार व पराक्रम हैं वे नारकी लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से भी वीर्य सहित हैं. और जो नारकी उत्थानादि रहित हैं वे लब्धि

शब्दार्थ नहीं अ० अधर्मास्ति काय का देश अ० अधर्मास्ति काय का प्रदेश अ० काल ॥५॥ अ० अलोकाकाश में भं० भगवन् किं० क्या जी० जीव गो० गौतम नो० नहीं जीव जा० यावत् नो० नहीं अजीव प्रदेश ए० एक

सूत्र पंचाविहा पण्णंता तंजहा धम्मत्थिकाए, नो धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा । अद्धासमए ॥ ५ ॥ अलोयाकासेणं भंते ! किं जीवा पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नो जीवा जाव

भावार्थ और ५. काल. * ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अलोकाकाश में क्या जीव, जीव के देश व प्रदेश वगैरह हैं ? अहो गौतम ! अलोकाकाश में जीव, जीव के देश व प्रदेश यावत् अजीव के प्रदेश नहीं हैं परंतु अगुरुलघुभूत

* अजीव अरूपिके सब मीलकर दश भेद किये हैं; उसमेंसे यहां पांचही ग्रहण किये हैं उसका सबब यह है कि यहां पर आकाश आश्रित पृच्छाहै इससे आकाशास्तिकायाका स्कंध, देश व प्रदेश यह तीन नहीं ग्रहण कियेहैं मात्र धर्मास्तिकाया व अधर्मास्तिकायाके स्कंध व प्रदेश ग्रहण कियेहैं. धर्मास्ति काय व अधर्मास्ति-कायके देश नहीं ग्रहण करनेका सबब यह है कि जब संपूर्ण वस्तुकी विवक्षा की जाती है तब धर्मास्तिकाय ऐसाही कहाजायगा और उसके अंशकी विवक्षा करे तब उसके प्रदेश ही ग्रहण किये जायेंगे. क्योंकि ये दोनों अवस्थित हैं इनकी हानि वृद्धि नहीं होतीहै इससे स्कंध व प्रदेश ग्रहण किये गये हैं और देशका प्रतिषेध कियाहै.

शब्दार्थ क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात से मु० मृषावाद से अ० अदत्तादान मे० मैथुन प० परिग्रह को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ पे० राग दो० द्वेष क० कलह अ० कलंक चडाना पे० चुगली र० रति अ० अरति प० परपरिवाद मा० कपट मि० मिथ्यादर्शन शल्य ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं ॥ १ ॥ भं० भगवन् जी० जीव ल० लघुत्व ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात

सूत्र कहणं भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, आदिन्न, मेहुण, परिग्गह, कोह, माण, माया, लोह, पेज्ज, दोस, कलह, अब्भक्खाण, पेसुन्न, रति, अरति, परपरिवाए, मायामोस, मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ १ ॥ कहणं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?

भावार्थ आठवे उद्देशे के अंत में वीर्य का वर्णन किया है. और जीव वीर्य से भारी होता है इसलिये आगे गुरुत्व का अधिकार चलता है. अहो भगवन् ! अधोगति गमनरूप गुरुत्व किस तरह से जीव प्राप्त करे? अहो गौतम ! १ प्राणातिपात-जीव का अतिपात से, २ मृषावाद-असत्य बोलने से ३ अदत्तादान-चौरी करने से ४ मैथुन से ५. परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान-कलंक चडाने से १४ पैशुन्य-चुगली करने से १५ रति अरति १६ परपरिवाद अन्य का

दार्थ

नहीं अ०अधर्मास्ति काय का देश अ०अधर्मास्ति काय का प्रदेश अ०काल ॥९॥ अ०अलोकाकाश में भं० भगवन् किं० क्या जी० जीव गो० गौतम नो० नहीं जीव जा० यावत् नो० नहीं अजीव प्रदेश ए० एक

सूत्र

पंचविहा पण्णंता तंजहा धम्मात्थिकाए, नो धम्मात्थिकायस्स देसे,धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मात्थिकायस्स देसे, अधम्मात्थिकायस्स पदेसा । अद्धासमए ॥ ५ ॥ अलोयाकासेणं भंते ! किं जीवा पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नो जीवा जाव

भावार्थ

और ९ काल. * ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! अलोकाकाश में क्या जीव, जीव के देश व प्रदेश वगैरह हैं ? अहो गौतम ! अलोकाकाश में जीव, जीव के देश व प्रदेश यावत् अजीव के प्रदेश नहीं हैं परंतु अगुरुलघुभून

---

* अजीव अरूपिके सव मीलकर दश भेद किये हैं; उसमेंसे यहां पांचही ग्रहण किये हैं उसका सवव यह है कि यहां पर आकाश आश्रित पृच्छाहै इससे आकाशास्तिकायाका स्कंध, देश व प्रदेश यह तीन नहीं ग्रहण कियेहैं मात्र धर्मास्तिकाया व अधर्मास्तिकायाके स्कंध व प्रदेश ग्रहण कियेहैं. धर्मास्ति काय व अधर्मास्तिकायके देश नहीं ग्रहण करनेका सवव यह है कि जब संपूर्ण वस्तुकी विवक्षा की जाती है तव धर्मास्तिकाय ऐसाही कहाजायगा और उसके अंशकी विवक्षा करे तव उसके प्रदेश ही ग्रहण किये जायेंगे. क्योंकि ये दोनों अवस्थित हैं इनकी हानि वृद्धि नहीं होतीहै इससे स्कंध व प्रदेश ग्रहण किये गये हैं और देशका प्रतिषेध कियाहै.

शब्दार्थ

चार ॥ ३ ॥ स० सातवा उ० आकाशांतर किं० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु
गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु नो० नहीं गुरुलघु अ० अगुरुलघु स० सातवा त० तनुवात
किं० क्या गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु नो० नहीं अगुरुलघु ए० ऐसे स० सातवा
घ० घनवात स० सातवा घ० घनोदधि स० सातवी पु० पृथ्वी उ० आकाशांतर स० सब ज० जैसे स०

मूल

वीईवयंति, पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि ॥ ३ ॥ सत्तमेणं भंते ! उवासंतरे किं गरुए, लहुए, गरुय लहुए, अगुरुय लहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, नो गरुय लहुए, अगरुय लहुए सत्तमेणं भंते ! तणुवाए किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, गरुय लहुए, नो अगरुय लहुए एवं सत्तमे

भावार्थ

नहीं करना ये चार बोल अप्रशस्त कहाये गये हैं ॥ ३ ॥ जीव के गुरुत्व लघुत्व से आकाशादिक का गुरुत्व लघुत्व कहते हैं. १ अहो भगवन् ! सातवी नरककी नीचेका आकाशान्तर क्या गुरुत्व, लघुत्व, गुरुलघुत्व, व अगुरुलघुत्ववाला है ? अहो गौतम ! सातवी नरक का आकाशान्तर गुरु, लघु व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है. अहो भगवन् ! सातवी नरक की नीचे का तनुवात क्या गुरु, लघु, गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! सातवा तनुवात गुरु नहीं है, लघु नहीं है परंतु गुरु लघु है और अगुरु लघु नहीं है. ऐसे ही सातवा घनवात, सातवा घनोदधि, सातवी पृथ्वी व सब आकाशान्तर को सातवा

पदार्थ

पांच का ए० एक अ० अभिलाप ॥ ७ ॥ अ० अधो लोक में भं० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय कि० कितनी फु० स्पर्शी है सा० कुच्छ अधिक अ० अर्ध से फु० स्पर्शे ति० तिर्च्छालोक में अ० असंख्यातवे भा० भाग फु० स्पर्शे ॥ ८ ॥ र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी ध० धर्मास्तिकाय कि० क्या सं० संख्यातवे भा० भाग फु० स्पर्शे अ० असंख्यातवे भाग फु० स्पर्शे सं० ... उ० ऊर्ध्व लोक में दे० देशऊणा अ० अर्ध फु० स्पर्शे

सूत्र

अहो लोएणं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसइ ? गोयमा ! सातिरेगं अद्धं फुसइ ॥ तिरिय लोएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जइ भागं फुसइ ॥ उड्ढलोएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! देसूणं अद्धं फुसइ ॥ ८ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभाणं पुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइ भागं फुसइ, असंखेज्जइ भागं फुसइ संखेज्जे भागं फुसइ, असंखेज्जे भागं फुसइ सव्वं फुसइ ? गोयमा ! णो

भावार्थ

व लोकाकाश का जान ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! अधोलोक में धर्मास्तिकाय कितनी स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! आधे से कुछ अधिक धर्मास्तिकाया का विभाग स्पर्श कर रहा है. क्यों कि सब मीलकर चौदह राजु का लोक है; उस में से अधोलोक सात राजु से कुछ अधिक है. अहो भगवन् ! तिर्च्छालोक में कितनी धर्मास्तिकाय स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! तिर्च्छा लोक में धर्मास्तिकाय असंख्यातवे भाग स्पर्श कर रही है क्यों कि १८०० योजन का तिर्च्छा लोक है. ऊर्ध्व लोक में धर्मास्तिकाय आधे से कुछ कम स्पर्श कर रही है क्यों कि सात राजू से कुछ कम ऊर्ध्व लोक है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ चार ॥ ३ ॥ स० सातवा उ० आकाशांतर कि० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु नो० नहीं गुरुलघु अ० अगुरुलघु स० सातवा त० तनुवात कि० क्या गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु नो० नहीं अगुरुलघु ए० ऐसे स० सातवा घ० घनवात स० सातवा घ० घनोदधि स० सातवी पु० पृथ्वी उ० आकाशांतर स० सर्व ज० जैसे स०

सूत्र वीईवयंति,पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि॥ ३ ॥सत्तमेणं भंते ! उवासंतरे किं गरुए, लहुए, गरुय लहुए, अगुरुय लहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, नो गरुय लहुए, अगरुय लहुए सत्तमेणं भंते ! तणुवाए किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, गरुय लहुए, नो अगरुय लहुए एवं सत्तमे

भावार्थ नहीं करना ये चार बोल अप्रशस्त कहाये गये हैं ॥ ३ ॥ जीव के गुरुत्व लघुत्व से आकाशादिक का गुरुत्व लघुत्व कहते हैं. १ अहो भगवन् ! सातवी नरककी नीचेका आकाशान्तर क्या गुरुत्व, लघुत्व, गुरुलघुत्व, व अगुरुलघुत्ववाला है ? अहो गौतम ! सातवी नरक का आकाशान्तर गुरु, लघु व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है. अहो भगवन् ! सातवी नरक की नीचे का तनुवात क्या गुरु, लघु, गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! सातवा तनुवात गुरु नहीं है, लघु नहीं है परंतु गुरु लघु है और अगुरु लघु नहीं है. ऐसे ही सातवा घनवात, सातवा घनोदधि, सातवी पृथ्वी व सब आकाशान्तर को सातवा

पदार्थ र० रत्नप्रभा त० तैसे घ० घनोदधि घ० घनवात त० तनुवात ॥ १.० ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा का उ० आकाशांतर ध०धर्मास्तिकाया को किं०क्या गो०गौतम सं० संख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे अ०असंख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे गो० गौतम सं० संख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० असंख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं सं०संख्यात भाग को नो०नहीं अ०असंख्यात भाग को नो० नहीं स० सर्व को उ० आकाशान्तर स० सर्व ज० जैसे र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की व० वक्तव्यता भ० कही ए० ऐसे जा०

सूत्र तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि ॥ १० ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइ भागं फुसइ, असंखेज्जइ भागं फुसइ ? पुच्छा गोयमा संखेज्जइ भागं फुसइ, णो असंखेज्जइ भागं फुसइ, णो संखेज्जे,नो असंखेज्जे, नो सव्वं फुसइ. ॥ उवासंतराइं सव्वाइं जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया

भावार्थ जानना. इसी तरह घनवात व तनुवात का जानना ॥ १.० ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तरको धर्मास्तिकाया क्या संख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है यावत् सब स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तर को धर्मास्तिकाय संख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है. जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी का आकाशान्तर कहा वैसे ही सातवी पृथ्वी तक के सब आकाशान्तर का जानना ॥१.१॥

शब्दार्थ कैसे गो० गौतम वे० वैक्रेय ते० तेजस प० प्रत्यय नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु नो० नहीं अ० अगुरुलघु जी० जीव क० कर्म प० प्रत्ययिक नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु नो० नहीं गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु से० वह ते० इसलिये जा० यावत् वे० वैमानिक न० विशेष ना० नाना प्रकार जा० जानना

सूत्र तेयाइं पडुच्च नोगरुया, नोलहुया, गरुयलहुया, नो अगुरुयलहुया । जीवंच कम्मंच पडुच्च नो गुरुया नो लहुया, नो गुरुयलहुया अगुरुयलहुया । सेतेणट्ठेणं, एवं जाव वेमाणिया । नवरं णाणत्तं जाणियव्वं सरीरेहिं ॥ ५ ॥ धम्मत्थिकाए जाव जीव-

भावार्थ गुरु, लघु व अगुरुलघु नहीं हैं. और जीव व कर्म की अपेक्षा से गुरु, लघु, व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरु लघु हैं. इससे नारकी गुरुलघु व अगुरुलघु हैं. नारकी जैसे शेष सब दंडक के जीवों का जानना. मात्र शरीर में भिन्नता रहती है अर्थात् जिनको जितने शरीर होवे उनको उतने शरीर की अपेक्षा ग्रहण करनी असुर कुमारादिक को नारकी जैसे, पृथिव्यादिक में उदारिक तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर है इसलिये यहांपर उदारिक व तेजसकी अपेक्षा ग्रहण करनी वायुकायमें वैक्रेय उदारिक व तेजसकी अपेक्षा ग्रहण करनी. ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय को जानना. मनुष्य को उदारिक वैक्रेय अहारक व तेजस की अपेक्षा से लेना ॥ ५ ॥ धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति काय व जीवास्ति काय में मात्र चौथापद

शब्दार्थ र० रत्नप्रभा त० तैसे घ० घनोदधि घ० घनवात त० तनुवात ॥ १० ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा का उ० आकाशांतर ध०धर्मास्तिकाया को किं०क्या गो०गौतम सं० संख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे अ०असंख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे गो० गौतम सं० संख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० असंख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं सं०संख्यात भाग को नो०नहीं अ०असंख्यात भाग को नो० नहीं स०सर्व को उ० आकाशान्तर स० सर्व ज० जैसे र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की व० वक्तव्यता भ० कही ए० ऐसे जा०

सूत्र तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि ॥ १० ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइ भागं फुसइ, असंखेज्जइ भागं फुसइ ? पुच्छा गोयमा संखेज्जइ भागं फुसइ, णो असंखेज्जइ भागं फुसइ, णो संखेज्जे,नो असंखेज्जे, नो सव्वं फुसइ. ॥ उवासंतराइं सव्वाइं जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया

भावार्थ जानना. इसी तरह घनवात व तनुवात का जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तरको धर्मास्तिकाया क्या संख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है यावत् सब स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तर को धर्मास्तिकाय संख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है. जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी का आकाशान्तर कहा वैसे ही सातवी पृथ्वी तक के सब आकाशान्तर का जानना ॥११॥

शब्दार्थ गु॰ गुरु नो॰ नहीं ल॰ लघु नो॰ नहीं गु॰ गुरुलघु अ॰ अगुरुलघु ॥ ७ ॥ स॰ समय क॰ कार्माण वर्गणा च॰ चौथा प॰ पद में॥ ८ ॥ क॰ कृष्ण ले॰ लेश्या भं॰भगवन् किं॰क्या ग॰ गुरु जा॰यावत् अ॰ अगुरुलघु गो॰ गौतम नो॰ नहीं गुरु नो॰नहींलघु गु॰ गुरु लघु अ॰ अगुरु लघु से॰ वह के॰ कैसे द॰द्रव्य लेश्या प॰ प्रत्यय त॰ तीसरापद भा॰ भाव लेश्या प॰ प्रत्यय च॰ चौथा पद ए॰ ऐसे जा॰यावत् सु॰शुक्ल

सूत्र हुए अगुरुयलहुए ॥७॥ समया कम्माणियचउत्थपएणं, ॥८॥ कण्हलेसाणं भंते ! किं गरुया जाव अगुरुयलहुया ? गोयमा ! नोगुरुया, नोलहुया, गरुयलहुयावि, अगुरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च तइयपएणं, भावलेस्संपडुच्च

भावार्थ नहीं, लघु नहीं गुरुलघु नहीं परंतु अगुरुलघु है ॥ ७ ॥ काल-अमूर्त होने से और कर्मवर्गणा के पुद्गल अगुरु लघु होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या क्या गुरु, लघु यावत् अगुरु लघु है ? गौतम कृष्णलेश्या गुरुनहीं, लघुनहीं, गुरुलघु, व अगुरु लघु है. अहो भगवन् किस कारन से कृष्ण लेश्या गुरु लघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षासे गुरुलघु है क्यों की द्रव्य लेश्या उदारिक शरीर के वर्ण वाली है और उदारीक शरीर गुरुलघु है इसलिये कृष्ण लेश्या द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरु लघु जानना और भाव लेश्या की अपेक्षा से अगुरुलघु जानना क्यों की भाव लेश्या जो जीव परिणाम वह अमूर्त होने से अगुरु लघु होते हैं इसलिये भाव लेश्या की अपेक्षा से कृष्ण लेश्या अगुरुलघु जानना जैसे

दार्थ
सूत्र
भावार्थ

स्पर्शे से० शेप प० प्रतिपेत्र ए० ऐसे अ० अधर्मास्तिकाय ए० ऐसे लो० लोकाकाश ॥२॥ १० ॥ २ ॥

प्पागेवेज्जाणुत्तरासिन्द्धी संखेज्जइ भागं अंतरेसु सेसा असंखेज्जा ॥ बिईयसयस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ १० ॥ बिईयं सययं सम्मत्तं ॥ २ ॥ *

एक मीलकर ८२ हुवे. इन सब के आकाशान्तरको धर्मास्तिकायादिक संख्यातवे भाग से स्पर्शती है. शेप सब के आकाशान्तर को असंख्यातवे भाग से स्पर्शती है. यह दूसरे शतकका दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ १० ॥ २ ॥

× ×

शब्दार्थ

अंतीतकाल अ० अनागत काल स० सर्वपना काल च० चौथा पद में ॥ १० ॥ से० वह भं० भगवन् ला० लघुता अ० अल्पइच्छा अ० मूर्च्छारहित अ० अगृद्धी अ० अप्रतिबन्ध स० श्रमण नि० निग्रंथ को प० प्रशस्त है० हां गो० गौतम ला० लघुता जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ ११ ॥ भं० भगवन् अ० क्रोध रहित अ० मान रहित अ० मायारहित अ० लोभ रहित स० श्रमण नि० निग्रंथ को प० प्रशस्त है० हां गो० गौतम अ० क्रोध रहित जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ १२ ॥ भं० भगवन् कं० कांक्षा प० द्वेष खी० क्षीण स० श्रमण नि० निग्रंथ अं० अंत

सूत्र

सव्वपज्जवा, जहा पोग्गलत्थिकाओ, तीतद्धा अणागयद्धा, सव्वद्धा, चउत्थएणं पएणं ॥ १० ॥ सेणूणं भंते ! लाघवियं, अप्पिच्छा, अमुच्छा, अगेही, अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ? हंता गोयमा ! लाघवियं जाव पसत्थं ॥ ११ ॥ सेणूणं भंते अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं णिग्गंथाणं पसत्थं ? हंता !

भावार्थ

अतीत काल, अनागतकाल व सब काल में चौथा अगुरुलघुत्व जानना ॥ १० ॥ अब गुरुलघुपने का अन्य प्रकार से प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता, अल्प इच्छा, अमूर्च्छा, अगृद्धि, व अप्रतिबन्ध क्या प्रशस्त है ? हां गौतम ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता यावत् अप्रतिबन्ध प्रशस्त है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को क्रोध, मान, माया व लोभ रहितपना क्या श्रेष्ठ है ? हां गौतम ! क्रोध रहितपना यावत् लोभ रहितपना श्रमण निर्ग्रन्थ को श्रेष्ठ है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् !

भ० भगवन्त को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोले प० समर्थ इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक दे० देवानुप्रिय की अं० पास मुं० मुंड भ० होकर अ० गृहवास से अ० अनगारपना प० अंगीकार करने को गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ गो० गौतम इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक व० बहुत सी० शीलव्रत गु० गुणव्रत वे० विरमणव्रत प० प्रत्याख्यान पो० पौषध उ० उपवास अ० यथा प० ग्रहण किये हुवे त० तपकर्म से अ० स्वतः को भा० विचारते व० बहुत वा० वर्ष

सूत्र

भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभूणं भंते ! इसिभद्द पुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्व-इत्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! इसिभद्दपुत्तेणं समणोवासए बहूहिं सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं

भगवान गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! ऋषिभद्र पुत्र नामक श्रमणोपासक क्या आपकी पास मुंडित बनकर गृहस्थपना से साधुपना अंगीकार करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक मुंडित नहीं होवेंगे, परंतु बहुत शीलव्रत, गुण व्रत, विरमण व्रत, पौषधोपवास वगैरह ग्रहण करके तप कर्म से

शब्दार्थ

अतीतकाल अ० अनागत काल स० सर्वपना काल च० चौथा पद में ॥ १० ॥ से० वह भं० भगवन् ला० लघुता अ० अल्पइच्छा अ० मूर्च्छारहित अ० अगृद्धी अ० अप्रतिबन्ध स० श्रमण नि० निग्रंथ को प० प्रशस्त है० हां गो० गौतम ला० लघुता जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ ११ ॥ भं० भगवन् अ० क्रोध रहित अ० मान रहित अ० मायारहित अ० लोभ रहित स० श्रमण नि० निग्रंथ को प० प्रशस्त हं० हां गो० गौतम अ० क्रोध रहित जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ १२ ॥ भं० भगवन् कं० कांक्षा प० द्वेष खी० क्षीण स० श्रमण नि० निग्रंथ अं० अंत

सूत्र

सव्वपज्जवा, जहा पोग्गलत्थिकाओ, तीतद्धा अणागयद्धा, सव्वद्धा, चउत्थएणं पएणं ॥ १० ॥ सेणूणं भंते ! लाघवियं, अप्पिच्छा, अमुच्छा, अगेही, अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ? हंता गोयमा ! लाघवियं जाव पसत्थं ॥ ११ ॥ सेणूणं भंते अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं णिग्गंथाणं पसत्थं ? हंता !

भावार्थ

अतीत काल, अनागतकाल व सब काल में चौथा अगुरुलघुत्व जानना ॥ १० ॥ अब गुरुलघुपने का अन्य प्रकार से प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता, अल्प इच्छा, अमूर्च्छा, अगृद्धि, व अप्रतिबन्ध क्या प्रशस्त है ? हां गौतम ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता यावत् अप्रतिबन्ध प्रशस्त है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को क्रोध, मान, माया व लोभ रहितपना क्या श्रेष्ठ है ? हां गौतम ! क्रोध रहितपना यावत् लोभ रहितपना श्रमण निर्ग्रन्थ को श्रेष्ठ है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ

अब इ० ऋषिभद्रपुत्र दे० देव दे० देवलोक में से आ० आयुष्यक्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सीझेंगे जा० यावत् अं० अंत का० करेंगे से० वैसे ही भं० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम जा० यावत् अ० आत्माको भा० विचारते वि० विचरते हैं ॥१२॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर अ० अन्यदा कदापि अ० आलंभिका न० नगरी में से सं० शंखवन चे० उद्यान में से प० नीकलकर बा० बाहिर ज० जनपद वि० विहार वि० विचरने लगे ॥१३॥

सूत्र

भाविस्सइ ॥११॥ सेणं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवत्ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहवासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिति ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १२ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाथि आलंभियाओ णयरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता, बाहिरिया जणवय विहारं विहरइ ॥ १३ ॥ तेणं कालेणं

वहां से आयुष्य, स्थिति व भव क्षय से कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेंगे यावत् अंत करेंगे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों तप व संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे ॥ १२ ॥ तत्पश्चात् श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उस आलंभिका नगरी के शंखवन उद्यान में से बाहिर नीकलकर जनपद विहार से विचरने लगे ॥ १३ ॥ उस काल उस समय में

शब्दार्थ स०समय में दो०दो आ०आयुष्य प०बांधे इ०इस भवका आयुष्य प०परभवका आयुष्य जं०जिस स०समयमें इ०इस भ०भवका आ०आयुष्य प०बांधे तं०उस स०समयमें प०परभवका आयुष्य प०बांधे जं०जिससमयमें प० परभवका आयुष्य प०बांधे तं०उस समयमें इ०इसभवका आयुष्य प०बांधे इ०इस भ०भवका आ०आयुष्यप०बांधने

सूत्र उयाइं पगरेइ तंजहा—इहभावियाउयंच, परभवियाउयंच, । जं समयं इह भवियाउयं पकरेइ तंसमयं परभवियाउयं पकरेइ, जंसमयं परभवियाउयं पकरेइ तंसमयं इह भवियाउयं पकरेइ; इह भावियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउयं पकरेइ, परभवियाउयस्स पकरणयाए इह भवियाउयं पकरेइ, एवं खलु एगे जीवे एगे समएणं दो आउयाइं पकरेइ तंजहा इह भावियाउयंच, पर भावियाउयंच ॥ से कहमेयं भंते ! एवं ?

भावार्थ इस में विरोध नहीं आता है क्यों की जीव स्वपर्याय समूहात्मक है. जब वह आयुष्य का बंध करता है तब दो भव का आयुष्य बांधता है. इस भव का आयुष्य व परभव का आयुष्य. जिस समय में इस भवका आयुष्य का बंध करता है उस समय में परभव के आयुष्य का बंध करता है; और जिस समय में परभव के आयुष्य का बंध करता है उस समय में इस भव के आयुष्य का बंध करता. है इस भव के आयुष्य का बंध करते परभव के आयुष्य का बंध करता है; और परभव के आयुष्य का बंध करते इस भव के आयुष्य का बंध करता है. इसी प्रकार एकही जीव एक ही समयमें दो भव के आयुष्य का बंध

शब्दार्थ

अत्र इ० ऋषिभद्रपुत्र दे० देव दे० देवलोक में से आ० आयुष्यक्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उत्पन्न होगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सीझेंगे जा० यावत् अं० अंत का० करेंगे से० वैसे ही भं० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम जा० यावत् अ० आत्माको भा० विचारते वि० विचरते हैं ॥१२॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर अ० अन्यदा कदापि अ० आलंभिका न० नगरी मे से सं० शंखवन चे० उद्यान में से प० नीकलकर बा० बाहिर ज० जनपद वि० विहार वि० विचरने लगे ॥१३॥

सूत्र

भाविस्सइ ॥११॥ सेणं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवत्ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहवासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिति ॥ सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १२ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाथि आलंभियाओ णयरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता, बाहिरिया जणवय विहारं विहरइ ॥ १३ ॥ तेणं कालेणं

वहां से आयुष्य, स्थिति व भव क्षय से कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में सीझेंगे यावत् अंत करेंगे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों तप व संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे ॥ १२ ॥ तत्पश्चात् श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उस आलंभिका नगरी के शंखवन उद्यान में से बाहिर नीकलकर जनपद विहार से विचरने लगे ॥ १३ ॥ उस काल उस समय में

शब्दार्थ थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० परभवका आ० आयुष्य जे० जो ते० वे ए० एसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् प० प्ररूपता हूं ए० एक जीव ए० एक समय में ए० एक आ० आयुष्य प० बांधे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १४ ॥ ते० उसकाल ते०

सूत्र इह भवियाउयं पकरेइ । एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेइ तंजहा इह भवियाउयंवा परभवियाउयंवा सेवं भंते भंतेत्ति भगवं गोयम जाव विहरइ ॥ १४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णामं अणगारे, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता, थेरं भगवं एवं वयासी

भावार्थ समय में इस भवका आयुष्य नहीं बांधता है. इस भव का आयुष्य बांधते परभव का आयुष्य नहीं बंधाता है और परभव का आयुष्य बांधते इस भव का आयुष्य नहीं बंधाता है. इसी से एक जीव एक समय में इस भव का अथवा परभव का ऐसे एक भव का आयुष्य बांधता है. अहो भगवन् ! आपने कहा सो यथा तथ्य है ऐसा गौतम स्वामी कहकर विचरने लगे ॥१४॥ उस काल उस समय में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्य कालासवेसितपुत्र नामक अनगार जहां भगवंत श्री महावीर स्वामी के शिष्यथे वहां आये और स्थविर

शब्दार्थ

लोक क० देवलोक में दे० देवों की ठि० स्थिति जा० जानी पा० देखी ॥ १४ ॥ त० तब त० उस पों० पुद्गल प० परिव्राजक को अ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय स० उत्पन्न हुवा अ० है म० मुझे अ० अतिशय ज्ञा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न हुवा दे० देवलोक में दे० देवोंकी ज० जघन्य द० दश हजार वर्ष प० प्ररूपी ते० उस से आगे स० समयाधिक दु० दो समयाधिक जा० यावत् अं० असंख्यात स० समयाधिक उ० उत्कृष्ट द० दश सा० सागरोपम ठि० स्थिति प० प्ररूपी ते० उस से प० आगे वो० विच्छेद दे० देव दे० देवलोक ॥ १५ ॥ ए० ऐसा सं० विचारकर आ० आतापना भू० भूमि से प०पीछा

सूत्र

अण्णाणेणं समुप्पण्णेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठिई जाणइ पासइ ॥ १४ ॥ तएणं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था अत्थिणं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पण्णे देवलोएसुणं देवाणं जहण्णेणं दसवास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता तेणपरं समयाहिया दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया; उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देव लोगाय

भावार्थ

नामक अज्ञान से देवताओं की स्थिति वह जानने लगा ॥१४॥ अब उस पुद्गल परिव्राजक को ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि मुझे अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा है जिस से मैं जानता हूं कि देवताओं की जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति है. इस में एक समय, दो समय यावत् संख्यात, असंख्यात समय की वृद्धि करते उत्कृष्ट दश सागरोपम की स्थिति है. पीछे देवों की स्थिति का क्षय है ॥ १५ ॥ ऐसा

शब्दार्थ नहीं या० जानते हैं सं० संवर का अ० अर्थ न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर वे० विवेक ण० नहीं या० जानते हैं वि० विवेक का अर्थ वि० कायोत्सर्ग वि० कायोत्सर्ग का अर्थ न० नहीं या० जानते हैं त० तब ते० वे थे० स्थविर का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहे जा० जानता हूं अ० आर्य सा० सामायिक जा० जानता हूं अ० आर्य सा० सामायिक का अर्थ जा०

सूत्र अज्जो सामाइयं, जाणामोणं अज्जो सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणामोणं अज्जो विउस्सग्गस्स अट्ठं। तएणंसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवंते एवं वयासी, जइणं अज्जो तुब्भे जाणह सामाइयं, जाणह सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठं; के भे अज्जो सामाइए ? केभे सामाइयस्स अट्ठे, जाव के भे विउसग्गस्स

भावार्थ नोइन्द्रिय का निग्रह रूप संवर तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संवर का अर्थ तुम नहीं जानते हो, विशिष्ट बोध रूप विवेक तुम नहीं जानते हो, त्याग व त्यागादि जो विवेक उस का अर्थ तुम नहीं जानते हो, त्यागरूप कायोत्सर्ग तुम नहीं जानते हो, और कायोत्सर्ग का अर्थ तुम नहीं जानते हो. तब श्री स्थविर भगवंत उन कालासवेसित पुत्र अनगार को ऐसे बोले कि अहो आर्य ! मैं समपरिणाम रूप सामायिक जानता हूं. कर्मका अनुपादान व निर्जरा रूप सामायिक का अर्थ मैं जानता हूं यावत् कायोत्सर्ग व कायोत्सर्ग का अर्थ मैं जानता हूं-तब कालासवेसित पुत्र नामक अनगार उन स्थविर भगवंत को

अ० अभिलाप से ज० जैसे सि० शिवका तं० वैसे ही जा० यावत् क० कैसे ए० यह म० मानाजावे ए० ऐसे सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगई भ० भगवान गो० गौतम त० तैसे भि० भिक्षाचरी केलिये त० तैसे ब०बहु म० मनुष्यों का स० शब्द नि० सुना त० तैसे स० सब मा० कहना जा० यावत् अ० मैं पु० पुनः गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं ए० ऐसा भा० बोलता हूं ए०

आलंभियाए णयरीए एवं एएणं अभिलावेणं जहा सिवस्स तंचेव जाव से कहमेयं मण्णे एवं ? सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया ॥ भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्दं निसामेइ तहेव सव्वं भाणियव्वं जाव अहं पुण गोयमा! एव माइक्खामि एवं भासामि जाव परूवेमि देवलोएसुणं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता तेणपरं समयाहिया दुसमियाहिया जाव उक्कोसेणं तेत्तीसं

पीछे स्थिति का क्षय है ॥ १६ ॥ तब आलंभिका नगरी में इस कथन से जैसे शिवराजर्षिका कथन वैसे ही यावत् वह किस तरह है ? उस काल उस समय में स्वामी पधारे, भगवान गौतम स्वामी भिक्षाचरी केलिये नीकले यावत् बहुत मनुष्यों से ऐसा सुनकर भगवंत की पास आये और वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! पुद्गल परिव्राजक जो इस तरह कहता है सो कैसे है ? अहो गौतम ! पुद्गल परिव्राजक का यह कथन मिथ्या है. मैं ऐसा कहता हूं कि देवलोक में देवता की जघन्य दश हजार वर्ष की

शब्दार्थ नहीं या० जानते हैं सं० संवर का अ० अर्थ न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर वे० विवेक ण० नहीं या० जानते हैं वि० विवेक का अर्थ वि० कायोत्सर्ग वि० कायोत्सर्ग का अर्थ न० नहीं या० जानते हैं त० तब ते० वे थे० स्थविर का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहे जा० जानता हूं अ० आर्य सा० सामायिक जा० जानता हूं अ० आर्य सा० सामायिक का अर्थ जा०

सूत्र अज्जो सामाइयं, जाणामोणं अज्जो सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणामोणं अज्जो विउस्सग्गस्स अट्ठं। तएणंसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवंते एवं वयासी, जइणं अज्जो तुब्भे जाणह सामाइयं, जाणह सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठं; के भे अज्जो सामाइए ? केभे सामाइयस्स अट्ठे, जाव के भे विउसग्गस्स

भावार्थ नोइन्द्रिय का निग्रह रूप संवर तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संवर का अर्थ तुम नहीं जानते हो, विशिष्ट बोध रूप विवेक तुम नहीं जानते हो, त्याग व त्यागादि जो विवेक उस का अर्थ तुम नहीं जानते हो, त्यागरूप कायोत्सर्ग तुम नहीं जानते हो, और कायोत्सर्ग का अर्थ तुम नहीं जानते हो. तब श्री स्थविर भगवंत उन कालासवेसित पुत्र अनगार को ऐसे बोले कि अहो आर्य ! मैं समपरिणाम रूप सामायिक जानता हूं. कर्मका अनुपादान व निर्जरा रूप सामायिक का अर्थ मैं जानता हूं यावत् कायोत्सर्ग व कायोत्सर्ग का अर्थ मैं जानता हूं-तब कालासवेसित पुत्र नामक अनगार उन स्थविर भगवंत को

सब दुःख प० रहित ण० विशेष ति० त्रिदंड कुं० कुंडिका जा० यावत् धा० धातु रक्त व० वस्त्र प० पहिना हुवा प० पतित वि० विभंग ज्ञान आ० आलंभिका ण० नगरी की म० बीच में से णि० नीकलकर जा० यावत् उ० ईशान कौन में अ० जाकर तिं० त्रिदंड कुं० कुंडिका ज० जैसे खं० स्कंदक प०प्रव्राजित से० शेष ज० जैसे सि० शिव जा० यावत् अ० अव्याबाध सो० सुख अ० अनुभवते हैं सा० शाश्वत सि० सिद्ध से० वैसे ही भं० भगवन् ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

दुक्खप्पहीणे णवरं तिदंडकुंडियं जाव धाउरत्तवत्थ परिहिए परिवडियविभंगे, आलंभियं णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता, तिदंडं कुंडियंच जहा खंदओ जाव पव्वइओ सेसं जहा सिवस्स जाव अव्वावाहं सोक्ख मणुभवंति सासयंसिद्धा ॥ सेवं भंते भंते त्ति ॥ एगारस सयस्स दुवालसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ १२ ॥ एगारसमं सयं सम्मत्तं ॥ ११ ॥ *

परिव्राजक का कथन असत्य है ऐसा सुनकर उन को संकल्प विकल्प होने लगा और इस तरह करते उस का विभंग ज्ञान नष्ट होगया. फीर शिवराजर्षि तरह श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आया धर्मोपदेश सुना, त्रिदंड, कुंड वगैरह डालकर ईशान कौन में जाकर स्कंदक संन्यासी जैसे प्रव्राजित हुवा. शेष सब शिवराजर्षि जैसे कहना यावत् सब कर्मों का क्षय करके सिझे, बुझे यावत् सब दुःखों से रहित हुए और अनुत्तर प्रधान मोक्ष का सुख अनुभवने लगे. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं यह अग्यारहवा शतक का बारहवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ ११ ॥ १२ ॥ यह अग्यारहवा शतक समाप्त हुवा ॥ ११ ॥

शब्दार्थ एः ऐसा वः कहा आः आत्मा णेः हमारे में साः सामायिक आः आत्मा णेः हमारे में साः सामायिक का अर्थ जाः यावत् विः कायोत्सर्ग आ अर्थ तः तब सेः वह काः कालासवेसित पुत्र अः अनगार थेः स्थविर भः भगवन्त को एः ऐसा वः कहा अः आर्य आः आत्मा साः सामायिक आः आत्मा साः सामायिक का अर्थ जाः यावत् आः आत्मा विः कायोत्सर्ग काः अर्थ अः छोडकर को

सूत्र रहासंजमे ? कालासा ! गरहासंजमे नो अगरहा संजमे; गरहानियणं सव्वं दोसं पविणेइ सव्वं बालियं परिण्णाए । एवं खु णे आया संजमे उवहिए भवइ, एवंखु णेआया संजमे उवचिए भवइ, एवंखु णेआया संजमे उवट्ठिए भवइ । एत्थणं से कालासवेसियपुत्त अणगारे संबुद्धे थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसइत्ता एवं वयासी—एएसिणं भंते ! पयाणं पुव्विं अण्णाणयाए, असवणयाए, अबोहियाए,

भावार्थ त्सर्ग का अर्थ कहा है. तब वह कालासवेशित पुत्र नामक अनागर बोले की अहो आर्य ! यदि तुमारे मत में आत्मा सामायिक, आत्मा सामायिक का अर्थ यावत् आत्मा कायोत्सर्ग का अर्थ है तो क्रोध, मान, माया व लोभ का त्याग कर के उसकी निन्दा क्यों करते हो ? क्यों कि निन्दा, गर्हा यह प्रद्वेष का कारन है; और क्रोधादि त्यागने वाला सामायिक वृत्तिवाला निन्दा गर्हा नहीं कर सकता है तब स्थविर भगवंतने उत्तर दीया कि अहो कालासवेशित पुत्र ! अवश्य पापकी गर्हा करते संयम होता है. तब पुनः वह कालासवेशित अनगार बोले कि अहो भगवन् ! क्या गर्हा संयम है या अगर्हा संयम है ?

पदार्थ

ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत अ० जाने हुवे जी० जीवाजीव जा० यावत् वि० रहते थे ॥ २ ॥ त० उस सं० शंख स० श्रमणोपासक को उ० उत्पला ना० नामकी भा० भार्या हो०थी सु० सुकुमार जा० यावत् सु० सुरूपा स० श्रमणोपासिका अ० जाने हुवे जी० जीवा जीव जा० यावत् वि० रहती थी ॥ ३ ॥ त० उस सा० श्रावस्ती न० नगरी में पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक प० रहता था अ० ऋद्धिवंत ॥४॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपा

परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगय जीवाजीवा जाव विहरंति ॥ २ ॥ तस्सणं संखस्स समणोवासगस्स उप्पलाणामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरइ ॥ ३ ॥ तत्थणं सावत्थीए णयरीए पोक्खलीणामं समणोवासए परिवसइ, अड्ढे अभिगय जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ ५ ॥ तएणं ते सम-

भावार्थ

स्वरूप जाननेवाले थे ॥ २ ॥ उस शंख श्रमणोपासक को उत्पला नामक भार्या थी. वह सुकुमार यावत् सुरूपा व जीवाजीव का स्वरूप जानती हुई विचरती थी ॥ ३ ॥ उस श्रावस्ती नगरी में ऋद्धिवंत यावत् जीवाजीव का स्वरूप जाननेवाला पुष्कली नामक श्रावक रहता था ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में स्वामी पधारे, परिषदा वंदने को आई यावत् पर्युपासना करने लगी ॥ ५ ॥ उस समय में उस श्रमणोपासकने

शब्दार्थ स्थविर भ० भगवन्त को व वंदनकर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० कहा ए० यह भं० भगवन् प०पद में पु०पुहिले अ०जाना नहीं अ० सुना नहीं अ० बोध नहीं अ०ज्ञान नहीं अ० देखा नहीं अ० सुना नहीं अ० स्मरण नहीं किया अ० विज्ञान हुवा नहीं अ०गुरुगम नहीं हुवा अ० व्यवच्छेद नहीं हुवा भं० सुखाव बोध नहीं अ० धारा नहीं ए० यह अर्थ णो० श्रद्धे नहीं नो० प्रतित कीये नहीं णो० रुचे नहीं इ०, अब भं० भगवन्

सूत्र सद्दहाहि अज्जो, पत्तियाहि अज्जो, रोएहि अज्जो, सेजहेयं अम्हे वयामो ॥ तएणं से कालासवेसिय पुत्ते अणगारे थेरे भगवंतो वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता एवं वयासी—इच्छामिणं भंते ! तुब्भे अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-महव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ? । अहासुहं देवाणुप्पिया

भावार्थ इन पदों का इस प्रकार के अर्थ का ज्ञान नहीं था, मैंने उस का स्वरूप नहीं पहिचानाथा, मैंने पहिले किसी की पास ऐसा श्रवण नहीं कियाथा. मुझे ऐसी प्रतीति नहीं हुईथी; मुझे ऐसा साक्षात्कार नहीं हुवा था, मुझे ऐसा गुरुगम नहीं हुवा था, मेरा संदेह इस प्रकार किसीने नहीं मीटाया था, मुझे ऐसा सुखाव बोध नही हुआ था, मैंने इस प्रकार ऐसा धारण नहीं किया था, मैं इस प्रकार इसे नहीं श्रद्धता था, मुझे ऐसा रुचिकर नहीं हुआ था, अब अहो भगवन् ! इन का अर्थ मैंने जाना है, ज्ञान से बोधित हुवा है, सम्यक्त्व से विस्तृत अर्थावबोधवाला हुआ है विशेषकर धारनाकिया है, सर्वथा प्रकार से संदेह दूर हुआ है,

सूत्र

परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगय जीवाजीवा जाव विहरंति ॥ २ ॥ तस्सणं संखस्स समणोवासगस्स उप्पलाणामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरइ ॥ ३ ॥ तत्थणं सावत्थीए णयरीए पोक्खलीणामं समणोवासए परिवसइ, अड्ढे अभिगय जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ ५ ॥ तएणं ते सम-

भावार्थ

ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत अ० जाने हुवे जी० जीवाजीव जा० यावत् वि० रहते थे ॥ २ ॥ त० उस सं० शंख स० श्रमणोपासक को उ० उत्पला ना० नामकी भा० भार्या हो०थी सु० सुकुमार जा० यावत् सु० सुरुपा स० श्रमणोपासिका अ० जाने हुवे जी० जीवा जीव जा० यावत् वि० रहती थी ॥ ३ ॥ त० उस सा० श्रावस्ती न० नगरी में पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक प० रहता था अ० ऋद्धिवंत ॥४॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिपदा प० पर्युपा

स्वरूप जाननेवाले थे ॥ २ ॥ उस शंख श्रमणोपासक को उत्पला नामक भार्या थी. वह सुकुमार यावत् सुरूपा व जीवाजीव का स्वरूप जानती हुई विचरती थी ॥ ३ ॥ उस श्रावस्ती नगरी में ऋद्धिवंत यावत् जीवाजीव का स्वरूप जाननेवाला पुष्कली नामक श्रावक रहता था ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में स्वामी पधारे, परिषदा वंदने को आई यावत् पर्युपासना करने लगी ॥ ५ ॥ उस समय में उस श्रमणोपासकने

शब्दार्थ

प० प्रतिबंध क० करो त० तब का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवान् को वं० वंदनकर न० नमस्कारकर चा० चार महाव्रत ध० धर्म से पं० पांच महाव्रत स० प्रतिक्रमण सहित ध० धर्म उ० अंगीकार कर वि० विचरता है का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार व० बहुत व० वर्ष सा० साधु पर्याय पा० पाली पा० पालकर ज० जिसलिये की० करे न० नग्न भाव मुं० मुंडभाव अ० स्नान करना नहीं अ० दंत प्रक्षालन नहीं अ० छत्र नहीं अ० उपानह रहित भू० भूमि शैय्या फ० पाटशैय्या क० काष्ट शैय्या के० केशलोच वं० ब्रह्मचर्य प० परगृह प्रवेश ल० प्राप्त अ० अप्राप्त उ० ऊंच नीच गा० इन्द्रिय समुह वा० वावीस प० परिषह उ० उपसर्ग अ० सहन त० इसलिये आ० आरा-

सूत्र

यागं पाउणइ पाउणइत्ता, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे, अन्हाणयं, अदंत धुवणयं, अच्छत्तयं, अणोवाहणयं, भूमिसेज्जा फलहसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोओ, वंभ चेरवासो, परघरप्पवेसो, लद्धावलद्धी, उच्चावया गामकंटया, वावीसं परीसहोवसग्गा

अर्थ

विर भगवन्त बोले की ज्यों तुम्हारा आत्मा को सुख होवे वैसे करो. ऐसा कार्य में प्रतिबंध [विलंब] मत करो. तब कालासवेशित पुत्र अनगारने स्थविर भगवंत को वंदना नमस्कार किया; वंदना नमस्कार करके चार महाव्रत रूप धर्म में से प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत रूप धर्म अंगीकार कर विचरने लगे. तब उन कालासवेशित पुत्र अनगारने बहुत कालतक साधु की पर्याय का पालन किया. और पालन करके जिस लिये नग्नपना, मुंड भाव, स्नान नहीं करना, दंत प्रक्षालन नहीं करना, छत्र व उपानह रहित

शब्दार्थ स० श्रमण भ० भगवन्त म०महावीर की अं० पास से को० कोष्टक चे० उद्यान में से प० नीकलकर जे० जहां सा० श्रावस्ती ण० नगरी ते० तहां प० नीकला ग० जाने को ॥ ८ ॥ त० तब से० उस शं० शंख श्रमणोपासकने ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम दे० देवानुप्रिय वि० बहुत अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० तैयार करो त० तब अ० हम तं० उस वि० बहुत अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम को आ० आस्वादते वि० विशेष आस्वादते प० विभाग

सूत्र अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमंति २ त्ता जेणेव सावत्थी णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ ८ ॥ तएणं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी तुज्झेणं देवाणुप्पिया! विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, तएणं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आस्सादेमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परि-

भावार्थ महावीर स्वामी की पास धर्म सुनकर, अवधारकर हृष्ट तुष्ट हुवे, और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार किया. फीर कितनेक प्रश्नों पूछकर उन के अर्थ ग्रहण किये. फीर अपने स्थान से उठकर कोष्टक उद्यानमेंसे नीकलकर श्रावस्ती नगरी में जाने को नीकले ॥ ८ ॥ उस समय में शंख श्रमणोपासक उन अन्य श्रमणोपासकों को ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! तुम विपुल अशन, पान, खादिम व स्वादिम तैयार करो, और अपन सब उस अशनादि को आस्वादेंगे, विस्वादेंगे, परस्पर विभाग करेंगे और

शब्दार्थ से० शेठ का जा० यावत् अ० अप्रत्याख्यान क्रिया क० करे से० वह के० कैसे भं० भगवन् गो० गौतम अ० अविरति प० प्रत्यय ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है से० शेठ त० दरिद्री जा० यावत् क० करे ॥ १६ ॥ अ० आधाकर्मी भुं० भोगवता स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ किं० क्या बं० बांधे प० करे चि० चिने उ० उपचिने गो० गौतम आ० आधाकर्मी भुं० भोगवता आ० आयुष्य व० वर्जकर स० सात क० कर्म प्रकृति सि० सिथिल बं० बंधन ब० बंधीहुइ ध० दृढ बं० बंधन ब० बंधीहुई प० करे जा० यावत्

सूत्र किवणस्सय, खत्तियस्सय समाचेव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ? हंता गोयमा! सेट्ठियस्स जाव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ। से केणट्ठेणं भंते? गोयमा! अविरइं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ सेट्ठिस्सय तणु जाव कज्जइ ॥ १६ ॥ आहाकम्मंणं भुंजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधइ, किंपकरेइ, किंचिणाइ, किंउवचिणाइ? गोयमा! आहाकम्मं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ सिढिलबंधण

भावार्थ अविरति प्रत्ययिक सब को एक सरिखी क्रिया लगती है. क्यों की इच्छा सब को एक सरिखी है; और उस की निवृत्ति किसी को नहीं हुइ है इसलिये अहो गौतम! ऐसा कहा गया है कि श्रेष्ठी यावत् क्षत्रिय को एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला साधु निर्ग्रंथ क्या बांधे, [प्रकृति की अपेक्षा से] क्या करे, [स्थिति की अपेक्षा से] क्या चिने

शब्दार्थ पृथक् मा॰ माला प॰ वर्णक वि॰ विलेपन णि॰ दूरकिया स॰ शस्त्र मु॰ मुशल ए॰ एक अ॰ आद्वतीय द॰ दर्भ संथारेपर अ॰ रहा हुआ प॰ पाक्षिक पौषध प॰ पालते वि॰ विचरने को त्ति॰ ऐसा क॰ करके ए॰ ऐसा सं॰ विचारकर जे॰ जहां सा॰ श्रावस्ती ण॰ नगरी जे॰ जहां स॰ स्वगृह जे॰ जहां उ॰ उत्पला स॰ श्रमणोपासिका त॰ वहां उ॰ जाकर उ॰ उत्पला स॰ श्रमणोपासिकाको आ॰ पूछकर जे॰ जहां पो॰ पौषध शाला त॰ वहां उ॰ जाकर पो॰ पौषध शाला में अ॰ प्रवेशकर पो॰ पौषध शाला को प॰ प्रमार्जकर

सूत्र गय माला वण्णग विलेवणस्स णिक्खित्तसत्थ मुसलस्स एगस्स अविातियस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता, जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव सए गिहे जेणेव उप्पला समणोवासिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ २ त्ता, जेणेव पोसह सालाए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं अणुप्पविसइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता,

भावार्थ करके, माला, वर्ण, विलेपन को दूर करके, शस्त्र मूशलादि दूर करके, एक दर्भ संथारावाला पाक्षिक पौषध करते हुवे विचरना मुझे श्रेय है. ऐसा विचार करके श्रावस्ती नगरी में अपने गृह में उत्पला नामक अपनी भार्या की पास आया, और उन को पूछकर पोषधशाला में गया. वहां पर पौषधशाला पूंजकर, उच्चार

शब्दार्थ अनुकंपाकरे जे० जिन जी० जीव के श० शरीर का आहार आ० करे ते० उन जी० जीवों की ण०नहीं अ० अनुकंपाकरे से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है आ० आधाकर्मी भुं० भोगवता आ० आयुष्य व० वर्जकर स० सात क० कर्म प्रकृति जा० यावत् अ० परिभ्रमण करे ॥ १७ ॥ फा०प्रासुक ए०शुद्ध भं० भगवन् भुं०भोगवता किं०क्या वं०बांधे जा० यावत् उ०उपचिने गो० गौतम फा० प्रासुक भुं० भोगवता आ० आयुष्य वर्ज कर स० सात क० कर्म प्रकृति ध० दृढ वं० बंधन व० बंधी हुइ

सूत्र सरीराइं आहारमाहारेइ तेविजीवे नावकंखइ, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, आहाकम्मंणं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ जाव अणुपरियट्टइ॥ १७॥फासुएसणिज्जं भंते ! भुंजमाणे किंबंधइ ? जाव उवचिणाइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे आउय वज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ धाणिय बंधन बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धा

भावार्थ वह आहार करता है उन जीवों की भी अनुकम्पा रहित होता है. इस लिये अहो गौतम ! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला आयुष्य कर्म छोडकर अन्य सात कर्मों का दृढ बंधन करता है यावत् चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण करता है ॥ १७ ॥ प्रासुक एषणिक वस्तु भोगनेवाला श्रमण निर्ग्रंथ किस का बंध करे यावत् क्या उपचिने ? अहो गौतम ! प्रासुक एषणिक वस्तु भोगनेवाला श्रमण निर्ग्रंथ आयुष्य कर्म

शब्दार्थ पृथक् मा० माला व० वर्णक वि० विलेपन णि० दूरकिया स० शस्त्र मु० मुशल ए० एक अ० अद्वितीय द० दर्भ संथारेपर अ० रहा हुवा प० पाक्षिक पौषध प० पालते वि० विचरने को त्ति० ऐसा क० करके ए० ऐसा सं० विचारकर जे० जहां सा० श्रावस्ती ण० नगरी जे० जहां स० स्वगृह जे० जहां उ० उत्पला स० श्रमणोपासिका ते० वहां उ० जाकर उ० उत्पला स० श्रमणोपासिकाको आ० पूछकर जे० जहां पो० पौषध शाला ते० वहां उ० जाकर पो० पौषध शाला में अ० प्रवेशकर पो० पौषध शाला को प० प्रमार्जकर

सूत्र गय माला वण्णग विलेवणस्स णिक्खित्तसत्थ मुसलस्स एगस्स अबितियस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता, जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव सए गिहे जेणेव उप्पला समणोवासिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ २ त्ता, जेणेव पोसह सालाए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं अणुप्पविसइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता,

भावार्थ करके, माला, वर्ण, विलेपन को दूर करके, शस्त्र मूशलादि दूर करके, एक दर्भ संथारावाला पाक्षिक पौषध करते हुवे विचरना मुझे श्रेय है. ऐसा विचार करके श्रावस्ती नगरी में अपने गृह में उत्पला नामक अपनी भार्या की पास आया, और उन को पूछकर पोषधशाला में गया. वहां पर पौषधशाला पूंजकर, उच्चार

-शब्दार्थ जाव क स० शरीर का आ० आहार करे ते० उन जी० जीवों को अ० अनुकंपाकरे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् वी० तीरे ॥ १८ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० अस्थिर प० परिवर्तन होवे नो० नहीं थि० स्थिर प० परिवर्तन होवे अ० अस्थिर भ० भेदावे नो० नहीं थि० स्थिर भ० भेदावे सा० शाश्वत वा०

सूत्र

अवकंखइ जाव तसकायं अवकंखइ, जेसिंपियणं जीवाणं सरीराइं आहारेइ तेवि जीवे अवकंखइ, से तेणट्ठेणं जाव वीइवयइ ॥ १८ ॥ सेणूणं भंते ! अथिरे पलोट्टइ नोथिरे पलोट्टइ, अथिरे भज्जइ नो थिरे भज्जइ, सासए बालए बालियत्तं

भावार्थ आहार भोगनेवाला सात कर्मका शिथिल बंधन करता है और आयुष्य कर्म क्वचित् बांधता है व क्वचित् नहीं बांधता है यावत संसार का व्यतिक्रम करता है ॥ १८ ॥ इस में संसार का उल्लंघन कहा वह संसार का अस्थिरपना से होवे इस लिये स्थिर अस्थिर का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! क्या अस्थिर पदार्थ पलटते हैं और स्थिर नहीं पलटते है ? अस्थिर का भेद होता है और स्थिर का भेद नहीं होता है ? बालक शाश्वत, बालक पना अशाश्वत, पंडित शाश्वत व पंडितपना क्या अशाश्वत है ? हां गौतम ! अस्थिर द्रव्य जो लोहादि उनका परावर्तन होता है, (आध्यात्म चिन्तवन में) अस्थिर कर्म जीव प्रदेश से समय २ में चले. स्थिर सो पत्थारादि चले नहीं आध्यात्म चिन्ता में जीव का उपयोग स्थिर तृणादि

शब्दार्थ

किया सं० शंख श्रमणोपासक णो० नहीं ह० शीघ्र आ० आया तं० इसलिये से० श्रेय दे० देवानुप्रिय अ० हमको सं० शंख स० श्रमणोपासक को स० बोलाने को ॥ १२ ॥ त० फीर पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोला अ० बैठो तु० तुम दे० देवानुप्रिय सु० समाधि से वी० विश्राम से अ० मैं सं० शंख स० श्रमणोपासक को स० बोलाताहूं ए० ऐसा क० करके ते० उन स० श्रमणोपासकों की अं० पास से प० नीकलकर सा० श्रावस्ती ण० नगरी के म० मध्यबीच में जे० जहां सं० शंख स० श्रमणोपासक का गि० गृह त० वहां उ० आकर सं० शंख स० श्रमणोपासक

सूत्र

असण पाणखाइमसाइमे उवक्खडाविए, तं संखे समणोवासए णो हव्वमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संखं समाणोवासगं सद्दावेत्तए ॥ १२ ॥ तएणं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी अत्थहणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुनिच्छुया वीसत्था अहंणं संखं समणोवासगं सद्दामित्ति कट्टु, तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सावत्थीं णयरीं मज्झं मज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुप्प-

भावार्थ

उन को बोलाना चाहिये ॥ १२ ॥ उस समय में पुष्कली श्रमणोपासक बोला कि अहो देवानुप्रिय ! तुम शांति से बैठो; मैं शंख श्रमणोपासक को बोलाने के लिये जाता हूं. ऐसा कहकर वह श्रमणोपासक की

शब्दार्थ

अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं च० चलते को अ० नहीं चला जा० यावत् नि० निर्जरते को अ० नहीं निर्जरा दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित न० नहीं सा० मीले क० कैसे दो० दो प० परमाणु पुद्गल को न० नहीं है सि० स्निग्धपना त० इसलिये दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित न० नहीं सा० मीले ति० तीन प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित सा० मीले क० कैसे ति० तीन प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित सा० मीले ति० तीन प० परमाणु पुद्गल

सूत्र

अण्णउत्थियाणं भंते ! एव माइक्खंति जाव परूवंति एवं खलु चलमाणे अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे आनिज्जिण्णे दो परमाणु पोग्गला एगयओ न साहणंति, कम्हा दो, परमाणु पोग्गलाणं णत्थि सिणेहकाए तम्हा दो परमाणु पोग्गला एगयओ न साहणंति ॥ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति, कम्हा तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ

भावार्थ

नववे उद्देशे में अस्थिर कर्म का विषय कहा. उस में कुतीर्थिक प्रवर्तते हैं सो आगे बतलाते हैं. कितनेक अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जो कर्म जीव प्रदेश से चलने लगे उसे चले कहना नहीं यावत् निर्जरने लगे उसे निर्जरे कहना नहीं; क्यों की वर्तमान काल को अतीत काल नहीं कह सकते हैं; परंतु जो संपूर्ण पुद्गल चलित हुवे होवे तब चले और निर्जरित हुवे होवे तब निर्जरे कहना. और वे ऐसा कहते हैं कि दो परमाणु पुद्गल एकत्रित स्कन्धपने मीले नहीं क्यों कि मीलने में जो स्निग्धपने का

शब्दार्थ स० श्रमणोपासिका को ए० ऐसा व० बोला क० कहां दे० देवानुप्रिये सं० शंख स० श्रमणोपासक त० तब सा० वह उ० उत्पला स० श्रमणोपासिका पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोली दे० देवानुप्रिय सं० शंख स० श्रमणोपासक पो० पौषधशाला में पो० पौषध सहित व० ब्रह्मचारी जा० जावत् वि० रहे है ॥ १८ ॥ त० तब से० वह पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक जे० जहां पो० पौषध शाला जे० जहां सं० शंख स० श्रमणोपासक ते० तहां उ० आकर ग० गमनागमन का प० प्रतिक्रमण

सूत्र वयासी कहिणं देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए ? तएणं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसह सालाए पोसहिए बंभचारी जाव विहरइ ॥ १५ ॥ तएणं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसालाए जेणेव संखे समणोवासए तेणेव

श्रमणोपासिका को पूछा कि अहो देवानुप्रिये ! शंख श्रमणोपासक कहां है ? उत्पला श्रमणोपासिका पोखली श्रमणोपासक को बोली कि अहो देवानुप्रिय ! शंख श्रमणोपासक पौषधशाला में ब्रह्मचर्य सहित यावत् पौषध करते हुवे विचरते हैं ॥ १८ ॥ फीर पोखली श्रमणोपासक पौषधशाला में शंख श्रमणोपासक की पास गया. वहां जाकर गमनागमन का प्रतिक्रमण किया और शंख श्रमणोपासक को वंदना नमस्कार

शब्दार्थ सदाकाल उ० चयपामे अ० अपचयपामे पु० पहिले भा० भाषा भा० भाषा भा० बोलाती हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोली हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोलीहुइ भा० भाषा किं० क्या भा० भाषक को भा० भाषा अ० अभाषक भा० भाषा णो० नहीं सा० वह भा० भाषक को भा० भाषा पु० पाहिली कि० क्रिया दु० दुःख क० करते कि० क्रिया अ० अदुःख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीत हुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दुःख

सूत्र पोग्गला एगयओ साहणंति, एगयओ साहणित्ता दुक्खत्ताए कज्जंति, दुक्खेवियणं सेसासए सयासमियं उवचिज्जइयं अवचिज्जइयं, पुर्व्वि भासा भासा, भासिज्जमाणी भासाअभासा, भासासमयंवितिक्कंतंचणं भासिया भासा, जा सा पुर्व्वि भासा भासाभासिज्जमाणी भासा अभासा, भासा समयवितिक्कंतंचणं भासियाभासा सा किं भासओ

र्थ दुःख रूप (कर्म पने) परिणमते हैं. कर्म अनादि होने से वह दुःख भी शाश्वत होता है. वह सदैव सम्यक् प्रकार से चय उपचय–हानि वृद्धि को प्राप्त होता रहता है. और भी वे अन्य तीर्थिक कहते हैं कि पाहिले बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना; परंतु वर्तमान में बोलाती हुई भाषा को भाषा कहना नहीं, भाषा का समय आतिक्रान्त हुवे पीछे भाषा को भाषा कहना. और जब बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना, बोलाती हुई भाषा को अभाषा कहना, और भाषा समय व्यतीत हुए पीछे

शब्दार्थ

पौषध सहित जा० यावत् वि० विचरने को तं० इस मे छं० इच्छानुसार दे० देवानुप्रिय तु० तुम वि० बहुत अ० अन्न आ० अस्वादते जा० यावत् वि० विचरो ॥१७॥ त० तब से० वह पो० पुष्कली स० श्रमणोपासक सं० शंख स० श्रमणोपासक की अं० पास से पो० पौषध शाला में से प० नीकल कर सा० श्रावस्ती ण० नगरी की म० वीचमें जे० जहां ते० व स० श्रमणोपासक ते० वहां उ० आकर ते० उन स० श्रमणोपासकों को ए० ऐसा व० बोला दे० देवानुप्रिय सं० शंख स० श्रमणोपासक पो० पौषध शाला में पो० पौषध सहित जा० यावत् वि० विचरता है तं० इसलिये छं० इच्छानुसार

सूत्र

विहरित्तए। कप्पइ मे पोसहसालाए पोसाहियस्स जाव विहरित्तए, तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे विउलं असणं ४ आस्सादेमाणा जाव विहरह ॥ १७ ॥ तएणं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सावत्थि णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, ते समणोवासए एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे. समणोवासए पोसहसालाए

भावार्थ

अशनादिक का आस्वादन करते हुवे विचरो ॥ १७ ॥ फीर वह पोखली श्रावक शंख श्रावकी पास से पौषधशाला में से नीकलकर श्रावस्ती नगरी की बीच में होकर उन श्रमणोपासकों की पास आया और बोला कि अहो देवानुप्रिय! शंख श्रमणोपासक पौषधशाला में पौषध करते हुवे विचरते हैं इस से तुम

शब्दार्थ सदाकाल उ० चयपामे अ० अपचयपामे पु० पहिले भा० भाषा भा० भाषा भा० बोलाती हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोली हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोलीहुइ भा० भाषा किं० क्या भा० भाषक को भा० भाषा अ० अभाषक भा० भाषा णो० नहीं सा० वह भा० भाषक को भा० भाषा पु० पहिली कि० क्रिया दु० दुःख क० करते कि० क्रिया अ० अदुःख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीत हुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दुःख

सूत्र पोग्गला एगयओ साहणंति, एगयओ साहणित्ता दुक्खत्ताए कज्जंति, दुक्खेवियणं सेसासए सयासमियं उवचिज्जइयं अवचिज्जइयं, पुव्विं भासा भासा, भासिज्जमाणी भासाअभासा, भासासमयंवितिक्कंतंचणं भासिया भासा, जा सा पुव्वं भासा भासाभासिज्जमाणी भासा अभासा, भासा समयवितिक्कंतंचणं भासियाभासा सा किं भासओ

भावार्थ दुःख रूप (कर्म पने) परिणमते हैं. कर्म अनादि होने से वह दुःख भी शाश्वत होता है. वह सदैव सम्यक् प्रकार से चय उपचय-हानि वृद्धि को प्राप्त होता रहता है. और भी वे अन्य तीर्थिक कहते हैं कि पहिले बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना; परंतु वर्तमान में बोलाती हुई भाषा को भाषा कहना नहीं, भाषा का समय अतिक्रान्त हुवे पीछे भाषा को भाषा कहना. और जब बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना, बोलाती हुई भाषा को अभाषा कहना, और भाषा समय व्यतीत हुए पीछे

शब्दार्थ म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर त० वहां से प० पीछे आते प० पाक्षिक पो० पौषध पा० पारने को त्ति० ऐसा क० करके ए० ऐसा स० विचार कर क० कल जा० यावत् ज० ज्वलंत पो० पौषध शाला में से प० निकलकर सु० शुद्ध पा० प्रवेश करने योग म० मंगलिक व० वस्त्र प० श्रेष्ट प० पहिना हुवा सा० अपने गि० गृह मे प० नीकल कर पा० पाद विहार से सा० श्रावस्ती ण० नगरी के म० बिच में जा० यावत प० पर्युपासना की अ० अभिगम न० नहीं है ॥ २० ॥ त० तब

सूत्र नमंसित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सुद्धाप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जाव पज्जुवासइ, "अभिगमोनत्थि" ॥ २० ॥ तएणं ते समणोवासगा कल्लं पादु जाव जलंते ण्हाया कय जाव सरीरा सएहिं

भावार्थ श्रय है. ऐसा विचारकर प्रभात होते पौषधशालामें से नीकलकर, शुद्ध परिषदामें प्रवेशन करने योग्य मंगलीक श्रेष्ट वस्त्र धारण कर स्वगृह से नीकलकर, पग से चलते हुए श्रावस्ती नगरी की बीच में होकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आये, और वंदना नमस्कार कर यावत् पर्युपासना करने लगे. इन में अभिगम नहीं है क्यों कि वह पौषध व्रत में था ॥ २० ॥ अन्य सब श्रमणोपासकने प्रभात होते स्नान

शब्दार्थ जी० जीव स० सत्व वे० वेदना वे० वेदते हैं व० कहना से० वह क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा गो० गौतम ज० जो अ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् वे० वेदना वे० वेदते हैं व० कहना ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं गो० गौतम ए० ऐसा आ०

सूत्र

दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणभूयजीवसत्ता वेदणं वेदंतित्ति वत्तव्वं सिया ॥ से कहमेयं भंते एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव वेदणं वेदंति वत्तव्वंसिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवं आहंसु. अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि ४, एवं खलु चलमाणे चालिए जाव निज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे दो-परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति, कम्हा दो परमाणु पोग्गला एगयओ

भावार्थ भूत है वह क्रिया क्या करण आश्री दुःख के हेतु भूत है या अकरण आश्री दुःख के हेतु भूत है ? वह अकरण आश्री दुःख के हेतु भूत है परंतु करण आश्री दुःख के हेतु भूत नहीं है. ऐसे ही नहीं किया हुवा दुःख, नहीं स्पर्शा हुवा दुःख, व अक्रियमाण किया हुवा दुःख किये विना प्राण भूत, जीव व सत्व वेदना वेदते हैं. अहो भगवन् ! ऐसा जो अन्य तीर्थिक कहते हैं वह किस तरह से है ? अहो गौतम ! जो अन्य तीर्थिक उक्त बातों को कहते हैं वे मिथ्या बोलते हैं अर्थात् उन का कथन मिथ्या है. परंतु अहो गौतम ! मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि चलने लगे कर्म पुद्गलों को चले कहना, यावत्

नमंसित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सुद्धाप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं णयरिं मज्झं मज्झेणं जाव पज्जुवासइ, " अभिगमोनत्थि " ॥ २० ॥ तएणं ते समणोवासगा कल्लं पादु जाव जलंते ण्हाया कय जाव सरीरा सएहिं

शब्दार्थ — म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर त० वहां से प० पीछे आते प० पाक्षिक पो० पौषध पा० पारने को त्ति० ऐसा क० करके ए० ऐसा स० विचार कर क० कल जा० यावत् ज० ज्वलंत पो० पौषध शाला में से प० निकलकर सु० शुद्ध पा० प्रवेश करने योग म० मंगलिक व० वस्त्र प० श्रेष्ट प० पहिना हुवा मा० अपने गि० गृह मे प० नीकल कर पा० पाद विहार से सा० श्रावस्ती ण० नगरी के म० बिच में जा० यावत प० पर्युपासना की अ० अभिगम न० नहीं है ॥ २० ॥ त० तब

भावार्थ — श्रेय है. ऐसा विचारकर प्रभात होते पौषधशालामें से नीकलकर, शुद्ध परिषदामें प्रवेशन करने योग्य मंगलीक श्रेष्ट वस्त्र धारण कर स्वगृह से नीकलकर, पग से चलते हुए श्रावस्ती नगरी की बीच में होकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आये, और वंदना नमस्कार कर यावत् पर्युपासना करने लगे. इन में अभिगम नहीं है क्यों कि वह पौषध व्रत में था ॥ २० ॥ अन्य सब श्रमणोपासकने प्रभात होते स्नान

शब्दार्थ सा० मीलते हैं क० कैसे दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित सा० मीलते हैं दो० दो प० परमाणु

सूत्र कज्जमाणा तिण्णि परमाणु पोग्गला भवंति एवं जाव चत्तारि पंचपरमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति साहणित्ता खंधत्ताए कज्जंति, खंधेवियणं से असासए सयासमियं उवाचिज्जइय अवाचिज्जइय ॥ पुव्विं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासा समय वीतिक्कंतंचणं भासिया भासा अभासा. जासा पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा,भासा समय वीतिक्कंतंचणं भासिया भासा अभासा। सा किं भासओ भासा अभासओ भासा ? भासओणं भासा सा, णो खलु सा अभासओ भासा ।

भावार्थ स्कन्ध जानना. वह स्कन्ध अशाश्वत, सर्वदा सम्यक् प्रकार से चय उपचय (हानि वृद्धि) को पाता है. अब तीसरा प्रश्न का उत्तर देते हैं. पहिले बोलाई हुई प्रथम की भाषा सो अभाषा होती है, बोलाती हुइ भाषा को ही भाषा कह सकते हैं. क्यों की उस समय शब्द अर्थ की उत्पत्ति होती है. भाषा समय व्यतीत हुवे पीछे भाषा अभाषा होजाती है, अब जो पहिले बोलाइ हुइ भाषा भाषा नहीं है, बोलाती हुइ भाषा भाषा है व भाषा समय व्यतीत हुवे पीछे भाषा को अभाषा कही जाती है ऐसा कहागया है तो क्या वह भाषा भाषक को होती है या अभाषक को होती है ? वह भाषा भाषक को ही होती है परंतु अभाषक को नहीं होती है. अब चौथा प्रश्न का उत्तर देते हैं. पहिले की हुई क्रिया दुःख

पदार्थ

श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर जे० जहां सं० शंख स० श्रमणो-पासक ते० वहां उ० आकर सं० शंख स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले तु० तुमने दे० देवानु प्रिय हि० कल अ० हमको अ० स्वतःने ए० ऐसा व० कहाथा तु० तुम दे० देवानुप्रिय वि० विपुल अ० अशन जा० यावत् वि० विचरेंगे त० तब तु० तुम पो० पौषध शाला में जा० यावत् वि० विचरने का त० इससे सु० अच्छा तु० तुमको दे० देवानुप्रिय अ० हमको ही० नींदते हो ॥ २३ ॥ अ० आर्यो

सूत्र

समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणो-वासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता संखं समणोवासगं एवं वयासी तुब्भेणं देवाणु-प्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणाचेव एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं जाव विहरिस्सामो तएणं तुम्मं पोसहसालाए जाव विहरिए तं सुट्ठुणं तुम्मं देवाणु-प्पिया ! अम्हे हीलेसि ॥ २३ ॥ अज्जोत्ति ! समणे भगवं महावीरे ते समणो-

भगवंत को वंदना नमस्कार कर शंख श्रमणोपासक को ऐसा बोले अहो देवानुप्रिय ! तुमने स्वतःने हम को ऐसा कहा था कि विपुल अशनादि बनाकर उस को भोगते हुवे यावत् पाक्षिक पौषध अंगीकार करते हुवे विचरेंगे, फीर तुम पौषधशाला में यावत् पौषध कर विचरने लगे तो अहो देवानुप्रिय ! तुम हमारी हीलना करो यह क्या अच्छा है? ॥२३॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उन श्रमणोपासकों को ऐसा बोले कि

शब्दार्थ सं० संपरायिकी प० करते इ० ईर्यापथिक प० करे ए० ऐसे ए० एक जीव ए० एक स० समय में दो० दा कि० क्रिया पं० करे तं० वह ज० जैसे इ० ईर्यापथिक सं० संपरायिकी. से० वह क० कैसे भं० भगवन् गो० गौतम ज० जो अ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् जे० जो ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० करता हूं ए०

सूत्र तंसमयं संपराइयं पकरेइ, जंसमयं संपराइयं पकरेइ तंसमयं इरियावहियं पकरेइ । इरियावहिय पकरणयाए संपराइयं पकरेइ, संपराइयं पकरणयाए इरियावहियं पकरेइ। एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेइ तंजहा-इरियावहियंच संपराइयच ॥ सेकहमेयं भंते एवं ? गोयमा ! जण्णंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति तं चेव जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु ॥ अहं पुण गोयमा ! एव माइ-

भावार्थ क्रिया करता है उस समय में ईर्यापथिक क्रिया करता है सांपरायिक करते क्रिया ईर्यापथिक क्रिया करता है और ईर्यापथिक क्रिया करते सांपरायिक क्रिया करता है इस तरह ईर्यापथिक व साम्परायिक ऐसी दोनों क्रियाओं जीव एक समय में करता है तब अहो भगवन् ! यह कथन किस प्रकार है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिक जो इस प्रकार कहते है वह मिथ्या है, अर्थात् उसका कथन मिथ्या है. मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक समय में जीव एक ही क्रिया करता है क्यों कि ईर्यापथिक क्रिया

श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर जे० जहां सं० शंख स० श्रमणो-पासक ते० वहां उ० आकर सं० शंख स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले तु० तुमने दे० देवानुप्रिय हि० कल अ० हमको अ० स्वतःने ए० ऐसा व० कहाथा तु० तुम दे० देवानुप्रिय वि० विपुल अ० अशन जा० यावत् वि० विचरेंगे त० तब तु० तुम पो० पौपध शाला में जा० यावत् वि० विचरने का त० इससे सु० अच्छा तु० तुमको दे० देवानुप्रिय अ० हमको ही० नींदते हो ॥ २३ ॥ अ० आर्यो

समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणो-वासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता संखं समणोवासगं एवं वयासी तुब्भेणं देवाणु-प्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणाचेव एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं जाव विहरिस्सामो तएणं तुम्मं पोसहसालाए जाव विहरिए तं सुठुणं तुम्मं देवाणु-प्पिया ! अम्हे हीलेसि ॥ २३ ॥ अज्जोत्ति ! समणे भगवं महावीरे ते समणो-

भगवंत को वंदना नमस्कार कर शंख श्रमणोपासक को ऐसा बोले अहो देवानुप्रिय ! तुमने स्वतःने हम को ऐसा कहा था कि विपुल अशनादि बनाकर उस को भोगते हुवे यावत् पाक्षिक पौपध अंगीकार करते हुवे विचरेंगे, फीर तुम पौपधशाला में यावत् पौपध कर विचरने लगे तो अहो देवानुप्रिय ! तुम हमारी हीलना करो यह क्या अच्छा है ॥२३॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उन श्रमणोपासकों को ऐसा बोले कि

शब्दार्थ ऐसा व० चवने का प० पद भा० कहना नि० निर्विशेष स० वह ए० ऐसा भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं. ॥ १ ॥ १० ॥ × ×

सूत्र त्ता, एवं वक्कंती पयं भाणियव्वं निरवसेसं । सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढमसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १० ॥ पढमसयं सम्मत्तं. ॥१॥ ✻

भावार्थ अहो भगवन् ! जो आपने फरमाया वह वैसा ही है, अन्यथा नहीं है. ऐसा कह कर तप व संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे. यह प्रथम शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुवा. और प्रथम शतक भी समाप्त हुवा ॥ १ ॥ १० ॥ १ ॥ + +

शब्दार्थ श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर जे० जहां सं० शंख स० श्रमणो-पासक ते० वहां उ० आकर सं० शंख स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले तु० तुमने दे० देवानु प्रिय हि० कल अ० हमको अ० स्वतःने ए० ऐसा व० कहाथा तु० तुम दे० देवानुप्रिय वि० विपुल अ० अशन जा० यावत् वि० विचरेंगे त० तब तु० तुम पो० पौषध शाला में जा० यावत् वि० विचरने का त० इससे सु० अच्छा तु० तुमको दे० देवानुप्रिय अ० हमको ही० नींदते हो ॥ २३ ॥ अ० आर्यो

सूत्र

समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणो-वासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता संखं समणोवासगं एवं वयासी तुब्भेणं देवाणु-प्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणाचेव एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं जाव विहरिस्सामो तएणं तुम्मं पोसहसालाए जाव विहरिए तं सुठुणं तुम्मं देवाणु-प्पिया ! अम्हे हीलसि ॥ २३ ॥ अज्जोत्ति ! समणे भगवं महावीरे ते समणो-

भगवंत को वंदना नमस्कार कर शंख श्रमणोपासक को ऐसा बोले अहो देवानुप्रिय ! तुमने स्वतःने हम को ऐसा कहा था कि विपुल अशनादि बनाकर उस को भोगते हुवे यावत् पाक्षिक पौषध अंगीकार करते हुवे विचरेंगे, फीर तुम पौषधशाला में यावत् पौषध कर विचरने लगे तो अहो देवानुप्रिय ! तुम हमारी हीलना करो यह क्या अच्छा है? ॥२३॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उन श्रमणोपासकों को ऐसा बोले कि

शब्दार्थ रा० राजगृह न०.नगर हो० था व० वर्णनयुक्त सा० स्वामी स० पधारे प० परिषदा नि० निर्गता ध० धर्म क० कहा प० परिषदा प० प्रतिगता ॥ * ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले जे० जो बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय जी० जीव ए० उनका आ० श्वास पा० विशेष श्वास उ० उश्वास नि० निश्वास जा० जानते हैं पा० देखते हैं जे० जो पु० पृथ्वी काया जा० यावत् व० वनस्पति काया ए० एकेन्द्रिय जीव

सूत्र नगरे होत्था, वण्णओ सामीसमोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥ * ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी जे इमे भंते ! बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचेंदिया जीवा एएसिणं आणामंवा, पाणामंवा, उस्सासंवा, निस्सासंवा जाणामो, पासामो जे इमे पुढविकाइया

भावार्थ महावीर स्वामी सब परिवार सहित पधारे, यथोचित अनुज्ञा ग्रहण कर बगीचे में विराजित हुए, परिषदा वंदन को आई, और श्री भगवन्त से धर्म सुनकर पीछीगइ ॥÷॥ उस काल उस समय में भगवन्त श्री महावीर स्वामीके ज्येष्ठ अंतेवासी श्री गौतम स्वामी सेवा पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय इन जीवों का श्वासोश्वास मैं जानता हूं यावत् देखता हूं. अर्थात् त्रस जीव का श्वासोश्वास मैं जानता हूं व देखता हूं, परंतु पृथ्वीकायादिक जीव की आगमादि

सुदक्खु जागरिका से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है ति० ती। प्रकार की जा० जागरिका प० प्ररूपी बु० बुद्ध जागरिका अ० अबुद्ध जागरिका सु० सुदक्ष जागरिका गो० गौतम जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं० दर्शन के धारक ज० जैसे खं० खंदक जा० यावत् स० सर्वज्ञ स० सर्व दर्शी बु० बुद्ध बु० बुद्ध जागरिका जा० जागते हैं जे० जो अ० अनगार भ० भगवन्त इ० ईर्या समिति वाले भा० भाषा समिति वाले जा० यावत् गु० गुप्त बं० ब्रह्मचारी अ० अबुद्ध अ० अबुद्ध जागरिका जा० जागते हैं जे० जो स० श्रमणोपासक अ० जाने जी० जीवाजीव जा०

सूत्र

भंते ! एवं वुच्चइ तिविहा जागरिया प० तं० बुद्ध जागरिया, अबुद्ध जागरिया, सुदक्खु जागरिया ? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्णणाण दंसणधरा जहा खंदए जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी एएणं बुद्धा बुद्धजागरियं जागरंति। जेइमे अणगारा भगवंता इरियासमिया भासासमिया जाव गुत्तबंभयारी, एएणं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति। जे इमे समणोवासगा अभिगय जीवाजीवा जाव विहरंति; एएणं सुदक्खु जागरियं

प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! जागरणा के तीन भेद कहे हैं. बुद्ध जागरणा, अबुद्ध जागरणा व सुदर्शन जागरणा. अब जो उत्पन्न ज्ञान दर्शन धारन करनेवाले वगैरह जैसा स्कंदक में कहा वैसे गुणों-वाले यावत् सर्वज्ञ सर्व दर्शी जो अरिहंत होते हैं वे बुद्ध जागरणा जागते हैं. जो अनगार ईर्या समिति

शब्दार्थ

रा० राजगृह न० नगर हो० था व० वर्णनयुक्त सा० स्वामी स० पधारे प० परिषदा नि० निर्गता ध० धर्म क० कहा प० परिषदा प० प्रतिगता ॥ * ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले जे० जो बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय जी० जीव ए० उनका आ० श्वास पा० विशेष श्वास उ० उश्वास नि० निश्वास जा० जानते हैं पा० देखते हैं जे० जो पु० पृथ्वी काया जा० यावत् व० वनस्पति काया ए० एकेन्द्रिय जीव

सूत्र

नगरे होत्था, वण्णओ सामीसमोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥ * ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी जे इमे भंते ! बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचेंदिया जीवा एएसिणं आणामंवा, पाणामंवा, उस्सासंवा, निस्सासंवा जाणामो, पासामो जे इमे पुढविकाइया

भावार्थ

महावीर स्वामी सब परिवार सहित पधारे, यथोचित अनुज्ञा ग्रहण कर बगीचे में विराजित हुए, परिषदा वंदन को आई, और श्री भगवन्त से धर्म सुनकर पीछीगइ ॥÷॥ उस काल उस समय में भगवन्त श्री महावीर स्वामीके ज्येष्ट अंतेवासी श्री गौतम स्वामी सेवा पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय इन जीवों का श्वासोश्वास मैं जानता हूं यावत् देखता हूं, अर्थात् त्रस जीव का श्वासोश्वास मैं जानता हूं व देखता हूं, परंतु पृथ्वीकायादिक जीव की आगमादि

शब्दार्थ

स० सात क० कर्म प्रकृति शि० शिथिल बं० बंधन ब० बंधीहुइ ए० ऐसे ज० जैसे प० प्रथम शतक में अ० असवृत अनगारका ए० ऐसे लो० लोभवश से अ० परिभ्रमण करे ॥ २६ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास से ए० इस अर्थ सो० सुनकर णि० अवधार कर भी० डरेहुवे सं० संसार भयसे उद्विग्न स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कार कर जे० जहां सं० शंख स० श्रमणोपासक ते० तहां उ० जावे उ० जाकर

मूत्र

परियट्टइ ॥ माणवसट्टेणं भंते ! एवं चेव, एवं मायावसट्टेवि, एवं लोभवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ ॥ २६ ॥ तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया तत्था तसिया संसारभयुव्विग्गा, समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता, जेणेव संखे समणोवासए तेणेव

भावार्थ

शंख ! क्रोध में वर्तनेवाला जीव आयुष्य छोडकर सात कर्म प्रकृतियों यदि शिथिल बंधवाली होवे तो दृढ बंधवाली करता है वगैरह यावत् प्रथम शतक में असंवृति साधु के अधिकार में जैसा कहा वैसा सब जानना यावत् अनंत संसार परिभ्रमण करे वहां तक जानना जैसे क्रोध का कहा वैसे ही मान माया व लोभ का कहना ॥ २६ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास ऐसा सुनकर वे श्रमणोपासक भय भीत हुए, त्रसित हुए, मन में उद्वेग उत्पन्न हुवा संसार भय से उद्वेग पामे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को

शब्दार्थ द्रव्य खि० क्षेत्र से अ० असंख्यात प० प्रदेश अ० अवगाही का० काल से अ० अन्य ठि० स्थिति वाले भा० भाव से व० वर्णवाले गं० गंधवाले र० रसवाले फा० स्पर्श वाले आ० श्वासलेते हैं पा० विशेप श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं जा० यदि भा० भाव से व० वर्ण वाले आ० श्वासलेते हैं पा० विशेप श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं ना० तो किं० क्या ए० एक व० वर्ण वाले आ० श्वासलेते हैं पा० विशेप श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं आ० आहार

सूत्र मंतिवा उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा ? गोयमा ! दव्वओणं अणंत पएसियाइं दव्वाइं, खित्तओ असंखेज्ज पएसोगाढाइं, कालओ अण्णयरठिईयाइं, भावओ, वण्णमंताइ. गंधमंताइं, रसमंताइं, फासमंताइं आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा. जाइं भावओ वण्णमंताइं आणमंतिवा पणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा, ताइं किं एग वण्णाइंआणमंतिवा, पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा, आहारगमो

भावार्थ समय की स्थिति वाले पुद्गल और भाव से वर्णवाले, गंधवाले. रसवाले व स्पर्श वाले द्रव्य का श्वासोश्वास लेते हैं. अहो भगवन् ! जब भाव से वर्ण सहित पुद्गल श्वासोश्वासपने ग्रहण करते हैं तो क्या वह एक वर्ण वाले पुद्गल का श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! इनका सब अधिकार पन्नवणा सूत्र के अठावीस में पद में कहा है वैसा व्याघात आश्री तीन चार पांच व छ दिशा के पुद्गल ग्रहण करे वहांतक कहना. अहो भगवन्

शब्दार्थ करेगा से० वह भं भगवन् ॥ १२ ॥ १ ॥ × × +

ते० उस काल ते० उस समय में को० कौशाम्बी ण० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त चं० चंद्रोत्तरायनक चे० चैत्य व० वर्णन युक्त ॥ १ ॥ त० उस को० कौशाम्बी न० नगरी में सहस्रानीक र० राजा का पो० पौत्र स० शतानीक र० राजा का पुत्र चे० चेडा राजा का न० दौहित्र मि० मृगावती दे० देवी

मूत्र

दुवालसम सयस्सय पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ १ ॥ + × ×

तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबीणामं णयरी होत्था वण्णओ, चंदोत्तरायणे चेइए वण्णओ, ॥ १ ॥ तत्थणं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मिगावतीए देवीए अत्तए, जयंतीए समणोवासियाए

भावार्थ समर्थ है ? अहो गौतम ! जैसे ऋषिभद्रपुत्र का कहा वैसे ही यहां जानना यावत् अंत करेंगे. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ १ ॥ ०

प्रथम उद्देशे में श्रावकका कथन किया दूसरे उद्देशे में श्राविका का कथन करते हैं. उस काल उस समय में कौशाम्बी नामक नगरी थी उस की ईशान कौन में चंद्रोत्तरायण नामक चैत्य था उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना ॥ १ ॥ उस कौशाम्बी नगरी में सहस्रानिक राजा का पौत्र, शतानिक राजा का पुत्र, चेटक राजा का दौहित्र, मृगावती रानी का आत्मज, और जयंति श्रमणोपासिका का भतीजा उदायन

शब्दार्थ निश्वासले वा० वायुकाय वा० वायु कायमें अ० अनेक स० शतसहस्र वार उ० मरे उ० मरकर त० तहां भु० वारंवार प० उत्पन्नहोवे हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० उत्पन्नहोवे से० वह भं० भगवन् किं० क्या पु० स्पर्शी उ० मरे अ०नहीं स्पर्शी उ० मरे गो० गौतम पु० स्पर्शी उ० मरे नो० नहीं अ० अस्पर्शी उ० मरे सें० वह भं० भगवन् किं० क्या स० सशरीरी नि० निकले अ० अशरीरी नि० निकले गो० गौतम सि० कदाचित् स० सशरीरी नि० निकले सि० कदाचित् अ० अशरीरी

सूत्र उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा ? हंता गोयमा ! वाउयाएणं जाव निस्ससंति वा ॥ वाउयाएणं भंते ! वाउयाएचेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइ उद्दाइत्ता, तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइ ? हंता गोयमा ! जाव पच्चायाइ. से भंते!किंपुट्ठे उद्दाइ अपुट्ठे उद्दाइ?गोयमा! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ। से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ, असरीरी निक्खमइ? गोयमा ! सियससरीरी निक्खमइ, सियअसरीरी निक्खमइ । से केणट्ठेणं भंते !

भावार्थ लक्षवार मरकर वहांही वारंवार उत्पन्न होते हैं ? हां गौतम वायुकायके जीव अनेक वार मरकर वहांही वारंवार उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! वायुकाय के जीव क्या स्पर्श कर मरते हैं या विना स्पर्शे मरते हैं ? अहो गौतम ! सोपक्रम की अपेक्षा से स्पर्शा हुवा मरे .परंतु नहीं स्पर्शा हुवा मरे नहीं. अहो भगवन् ! क्या वे स्वकलेवर से शरीर सहित नीकलतेहैं या शरीर रहित नीकलते हैं ? अहो गौतम! कथंचित् शरीर सहित

म० शतानीक राजा की भ० भगिनी उ० उदायन राजा की पि० भुआ मि० मृगावती देवी की नणंद वे० वैशालीक की सा०श्राविका अ०आरिहंत पु०पूर्वशय्यांतर देनेवाली ज०जयन्ती स०श्रमणोपासीका हो०थी सु० सुकुमार जा० यावत् सु० सुरूप आ० जाने जा० यावत् वि० विचरती है ॥ ४ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में सा० स्वामी अ० पधारे जा० यावत् प० परिपदा प० पर्युपासना करे ॥ ५ ॥ त० तब

पिउत्था, मिगावतीए देवीए णणंदा, वेसालीसावयाणं अरहंताणं पुव्वसिज्जातरी जयंती समणोवासिया होत्था सुकुमाल जाव सुरूवा, अभिगय जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ ५ ॥ तएणं

उदायन राजा की पितृस्वसा (भूआ) मृगावती देवी की ननंद, वैशालिक श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की श्राविका, अरिहंत भगवंत को प्रथम शय्या देनेवाली जयंती नामक श्राविका थी. वह सुरूपा यावत् जीवाजीव का स्वरूप जानती हुई विचरती थी ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे यावत् परिपदा पर्युपासना करने लगी ॥ ५ ॥ उस समय में उदायन राजा इस बात

१. शय्या का दान देने में जयंति श्राविका प्रसिद्ध है. जो नये साधु आते थे वे प्रथम शय्या की याचना करते थे इस से पूर्व शय्यातरा कही है.

शब्दार्थ नहीं नि० रूंधाहुवा भ० भव विस्तार णो० नहीं प० क्षय हुवा सं० संसार णो० नहीं प० क्षयहुवा सं० संसार वे० वेदनीय नो० नहीं वो० तूटा सं० संसार नो० नहीं वो० तूटा सं० संसार वे० वेदनीय नो० नहीं नि० पूर्णहुवा अ० अर्थ नो० नहीं पूर्णहुवा अ० अर्थ कार्य पु० फीर इ० यहां ह० शीघ्र आ० आवे हं० हां गो० गौतम म० प्रासुक भोजी नि० निर्ग्रंथ जा० यावत् पु० फीर इ० यहां ह० शीघ्र आ० आवे से० उनको भं० भगवन् किं० क्या व० कहना गो० गौतम पा० प्राण भू० भूत जी० जीव

सूत्र निरुद्धभवपवंचे, णो पहीण संसारे, णो पहीण संसार वेयणिज्जे, नो वोच्छिण्ण संसारे, णो वोच्छिण्ण संसार वेयणिज्जे; णो निट्ठियट्ठे, नोनिट्ठियट्ठ कराणिज्जे, पुणरवि इच्छत्तं हव्वमागच्छइ? हंता गोयमा! मडाईणं नियंठे जाव पुणरवि इच्छत्तं हव्वमागच्छइ। सेणं भंते! किं वत्तव्वंसिया? गोयमा! पाणेतिवत्तव्वं सिया, भूतेति वत्तव्वंसिया जीवेतिवत्तव्वंसिया, सत्तेति वत्तव्वंसिया, विन्नुयात्ति वत्तव्वंसिया, वेदेति वत्तव्वं-

भावार्थ प्रासुक भोजन करनेवाला परंतु भव व भव विस्तार का निरूंधन नहीं करनेवाला, चतुर्गति गमन रूप संसार का क्षय नहीं करनेवाला, संसार में वेदनीय कर्म का क्षय नहीं करनेवाला, चतुर्गतिक गमनानुबंध व वेदनीय कर्म को नहीं तोडनेवाला, अपूर्ण प्रयोजनवाला और अपूर्ण प्रयोजन की करणीवाला निर्ग्रंथ क्या पुनः इस मनुष्यादि गति में आता है? हां गौतम! प्रासुक भोजन करनेवाला परंतु भव व भव के

शब्दार्थ म० शतानीक राजा की भ० भगिनी उ० उदायन राजा की पि० भुआ मि० मृगावती देवी की नणंद वे० वैशालीक की सा०श्राविका अ०अरिहंत पु०पूर्वशय्यांतर देनेवाली ज०जयन्ती स०श्रमणोपासीका हो०थी सु० सुकुमार जा० यावत् सु० सुरूप आ० जाने जा० यावत् वि० विचरती है ॥ ४ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में सा० स्वामी अ० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपासना करे ॥ ५ ॥ त० तब

सूत्र पिउत्था, मिगावतीए देवीए णणंदा, वेसालीसावयाणं अरहंताणं पुव्वसिज्जातरी जयंती समणोवासिया होत्था सुकुमाल जाव सुरूवा, अभिगय जाव विहरइ ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ ५ ॥ तएणं

भावार्थ उदायन राजा की पितृस्वसा (भूआ) मृगावती देवी की ननंद, वैशालिक श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की श्राविका, अरिहंत भगवंत को प्रथम शय्या देनेवाली जयंती नामक श्राविका थी. वह सुरूपा यावत् जीवाजीव का स्वरूप जानती हुई विचरती थी ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे यावत् परिषदा पर्युपासना करने लगी ॥ ५ ॥ उस समय में उदायन राजा इस बात

१. शय्या का दान देने में जयंति श्राविका प्रसिद्ध है. जो नये साधु आते थे वे प्रथम शय्या की याचना करते थे इस से पूर्व शय्यातरा कही है.

शब्दार्थ कहना ज० जिसलिये स० असक्त सु० शुभाशुभ क० कर्म से त० इसलिये स०सत्व व० कहना ज० जिसलिये ति० तिक्त क० कटुक क० कषाय अं० अंबट म० मधुर र० रस जा० जाने त० इसलिये वि० विज्ञ व० कहना वे० वेदता है सु०सुख दु० दुःख० त०इसलिये वे० वेदक व० कहना से० वह ते० इसलिये जा० यावत् पा० प्राण जा० यावत् वे० वेद व० कहना ॥ ३ ॥ म० मृतभोजी नि० निर्ग्रंथ नि० रुंधा भ० भव नि० रुंधा भ० भवविस्तार जा० यावत् नि० पूरा हुवा अ० अर्थ कार्य नो० नहीं पु० फीर इ० यहां

सूत्र सिया, जम्हा सत्ते सुहासुहेहिं कम्मेहिं तम्हा सत्तेवि वत्तव्वं सिया, जम्हा तित्त, कटु, कसाय अंबिल महुरे रसे जाणइ, तम्हा विण्णुतत्ति वत्तव्वं सिया, वेदेइय सुहदुक्खं तम्हा वेदेतिवत्तव्वं सिया, से तेणट्ठेणं जाव पाणेति वत्तव्वंसिया, जाव वेदेतिवत्तव्वंसिया ॥ ३ ॥ मडाईणं भंते ! नियंठे निरुद्ध भवे निरुद्ध भवपवंचे जाव निट्ठियट्ठ क-

भावार्थ अर्थात् प्राणों को धारन करता है और उपयोग लक्षणरूप जीवत्व वैसे ही आयुः कर्म को अनुभवता है इस लिये जीव कहाता है. वह शुभाशुभ कर्म में आसक्त अथवा समर्थ है इसलिये सत्व कहाता है, वह तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट व मधुर रस को जानता है इस लिये विज्ञ कहाता है और सुख दुःख को वेदनेवाला होने से वेदक कहाता है.. इस लिये अहो गौतम ! वह प्राण यावत् वेदक कहाता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! प्रासुक भोजन करनेवाले वैसे ही भव व भव प्रपंच का निरुंधन करनेवाले यावत् निष्ठि-

त० तब सा० वह मि० मृगावती देवी ज० जयंती स० श्रमणोपासिका को ज० जैसे दे० देवानंदा जा० यावत् प० सुने ॥ ७ ॥ त० तब सा० वह मि० मृगावती देवी को० कौटुम्बिक पुरुषों को स० बोलाकर खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय ल० लघु कर्ण वाले जु० युक्त जा० यावत् ध० धार्मिक जा० यान प्रवर जु० युक्त उ० तैयार जा० यावत् उ० तैयार करते हैं जा० यावत् प० पीछी देते हैं ॥ ८ ॥ सरल शब्दार्थ

सूत्र

जयंतीए समणोवासियाए जहा देवाणंदा जाव पडिसुणेइ ॥ ७ ॥ तएणं सा मियावई देवी कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्तारोहिया जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठावेह, जाव उवट्ठावेंति जाव पच्चाप्पिणंति ॥ ८ ॥ तएणं सा मियावई देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव अंतेउराओ णिग्गच्छंति २ त्ता

वैसा करने लगी. और मृगावती रानीने भी देवानंदा ब्राह्मणी जैसे सब श्रवण किया ॥ ७ ॥ फीर मृगावती देवीने कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाये और कहा की लघुकर्णवाले व शीघ्रगतिवाले यावत् धार्मिक श्रेष्ठ रथ शीघ्र तैयार करके मुझे मेरी आज्ञा पीछी दो. कौटुम्बिक पुरुषोंने ऐसा किया ॥ ८ ॥ फीर मृगावती रानीने जयंती श्राविका की साथ स्नान किया, कोगले किये, तिलमसादिक किये यावत् शरीर अलंकृत

शब्दार्थ गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वंदना कर न० नमस्कार कर सं० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ ४ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर रा० राजगृह न० नगर से गु० गुणशीलक चे० चैत्य से प० निकले प० निकलकर ब० बाहिर ज० अन्यदेश में वि० विचरने लगे ॥ ५ ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में क० कयंगला ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त ती० उस क० कयंगला न० नगरी की ब० बाहिर उ० ईशान

सूत्र हीणेत्ति वत्तव्वं सिया. सेवं भंतेत्ति. भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ४ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं कयंगला णामं नयरीहोत्था,वण्णओ तीसेणं कयंगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए

भावार्थ और सब दुःख का क्षय करने से सर्व दुःख प्रहीन कहना. अहो भगवन् ! आपने कहा सो सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ ४ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में से नीकल कर अन्य देश में विचरने लगे. ॥ ५ ॥ उसकाल उस समय में कयंगला नामक नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ सूत्र

सूत्र

गए, मियावईवि पडिगया ॥ १२ ॥ तएणं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठा समणं भगवं महावीरं वदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी कहण्णं भंते ! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? जयंती! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं एवं खलु जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति, एवं जहा पढम सए जाव वीईवयंति ॥ १३ ॥ भवसिद्धियत्तणं भंते ! जीवाणं किं सभावओय परिणामओय? जयंती ! सभावओय णो परिणामओय ॥१४॥

भावार्थ

पीछी गई. उदायन राजा पीछा गया और मृगावती रानी भी पीछीगइ ॥ १२ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास से जयंती श्राविका धर्म सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुई और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोलने लगी कि अहो भगवन् ! जीव गुरुत्व कैसे प्राप्त करता है ? अहो जयंती ! प्राणातिपात से यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से जीव गुरुत्व प्राप्त करता है. वगैरह जैसे प्रथम शतक में कहा वैसे ही जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीवों को भवसिद्धिकपना स्वभाव से है या परिणाम से है ? अहो जयंती ! जीवों को भवसिद्धिकपना स्वभाव से है परंतु परिणाम से नहीं है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब भवसिद्धिक जीवों सीझेंगे ? हां जयंती ! सब भवसिद्धिक

१-२ स्वभाव जैसे पुद्गलका मूर्तत्व और परिणाम सो नहीं हुवे का होने जैसे पुरुष की बाल्यावस्था में से तरुणावस्था.

शब्दार्थ — इतिहास पं० पांचवा नि० निगण्टु संग्रह छ० छठा च० चारवेद का सं० सांगोपांग स० रहस्य सहित सा०स्मरण करनेवाला वा०शुद्धकरनेवाला धा०धारक पा०पारगामी स०छअंग स०कापिलीयशास्त्र वि०पंडित सं० गणित शास्त्र सि० अक्षररूप शास्त्र वा० शब्द छं० छंद नि० शब्द उत्पति का जान जो० ज्योतिषी शास्त्र अ० अन्य कोई व० बहुत बं० ब्राह्मण प० परिव्राजक में न० नय में सु० अच्छा निश्चयार्थ का जान हो० था ॥ ७ ॥ त० तहां सा० सावत्थी न० नगरी में पिं० पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक

सूत्र — वेय, अहव्वणवेय, इतिहास पंचमाणं, निघंटुछट्ठाणं, चउण्हं वेयाणं संगोवंगाणं, सरहस्साणं सारए, वारए, धारए, पारए, सडंगवी, सट्ठितंतविसारए, संखाणे, सिक्खाकप्पे, वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे, अण्णेसुय बहुसु बंभणएसु परिव्वायएसु नएसु सुपरिनिट्ठिएयावि होत्था. ॥ ७ ॥ तत्थणं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामंनियंट्ठे वेसालिय

भावार्थ — शिष्य कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक रहताथा. वह खंदक परिव्राजक ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास सो प्राचिनकाल के महापुरुषों की कथाओं, और निघन्टु सो अनेकार्थ वाची कोप ऐसे षड्शास्त्र के ज्ञाता थे. और चारों वेदों के छअंग और उस में कहे हुवे प्रबंध सो अंग, इनकी प्रयुक्ति, युक्तियों को वारंवार स्मरण करनेवाले, अशुद्ध पाठ का निषेध करनेवाले, हृदय में धारन करनेवाले व पारगामी थे. वैसे ही छ अंग व कापीलिय शास्त्र के ज्ञाताथे. संख्या-गणितविद्या, शिक्षाकल्प, व्याकरण,

सूत्र

सिया से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ सव्वेविणं जाव भविस्सइ ॥ १५ ॥ सुत्तत्तं भंते! साहू, जागरियत्तं साहू? जयंती! अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाणं जाव साहू? जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया, अहम्माणुया, अहम्मिट्ठा, अहम्मक्खाई अहम्मपलोई, अहम्मपलज्जमाणा, अहम्मसमुदायारा, अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा, विहरंति एएसिणं सुत्तत्तं साहू ॥ एएणं जीवा सुत्ता समाणा णो बहूणं

भावार्थ

द्धिक जीवों सिद्ध होने से भविसिद्धिक रहित लोक नहीं होगा ÷ ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! क्या सोना

÷ अहो भगवन् ! क्या समस्त जीव सीझेंगे ? हां समस्त जीव सीझेंगे. यदि सीझे नहीं तो भवसिद्धिकपना होवे नहीं. और जब सब भवसिद्धिक सीझेंगे तब भवसिद्धिक शून्यतावाला लोक होवे ऐसा नहीं है. उस पर समय का दृष्टांत बताते हैं. सर्व एव अनागतकालसमया वर्तमानतां लप्स्यन्ते । भवति स नामातीतः प्राप्तो यो नामवर्तमानत्वं । एष्यश्च नाम स भवति यः प्राप्स्यति वर्तमानत्वम् ॥ अर्थात् जितने अनागत काल के समय हैं वे सब वर्तमानता को प्राप्त होते हैं और वर्तमानवाले अतीत होते है, और जो वर्तमान को प्राप्त होवेंगे सो अनागत है. परंतु अनागत समय रहित लोक कदापि नहीं होता है.

शब्दार्थ क० कात्यायन गोत्रीय पिं० पिंगलक नि०निग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला इ०यह अ० आक्षेप से पु० पूछते सं० संकित कं० कांक्षित वि० संदेह वाला भे० भेदको प्राप्त क० कालुष्य को स० प्राप्त णो० नहीं सं० शक्तिमान है पिं० पिंगलक नि० निग्रंथ वे० वैशालिक सा०सुननेवाला किं० किंचित् प० उत्तर अ० कहने को तु० तुष्णीक सं० रहे ते० तब से० वह पिं० पिंगलक नि० निग्रंथ वे० वैशालिक सा०सुननेवाला खं० खंदक क० कात्यायन गोत्री को दो० दोवार इ० यह अ० आक्षेप से पु० पूछे मा० मागध किं०

सूत्र वड्डइवा, हायइवा, एतावंताव आइखाहि, वुच्चमाणो एवं तएणं से खंदए कच्चायण-सगोत्ते, पिंगलएणं नियंठेणं वेसालीसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिएसमाणे संकिए कंखिए, वितिगिंछिए, भेदसमावण्णे, कलुससमावण्णे णो संचाएइ पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचिवि पमोक्ख मक्खाइओ तुसिणीए संचिट्ठइ.

भावार्थ यह लोक अंत सहित या अंत रहित है ? २ जीव अंत सहित है या अंत रहित है ? सिद्ध शिला अंत सहित है या अंत रहित है ? सिद्ध अंत सहित या अंत रहित है ? अथवा किस मरण से जीव संसार की वृद्धि करता है व किस मरण से जीव संसार को क्षीण करता है ? इन प्रश्नों का उत्तर कहो अनंतर दुसरे प्रश्न पूछूंगा. इस तरह महावीर स्वामी के वचन सुनने को रसिक पिंगलक निर्ग्रन्थने इस तरह प्रश्न पुछने पर कात्यायन गौत्रीय स्कंदक परिव्राजक को इस का क्या उत्तर होगा ऐसी शंका, अन्य की पास अर्थ

सूत्र

सिया से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ सव्वेविणं जाव भविस्सइ ॥ १५ ॥ सुत्तत्तं भंते! साहू, जागरियत्तं साहू? जयंती! अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाणं जाव साहू? जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया, अहम्माणुया, अहम्मिट्ठा, अहम्मक्खाई अहम्मपलोई, अहम्मपलज्जमाणा, अहम्मसमुदायारा, अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा, विहरंति एएसिणं सुत्तत्तं साहू ॥ एएणं जीवा सुत्ता समाणा णो बहूणं

भावार्थ

द्धिक जीवों सिद्ध होने से भविसिद्धिक रहित लोक नहीं होगा ÷ ॥ १५ ॥ अहो भगवन्! क्या सोना

÷ अहो भगवन्! क्या समस्त जीव सीझेंगे? हां समस्त जीव सीझेंगे. यदि सीझे नहीं तो भवसिद्धिकपना होवे नहीं. और जब सब भवसिद्धिक सीझेंगे तब भवसिद्धिक शून्यतावाला लोक होवे ऐसा नहीं है. उस पर समय का दृष्टांत बताते हैं. सर्व एव अनागतकालसमया वर्तमानतां लप्स्यन्ते । भवति स नाभातीतः प्राप्तो यो नामवर्तमानत्वं । एष्यश्च नाम स भवति यः प्राप्स्यति वर्तमानत्वम् ॥ अर्थात् जितने अनागत काल के समय हैं वे सब वर्तमानता को प्राप्त होते हैं और वर्तमानवाले अतीत होते हैं, और जो वर्तमान को प्राप्त होवेंगे सो अनागत है. परंतु अनागत समय रहित लोक कदापि नहीं होता है.

शब्दार्थ — है पिं० पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला को किं० किंचित् प० उत्तर अ० कहने को तु० तुष्णीक सं० रहे ॥ ८ ॥ त० तब सा० सावत्थी न० नगरी से सिं० सिंघाडे जैसे जा० यावत् प० रस्ते में म० महा पुरुषों सं० संमर्द ज० जन समुदाय प० परिषदा नि० गइ त० तब त० उस खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय व० बहुत ज० मनुष्य की अं० पास स० यह अर्थ सो० सुनकर नि० अवधाकर इ० इसरूप अ०

सूत्र — भेदसमावन्ने, कलुससमावन्ने नोसंवाएइ पिंगलस्स नियंठस्स वेसालिय सावयस्स किंचिवि पमोक्खमक्खाइओ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ८ ॥ तएणं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु महयाजण सम्मद्दइवा, जण बूहेइवा; निग्गइच्छइ तएणं तस्स खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेएयारूवे अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था एवं खलु समणे भगवं महा-

भावार्थ — तीन वार वैसाही प्रश्न पूछा परंतु कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक को शंका, कांक्षा, वितिगिच्छा, भेद व कालुष्यता प्राप्त होने से उन के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका और मौन खडा रहा ॥ ८ ॥ उस समय श्रावस्ती नगरी के तीन रस्ते मीलने के स्थान, चौक यावत् बहुत रस्ते मीलने के स्थान पर बहुत मनुष्यों के समुदाय की परिषदा श्री श्रमण भगवन्त को वंदना करने को नीकली. और परस्पर ऐसा बोलने लगे की श्री श्रमण भगवन्त महावीर कयंलगा नगरी के छत्रपलाश नामक उद्यान में पधारे हैं. ऐसा बहुत मनुष्यों की पाससे श्रवण करके

सूत्र

धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति ॥ एएसिणं जीवाणं जागरियत्तं साहू से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥ १६ ॥ बलियत्तं भंते! साहू दुब्बलियत्तं साहू? जयंती अत्थेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जाव साहू? जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति एएसिणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू,एएणं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्ब-लियत्तस्स वत्तव्वया भाणियव्वा ॥ बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव

भावार्थ

आत्मा को अधर्म से संयोजना करते हैं और जो जीव धर्मी, धर्मानुरागवाले, यावत् धर्म से आजीविका करनेवाले होते हैं वे जागते हुवे अच्छे हैं. वे जागते हुवे प्राणियों को अदुःख यावत् अपरितापना करते हैं और स्वतः को, अन्य को व उभय को अनेक धार्मिक संयोगो से जोडनेवाले होते हैं. वे जीवों जागते हुवे धर्म जागरणा जागते हैं; इस से इन जीवों का जागना अच्छा है ॥१६॥ अहो भगवन् क्या बलवान्! अच्छ या दुर्बल अच्छे? अहो जयंती! कितनेक जीवों बलवन्त अच्छे व कितनेक जीवों निर्बल अच्छे. अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है? अहो जयंती! जो जीवों अधर्मी, अधर्मानुरागी यावत् पूर्वोक्त प्रकार से जो अधर्मी जीवों हैं वे दुर्बल अच्छे हैं क्यों कि वे दुर्बल होने से प्राणों को दुःख

शब्दार्थ

क० कल्याण कारी म० मंगल कारी दे० देव चे० ज्ञानरूप प० पूजते इ० उस ए० ऐसा अ० अर्थ हे० हेतु प० प्रश्न वा० व्याकरण पु० पूछना क० करके ए० ऐसा सं० आलोचकर जे०जहां प०परिव्राजक की व० वसति ते० तहां आ० आकर ति० त्रीदंड कुं० कमंडल कं० रुद्राक्ष माला क० मिट्टिका भाजन भि० आसन के० चीवरखंड छ० त्रिगडी अ० अंकुश प० तांबे की मुद्रिका ग० आभरण विशेष छ० छत्र वा० पगरखा पा० पावडी धा० शाटिका गे० ग्रहणकर प० परिव्राजक व० वसति से प० निकलकर ह० हस्त में

सूत्र

च्छित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता, जेणेव परिव्वायगा वसही तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता तिदंडंच, कुडियंच, कंचणियंच, करोडियंच, भिसियंच, केसरियंच, छण्णालियंच, अंकुसयंच, पवित्तयंच, गणेत्तियंच, छत्तयंच, वाहणाउय पाउयाउय धाउरत्ताउयगेण्हइ गेण्हइत्ता परिव्वायगवसहीओ पारीनिक्खमइ पारीनिक्खमइत्ता, तिदंडं कुंडियं, कंचणियं, करोडियं, भिसियकेसारियछनालयअंकुसयपवित्तियगणेत्तिय हत्थगए,

भावार्थ

आकर १ त्रिदंड,२ कमंडल ३ रुद्राक्षमाला ४ मृत्तिका का भाजन ५ मृत्तिका का आसन विशेष ६ प्रमार्जने का कपडा ७ षड्नालिका-त्रिकाष्टिका ८ वृक्षपल्लव को छेदनेवाला अंकुश ९ ताम्बेकी मुद्रिका १० कालाचिका आभरण विशेष ११ शिरपर धारन करने का छत्र १२ पांव में पहिनने का उपानह १३ लकडी की चाखडी १४ गेरू से रंगे हुवे भगवे वस्त्र ऐसे भाव ग्रहण कर परिव्राजककी वसति में से नीकला,

सूत्र

जाव संजोएत्तारो भवंति,एएणं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं,उवज्झायवेयावच्चेहिं, थेरवेयावच्चेहिं, तवस्सीवेयावच्चेहिं, गिलाणवेयावच्चेहिं, सेह वेयावच्चेहिं, कुलवेयावच्चेहिं, गणवेयावच्चेहिं, संघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसिणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, से तेणट्ठेणं तंचेव जाव साहू ॥१७॥ सोइंदिय वसट्टेणं भंते ! जीवे किं बंधइ, एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ ॥ एवं चक्खिदियवसट्टेवि, जाव फासिंदियवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ॥ २१ ॥ तएणं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पव्वइए जाव सव्व दुक्खप्प-

भावार्थ

और स्वतः को, अन्यको व उभय को धार्मिक कार्य में जोडते हैं और भी उद्यमी जीव आचार्य, उपाध्याय स्थविर, तपस्वी, ग्लानि, नव दीक्षित, कुल, गण, व साधु की वैयावृत्य में आत्मा को जोडनेवाले. होते हैं. इस से वे जीवों उद्यमी अच्छे हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय में वश होनेवाला जीव क्या बांधता है ? अहो जयंती! जैसे क्रोधका कहा वैसेही सब कहना, और श्रोत्रेन्द्रिय जैसे शेप सब इन्द्रियों का जानना ॥१२॥ अब जयंती श्रमणोपासिका भगवंत श्री महावीर स्वामी की पासधर्म सुनकर हृष्ट तुष्ट हुई वगैरह सब

शब्दार्थ

देखो गो॰ गौतम पु॰ पूर्व सं॰ मित्रको कं॰ किनको भं॰ भगवन् खं॰ खंदक को का॰ किसवक्त कि॰ किसतरह के॰ कितने वक्त में ए॰ ऐसा गो॰ गौतम ते॰ उस समय में सा॰ सावत्थी न॰ नगरी ग॰ गर्दभालिका अं॰ अंतेवासी खं॰ खंदक का॰ कात्यायन गोत्रीय प॰परिव्राजक प॰ रहता है उ॰ उनको जा॰ यावत् म॰ मेरीपास पां॰ निश्चय किया ग॰ आने को से॰ वह अ॰ नजदीक व॰ बहुत नजदीक अ॰ मार्ग में प॰ रहाहुवा अं॰ रस्ते में व॰ रहा है अ॰ आजही दि॰ देखेगा ॥ १० ॥ भ॰ भगवान् गो॰

सूत्र

हंवा, केवचिरेणवा? एवं खलु गोयमा! तेणंकालेणं तेणंसमएणं सावत्थी णामं णयरी होत्था, वण्णओ, तत्थणं सावत्थीए नगरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी खंदए णामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ तंचेव जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव पाहारेच्छ गमणाए सेअदूरागए बहुसंपत्ते, अद्धाणपडिवण्णे अंतरापहे वट्टइ अज्जेवणं दिच्छसि गोयमा ! ॥ १० ॥ भंतेत्ति

भावार्थ

पूर्व संगतिवाला कौनसा मित्रको मैं देखूंगा ? तब श्री भगवन्त बोले की तू खंदक को देखेगा. तब गौतम स्वामी बोले की किस समय, किस प्रकार व कितनी देर में मीलेगा ? तब श्री भगवन्त बोले की उस काल उस समय में श्रावस्ती नामक नगरी में गर्दभाली परिव्राजकका शिष्य कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक रहता है. उन को पिंगलक निर्ग्रंथने प्रश्न किया. जिस का उत्तर नहीं दे सकने से मेरे पास आरहा है वह अभी रस्ते के मध्य में है और उसे तू आज ही देखेगा ॥ १० ॥ श्री गौतम

शब्दार्थ — धम्मा ना० नाम र० रत्नप्रभा गो० गोत्र ए० ऐसे ज० जैसे जी० जीवाभिगम में प० प्रथम णे० नारकी उ० उद्देशा सो० वह णि० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् अ० अल्पाबहुत्व ॥ १२ ॥ ३ ॥

सूत्र — एवं जहा जीवाभिगमे पढमो णेरइय उद्देसओ सो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पा-बहुगत्ति॥२॥सेवं भंते भंतेत्ति॥दुवालसम सयस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥१२॥३॥

रायगिहे जाव एवं वयासी दो भंते! परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति एगयओ

भावार्थ — नाम व शर्कर प्रभा गोत्र ३ तीसरी का सीला नाम व बालुप्रभा गोत्र ४ चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र ५ पांचवी का रिठा नाम व धूम्रप्रभा गोत्र ६ छट्ठीका मघा नाम व तमप्रभा गोत्र और ७ सातवी का माघवती नाम व तमतमा गोत्र वगैरह सब कथन जीवाभिगम सूत्र के प्रथम नरक उद्देशे में जितना कहा वह सब जानना. यावत् सब से थोडे सातवी नरक के नेरिये उस से छठी नरक के नेरिये असंख्यातगुने, उस से पांचवी नरक के नेरिये असंख्यातगुने. यों क्रम से पहिली नरक के नेरिये असंख्यातगुने. अहो भगवन् आप के वचन सत्य हैं यह बारहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ३ ॥ *

तीसरे उद्देशे में पृथ्वी का कथन किया. वह पुद्गलात्मक होने से आगे पुद्गल का अधिकार कहते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वांदने को आइ, धर्मोपदेश सुनकर पीछीगइ. उस समय में श्री गौतम स्वामीने भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार

सूत्र

खंदक क०कात्यायन गोत्रीय अ०नजदीक आ०आयाहुवा जा०जानकर खि०शीघ्र अ०उठकर खि०शीघ्र प० सन्मुख जाकर जे० जहां खं० खंदक क०कात्यायन गोत्रीय ते०तहां उ०आकर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा व० बोले हे० अहो खं० खंदक सा० स्वागतम् सु० सुस्वागतं अ० योग्य, आगमन सा० स्वागतम् अ० योग्य आगमन मे० वह तु० तम को खं० खंदक सा० सावत्थी न० नगरी में पिं०

णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरमागयं जाणेत्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेइ २ त्ता, खिप्पामेव पच्चुगच्छइ पच्चुगच्छइत्ता जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी हेखंदया! सागयं खंदया! सुसागयं खंदया! अणुरागयं खंदया!. सागयमणुरायं खंदया! सेणूणं तुमं खंदया, सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसा-

भावार्थ

स्कंदक परिव्राजक की सन्मुख गये, और सन्मुख जाकर स्कंदक परिव्राजक को ऐसा बोले अहो स्कंदक तुम्हारा आगमन श्रेष्ट है, तुम्हारा आगमन अनुपम है, तुम्हारा आगमन शोभन व अनुपम है. अहो स्कंदक! श्रावस्ती नगरी में श्री महावीर के वचन सुनने को रसिक पिंगलक नामक निर्ग्रंथने क्या ऐसे प्रश्नों पूछे थे कि अंत सहित लोक है, या अंत रहित लोक है, यावत् किस मरण से संसार की वृद्धि व हीनता

शब्दार्थ घम्मा ना० नाम र० रत्नप्रभा गो०गोत्र ए० ऐसे ज० जैसे जी० जीवाभिगम में प० प्रथम णे०नारकी उ० उद्देशा सो० वह णि० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् अ० अल्पाबहुत्व ॥ १२ ॥ ३ ॥

सूत्र एवं जहा जीवाभिगमे पढमो णेरइय उद्देसओ सो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पाबहुगत्ति॥२॥सेवं भंते भंतेत्ति॥दुवालसम सयस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥१२॥३॥

रायगिहे जाव एवं वयासी दो भंते! परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति एगयओ

भावार्थ नाम व शर्कर प्रभा गोत्र ३ तीसरी का सीला नाम व वालुप्रभा गोत्र ४ चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र ५ पांचवी का रिठा नाम व धूम्रप्रभा गोत्र ६ छठीका मघा नाम व तमप्रभा गोत्र और ७ सातवी का माघवती नाम व तमतमा गोत्र वगैरह सब कथन जीवाभिगम सूत्र के प्रथम नरक उद्देशे में जितना कहा वह सब जानना. यावत् सब से थोडे सातवी नरक के नेरिये उस से छठी नरक के नेरिये असंख्यातगुने, उस से पांचवी नरक के नेरिये असंख्यातगुने. यों क्रम से पहिली नरक के नेरिये असंख्यातगुने. अहो भगवन् आप के वचन सत्य हैं यह बारहवा शतक का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ३ ॥ *

तीसरे उद्देशे में पृथ्वी का कथन किया. वह पुद्गलात्मक होने से आगे पुद्गल का अधिकार कहते हैं. राजगृह नगर के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वांदने को आइ, धर्मोपदेश सुनकर पीछीगइ. उस समय में श्री गौतम स्वामीने भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार

सूत्र से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी एवं खलु खंदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए, समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली, तीय पच्चुप्पण्ण मणागय वियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी, जेणं ममएसअट्ठे तवताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए जओणं अहं जाणामि खंदया ? ॥ १२ ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी. गच्छामोणं गोयमा ? तव धम्मायरियं

शब्दार्थ व० कहा खं० खंदक म० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भं० भगवान् म० महावीर उ० उत्पन्न णा० ज्ञान द० दर्शन युक्त अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली ती० अतीत प० वर्तमान अ० अनागत वि० विज्ञानक स० सर्वज्ञ स० सर्वदर्शी जे० जिनने म० मुझे ए० यह अर्थ त० तुमारा र० हृदय भाव ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे अ० मैं जा० जानताहूं खं० खंदक ॥ १२ ॥ त० तब खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय भं० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले ग० जावे गो० गौतम

भावार्थ तब स्कंदक परिव्राजक बोले की अहो गौतम ! मैं तुम्हारे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्री श्रमण भगवंत महा- धारक श्री महावीर स्वामी है. वे इन्द्रादिक के वंदनीक पूजनीक, रागादि शत्रु को जीतनेवाले, सब दोष रहित, व अतीत, अनागत व वर्तमान के ज्ञानी सर्वज्ञ, सर्वदर्शी है. इनोंने मुझे यह अर्थ तुम्हारे आये पहिले बतलाया. उन के कथनसेही मैं यह जानता हूं ॥ १२ ॥

सूत्र

एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा दो दुपदेसिया खंधा भवंति. तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ. चउहाकज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति ॥ ३ ॥ पंच भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ! गोयमा ! पंच पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि, तिहावि, चउहावि, पंचहावि कज्जइ. दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ चउपदेसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ दुपदेसिया खंधा भवंति चउहा कज्जमाणे एग-

भावार्थ

भगवन् ! चार परमाणु पुद्गल मीलने से क्या होवे ? अहो गौतम ! चार प्रदेशात्मक स्कंध होवे. उस के दो, तीन व चार विभाग हो सकते हैं. जब दो टुकडे करते हैं तब एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध का व एक परमाणु पुद्गल का, अथवा दो २ परमाणु पुद्गलों के दो स्कंध. तीन टुकडे करने से एक २ परमाणु पुद्गल के दो टुकडे और एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध और चार टुकडे करने से एक २ परमाणु पुद्गलों के चार विभाग ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! पांच परमाणु मीलने से क्या होवे ? अहो गौतम ! पांच प्रदेशात्मक स्कंध होवे उस के भेद होने से दो तीन चार व पांच टुकडे होवे. यदि दो होवे तो चार प्रदेशात्मक स्कंध व एक एक

शब्दार्थ

भावन्त क० कल्याण कारी सि० श्रेयकारी ध० धन्य मं० मंगलकारी अ० अलंकार रहित वि० विभू-पित ल० लक्षण वं० व्यंजन गु० गुणयुक्त सि० श्री जैसे अ० अतीव उ० शोभते चि० रहते हैं ॥ १४ ॥ त० तहां से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रिय स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर का वि० नित्य भोजी स० शरीर उ० उदार जा० यावत् अ० अतीव उ० शोभता पा० देखकर ह० आनंद तु० तुष्ट चि० चितमें आ० आनंद हुवा पी० प्रीति हुइ प० उत्कृष्ट सा० अच्छा मन हुवा ह० हर्षयुक्त

सूत्र

सियं लक्खण वंजण गुणोववेयं, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥१४॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं उरालयं जाव अतीव अतीव उवसोभेमाणं पासइ पासइत्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमाणे परमसोमणसिए हरिसवसविसप्पमाणहियए, जेणेव समणे भगवं महावीरे

भावार्थ

अतिशय शोभावन्त, श्रेयकारी, उपद्रवकारी, वस्त्राभरण रहित होनेपर शोभनिक व लक्षण व्यंजन युक्त था. ॥ १४ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक नित्यभोजी श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का शरीर को अत्यंत शोभनिक यावत् लक्षण व्यंजन युक्त देखकर हृष्ट पुष्ट चित्तवाला हुआ, बहुत संतोषित हुआ, आनंदित चित्तवाला हुआ, मन में प्रीति उत्पन्न हुई और परम उत्कृष्ट हर्ष उत्पन्न हुआ. इस तरह से

सूत्र

भवंति. चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति. पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ छहा कज्जमाणे छपरमाणु पोग्गला भवंति ॥ ५ ॥ सत्त भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ? गोयमा सत्तपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव सत्तविहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ

भावार्थ

टुकडे और चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो प्रदेशात्मक स्कंध एक, तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक और एक परमाणु पुद्गल अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध, चार टुकडे करते एक २ परमाणु पुद्गल के तीन और तीन प्रदेशात्मक स्कंध का एक, अथवा एक २ परमाणु पुद्गल के दो टुकडे और द्विप्रदेशात्मक स्कंध के दो टुकडे, पांच भाग में एक २ परमाणु के चार और द्विप्रदेशात्मक स्कंध का एक और छ भाग में भिन्न २ छ परमाणु पुद्गल ॥ ५ ॥ सात परमाणु पुद्गल की पृच्छा अहो गौतम ! सात परमाणु पुद्गल मीलकर सात प्रदेशात्मक स्कंध होता है. और उस के टुकडे करते दो यावत् सात टुकडे होते हैं. दो टुकडे करते एक

शब्दार्थ लोक जा० यावत् म० मेरी अं० पास ह० शीघ्र आ० आया से० वह खं० खंदक अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है खं० खंदक ए० ऐसा अ० आत्मविषय में चिं० चिंतवन प० प्रार्थनारूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुआ किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनंतलोक त० उस का अ० यह अर्थ म० मैंने खं० खंदक च० चार प्रकार का प० प्ररूपा द० द्रव्य से खे० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से द० द्रव्य से ए० एक लो० लोक म० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक अ० असंख्यात जो० योजन

सूत्र ए तेणेव हव्वमागए । सेणूणं खंदया! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि ॥ जेविय ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, किं सअंतेलोए अणंतेलोए तस्सावियणं अयमट्ठे, एवं खलुमए खंदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ. । दव्वओणं एगेलोए सअंते, ॥

भावार्थ पास आया है तो क्या यह बात सत्य है? खंदक बोले हां यह सत्य है. अहो खंदक! तेरे मन में ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनन, व मनोगत संकल्प उत्पन्न हुवा कि क्या अंत सहित लोक है या अंत रहित लोक है. परंतु अहो स्कंदक ! मैं लोक को इस प्रकार प्ररूपता हूं. लोक के चार भेद कहे हैं द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे व भाव से. द्रव्य से पंचास्तिकायरूप एक, यह द्रव्य तत्त्व से अंत सहित है, क्षेत्र से सब लोक का मध्य मेरुपर्वत है उससे यह ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् दिशा की लम्बाइ व चौडाइ में असंख्यात योजन का

सूत्र

भवंति. चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति. पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ छहा कज्जमाणे छपरमाणु पोग्गला भवंति ॥ ५ ॥ सत्त भंते ! परमाणु पोग्गला पुच्छा ? गोयमा सत्तपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव सत्तविहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ

भावार्थ

टुकडे और चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो प्रदेशात्मक स्कंध एक, तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक और एक परमाणु पुद्गल अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध, चार टुकडे करते एक २ परमाणु पुद्गल के तीन और तीन प्रदेशात्मक स्कंध का एक, अथवा एक २ परमाणु पुद्गल के दो टुकडे और द्विप्रदेशात्मक स्कंध के दो टुकडे, पांच भाग में एक २ परमाणु के चार और द्विप्रदेशात्मक स्कंध का एक और छ भाग में भिन्न २ छ परमाणु पुद्गल ॥ ५ ॥ सात परमाणु पुद्गल की पृच्छा अहो गौतम ! सात परमाणु पुद्गल मीलकर सात प्रदेशात्मक स्कंध होता है. और उस के टुकडे करते दो यावत् सात टुकडे होते हैं. दो टुकडे करते एक

शब्दार्थ लोक जा० यावत् म० मेरी अं० पास ह० शीघ्र आ० आया से० वह खं० खंदक अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है खं० खंदक ए० ऐसा अ० आत्मविषय में चिं० चिंतवन प० प्रार्थनारूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुवा किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनंतलोक त० उस का अ० यह अर्थ म० मैंने खं० खंदक च० चार प्रकार का प० प्ररूपा द० द्रव्य से खे० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से द० द्रव्य से ए० एक लो० लोक म० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक अ० असंख्यात जो० योजन

सूत्र ए तेणेव हव्वमागए । सेणूणं खंदया! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि ॥ जेविय ते खंदया! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, किं सअंतेलोए अणंतेलोए तस्सावियणं अयमट्ठे, एवं खलुमए खंदया! चउव्विहे लोए पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ. । दव्वओणं एगेलोए सअंते, ॥

भावार्थ पास आया है तो क्या यह बात सत्य है? खंदक बोले हां यह सत्य है. अहो खंदक! तेरे मन में ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनन, व मनोगत संकल्प उत्पन्न हुवा कि क्या अंत सहित लोक है या अंत रहित लोक है. परंतु अहो स्कंदक! मैं लोक को इस प्रकार प्ररूपता हूं. लोक के चार भेद कहे हैं. द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे व भाव से. द्रव्य से पंचास्तिकायरूप एक, वह द्रव्य तत्त्व से अंत सहित है, क्षेत्र से सब लोक का मध्य मेरुपर्वत है उससे वह ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् दिशा की लम्बाइ व चौडाइ में असंख्यात योजन का

सूत्र

भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदिसिया खंधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ । सत्तहा कज्जमाणे सत्तपरमाणुपोग्गला भवंति ॥ ६ ॥ अट्ठ परमाणुपोग्गला पुच्छा ? गोयमा! अट्ठ पदेसिएखंधे भवइ, जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ सत्त पदेसिएखंधे भवइ, अहवा-एगयओ दुपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ छप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा-एगयओ तिपएसिएखंधे एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ अहवा दो

भावार्थ

परमाणु पुद्गल और तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. पांच टुकडे करते एक तरफ चार परमाणु पुद्गल और एक तरफ तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक, अथवा तीन परमाणु पुद्गल के तीन और दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध छ करते पांच परमाणु पुद्गल के पांच और द्विप्रदेशात्मक स्कंध का एक, सात टुकडे करते सात परमाणु पुद्गल के सात ॥ ६ ॥ अब आठ परमाणु पुद्गल की पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! आठ प्रदेशात्मक स्कंध होता है और उस के दो यावत् आठ टुकडे होते हैं. दो टुकडे करते एक परमाणु पुद्गल और सात प्रदेशात्मक स्कंध एक, द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक और छ प्रदेशात्मक स्कंध एक, तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक और

शब्दार्थ — संस्थान प॰ पर्यव अ॰ अनंत गु॰ गुरुलघुके प॰ पर्यव अ॰ अनंत अ॰ अगुरुलघु पर्यव न॰ नहीं है से॰ उस का अं॰ अंत खं॰ खंदक द॰ द्रव्य से लो॰ लोक अ॰ अंतसहित खे॰ क्षेत्र से लो॰ लोक स॰ अंतसहित का॰ काल से लो॰ लोक अ॰ अनंत भा॰ भाव से लो॰ लोक अ॰ अनंत ॥ १६ ॥ खं॰ खंदक जा॰ यावत् स॰ अंतसहित जी॰ जीव अ॰ अनंत जीव त॰ उस का अ॰ यह अर्थ जा॰ यावत् द॰ द्रव्य से ए॰ एक जीव स॰ अंतसहित खे॰ क्षेत्र से जी॰ जीव अ॰ असंख्यात प॰ प्रदेशिक अ॰ असंख्यात प्रदेश

सूत्र — पज्जवा, अणंता अगुरुयलहुयपज्जवा, नात्थिपुणसे अंते ॥ सेत्तं खंदया ! दव्वओ लोगेसअंते, खेत्तओलोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते ॥ १६ ॥ जेविय ते खंदया ! जाव सअंतेजीवे अणंतेजीवे, तस्सवियणं अयमट्ठे एवं खलु जाव दव्वओणं एगजीवे सअंते, खेत्तओणं जीवे असंखेज्ज पएसिए, असंखेज्ज पएसोगाढे, अत्थिपुण से अंते, कालओणं जीवे नकदाइ न आसि णिच्चे

भावार्थ — पर्यव, अनंत संठान पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव, व अनंत अगुरुलघु पर्यव हैं. इसलिये भावसे लोक अनंत है. इसतरह से अहो स्कंदक ! द्रव्यसे लोक अंत सहित, क्षेत्रसेभी अंत सहित, कालसे व भाव से लोक अनंत है ॥ १६ ॥ अहो स्कंदक ! जीव अंत सहित है या अंत रहित है उस प्रश्न के उत्तर में जीव के चार भेद कहे हैं द्रव्य से, क्षेत्रसे, कालसे व भावसे, द्रव्य से एकही जीव है वह द्रव्य से अंत सहित है. क्षेत्रसे असं-

सूत्र

पोग्गला एगयओ दो तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा-चत्तारि दुपदेसियाखंधा भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ तिपदेसिएखंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा भवंति छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिएखंधे भवति अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति । सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला

भावार्थ

चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो दो प्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. पांच टुकडे करते चार परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. सात

शब्दार्थ खंदक पु० पृच्छा अं० अंत सहित सि० सिद्धि अ० अनंत सिद्धि त० उनका अ० यह अ० अर्थ म० मैंने च० चार प्रकार की सि०सिद्धि प० प्ररूपी द० द्रव्य से ए०एकसिद्धि स०अतंसहित खे० क्षेत्र से प० पेंतालीस जो० योजन स० लक्ष आ० लंबी वि० चौडी ए० एक जो० योजन क्रोड बा० बीयालीस स० लक्ष ती० तीस स० सहस्र दो० दो उ० इगुणपच्चास जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि में प० प्ररूपी अ० है से०उसका अं०अंत का०काल से सि० सिद्धि न०नहीं क०कदापि न०नहीं

सूत्र अणंतासिद्धी, तरसवियएण अयमट्ठे, मए चउव्विहासिद्धी पं० तं० दव्वओ खेत्तओ, कालओ, भावओ. दव्वओणं एगासिद्धी, सअंता । खेत्तओणंसिद्धी पणयालीस जोयणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, एगाजोयण कोडी बायालीसं सयसहस्साइं तीसंच सहस्साइं दोण्णियअ उणापण्णे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थिपुणसे अंते, कालओणंसिद्धी नकदाइनआसि, ॥ भावओय जहा

भावार्थ तुम को सिद्ध शिला अंत सहित है या अंत रहित है ऐसा प्रश्न पुछाथा उस का भी यह अर्थ है. सिद्धशिला चार प्रकार की कही है. द्रव्य से सिद्धशिला एक होने से अंत सहित है, क्षेत्र से सिद्धशिला ४५ लाख योजन की लम्बी व चौडी, वैसेही १४२३०२४९ से कुच्छ अधिक परिधि होने से अंत रहित है. काल से भूत भविष्य व वर्तमान ऐसे तीनों काल में शाश्वत होने

सूत्र

पोग्गला एगयओ दो तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा-चत्तारि दुपदेसियाखंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ तिपदेसिएखंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा भवंति छहा कज्जमाणे एगयओ पंचपरमाणु पोग्गला, एगयओ तिपदेसिएखंधे भवति अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला

भावार्थ

चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो दो प्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. पांच टुकडे करते चार परमाणु पुद्गल एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. छ टुकडे करते पांच परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध होते हैं. सात

शब्दार्थ

खंदक पु० पृच्छा अं० अंत सहित सि० सिद्धि अ० अनंत सिद्धि त० उनका अ० यह अ० अर्थ म० मैंने च० चार प्रकार की सि०सिद्धि प० प्ररूपी द० द्रव्य से ए०एकसिद्धि स०अंतसहित खे० क्षेत्र से प० पेंतालीस जो० योजन स० लक्ष आ० लंबी वि० चौडी ए० एक जो० योजन क्रोड बा० बीयालीस स० लक्ष ती० तीस स० सहस्र दो० दो उ० इगुणपच्चास जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि में प० प्ररूपी अ० है से०उसका अं०अंत का०काल से सि० सिद्धि न०नहीं क०कदापि न०नहीं

सूत्र

अणंतासिद्धी, तस्सवियएणं अयमट्ठे, मए चउव्विहासिद्धी पं० तं० दव्वओ खेत्तओ, कालओ, भावओ. दव्वओणं एगासिद्धी, सअंता । खेत्तओणंसिद्धी पणयालीस जोयणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, एगाजोयण कोडी बायालीसं सयसहस्साइं तीसंच सहस्साइं दोण्णियअ उणापण्णे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थिपुणसे अंते, कालओणंसिद्धी नकदाइनआसि, ॥ भावओय जहा

भावार्थ

तुम को सिद्ध शिला अंत सहित है या अंत रहित है ऐसा प्रश्न पुछाथा उस का भी यह अर्थ है. सिद्धशिला चार प्रकार की कही है. द्रव्य से सिद्धशिला एक होने से अंत सहित है, क्षेत्र से सिद्धशिला ४५ लाख योजन की लम्बी व चौडी, वैसेही १४२३०२४९ से कुच्छ अधिक परिधि होने से अंत रहित है. काल से भूत भविष्य व वर्तमान ऐसे तीनों काल में शाश्वत होने

सूत्र

तिण्णि तिपदेसिया खंधा भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ छप्पएसिए खंधे भवति, अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ पंच पदेसिए खंधे भवइ. अहवा-एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति, एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ. अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति. अहवा-एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपदेसिए

भावार्थ

प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक अथवा तीन तीन प्रदेशात्मक तीन स्कंध. चार टुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक छ प्रदेशात्मक स्कंध-अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदे-

शब्दार्थ — का० काल से सिद्ध सा० सादी अ० अपर्यवसित न० नहीं है पु० फीर मे० उसका अं० अंत भा० भाव से सि० सिद्ध अ० अनंत णा० ज्ञान पर्यव दं० दर्शन पर्यव अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अं० अंत॥१९॥ खं० खंदक ए० एतारूप अ० आत्मविषय चिं० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा के० किस म० मरण जी० जीव व० वृद्धि पामे हा० हीनपावे त० उसका अ० यह अर्थ खं० खंदक म० मैंने

मूल — ओणं सिद्धे अणंता णाणपज्जवा अणंता दंसणपज्जवा, अणंता अगुरुलहुय पज्जवा, नत्थिपुण से अंते ॥ सेत्तं दव्वओ सिद्धे सअंते, खेत्तओ सिद्धे सअंते, कालओ सिद्धे अणंते, भावओ सिद्धे अणंते ॥१९॥ जे विय ते खंदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था केणवा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढइवा, हायइवा, ।

भावार्थ — ज्ञानपर्यव, दर्शनपर्यव; व अनंत अगुरुलघु पर्यव होने से अंत रहित है. इस तरह सिद्ध द्रव्य क्षेत्र से अंत सहित व काल भाव से अंत रहित है ॥ १९ ॥ अहो खंदक ! तुम को ऐसा विचार हुवा कि किस मरण से जीव संसारकी वृद्धि या हानि कर सकता है ? अहो खंदक ! मरण दो प्रकार के कहे है बाल मरण व पंडित मरण. उस में से बाल मरण के बारह भेद कहे हैं १ धर्म से भ्रष्ट होकर या क्षुधा से वलवलाट करता मरन मरे सो वलय मरण २ इन्द्रियों के वश में पडकर मरे सो वसट्ट मरण ३ अंतःकरण में शल्य रखकर मरे सो अंतःशल्य मरण ४ मनुष्य मरकर मनुष्य होना व

पोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ, । णवहा कज्जमाणे णव परमाणुपोग्गला भवंति ॥८॥ दस भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा ? गोयमा ! जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ णव पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ अट्ठ पएसिए खंधे भवइ, एवं एक्केकं संचारेंति जाव अहवा दो पंचपदेसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपदेसिए

प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. सात टुकडे करते छ परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा पांच परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध आठ टुकडे करते सात परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, नव टुकडे करते नव परमाणु पुद्गल ॥८॥ अब दश परमाणु पुद्गल की पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! दश प्रदेशात्मक एक स्कंध होता है. इस के दो यावत् दश टुकडे होते हैं. जब दो टुकडे होते हैं तब एक परमाणु पुद्गल व एक नव प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध व एक आठ प्रदेशात्मक स्कंध यों एक २ बढाते यावत् दो पांच प्रदेशात्मक स्कंध. तीन

शब्दार्थ जीव अ० अनंत ने० नारकी भवग्रहण से अ० आत्मा को सं० योजे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घकाल चा० चतुर्गति सं० संसार कं० कंतार में अ० परिभ्रमण करे से० वह किं० कैसे पं० पंडित मरण पं० पंडितमरण दु० दोप्रकार का पा० पादोपगमन भ० भक्तप्रत्याख्यान पा० पादोपगमन दु० दोप्रकार नी० नीहारिम अ० अनीहारीम नि० निश्चय अ० प्रतिक्रमण रहित से०

सूत्र तिरिय मणुदेव अणाइयंचणं अणवदग्गं दीहद्धं, चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टइ. सेतं बालमरणेणं मरमाणे वड्ढइ । सेत्तं बालमरणे ॥ से किं तं पंडियमरणे ? पंडियमरणे ! दुविहे प० तं० (ग्रंथ संख्या १०००) पाओवगमणेय भत्त पच्चक्खाणेय । से किं तं पाओवगमणे ? पाओवगमणे ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-नीहारिमेय, अनीहा-

भावार्थ है व अनादि अनंत चतुर्गतिक संसार में पर्यटन करता है. इसलिये बाल मरण से संसार की वृद्धि होती है. पंडित मरण क्या है ? पंडित मरण के दो भेद कहे हैं. १ पादोपगमन अर्थात् वृक्ष की गिरी हुई शाखा की तरह अपने शरीर को स्थिर करे २ भक्त प्रत्याख्यान सो जीवन पर्यंत अशनादि चारों आहार का त्याग करे. उसमें से प्रथम पादोपगमन के दो भेद कहे हैं १ नीहारिम सो नगरमें मरे. उन के शरीर का निहारन (संस्कार) होवे और २ अनीहारिम. पर्वतादिक में करे. उन के शरीर का निहारन (संस्कार) होवे नहीं. पादोपगमन मरण मरने वाला प्रतिक्रमण नहीं करता है क्यों कि वह हलन चलनादि क्रिया

पोग्गला, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ, । णवहा कज्जमाणे णव परमाणुपोग्गला भवंति ॥८॥ दस भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा ? गोयमा ! जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ णव पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ अट्ठ पएसिए खंधे भवइ, एवं एक्केकं संचारेंति जाव अहवा दो पंचपदेसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपदेसिए

प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. सात टुकडे करते छ परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा पांच परमाणु पुद्गल दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध आठ टुकडे करते सात परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, नव टुकडे करते नव परमाणु पुद्गल ॥८॥ अब दश परमाणु पुद्गल की पृच्छा करते हैं. अहो गौतम ! दश प्रदेशात्मक एक स्कंध होता है. इस के दो यावत् दश टुकडे होते हैं. जब दो टुकडे होते हैं तब एक परमाणु पुद्गल व एक नव प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध व एक आठ प्रदेशात्मक स्कंध यों एक २ बढाते यावत् दो पांच प्रदेशात्मक स्कंध. तीन

शब्दार्थ वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय सं० संबुद्ध स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुमारी अं० पास के० केवली प० प्ररूपा धर्म को नि० धारने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध करो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय ती० उस म० बडी म० महान् प० परिषदामें ध० धर्म प० कहा ध० धर्म कथा भा० कही॥२१॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय

सूत्र एत्थणं से खंदए कच्चायण सगोत्ते संबुद्धे ! समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झं अंतिए केवली पन्नत्तं धम्मं णिसामित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायण सगोत्तस्स तीसेयमहइ महालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ. धम्मकहा भाणियव्वा

भावार्थ प्रति बोध पाये और श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि अहो भगवन् ! आप की समीप केवली प्ररूपित धर्म सुनने को मैं चाहता हूं. अहो देवानुप्रिय ! जैसा तुम को सुख होवे वैसा करो, विलम्ब मत करो. उस समय श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने उस महती परिषदा में खंदक परिव्राजक को धर्म कथा कही. ॥ २१ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय खंदक ने महावीर स्वामी की

सूत्र

दुपदेसिएखंधे एगयओ छप्पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखंधे, एगयओ पंचपदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणु पोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपदेसिएखंधे, एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ चउप्पदसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि तिपदेसियाखंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि दुपदेसियाखंधा एगयओ चउप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपदे-सियाखंधा एगयओ दो तिपदेसियाखंधा भवंति, । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ छप्पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला

भावार्थ

चारटुकडे करते तीन परमाणु पुद्गल एक सात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक छ प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक पांच प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दो परमाणु पुद्गल दो चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन दो प्रदेशात्मक स्कंध एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा

शब्दार्थ वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय सं० संबुद्ध स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुमारी अं० पास के० केवली प० प्ररूपा धर्म को नि० धारने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध करो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय तीं० उस मं० बडी म० महान् प० परिषदामें ध० धर्म प० कहा ध० धर्म कथा भा० कही॥२१॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय

सूत्र

एत्थणं से खंदए कच्चायण सगोत्ते संबुद्धे ! समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झं अंतिए केवली पन्नत्तं धम्मं णिसामित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायण सगोत्तस्स तीसियमहइ महालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ. धम्मकहा भाणियव्वा

भावार्थ प्रति बोध पाये और श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि अहो भगवन् ! आप की समीप केवली प्ररूपित धर्म सुनने को मैं चाहता हूं. अहो देवानुप्रिय ! जैसा तुम को सुख होवे वैसा करो, विलम्ब मत करो. उस समय श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने उस महती परिषदा में खंदक परिव्राजक को धर्म कथा कही. ॥ २१ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय खंदक ने महावीर स्वामी की

सूत्र

एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणु पोग्गला, एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणु पोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ चत्तारि दुपदेसिया खंधा भवंति, । सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छपरमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा-एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे, एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खंधा

भावार्थ

द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा चार परमाणु पुद्गल और दो तीन प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन परमाणु पुद्गल, दो द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा दो परमाणु पुद्गल चार द्विप्रदेशात्मक स्कंध. सात टुकडे करते छ परमाणु पुद्गल और चार प्रदेशात्मक स्कंध अथवा पांच परमाणु पुद्गल, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, चार परमाणु पुद्गल तीन द्विप्रदेशात्मक स्कंध. आठ टुकडे करते सात परमाणु पुद्गल और एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा

शब्दार्थ विशेष इच्छित से० यह ज० जैसे तु० तुम व०कहते हो त्ति०ऐसाकरके स०श्रमण भ०भगवन्त म०महावीरको वं०वंदनाकर न० नमस्कार करं उ० ईशान कोन में अ० आकर ति० त्रिदंड कुं० कमंडल जा० यावत् धा० धातु से रक्त वस्त्र ए० एकान्त में ए०रखकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते०तहां आ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीन वार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके जा० यावत् न० नमस्कार कर आ० आदीप्त हुवे लो०लोक प०प्रदीप्त हुवे ज०जरा म०मरण से ज०जैसे के०

मूत्र मेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुज्झे वदह-त्तिकट्टु, समणंभगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसइत्ता, उत्तरपुरच्छिमं दिसीभायं अवक्कमइ, अवक्कमइत्ता तिदंडंच कुंडियंच जाव धाउरत्ताउय एगंते एडेइ एडेइत्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आदाहिणपयाहिणंकरेइ करेइत्ता जाव नमंसइत्ता एवं वयासी,

भावार्थ को वंदना नमस्कार कर के ईशान कोन में गया. वहां जाकर त्रिदंड कमंडल यावत् गेरु से रंगे हुवे वस्त्रों को एकान्त में रखकर श्रमण भगवन्त महावीर की पास आया. वहां आकर महावीर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा की. प्रदक्षिणा कर यावत् नमस्कार कर ऐसा बोले की अहो भगवन्! यह जीवलोक जरा व मरण से ज्वलित बना हुवा है. जैसे कोई गृहपति अपने घर को अग्नि से प्रज्वलित

सूत्र

खंधे, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदेसिएखंधे भवइ, एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदे-

भावार्थ

स्कंध, तीन टुकडे करने से दो परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक परमाणु पुद्गल, एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध व एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध

शब्दार्थ भाजन ज० जैसे मा० मत सी० शीत उ० ऊष्ण खु० क्षुधा पि० तृषा चो० चोर वा० सर्प दं० दंस म० मशक वा० वात पि० पीत सं० श्लेष्म स० सन्निपात वि० विविध रो० रोग आ० आतंक प० परिषह उ० उपसर्ग फ० स्पर्शे वि० ऐसा क० करके नि० निकालते प० परलोक का हि० हितकेलिये सु० सुख केलिये ख० क्षमाकेलिये नि० मुक्तिके हेतु अ० अनुगामिक भ० होंगे त० उसको इ० इच्छता हूं दे० देवानुप्रिय स० स्वतः प० प्रव्रजित मुं० मुंडहोकर से० शिक्षा ग्रहणकर सि० शिक्षा

सूत्र समए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे माणंसीयं, माणंउण्हं, माणंखुहा माणंपिवासा, माणंचोरा, माणंवाला, माणंदंसा, माणंमसया माणंवाइय-पित्तिय–संभिय–साण्णिवाइय-विविहारोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु, एस नित्थारियसमाणे परलोयस्स हियाए,सुहाए,खमाए,निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ,तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सय-

भावार्थ विश्वास का कर्ता है. आत्मकृत कार्य के सम्मतपने से बहुमत व अनुमत है. आभरण के करंडिये समान है. इसे मैंने शीत, ऊष्ण, क्षुधा, तृषा चोर, सर्प, दंश, मशक, वात, पित्त, कफ, संनिपात आदि मारणान्तिक उपसर्ग व परिषह से बचाया है. इस आदीप्त प्रदीप्त में मेरा आत्मा की मैं रक्षा करूंगा. यह मुझे इस लोक व परलोक में हित, सुख, कल्याण, क्षमा, निस्तार के कर्ता व अनुगामी होगा. वैसे ही मुक्ति

खंधे, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदेसिएखधे भवइ, एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु पोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पदेसिएखंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिएखंधे एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपदे-

अर्थ

स्कंध, तीन टुकडे करने से दो परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक परमाणु पुद्गल, एक तीन प्रदेशात्मक स्कंध व एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक परमाणु पुद्गल दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंधअथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशा-त्मक स्कंध ऐसे ही एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध

शब्दार्थ

नी० जीव स० सत्व सं० संयम से सं० यतना करना अ० इस अ० अर्थ केलिये णो० नहीं किं० किंचित् प० प्रमाद करना ॥ २१ ॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का ए० ऐसा ध० धर्म उ० उपदेश स० सम्यक् सं० अंगीकार किया त० उन आ० आज्ञाको त० जैसे ग० जावे चि० रहे नि० बैठे तु० सोवे भुं० भोजनकरे भा० बोले उ० खडाहोके पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व सं० संयम मं० यत्नकरे अ० इस अ० अर्थ में णो० नहीं प० प्रमादकरे

सूत्र

संजमेणं संजमियव्वं. अस्सिंचणं अट्ठे णोकिंचि पमाइयव्वं. ॥ २१ ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ, तमाणाए तहगच्छइ, तहचिट्ठइ, तहनिसीयइ, तहतुयट्टइ, तहभुंजइ तहभासइ, तहउट्ठाएइ तहपाणेहिं भूएहिंजीवेहिंसत्तेहिं संजमेणं संजमेइ, आसिंचणंअट्ठेणोपमायइ ॥ २२ ॥

भावार्थ

व यत्नापूर्वक बोलना. ऐसे ही उद्यमवन्त बनकरके प्राणभूत जीव व सत्व से संयम पालना. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद करना नहीं ॥ २१ ॥ तब कात्यायन गोत्रीय खंदकने श्रमण भगवान् महावीर का ऐसा धार्मिक उपदेश सुनकर उसे सम्यक् प्रकारसे अंगीकार किया. और उनकी आज्ञामें यत्नापूर्वक जाना, खडे रहना, बैठना, सोना, भोजन करना, बोलना व सावध रहना ऐसे करने लगे. सावध होकर प्राणभूत जीव व सत्व की रक्षा कर संयम पालने लगे. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करने लगे ॥ २२ ॥ तब ईर्या स-

सूत्र

भवंति, एवं जाव, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिएखंधे, एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखधा भवंति। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले,एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे,एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति, एवं जाव, अहवा एगयओ दसपएसिएखंधे एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसिया खंधा भवंति ॥ एवं एएणं कमेणं पंचसंजोगोवि भाणियव्वो जाव णवसंजोगा ॥ दसहा कज्जमाणे एगयओ णवपरमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ।एवं एएणं कमेणं एक्केको पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिएखंधे भवइ एगयओ

भावार्थ

अथवा एक परमाणु पुद्गल तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध इस तरह इस क्रम से पांच छ यावत् नव तक कहना. अब दश टुकडे करते नव परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशी स्कंध, आठ परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. इस क्रम से एक दश प्रदेशात्मक स्कंध नव संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दश संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. संख्यात टुकडे करते

शब्दार्थ — जी० जीव स० सत्व सं० संयम से सं० यतना करना अ० इस अ० अर्थ केलिये णो० नहीं किं० किंचित् प० प्रमाद करना ॥ २१ ॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का ए० ऐसा ध० धर्म उ० उपदेश स० सम्यक् सं० अंगीकार क्रिया त० उस आ० आज्ञाको त० जैसे ग० जावे चि० रहे नि० बैठे तु० सोवे भुं० भोजनकरे भा० बोले उ० खडाहोवे पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स०सत्व सं०संयम सं०यत्नकरे अ०इस अ० अर्थ में णो० नहीं प० प्रमादकरे

सूत्र — संजमेणं संजमियव्वं. असिंचणं अट्ठे णोकिंचि पमाइयव्वं. ॥ २१ ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धाम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ,तमाणाए तहगच्छइ,तहचिट्ठइ,तहनिसीयइ,तहतुयट्टइ, तहभुंजइ तह भासइ,तहउट्ठाएइ तहपाणेहिं भूएहिंजीवेहिंसत्तेहिं संजमेणं संजमइ, असिंचणंअट्ठेणोपमायइ ॥ २२ ॥

भावार्थ — व यत्नापूर्वक बोलना. ऐसे ही उद्यमवन्त बनकरके प्राण भूत जीव व सत्व से संयम पालना. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद करना नहीं ॥ २१ ॥ तब कात्यायन गोत्रीय खंदकने श्रमण भगवान् महावीर का ऐसा धार्मिक उपदेश सुनकर उसे सम्यक् प्रकारसे अंगीकार किया. और उनकी आज्ञामें यत्नापूर्वक जाना, खडे रहना, बैठना, सोना, भोजन करना, बोलना व सावध रहना ऐसे करने लगे. सावध होकर प्राणभूत जीव व सत्व की रक्षा कर संयम पालने लगे. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करने लगे ॥ २२ ॥ तब ईर्या स-

सूत्र

भवंति, एवं जाव, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिएखंधे, एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखधा भवंति। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले,एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे,एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति, एवं जाव, अहवा एगयओ दसपएसिएखंधे एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसिया खंधा भवंति ॥ एवं एएणं कमेणं पंचसंजोगोवि भाणियव्वो जाव णवसंजोगा ॥ दसहा कज्जमाणे एगयओ णवपरमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ।एवं एएणं कमेणं एक्केको पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिएखंधे भवइ एगयओ

भावार्थ

अथवा एक परमाणु पुद्गल तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध इस तरह इस क्रम से पांच छ यावत् नव तक कहना. अब दश टुकडे करते नव परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशी स्कंध, आठ परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. इस क्रम से एक दश प्रदेशात्मक स्कंध नव संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दश संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. संख्यात टुकडे करते

शब्दार्थ

हृष्ट तु०तुष्ट जा०यावत् न०नमस्कारकर मा०एकमासकी भि०भिक्षु प्रतिमा उ०अंगीकारकर वि०विचरनेलगे ॥ २५ ॥ से० वह खं० खंदक अ० अनगार मा० एकमास की भि० भिक्षु प्रतिमा अ० यथासूत्र अ० यथाकल्प अ० यथामार्ग अ० यथातथ्य अ० यथा सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शे पा० पाले सो० संभाग करे ती० दापटाले पू० पूर्ण करे कि० कीर्तनकरे अ०पाले आ०आज्ञा से आ० आराधे स० सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शकर जा० यावत् आ० आराधकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त

सूत्र

अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव नमंसित्ता मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥२५॥ तएणं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं, अहाकप्पं, अहामग्गं, अहातच्चं, अहासमं, सम्मं काएणं फासेइ, पालेइ, सोभेइ, तीरेइ, पूरेइ, किट्टेइ अणुपालेइ, आणाए आराहेइ; सम्मं काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता, जेणेव

भावार्थ

मा अंगीकार कर विचरने लगे ॥ २५ ॥ तब श्री खंदक अनगार जैसी सूत्र में एक मास की भिक्षु प्रतिमा की विधि कही है वैसी भिक्षु प्रतिमा को कल्प अनुसार, मार्ग अनुसार पालने लगे. वैसे ही क्षयोपशम भाव से अतिक्रमे नहीं. सम्यक् प्रकार से काया से स्पर्शी, विधि से ग्रहण की, वारंवार उपयोग रखकर पाली, पूर्ण की, कीर्ति की, अनुपालना की-यावत् आज्ञा पूर्वक आराधी. सम्यक् प्रकार काया से स्पर्श कर यावत् आज्ञासे आराध कर जहां श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आये, आकर श्रमण

सूत्र

भवंति, एवं जाव, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिएखंधे, एगयओ दो संखेज्ज पएसियाखधा भवंति। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले,एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे,एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसियाखंधा भवंति, एवं जाव, अहवा एगयओ दसपएसिएखंधे एगयओ तिण्णि संखेज्ज पएसिया खंधा भवंति ॥ एवं एएणं कमेणं पंचसंजोगोवि भाणियव्वो जाव णवसंजोगा ॥ दसहा कज्जमाणे एगयओ णवपरमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ, अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए एगयओ संखेज्ज पएसिएखंधे भवइ।एवं एएणं कमेणं एक्केको पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिएखंधे भवइ एगयओ

भावार्थ

अथवा एक परमाणु पुद्गल तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध तीन संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध इस तरह इस क्रम से पांच छ यावत् नव तक कहना. अब दश टुकडे करते नव परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशी स्कंध, आठ परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. इस क्रम से एक दश प्रदेशात्मक स्कंध नव संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा दश संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. संख्यात टुकडे करते

शब्दार्थ

हृष्ट तु०तुष्ट जा०यावत् न०नमस्कारकर मा०एकमासकी भि०भिक्षु प्रतिमा उ०अंगीकारकर वि०विचरनेलगे ॥ २५ ॥ से० वह खं० खंदक अ० अनगार मा० एकमास की भि० भिक्षु प्रतिमा अ० यथासूत्र अ० यथाकल्प अ० यथामार्ग अ० यथातथ्य अ० यथा सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शे पा० पाले सो० संभाग करे ती० दापहाले पू० पूर्ण करे कि० कीर्तनकरे अ०पाले आ०आज्ञा से आ० आराधे स० सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शकर जा० यावत् आ० आराधकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त

सूत्र

अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव नमंसित्ता मासियंभिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥२५॥ तएणं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं, अहाकप्पं, अहा-मग्गं, अहातच्चं, अहासमं, सम्मं काएणं फासेइ, पालेइ, सोभेइ, तीरेइ, पूरेइ, किट्टइ अणुपालेइ, आणाए आराहेइ; सम्मं काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता, जेणेव

भावार्थ

मा अंगीकार कर विचरने लगे ॥ २५ ॥ तब श्री खंदक अनगार जैसी सूत्र में एक मास की भिक्षु प्रतिमा की विधि कही है वैसी भिक्षु प्रतिमा को कल्प अनुसार, मार्ग अनुसार पालने लगे. वैसे ही क्षयोपशम भाव से अतिक्रमे नहीं. सम्यक् प्रकार से काया से स्पर्शी, विधि से ग्रहण की, वारंवार उपयोग रखकर पाली, पूर्ण की, कीर्ति की, अनुपालना की-यावत् आज्ञा पूर्वक आराधी. सम्यक् प्रकार काया से स्पर्श कर यावत् आज्ञासे आराध कर जहां श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आये, आकर श्रमण

सूत्र

पएसिए खंधे भवइ, अहवा दो असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवति एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दस पएसिए खंधे एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दो असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो असंखेज्ज पदेसिया खंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्ज पएसिए खंधे

भावार्थ

एक परमाणु पुद्गल एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध ऐसे ही एक परमाणु पुद्गल एक दश प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा एक परमाणु पुद्गल एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. अथवा एक परमाणु पुद्गल दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक द्विप्रदेशात्मक स्कंध दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध यावत् एक दश प्रदेशात्मक स्कंध दो असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध दो असं-

शब्दार्थ दिवस में ठा० उत्कट आसन मे सू० सूर्याभिमुख आ० आताप भू० भूमि में आ० आतापनालेते र० रात्रि को वी० वीरासन से अ० वस्त्र रहित त० तीसरा मा० मास में अ० अष्ट अ० अष्ट से च० चौथा मास मे द० चार उपवास से पं० पांचवे मास में बा० पांच उपवास से छ० छठा मास में चो० छ उपवास से सा० सातवा मास में सो० सात उपवास से अ० आठवा मास में अ० आठ उपवास से न० नवमा मास में वी० नव उपवास से द० दसवा मास में वा० दशउपवास से ए० इग्यारह मास में च इग्यारह

सूत्र आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय, एवं तच्चं मासं अट्ठमं अट्ठमेणं, चउत्थं मासं दसमंदसमेणं, पंचमंमासं बारसमं बारसमेणं छट्ठं मासं चोद्दसमं चोद्दसमेणं, सत्तमंमासं सोलसमं सोलसमेणं, अट्ठमंमासं अट्ठारसमं अट्ठारसमेणं, नवमंमासं बीसइमं बीसइमेणं, दसमंमासं बावीसइमं बावीसइमेणं, एक्कारसमं मासं चउवीसइमं चउवीसइमेणं, बारसमं मासं छव्वीसइमं छव्वीसइमेणं, तेरसमं

भावार्थ दूसरे महिने में दो दो उपवास का पारना, तीसरे महिने में तीन तीन उपवास, चौथे मास में चार चार उपवास, पांचवे में पांच पांच, छठे में छ छ उपवास, सातवेमें सात सात उपवास, आठवे में आठ आठ उपवास, नवे में नव नव उपवास, दशवेमें दश दश उपवास, अग्यारहवेमें अग्यारह २ बारवे में बारह २ तेरवे में तेरह२, चौदवे में चौदह२, पंदरहवे में पंदरह २, और सोलहवे मास में सोलह२ उपवासका पारणा

असंखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा संखेज्जा असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति, असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ॥ १० ॥ अणंताणं भंते ! परमाणुपोग्गला जाव किं भवंति ? गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव दसहावि संखेजहा असंखेज्जहा अणंतहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, । तिहाकज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ, जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असंखेज्ज

भावार्थ

त्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, संख्यात संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध अथवा संख्यात असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध. असंख्यात टुकडे करने से असंख्यात परमाणु पुद्गल होते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अनंत परमाणु पुद्गल एकत्रित होने से क्या होता है ? अहो गौतम ! अनंत परमाणु पुद्गल मीलने से अनंत प्रदेशात्मक स्कंध होता है. उस के विभाग करने से दो तीन यावत् दश संख्यात असंख्यात व अनंत विभाग होते हैं. दो विभाग करने से एक परमाणु पुद्गल

शब्दार्थ वहुत च० चार छ० छ अ० आठ द० दश दु० बारह मा० अर्ध मास मा० मासखमण वि० विचित्र त० तप कर्म से अ० आत्मा को भा० विचारते वि० विचरते है. ॥२६॥ त० तब खं० खंदक ते० उस उ० उदार वि० विपुल प० गुरु की आज्ञा से कराया हुवा (प० प्रमाद रहित कराया) प० मान पूर्वक रहा हुवा क० कल्याण कारी सि० मोक्ष के हेतु भूत ध० धर्म धनवान्त मं० मंगल स० सुशोभित उ० प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त उ० उत्तम उ० उदार म० वहुत प्रभाव वाला त० तप कर्म से सु० शुष्क लु० रुक्ष नि० मांस रहित अ०

सूत्र उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ. बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठमदसम दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ तएणं सेखंदए अणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गाहिएणं कल्लाणेणं, सिवेणं, धन्नेणं, मंगल्लेणं, सस्सिरीएणं, उदग्गेणं, उदत्तेणं, उत्तमेणं उदारेणं, महाणुभागेणं,

भावार्थ स्वामी को वंदना नमस्कार कर एक उपवास, दो उपवास, तीन उपवास यावत् पंदरह उपवास, मास खमण ऐसे विविध प्रकार के तप करते हुवे खंदक अनगार विचरने लगे ॥२६॥ उस समय में खंदक अनगार आशंसा रहित सो उदार, प्रधान, विपुल, गुरुकी आज्ञा से कराया हुवा, बहुत मान पूर्वक कराया हुवा, कल्याणकारी, मंगलकारी, धर्मरूप धन करनेवाला, सुशोभनिक, उत्तरोत्तर वृद्धि करनेवाला, उत्तम, उदार व

सूत्र

चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्ज संजोगो. एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव जाव अणंताणवि भाणियव्वं, णवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्ज पएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा संखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति, असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा दुपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, जाव अहवा एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया

भावार्थ

शात्मक स्कंध अथवा तीन अनंत प्रदेशात्मक स्कंध चार विभाग करने से तीन परमाणु पुद्गल एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध. इसी क्रम से चार पांच यावत् संख्यात संयोग जैसे असंख्यात का कहा वैसे ही कहना विशेष में यहां अनंत बोल कहना. यावत् संख्यात संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध, एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध, अथवा संख्यात असंख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध. अथवा संख्यात अनंत प्रदेशात्मक स्कंध, असंख्यात विभाग करने से असंख्यात परमाणु पुद्गल एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध, असंख्यात द्विप्रदेशात्मक स्कंध यावत् असंख्यात संख्यात प्रदेशात्मक स्कंध एक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध असं-

शब्दार्थ सुकाया हुआ स० शब्द सहित ग० जाता है स० शब्द सहित चि० खडा रहता है ए० ऐसे खं० खंदक अ० अनगार स० शब्द सहित ग० जाता है स० शब्द सहित चि० बैठता है उ० पुष्ट त० तप से अ० दुर्बल मं० मांस सो० रुधिर से हु० अग्नि समान अ० भस्म में प० छुपाहुवा त० तपके ते० तेजसे त० तपतेज की सी० लक्ष्मी से अ० बहुत उ० शोभते चि० रहता है ॥ २८ ते० उसकाल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर में स० समोसरण जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगई ॥ २९ ॥ त० तब त० उस

सूत्र दिण्णा सुक्कासमाणी ससद्दंगच्छइ, ससद्दंचिट्ठइ, एवामेव खंदए अणगारे ससद्दंगच्छइ ससद्दंचिट्ठइ । उवाचिते तवेणं अवाचिए मंससोणिएणं हुयासणेवि भासरासि पडिच्छण्णे, तवेणं तेएणं, तवतेय सिरीए अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ ॥ २८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहेनयरे समोसरणं जाव परिसा पडिगया ॥ २९॥ तएणं

भावार्थ लकडी से भरा हुवा गाडा, और कोयले से भरा हुवा गाडा है. उस में रही हुई वस्तु सूर्य की ऊष्णता से जब सुक जाती है और उस समय जब गाडा चलता है तब उस में जैसे कडकडाट शब्द नीकलता है वैसा ही शब्द खंदक अनगार के रक्तमांस विना के शरीरमें से नीकलता है. खंदक अनगार के शरीर में रक्त मांस नहीं होने पर तपरूप तेज से उनका शरीर भस्ममें ढकी हुई अग्नि समान तेजस्वी दीखता है ॥२८॥ उस काल उस समयमें श्री महावीर स्वामी राजगृह नगरमें पधारे और परिषदा वंदन करने को आई और धर्मोपदे

सूत्र

पोग्गलपरियट्टे, तेया पोग्गलपरियट्टे, कम्मापोग्गलपरियट्टे, मण पोग्गलपरियट्टे वइ पोग्गलपरियट्टे, आणापाणु पोग्गलपरियट्टे ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते? गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते तंजहा ओरालिय पोग्गलपरियट्टे, वेउव्विय पोग्गलपरियट्टे जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ १४ ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स केवइया ओरालिय पोग्गल-परियट्टा अतीता? गोयमा! अणंता, केवइया पुरक्खडा? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा

भावार्थ

पुद्गल परावर्त, कार्माण पुद्गल परावर्त, मन पुद्गल परावर्त, वचन पुद्गल परावर्त व श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने पुद्गल परावर्त कहे हैं ? अहो गौतम ! नारकी को सात पुद्गल परावर्त कहे हैं ऐसे ही उक्त सातों पुद्गल परावर्त वैमानिक तक जानना. ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! एक २ नारकी को कितने उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में हुए ? अहो गौतम ! अतीत काल में एक २ नारकी को उदारिक के अनंत पुद्गल परावर्त हुए क्यों कि अतीत काल व जीव दोनों अनादि हैं. अहो भगवन् ! एक २ नारकी आगे कितने उदारिक पुद्गल परावर्त करेंगे ? अहो गौतम ! जो दूर भव्य

शब्दार्थ तं० इसलिये अ० है ता० उतने म० मेरे उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम तं० इसलिये जा० जहांलग ता० वे मे० मेरे अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम जा० जहांलग मे० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जि० जिन सु० सुस्वामी वि० विचरते हैं ता० वहांलग मे० मुझे से० श्रेय क० कल पा० प्रकट प० प्रभात में र० रात्रि को कु० विकशित उ० उत्पल क० हरिण के नेत्र को० कोमल उ० खुले

सूत्र

कम्मेबले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे तं जाव तामे आत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे जाव मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ ताव तामे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल कोमलुमिलियंभि, अहपंडुरे पभाए रत्तासोगप्पकासे,किंसुय सुयमुह गुंजद्ध रागसरिसे,

भावार्थ कोयले का गाडा चलते जैसा शब्द होवे वैसे ही मेरे चलने पर शब्द होता है. तथापि मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है. और जहां लग मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है और जहां लग मेरे धर्माचार्य: धर्म गुरु, रागद्वेष के जीतनेवाले व सुस्वामी श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी विचर रहे हैं वहां लग विकशित कोमल कमल (हरिण के नेत्र) से उन्मीलित, पांडुर

सूत्र

केवइया पुरक्खडा? अणंता । एवं जाव वेमाणियाणं ॥ एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि, एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टावि जाव वेमाणियाणं एवं एए पोहत्तिया सत्तचउव्वीस दंडगा ॥ १६ ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता? गोयमा! णत्थि एक्कोवि। केवइया पुरक्खडा? नत्थि एक्कोवि ॥ एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया ओरालियपोग्गल परियट्टा एवं चेव. एवं जाव थणिय कुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥

भावार्थ

उदारिक पुद्गल परावर्त किए? अहो गौतम! सब नारकीने अतीत काल में अनंत पुद्गल परावर्त किये. अहो भगवन्! आगे कितने उदारिक पुद्गल परावर्त करेंगे? अहो गौतम! अनंत पुद्गल परावर्त करेंगे ऐसे ही वैमानिक तक जानना. जैसे उदारिक का कहा वैसे ही वैक्रेय आदि सब पुद्गल परावर्त का जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! एक २ नारकीने नारकीपने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त अतीत काल में किए? अहो गौतम! एक भी नहीं किया क्योंकि नारकी में उदारिक शरीरका अभाव है. अहो भगवन्! आगामिक काल में कितने करेंगे? अहो गौतम! आगामिक काल में एकभी नहीं करेंगे. क्योंकि नरक में उदारिक शरीर नहीं है. अहो भगवन्! एक २ नारकी असुर कुमारपने कितने उदारिक पुद्गल परावर्त किये? अहो गौतम? एक नारकीने, असुर कुमारपने एकभी पुद्गल परावर्त किया नहीं है और करेंगे

शब्दार्थ तं० इसलिये अ० है ता० उतने म० मेरे उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम तं० इसलिये जा० जहांलग ता० वे मे० मेरे अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम जा० जहांलग मे० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जि० जिन सु० सुखार्थी वि० विचरते हैं ता० वहांलग मे० मुझे से० श्रेय क० कल पा० प्रकट प० प्रभात में र० रात्रि को कु० विकाशित उ० उत्पल क० हरिण के नेत्र को० कोमल उ० खुले

सूत्र

कम्मेबले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे तं जाव तामे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे जाव मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ ताव तामे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल कोमलुमिलियंमि, अहपंडुरे पभाए रत्तासोगप्पकासे,किंसुय सुयमुह गुंजद्ध रागसरिसे,

भावार्थ कोयले का गाडा चलते जैसा शब्द होवे वैसे ही मेरे चलने पर शब्द होता है. ताहांपि मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है. और जहां लग मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है और जहां लग मेरे धर्माचार्य. धर्म गुरु, रागद्वेष के जीतनेवाले व सुखार्थी श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी विचर रहे हैं वहां लग विकशित कोमल कमल (हरिण के नेत्र) से उन्मीलित, पांडुर

सूत्र

यत्ते, एवं जाव थणियकुमारस्स, एवं पुढविकाइयस्सवि, एवं जाव वेमाणियस्स सव्वेसिं एक्को गमओ ॥ १८ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! णरइयस्स णेरइयत्ते केवइया वेउव्वियपोग्गल परियट्टा अतीता ? अणंता. केवइया पुरक्खडा ? एगुत्तरिया जाव अणंतावा, एवं जाव थणियकुमारत्ते. पुढवीकाइयत्ते पुच्छा, णत्थि एक्कोवि केवइया पुरक्खडा ? णत्थि एक्कोवि. एवं जत्थ वेउव्विय सरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरियाओ, जत्थ णत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥ १९ ॥ तेयापोग्गल परियट्टा कम्मापोग्गल परियट्टा सव्वत्थ एगुत्तरिया भाणियव्वा॥

भावार्थ

भवनपति पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! एक नारकीने नारकीपने अतीत काल में कितने वैक्रेय पुद्गल परावर्त किये ? अहो गौतम ! अनंत पुद्गल परावर्त किये और आगामिक काल में कितनेक करेंगे, कितनेक नहीं करेंगे. जो करेंगे वे एक दो तीन यावत् संख्यात, असंख्यात व अनंत करेंगे ऐसे ही स्थनित कुमारतक कहना. पृथ्वीकाया में वैक्रेय शरीर नहीं होने से वैक्रेय पुद्गल परावर्त नहीं है अब जिस को वैक्रेय शरीर है उस को नारकी जैसे कहना और जिन को वैक्रेय शरीर नहीं है उन को पृथ्वीकाया जैसे

शब्दार्थ बडा प० पर्वत स० शनैः द० चढकर मे० मेघघन सं० समान दे० देव सन्निपात पु० पृथ्वी शिलापट प० देख कर द० दर्भ का सं० संथारा मं० बिछाकर द० दर्भके सं० संथारेपर रहाहुवा सं० संलेखना को झू० सेवा से झू० सेवित भ० भक्त पानका प० प्रत्याख्यान करने वाला पा० पादोपगमन का का० काल अ० नहीं वांच्छता वि० विचरने को ते० ऐसा क० करना ॥ ३० ॥ ए० ऐसा सं० विचारता है से० विचारकर क० कल प० प्रगट प० प्रभात में र० रात्रि को जा० यावत् ज० जलंत जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥ ३१ ॥ खंदकादि त० तुम को पू० शंकादर्शी पु० पूर्वरात्रि में अ० अपरक्त जा० यावत् जा० जा ने

सूत्र देवसन्निवायं, पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेत्ता, दब्भ संथारयं संथारित्ता, दब्भ संथारो-वगयस्स संलेहणा झूसणा झूसियस्स, भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु ॥ ३० ॥ एवं संपेहेइ एवं संपेहेइत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासइ ॥ ३१ ॥ खंदयादि समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी सेणूणं

भावार्थ होने से सुंदर ऐसी शिलापट को देखकर दर्भ का संथारा बिछाकर दर्भ संथारा में रहा हुवा संलेखना से अपनी आत्मा को कर्म से निर्मल बना कर व भक्त पान का प्रत्याख्यान कर काल को नहीं वांच्छता हुवा विचरना मुझे श्रेय है ॥ ३० ॥ ऐसा विचार करके प्रभात होते जहां श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आकर वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना की ॥ ३१ ॥ श्रमण भगवंत महावीर खंदक अन-

सूत्र

अणंता भाणियव्वा; जस्स नत्थि तस्स दोवि णत्थि भाणियव्वा, जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते ॥ केवइया आणापाणु पोग्गल परियट्टा अतीता? अणंता। केवइया पुरक्खडा? अणता ॥२१॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गल परियट्टे ? ओरालिय पोग्गल परियट्टे गोयमा! जंणं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालिय सरीरपाउग्गाइं दव्वाइं ओरालिय सरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिणिविट्ठाइं, अभिसमण्णागयाइं परियागयाइं परिणामियाइं, णिज्जिण्णाइं णिसिरियाइं णिसिट्ठाइं भवंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ओरालिय पोग्गलपरियट्टे

भावार्थ

पृथ्वी कायापने बहुत नारकीने अतीत काल में अनंत उदारिक पुद्गल परावर्त किये और आगामीक कालमें करेंगे ऐसे ही मनुष्य तक जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे कहना. ऐसे ही सातों पुद्गल परावर्त जानना. उन में जिनको जो है उनको अतीत व अनागत काल में अनंत पुद्गल परावर्त कहना. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक पुद्गल परावर्त किस तरह कहा गया है ? अहो गौतम ! उदारिक शरीर में रहा हुवा जीवने उदारिक शरीर के योग्य द्रव्य उदारिक शरीरपने ग्रहण किये, बांधे, स्पर्शे, किये, रखे, मीलाये, परिणमाये, निर्जराये, व छोडे इस से उदारिक पुद्गल परावर्त कहा गया. ऐसे ही

शब्दार्थ हंत भ० भगवन्त जा० यावत् सं० प्राप्त न० नमस्कार होवे स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को जा० यावत् सं० प्राप्त होने का का० कामी को वं० वंदना करता हूं भ० भगवन्त को त० वहां रहे हुवे इ० यहां रहाहुवा पा० देखो मे० मुझे भ० भगवन्त त० वहां रहेहुवे इ० यहां रहाहुवा ए० ऐसा बोले पु० पहिले म० मैंने स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० समीप स० सब पा० प्राणातिपात प० प्रत्याख्यान जा० जीवन पर्यंत मि० मिथ्यादर्शन शल्य प० प्रत्याख्यान इ० अभी स० श्रमण भ०

सूत्र भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामिणं भगवंतं तत्थगतं इहगओ पासउ मेसे भयवं तत्थगए इहगयंति त्तिकट्टु वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी पुव्विंपि मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए इदाणंपि

भावार्थ श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार करता हूं. क्यों कि वहां रहे हुवे भी भगवन्त मुझे यहां पर देख सकते हैं. इस तरह वंदना नमस्कार कर के ऐसा बोले की मैंने जाव जीव तक भगवंत श्री महावीर स्वामी की पास से प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान किया है और फीर भी मैं महावीर स्वामी की पास प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्यका प्रत्याख्यान करता हूं. अशन, पान, खादिम व

सूत्र

गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मपोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणा काले, तेया पोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालिय पोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे आणापाणु पोग्गल परियट्ट निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गल परियट्टणिव्वट्टणाकाले अणंतगणे, वइपोग्गल परियट्ट णिव्वट्टणाकाले अणंतगुणे, वेउव्विय पोग्गल परियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥ २४ ॥ एएसिणं भंते ! ओरालिय पोग्गल परियट्टाणं जाव आणापाणु पोग्गल परियट्टाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा वेउव्विय पोग्गल परियट्टा, वइपोग्गल परियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गल

भावार्थ

पुद्गल परावर्त निवर्तन काल क्यों कि कार्माण पुद्गल बहुत सूक्ष्म परमाणु से बनते हैं एक वक्त में बहुत ग्रहण होते हैं सब नरकादि पदमें रहनेवाले जीव समय२ में ग्रहण करते हैं इस से तेजस पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना, इस से उदारिक पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से श्वासोश्वास पुद्गल निवर्तन काल अनंत गुना इस से मन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वचन पुद्गल परावर्तन काल अनंत गुना इस से वैक्रेय पुद्गल परावर्त काल अनंत गुना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! इन उदारिक यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त में कौन किस से अल्प यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा वैक्रेय पुद्गल

शब्दार्थ वि० विचरूं ॥ ३३ ॥ त० तब खं० खंदक अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के त० तथारूप थे० स्थविर की अं० पास सा० सामायिकादि ए० अग्यारह अं० अंग अ० अध्ययन कर ब० बहुत प० पूर्ण दु० बारह वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालकर मा० मास की सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन से छे० छेदकर आ० आलोचते प० प्रतिक्रमण करते स० समाधि प्राप्त आ० अनुक्रम से का० कालको पहुंचे ॥ ३४ ॥ त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त खं० खंदक अ० अनगार को का० काल को प्राप्त जा० जानकर प० परिनिवर्तिक

सूत्र ॥३३॥ तएणं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्झित्ता, बहु पडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्ण परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालं गए ॥ ३४ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता, परिनिव्वाववत्तियं काउ-

भावार्थ भगवन्त महावीर स्वामी के तथारूप स्थविर की पास सामायिकादि छ आवश्यक व अग्यारह अंग का अध्ययन किया, और बारह वर्ष तक साधुपना पालकर एक मास की संलेखना सहित आत्मा को झूसकर साठ भक्त अनशन करके आलोचना प्रतिक्रमण करते हुवे अनुक्रम से समाधि सहित काल को प्राप्त हुवे

शब्दार्थ कौनसा रस क० कौनसा स्पर्श प० प्ररूपा गो० गौतम पं० पांच वर्ण दु० दोगंध पं० पांचरस च० चार स्पर्श प० प्ररूपा ॥१॥ अ० अथ भं० भगवन् को० क्रोध को० कोप रो० रोष दो० द्वेष अ० अक्षमा सं० संज्वलन क० कलह चं० रौद्रहोना भं० भांडना वि० विवाद करना ए० इन का क० कौनसा वर्ण जा० यावत् क० कौनसा स्पर्श गो० गौतम पं० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध च० चार स्पर्श प० प्ररूपा सरल शब्दार्थ

सूत्र परिग्गहे, एसणं कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते? गोयमा! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते ॥१॥ अह भंते कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अक्खमा, संजलणे, कलहे, चंडिके, भंडणे, विवादे, एसणं कइवण्णे जाव कइफासे प०? गोयमा! पंचवण्णे, पंचरसे दुगंधे, चउफासे पण्णत्ते ॥२॥ अह भंते! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अणुक्कोसे परपरिवाए; उक्कोसे,

भावार्थ स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछनेलगे कि अहो भगवन् प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान,, मैथुन व परिग्रह इन पांच पापस्थान में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाते हैं? अहो गौतम ये पापस्थान पुद्गल रूप होने से पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व चार स्पर्श यों १६ बोल पाते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन्! क्रोध, कोप, रोष, द्वेष, अक्षमा, संज्वलन, कलह, चांडालपना, भंडन और विवाद इन में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श कहे हैं? अहो गौतम! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस चार स्पर्श कहे हुवे हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! मान (अहंकार रखना) मद (नशा ज्यों छके) दर्प (डरता रहे,) ४ स्थंभ (स्थंभ

शब्दार्थ

वि० विचरुं ॥ ३३ ॥ त० तब खं० खंदक अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के त० तथारूप थे० स्थविर की अं० पास सा० सामायिकादि ए० अग्यारह अं० अंग अ० अध्ययन कर ब० बहुत प० पूर्ण दु० बारह वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालकर मा० मास की सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन से छे० छेदकर आ० आलोचते प० प्रतिक्रमण करते स० समाधि प्राप्त आ० अनुक्रम से का० कालको पहुंचे ॥ ३४ ॥ त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त खं० खंदक अ० अनगार को का० काल को प्राप्त जा० जानकर प० परिनिवर्तिक

मूल

॥३३॥ तएणं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्झित्ता, बहु पडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्ण परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालं गए ॥ ३४ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता, परिनिव्वाणवत्तियं काउ-

भावार्थ

भगवन्त महावीर स्वामी के तथारूप स्थविर की पास सामायिकादि छ आवश्यक व अग्यारह अंग का अध्ययन किया, और बारह वर्ष तक साधुपना पालकर एक मास की संलेखना सहित आत्मा को झूसकर साठ भक्त अनशन करके आलोचना प्रतिक्रमण करते हुवे अनुक्रम से समाधि सहित काल को प्राप्त हुवे

सूत्र

अह भंते! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थासणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मरणासा, नंदिरागे, एसणं कइवण्णे ४ पण्णत्ते? गोयमा! जहेव कोहे ॥ ५ ॥ अह भंते! पेज्जे दोसे, कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले एसणं कइवण्णे ४ प०? जहेव कोहे तहेव जाव चउफासे ॥६॥ अह भंते! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसण सल्लविवेगे एसणं कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते? गोयमा! अवण्णे, अगंधे, अरसे अफासे, पण्णत्ते ॥ ७ ॥ अह भंते! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मिया, परिणामिया,

भावार्थ

कांक्षा, गृद्धि, तृष्णा, भेद्य, अभेद्य, आशासनता (अन्य के अर्थ की आशा) प्रार्थना, लालपनता, कामाशा भोगाशा, जीविताशा, मरणाशा, नंदीराग समृद्धि होने से हर्ष इन में अहो भगवन्! कितने वर्ण गंध रस व स्पर्श कहे हुवे हैं ? अहो गौतम! क्रोध जैसे १६ बोले इस में कहे हैं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! राग द्वेष कलह यावत् मिथ्या दर्शन शल्य में कितने वर्ण गंध रस स्पर्श कहे हैं ? अहो गौतम! क्रोध जैसे १६ बोल कहे हुवे हैं. ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! प्राणातिपात विरमण यावत् परिग्रह विरमण, क्रोध का त्याग यावत् मिथ्या दर्शन शल्यका त्याग में कितने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श कहे हुवे हैं ? अहो गौतम! वर्ण, गंध,

शब्दार्थ अ० आज्ञा मिलते स० स्वतः पं० पांच महाव्रत आ० आराधकर स० साधु स० साध्वियों को खा० क्षमाकर अ० हमारी स० साथ वि० वडा प० पर्वत को नि० निरविशेष जा० यावत् आ० अनुक्रम से का० काल को प्राप्त हुवे इ० यह आ० आचार भ० भंडोपकरण ॥ ३५ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर व० बोले दे० देवानुप्रिय का अं० अंतेवासी खं० खंदक अ० अनगार का० काल के अवसर में का० काल कर के क० कहां ग०

सूत्र अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरोहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं तंचेव निरवसेसं जाव आणुपुव्वीए कालगए। इमेयसे आयारभंडए ॥ ३५ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदएणामं, अणगारे कालमासे कालंकिच्चा कहिं गए कहिं उववण्णे ? गोयमादि,

भावार्थ पनला करनेवाले, मृदुता को धारन करनेवाले, अलीन, भद्रिक व विनीत खंदक अनगार आपकी आज्ञा मीलने से पांच महाव्रत की आराधना कर और साधु साध्वी को खमाकर हमारी साथ पर्वत पर आये थे. वहां संलेखनादि करके काल को प्राप्त हुवे हैं. अहो भगवन्! इन के यह भंडोपकरण हैं ॥ ३५ ॥ उस समय में श्री गौतम स्वामी श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करके बोले कि अहो

सूत्र

सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदही, पुढवी ॥ छट्ठे उवासंतरे अवण्णे ॥ तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी एयाइं अट्ठफासाइं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं ॥ १२ ॥ जंबूद्दीवे दीवे जाव सयंभुरमणे समुद्दे सोहम्मे कप्पे जाव ईसिप्पब्भारा पुढवी, णेरइयावासा जाव वेमाणियावासा एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते ! कइवण्णा जाव कइफासा पण्णत्ता ? गोयमा ! वेउव्वियतेयाइं पडुच्च पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा चउफासा पण्णत्ता,

भावार्थ

घनवात का कहना व घनोदधि का व सातवी पृथ्वी का जानना. छट्ठा आकाशांतर में वर्णादि नहीं है. और छट्ठा तनुवात, घनवात, घनोदधि व पृथ्वी में पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श ऐसे वीस बोल कहे हैं इस तरह जैसे सातवी नरक का कहा वैसे पहिली नरक तक जानना ॥ १२ ॥ जम्बूद्वीप यावत् स्वयंभूरमण समुद्र, सौधर्म देवलोक यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी, नरकावास यावत् वैमानिक आवास इन सब में आठ स्पर्श जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने वर्णादि कहे हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय तेजस् आश्री पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श कहे हैं और कार्माण आश्री पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व

शब्दार्थ की बा० बावीस सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ ३६ ॥ भं० भगवन् खं० खंदक दे० देवता में दे० देवलोक में से आ० आयुष्य क्षयसे भ० भवक्षय से अ० पीछे च० चवकर क० कहां ग० जावेंगे क०कहां उ०उत्पन्नहोंगे गो० गौतम म० महाविदेह में सि०सिझेगा बु०बुझेगा मु०मुक्तहोगा निर्वाण पावेगा स० सब दु० दुःखों का अं० अंतकरेगा ॥ २ ॥ १ ॥ ÷ ÷ ÷

सूत्र ठिई पण्णत्ता. तत्थणं खंदयस्सवि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ३६ ॥ सेणं भंते ! खंदए देवत्ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिति, कहिं उववाजिहिति? गोयमा ! महाविदेहे सिज्झिहिति, बुज्झिहिति मुच्चिहिति, परिनिव्वाहिति, सव्वदुक्खाण मंतं करिहिति,॥खंदओ सम्मत्तो ॥३७॥ विईय सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥१॥

भावार्थ स्थिति है ॥ ३६ ॥ वहां देवलोक में आयुष्य, भव व स्थिति का क्षय होने से चवकर खंदक अनगार कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! वहां से चवकर महाविदेह क्षेत्र में उत्तम कुल में जन्म लेकर वैराग्य को प्राप्त होकर सिझेंगे, बुझेंगे, मुक्त होवेंगे, निर्वाण को प्राप्त करेंगे यावत् सब दुःख का अंत करेंगे यह खंदक जीव का अधिकार समाप्त हुआ. यह दूसरा शतकका पाहिला उद्देशा सम्पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ १ ॥

सूत्र

पडुच्च जहा णेरइयाणं, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा णेरइया॥१४॥धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए एए सव्वे अवण्णा जाव अफासा णवरं पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे अट्ठफासे पण्णत्ते ॥१५॥ णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए एयाणि जाव चउफासाणि ॥१६॥ कण्ह लेस्साणं भंते ! कइवण्णा पुच्छा ? गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, भावलेस्सं पडुच्च अवण्णा एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ १७ ॥ सम्मदिट्ठी ३, चक्खुदंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे, ५ जाव विभंगणाणे, आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा एयाणि अवण्णाणि ९,॥१८॥ओरालियसरीरे जाव तेयग

भावार्थ

का नारकी जैसे कहना ॥ १४ ॥ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय काल व जीव इन में वर्णादि नहीं है और पुद्गलास्तिकाय में पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श ऐसे बीस बोल होते हैं ॥ १५ ॥ ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय में पांच वर्ण यावत् चार स्पर्श कहे हैं ॥ १६ ॥ कृष्ण लेश्या में अहो भगवन् ! कितने वर्णादि कहे हुवे हैं ? अहो भगवन् ! द्रव्य लेश्या आश्री पांच वर्ण यावत् आठ स्पर्श कहे हुवे हैं भावलेश्या आश्री वर्णादि रहित है. ऐसे ही शुक्ल लेश्या तक जानना ॥ १७ ॥ समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, व मिश्र दृष्टि, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन व केवल दर्शन, आभिनिबोधिक

शब्दार्थ की बा० बावीस सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ ३८ ॥ भं० भगवन् खं० खंदक दे० देवता में दे० देवलोक में से आ० आयुष्य क्षयसे भ० भवक्षय से अ० पीछे च० चवकर क० कहां ग० जावेंगे क०कहां उ०उत्पन्नहोंगे गो० गौतम म० महाविदेह में सि०सिझेगा बु०बुझेगा मु०मुक्तहोगा निर्वाण पावेगा स० सब दु० दुःखों का अं० अंतकरेगा ॥ २ ॥ १ ॥ ÷ ÷ ÷

सूत्र ठिई पण्णत्ता. तत्थणं खंदयस्सवि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ३६ ॥ सेणं भंते ! खंदए देवत्ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिति, कहिं उववाज्जिहिति? गोयमा ! महाविदेहे सिज्झिहिति, बुज्झिहिति मुच्चिहिति. परिनिव्वाहिति, सव्वदुक्खाण मंतं करिहिति,॥खंदओ सम्मत्तो ॥३७॥ विईय सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥१॥

भावार्थ स्थिति है ॥ ३६ ॥ वहां देवलोक में आयुष्य, भव व स्थिति का क्षय होने से चवकर खंदक अनगार कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! वहां से चवकर महाविदेह क्षेत्र में उत्तम कुल में जन्म लेकर वैराग्य को प्राप्त होकर सिझेंगे, बुझेंगे, मुक्त होवेंगे, निर्वाण को प्राप्त करेंगे यावत् सब दुःख का अंत करेंगे यह खंदक जीव का अधिकार समाप्त हुवा. यह दूसरा शतकका पाहिला उदेशा सम्पूर्ण हुवा ॥ २॥ १ ॥

सूत्र

तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, एवं जाव अणागयद्धावि सव्वद्धावि ॥२०॥ जीवेणं भंते! गब्भं वक्कममाणे कइवण्णं कइगंधं कइरसं कइफासं परिणामं परिणमइ? गोयमा! पंचवण्णं दुगंधं पंचरसं अट्ठफासं परिणामं परिणमइ ॥२१॥ कम्मओणं भंते! जीवे णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ कम्मओणं जए णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ? हंता गोयमा! कम्मओणं तंचेव जाव परिणमइ, णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ दुवालसमसयस्सय पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ५ ॥ * ॥

भावार्थ

काल व सर्व काल वर्णादि रहित हैं ॥ २० ॥ अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता जीव कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के परिणाम को परिणमता है? अहो गौतम! पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के परिणाम को परिणमता है ॥ २१ ॥ अब जीव कर्म की विचित्रता बताते हैं. अहो भगवन्! जीव कर्म से नरकादि गति में जाता है व विना कर्म नहीं जाता है अथवा कर्म से नरकादि गतिरूप विभक्ति भाव को परिणमता है और विना कर्म से क्या नहीं परिणमता है? अहो गौतम! जीव कर्म से नरकादि गति में जाता है और विभाग रूप नरक तिर्यंच मनुष्य व देव वगैरह नाना प्रकार के रूपमयको परिणमता है. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं. यह बारहवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १२ ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

को भं० भगवन् भा० भावितात्मा के० केवली समुद्घात जा० यावत् सा० शाश्वत अ० अनागतकाल चि० रहे स० समुद्घात प० पद ने० जानना ॥ २ ॥ २ ॥ * *

क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम जी० जीवाभिगम ने० नारकी को वि०

सूत्र

यप्पणो केवली समुग्घाय जाव सासय मणागयद्धं चिट्ठंति, समुग्घायपयं णेयव्वं ॥ २ ॥ बिईयसए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ २ ॥ *

कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जीवाभिगमो नेरइयाणं जो

भावार्थ

समुद्घात. इस का सब अधिकार कषाय समुद्घात की अल्पाबहुत्व तक पन्नवणा सूत्र के समुद्घात पद जैसे कहना ॥ १ ॥ भवितात्मा अनगार को केवली समुद्घात यावत् शाश्वत अनागत काल तक रहे यह समुद्घात पद जैसे जानना. यह दूसरा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ २ ॥ *

गत उद्देशे में समुद्घात का कथन किया. जो जीव मारणान्तिक समुद्घात करता है वह जीव मरकर पृथ्वी में उत्पन्न होता है इसलिये पृथ्वी का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही. उन के नाम रत्नप्रभा यावत् तमतम प्रभा. इन पृथ्वीयों को अवगाह कर कितने दूर नरकावास रहे है ? रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है उस में उपर नीचे एक २ हजार छोडकर बीच में एक लाख अठ्ठत्तर हजार की पोलार है. उस में तीस

शब्दार्थ धारी गं० गंधधारी आ० आभरणधारी रा० राहु दे० देवके ण० नव ना० नाम प० प्ररूपे तं० वह ज० जैसे सिं० श्रृंगाटक ज० जटिल ख० क्षत्रक ख० खरक द० दर्दूर म० मकर म० मत्स्य क० कच्छप क० कृष्णसर्प ॥ १ ॥ रा० राहु दे० देवके पं० पांच वि० विमान कि० कृष्ण नी० नील लो० लोहित हा० हारिद्र सु० शुक्ल अ० है का० काला रा० राहु का विमान खं० काजल जैसा अ० है नी० नीला रा० राहु का विमान ला० तूम्बक जैसा अ० है लो० लोहित रा० राहु का विमान मं० मंजिठ जैसा अ०

सूत्र वरमल्लधरे, वरगंधधरे, वराभरणधारी; राहुस्सणं देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता-तंजहा- सिंघाडए, जडिलए, खत्तए, खरए, दद्दुरे, मगरे, मच्छे, कच्छभे, कण्हसप्पे ॥ १ ॥ राहुस्सणं देवस्स पंच विमाणा पण्णत्ता तंजहा- किण्हा नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किला ॥ अत्थि कालए राहुविमाणे खंजण वण्णाभे पण्णत्ते ॥ अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते ॥ अत्थिणं लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवण्णाभे

भावार्थ उन का यह कथन असत्य है. अहो गौतम ! मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि राहू एक महर्द्धिक व महा ऐश्वर्यवन्त देव है, श्रेष्ठ वस्त्र, माला गंध व आभरण का धारन करनेवाला है. राहू के नव नाम कहे हैं. १ श्रृंगाटक २ जटिल ३ क्षत्रक ४ खरक ५ दर्दूर ६ मकर ७ मच्छ ८ कच्छ और ९ कृष्ण सर्प ॥ १ ॥ राहू देवता के पांच वर्णवाले विमान कहे हैं, १ कृष्ण वर्णवाला २ नील वर्णवाला ३ रक्त वर्ण-

शब्दार्थ को भं० भगवन् भा० भावितात्मा के० केवली समुद्घात जा० यावत् सा० शाश्वत अ० अनागतकाल चि० रहे स० समुद्घात प० पद ने० जानना ॥ २ ॥ २ ॥ * क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम जी० जीवाभिगम ने० नारकी को वि०

सूत्र यप्पणो केवली समुग्घाय जाव सासय मणागयद्धं चिट्ठंति, समुग्घायपयं णेयव्वं ॥ २ ॥ बिईयसए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ २ ॥ * कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जीवाभिगमो नेरइयाणं जो

भावार्थ समुद्घात. इस का सब अधिकार कषाय समुद्घात की अल्पाबहुत्व तक पन्नवणा सूत्र के समुद्घात पद जैसे कहना ॥ १ ॥ भवितात्मा अनगार को केवली समुद्घात यावत् शाश्वत अनागत काल तक रहे यह समुद्घात पद जैसे जानना. यह दूसरा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ २ ॥ *

गत उद्देशे में समुद्घात का कथन किया. जो जीव मारणान्तिक समुद्घात करता है वह जीव मरकर पृथ्वी में उत्पन्न होता है इसलिये पृथ्वी का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही. उन के नाम रत्नप्रभा यावत् तमतम प्रभा. इन पृथ्वीयों को अवगाह कर कितने दूर नरकावास रहे है ? रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है उस में उपर नीचे एक २ हजार छोडकर बीच में एक लाख अठ्ठत्तर हजार की पोलार है. उस में तीस

शब्दार्थ चारणा करते चं० चंद्र लेश्या को प० पश्चिम से आ० आवर्तकर पु० पूर्व में वी० जावे त० तब प० पश्चिम में चं० चंद्र उ० देखावे पु० पूर्व में रा० राहु ए० ऐसे ज० जैसे प० पश्चिम में दो० दो आ० आलापक तं० तैसे दा० दक्षिण उ० उत्तर में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे उ० ईशान कौन में दा० नैऋत्य में दो० दो आ० आलापक ए० ऐसे दा० अग्नि उ० वायव्य में दो०दो आ०आलापक भा० कहना जा० यावत त० तब उ० वायव्य में चं० चंद्र उ० देखावे दा० अग्नि में राहु ज० जब

सूत्र

राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा, विउव्वमाणेवा, परियारेमाणेवा, चंदलेस्सं पच्चच्छिमेणं आवरेत्ताणं पुरच्छिमेणं वीईवयइ, तदाणं पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पुरच्छिमेणं राहू॥ एवं जहा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेणय उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं उत्तर पुरच्छिमेणं, दाहिण पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिण पुरच्छिमेणं, उत्तर पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा

भावार्थ वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्रकी कान्ति को पश्चिम में ढककर पूर्व में राहू जाता है तब पश्चिम में चंद्र दीखता है और पूर्व में राहू दीखता है. जैसे पूर्व पश्चिम के दो आलापक कहे वैसे ही दक्षिण उत्तर के दो आलापक जानना. ऐसे ही उत्तर पूर्व [ईशान] व नैऋत्य और अग्नि व वायव्य के दो २ आलापक जानना. यावत् वायव्य कौन में चंद्र दीखता है और अग्नि कौन में राहू दीखता है. आते, जाते वैक्रेय

निर्ग्रंथ का० काल कियाहुवा दे० देव हुवे अ० स्वतः से० वह त० तहां नो० नहीं अ० अन्य देव नो० नहीं अ० अन्य दे० देवकी दे० देवीको अ० वशकरके प० परिचारणा करे णो० नहीं अ० अपनी दे० देवीको अ० वश कर के प० परिचारणाकरे अ० आत्माको वि० विकुर्वकर प० परिचारणा करे ए० एक जी० जीव ए० एक स० समय में दो० दोवेद वे० वेदे तं० वह ज० जैसे इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद ए० ऐसे अ० अन्यतीर्थिक की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् इ० स्त्रीवेद पु० पुरुषवेद से० वह क० कैसे ए० यह भं० भग-

देवभूएणं अप्पाणेणं सेणं तत्थ णो अण्णदेवे नो अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ णो अप्पणिच्चियाओ देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय विउव्विय परियारेइ; एगेवियणं जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ तंजहा—इत्थिवेयंच, पुरिसवेयंच ॥ एवं अण्णउत्थिय-

अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि साधु निर्ग्रंथ यहां से काल कर देव होने पर आत्मा से अन्य देव या अन्य देव की देवियों को आलिंगन कर उन की साथ परिचारणा नहीं करते हैं. वैसे ही अपनी देवी की साथ भी परिचारणा नहीं करते हैं. परंतु स्वतः के शरीर को वैक्रेय बनाकर उस की साथ परिचारणा करते हैं. इस तरह करने से एक ही जीव एक समय में स्त्री वेद व पुरुष वेद ऐसे दो वेद वेदता है. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्य

शब्दार्थ मनुष्य क्षेत्र के म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु चं० चंद्र का वं० वमन कीया ज० जब रा० राहु आ० आते जा० यावत् प० परिचारना करते चं० चंद्र लेश्या को अ० नीचे स० चारों बाजु आ० आवर्त कर चि० रहे त० तब म० मनुष्य क्षेत्र में म० मनुष्य व० कहते हैं रा० राहु से चं० चंद्र घ० ग्रस्त हुवा ॥ ३ ॥ कि० कितने प्रकार का भं० भगवन् रा० राहु प० प्ररूपा गो० गौतम दु० दो रा० राहु प०

सूत्र

राहू आगच्छमाणेवा ४ चंदलेस्सं आवरेत्ताणं पच्चोसक्कइ तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु राहुस्सणं चंदे वंते ॥ एवं जयाणं राहू आगच्छमाणेवा जाव परियारेमाणेवा चंदलेस्सं अहे सपक्खि सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठइ, तयाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं २ ॥ ३ ॥ कतिविहेणं भंते ! राहू पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते, तंजहा-धुवराहूय, पव्वराहूय ॥ तत्थणं

भावार्थ लोक में मनुष्यों कहते हैं कि राहूने चंद्र का वमन किया. और जब राहू जाते आते, वैक्रेय करते व परिचारणा करते चंद्र की कान्ति को नीचे, बाजुपर व चारों दिशि में ढक कर रहता है तब मनुष्य लोक में कहा जाता है कि राहूने चंद्र ग्रहण किया ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! राहू कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! राहू दो कहे हैं. ध्रुव राहू कि जो चंद्र की साथ सदैव रहता है और पर्व राहू पूर्णिमा वगैरह पर्व तिथियों में

शब्दार्थ में उ० उद्योतकरनेवाला प० प्रकाश करनेवाला जा० यावत् प०प्रतिरूप से०वह त० तहां अ० अन्यदेव अ० अन्य देव की दे० देवीको अ० वशकर प० परिचारणा करे अ० अपनी. दे० देवीको अ० वशकर के प० परिचारणा करे णो० नहीं अ० आत्मा से अ० आत्मा को वि० विकुर्वकर प० परिचारणा करे ए० एक जी० जीव ए० एक स० समय में ए० एक वे० वेद वे० वेदे इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद जं०. जिस समय में इ० स्त्रीवेद वे० वेदे णो० नहीं तं० उस समय में पु० पुरुष वेद वे० वेदे जं० जिससमय में पु०

सूत्र वत्तारो भवंति महिड्डिएसु जाव महाणुभागेसु दूरंगतीसु, चिरट्ठितीसु सेणं तत्थ देवे भवइ महिड्डिए जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे जाव पडिरूवे सेणं तत्थ अण्णेदेवे अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणिच्चि-याओ देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, नो अप्पणामेव अप्पाणं वेउ-व्वियं परियारेइ. ! एगेवियणं जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ तंजहा इत्थिवेदंवा,

र्थ पावत् दशों दिशि में प्रकाश करनेवाला, उद्योत करनेवाला यावत् प्रतिरूप हुवा. वह देवता अन्य देव को अथवा अन्य देवता की देवियोंको अपने वश में करके भोगता है या अपनी देवी को आलिंगन कर उस की साथ परिचारणा करता है; परंतु स्वयं स्वतः का शरीरको वैक्रेय बनाकर उस वैक्रेय-बनाहुवा शरीरसे परिचारणा नहीं करसकता है. इसलिये एक जीव एक समयमें स्त्री वेद अथवा पुरुषवेद इन दोनों में से एक ही

शब्दार्थ यावत् पं० पन्नरवे में प० पन्नरवा भाग च० चरम समय में चं० चंद्र वि० खुला भ० होवे अ० अवशेष स० समय में चं० चंद्र र० आच्छादित वि० खुला भ० होवे ॥ ४ ॥ त० तहां जे० जो प० पर्वराहु ज० जघन्य छ० छमास में उ० उत्कृष्ट बा० बीयालीस मा० मास चं० चंद्र का अ० अडतालीस सं० वर्ष सू० सूर्य का ॥ ५ ॥ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है चं० चंद्र स० शशी चं० चंद्र जो० ज्योतिषीन्द्र जो० ज्योतिषी राजा का मि० मृगांक वि० विमान में कं० मनोहर दे० देव कं०

सूत्र तंचेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे २ चिट्ठइ, तं पढमाए पढमं भागं जाव विरत्तेवा भवइ ॥ तामेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे २ चिट्ठइ, तं पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसेसु पण्णरसमं भागं चरम समए चंदे विरत्ते भवइ अवसेसे समए चंदे रत्तेवा विरत्तेवा भवइ ॥४॥ तत्थणं जे से पव्वराहू से जहण्णेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स ॥५॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चंदे ससी ? गोयमा ! चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे, कंता देवा, कंताओ

भावार्थ काल अर्थात् पूर्णिमा को चंद्र विरक्त (खुला) दीखता है और शेष सब तिथियों में चंद्र आच्छादित व अनाच्छादित रहता है ॥ अब जो पर्व राहु है वह जघन्य छमास उत्कृष्ट बीयालीस मास में चंद्र को आच्छादित करता है और सूर्य को जघन्य छमास उत्कृष्ट ४८ संवत्सर में आच्छादित करता है ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! चंद्र को शशी क्यों कहा ? अहो गौतम ! ज्योतिषीन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्र को मृगांकवाला

शब्दार्थ इ० स्त्री को ॥ १ ॥ उ० पानी का ग० गर्भ का० काल से के० कितना काल हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट छ० छमास ॥ २ ॥ ति० तिर्यंच का ग० गर्भ भं० भगवन् का० काल मे के० कितनाकाल हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंतमुहूर्त उ० उत्कृष्ट अ० आठ सं० संवत्सर ॥ ३ ॥ म० मनुष्यणी का ग० गर्भ भं० भगवन् का० कालसे के० कितना काल हो० होवे गो० गौतम

मूल पुरिसोवा इत्थि ॥ १ ॥ उदगगब्भेणं भंते ! उदग गब्भेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसं छम्मासा ॥ २ ॥ तिरिक्ख जोणिय गब्भेणं भंते ! तिरिक्ख जोणिय गब्भेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नं अंतो मुहुत्तं उक्कोसं अट्ठ संवच्छराइं ॥ ३ ॥ मणुस्सी गब्भेणं भंते ! मणुस्सी

भावार्थ पुरुष स्त्री को व स्त्री पुरुष को वेद का उदय होने पर प्रार्थना करते हैं. इसलिये एक समय में एक जीव एक ही वेद वेदता है ॥ १ ॥ परिचारणा से गर्भ रहता है इसलिये गर्भ का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! पानी का गर्भ कितने कालतक रहता है ? अहो गौतम ! पानी का गर्भ जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास तक रहता है ॥२॥ अहो भगवन् ! तिर्यंच योनि में तिर्यंचका गर्भ कितने कालतक रहता है? अहो गौतम ! तिर्यंच का गर्भ जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट आठ संवत्सर तक रहता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ

राजा को कं० कितनी अ० अग्रमहिषी प० प्ररूपी ज० जैसे द० दशवे शतक में जा० यावत् णो० नहीं मे० मैथुन सेवने को सू० सूर्य त० तैसे ॥ ८ ॥ चं० चंद्र सू० सूर्य भं० भगवन् जो० ज्योतिषी रा० राजा के० कैसे का० काम भोग प० भोगवते वि० विचरते हैं गो० गौतम ज० जैसे के० कोइ पु० पुरुष प० प्रथम जो० यौवन उ० उत्थान ब० बलवाला प० प्रथम जो० यौवन उ० उत्थान ब० बलवाली भा० भार्या स० साथ अ० थोडा काल में वि० विवाह करके अ० अर्थ ग० गवेषणा को सो० सोलह वा० वर्ष वि०

सूत्र

पण्णत्ताओ ? जहा दसम सए जाव णो चेवणं मेहुणवत्तियं ॥ सूरस्सवि तहेव ॥८॥ चंदिम सूरियस्सणं भंते ! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भव-माणा विहरंति ? गोयमा ! से जहाणामए कइ पुरिसे पढमजोव्वणट्ठाण बलत्थे पढम जोव्वणट्ठाण बलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरत्त विवाहकज्जे अत्थगवेसणत्ताए सोलसवास विप्पवासिए सेणं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमए पुणरवि णियगं गिहं हव्वमागए, ण्हाए

भावार्थ

अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र ज्योतिषी के राजा चंद्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो गौतम ! इस का सब वर्णन दशवे शतक में से जानना. यावत् सभा में मैथुन सेवन को समर्थ नहीं है वहां तक कहना और सूर्य का भी वैसे ही जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र, चंद्र, सूर्य, कैसे कामभोग भोगवते हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष यौवन के उदय से प्राप्त बलवाली भार्या की साथ

शब्दार्थ रहा हुवा के० कितना काल सं० रहे गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट बा० बारह मुहूर्त ॥ ६ ॥ ए० एक जी० जीव भं० भगवन् ए० एक भव में के० कितनेका पु० पुत्र पने ह० शीघ्र आ० आवे गो० गौतम ज० जघन्य इ० एक दो० दो ति० तीन उ० उत्कृष्ट स० प्रत्येक सो जी० जीवों का० पु० पुत्रपने ह० शीघ्र आ० आवे ॥ ७ ॥ ए० एक जी० जीव को भं० भगवन् ए० एक भव में के० कितने जीव पु० पुत्रपने ह० शीघ्र आ० आवे गो० गौतम ज० जघन्य इ० एक दो० दो ति० तीन उ० उत्कृष्ट स० प्रत्येक लक्ष

सूत्र अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ ६ ॥ एग जीवेणं भंते ! एग भवग्गहणेणं केवइयाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! जहण्णेणं इक्कस्सवा दोण्हस्सवा, तिण्हस्सवा उक्कोसं सयपुहत्तस्स जीवाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ॥ ७ ॥ एग जीवस्सणं भंते एग भवग्गहणेणं केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहन्नेणं

भावार्थ न्द्रिय तिर्यंच का बीजरूप वीर्य योनि में कितने कालतक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह मुहूर्त ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! एक जीव एक भव आश्रित कितने पिता का पुत्र होवे ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन का पुत्र होवे, उत्कृष्ट प्रत्येक (नव) सो पिताका पुत्र होवे. क्योंकि बारह मुहूर्त तक योनि सचित रहती है; उस से नव सो का बीज योनि में प्रविष्ट होने से उन सब का वह पुत्र कहाता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! एक भव में एक जीव को कितने जीव पुत्रपने उत्पन्न होवे ? अहो

शब्दार्थ राजा को क० कितनी अ० अग्रमहिषी प० प्ररूपी ज० जैसे द० दशवे शतक में जा० यावत् णो० नहीं मे० मैथुन सेवने को सू० सूर्य त० तैसे ॥ ८ ॥ चं० चंद्र सू० सूर्य भं० भगवन् जो० ज्योतिषी रा० राजा के० कैसे का० काम भोग प० भोगवते वि० विचरते हैं गो० गौतम ज० जैसे के० कोइ पु० पुरुष प० प्रथम जो० यौवन उ० उत्थान व० बलवाला प० प्रथम जो० यौवन उ० उत्थान व० बलवाली भा० भार्या स० साथ अ० थोडा काल में वि० विवाह करके अ० अर्थ ग० गवेषणा को सो० सोलह वा० वर्ष वि०

सूत्र पण्णत्ताओ ? जहा दसम सए जाव णो चेवणं मेहुणवत्तियं ॥ सूरस्सवि तहेव ॥८॥ चंदिम सूरियस्सणं भंते ! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणट्ठाण बलत्थे पढम जोव्वणट्ठाण बलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरत्त विवाहकज्जे अत्थगवेसणत्ताए सोलसवास विप्पवासिए सेणं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमए पुणरवि णियगं गिहं हव्वमागए, ण्हाए

भावार्थ अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र ज्योतिषी के राजा चंद्र को कितनी अग्रमहिषियों कहीं ? अहो गौतम ! इस का सब वर्णन दशवे शतक में से जानना. यावत् सभा में मैथुन सेवने को समर्थ नहीं है वहां तक कहना और सूर्य का भी वैसे ही जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र, चंद्र, सूर्य, कैसे कामभोग भोगवते हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष यौवन के उदय से प्राप्त बलवाली भार्या की साथ

शब्दार्थ शीघ्र आ० आवे ॥ ८ ॥ मे० मैथुन भं० भगवन् से० सेवता के० कैसे अ० असंयम क० करे गो० गौतम से० वह ज० जैसे के० कोइ पु० पुरुष रु० रुइकी नालिका बू० बांस के बूरेकी नालिका में त० तपा हुवा क० सिला से स० जलावे ए० ऐसे गो० गौतम मे० मैथुन सं० सेवता अ० असंयम क० करे स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् त्ति० ऐसे जा० यावत् वि० विचरने लगे ॥ ९ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म०

सूत्र पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति. से तेणट्ठेणं जाव हव्वमागच्छइ ॥ ८ ॥ मेहुणेणं भंते ! सेवमाणस्स केरिसे असंजमे कज्जइ ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूय-नालियंवा, बूरनालियंवा, तत्तेणं कणएणं समभिधंसेज्जा, एरिसएणं गोयमा ! मेहुणं सेवमाणस्स असंजमे कज्जइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ ९ ॥ तएणं

भावार्थ एक जीव को पुत्रपने एक भव में उत्पन्न होते हैं. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! मैथुन सेवने वाले को किस तरह असंयम होवे ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष रूइ या सूके काष्ट के बूरे को नालीका में भरे, फीर अग्नि से तपाकर रक्त बनाया हुवा लोहे का दंड उस नाली में डाले, इस से उस में रही हुई रूइ जैसे जलजाती है वैसे ही मैथुन करते योनि में रहे हुवे जीवों नष्ट होजाते हैं. और इस तरह जीव का नाश होने से असंयम होता है. अहो भगवन् ! आपके वचन यथातथ्य हैं ऐसा कहते श्री गौतम स्वामी विचर रहे हैं ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

अविरक्त म० मनानुकुल स० साथ इ० इष्ट स० शब्द फ० स्पर्श जा० यावत् पं० पांच प्रकार के मा० मनुष्य के का० काम भोग प० भोगवते वि० विचरता है ता० उस गो० गौतम पु० पुरुष त्रि० रतिसमय में के० कैसा सा० सातासुख प० भोगवता वि० विचरता है उ० उदार स० आयुष्यवन्त गो० गौतम पु० पुरुष का० काम भोग से वा० वाणव्यंतर दे० देवका अ० अनंत गुणा वि० श्रेष्ठ का० काम भोग वा० वाणव्यंतर दे० देवके का० काम भोग से अ० असुर कुमार व० वर्जकर भ० भवनवासी दे० देवका अ०

सूत्र

विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सातसोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ? उरालं समणाउसो! तस्सणं गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंद वज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा, असुरिंद वज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुण विसिट्ठतराचेव काम भोगा, असुर कुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो

भावार्थ

दर वंशवाली यावत् कलावंत, अनुरक्त, अविरक्त, व पति के मन को अनुकूल ऐसी भार्या की साथ इष्ट शब्द यावत् स्पर्श ऐसे पांच प्रकार के मनुष्य के कामभोग भोगता हुआ रहे. अहो गौतम! पुरुष वेद के विकार का जो उपशम उस काल के अंत में अर्थात् वीर्य क्षरणराति समय में वह पुरुष कैसा सुख अनुभवे? अहो भगवन्! वह पुरुष उदार सुख अनुभवे. तब अहो गौतम! उस पुरुष के कामभोगों से

शब्दार्थ वाले दि० वलवन्त वि० विस्तीर्ण वि० वहुत भ० भवन स० शयन आ० आसन जा० यान वा० वाहन युक्त व० वहुत ध० धन व० वहुत जा० सुवर्ण र० रूपा आ० आयोग प० प्रयोग सं० युक्त वि० उच्छिष्ट वि० वहुत भ० आहारपानी व० वहुत दा० दासी दा० दास गो० गौ म० महिषी ग० वकरें प० वहुत व० वहुत ज० मनुष्य से अ० अपराजित अ० जाने हुवे जी० जीवाजीव उ० ओलखे पु० पुन्य पा०

सूत्र विपुल भवण सयणासण जाण वाहणाइण्णा, बहुधण बहुजायरूवरयया, आओगप- ओगसंपउत्ता विच्छड्डियविउल भत्त पाणा, बहुदासीदास गो महिसगवेलगप्पभूया, वहु जणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा, आसव संवर निज्जर किरियाहिगरण बंधप्पमोक्ख कुसला ॥ असहेज्ज देवासुर नाग सुवण्ण

र्थ आसन, यान, सुवर्ण व वाहन से व्याप्त, वैसे वहुत धन सुवर्ण चांदी व आयोग[1] प्रयोग[2] से संयुक्त थे. जिनकी भोजन शालामें इतना आहार निपजता था कि जिस को भोग कर पीछे जो बढता था उसमें से बहुत लोगोंकी आजीविका चलती थी, उन को वहुत दास दासी, गाय बैल, महिषी, गाडर वगैरह का संग्रह था. उनको पास इतनी ऋद्धिथी कि इतनी ऋद्धि वहुत से लोगों की पास नहीं थी. यह द्रव्य ऋद्धि का कथन किया. अब भाव ऋद्धि का कथन चलता है. जीव अजीव को जानने वाले थे.

१ लोगों को व्याज से देना २ व्यापार में लगाना.

शब्दार्थ

अविरक्त म० मनानुकुल स० साथ इ० इष्ट स० शब्द फ० स्पर्श जा० यावत् पं० पांच प्रकार के मा० मनुष्य के का० काम भोग प० भोगवते वि० विचरता है ता० उस गो० गौतम पु० पुरुष वि० रतिसमय में के० कैसा सा० सातासुख प० भोगवता वि० विचरता है उ० उदार स० आयुष्यवन्त गो० गौतम पु० पुरुष का० काम भोग से वा० वाणव्यंतर दे० देवका अ० अनंत गुणा वि० श्रेष्ठ का० काम भोग वा० वाणव्यंतर दे० देवके का० काम भोग से अ० असुर कुमार व० वर्जकर भ० भवनवासी दे० देवका अ०

सूत्र

विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सातसोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ? उरालं समणाउसो! तस्सणं गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंद वज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराचेव कामभोगा, असुरिंद वज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुण विसिट्ठतराचेव काम भोगा, असुर कुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो

भावार्थ

हर वंशवाली यावत् कलावंत, अनुरक्त, अविरक्त, व पति के मन को अनुकूल ऐसी भार्या की साथ इष्ट शब्द यावत् स्पर्श ऐसे पांच प्रकार के मनुष्य के कामभोग भोगता हुआ रहे. अहो गौतम! पुरुष वेद के विकार का जो उपशम उस काल के अंत में अर्थात् वीर्य क्षरणराति समय में वह पुरुष कैसा सुख अनुभवे? अहो भगवन्! वह पुरुष उदार सुख अनुभवे. तब अहो गौतम! उस पुरुष के कामभोगों से

वाले दि० बलवन्त वि० विस्तीर्ण वि० बहुत भ० भवन स० शयन आ० आसन जा० यान वा० वाहन युक्त व० बहुत ध० धन ब० बहुत जा० सुवर्ण र० रूपा आ० आयोग प० प्रयोग सं० युक्त वि० उच्छिष्ट वि० बहुत भ० आहारपानी ब० बहुत दा० दासी दा० दास गो० गौ म० महिषी ग० बकरें प० बहुत ब० बहुत ज० मनुष्य से अ० अपराजित अ० जाने हुवे जी० जीवाजीव उ० ओलखे पु० पुन्य पा०

सूत्र

विपुल भवण सयणासण जाण वाहणाइण्णा, बहुधण बहुजायरूवरयया, आओगप ओगसंपउत्ता विच्छड्डियाविउल भत्त पाणा, बहुदासीदास गो महिसगवेलगप्पभूया, बहु जणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा, आसव संवर निज्जर किरियाहिगरण बंधप्पमोक्ख कुसला ॥ असहेज्ज देवासुर नाग सुवण्ण

आसन,यान,सुवर्ण व वाहन से व्याप्त, वैसे बहुत धन सुवर्ण चांदी व आयोग प्रयोगसे संयुक्त थे.जिनकी भोजन शालामें इतना आहार निपजता था कि जिस को भोग कर पीछे जो बढता था उसमें से बहुत लोगोंकी आजीविका चलती थी, उन को बहुत दास दासी, गाय बैल, महिषी, गाडर वगैरह का संग्रह था. उनको पास इतनी ऋद्धिथी कि इतनी ऋद्धि बहुत से लोगों की पास नहीं थी. यह द्रव्य ऋद्धि का कथन किया. अब भाव ऋद्धि का कथन चलता है. जीव अजीव को जानने वाले थे.

१ लोगों को व्याज से देना २ व्यापार में लगाना.

शब्दार्थ ज्योतिपीन्द्र जो० ज्योतिषी राजा ए०इस प्रकार का का०काम भोग प०अनुभवते वि०विचरते हैं॥१२॥६॥
ते० उस काल ते० उस समय में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले के० कितना म० बडा भं० भगवन्
लो० लोक प० प्ररूपा गो० गौतम म० महा म० बडा लो० लोक प० प्ररूपा पु० पूर्व में अ० असंख्यात
योजन को० क्रोडा क्रोडी दा० दक्षिण में अ० असंख्यात ए० ऐसे प० पश्चिम में ए० ऐसे उ० उत्तर में

सूत्र दुवालसम सयरस छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ ६ ॥ * *

तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी के महालएणं भंते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! महइमहालए लोए पण्णत्ते, पुरच्छिमेणं असंखेज्जाओ जोअण कोडा कोडीओ दाहिणेणं असंखेज्जाओ एवं चेव, एवं पच्चच्छिमेणवि, एवं उत्तरेणवि, एवं

भावार्थ राजा चंद्र, सूर्य के कामभोग श्रेष्ठतर कहे हैं. अहो गौतम ! ज्योतिषी के इन्द्र चंद्र, सूर्य ऐसे कामभोग भोगते हुवे विचरते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यों कहकर भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कारकर यावत् विचरने लगे. यह बारहवा शतक का छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१२॥६॥

अनंतर उद्देशे में चंद्रादिक के अतिशय सुख कहे. चंद्रादिक लोक में होने से लोक के अंश में जीवों के जन्म जरा मरण की वक्तव्यता कहते हैं. उस काल उस समय में भगवान् गौतम स्वामी श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! लोक कितना बडा कहा है ? अहो

शब्दार्थ अर्थ ग॰ ग्रहणकिया है अर्थ पु॰ पूछा है अर्थ अ॰ जाना है अर्थ वि॰ विशेष जाना है अ॰ अर्थ. अ॰ हड्डी मिं॰ मिंज पे॰ प्रेमानुरक्त अ॰ यह आ॰ आयुष्यमान् नि॰ निर्ग्रंथ पा॰ प्रवचन अ॰ अर्थ प॰ परमार्थ से॰ शेष अ॰ अनर्थ उ॰ अच्छा फा॰ स्फटिक जैसे अ॰ खुला दु॰ द्वार चि॰ प्रसन्न अं॰ अंतः पुर प॰ परगृह प॰ प्रवेश व॰ बहुत सी॰ शीलव्रत गु॰ गुन वे॰ वेरमण प॰ प्रत्याख्यान पो॰ पोषध उप-वास से चा॰ चतुर्दशी अ॰ अष्टमी को स॰ अमावास्या पु॰ पूर्णीमा को प॰ प्रतिपूर्ण पो॰ पोपध स॰

मूत्र सेसे अणट्ठे ॥ ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउरपरघरप्पवेसा, बहूहिं सीलव्वय गुण वेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासेहिं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्ममणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाण

भावार्थ पूछकर निर्णय किया था, निर्णय वाले अर्थ को सम्यक् प्रकार से धार रखा था, निर्ग्रंथ प्रवचन में उन की हड्डी व हड्डी की मिंजिओं प्रेमानुराग से रक्त बनी हुई थी. जब किसी साथ वार्तालाप करने का प्रसंग आता तब ऐसा ही कहते कि अहो आयुष्यमन्तो ! यह निर्ग्रंथ के प्रवचन मोक्ष साधन का मार्ग है. वही अर्थ रूप है, परमार्थ रूप है, परमादरणीय है. इन सिवाय अन्य धन, पुत्रादि वैसे ही कुवचनादि अनर्थ हैं, मोक्ष के बाधक हैं. उन श्रावकों के हृदय स्फटिक रत्न की समान निर्मल थे, उन के गृह के द्वार दान देने के लिये सदैव खुले रहते थे, प्रीति करनेवाले अंतःपुर व परगृह में प्रवेश करते अप्रतीति के पात्र नहीं

सूत्र

उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्खिवेज्जा, ताओणं तत्थ पउर गोयराओ पउरपाणियाओ जहण्णेणं एगाहंवा दुयाहंवा तियाहंवा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, ॥ अत्थिणं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणु पोग्गलमेत्तेवि पएसे जेणं तासिं अयाणं उच्चारेणवा, पासवणेणवा, खेलेणवा, सिंघाणेणवा, वंतेणवा पित्तेणवा पूएणवा, सुक्केणवा, सोणिएणवा, चम्मेहिंवा, रोमेहिंवा, सिंगेहिंवा, खुरेहिंवा, णहेहिंवा अणिक्कंत पुव्वे भवइ ? णोइणट्ठे समट्ठे, होज्जाइणं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केइ परमाणुपोग्गल मेत्तेवि पएसे जेणं तासिं अयाणं उच्चारेणवा जाव णहेणवा अणिक्कंत पुव्वे णोचेवणं

भावार्थ

यावत् सहस्र बकरियां भरदेवे. उनके लिये घास चारा वगैरह की वहां बहुलता होवे. उस वाडे में उन बकरियों को जघन्य एकदिन दोदिन तीन दिन यावत् उत्कृष्ट छमास तक रखे. अब अहो गौतम ! उन वाडे का कोईभी प्रदेश ऐसा रह सकता है कि जो बकरी उच्चार, प्रस्रवण, खेंकार, सिंघाण (नाक-कामेल) वमन, पित्त, राध, शुक्र, रुधिर, चर्म, रोम, शृंग, खुर, व नख से नहीं स्पर्श हुवा होवे ? अहो भगवन्! यह अर्थ समर्थ नहीं होसकता है क्यों की वह वाडाका सब भाग बकरियों के मूत्र यावत् नख से स्पर्शाता हैं. वैसे ही इस महालोक की परमाणु जितनी जगह नहीं कि जहां जीव के जन्म जरा मरण न

शब्दार्थ णा० ज्ञानवन्त दं० दर्शनवन्त च० चारित्रवन्त ल० लज्जा ला० लाघववन्त ओ० शरीर प्रभा युक्त ते० तेजस्वी व० वर्चस्वी ज० यशस्वी जि० जिता है क्रोध जि० जिता है मान मा० माया लो० लोभ नि० निद्रा इं० इन्द्रिय प० परिषह जी० जीवित आ० वांच्छा म० मरण भ० भय सो० शोकसे वि० रहित ब० बहु श्रुत ब० बहुत परिवार वाले पं० पांच अ० अनगार स० शत स० साथ सं० रहेहुवे अ०

सूत्र दंसणसंपण्णा, चरित्तसंपण्णा, लज्जा लाघव संपण्णा, ओयंसी तेयंसी, वच्चंसी जसंसी; जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जियलोभा, जियनिद्दा, जियइंदिया, जियपरीसहा, जीवियासा मरण भय सोक विप्पमुक्का, बहुस्सुया, बहुपरिवारा, पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा अहाणुपुव्विं चरमाणा, गामाणुगामं दूइज्जमाणा, सुहं सुहेणं विहरमाणा. जेणेव तुंगियानयरी जेणेव पुप्फवईए

भावार्थ विनय सम्पन्न, मतिज्ञानादि ज्ञान सहित, सम्यक्त्व सहित, सामायिकादि चारित्र सहित, लौकिक लोकोत्तर लज्जा सहित, द्रव्य से उपधि व भाव से सर्व था लघुतावाले, ओजस्वी, तेजस्वी, वचन की विशिष्टता युक्त सो वर्चस्वी, यशस्वी, क्रोध, मान, माया व लोभ को जीतनेवाले, निद्रा, इन्द्रिय, परिषह को जीतनेवाले, जीवित, मरण, भय व शोक से मुक्त, बहुत श्रुत के धारक और चारों तीर्थरूप बहुत परिवारवाले श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्यानुशिष्य स्थविर भगवंत पांचसो साधु के परिवार सहित

सूत्र

यत्ताए उववण्ण पुव्वे ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥ ४ ॥ सव्व जीवाविणं भंते ! इमसि रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरया तंचेव जाव अणंतखुत्तो ॥ ५ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा, एवं जाव धूमप्पभाए। अयण्णं भंते! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे णिरयावास सयसहस्से एगमेगंसि सेसं तंचेव अयण्णं भंते ! जीवे अहे सत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महइ महालएसु महाणिरएसु एगमेगंसि णिरयावासंसि सेसं जहा रयणप्पभाए ॥ ६ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे चउसट्ठी असुरकुमारावास सयसहस्सेसु एग-

भावार्थ

पने, नरकपने व नारकीपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! यह जीव रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में से एक २ नरकावास में पृथ्वीकाय यावत् वनस्पतिकायापने व नारकीपने अनेकवार यावत् अनंतवार पहिले उत्पन्न हुवा ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सब जीव पहिले इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास में से एक २ नरकावास में पृथ्वीकायापने यावत् नारकीपने पहिले उत्पन्न हुवे ? हां गौतम ! अनेकवार व अनंतवार उत्पन्न हुवे. ॥ ५ ॥ जैसे रत्नप्रभा के दो आलापक कहे वैसे ही शर्कर प्रभा के २५ लाख नरकावास के दो आलापक जानना ऐसे ही वालुप्रभा के १५ लाख; पंकप्रभा के १० लाख, धूम्र प्रभा के तीन लाख, तम में पांचकम एक लाख और तमतम प्रभा के पांच अनुत्तर बहुत

शब्दार्थ पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भं० भगवन्त जा० जातिवंत जा० यावत् अ० यथाप्रतिरूप उ० अनुज्ञा ओ० लेकर सं० संयम से त०तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं म० महाफल दे० देवानुप्रिय त० तथारूप थे० स्थविर भ० भगवन्त के ना० नाम गो० गोत्र को स० सुनने से किं० क्या अ० अभिगमन वं० वंदन ण० नमस्कार प० पूछना प० पूजते जा० यावत् ग० ग्रहण करते तं०

सूत्र सद्दाविंत्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया। पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो जाति संपण्णा जाव अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा-विहरंति. तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं नामगोयस्स विसवणयाए किमंगपुण अभिगमण वंदण नमंसण पडिपुच्छण पज्जुवास-

भावार्थ वार्तालाप सुनकर बहुत आनंदित हुए. और परस्पर ऐसा बोलनेलगे कि अहो देवानुप्रिय! जातिसंपन्न यावत यथाप्रतिरूप श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्यानुशिष्य श्री स्थविर भगवन्त पुष्पावती उद्यान में आज्ञा मांगकर संयम व तपसे आत्माको भावते हुवे विचर रहे हैं. ऐसे तथारूप स्थविर भगवन्त का नाम गोत्र सुनने से ही महा फल होता है तो फीर आभिगमन, वंदन, नमस्कार, प्रतिपृच्छा, पर्युपासना यावत् अर्थादिक का ग्रहण करने का तो कहना ही क्या? इसलिये अहो देवानुप्रिय! अपन वहां जावे और स्थविर भगवन्तको वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करे. यही इस भव व परभव में अनुगामीक होगा. ऐसा परस्पर वार्तालाप

सूत्र

गंसि बेइंदियावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वण्णस्सइ काइयत्ताए बेइंदियत्ताए उववण्ण-पुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतक्खुत्तो ॥ सव्वजीवाविणं एव चेव ॥ एवं जाव मणुस्सेसु, णवरं तेइंदिएसु जाव वणस्सइ काइयत्ताए, तेइंदियत्ताए चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए एवं पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु पंचिंदिय तिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए सेसं जहा बेइंदियाणं, वाणमंतरजोइसिय सोहम्मीसाणाणय जहा असुरकुमाराणं ॥ ९ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सणंकुमारकप्पे बारसेसु विमाणावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि

भावार्थ

हुवा. ऐसे ही सब जीवों का कहना. जैसे पृथ्वीकाया के दो आलापक कहे वैसे ही अप् तेऊ, वायु व वनस्पति के दो २ आलापक कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! असंख्यात बेइन्द्रिय के वास में से एक २ वास में यह जीव पृथ्वीकाया पने यावत् वनस्पति काया पने व बेइन्द्रिय पने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? हां गौतम! अनेकवार व अनंत वार उत्पन्न हुवा. ऐसे ही सब जीवों का कहना. जैसे बेइन्द्रिय का कहा वैसे ही तेइन्द्रिय यावत् मनुष्य तक कहना विशेष में तेइन्द्रिय में तेइन्द्रियपने, चौरेन्द्रिय में चोरेन्द्रिय पने, तिर्यंच पंचेन्द्रिय में तिर्यंच पंचेन्द्रियपने और मनुष्यमें मनुष्यपने कहना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व सौधर्म ईशान का असुर कुमार जैसे कहना ॥९॥ अहो भगवन्! यह जीव सनत्कुमार देवलोक के बारह हजार विमान में से एक२विमान में पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पति कायापने देवतापने देवीपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा? अहो

शब्दार्थ प० नीकलकर ए० इकठे मि० मिले पा० पांव से चलकर तुं० तुंगिया न० नगरी की म० मध्य से नि० नीकलकर जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान हो० था त० तहां उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को पं० पांच प्रकार के अ० अभिगम से अ० जाते हैं तं० वह ज० जैसे स० सचित्त द० द्रव्य वि० त्यजकर अ० अचित द० द्रव्य अ० रखकर ए० एक पटका उ० उत्तरासन क० करके च० चक्षुदर्शन से

सूत्र सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइत्ता एगयओ मेलायंति, पायविहार-चारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति निग्गच्छइत्ता, जेणेव पुप्फवईए नामं चेइए होत्था तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता थेरे भगवंते पंचविहेणं अभि-गमेणं अभिगच्छंति तंजहा सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं,

भावार्थ स्थविर भगवंत की समीप आते हैं १. तांबूलादि सचित्त द्रव्य को अलग करना, २ वस्त्रादि अचित्त द्रव्य को अलग नहीं करना, ३ बीच में नहीं सीला हुवा ऐसा एक वस्त्र का उत्तरासन करना ४ चक्षु दृष्टि में आते ही दोनों हस्त की अंजली करना, और ५ अन्य सब छोडकर मन से साधु स्थविर भगवन्त की तरफ एकत्रता करना ऐसे पांच अभिगम किया. फीर उन स्थविर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा करके तीन प्रकारसे

॥ १२ ॥ अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घायगत्ताए, वहगत्ताए पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए, उववण्ण पुव्वे? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो सव्व जीवाविणं भंते! एवंचेव ॥ १३ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए, जाव सत्थवाहत्ताए उववण्ण पुव्वे ? हंता गोयमा! असतिं जाव अणंत खुत्तो ॥ सव्वजीवाणं एवंचेव ॥ १४ ॥ अयण्णं भंते! जीवे सव्व जीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भुयगत्ताए, भाइल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए. उववण्णपुव्वे ? हंता गोयमा! जाव अणंतखुत्तो ॥ एवं सव्वजीवावि जाव अणंत

भाई, भगिनी, भार्या, पुत्र, पुत्री व पुत्रवधूपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम! अनेकवार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! यह जीव सब जीवों के शत्रु, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक, व अमित्रपने क्या पहिले उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार यावत् अनंतवार. जैसे एक जीवका कहा वैसे सब जीवोंका जानना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! यह जीव सब जीवों के राजा, युवराज, यावत् सार्थवाहपने पहिले क्या उत्पन्न हुवा ? हां गौतम ! अनेकवार यावत् अनंतवार उत्पन्न हुवा. ऐसे ही सब जीवों का जानना ॥१४॥ अहो भगवन् ! यह जीव सब जीवों के दास, प्रेषक, भृत्यक, भागीदार, भोग पुरुष, शिष्य व द्वेष्यपने

शब्दार्थ प० नीकलकर ए० इकठे मि० मिले पा० पांव से चलकर तुं० तुंगिया न० नगरी की म० मध्य में नि० नीकलकर जे० जहां पु० पुप्फवती चे० उद्यान हो० था ते० तहां उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को पं० पांच प्रकार के अ० अभिगम से अ० जाते हैं तं० वह ज० जैसे स० सचित्त द० द्रव्य वि० त्यजकर अ० अचित द० द्रव्य अ० रखकर ए० एक पटका उ० उत्तरासन क० करके च० चक्षुदर्शन से

सूत्र सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइत्ता एगयओ मेलायंति, पायविहार-चारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति निग्गच्छइत्ता, जेणेव पुप्फवईए नामं चेइए होत्था तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता थेरे भगवंते पंचविहेणं अभि-गमेणं अभिगच्छंति तंजहा सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं,

भावार्थ स्थविर भगवंत की समीप आते हो १. तांबूलादि सचित्त द्रव्य को अलग करना, २ वस्त्रादि अचित्त द्रव्य को अलग नहीं करना, ३ बीच में नहीं सीला हुवा ऐसा एक वस्त्र का उत्तरासन करना ४ चक्षु दृष्टि में आते ही दोनों हस्त की अंजली करना, और ५ अन्य सब छोडकर मन से साधु स्थविर भगवन्त की तरफ एकत्रता करना ऐसे पांच अभिगम किया. फीर उन स्थविर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा करके तीन प्रकारसे

शब्दार्थ गो० गौतम उ० उत्पन्न होवे से० वह त० तहां अ० अर्चनीय वं० वंदनीय पू० पूजनीय स० सत्कार करने योग्य स० सन्मान करने योग्य दि० दिव्य स० सत्य स० सत्य अवपात स० सन्निहित पा० प्रातिहार्य भ० होवे त० तहां से अ० अनंतर उ० मरकर सि० सिझे बु० बुझे जा० यावत् अं० अंतकरे हं० हां सि० सिझे जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ १ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक ए० ऐसे जा० जावत् वि० विशरीरी म०

सूत्र अणंतरं चयं चइत्ता विसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ? हंता गोयमा ! उववज्जेज्जा ॥ सेणं तत्थ अच्चिय वंदिय पूइय सक्कारिय सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवए सण्णिहियपाडिहेरयावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा ॥ सेणं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा, जाव अंतकरेज्जा ? हंता सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा ॥ १ ॥ देवेणं भंते ! महिड्ढीए एवं चेव जाव विसरी-

र्थ वंदनीय, सत्कार योग्य, सन्मान योग्य, सेवा योग्य, दीव्य, सत्य, स्वप्नादि से सत्य सेवा बतानेवाला व पूर्व संगति से पास रहकर कार्य करनेवाला देवाधिष्टित क्या होता है ? हां गौतम ! वह नाग ऐसा ही होता है. अहो भगवन् ! क्या वह नाग मरकर अंतर रहित मनुष्य गति में जाकर सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ? हां गौतम ! वह सीझे बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महा ऐश्वर्यवंत देव दो शरीरी मणि (पृथ्वीकाया विशेष) में क्या उत्पन्न होता है ? अहो

शब्दार्थ अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर नि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् हि० आनंदपामे ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क०करके ए० ऐसा व० बोले सं० संयम से भं० भगवन् किं० क्या फल त० तप से भं० भगवन् किं० क्याफल त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले सं० संयम से अ० आर्य अ० अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदना

सूत्र थेराणं भगवंताणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव हियया, तिक्खुतो आयाहिणपयाहिणं करेंति करेइत्ता एवं वयासी संजमेणं भंते किं फले तवेणं भंते किं फले तएणं थेरा भगवंतो ते समणोवासए एवं वायसी संजमेणं अज्जो अणण्हयफले, तवे वोदाणफले तएणं

भावार्थ हुवे और स्थविर भगवंत को तीन आदान प्रदक्षिणा करके ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! तप व संयम का क्या फल ! तब श्रमणोपासक को स्थविर भगवंत ऐसा कहने लगे कि संयम से आश्रव का निरुंधन होना है अर्थात् संयम पालने वाले को नविन कर्म का आगमन नहीं होता है. वैसे ही पूर्वकृत कर्मों को छेदन करना यह तपका फल है. तब श्रमणोपासक बोले कि अहो भगवन् ! यदि संयम का आश्रव निरोध रूप व तपका कर्मक्षयरूप फल है तो संयम व तपके आराधन करने वाले किस कारन से देव होते हैं ? तब उन स्थविर भगवंत की पास रहने वाले स्थविरों ने इस प्रश्न का उत्तर

शब्दार्थ निर्गुणी णि॰ मर्यादाविना के णि॰ मत्याख्यान रहित पो॰ पोपध उ॰ उपवास का॰ काल के अवसर में का॰ काल करके इ॰ इस र॰ रत्नप्रभा पु॰ पृथ्वी में उ॰ उत्कृष्ट सा॰ सागरोपम ठि॰ स्थिति वाले ण॰ नरक में णे॰ नारकीपने उ॰ उत्पन्न होवे स॰ श्रमण भ॰ भगवन्त म॰ महावीर वा॰ कहते हैं उ॰ उत्पन्न होवे उ॰ उत्पन्न हुवा व॰ कहना ॥ ४ ॥ अ॰ अथ भं॰ भगवन् सी॰ सिंह व॰ व्याघ्र ज॰ जैसे उ॰ उत्सर्पिणी उ॰ उद्देशा में जा॰ यावत् प॰ परासर णि॰ निःशील ए॰ ऐसे ही जा॰ यावत् व॰ कहना

सूत्र णिम्मेरा, णिप्पच्चक्खाण पोसहोववासा कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठिइयंसि णरगंसि णेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ? समणे भगवं महावीरे वागरेइ उववज्जमाणे उववण्णेत्ति वत्तव्वं सिया ॥ ४ ॥ अह भंते ! सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे एएसिं णिस्सीला एवं चेव जाव वत्तव्वे सिया ॥ ५ ॥ अह भंते ! ढंके कंके पिलए मद्दुए सिखीए एएणं णिस्सीला

भावार्थ शील, व्रत, गुण मर्यादा मत्याख्यान व पौपधोपवास रहित काल करे तो इस रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट एक सागरोपमकी स्थिति में क्या नरकमें नारकीपने उत्पन्न होवे? श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उत्तर दिया कि उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न हुवे भी हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सिंह, व्याघ्र वगैरह जो सातवे शतक के छठे उद्देशे में कहे वैसे व्रत शीलादि व्रत मत्याख्यान रहित यावत् नरक में उत्पन्न होते हैं ॥ ५ ॥ अहो

शब्दार्थ संयम से आ० आनंद रक्षित थे० स्थविर व० बोले क० कर्म से का० काष्यप थे० स्थविर व० बोले सं० संगत से दे० देवलोक में उ० उपजते हैं पु० पूर्वतप से पु० पूर्वसंयम से क० कर्म से सं० संगत से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता त० तब स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त से ए० ऐसा वा० प्रश्नोत्तर वा० कहते ह० हृष्ट

सूत्र कम्मियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं कासवे नामं थेरे एवं वयासी संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ पुव्व तवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए, अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति. सच्चेणं एसअट्ठे नो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥ तएणं ते समणोवासया थेरेहिं भगवंतेहिं इमाइं एयारूवाइं

भावार्थ देवलोक में देवताओ होते हैं. ३ आनंदरक्षित नामक स्थविर बोले कि कर्म के विकार से देवलोक में उत्पन्न होते हैं क्योंकि समस्त कर्म का क्षय नहीं किया है परंतु थोडे बहुत दोष रहेहुवे हैं. काश्यप नामक स्थविर बोले कि संगति से देवलोक में देव होते हैं अर्थात् मनुष्यादि की संगति से सराग भाव रहने से या द्रव्यादि में सराग भाव रहने से तप संयम के आराधक देवलोक में देवता होते हैं. इस तरह पूर्व तप, पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवलोक में संयम व तप करनेवाले देव होते हैं ऐसा जो कहा है वह सत्य है. हमने हमारा अहंभाव से नहीं कहा है. तब स्थविर

शब्दार्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् भ० भविक द्रव्यदेव भ० भविक द्रव्यदेव गो० गौतम जे० जो भ० भविक पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव में उ० उत्पन्न होने वाले से० वह से० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है भ० भविक द्रव्यदेव से० वह के० कैसे न० नरदेव गो० गौतम जे० जो रा० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती उ० उत्पन्न स० समस्त-च० चक्ररत्न प० प्रधान न० नवनिधि स० समृद्धि को० कोश ब० बत्तीस रा० राजा स० प्रधान स० सहस्र अ० भगा करने वाले सा० सागर मे०

सूत्र भवियदव्वदेवा ? भवियदव्वदेवा गोयमा ! जे भविय -पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएवा मणुस्सेवा देवेसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ भवियदव्वदेवा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नरदेवा ? नरदेवा गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंत चक्कवट्टी उप्पण्ण समत्त चक्करयणप्पहाणा णवणिहि पइणो समिद्धकोसा, बत्तीसं रायवर सहस्साणुयातमग्गा, सागरवर मेहिलाहिवतिणो मणुस्सिदा, से तेणट्ठेणं जाव

भावार्थ ४ देवाधिदेव और ५ भावदेव ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भविकद्रव्य देव क्यों कहा गया ? अहो गौतम ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य में देवों का आयुष्य बांधकर देवलोक में उत्पन्न होने को योग्य होता है वह भविक द्रव्यदेव कहाता है. अहो भगवन् ! नरदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! जो समस्त भरत क्षेत्र का राजा, चारों दिशा का चक्रवर्ती, चक्ररत्नादि सात एकेन्द्रिय व सेनापति आदि सात पंचेन्द्रिय

शब्दार्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् भ० भविक द्रव्यदेव भ० भविक द्रव्यदेव गो० गौतम जे० जो भ० भविक पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव में उ० उत्पन्न होने वाले से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है भ० भविक द्रव्यदेव से० वह के० कैसे न० नरदेव गो० गौतम जे० जो रा० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती उ० उत्पन्न स० समस्त-च० चक्ररत्न प० प्रधान ण० नवनिधि स० समृद्धि को० कोश ब० बत्तीस रा० राजा व० प्रधान स० सहस्र अ० सेवा करने वाले सा० सागर मे०

सूत्र भवियदव्वदेवा ? भविदव्वदेवा गोयमा ! जे भविय पंचेंदिय तिरिक्ख जोणिएवा मणुस्सेवा देवेसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ भवियदव्वदेवा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नरदेवा ? नरदेवा गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंत चक्कवट्टी उप्पण्ण सम्मत्त चक्करयणप्पहाणा णवणिहि पइणो समिद्धकोसा, बत्तीसं रायवर सहस्साणुयातमग्गा, सागरवर मेहिलाहिवतिणो मणुस्सिंदा, से तेणट्ठेणं जाव

भावार्थ ४ देवाधिदेव और ५ भावदेव ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भविकद्रव्य देव क्यों कहा गया ? अहो गौतम ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य में देवों का आयुष्य बांधकर देवलोक में उत्पन्न होने को योग्य होता है वह भविक द्रव्यदेव कहाता है. अहो भगवन् ! नरदेव किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! जो समस्त भरत क्षेत्र का राजा, चारों दिशा का चक्रवर्ती, चक्ररत्नादि सात एकेन्द्रिय व सेनापति आदि सात पंचेन्द्रिय

शब्दार्थ बाहिर ज० अन्यदेश में व० विचरने लगे ॥ १७ ॥ ते० उस काल ते० उससमय में रा० राजगृह न० नगर जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगइ ते० उसकाल ते० उससमय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का जे० ज्येष्ट अं० अंतेवासी इं० इन्द्रभूति अ० अनगार जा० यावत् सं० संक्षिप्त वि० विपुल ते० तेजोलेश्या छ० छठ छठ से अ० अंतर रहित त० तपकर्म से सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावतेहुवे वि० विचरते थे ॥ १८ ॥ त० तब भ० भगवान् गो० गौतम छ० छठ भक्त का पा०

मूल चेइयाओ पडिनिग्गच्छंति पडिनिग्गच्छइत्ता बहिया जणवय विहारं विहरंति ॥ १७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे जाव परिसा पडिगया ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूइणामं अणगारे जाव संखित्तविउलतेउलेस्से छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १८ ॥ तएणं से भगवं गोयमे छट्ठ-

भावार्थ वन्त भी तुंगिया नगरी के पुष्पवती उद्यान में से नीकलकर अन्य देशमें विहार करने लगे ॥ १७ ॥ उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था. वहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी आये. परिषदा को भगवन्त ने धर्मोपदेश कहा. धर्मोपदेश सुनकर परिषदा पीछी गई. उस काल उस समय में श्री महावीर स्वामी के ज्येष्ट अंतेवासी विपुल तेजोलेश्याको संक्षिप्त करने वाले इन्द्रभूति नामक अनगार निरंतर छठ छठ (बेले बेले) का तप करते संयम व तप में मग्न होते विचरते थे ॥ १८ ॥ उस समय में छठ के

शब्दार्थ के० कैसे भा० भावदेव गो० गौतम जे० जो भ० भवनपति वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक दे० देव दे० देवगति णा० नाम गो० गोत्र क० कर्म वे० वेदते हैं से० वह ते० इसलिये जा० यावत् भा० भावदेव ॥ २ ॥ सरल शब्दार्थ

सूत्र .. वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया देवा देवगइनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति से तेणट्ठेणं जाव भावदेवा ॥ २ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति- किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरि-मणु-देवेहिंतो उववज्जंति ॥ भेदो जहा वक्कंतीए, सव्वेसु उववातेयव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, णवरं असंखेजवासाउय अकम्मभूमिग अंतरदीव सव्वट्ठ

अर्थ अरिहंत भगवंत होते हैं वे देवाधिदेव कहाते हैं. अहो भगवन्! भावदेव किसे कहते हैं? अहो गौतम! जो भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषि व वैमानिक देव देवगति, नाम, गोत्र के कर्म वेदते हैं वे भावदेव कहाते हैं. यह दूसरा लक्षण द्वार हुवा ॥ २ ॥ अहो भगवन्! भविक द्रव्य देव कहां से उत्पन्न होते हैं क्या नरक से उत्पन्न होते हैं तिर्यंच, मनुष्य व देव में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! भविक द्रव्य देव नरक में से, तिर्यंच में से, मनुष्य व देव में से उत्पन्न होते हैं. इसका विशेष खुलासा पन्नवणा के छठा पद में कहा है वैसे कहना यावत् अनुत्तर विमान तक के देव उत्पन्न होते हैं. परंतु असंख्यात वर्ष की स्थितिवाले अकर्म

शब्दार्थ राजगृह नगरमें उ० ऊंच नी०नीच म०मध्यम कु०कुल के घ०गृहों को भि० भिक्षा के लिये अ० विचरने को अ० यथासुखं दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध ॥ १९ ॥ त० तब भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर से अ० आज्ञा मिलते स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास से गु० गुणशील चे० उद्यान से प० नीकलकर अ० धीमे से अ० अचपल अ० असंभ्रांत जु० धूंसरा प्रमाण प० प्रलोचना दि० दृष्टि से पु० आगे रि० जाते सो० शोधते जे० जहां रा० राजगृह न० नगर ते० तहां उ०

सूत्र छट्ठक्खमण पारणयंसि रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं, घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं ॥ १९ ॥ तएणं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ गुणासिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता अतुरिय मचवलमसंभंते जुगमंतर पलोयणाए दिट्ठीए पुरओरियं सोहेमाणे २ जेणेव

भावार्थ ऊंच, वैश्यादि मध्यम व क्षुद्रादि नीच कुल के गृहों में से छठ का पारणा के लिये भिक्षा लाने को मैं इच्छता हूं. अहो देवानुप्रिय ! जैसे को तुम सुख होवे वैसा करो विलम्ब मत करो ॥ १९ ॥ इस तरह भगवन्त की आज्ञा मीलनेसे गौतम स्वामी भगवन्त श्री महावीर स्वामी की पाससे गुणशील नामक उद्यान में से नीकलकर शीघ्रता व मंदता रहित असंभ्रान्त बने हुवे युग प्रमाण आगे जमीन को दृष्टि से देखते राजगृही

सूत्र

देवेसु उववाएयव्वा, वक्कंती भेदेणं जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति। धम्मदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति-किं नेरइएहिंतो एवं वक्कंती भेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, णवरं तमा, अहे सत्तमाए तेऊवाऊ असंखेज्ज वासाउय अकम्मभूमिग अंतरदीवग वज्जेसु। देवाधिदेवाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो उववज्जंति पुच्छा? गोयमा! णेरइएहिंतो उववज्जंति, णो तिरि णो मणु देवेहिंतो उववज्जंति जइ णेरइए एवं तिसु पुढविसु उववज्जंति सेसाओ खोडेयव्वाओ, जइ देवेहिंतो वेमाणिएसु

भावार्थ

उत्पन्न होते हैं जब देव में से उत्पन्न होते हैं तब क्या भवनपति में से उत्पन्न होते हैं यावत् वैमानिक में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! भवनपति वाणव्यंतर यावत् सर्वार्थसिद्ध में से उत्पन्न होते हैं वगैरह सब पन्नवणा के छठे पद से जानना. अहो भगवन्! धर्मदेव क्या नरक यावत् देवगति में से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक यावत् देवगति में से उत्पन्न होते हैं उन की सब उत्पत्ति पन्नवणा सूत्रानुसार जानना परंतु छठी, सातवी पृथ्वी, तेऊ वायु, असंख्यात वर्ष वाले अकर्म भूमि व अंतरद्वीप के मनुष्य में से धर्मदेव नहीं होसकते हैं. अहो भगवन्! देवाधिदेव कहां से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक व देवलोक में से देवाधिदेव उत्पन्न होते हैं परंतु मनुष्य तिर्यंच में से नहीं उत्पन्न होते हैं. नारकी में से रत्नप्रभा, शर्कर प्रभा व वालुप्रभा ऐसी तीन नरक में से उत्पन्न होते हैं और देवलोक में से सर्वार्थ सिद्ध तक के सब

शब्दार्थ फ० फल त० तप से किं० क्या फल त० तब ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले सं० संयम से अ० आर्य अ० अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदन फल तं० तैसे जा० यावत् पु० पूर्वतप से पु० पूर्व संयम से क० कर्म से सं० संग से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता से० वह क० कैसे ए० यह म० मानाजाये ए० ऐसे ॥ २१ ॥ त० तब भ० भगवान् गो० गौतम इ० इस क०

सूत्र तएणं ते थेरा भगवंतो समणोवासए एवं वयासी संजमेणं अज्जो अणण्हय फले, तवे वोदाणफले, तं चेव जाव पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जांति सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आयभाववत्तव्वयाए. से कहमेयं मन्ने एवं ? ॥ २१ ॥ तएणं भगवं गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठेसमाणे जायसड्ढे

भावार्थ वन्तने उत्तर दिया कि संयम का आश्रव निरोध व तप का पूर्व कृतकर्मों के क्षय का फल है. जब ऐसा है तो तपस्वी व संयमी देव क्यों होते हैं ! पूर्व सो सराग तप से, पूर्व संयम से, कर्म विकार से व संगाति से देवलोक में देव होते हैं यह सत्य है. यह अहंभावबुद्धि से नहीं कहते हैं परंतु परमार्थ से कहते हैं. ऐसा स्थविर का वचन कैसे माननीय होवे ? ॥ २१ ॥ इस तरह नगर में वार्ता सुनकर श्रद्धा व कौतुक उत्पन्न

सूत्र

माइं ॥ ९ ॥ भविय दव्वदेवाणं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए? गोयमा ! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए ॥ एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं जाव पंचिंदिय रूवंवा, पुहत्तं विउव्वमाणे एगिंदिय रूवाणिवा जाव पंचिंदिय रूवाणिवा, ताइं संखेज्जाणिवा असंखेज्जाणिवा, संबद्धाणिवा असंबद्धाणिवा, सरिसाणिवा असरिसाणिवा, विउव्वित्तए विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो जहत्थियाइं कज्जा करेंति एवं णरदेवावि एवं धम्मदेवावि ॥ देवाहिदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए पुहत्तंपि पभू विउव्वित्तए, णो चेवणं संपत्तीए,

भावार्थ

स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव एक अथवा अनेक रूप वैक्रेय करने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! एक अथवा अनेक रूप वैक्रेय करने को भविक द्रव्य देव समर्थ है ? एक रूप वैक्रेय करते एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय के रूप का वैक्रेय करे और अनेक रूप वैक्रेय करते एकेन्द्रिय के रूपों यावत् पंचेन्द्रिय के रूपों संख्यात व असंख्यात संबद्ध या असंबद्ध, सदृश या असदृश ऐसे वैक्रेय करने को समर्थ है. फीर अपना इच्छित कार्य करते हैं, ऐसे ही नरदेव व धर्मदेव का जानना. देवाधिदेव एक अथवा अनेक वैक्रेय करने में समर्थ हैं

शब्दार्थ — उ० आकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० नजदीक ग० गमनागमनका प० प्रतिक्रमणकर ए० शुद्धाशुद्ध आ० आलोचकर भ० भक्त पानी प० देखाडकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे भं० भगवन् अ० मैं तु० तुमारी अ० आज्ञा मिलते रा० राजगृह न० नगर मे उ० ऊंच नी० नीच म० मध्यम कुल के घ० गृह समुदाय में भि० भिक्षा कोलिये अ०

सूत्र — बहुजणसद्दं निसामेइ एवं खलु देवाणुप्पिया तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया, संजमेणं भंते ! किं फले ? तवे किं फले? तंचेव जाव सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आय भाववत्तव्वयाए ॥ तं पभूणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अप्पभू ? समियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो

भावार्थ — आज्ञा से राजगृह नगर में ऊंच नीच व मध्यम कुल में भिक्षा ग्रहण करने के लिये परिभ्रमण करते बहुत मनुष्यों से मैंने ऐसा सुना कि तुंगिया नगरी की बाहिर पुष्पवती उद्यान में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के स्थविर भगवन्त को श्रमणोपासकोंने ऐसा प्रश्न पूछा कि संयम से क्या फल, तप से क्या फल? वे स्थविर भगवन्तने संयम का आश्रव निरोध व तप का पूर्व कृतकर्म क्षय का फल कहा यावत् संगति से देवलोकमें देवतापने उत्पन्न होते हैं यह सत्य है, और उसे हम हमारी बुद्धि से नहीं कहते हैं ऐसा कहा. तो अहो

सूत्र

णेरइएसु उववज्जंति, णोतिरि णोमणु, देवेसु उववज्जंति ॥ जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि पुच्छा? गोयमा! णो भवणवासी देवेसु उववज्जंति, णो वाणमंतर, णो जोइसिय, वेमाणिय देवेसु उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्धे उववज्जंति, अत्थेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेंति देवाहिदेवाणं भंते! अणंतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति? गोयमा! सिज्झंति जाव अंतं करेंति भावदेवाणं भंते! अणंतरं उवट्टित्ता पुच्छा? जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते! भवियदव्वदेवोत्ति कालओ केव-

भावार्थ

नरक में उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! धर्मदेव चवकर कहां उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! नरक, तिर्यंच व मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु देवलोक में उत्पन्न होते हैं. जब देवलोक में उत्पन्न होते हैं तब सब वैमानिक देव में सर्वार्थ सिद्ध वैमानिक तक उत्पन्न होते हैं और कितनेक सिद्ध बुद्ध यावत् मुक्त होते हैं. अहो भगवन्! देवाधिदेव कहां उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! देवाधिदेव सीझते हैं. बुझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं. अहो भगवन्! भावदेव वहां से चवकर कहां उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! जैसे असुर कुमार का उत्पन्न होने का कहा वैसे ही उद्वर्तना कहना ॥ ॥८॥ अहो भगवन्!

शब्दार्थ

उ० आकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० नजदीक ग० गमनागमनको प्र० प्रतिक्रमणकर ए०
शुद्धाशुद्ध आ० आलोचकर भ० भक्त पानी प० देखाडकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को
ना० यावत् ए० ऐसा व० बोले ए० एवं मं० भगवन् अ० मैं तु० तुमारी अ० आज्ञा मिलते रा० राज
गृह न० नगर में उ० ऊंच नी० नीच म० मध्यम कुल के घ० गृह समुदाय में भि० भिक्षा कोलिये अ०

मूल

बहुजणसद्दं निसामेइ एवं खलु देवाणुप्पिया तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईए
चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया,
संजमेणं भंते ! किं फले ? तवे किं फले ? तंचेव जाव सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आय
भाववत्तव्वयाए ॥ तं पभूणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं
एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अप्पभू ? समियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो

भावार्थ

आज्ञा से राजगृह नगर में ऊंच नीच व मध्यम कुल में भिक्षा ग्रहण करने के लिये परिभ्रमण करते बहुत
मनुष्यों से मैंने ऐसा सुना कि तुंगिया नगरी की बाहिर पुष्पवती उद्यान में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के स्थविर
भगवन्त को श्रमणोपासकोंने ऐसा प्रश्न पूछा कि संयम से क्या फल, तप से क्या फल ? वे स्थविर
भगवन्तोंने संयम का आश्रव निरोध व तप का पूर्व कृतकर्म क्षय का फल कहा यावत् संगति से देवलोकमें
देवतापने उत्पन्न होते हैं यह सत्य है, और उसे हम हमारी बुद्धि से नहीं कहते हैं ऐसा कहा. तो अहो

णेरइएसु उववज्जंति, णोतिरि णोमणु, देवेसु उववज्जंति ॥ जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि पुच्छा? गोयमा ! णो भवणवासी देवेसु उववज्जंति, णो वाणमंतर, णो जोइसिय, वेमाणिय देवेसु उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्धे उववज्जंति, अत्थेगइया सिज्जंति जाव अंतं करेंति देवाहिदेवाणं भंते ! अणंतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ? गोयमा ! सिज्झंति जाव अंतं करेंति भावदेवाणं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा ? जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ भवियदव्वदेवाणं भंते ! भवियदव्वदेवोत्ति कालओ केव-

नरक में उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! धर्मदेव चवकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक, तिर्यंच व मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु देवलोक में उत्पन्न होते हैं. जब देवलोक में उत्पन्न होते हैं तब सब वैमानिक देव में सर्वार्थ सिद्ध वैमानिक तक उत्पन्न होते हैं और कितनेक सिद्ध बुद्ध यावत् मुक्त होते हैं. अहो भगवन् ! देवाधिदेव कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! देवाधिदेव सीझते हैं. बुझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं. अहो भगवन् ! भावदेव वहां से चवकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसे असुर कुमार का उत्पन्न होने का कहा वैसे ही उद्वर्तना कहना ॥ ॥६॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ समथ भं० भगवन् ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक के ए० ऐसे वा० प्रश्न वा० कहने को अ० नहीं समर्थ स० अभ्यास वाले उ० अथवा अ० अभ्यास रहित आ० ज्ञानवंत अ० ज्ञानरहित प० विज्ञानवंत अ० विज्ञानरहित पु०पूर्वतपसे अ०आर्य दे०देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे पु० पूर्व संयम से क० कर्म से सं० संगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्म भाव व० वक्तव्यता ॥ २२ ॥ प० समर्थ गो० गौतम ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसे वा० प्रश्न को वा० कहने को णो० नहीं

सूत्र सचेणं एसमट्ठे णोचेवणं आयभाववत्तव्वयाए ॥ २२ ॥ पभूणं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए णो अप्पभू तहचेव नेयव्वं, अवसेसियं जाव पभू समियं आउज्जिय पलिउज्जिय जाव

भावार्थ वाले नहीं हैं ? ॥ २२ ॥ अहो गौतम ! उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने को वे स्थविर भगवन्त समर्थ, अभ्यासवाले, ज्ञानवन्त व परिज्ञानवन्त हैं परंतु असमर्थ, अनभ्यासवाले, अज्ञानवन्त व अपरिज्ञानवन्त नहीं हैं ॥ २३ ॥ अहो गौतम ! मैं भी ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि पूर्व-सराग-तप से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं वैसे ही पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं.

सूत्र

गोयमा ! णत्थि अंतरं भावदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो ॥ ८ ॥ एएसिणं भंते ! भवियदव्व देवाणं णरदेवाणं जाव भावदेवाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा णरदेवा, देवाहिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भविय दव्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा, ॥ ९ ॥ एएसिणं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं, सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं गेवेज्जगाणं अणुत्तरोववाइयाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा !

भावार्थ

देव का अंतर जघन्य प्रत्येक पल्योपम उत्कृष्ट देश ऊना अर्ध पुद्गल परावर्त, देवाधिदेव का अंतर नहीं है और भावदेव जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! भविक द्रव्य देव, नरदेव, यावत् भावदेव में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे नरदेव उस से देवाधिदेव संख्यातगुने उस से धर्मदेव संख्यातगुने उस से भविक द्रव्य देव असंख्यातगुने उस से भावदेव असंख्यातगुने ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! भावदेवों में भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक सौधर्म यावत् अच्युत ग्रैवेयक यावत् अनुत्तर विमान इनमें कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है ?

शब्दार्थ समथ भं० भगवन् ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक के ए० ऐसे वा० प्रश्न वा० कहने को अ० नहीं समर्थ स० अभ्यास वाले उ० अथवा अ० अभ्यास रहित आ० ज्ञानवंत अ० ज्ञानरहित प० विज्ञानवंत अ० विज्ञानरहित पु०पूर्वतपसे अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे पु० पूर्व संयम से क० कर्म से सं० संगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्म भाव व० वक्तव्यता ॥ २२ ॥ प० समर्थ गो० गौतम ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसे वा० प्रश्न को वा० कहने को णो० नहीं

सूत्र सच्चेणं एसमट्ठे णोचेवणं आयभाववत्तव्वयाए ॥ २२ ॥ पभूणं गोयमा! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए णो अप्पभू तहचेव नेयव्वं, अवसेसियं जाव पभू समियं आउज्जिय पलिउज्जिय जाव

भावार्थ वाले नहीं हैं ? ॥ २२ ॥ अहो गौतम ! उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने को वे स्थविर भगवन्त समर्थ, अभ्यासवाले, ज्ञानवन्त व परिज्ञानवन्त हैं परंतु असमर्थ, अनभ्यासवाले, अज्ञानवन्त व अपरिज्ञानवन्त नहीं हैं ॥ २३ ॥ अहो गौतम ! मैं भी ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि पूर्व-सराग-तप से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं वैसे ही पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं.

सूत्र

दवियाता, कसायाता, जोगायाता, उवओयाता, णाणत्ता, दंसणाया, चरित्तायां, वीरियाता ॥ १ ॥ जस्सणं भंते ! दवियाता तस्सणं कसायाता, जस्स कसायाता तस्स दवियाता ? गोयमा ! जस्स दवियाता तस्स कसायाता सियअत्थि सियणत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्सणं भंते ! दवियाता तस्स जोगाता एवं जहा दवियाता कसायाता भणिया तहा दवियाता जोगायायावि भाणि-

भावार्थ

१ त्रिकालानुगामी उपसर्जनी कृत कषायादि पर्यायरूप आत्मा सो द्रव्य आत्मा २ क्रोधादि कषाय विशिष्ट आत्मा सो कषाय आत्मा यह आत्मा अनुपशान्त कषायवंतको होता है ३ मन प्रभृति व्यापार रूप जो योग वह जिस को प्रधान आत्मा है सो योगात्मा यह योगवंत जीवों को होता है. ४ साकार अनाकार भेद से उपयोग जिन को प्रधान है सो उपयोग आत्मा यह संसार व सिद्ध दोनों को होता है ५ ज्ञान विशेष उपसर्जनी कृत दर्शनादि आत्मा सो ज्ञानात्मा यह सम्यग्दृष्टि को होता है ६ ऐसे ही दर्शन आत्मा का जानना परंतु दर्शनात्मा सब जीवों को होता है ७ चारित्र आत्मा विरती को होता है और ८ उत्थानादि वीर्यरूप आत्मा सो वीर्यात्मा ॥ १ ॥ अब इन आठों आत्मा का परस्पर संयोग बताते हैं. अहो भगवन् ! जिस को द्रव्य आत्मा है उस को क्या कषाय आत्मा है अथवा जिस को कषाय आत्मा है उसको क्या द्रव्य आत्मा है ? अहो गौतम ! जिसको द्रव्य आत्मा है उसको कषाय आत्मा

शब्दार्थ भं०भगवन् स०श्रमण की प०पर्युपासना करते किं०क्या फ०फल पु०पर्युपासना का गो०गौतम स० श्रवण फल स०श्रवण से णा०ज्ञानफल णा० ज्ञानसे किं०क्याफल वि०विज्ञानफल वि० विज्ञानसे किं०क्याफल प० प्रत्याख्यान फल प०प्रत्याख्यानसे सं०संयमफल सं०संयम से अ०अनाश्रवफल अ०अनाश्रवसे त०तपफल

सूत्र ॥ २४ ॥ तहारूवेणं भंते ! समणं वा पज्जुवासमाणस्स किं फला पज्जुवासणा? गोयमा ! सवणफला। से णं भंते ! सवणे किं फले ? गोयमा ! णाणफले। सेणं भंते ! णाणे किं फले ? गोयमा ! विण्णाणफले। से णं भंते ! विण्णाणे किं फले ? गोयमा ! पच्चक्खाण फले। सेणं भंते ! पच्चक्खाणे किं फले ? संजम फले। सेणं भंते ! संजमे किं फले ? अणण्हय फले। एवं अणण्हए तव फले। तवे वोदाण फले। वोदाणे अकिरिया फले। से णं भंते ! अकिरिया किं फले ?

भावार्थ क्या फल ? अहो गौतम ! ज्ञान से हेय ज्ञेय उपादेय जानने रूप विज्ञान फल होवे. अहो भगवन् ! विज्ञान से क्या फल ? अहो गौतम ! विज्ञान से पापकर्म के प्रत्याख्यान का फल होवे ? अहो भगवन् ! प्रत्याख्यान से क्या फल ? अहो गौतम ! पाप का प्रत्याख्यान करने से संयम का फल होता है. अहो भगवन् ! संयम से क्या फल होवे ? अहो गौतम ! संयम से नविन कर्मों के आश्रव द्वारों का रुंधन करने का फल होवे और इस तरह लघु कर्म होने से तपस्यावंत होवे. तप से पूर्वकृत कर्मों का क्षय होवे. और पूर्वकृत

सूत्र

अत्थि, जस्सवि दंसणाता तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ जस्स दवियाता तस्स चरित्ताया भयणाए जस्स पुण चरित्ताता तस्स दवियाता णियमं अत्थि ॥ एवं वीरियाता एवि समं ॥ २ ॥ जस्सणं भंते ! कसायाता तस्स जोगाया पुच्छा ? गोयमा ! जस्स कसायाता तस्स जोगाता णियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाता सिय

भावार्थ

उन दोनों को अविनाभूत संबंध है. अहो भगवन् ! जिस को द्रव्यात्मा है उस को क्या ज्ञानात्मा और ज्ञानात्मा वाले को क्या द्रव्यात्मा है ? अहो गौतम ! जिस को द्रव्य आत्मा है उस को ज्ञानात्मा की भजना है क्यों की सम्यग् दृष्टि को ज्ञानात्मा होता है और जो समदृष्टि होते हैं उन को ज्ञानात्मा व द्रव्यात्मा दोनों होते हैं मिथ्या दृष्टि को मात्र द्रव्य आत्मा होता है और ज्ञानात्मा वाले को द्रव्यात्मा की नियमा है क्यों की ज्ञानमय आत्मा है. जिस को द्रव्यात्मा होता है उस को दर्शनात्मा निश्चयही होता है और जिस को दर्शनात्मा होता है उस को द्रव्यात्मा निश्चय ही होता है क्यों कि दोनों अविनाभूत हैं. द्रव्य आत्मा वाले को चारित्र आत्मा की भजना है क्यों कि विरति द्रव्यात्मा को चारित्र है और अविरति व सिद्धको चारित्र नहीं है और चारित्र आत्मा वाले को द्रव्यात्मा निश्चयही है क्यों की द्रव्यात्मा बिना चारित्र नहीं ग्रहण किया जासकता है. द्रव्य आत्मा वाले को वीर्यात्मा की भजना है और वीर्यात्मा वाले को द्रव्यात्मा की नियमा है, सिद्ध में द्रव्यात्मा है परंतु करण वीर्य का अभाव है और संसारी

शब्दार्थ

दु० वृक्षकेवनखंड से मं० शोभित दे० प्रदेश स० शोभायमान जा० यावत् प० प्रतिरूप त० तहां व० बहुत उ० विस्तीर्ण व० बादल सं० सन्मुख होते हैं उ० उपजते हैं वा० वर्षते हैं त० भरा हुवा स० सदैव उ० ऊष्ण आ० पानी अ० झरना है से० वह क० कैसे भं० भगवन् गो० गौतम ज० जो अ० अन्य तीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ते० वे ए० ऐसा अ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं अ० मैं पु० फीर ए० ऐसा आ० कहता हूं रा० राजगृह न० नगर की व० बाहिर वे० वेभार प० पर्वत की

सूत्र

जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं नाणादुम खंडमंडिउद्देसे.सस्सिरीए जाव पडिरूवे,तत्थणंबहवे उदारा बलाहया संसेयंति संमुच्छियंति वासंति तव्वतिरित्तेवियणं सयासमिउं उसिणे आउकाए अभिनिस्सवइ, से कहमेयं भंते एवं ? गोयमा ! जण्णंते अण- उत्थिया एवमाइक्खंति जाव जेते एव माइक्खंति मिच्छंते एवमाइक्खंति ॥ अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि एवं खलु रायगिहस्स

भावार्थ

वगैरह से सुशोभित यावत् प्रतिरूप है. इस द्रह में बहुत बदल उत्पन्न सन्मुख होते हैं, उत्पन्न होते हैं और वर्षते हैं. वह द्रह भरजाने से जो अधिक पानी नीकलता है वह पानी सदैव ऊष्ण योनिवाला रहता हैं अर्थात् जो पानी द्रह से बाहिर नीकलता है वह सदैव ऊष्ण रहता है. अहो भगवन् ! यह किस तरह से है ! अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं वे मिथ्या ऐसा कहते हैं. अर्थात उन का कथन

सूत्र

भाणियव्वा जहा दवियाताए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगाताएवि उवरि-ल्लाहिं समं भाणियव्वा जस्स णाणाया तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए ॥ जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि

भावार्थ

जैसे कषाय आत्मा को चारित्रात्मा क्वचित् है कषायी साधुवत् और कषायात्मा को चारित्रत्मा नहीं भी है संसारीवत्. चारित्रात्मा को कषायात्मा की भजना है क्यों की उपशांत व क्षीण कषायी को चारित्र है परंतु कषाय नहीं है. और सकषायी अनगार को कषाय व चारित्र दोनों होते हैं. कषायात्मा व योगात्मा का जैसे कहा वैसे कषायात्मा व वीर्यात्मा का जानना अर्थात् कषायात्मा को वीर्यात्मा अवश्यमेव होता है और वीर्यात्माको कषायात्मा की भजना है क्यों कि कषाय मात्र दशवा गुणस्थान पर्यंत है यह कषायात्मा की साथ छ आत्मा का कहा. जैसे कषायात्मा की वक्तव्यता कही वैसे ही योगात्मा की वक्तव्यता उपर के पांच आत्मा की साथ कहना अर्थात् योगात्मा को उपयोगात्मा अवश्यमेव होता है और उपयोगात्माको योग आत्मा की भजना अयोगी सयोगीवत्. समदृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा होता है और मिथ्यादृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा नहीं होता है, और सयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा होता है और अयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा नहीं है इस से दोनों की परस्पर भजना है. योगात्मा को दर्शनात्मा नियमा है दर्शन शून्य आत्मा नहीं होने से और दर्शनात्मा को योगात्मा की भजना है अयोगी अवस्था में. योगात्मा को

शब्दार्थ हुवा स० सदा उ० उष्ण आ० अप्कायपने अ० झरता है गो० गौतम म० महातपोपतीर प्रभव पा० झरण का अ० अर्थ प० प्ररूपा से० ऐसा भं० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भगवान् म० महावीर को वं० वंदना करते हैं न० नमस्कार करते हैं ॥ २ ॥ ५ ॥ *

से० वह भं० भगवन् म० मानता हूं ओ० अवधारणी भाषा भा० भाषापद भा० कहना ॥२॥६॥

सूत्र गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥ सेवं भंते भंतेत्ति, भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ ॥ बिईय सए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ५ ॥ * * *

सेणूणं भंते ! मणामीति ओहारणी भासा भासापदं भाणियव्वं ॥ बिईयसए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ६ ॥ * * *

भावार्थ प्रभव नामक झरणा व उस का अर्थ कहा. अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है. ऐसा कहकर भगवन्त गौतमने श्रमण भगवन्त को वंदना नमस्कार किया. यह दूसरा शतकका पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥२॥५॥

गत उद्देश में मिथ्याभाषी कहे इसलिये भाषा का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! मैं ऐसा मानता हूं कि अवधारिणी भाषा इस सूत्रानुक्रम मे श्री पन्नवणा सूत्रका अग्यारहवा भाषापद कहना. भाषा को द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव ऐसे अनेक भेदों से विचारना. यह दूसरा शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा॥२॥६॥

सूत्र

भाणियव्वा जहा दवियाताए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगाताएवि उवरि-ल्लाहिं समं भाणियव्वा जस्स णाणाया तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए ॥ जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि

भावार्थ

जैसे कषाय आत्मा को चारित्रात्मा क्वचित् है कषायी साधुवत् और कषायात्मा को चारित्रात्मा नहीं भी है संसारीवत्. चारित्रात्मा को कषायात्मा की भजना है क्यों की उपशांत व क्षीण कषायी को चारित्र है परंतु कषाय नहीं है. और सकषायी अनगार को कषाय व चारित्र दोनों होते हैं. कषायात्मा व योगात्मा का जैसे कहा वैसे कषायात्मा व वीर्यात्मा का जानना अर्थात् कषायात्मा को वीर्यात्मा अवश्यमेव होता है और वीर्यात्माको कषायात्मा की भजना है क्यों कि कषाय मात्र दशवा गुणस्थान पर्यंत है यह कषायात्मा की साथ छ आत्मा का कहा. जैसे कषायात्मा की वक्तव्यता कही वैसे ही योगात्मा की वक्तव्यता उपर के पांच आत्मा की साथ कहना अर्थात् योगात्मा को उपयोगात्मा अवश्यमेव होता है और उपयोगा-त्माको योग आत्मा की भजना अयोगी सयोगीवत्. समदृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा होता है और मिथ्या-दृष्टि योगात्मा को ज्ञानात्मा नहीं होता है, और सयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा होता है और अयोगी ज्ञानात्मा को योगात्मा नहीं है इस से दोनों की परस्पर भजना है. योगात्मा को दर्शनात्मा नियमा है दर्शन शून्य आत्मा नहीं होने से और दर्शनात्मा को योगात्मा की भजना है अयोगी अवस्था में. योगात्मा को

शब्दार्थ दे० देव की व० वक्तव्यता सा०वह भा० कहना न० विशेष भ० भवन प० प्ररूपे उ० उपपात से लो० लोक का अ० असंख्यात का भाग ए० ऐसे स० सर्व भा० कहना जा० यावत् सि० सिद्धि स्थान स० संपूर्ण क० कल्प प० प्रतिस्थान बा० जाडपना उ० ऊंचा सं० संस्थान जी० जीवाभिगम में जा० यावत्

सूत्र सा भाणियव्वा. नवरं भवणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, एवं सव्वं भाणियव्वं, जाव सिद्धगंडिया सम्मत्ता ॥ कप्पाण पइट्ठाणं, बाहल्लुच्चत्तमेव संठाणं जीवाभिगमे जाव वेमाणि उद्देसो भाणियव्वो ॥ विईयसए सत्तमो

भावार्थ भाग में वर्तते हैं, उत्तर दक्षिण में रहनेवाले सब भुवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी, व वैमानिकके स्थानक का वर्णन यावत् सिद्ध स्थान प्रतिपादक प्रकरणतक का सब वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना. उस का किंचित् विस्तार यह है. १ कल्प में विमानों का आधार. सौधर्म ईशान देवलोक में विमानों घनोदधि प्रतिष्ठित हैं २ विमान का पिंड-सौधर्म ईशान देवलोक में २७०० योजन का पिण्ड है ३ ऊंचाइ-सौधर्म ईशान देवलोक में पांचसो योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ४ संस्थान-सौधर्म ईशान देवलोक में आवलिका प्रविष्ट त्र्यंस, चउरंस व वर्तुलाकार विमानों हैं, और आवलिका बाहिर विविध प्रकार के संस्थान वाले हैं. इस सिवाय और भी विमानका आवलिका परिमाण, वर्ण, प्रभा, गंधादि जीवाभिगम सूत्रके वैमानिक

सूत्र

अत्थि, जस्स पुण वीरियाता तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय णत्थि ॥ ३ ॥ एयांसिणं भंते ! दवियाताणं कसायाताणं जाव वीरियाताणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा चरित्ताया, णाणायाओ अणंत गुणाओ, कसायायाओ अणंतगुणाओ जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियाताओ विसेसाहियाओ, उवओग दविय दंसणाताओ तिण्णिवि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ ४ ॥ आया भंते ! णाणे अण्णे

भावार्थ

और वीर्यात्मा को ज्ञानात्मा की नियमा संसारी सिद्ध आश्री. यह ज्ञानात्मा का कथन किया. दर्शन आत्मा को चारित्र व वीर्यात्मा की भजना है और चारित्र व वीर्यात्मा को दर्शनात्मा की नियमा है. चारित्रात्मा को वीर्यात्मा की नियमा और वीर्यात्मा को चारित्रात्मा की भजना है विरति अविरति आश्री ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन द्रव्यात्मा कषायात्मा यावत् वीर्यात्मा में से कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है? अहो गौतम ! सब से थोडे चारित्रात्मा क्यों कि उत्कृष्ट साधु नव क्रोड रहते हैं इस से ज्ञानात्मावाले अनंतगुने सिद्ध आश्री, इस से कषायात्मा अनंतगुने वनस्पति आश्री, इस से योगात्मा विशेषाधिक तेरहवा गुणस्थान आश्री, इस से वीर्यात्मा विशेषाधिक चौदहवा गुणस्थाने आश्री, इस से उपयोगात्मा, द्रव्यात्मा व दर्शनात्मा ये तीनों परस्पर तुल्य और विशेषाधिक क्यों कि यह तीनों सब में होते हैं ॥ ४ ॥ अहो भग-

पदार्थ

दे० देव की व० वक्तव्यता सा०वह भा० कहना न० विशेष भ० भवन प० प्ररूपे उ० उपपात से लो० लोक का अ० असंख्यात का भाग ए० ऐसे स० सर्व भा० कहना जा० यावत् सि० सिद्धि स्थान स० संपूर्ण क० कल्प प० प्रतिस्थान वा० जाडपना उ० ऊंचा सं० संस्थान जी० जीवाभिगम में जा० यावत्

सूत्र

सा भाणियव्वा. नवरं भवणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, एवं सव्वं भाणियव्वं, जाव सिद्धगंडिया सम्मत्ता ॥ कप्पाण पइट्ठाणं, बाहल्लुच्चत्तमेव संठाणं जीवाभिगमे जाव वेमाणि उद्देसो भाणियव्वो ॥ विईयसए सत्तमो

भावार्थ

भाग में वर्तते हैं, उत्तर दक्षिण में रहनेवाले सब भुवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी, व वैमानिकके स्थानक का वर्णन यावत् सिद्ध स्थान प्रतिपादक प्रकरणतक का सब वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना. उस का किंचित् विस्तार यह है. १ कल्प में विमानों का आधार. सौधर्म ईशान देवलोक में विमानों घनोदधि प्रतिष्ठित हैं २ विमान का पिंड-सौधर्म ईशान देवलोक में २७०० योजन का पिण्ड है ३ ऊंचाइ-सौधर्म ईशान देवलोक में पांचसो योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ४ संस्थान-सौधर्म ईशान देवलोक में आवलिका प्रविष्ट त्र्यंस, चउरंस व वर्तुलाकार विमानों हैं, और आवलिका बाहिर विविध प्रकार के संस्थान वाले हैं. इस सिवाय और भी विमानका आवलिका परिमाण, वर्ण, प्रभा, गंधादि जीवाभिगम सूत्रके वैमानिक

सूत्र

आया णियमं दंसणे, दंसणेवि णियमं आया ॥ आया भंते ! णेरइयाणं दंसणे अण्णे णेरइयाणं दंसणे ? गोयमा ! आया णेरइयाणं णियमं दंसणे, दंसणेवि णियमं आया, एवं जाव वेमाणियाणं निरंतरं दंडओ ॥ ७ ॥ आया भंते ! रयणप्पभा पुढवी, अण्णा रयणप्पभा पुढवी ? गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय णो आया सिय अवत्तव्वं आतातिय णो आतातिय से केणट्ठेणं भंते ! एवं जाव वुच्चइ रयणप्पभा पुढवी सिय आया सिय णो आया सिय अवत्तव्वं

भावार्थ

तक कहना. बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय यावत् वैमानिक तक सब दंडक का नारकी जैसे कहना. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या आत्मा दर्शन है या अन्य कोई दर्शन है ! अहो गौतम ! आत्मा निश्चय ही दर्शन होता है और दर्शन अवश्यमेव आत्मा होता है. अहो भगवन् ! नारकी का आत्मा दर्शन है या अन्य दर्शन है ? अहो गौतम ! नारकी का आत्मा नियमा दर्शन होता है और दर्शन नियमा आत्मा होता है. ऐसे ही वैमानिक तक सब दंडक का जानना. ॥ ७ ॥ अब अन्य प्रकार से आत्मा का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या आत्मा रत्नप्रभा है या अन्य रत्नप्रभा है अर्थात् सद्रूप (विद्यमान रूप) रत्नप्रभा है अथवा असद्रूप [अविद्यमान रूप] रत्नप्रभा पृथ्वी है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी क्वचित् आत्मा

ना० नाम का उ० उत्पात प० पर्वत प० प्ररूपा स० सत्तरह ए० इक्कीस जो० योजन शत उ० ऊंचा उ० ऊंचपने च० चार ती० तीस जो० योजन शत को० कोश उ० ऊंडे गो० गौस्तूभ आवास पर्वत का प० प्रमाण से ने० जानना न० विशेष उ० उपरं प० प्रमाण म० मध्य में भा० कहना मू० मूल में द० दश बा० बावीस जो० योजन स० शत वि० चौडा म० मध्य में च० चार च० चौवीस जो० योजन शत वि० चौडा उ० उपर स० सात ते० तेवीस जो० योजन शत वि० चौडा मू० मूल में ति०

बायालीसं जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तिगिच्छिकुडे नामं उप्पाय पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारितीसे जोयणसए कोसंच उव्वेहेणं, गोथूभस आवासपव्वयस्स पमाणेणं णेयव्वं, नवरं उवरिल्लं पमाणं मज्झे भाणियव्वं, मूले दस बावीसे जोयणसए वि-

में जावे तो वहां चमर नामक असुरेन्द्र का तिगिच्छ कूट नामका उत्पात पर्वत कहा है. वह सत्तरह सो इक्कीस (१७२१) योजन का ऊंचा है और ४३० योजन और एक कोसका ऊंडा जमीन में है. जैसे लवण समुद्र में नागराजा का गौस्तूभ नामक आवास पर्वत है वैसे ही यहां जानना. विशेष इतना कि गोस्तूभ नीचे १०२२ योजन का, मध्यमें ७२३ योजन व उपर ४२४ योजन का चौडा कहा है परंतु तिगिच्छकूट पर्वत नीचे १०२२ योजन, मध्यमें ४२४ और उपर ७२३ योजन का चौडा है ऐसा

सूत्र

तिय; से तेणट्ठेणं गोयमा ! तंचेव जाव णो आयातिय, एवं जाव अच्चुयकप्पे ॥ आया भंते ! गेविज्जगविमाणे अण्णे गेविज्जगविमाणे एवं जहा रयणप्पभापुढवी तहेव एवं अणुत्तरविमाणावि, एवं ईसिप्पब्भारावि ॥ ८ ॥ आया भंते ! परमाणुपोग्गले अण्णे परमाणुपोग्गले ? एवं जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणुपोग्गलेवि भाणियव्वे ॥ आया भंते! दुपदेसिए खंधे अण्णे दुपदेसिए खंधे? गोयमा! दुपदेसिए खंधे सिय आया सिय णो आया सिय अवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय, सिय आयाय सिय णो आयाय ४ सिय आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ५, सिय णो आयाय अवत्तव्वं, आयातिय णो

भावार्थ

अवक्तव्य है. जैसे रत्नप्रभा का कथन किया वैसे ही सातवी तमतमप्रभा पृथ्वी तक और सौधर्म यावत् अच्युत ऐसे बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान और ईषत्प्राग्भार पृथ्वी तक का जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या सद्रूप परमाणु पुद्गल है या अन्य असद्रूप परमाणु पुद्गल है ? अहो गौतम ! जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही परमाणु पुद्गल का जानना. अहो भगवन् ! क्या आत्मा द्विप्रदेशिक स्कंध है या अन्य द्विप्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कंध में छ भांगे होवे ? १ स्यादात्मा २ स्यादनात्मा ३ स्याद् अवक्तव्य ४ एक देश आश्री सत्तागत पर्याय दूसरा देश आश्री

शब्दार्थ

सं० संस्थान से सं० संस्थित स० सर्व र० रत्नमय अ० स्वच्छ जा० यावत् प० प्रतिरूप से० उस ए० एक प० पद्मवर वे० वेदिका व० वनखंड स० सर्व बाजु सं० रहाहुवा प० पद्मवर वे० वेदिका व० वनखंड का व० वर्णन ॥ १ ॥ त० उस ति० तिगिच्छ कूटके उ० उत्पात प० पर्वत की उ० उपर ब० बहुत र० रमणिक भू० भूमि भाग प० प्ररूपा व० वर्णन युक्त त० उस ब० बहुत म० मध्य दे० देश भाग में म० बडा ए० एक पा० प्रासाद प० प्ररूपा अ० अढाइ सो योजन उ० ऊंचा उ० ऊंचपने प० पच्चीस

सूत्र

उप्पिं विसाले. मज्झे वरवइरविग्गहे, महामउंद संठाण संठिए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ सेणं एगाए पउमवरवेइयाए वणखंडेणय सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते पउमवर वेइयाए वणखंडस्स य वण्णओ ॥ १ ॥ तस्सणं तिगिच्छिकूडस्स उप्पाय पव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, वन्नओ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स बहु मज्झ देसभाए एत्थणं महं एगे पासायवडिंसए

पद्मवर वेदिका अर्ध योजन की ऊंची व पांचसो धनुष्य की चौडी कही है. सब रत्नमय है. वह वेदिका तिगिच्छ कूट पर्वत के उपर के तल को चारों तरफ परिधि समान घेर कर रही है. उस वेदिका के चारों तरफ चार वनखण्ड दोकोश से कम के चौडे कहे हैं. ॥ १ ॥ उस तिगिच्छकूट पर्वत पर एक बहुत रमणिक भूमिभाग है जैसे नगारे का उपर का तल बराबर रहता है वैसाही उस का भूमिभाग है. मध्य

सूत्र

सियआया, १ सियणोआया, २ सियअवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय णो आयाय ४, सियआयाय णो आयाओय ५, सियआयाओय णो आयाय ६, सिय-आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ७, सिय आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८, सिय आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ९, सिय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १०, सिय णो आयाय अवत्तव्वाइं

भावार्थ

मीला हुवा द्विप्रदेशात्मक स्कंध आत्मा इति अनात्मा इति होने से आत्मा की अवक्तव्यता है और ६ एक देश असद्भाव पर्यायवाला है और दूसरा देश उभय पर्यायवाला है इस से नो आत्मा की अवक्तव्यता होती है. इस से अहो गौतम ! उक्त छ भांगे द्विप्रदेशिक स्कंध आश्री कहे हैं. अहो भगवन् ! आत्मा त्रिप्रदेशिक स्कंध है या अन्य त्रिप्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कंध में तेरह भांगे होते हैं. १ त्रिप्रदेशिक स्कंध क्वचित् आत्मा २ क्वचित् अनात्मा ३ क्वचित् अवक्तव्य ४ क्वचित् एक वचन से आत्मा और क्वचित् एक वचन से अनात्मा ५ क्वचित् आत्मा एक वचन से अनात्मा अनेक वचन से ६ क्वचित् आत्मा पृथक्त्व वचन से अनात्मा एक वचन से ७ क्वचित् एक वचन से आत्मा इति अनात्मा इति एक वचन में अवक्तव्य ८ क्वचित् अनेक वचन से आत्मा इति अनात्माइति एक वचन में आत्मा अवक्तव्य ९ क्वचित् एक वचन में आत्माइति अनात्माइति आत्मा पृथक्त्व वचन में अवक्तव्य १० एक

शब्दार्थ त० तहां च० चमरकी अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के च० चमरचंचा रा० राज्यधानी प० प्ररूपी ए० एक योजन स० लक्ष आ० लम्बी वि० चौडी ज० जंबद्वीप प्रमाण दि० द्वीपार्ध जो० योजन शत उ० ऊंचापने मू० मूल में प० पचास जो० योजन वि० चौडी उ० उपर स० साडीबारह जो० योजन क० कोसीसा कांगडा अ० अर्द्ध जो० योजन आ० लंबे को० कोश वि० चौडा दे० देसऊणा अ०

सूत्र सहस्साइं उग्गाहित्ता तत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचानामं राय-हाणी पण्णत्ता । एगं जोयण सय सहस्सं आयाम विक्खंभेणं, जंबूद्दीवप्पमाणा दीवड्ढ जोयण सय उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं उवरिं अद्धतेरस जोय-णाइं कविसीसगा अद्धजोयणं आयामेणं, कोसं विक्खंभेणं देसूण अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं एग मेगाए बाहाए पंच २ दार सया अढाइ जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं

भावार्थ योजन रत्नप्रभा पृथ्वी को अवगाहकर चमर नामक असुरेन्द्र की चमरचंचा नामक राज्यधानी कही. यह राज्यधानी जंम्बूद्वीप प्रमाण एक लाख योजन की लम्बी चौडी कही. उस के कोट एक सो पचास योजनके ऊंचे कहे, मूलमें पचास योजनकी चौडी कही उपर साडी बारह योजन की चौडी कही. उस उपर कोटके कांगरे आधे कोशके लम्बे, एक कोश के चौडे व कुच्छकम आधेकोशके ऊंचे कहे. उस को-ट की एक २ बाजु पांचसो २ दरवज्जे हैं. वेद्वार अढाइसो योजन के ऊंचे व एकसो पचहत्तर योजन

सूत्र

सियआया, १ सियणोआया, २ सियअवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय णो आयाय ४, सियआयाय णो आयाओय ५, सियआयाओय णो आयाय ६, सिय-आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ७, सिय आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८, सिय आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ९, सिय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १०, सिय णो आयाय अवत्तव्वाइं

भावार्थ

मीला हुवा द्विप्रदेशात्मक स्कंध आत्मा इति अनात्मा इति होने से आत्मा की अवक्तव्यता है और ६ एक देश असद्भाव पर्यायवाला है और दूसरा देश उभय पर्यायवाला है इस से नो आत्मा की अवक्तव्यता होती है. इस से अहो गौतम ! उक्त छ भांगे द्विप्रदेशिक स्कंध आश्री कहे हैं. अहो भगवन् ! आत्मा त्रिप्रदेशिक स्कंध है या अन्य त्रिप्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कंध में तेरह भांगे होते हैं. १ त्रिप्रदेशिक स्कंध क्वचित् आत्मा २ क्वचित् अनात्मा ३ क्वचित् अवक्तव्य ४ क्वचित् एक वचन से आत्मा और क्वचित् एक वचन से अनात्मा ५ क्वचित् आत्मा एक वचन से अनात्मा अनेक वचन से ६ क्वचित् आत्मा पृथक्त्व वचन से अनात्मा एक वचन से ७ क्वचित् एक वचन से आत्मा इति अनात्मा इति एक वचन में अवक्तव्य ८ क्वचित् अनेक वचन से आत्मा इति अनात्माइति एक वचन में आत्मा अवक्तव्य ९ क्वचित् एक वचन में आत्माइति अनात्माइति आत्मा पृथक्त्व वचन में अवक्तव्य १० एक

शब्दार्थ — कि० क्या इ० इसे भं० भगवन् स० समय क्षेत्र प० कहना गो० गौतम अ० अढाइ दी०द्वीप दो० दो समुद्र प० उपलक्षित स० समय क्षेत्र प० कहा है त० तहां अ० यह जं० जंबूद्वीप स० सर्व दी० द्वीप स० समुद्र की स० मध्य में ए० ऐसे जी० जीवाभिगम व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध जो० ज्योतिषी वि० छोडकर ॥ २ ॥ ९ ॥ = =

सूत्र — किमिदं भंते ! समयक्खेत्तेति पवुच्चइ ? गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा दोय समुद्दा एसणं पवइए समयक्खेत्तेत्ति पवुच्चइ, तत्थणं अयं जंबूदीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाणं सव्वब्भिंतरे, एवं जीवाभिगमवत्तव्वया नेयव्वा, जाव अब्भिंतर पुक्खरद्धं जोइस विहूणं ॥ इइ बिईयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ९ ॥ *

भावार्थ — होता है अर्थात् जिस क्षेत्र में दिन, पक्ष, मास, वर्ष वगैरह काल उपलक्षित होवे-सूर्य की गति से जाना जावे उसे समय क्षेत्र कहा है. अढाई द्वीप की बाहिर सूर्यादि ज्योतिषी के विमानोंका हलन चलन नहीं होता है. अढाई द्वीप में सब द्वीप समुद्रों में छोटा प्रथम जम्बूद्वीप नामक द्वीप है वगैरह अढाइ द्वीप की वक्तव्यता जैसी जीवाभिगम में कही है वैसी यहां पर कहना. मात्र ज्योतिषी की वक्तव्यता नहीं कहना. यह दूसरे शतकका नववा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ९ ॥ + + +

सूत्र

ब्भाव पज्जवा तिपदेसिए खंधे आयाय णो आयाओय ५, देसा आदिट्ठा सब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे असब्भाव पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाओय णो आयाय ६, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ७, देसे आदिट्ठे सब्भाव पज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभय पज्जवा तिपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८, देसा आदिट्ठा सब्भाव पज्जवा, देसे आदिट्ठे तदुभय पज्जवे, तिपदेसिए खंधे आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय। एए तिण्णि भंगा ९ ॥ देसे

भावार्थ

स्वपर्याय अनेक देश आश्री परपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ६ अनेक देश आश्री सद्भाव पर्याय एक देश आश्री पर पर्याय तीन प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा ७ देश आश्री स्वपर्याय और देश आश्री उभयपर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध एक वचन में आत्मा नो आत्मा इति एकवचनमें अवक्तव्य ८ एक देश आश्री स्वपर्याय और अनेकदेश आश्री उभय पर्याय दोनों से आत्मा अवक्तव्य है ९ अनेक देश आश्री स्वपर्याय एक देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा अवक्तव्य १० देश आश्री परपर्याय देश आश्री उभय पर्याय त्रिप्रदेशिक स्कंध नो आत्मा अवक्तव्य ११ देश आश्री परपर्याय अनेक देश

शब्दार्थ कि० क्या इ० इसे भं० भगवन् स० समय क्षेत्र प० कहना गो० गौतम अ० अढाइ दी० द्वीप दो० दो समुद्र प० उपलक्षित स० समय क्षेत्र प० कहा है त० तहां अ० यह जं० जंबूद्वीप स० सर्व दी० द्वीप स० समुद्र की स० मध्य में ए० ऐसे जी० जीवाभिगम व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध जो० ज्योतिषी वि० छोडकर ॥ २ ॥ ९ ॥ = =

सूत्र किमिदं भंते ! समयक्खेत्तति पवुच्चइ ? गोयमा ! अड्डाइज्जा दीवा दोय समुद्दा एसणं पवइए समयक्खेत्तत्ति पवुच्चइ, तत्थणं अयं जंबूदीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाणं सव्वब्भितरे, एवं जीवाभिगमवत्तव्वया नेयव्वा, जाव आब्भितर पुक्खरद्धं जोइस विहूणं ॥ इइ विईयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ९ ॥ *

भावार्थ होता है अर्थात् जिस क्षेत्र में दिन, पक्ष, माम, वर्ष वगैरह काल उपलक्षित होवे-सूर्य की गति से जाना जावे उसे समय क्षेत्र कहा है. अढाई द्वीप की बाहिर सूर्यादि ज्योतिषी के विमानोंका हलन चलन नहीं होता है. अढाई द्वीप में सब द्वीप समुद्रों में छोटा प्रथम जम्बूद्वीप नामक द्वीप है वगैरह अढाइ द्वीप की वक्तव्यता जैसी जीवाभिगम में कही है वैसी यहां पर कहना. मात्र ज्योतिषी की वक्तव्यता नहीं कहना. यह दूसरे शतकका नववा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ९ ॥ + + +

सूत्र

तंचेव जाव णो आयातिय ॥ आया भंते ! चउप्पदेसिए खंधे अण्णे पुच्छा ? गोयमा! चउप्पदेसिए खंधे सिय आया १, सिय णो आया २, सिय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ३, सिय आयाय णो आयाय ४, सिय आयाय अवत्तव्वं ४, सिय णो आयाय अवत्तव्वं ४, सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १६; सिय आयायं णो आयाय अवत्तव्वाइं आयाय णो आयायं १७. सिय आयाय णो आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १८, सिय आयाओय णो आयाय

भावार्थ

क्वचित् आत्मा नो आत्मा के एकवचन बहुवचन के ४, क्वचित् आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४, क्वचित् नो आत्मा अवक्तव्य के एकवचन अनेकवचन के ४, यों १६ भांगे हुए १६ क्वचित् आत्मा, नो आत्मा व अवक्तव्य एकवचन में १७ क्वचित् आत्मा नो आत्मा एकवचन में और अवक्तव्य अनेक वचन में १८ क्वचित् आत्मा एकवचन नो आत्मा बहुवचन और अवक्तव्य एक वचन और १९ क्वचित् आत्मा बहुवचन नो आत्मा व अवक्तव्य एक वचन में यों १९ भांगे पाते हैं. अहो भगवन्! किस कारन से चतुष्क प्रदेशिक स्कंध में उक्त १९ भांगे पाते हैं ? अहो गौतम ! १ स्वपर्याय आश्री आत्मा २ पर पर्याय आश्री नो आत्मा ३ उभय पर्याय आश्री अवक्तव्य ४ देश से स्वपर्याय देश से पर पर्याय ऐसे चार भांगे, स्वपर्याय व उभय पर्याय के एक वचन बहु वचन के चार भांगे, ऐसे ही परपर्याय व उभय पर्याय के चार भांगे मीलकर १९ भांगे होते हैं

शब्दार्थ स्तिकाय भं॰ भगवन् क॰ कितना व॰ वर्ण गं॰ गंध र॰ रस फा॰ स्पर्श गो॰ गौतम अ॰ अवर्ण अ॰ अगंध अ॰ अरस अ॰ अस्पर्श अ॰ अरूपी अ॰ अजीव सा॰ शाश्वत अ॰ अवस्थित लो॰ लोक द्रव्य स॰ संक्षेप से पं॰ पांच प्रकार की द॰ द्रव्य से खे॰ क्षेत्र से का॰ काल से भा॰ भाव से गु॰ गुण से द॰ द्रव्य से ए॰ एकद्रव्य खे॰ क्षेत्र से लो॰ लोक प्रमाण का॰ कालसे न॰ नहीं क॰ कदापि न॰ नहीं आ॰ था न॰

सूत्र ॥ १ ॥ धम्मत्थि काएणं भंते ! कतिवण्णे, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे ? गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे, अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ । दव्व-ओणं धम्मत्थिकाए एगेदव्वे, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइं,

भावार्थ और पुद्गलास्तिकाय ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाया में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाया में पांच वर्ण में से एक भी वर्ण नहीं है, दोगंध में से एक भी गंध नहीं है, पांच रस में से एक भी रस नहीं है, आठ स्पर्श में से एक भी स्पर्श नहीं है. अरूपी, अजीव, शाश्वत अवस्थित व पंचास्ति कायिक लोक होने से उस का एक अंशभूत द्रव्य है. उस के द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से व गुण से ऐसे पांच भेद किये हैं.. द्रव्य से धर्मास्तिकाय एक द्रव्य, क्षेत्र से धर्मास्तिकाय

सूत्र

ओय अवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय १८, देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पदेसिए खंधे आयाओय णो आयाय अवत्तव्वं, आयातिय णो आयातिय १९, ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ चउप्पदेसिए खंधे सिय आया सिय णो आया सिय 'अवत्तव्वं, निक्खेवे एते चेव भंगा उच्चारियव्वा जाव णो आयातिय ।आया भंते ! पंचपदेसिए खंधे अण्णे पंच पदेसिए खंधे ? गोयमा ! पंच पदेसिए खंधे सिय आया सिय णो आया सिय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ३, सिय, आयाय णो आयाय ४, सिय आयाय अवत्तव्वं णो आयाय अवत्तव्वं ४, तिय संजोगे एक्को न पडति, से केणट्ठेणं भंते ! तंचेव उच्चारियव्वा ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभयस्स आदिट्ठे अव-

भावार्थ

पर्याय चतुष्क प्रदेशिक स्कंध आत्मा नो आत्मा अवक्तव्य. अहो गौतम ! इसी कारन से चतुष्क प्रदेशी स्कंध में १९ भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! आत्मा पांच प्रदेशिक स्कंध है या अन्य पांच प्रदेशिक स्कंध है ? अहो गौतम ! पांच प्रदेशिक स्कंध में क्वचित् आत्मा क्वचित् नो आत्मा क्वचित् अवक्तव्य यों बावीस विकल्प होते हैं. अहो भगवन् ! यह किस कारन से कहा है कि पांच प्रदेशिक स्कंध में बावीस विकल्प होते हैं? अहो गौतम! स्वपर्याय से आत्मा, पर पर्याय से नो आत्मा उभय पर्याय से अवक्तव्य देश आश्री स्वपर्याय देश आश्री पर पर्याय ऐसे द्विसंयोगी

शब्दार्थ

शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से जा० यावत् गु० गुण से द० द्रव्य से अ० अनंत जी० जीव द्रव्य खे०क्षेत्र से लो०लोक प्रमाण का० कालसे न०नहीं क० कदापि न० नहीं आ० था जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से उ० उपयोग गुण पो० पुद्गलास्तिकाय भं० भगवन् क०कितने वर्ण क० कितने गंध र०रस फा०स्पर्शगो० गौतम पं० पांचवर्ण पं०पांचरस दु० दोगंध अ०आठस्पर्श रू०रूपी अ०अजीव सा०

सूत्र

कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी, जीवे सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे, । से समासओ पंचविहे प० तं० दव्वओ जाव गुणओ. दव्वओणं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं; खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइ न आसि जाव निच्चे. भावओ पुण अवन्ने, अगंधे, अरसे अफासे, गुणओ उवओग गुणे । पोग्गलत्थि काएणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधरसफासे ? गोयमा ! पचवन्ने पंचरसे, दुगंधे,

भावार्थ

काय जैसा परंतु क्षेत्र से आकाशास्ति काय लोकालोक प्रमाण अनंत, और गुण से अवगाहन—अवकाश देने वाला—गुण है. अहो भगवन् ! जीवास्ति काय में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! जीवास्ति काय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं है. वह अरूपी, जीव, शाश्वत, अवस्थित व लोक द्रव्य है. उसके पांच भेद किये गये हैं द्रव्य से यावत् गुण से. द्रव्य से जीव द्रव्य अनंत, क्षेत्र से लोक प्रमाण, काल से अतीत में

* त्रयोदश शतकम् *

सूत्र

पुढवीदेव मणंतर पुढवी आहारमेव उववाए; भासा कम्मणगारे, केया घडिया समुग्घाए ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी-कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया णिरयावास सयसहस्सा पण्णत्ता ?

भावार्थ

बारहवे शतक के अंत में आत्म स्वरूप का कथन किया आत्मा पृथिव्यादि आश्रीन हैं इसलिये इस तेरहवे शतक के प्रारंभ में पृथिवी का कथन करते हैं. इस शतक के दश उद्देशे कहे हैं १ पृथ्वी उद्देशे में नरक (पृथिव्यादि) का कथन २ देवता की प्ररूपणा ३ अंत आहारादिक का कथन ४ पृथ्वी गत वक्तव्यता ५ नरकादिक के आहार की प्ररूपणा ६ नरकादिक का उत्पात ७ भाषा का अर्थ ८ कर्मों का अर्थ ९ भावितात्मा अनगार और १० समुद्घात. अब इन में से प्रथम उद्देशा कहते हैं राजगृही नगरी के गुणशील उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! पृथ्वियों कितनी कहीं ? अहो गौतम ! पृथ्वियों सात कहीं, जिन के नाम रत्नप्रभा यावत् सातवी तम तम प्रभा ॥१॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने लाख नरकावास कहे हैं ? अहो

शब्दार्थ

शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से जा० यावत् गु० गुण से द० द्रव्य से अ० अनंत जी० जीव द्रव्य खे० क्षेत्र से लो० लोक प्रमाण का० कालसे न० नहीं क० कदापि न० नहीं आ० था जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से उ० उपयोग गुण पो० पुद्गलास्तिकाय भं० भगवन् क० कितने वर्ण क० कितने गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम पं० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध अ० आठ स्पर्श रू० रूपी अ० अजीव सा०

सूत्र

कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी, जीवे सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे, । से समासओ पंचविहे प० तं० दव्वओ जाव गुणओ. दव्वओणं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं; खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइ न आसि जाव निच्चे. भावओ पुण अवन्ने, अगंधे, अरसे अफासे, गुणओ उवओग गुणे । पोग्गलात्थि काएणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधरसफासे ? गोयमा ! पचवन्ने पंचरसे, दुगंधे,

भावार्थ

काय जैसा परंतु क्षेत्र से आकाशास्ति काय लोकालोक प्रमाण अनंत, और गुण से अवगाहन—अवकाश देने वाला—गुण है. अहो भगवन् ! जीवास्ति काय में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! जीवास्ति काय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं है. वह अरूपी, जीव, शाश्वत, अवस्थित व लोक द्रव्य है. उसके पांच भेद किये गये हैं द्रव्य से यावत् गुण से. द्रव्य से जीव द्रव्य अनंत, क्षेत्र से लोक प्रमाण, काल से अतीत में

केवइया आभिणिबोहियणाणी उववज्जंति ९, केवइया सुयनाणी [illegible] १०, केवइया ओहिणाणी उववज्जंति ११, केवइया मइअण्णाणी उववज्जंति १२, केवइया सुअ अण्णाणी उववज्जंति १३, केवइया विभंगणाणी उववज्जंति १४, केवइया चक्खुदंसणी उववज्जंति , १५, केवइया अचक्खुदंसणी उववज्जंति १६, केवइया ओहिदंसणी उववज्जंति १७, केवइया आहारसण्णोवउत्ता उववज्जंति १८, केवइया भयसण्णोवउत्ता उववज्जंति १९, केवइया मेहुण सण्णोवउत्ता उववज्जंति २०, केवइया परिग्गह सण्णोवउत्ता उववज्जंति २१, केवइया इत्थिवेदगा उववज्जंति २२,

शुक्ल पक्ष वाले उत्पन्न होते हैं, कितने संज्ञी उत्पन्न होते हैं, कितने असंज्ञी उत्पन्न होते हैं, कितने भव सिद्धिक उत्पन्न होते हैं, कितने अभवसिद्धिक उत्पन्न होते हैं, कितने आभिनिबोधिक ज्ञानी, श्रुत ज्ञानी, अवधि ज्ञानी, मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी, विभंग ज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अवधि दर्शनी [illegible] संज्ञा वाले, भय संज्ञा वाले, मैथुन संज्ञा वाले, परिग्रह संज्ञा वाले, स्त्री वेदक, पुरुष वेदक, नपुंसक वेदक क्रोध कपायी, मान कपायी, माया कपायी, लोभ कपायी, श्रोत्रेन्द्रियवाले यावत् स्पर्शेन्द्रियवाले, नो इन्द्रिय वाले, मन योगी, वचन योगी, काय योगी, सागारोपयुक्त, और अनाकारोपयुक्त उत्पन्न होते हैं? अहो

शब्दार्थ — ग्रहणगुण ॥२॥ ए० एक भं० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय का प०प्रदेश को ध० धर्मास्तिकाय व०कहना गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे दो० दो तिं० तीन च० चार पं० पांच छ० छ स० सात अ० आठ न० नव द० दश सं० संख्याते अ० असंख्याते भं० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय का प०प्रदेश को ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० एक प्रदेश

सूत्र — गंध रस फासमंते, गुणओ गहणगुणे ॥ २ ॥ एगे भंते ! धम्मत्थिकाय प्पदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे. एवं दोन्निवि तिन्निवि, चत्तारि, पंच, छ, सत्त, अट्ठ,नव, दस, संखेज्जा, असंखेज्जा भंते ! धम्मत्थिकाय-प्पदेसा धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे. एगपदेसूणे

भावार्थ — मने हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! धर्मास्ति काय के एक प्रदेश को क्या धर्मास्ति काय कहना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय के दो, तीन चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, संख्याते या असंख्याते प्रदेश को क्या धर्मास्तिकाय कहना, ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय के समस्त प्रदेशों में से एक प्रदेश कम होवे तो क्या उसे धर्मास्तिकाया कहना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है

एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति, एवं सुक्कपक्खियावि, एवं सण्णीवि, एवं असण्णीवि, एवं भवसिद्धियावि, एवं अभवसिद्धिया, आभिणिबोहियणाणी सुअणाणी, ओहिणाणी, मइअण्णाणी सुअ अण्णाणी; विभंगणाणी एवं चेव, चक्खुदंसणी ण उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति, एवं ओहिदंसणीवि, एवं आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवउत्तावि, इत्थीवेदगा न उववज्जंति, पुरिसवेदगा न उववज्जंति. जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेदगा उववज्जंति, एवं कोहकसायी जाव लोभ कसायी, सोइंदिय उवउत्ता न उववज्जंति एवं जाव फासिंदियोवउत्ता ण

होते हैं. ऐसे ही अवधि दर्शनी, आहार संज्ञा वाले, भयसंज्ञा वाले, मैथुन संज्ञा वाले, परिग्रह संज्ञा वाले का जानना. स्त्री वेदी, पुरुष वेदी उत्पन्न नहीं होते हैं क्यों की नरक में दोनों वेद नहीं हैं. जघन्य एक दो तीन चार उत्कृष्ट संख्याते नपुंसक वेदी. ऐसे ही क्रोध कषायी यावत् लोभ कषायी का जानना. श्रोत्रेन्द्रिय वाले यावत् स्पर्शेन्द्रिय वाले उत्पन्न नहीं होते हैं नोइन्द्रिय वाले जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट

शब्दार्थ ऐसे छ० छत्र च० चमर दं० दंड दू० वस्त्र आ० आयुध मो० मोदक मे० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० एक ध० धर्मास्तिकाय प्रदेश नो० नहीं ध० धर्मास्ति काय व० कहना जा० यावत् ए० एक प्रदेश ऊणा ध० धर्मास्ति काय को णो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व०कहना से०वह किं०क्या खा० ख्याति केलिये भं० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय व०कहना गो०गौतम अ०असंख्यात ध०धर्मास्ति काय के प० प्रदेश ते०वे स० सर्व क० कृत्स्न प०प्रतिपूर्ण नि० निरावशेष ए० एक ग० ग्रहण

सूत्र दूसे, आउहे, मोयए, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ एगे धम्मत्थिकायप्पदेसे णो धम्म त्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणेवियणं धम्मत्थिकाए नों धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया। से किं खाइएणं भंते ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! असंखेज्जा धम्म-त्थि कायप्पएसा ते सव्वे कसिणा, पडिपुण्णा, निरवसेसा. एक्कग्गहण गहिया एसणं

भावार्थ टुकडे को दंड कहना, वस्त्र के टुकडे को वस्त्र कहना, आयुध के टुकडे को आयुध कहना, या लड्डुके टुकडे को क्या लड्डु कहना ? अहो भगवन् ! ऐसा नहीं कहा जाता है. इसी तरह अहो गौतम ! धर्मास्ति काय के एक प्रदेश यावत् एक प्रदेश कम को धर्मास्तिकाय नहीं कह सकते हैं * क्यों कि

* यह वचन निश्चय नयकी अपेक्षासे ग्रहण कियाहै क्योंकि व्यवहार नयसे खण्डित घडेको घडा कहते हैं वैसेही धर्मास्तिकायके एक प्रदेश वगैरह को भी धर्मास्तिकाय कह सकते हैं.

एकोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति, एवं सुक्कपक्खियावि, एवं सण्णीवि, एवं असण्णीवि, एवं भवसिद्धियावि, एवं अभवसिद्धिया, आभिणिवोहियणाणी सुअणाणी, ओहिणाणी, मइअण्णाणी सुअ अण्णाणी; विभंगणाणी एवं चेव, चक्खुदंसणी ण उववज्जंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति, एवं ओहिदंसणीवि, एवं आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवउत्तावि, इत्थीवेदगा न उववज्जंति, पुरिसवेदगा न उववज्जंति. जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेदगा उववज्जंति, एवं कोहकसायी जाव लोभ कसायी, सोइंदिय उवउत्ता न उववज्जंति एवं जाव फासिंदियोवउत्ता ण

होते हैं. ऐसे ही अवधि दर्शनी, आहार संज्ञा वाले, भयसंज्ञा वाले, मैथुन संज्ञा वाले, परिग्रह संज्ञा वाले का जानना. स्त्री वेदी, पुरुष वेदी उत्पन्न नहीं होते हैं क्यों की नरक में दोनों वेद नहीं हैं. जघन्य एक दो तीन चार उत्कृष्ट संख्याते नपुंसक वेदी. ऐसे ही क्रोध कषायी यावत् लोभ कषायी का जानना. श्रोत्रेन्द्रिय वाले यावत् स्पर्शेन्द्रिय वाले उत्पन्न नहीं होते हैं नोइन्द्रिय वाले जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट

शब्दार्थ गौतम जी० जीव स० उत्थान सहित जा० यावत् उ० दृखाडे च० करता से० वह के० कैसे जा० यावत् व० कहना गो० गौतम जी० जीव अनंत आ० मतिज्ञान प० पर्यव ए० ऐसे सु० श्रुतज्ञान पर्यव ओ० अवधिज्ञान पर्यव म० मनःपर्यवज्ञान पर्यव के० केवलज्ञान के पर्यव म० मतिअज्ञान के पर्यव सु० श्रुतअज्ञान के पर्यव वि० विभंगज्ञान के पर्यव च० चक्षुदर्शन के पर्यव अ० अचक्षुदर्शन के पर्यव ओ० अव-दर्शन पर्यव के० केवलदर्शन के पर्यव उ० उपयोग को ग० जावे उ० उपयोग लक्षण से से० वह ते०

सूत्र जीवेणं सउट्ठाणे जाव उवदंसेइत्ति वत्तव्वं सिया । सेकेणट्ठेणं जाव वत्तव्वं सिया ? गोयमा! जीवेणं अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, एवं सुयनाणपज्जवाणं, ओहिनाण पज्जवाणं, मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलणाणपज्जवाणं, मइअन्नाणपज्जवाणं, सुयअन्नाण पज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाणं, चक्खुदंसणपज्जवाणं, अचक्खुदंसणपज्जवाणं, ओहिदंसण

भावार्थ वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम सहित जीव आत्मपरिणाम में से क्या चैतन्यपना बताता है ! अहो गौतम ! उत्थानादि सहित जीव आत्मभाव से चैतन्यपना बताता है. अहो भगवन् ! किस तरह से उत्थानादि सहित जीव चैतन्यपना बताता है ! अहो गौतम ! जीव अनंत मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मति कज्ञान, श्रुत कज्ञान, विभंग ज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अव-धि दर्शन व केवल दर्शन के पर्यायात्मक चेतना लक्षण को कहा जाता है अर्थात् आत्मभाव में वर्तता है

विरथंडेसु णेरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जा, णेरइया उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्टंति, एवं जाव सण्णी असण्णी ण उव्वट्टंति जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति एवं जाव सुअअण्णाणी विभंगणाणी ण उव्वट्टंति चक्खुदंसणी ण उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खु दंसणी उव्वट्टंति, एवं जाव लोभ कसायी, सोइंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता ण उव्वट्टंति, जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा णो इंदियोवउत्ता उव्वट्टंति, मणजोगी ण उव्वट्टंति, एवं वइजोगीवि, जहण्णेणं

उत्कृष्ट संख्यात कापुत लेश्या वाले उद्वर्तते हैं. ऐसे ही संज्ञी तक कहना. असंज्ञी नहीं उत्पन्न होते हैं. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात भवसिद्धिक उद्वर्तते हैं ऐसे ही श्रुत अज्ञानी तक जानना. विभंग ज्ञानी नहीं उद्वर्तते हैं क्यों की उद्वर्तन काल में विभंग ज्ञान नहीं होता है. चक्षुदर्शनी नहीं उद्वर्तते है. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात अचक्षुदर्शनी उद्वर्तते हैं ऐसे ही लोभ कषायी पर्यंत जानना. श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय नहीं उद्वर्तते हैं. जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात नोइन्द्रिय उद्वर्तते हैं. मनयोगी और वचन

शब्दार्थ गौतम जी० जीव स० उत्थान सहित जा० यावत् उ० देखाडे व० कहना से० वह के० कैसे जा० यावत् व० कहना गो० गौतम जी० जीव अनंत आ० मतिज्ञान प० पर्यव ए० ऐसे सु० श्रुतज्ञान पर्यव ओ० अवधिज्ञान पर्यव म० मनःपर्यवज्ञान पर्यव के० केवलज्ञान के पर्यव म० मतिअज्ञान के पर्यव सु० श्रुतअज्ञान के पर्यव वि० विभंगज्ञान के पर्यव च० चक्षुदर्शन के पर्यव अ० अचक्षुदर्शन के पर्यव ओ० अव- दर्शन पर्यव के० केवलदर्शन के पर्यव उ० उपयोग को ग० जाने उ० उपयोग लक्षण से से० वह ते०

मूल जीवेणं सउट्ठाणे जाव उवदंसेइति वत्तव्वं सिया ! सेकेणट्ठेणं जाव वत्तव्वं सिया ? गोयमा! जीवेणं अनंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, एवं सुयनाणपज्जवाणं, ओहिनाण पज्जवाणं, मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलणाणपज्जवाणं, मइअन्नाणपज्जवाणं, सुयअन्नाण पज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाणं, चक्खुदंसणपज्जवाणं, अचक्खुदंसणपज्जवाणं, ओहिदंसण

भावार्थ वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम सहित जीव आत्मपरिणाम में से क्या चैतन्यपना बताता है ! अहो गौतम ! उत्थानादि सहित जीव आत्मभाव से चैतन्यपना बताता है. अहो भगवन् ! किस तरह से उत्थानादि सहित जीव चैतन्यपना बताता है ! अहो गौतम ! जीव अनंत मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अव- धि दर्शन व केवल दर्शन के पर्यायात्मक चेतना लक्षण को कहा जाता है अर्थात् आत्मभाव में वर्तता

पंरपर पजत्ता पण्णत्ता, केवइया चरिमा पण्णत्ता, केवइया अचरिमा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावास सयसहस्सेसु संखेज्ज वित्थडेसु णरएसु संखेज्जा णेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा सण्णी पण्णत्ता, असण्णी सिय अत्थि सियणत्थि, जइ अत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता, संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसण्णोवउत्ता पण्णत्ता, इत्थिवेदगा णत्थि, पुरिसवेदगा णत्थि, संखेज्जा णपुंसग वेदगा पण्णत्ता, एवं कोह कसायीवि, माण कसायी जहा असण्णी एवं जाव लोभ कसायी, संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता एवं जाव फासिंदियोवउत्ता, नो

से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास में संख्यात नारकी, संख्यात कापुत लेश्यावाले ऐसे ही संख्यात संज्ञी पर्यंत जानना. असंज्ञी कदाचित् होते हैं कदाचित् नहीं होते हैं यदि होते हैं तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात कहे हैं संख्यात भवसिद्धिक यावत् संख्यात परिग्रह संज्ञावाले हैं. स्त्रीवेदी पुरुष वेदी नहीं हैं संख्यात नपुंसक वेदी हैं ऐसे ही क्रोध कषायी. मान कषायी, माया व लोभ कषायी असंज्ञी जैसे जानना. संख्यात श्रोत्रेन्द्रियवाले यावत् स्पर्शेन्द्रियवाले हैं नो इन्द्रिय असंज्ञी जैसे जानना. संख्यात

शब्दार्थ

ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय अ० अनिन्द्रिय जे० जो जी० जीवदेश ते० वे नि० निश्चय ए० एकेन्द्रिय देश जा० यावत् अ० अनिन्द्रिय प० प्रदेश जे० जो अ० अजीव ते० वे दु० दो प्रकार के पं० प्ररूपे रू० रूपी अ० अरूपी जे० जो रू० रूपी ते० वे च० चार प्रकार के खं० स्कन्ध खं० स्कन्धदेश खं० स्कन्ध प्रदेश प० परमाणु पुद्गल जे० जो अ० अरूपी ते० वे पं० पांच प्रकार के ध० धर्मास्तिकाय नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय का देश ध० धर्मास्तिकाय काय का प्रदेश अ० अधर्मास्ति काय नो०

सूत्र

देसावि, अजीव पदेसावि । जे जीवा ते नियमा एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया, अणिंदिया. जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियपदेसा ॥ जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा रूवीय, अरूवीय । जेरूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा; परमाणु पोग्गला । जे अरूवी ते

भावार्थ

लोकाकाश में जीव, जीव के देश, जीव के प्रदेश, अजीव, अजीव के देश व अजीव के प्रदेश हैं. जो जीव हैं वे एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय व अनिन्द्रिय हैं. जो जीव के देश हैं वे भी एकेन्द्रिय यावत् अनिन्द्रिय के देश हैं और वैसे ही प्रदेश हैं. अजीव के दो भेद १ रूपी अजीव २ अरूपी अजीव. रूपी अजीव के चार भेद स्कंध, स्कंध देश, स्कंध प्रदेश व परमाणु पुद्गल. अरूपी अजीव के पांच भेद. १ धर्मास्तिकाय २ धर्मास्तिकाया का प्रदेश, ३ अधर्मास्तिकाय, ४ अधर्मास्तिकाया का प्रदेश

सूत्र

वित्थडेसु णरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं असंखेज्जा णेरइया उववज्जंति, एवं जहेव संखेज्ज वित्थडेसु तिण्णिगमा पण्णत्ता तहा असंखेज्ज वित्थडेसुवि तिण्णि भाणियव्वा, णवरं असंखेज्जा भाणियव्वा सेसं तंचेव जाव असंखेज्जा अचरिमा णाणत्तं लेस्सासु लेस्साओ जहा पढमसए, णवरं संखेज्ज वित्थडेसुवि असंखेज्ज वित्थडेसुवि ओहिणाणी ओहिदंसणी संखेज्जा उवट्टावे यव्वा सेसं तंचेव ॥७॥ सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए केवइया णिरयावासा पुच्छा ? गोयमा ! पणवीसं णिरयावास सयसहस्सा, ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्ज वित्थडा

भावार्थ

एक दो तीन उत्कृष्ट असंख्यात नारकी उत्पन्न होते हैं ऐसे ही जैसे संख्यात योजन विस्तारवाले के तीन गमा कहे वैसे ही असंख्यात योजन के विस्तारवाले को तीन गमा जानना. विशेष में असंख्यात कहना शेष सब असंख्यात अचरिम तक जानना. लेश्या का प्रथम शतक में कहा वैसा जानना. अवधि ज्ञानी व अवधि दर्शनी संख्यात व असंख्यात योजनवाले नरकावास में से संख्यात उद्वर्तते हैं॥७॥ अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा में कितने लाख नरकावास कहे ? अहो गौतम ! शर्कर प्रभा में पचीस लाख नरकावास कहे. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो

शब्दार्थ

अ० अजीव द० द्रव्य देश अ० अगुरुलघु अ० अनंत अ० अगुरुलघु गु० गुण से सं० युक्त स० सर्व आकाश अ० अनंत भाग ऊणा ॥ ६ ॥ ध० धर्मास्तिकाय भं० भगवन् के० कितनी वडी गो० गौतम लो० लोक में लो० लोक मात्र लो० लोक प्रमाण लो० लोक को स्पर्शी लो० लोक को फु०स्पर्श कर चि० रही है ए० ऐसे अ० अधर्मास्ति काय लो० लोकाकाश जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्तिकाय पं०

सूत्र

नो अजीवप्पदेसा; एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए, अणंतेहिं, अगुरुय लहुयगुणेहिं संजुत्ते, सव्वागासे अणंतभागूणे ॥ ६ ॥ धम्मत्थिकाएणं भंते ! के महालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए, लोयमेत्ते, लोयप्पमाणे, लोयफुडे, लोयंचेव फुसित्ताणं, चिट्ठइ ॥ एवं अहम्मत्थिकाए, लोयाकासे, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए पंचविएक्काभिलावा ॥७॥

भावार्थ

अजीव द्रव्य का एक देश है. क्यों कि संपूर्ण लोकालोक का आकाश मीलकर एक स्कंध होता है और अलोक में मात्र एक अलोकाकाश ही है. इसलिये एक अजीव द्रव्य का देश गिना गया है. वह अनंत स्वपर्यायरूप अगुरुलघु स्वभाव सहित है. लोकाकाश की अपेक्षा से अनंत भाग रूप है इस से सब आकाश के अनंतवे भाग कम बतलाया है ॥ ६ ॥ अब धर्मास्तिकायादि के प्रमाण का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय कितनी वडी है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय पंचास्तिकायमय लोक जैसी है, लोक मात्र है, लोक प्रदेश प्रमाण है, सब लोक के प्रदेश को स्पर्श कर रही है. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय

सूत्र

विरथेडेसु णरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं असंखेज्जा णेरइया उववज्जंति, एवं जहेव संखेज्ज विरथडेसु तिण्णिगमा पण्णत्ता तहा असंखेज्ज विरथडेसुवि तिण्णि गमा भाणियव्वा, णवरं असंखेज्जा भाणियव्वा सेसं तंचेव जाव असंखेज्जा अचरिमा णाणत्तं लेस्सासु लेस्साओ जहा पढमसए, णवरं संखेज्ज विरथडेसुवि असंखेज्ज विरथडेसुवि ओहिणाणी ओहिदंसणी संखेज्जा उव्वट्टाव यव्वा सेसं तंचेव ॥७॥ सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए केवइया णिरयावासा पुच्छा ? गोयमा ! पणवीसं णिरयावास सयसहस्सा, ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्ज वित्थडा

भावार्थ

एक दो तीन उत्कृष्ट असंख्यात नारकी उत्पन्न होते हैं ऐसे ही जैसे संख्यात योजन विस्तारवाले के तीन गमा कहे वैसे ही असंख्यात योजन के विस्तारवाले की तीन गमा जानना. विशेष में असंख्यात कहना शेष सब असंख्यात अचरिम तक जानना. लेश्या का प्रथम शतक में कहा वैसा जानना. अवधि ज्ञानी व अवधि दर्शनी संख्यात व असंख्यात योजनवाले नरकावास में से संख्यात उद्वर्तते हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा में कितने लाख नरकावास कहे ? अहो गौतम ! शर्कर प्रभा में पच्चीस लाख नरकावास कहे. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो

शब्दार्थ अ० अजीव द० द्रव्य देश अ० अगुरुलघु अ० अनंत अ० अगुरुलघु गु० गुण से सं० युक्त स० सर्व आकाश अ० अनंत भाग ऊणा ॥ ६ ॥ ध० धर्मास्तिकाय भं० भगवन् के० कितनी वडी गो० गौतम लो० लोक में लो० लोक मात्र लो० लोक प्रमाण लो० लोक को स्पर्शी लो० लोक को फु०स्पर्श कर चि० रही है ए० ऐसे अ० अधर्मास्ति काय लो० लोकाकाश जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्तिकाय पं०

सूत्र

नो अजीवप्पदेसा; एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए, अणंतेहिं, अगुरुय लहुयगुणेहिं संजुत्ते, सव्वागासे अणंतभागूणे ॥ ६ ॥ धम्मत्थिकाएणं भंते ! के महालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए, लोयमेत्ते, लोयप्पमाणे, लोयफुडे, लोयंचेव फुसित्ताणं, चिट्ठइ ॥ एवं अहम्मत्थिकाए, लोयाकासे, जीवत्थिकाए, पोग्गलात्थिकाए पंचाविएक्काभिलावा ॥७॥

भावार्थ अजीव द्रव्य का एक देश है. क्यों कि संपूर्ण लोकालोक का आकाश मीलकर एक स्कंध होता है और अलोक में मात्र एक अलोकाकाश ही है. इसलिये एक अजीव द्रव्य का देश गिना गया है. वह अनंत स्वपर्यायरूप अगुरुलघु स्वभाव सहित है. लोकाकाश की अपेक्षा से अनंत भाग रूप है इस से सब आकाश के अनंतवे भाग कम बतलाया है ॥ ६ ॥ अब धर्मास्तिकायादि के प्रमाण का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय कितनी वडी है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय पंचास्तिकायमय लोक जैसी है, लोक मात्र है, लोक प्रदेश प्रमाण है, सब लोक के प्रदेश को स्पर्श कर रही है. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय

णिरयावाससयसहस्से पण्णत्ते सेसं जहा पंकप्पभाए ॥ १२ ॥ अहे सत्त-
माएणं भंते ! पुढवीए कइ अणुत्तरा महतिमहालया महाणिरया वासापण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तर जाव अप्पइट्ठाणे ॥ सेणं भंते ! किं संखेज्ज वित्थडा असंखेज्ज
वित्थडा ? गोयमा ! संखेज्ज वित्थडेय असंखेज्जवित्थडाय ॥ अहे सत्तमाएणं भंते !
पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महति महालया जाव महाणिरएसु संखेज्ज वित्थडे
णरए एगसमएणं केवइया एवं जहा पंकप्पभाए, णवरं तिसु णाणेसु ण उववज्जंति, ण
उव्वट्टंति, पण्णत्ताएसु तहेव अत्थि ॥ एवं असंखेज्ज वित्थडेसुवि, णवरं असंखेज्जा

भावार्थ

भगवन् ! तम पृथ्वी में कितने नरकावास कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच कम एक लाख नरकावास कहे हैं
शेष सब पंक प्रभा जैसे जानना ॥१२॥ नीचे की सातवी पृथ्वी में कितने बडे महा नरकावास कहे हैं
अहो गौतम ! पांच अनुत्तर नरकावास कहे हैं. अहो भगवन् ! क्या वे संख्यात योजन के विस्तारवाले
हैं या असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं ? अहो गौतम ! संख्यात योजन के विस्तारवाले और असं-
ख्यात योजन के विस्तारवाले हैं. इस का सब अधिकार पंक प्रभा जैसे कहना परंतु व तीन ज्ञान में
उत्पन्न नहीं होते हैं वैसे ही तीन ज्ञान में चवते नहीं हैं. असंख्यात योजन के विस्तारवाले में असंख्यात

शब्दार्थ संख्यात भाग फु० स्पर्शे अ० असंख्यात भाग फु० स्पर्शे स० सर्व फु० स्पर्शे गो० गौतम नो० नहीं सं० संख्यातवे भाग फु० स्पर्शे अ० असंख्यातवे भाग फु० स्पर्शे णो० नहीं सं० संख्यात भाग फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० असंख्यात भाग फु० स्पर्शे नो० नहीं स० सर्व फु० स्पर्शे ॥ ९ ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी का घ० घनोदधि ध० धर्मास्ति काया को किं० क्या सं० संख्यातवे भाग फु० स्पर्शे गो० गौतम ज० जैसे

सूत्र संखेज्जइ भागं फुसइ, असंखेज्जइ भागं फुसइ, णो संखेज्जे भागं फुसइ, णो असंखेज्जे भागं फुसइ, नो सव्वं फुसइ, ॥ ९ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मात्थिकायस्स किं संखेज्जइ भागं फुसइ ? गोयमा ! जहा रयणप्पभाए

भावार्थ रत्नप्रभा पृथ्वी को धर्मास्तिकाय क्या संख्यात वे भाग से स्पर्श कर रही है, असंख्यातवे भाग मे स्पर्श कर रही है, संख्यात भाग में या असंख्यात भाग में स्पर्शकर रही है या सब स्पर्शकर रही है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी को धर्मास्तिकाय संख्यातवे भाग से स्पर्शकर नहीं रही है परंतु असंख्यातवे भाग से स्पर्शकर रही है. क्यों कि रत्नप्रभा का पृथ्वी पिंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है. संख्यात व असंख्यात भाग में अथवा सब स्पर्शकर नहीं रही है ॥९॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि को धर्मास्तिकाय क्या संख्यातवे भागसे स्पर्शकर रही है ? अहो गौतम ! जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी का कहा वैसे ही

सूत्र

संखेज्ज वित्थडा णरया किं सम्मादिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, मिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया ? गोयमा ! सम्मदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया मिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया सम्मामिच्छदिट्ठीहिं णेरइएहिं अविरहिया विरहियाया एवं असंखेज्ज वित्थडेसुवि तिण्णि गमगा भाणियव्वा ! एवं सक्करप्पभाएवि । एवं जाव तमाएवि ॥ अहे सत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव संखेज्ज वित्थडे णरए किं सम्मदिट्ठी णेरइया पुच्छा ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी णेरइया ण उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी णेरइया

भावार्थ

वास में से संख्यात योजन के विस्तारवाले नरकावास क्या समदृष्टि से अविरहित हैं, मिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं या समिथ्यादृष्टि से अविरहित हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि नारकी से अविरहित हैं, मिथ्या दृष्टि नारकी से अविरहित हैं और समिथ्यादृष्टि नारकी से विरहित, अविरहित दोनों प्रकार के नरकावास रहे हुवे हैं. संख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी जैसे असंख्यात योजन के विस्तारवाले नारकी का कहना. जैसे रत्नप्रभा का कहा वैसे ही शर्कर प्रभा यावत् तम प्रभातक का जानना. सातवी तमतम- प्रभा के पांच अनुत्तर नरकावास में यावत् संख्यात विस्तारवाले में नारकी क्या समदृष्टि उत्पन्न होते हैं वगैरह

शब्दार्थ अ० अधो स० सातमी नरक ॥ ११ ॥ जं० जंबूद्वीपादि दी० द्वीप ल० लवण समुद्रादि स० समुद्र ए० ऐसे सो० सौधर्म देवलोक जा० यावत् इ० ईसत्पागभार पु० पृथ्वी ते० वे अ० असंख्यातवे भा० भाग को फु०

सूत्र एवं जाव अहेसत्तमाए॥११॥ जंबूदीवाइया दीवा, लवणसमुदाइया समुदा एवं सोहम्मे-कप्पे जाव इसिपब्भाए पुढवीए तेसव्वेवि असंखेज्जइ भागं फुसइ । सेसा पाडिसेहे-यव्वा । एवं अधम्मात्थिकाए एवं लोयागासेवि ॥ गाथा ॥ पुढवीउदहिघणतणू । क-

भावार्थ जम्बूद्वीप आदि सब द्वीप, लवण समुद्रादि सब समुद्र, सौधर्मादि देवलोक से लेकर बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, और ईषत्प्राग्भार पृथ्वी इन सब को धर्मास्तिकाया का असंख्यातवा भाग स्पर्श कर रहा है परंतु संख्यातवा भाग व संख्यात व असंख्यात भाग में, वैसे ही सब धर्मास्तिकाय स्पर्श कर नहीं रही है. जैसे धर्मास्तिकाय की वक्तव्यता कही वैसे ही अधर्मास्तिकाया व लोकाकाश का जानना. सात पृथ्वी, सात घनोदधि, सात घनवात, सात तनुवात, बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, सिद्धशिला इन सब में जो आकाशान्तर है उन को धर्मास्तिकायादि संख्यातवे भाग में स्पर्श कर रहे हैं. पृथ्वी, घनोदधि, घनवात, तनुवात व आकाश इन एकेक के सात २ सूत्र करने से ३५ हुए. बारह देवलोक के बारह, नव ग्रैवेयक के ३, पांच अनुत्तर विमान का १ और सिद्धशिलाका

सूत्र

णेरइएसु उववज्जंति? हंता गोयमा ! जाव उववज्जंति । से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति? गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु विसुज्झमाणेसु णीललेस्सं परिणमइ, णीललेस्सं परिणमइत्ता; णीललेस्सेसु णेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जंति ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्से णीललेस्से जाव भवित्ता काउलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जंति ? एवं जहा णीललेस्साए तहा काउलेस्साएवि भाणियव्वा जाव उववज्जंति सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ तेरसम सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ १ ॥

भावार्थ

लेश्यापने परिणमे फीर कृष्ण लेश्यावाली नरक में जाकर उत्पन्न होवे. अहो गौतम ! इस कारन से ऐसा कहा है कि कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्यावाले होकर कृष्ण लेश्यावाले नारकी उत्पन्न होवे. अहो भगवन् कृष्णलेशी यावत् शुक्ललेशी बनकर क्या नीललेशी नारकी में उत्पन्न होवे ? हां गौतम ! उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! किस कारन से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! लेश्या के स्थान भेद में अशुद्ध लेश्या में विशुद्ध होता है फीर नील लेश्या में परिणमकर नीललेश्यावंत नारकी में उत्पन्न होवे. इस तरह कृष्ण यावत् शुक्ल लेश्यावाले नील लेशी नरक में उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! कृष्ण लेशी, नील लेशी यावत् शुक्ल लेशी होकर कापोत लेश्यापने क्या उत्पन्न होवे ? हां गौतम ! उत्पन्न होवे वगैरह सब कथन नील लेश्या जैसे कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह तेरहवा शतक का प्रथम उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १३ ॥ १ ॥

शब्दार्थ अ० अधो स० सातवी नरक ॥ ११ ॥ जं० जंबूद्वीपादि दी० द्वीप ल० लवण समुद्रादि सं० समुद्र ए० ऐसे सो० सौधर्म देवलोक जा० यावत् इ० ईषत्प्रागभार पु० पृथ्वी ते० वे अ० असंख्यातवे भा० भाग को फु०

सूत्र एवं जाव अहेसत्तमाए॥११॥ जंबूद्दीवाइया दीवा, लवणसमुदाइया समुदा एवं सोहम्मे-कप्पे जाव इसिपब्भाए पुढवीए तेसव्वेवि असंखेज्जइ भागं फुसइ । सेसा पडिसेहे-यव्वा । एवं अधम्मात्थिकाए एवं लोयागासेवि ॥ गाथा ॥ पुढवीउदहिघणतणू । क-

भावार्थ जम्बूद्वीप आदि सब द्वीप, लवण समुद्रादि सब समुद्र, सौधर्मादि देवलोक से लेकर बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, और ईषत्प्राग्भार पृथ्वी इन सब को धर्मास्तिकाया का असंख्यातवा भाग स्पर्श कर रहा है परंतु संख्यातवा भाग व संख्यात व असंख्यात भाग में, वैसे ही सब धर्मास्तिकाय स्पर्श कर नहीं रही है. जैसे धर्मास्तिकाय की वक्तव्यता कही वैसे ही अधर्मास्तिकाया व लोकाकाश का जानना. सात पृथ्वी, सात घनोदधि, सात घनवात, सात तनुवात, बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, सिद्धशिला इन सब में जो आकाशान्तर है उन को धर्मास्तिकायादि संख्यातवे भाग में स्पर्श कर रहे हैं. पृथ्वी, घनोदधि, घनवात, तनुवात व आकाश इन एकेक के सात २ सूत्र करने से ३० हुए. बारह देवलोक के बारह, नव ग्रैवेयक के ३, पांच अनुत्तर विमान का १, और सिद्धशिलाका

पदार्थ

में सा० स्वामी स० समवसरण प० परिषदा नि० निर्गता प० परिषदा प० पीछीगई ॥ २ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के दो० दूसरे अं० अंतेवासी अ० अग्निभूति अ०अनगार गो० गौतम गो० गोत्र से स० सात हाथ ऊंचे जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के० कितना म० महर्द्धिक म० महाद्युतिवन्त म०

सूत्र

लेणं २ सामी समोसढे परिसा निग्गच्छइ, परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स दोच्चे अंतेवासी अग्गिभूईणामं अणगारे, गोयम गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी चमरेणं भंते ! असुरिंदे असुरराया के महिड्ढीए,केमहज्जुईए,केमहाबले, के महायसे केमहासोक्खे, के महाणुभागे,

भावार्थ

नाम की नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ सूत्र में चंपा नाम की नगरी जैसे कहना. उस मोया नगरी की ईशान कोन में नंदन नामक उद्यान था. उस का वर्णन भी उववाइ जैसे जानना. उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ग्रामानुग्राम विचरते उस नंदन उद्यान में पधारे. परिषदा धर्मोपदेश सुनने को आइ और सुनकर पीछीगइ ॥१॥ उस काल उस समय में भगवंत के दूसरे शिष्य गौतम गोत्रीय सात हाथ की अवगाहनावाले अग्निभूति नामक अनगार श्री भगवन्त को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करते पूछनेलगे कि अहो भगवन् ! चमर नामक असुरका राजा असुरेन्द्र कितनी ऋद्धिवाला है, कितनी द्युतिवाला है, कितना

॥ तृतीय शतकम् ॥

शब्दार्थ के० कैसी वि० विकुर्वणा च० चमर कि० क्रिया जा० यान त्थि० स्त्री न० नगर पा० लोकपाल अ० अधिपति इं० इन्द्रिय प० परिपदा त० तीसरा स० शतक में द० दशउद्देशा ॥ १ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में मो० मोया नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णनयुक्त ती० उस मो० मोया नगरी की व०बाहिर उ०ईशान कोन में नं०नंदन नाम का चे०उद्यान हो०था व०वर्णनयुक्त ते०उस काल ते०उस समय

सूत्र केरिस विउव्वणा, चमर, किरिय, जाणि,त्थि; नगर, पालाय॥ आहिवइ, इंदिय,परिसा; तइयंमि सए दसुद्देसा॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं मोया नामं नयरी होत्था,वण्णओ,तीसेणं मोयानयरीए बाहिया उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए, नंदणे नामं चेइए होत्था, वण्णओ। तेणंका-

भावार्थ दूसरे शतकके अंतिम उद्देशे में अस्तिकायाका स्वरूप कहा. अब इस उद्देशे में जीवास्तिकायका विचार कहते हैं. इस के दश उद्देशे बताते हैं. जिन के नाम १ वैक्रेय करने की शक्ति व चमरेन्द्र आदि इन्द्रों का अधिकार २ चमर उत्पात अधिकार ३ कायिकादि क्रिया का अधिकार ४ वैक्रेय समुद्धात से देवता यान विकुर्वे सो साधु जाने ५ साधु बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर स्त्री आदि के रूप विकुर्वे ६ साधु वाणारसी में समुद्धात करके राजगृह का रूप देखे ७ सोम आदि लोकपाल ८ असुरादि देव के कितने अधिपति ९ इन्द्रिय का अधिकार १० चमर की परिपदा का अधिकार ॥ १ ॥ उस काल उस समय में मोया

शब्दार्थ

से उ० युक्त सि० होवे ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा वे० वैक्रय स० समुद्घात स० पूरे स० पूरकर सं० संख्यात जो० योजन उ० ऊंचा दं० दंड को नि० निकाले तं० वह ज० जैसे र० रत्न जा० यावत् रि० रिष्ट अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल प० दूरकर अ० यथा सु० सूक्ष्म पो० पुद्गल प० ग्रहणकरे दो० दूसरी वक्त वे० वैक्रेय स० समुद्घात से स० पूरे प० समर्थ गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के० केवल कल्प जं० जंबूद्वीप व० बहुत अ० असुरकुमार दे०

सूत्र

वा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता संखेज्जाणि जोयणाणि उड्ढंदंडं निसिरइ तंजहा रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहा बायरे पोग्गले परिसाडेइ परिसाडेइत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाइयइ, परियाइयइत्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, पभूणं गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं

भावार्थ

चमर नामक असुरेन्द्र वैक्रेय समुद्घात करे. वैक्रेय समुद्घात करके संख्यात योजन का ऊंचा दंड करे. बहुत दलवाला व शरीर जितना चौडा, जीव प्रदेश व कर्म पुद्गलों का समुह बनावे. उस में कर्केतनादि विविध

१ यद्यपि कर्केतनादिक रत्नके पुद्गल औदारिक शरीरमय हैं और वक्रेय समुद्घात वैक्रेय पुद्गल ग्रहण करनेसे होतीहै. परंतु यहांपर रत्नसार पदार्थ होने से कर्केतनादि जैसे पुद्गलों ऐसा अर्थ लेना. कितनेक ऐसाभी कहते हैं कि उदारिक पने ग्रहण किये पुद्गल वैक्रेय पने परिणमते हैं.

शब्दार्थ बलवन्त म० महायशस्वी म० महानुभाग के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम च० चमर अ० असुरराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग से० उन को त० तहां चो० चोत्तीस भ० भुवन स० लक्ष च० चौसठ सा० सामानिक स० सहस्र ता० तेत्तीस ता० त्रायत्रिंशक जा० यावत् वि० विचरते हैं ए० ऐसे म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग ॥ ३ ॥ प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को से० वह ज० जैसे जु० युवति को जु० युवान ह० हाथ गे० ग्रहण करे च० चक्र की ना० नाभी अ० आरा

सूत्र केवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! चमरेणं असुरराया महिड्डीए, जाव महाणुभागे सेणं तत्थ चोत्तीसाए भवणावास सय सहस्साणं चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं जाव विहरइ एवं महिड्डीए जाव महाणुभागे ॥ ३ ॥ एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए । से जहा नामए जुवतिं जुवणे हत्थेणं हत्थं गेण्हेज्जा, चक्कस्स-

भावार्थ बलवाला है, कितना सुखवाला है, कैसा महानुभागवाला है, और किस प्रकार कितने रूप करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र महर्द्धिक यावत् महानुभागवाला है. उन को चौतीस लाख भुवन, चौसठ हजार सामानिक, और तेत्तीस त्रायत्रिंशक ऐसी ऋद्धि है ॥ ३ ॥ अब इन की वैक्रेय करने की शक्ति बताते हैं. जैसे काम से पीडित कोई युवान पुरुष अपने हस्त से युवति का हस्त पकडे, और जैसे चक्र की नाभि को आरे से पूरे अर्थात् चक्र की नाभि के छिद्र में आरा डाले ऐसे ही अहो गौतम !

शब्दार्थ से उ० युक्त सि० होवे ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा वे० वैक्रय स० समुद्घात स० पूरे स० पूरकर सं० संख्यात जो० योजन उ० ऊंचा दं० दंड को नि० निकाले तं० वह ज० जैसे र० रत्न जा० यावत् रि० रिष्ट अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल प० दूरकर अ० यथा सु० सूक्ष्म पो० पुद्गल प० ग्रहणकरे दो० दूसरी वक्त वे०वैक्रेय स० समुद्घात से स० पूरे प० समर्थ गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा कं० केवल कल्प जं० जंबूद्वीप व० बहुत अ० असुरकुमार दे०

सूत्र वा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता संखेजाणि जोयणाणि उड्ढंदंडं निसिरइ तंजहा रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहा बायरे पोग्गले परिसाडेइ परिसाडेइत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाइयइ, परियाइयइत्ता दोच्चंवि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, पभूणं गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं

भावार्थ चमर नामक असुरेन्द्र वैक्रेय समुद्घात करे. वैक्रेय समुद्घात करके संख्यात योजन का ऊंचा दंड करे. बहुत दलवाला व शरीर जितना चौडा, जीव प्रदेश व कर्म पुद्गलों का समुह बनावे. उस में कर्केतनादि विविध

१ यद्यपि कर्केतनादिक रत्नके पुद्गल औदारिक शरीरमय हैं और वक्रेय समुद्घात वैक्रेय पुद्गल ग्रहण करनेसे होतीहै. परंतु यहांपर रत्नसार पदार्थ होनेसे कर्केतनादि जैसे पुद्गलों ऐसा अर्थ लेना. कितनेक ऐसाभी कहते हैं कि उदारिक पने ग्रहण किये पुद्गल वैक्रेय पने परिणमते हैं.

शब्दार्थ देव दे०देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० संथरित फु० प्रगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे क० करे अ० अथवा गो० गौतम प० समर्थ च०चमर अ०असुरेन्द्र अ०असुरराजा ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र में व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० संथरित फु० प्रगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे

सूत्र जंबूदीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अरगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरंचणं गोयमा पभूणं चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अरगाढावगाढे करेत्तए; एसणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए । णो चेवणं संपत्तीए

भावार्थ प्रकार के पुद्गल ग्रहण करे. उन ग्रहे हुवे पुद्गलों में से निःसार बादर पुद्गलों को दूर करके यथायोग्य सूक्ष्म पुद्गलों को ग्रहण करे, और वांच्छितरूप बनाने के लिये दूसरी वक्त वैक्रेय समुद्घात करे.. अहो गौतम ! वह चमर नापक असुरेन्द्र अपने रूप से विकुर्वणा करके संपूर्ण जम्बूद्वीप भरे और बहुत असुर कुमार के देवता, देवियों व तथा प्रकारके अन्य भी इच्छित रूप से एक लक्ष योजनका जम्बूद्वीप व्याप्त होवे, विशेष व्याप्त होवे, क्रीडा से आच्छादित, परस्पर-संथरित, प्रगट, व परस्पर संश्लेषणा युक्त होवे.

पदार्थ

क० करे ए० यह गो० गौतम च०चमर अ०अमुरेन्द्र अ०असुर राजा का ए०ऐसारूप नि०विषय वि०विषय मात्र वु० कहा णो० नहीं सं० संपत्ति वि० विकुर्वणा की वि० विकुर्वणा करे वि०विकुर्वणा करेगा ॥ ४ ॥ ज०यदि भं०भगवन् च०चमर अ०असुरेन्द्र अ०असुरराजा ए० इतना म० महर्द्धिक जा०यावत् ए० ऐसे प०

सूत्र

विकुव्विंसुवा विकुव्वंतिवा, विकुव्विस्संतिवा ॥ ४ ॥ जइणं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणियदेवा के माहिड्ढीया जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! चमरस्स असुररण्णो सामाणिय देवा महिड्ढीया जाव महाणुभागा, तेणं तत्थ साणं साणं भवणाणं, साणं साणं सामाणियाणं, साणं साणं अग्गमहिसीणं, जाव

भावार्थ

और भी अहो गौतम ! बहुत असुर के देव व देवियों से तिच्छें असंख्याते द्वीप समुद्र को आकीर्ण करने को यावत् परस्पर संश्लेषणा युक्त बनाने को चमर नामक असुरेन्द्र समर्थ है. परंतु इतना रूप बनाने की संपत्ति नहीं है. मात्र चमर नामक असुरेन्द्र की इतना वैक्रेय रूप बनाने की शक्ति है. इतने रूप उनोंने अतीत काल में नहीं किये हैं, वर्तमान में नहीं करते हैं और आगामिक में नहीं करेंगे ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जब चमर नामक असुरेन्द्र की इतनी ऋद्धि यावत् इतना वैक्रेय रूप करने की शक्ति है तो उनके सामानिक देवकी कितनी ऋद्धि व कितनी शक्ति है अर्थात् वे कितने वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत हैं.

शब्दार्थ देव दे० देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० संथरित फु० प्रगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे क० करे अ० अथवा गो० गौतम प० समर्थ च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र में ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० संथरित फु० प्रगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे

सूत्र जंबूदीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरंचणं गोयमा पभूणं चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए; एसणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए । णो चेवणं संपत्तीए

भावार्थ प्रकार के पुद्गल ग्रहण करे. उन ग्रहे हुवे पुद्गलों में से निःसार बादर पुद्गलों को दूर करके यथायोग्य सूक्ष्म पुद्गलों को ग्रहण करे, और वांच्छितरूप बनाने के लिये दूसरी वक्त वैक्रेय समुद्घात करे. अहो गौतम ! वह चमर नामक असुरेन्द्र अपने रूप से निकुर्वणा करके संपूर्ण जम्बूद्वीप भरे और बहुत असुर कुमार के देवता, देवियों व तथा प्रकारके अन्य भी इच्छित रूप से एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप व्याप्त होवे, विशेष व्याप्त होवे, क्रीडा से आच्छादित, परस्पर-संथरित, प्रगट, व परस्पर संश्लेषणा युक्त होवे.

शब्दार्थ स्वतः के भ० भुवन सा० स्वतः के सा० सामानिकदेव स्वा० स्वतः की अ० अग्रमहिषी जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगवते वि० विचरते हैं ॥ ५ ॥ अ० असुरेन्द्र के ता० त्रायत्रिंशक देव ज०

सूत्र केवलकप्पं जंबूदीवंदीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अरगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसंखेज्जे दीव समुद्दे बहूहिं असुर कुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अरगाढावगाढे करेत्तए, एसणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणिय देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णोचेवणं संपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वितिवा, विकुव्विस्संतिवा ॥ ५ ॥ जइणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिय

भावार्थ संपूर्ण जम्बूद्वीप को व्याप्त, विशेष व्याप्त, आच्छादित, यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं वैसे ही तिर्छे असंख्यात द्वीप समुद्र को व्याप्त यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं. अहो गौतम ! चमरेन्द्रके सामानिक का मात्र यह विषय कहा परंतु उन को इतनी संपत्ति नहीं होने से उनोंने अतीत कालमें इतने वैक्रेय किया नहीं वर्तमानमें करते नहीं हैं. और आगामिकमें करेंगे भी नहीं॥५॥ अहो भगवन्! चमरेन्द्रके सामानिक इतने महर्द्धिक

शब्दार्थ — समर्थ वि० विकुर्वणा करने को च० चमरेन्द्र का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का सा० सामानिक दे० देव के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम च० चमर के अ० असुर राजा के सा० सामानिक देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग सा०

सूत्र — दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, एवं माहिड्ढीया जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए । से जहा नामए जुवइ जुवाणे हत्थेणं हत्थं गेण्हेज्जा, चक्करसवा नाभी अरया उत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरस्सवि असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए देवे वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ २ त्ता जाव दोच्चंपि वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ पभूणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए

भावार्थ — अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र असुरराजा के सामानिकदेव चमरेन्द्र जैसे महाऋद्धिवंत यावत् महानुभाग वाले हैं. वे अपने २ भवन, सामानिक अग्रमहिषी वगैरह के दीव्य सुख भोगवते हुवे रहते हैं. और जिस प्रकार कामसे पीडित युवान पुरुष अपने हस्तसे युवती का हस्त ग्रहण करता है, अथवा जैसे चक्र की नाभी में आरा निबिड रहता है, वैसे ही चमर नामक असुरेन्द्र के सामानिक देव वैक्रेय समुद्घात करे. उस में से निस्सार बादर पुद्गलों को छोडकर सूक्ष्म पुद्गलों ग्रहण कर इच्छित रूप बनाने को दूसरा वैक्रेय रूप बनावे. और अहो गौतम ! वे एक २ सामानिक देव असुर कुमार के बहुत देव देवियों के रूप बनाकर

शब्दार्थ स्वतः के भ० भुवन सा० स्वतः के सा० सामानिकदेव सा० स्वतः की अ० अग्रमहिषी जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगवते वि० विचरते हैं ॥ ५ ॥ अ० असुरेन्द्र के ता० त्रायत्रिंशक देव ज०

सूत्र केवलकप्पं जंबूद्दीवंदीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अरगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसंखेज्जे दीव समुद्दे बहूहिं असुर कुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अरगाढावगाढे करेत्तए, एसणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणिय देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए, णोचेवणं संपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वितिवा, विकुव्विस्संतिवा ॥ ५ ॥ जइणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिय

भावार्थ संपूर्ण जम्बूद्वीप को व्याप्त, विशेष व्याप्त, आच्छादित, यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं वैसे ही तिर्च्छे असंख्यात द्वीप समुद्र को व्याप्त यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं. अहो गौतम ! चमरेन्द्रके सामानिक का मात्र यह विषय कहा परंतु उन को इतनी संपत्ति नहीं होने से उनोंने अतीत कालमें इतने वैक्रेय किया नहीं वर्तमानमें करते नहीं हैं. और आगामिकमें करेंगे भी नहीं॥५॥ अहो भगवन्! चमरेन्द्रके सामानिक इतने महार्द्धिक

शब्दार्थ — समर्थ वि० विकुर्वणा करने को च० चमरेन्द्र का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का सा० सामानिक दे० देव के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम च० चमर के अ० असुर राजा के सा० सामानिक देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग सा०

सूत्र — दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, एवं महिड्डीया जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए। से जहा नामए जुवइं जुवाणे हत्थेणं हत्थं गेण्हेज्जा, चक्कस्सवा नाभी अरया उत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरस्सवि असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए देवे वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ २ त्ता जाव दोच्चंपि वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ पभूणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए

भावार्थ — अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र, असुरराजा के सामानिकदेव चमरेन्द्र जैसे महाऋद्धिवंत यावत् महानुभाग वाले हैं. वे अपने २ भवन, सामानिक अग्रमहिषी वगैरह के दीव्य सुख भोगवते हुवे रहते हैं. और जिस प्रकार कामसे पीडित युवान पुरुष अपने हस्तसे युवती का हस्त ग्रहण करता है, अथवा जैसे चक्रकी नाभी में आरा निबिड रहता है, वैसे ही चमर नामक असुरेन्द्र के सामानिक देव वैक्रेय समुद्घात करे. उस में से निस्सार बादर पुद्गलों को छोडकर सूक्ष्म पुद्गलों ग्रहण कर इच्छित रूप बनाने को दूसरा वैक्रेय रूप बनावे. और अहो गौतम ! वे एक २ सामानिक देव असुर कुमार के बहुत देव देवियों के रूप बनाकर

शब्दार्थ देवी के० कितनी म० महर्द्धिक ज० जैसे लो० लोकपाल अ० अवशेष स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ ७ ॥ भ० भगवान् दो० दूसरा गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना कर न०

सूत्र असुररण्णो भंते अग्गमहिसीओ देवीओ के महिड्ढीयाओ जाव केवइयंचणं पभू विउ-व्वित्तए? गोयमा! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढीयाओ जाव महाणुभागाओ, ताओणं तत्थ साणं साणं भवणाणं, साणं साणं च सामाणिय साहस्सीणं, साणं साणं महत्तरियाणं, साणं साणं परिसाणं जाव महिड्ढीयाओ अण्णं जहा लो-गपालाणं, अपरिसेसं॥ सेवं भंते २ ! त्ति ॥७॥ भगवं दोच्चे गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे तेणेव उवाग-

भावार्थ सकती हैं ? अहो गौतम ! चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों महा ऋद्धिवाली यावत् महानुभागवाली हैं. वे अपने २ भवन, अपने २ सामानिक देव, अपनी २ महत्तरिक देवियों, अपनी २ परिषदा की ऋद्धि-वाली हैं वगैरह लोकपाल जैसे सब अधिकार कहना. इतना सुनकर गौतम गोत्रीय दूसरे गणधर श्री अग्निभूति बोले कि अहो भगवन् ! जो आप कहते हैं वह सत्य है. जैसा आपका कथन है वैसा ही वस्तुस्वरूप है ॥७॥ इतना कहकर, श्री श्रमण भगवंतको वंदना नमस्कार करके अग्निभूतिने तीसरे गणधर गौतम गोत्रीय श्री वायुभूति की पास आकर कहा कि अहो- गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र की ऋद्धि

शब्दार्थ जैसे सा० सामानिक त० तैसे णे० जानना लो० लोकपाल त० तैसे न० विशेष सं० संख्यात दी० द्वीप स० समुद्र भा० कहना ब० बहुत अ० असुर कुमार से आ० आकीर्ण जा० यावत् वि० विकुर्वणा करेंगे ॥ ६ ॥ ज० यदि च० चमर के अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजाके लो० लोकपाल देव म० महर्द्धिक अ० अग्रमहिषी

सूत्र देवाए महिड्डीया जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए । चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो तावत्तीसया देवा केमहिड्डीया, वत्तीसया जहा सामाणिया तहा णेयव्वा॥ लोयपाला तहेव, नवरं संखेज्जा दीवसमुद्दा भाणियव्वा, बहूहिं असुरकुमारेहिं २ आइण्णे जाव विउव्विस्संतिवा॥ ६ ॥ जइणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो लोगपाला देवाए महिड्डीए जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए, चमरस्सणं असुरिंदस्स

भावार्थ यावत् महानुभागवाले वैसे ही इतने वैक्रेय करने की शक्तिवाले हैं तब चमरेन्द्र के त्रायत्रिंशक कितने महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय करनेवाले हैं. अहो गौतम ! जैसे सामानिक का कहा वैसे ही त्रायत्रिंशक का जानना. और इसीतरह लोकपाल का जानना. मात्र इतना विशेष है की इसमें संख्याते द्वीप समुद्र लेना. त्रायत्रिंशक व लोकपाल संख्याते द्वीप समुद्र को असुर कुमार के देव व देवियों से व्याप्त करने को समर्थ हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जब चमर नामक असुरेन्द्र के लोकपाल इतने महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय करने को शक्तिवंत हैं तब चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों कितनी ऋद्धिवाली हैं और कितने रूप वैक्रेय बना

शब्दार्थ देवी के० कितनी म० महर्द्धिक ज० जैसे लो० लोकपाल अ० अवशेष स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ ७ ॥ भ० भगवान् दो० दूसरा गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना कर न०

सूत्र असुररण्णो भंते अग्गमहिसीओ देवीओ के महिड्ढीयाओ जाव केवइयंचणं पभू विउव्वित्तए? गोयमा ! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढीयाओ जाव महाणुभागाओ, ताओणं तत्थ साणं साणं भवणाणं, साणं साणं च सामाणिय साहस्सीणं, साणं साणं महत्तरियाणं, साणं साणं परिसाणं जाव महिड्ढीयाओ अण्णं जहा लोगपालाणं, अपरिसेसं ॥ सेवं भंते २ ! त्ति ॥७॥ भगवं दोच्चे गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे तेणेव उवाग-

भावार्थ सकती हैं ? अहो गौतम ! चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों महा ऋद्धिवाली यावत् महानुभागवाली हैं. वे अपने २ भुवन, अपने २ सामानिक देव, अपनी २ महत्तरिक देवियों, अपनी २ परिषदा की ऋद्धिवाली हैं वगैरह लोकपाल जैसे सब अधिकार कहना. इतना सुनकर गौतम गोत्रीय दूसरे गणधर श्री अग्निभूति बोले कि अहो भगवन् ! जो आप कहते हैं वह सत्य है. जैसा आपका कथन है वैसा ही वस्तुस्वरूप है ॥७॥ इतना कहकर, श्री श्रमण भगवंतको वंदना नमस्कार करके अग्निभूतिने तीसरे गणधर गौतम गोत्रीय श्री वायुभूति की पास आकर कहा कि अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र की ऋद्धि

शब्दार्थ नमस्कारकर जे॰ जहां त॰ तीसरा गो॰ गौतम वा॰ वायुभूति अ॰ अनगार ते॰ तहां उ॰ आकर त॰ तीसरा गो॰ गौतम वा॰ वायुभूति अ॰ अनगार को ए॰ ऐसा व॰ कहा ए॰ ऐसे ख॰ निश्चय गो॰ गौतम च॰ चमर अ॰ असुरेन्द्र अ॰ असुर राजा म॰ महर्द्धिक तं॰ उसको ए॰ ऐसे स॰ सर्व अ॰ विना पूछे वा॰ कथन ने॰ जानना अ॰ संपूर्ण जा॰ यावत् अ॰ अग्रमहिषी व॰ वक्तव्यता स॰ संपूर्ण ॥ ८ ॥ त॰ तब से॰-वह त॰ तीसरा गो॰ गौतम वा॰ वायुभूति अ॰ अनगार को दो॰ दूसरा गो॰ गौतम अ॰ अग्निभूति अ॰अनगार ए॰ऐसे आ॰कहतेको भा॰बोलते को प॰विशेष कहतेको प॰ प्ररूपते को ए॰यह अर्थ

सूत्र च्छइ २ त्ता, तच्चं गोयमं वायुभूइं अणगारं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए तंचेव एवं सव्वं अपुट्ठं वागरणं नेयव्वं अपरिसेसं जाव अग्गमहिसीणं वत्तव्वया सम्मत्ता ॥८॥ तएणं से तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे दोचस्स गोयमस्स अग्गिभूयस्स अणगारस्स एव माइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ, नो रोयइ; एयमट्ठं असद्दह-

भावार्थ यावत् वैक्रेय करनेकी इतनी शक्ति है. यावत् अग्रमहिषियोंतक का सब अधिकार ऐसा है. इस तरह जैसे भगवन्तने फरमाया था वैसा संपूर्ण अधिकार वायुभूति अनगारको कहा ॥ ८ ॥ इस तरह अग्निभूतिने जो कहा उस के अर्थ की श्रद्धा, प्रतीति व रुचि वायुभूति अनगार को हुई नहीं और श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं होने से

पदार्थ

नो० नहीं स० श्रद्धा नो० नहीं प० प्रतीत हुआ नो० नहीं रो० रुचा उ० स्थान से उ० उठकर जे०

सूत्र

माणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवइ परूवइ परूवइत्ता, एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए जाव महाणुभागे. सेणं तत्थ चोत्तीसाए भवणावास सयसहस्साणं तंचेव सव्वं अपरिसेसं भाणियव्वं जाव अग्गमहिसीओ वत्तव्वया सम्मत्ता ॥ से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमादि समणे भगवं महावीरे तच्चं गोयमं वाउभूइं अणगारं एवं वयासी—जण्णं गोयमा ! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे

भावार्थ

अपने स्थान से उठकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास गये. वहां जाकर वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! मुझे दूसरे गौतम गोत्रीय अग्निभूति नामक अनगार ऐसा कहते हैं. यावत् परूपते हैं कि चमर नामक असुरेन्द्र महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले हैं. चौत्तीस लाख भुवन के मालीक हैं वगैरह अग्रमहिषियों तक सब संपूर्ण अधिकार कहा और पूछा कि अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? फीर श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने वायुभूति अनगार को ऐसा कहा कि अहो गौतम! तुम को दूसरे गौतम गोत्रीय अग्निभूति अनगारने ऐसा कहा कि चमरेन्द्र महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले हैं यावत्

शब्दार्थ नमस्कारकर जे० जहां त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार ते० तहां उ० आकर त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहा ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक तं० उसको ए० ऐसे स० सर्व अ० विना पूछे वा० कथन ने० जानना अ० संपूर्ण जा० यावत् अ० अग्रमहिषी व० वक्तव्यता स० संपूर्ण ॥ ८ ॥ त० तब से० वह त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार को दो० दूसरा गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार ए० ऐसे आ० कहतेको भा० बोलते को प० विशेष कहतेको प० प्ररूपते को ए० यह अर्थ

सूत्र च्छइ २ त्ता, तच्चं गोयमं वायुभूइं अणगारं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए तंचेव एवं सव्वं अपुट्ठं वागरणं नेयव्वं अपरिसेसं जाव अग्गमहिसीणं वत्तव्वया सम्मत्ता ॥८॥ तएणं से तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूयस्स अणगारस्स एव माइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ, नो रोयइ; एयमट्ठं असद्दह-

भावार्थ यावत् वैक्रेय करनेकी इतनी शक्ति है. यावत् अग्रमहिषियोंतक का सब अधिकार ऐसा है. इस तरह जैसे भगवन्तने फरमाया था वैसा संपूर्ण अधिकार वायुभूति अनगारको कहा ॥ ८ ॥ इस तरह अग्निभूतिने जो कहा उस के अर्थ की श्रद्धा, प्रतीति व रुचि वायुभूति अनगार को हुई नहीं और श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं होने से

शब्दार्थ त० तब से० वह त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार दो० दूसरा गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार की स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भं० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को ब० बलेन्द्र भं० भगवन् व० वैरोचन व० वैरोचनराजा के० कितना म० महर्द्धिक ज० जैसे च० चमर का त० तैसे ब० बलेन्द्र का ने० जानना ण० विशेष सा० अधिक के०

सूत्र से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चेणं गोयमेणं अग्गिभूइणा अणगारेण सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी जइणं भंते चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए जाव एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए। बलीणं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्ढीए जाव केवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! बलीणं वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए जहा चमरस्स तहा बलिस्सवि णेयव्वं

भावार्थ की पास गये और वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना कर ऐसा बोले. अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेयरूप करने को शक्तिवंत है तो बलि नामक वैरोचनेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय करनेको शक्तिवंत है ? अहो गौतम ! जैसा चमरेन्द्रका कहा वैसा ही बलि नामक वैरोचनेन्द्र का जानना. विशेष इतना कि यह देव देवियों से कुछ अधिक जम्बूद्वीप भरे, शेष सब पूर्वोक्त जैसे

शब्दार्थ जहां म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले ॥ ९ ॥

सूत्र एवमाइक्खइ ४ । एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुररायामाहिड्डीए सोचेव सव्वं जाव अग्गमाहिसीओ। सच्चेणं एसमट्ठे, अहंपिणं गोयमा! एव माइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया माहिड्ढीए सो चेव वि-तिओ गमो भाणियव्वो ! जाव अग्गमहिसीओ सच्चेणमेसअट्ठे, सेवं भंते भंते! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं वंदइ वंदइत्ता जेणेव दोच्चे गोयमे अग्गि-भूती अणगारे तेणेव; उवागच्छइ उवागच्छइत्ता दोच्चं गोयमं अग्गिभूइं अणगारं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेइ ॥ ९ ॥ तएणं

भावार्थ अग्रमाहिषियों तक का सब अधिकार ऐसा है. अहो गौतम ! यह अर्थ सत्य है. और मैं भी ऐसा ही कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं. और यह अर्थ भी सत्य है. अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है ऐसा कह-कर वायुभूति अनगार भगवन्त श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर अग्निभूति नामक दूसरे गणधर की पास आये आकर दूसरे गणधर श्री अग्निभूति को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि मैंने आप के वचन सुनकर श्रद्धे नहीं यावत् आप के वचन की प्रतीति की नहीं इसलिये मैं आपकी पुनः पुनः क्षमा याचता हूं ॥ ९ ॥ फीर अग्निभूति अनगार की साथ वायुभूति अनगार श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी

शब्दार्थ

त० तब से० वह त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार दो० दूसरा गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार की स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भं० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को व० बलेन्द्र भं० भगवन् व० वैरोचन व० वैरोचनराजा के० कितना म० महर्द्धिक ज० जैसे च० चमर का त० तैसे व० बलेन्द्र का ने० जानना ण० विशेष सा० अधिक के०

सूत्र

से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चेणं गोयमेणं अग्गिभूइणा अणगारेण सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी जइणं भंते चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्डीए जाव एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए । बलीणं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्डीए जाव केवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! बलीणं वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्डीए जहा चमरस्स तहा बलिस्सवि णेयव्वं

भावार्थ

की पास गये और वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना कर ऐसा बोले. अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेयरूप करने को शक्तिवंत है तो बलि नामक वैरोचनेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय करनेको शक्तिवंत है ? अहो गौतम! जैसा चमरेन्द्रका कहा वैसा ही बलि नामक वैरोचनेन्द्र का जानना. विशेष इतना कि यह देव देवियों से कुछ अधिक जम्बूद्वीप भरे, शेष सब पूर्वोक्त जैसे

शब्दार्थ केवल कल्प जं० जंबूद्वीप भा० कहना से० शेष तं० तैसे णि० निर्विशेष णे० जानना णा० नाना प्रकार जा० जानना भ० भवन सा० सामानिक से स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार वि० विचरते हैं ॥ १० ॥ त० तब दो० दूसरे गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर ए० ऐसा व० बोले ज० यदि ब० बलि व०

सूत्र णवरं साइरेगं केवलकप्पं जंबूदीवं भाणियव्वं, सेसंतंचेव णिरवसेसं णेयव्वं, णवरं णाणत्तं जाणियव्वं, भवणेहिं, सामाणिएहिं सेवं भंते भंते! त्ति, तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे जाव विहरइ ॥ १० ॥ तएणं से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ वंदइत्ता एवं वयासी, जइणं भंते ! बली वइरोयणिंदे वइरो-

भावार्थ जानना. बलि नामक वैरोचनेन्द्र को तीस लाख भुवन व साठ सहस्र सामानिक देवता जानना. अहो भगवन् ! जैसे आप कहते हैं वैसे ही हैं. इस तरह सुनकर वंदना नमस्कार करके श्री वायुभूति अनगार विचरने लगे ॥ १० ॥ पुनः अग्निभूति नामक अनगारने श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार करके ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो भगवन् ! बलि नामक वैरोचनेंद्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय रूप करने को समर्थ है तब अहो भगवन् ! धरणेन्द्र नामक नाग कुमारेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय रूप

पदार्थ

व० वैरोचनेन्द्र व० वैरोचन राजा म० महर्द्धिक प० समर्थ जा० यावत् वि० विकुर्वणा करने को ध० धरणेन्द्र ना० नागकुमारेन्द्र ना० नागकुमार राजा के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम म० महर्द्धिक जा० यावत् त० तहां चो० चौंवालीस भ० भुवन स० लाख छ० छ सा० सामानिक स० सहस्र ता० तेत्तीस ता० त्रायत्रिंशक च० चार लो० लो-

सूत्र

यणराया ए महिड्ढीए पभू जाव विउव्वित्तए धरणेणं भंते ! नागकुमारिंदे नाग-कुमारराया केमहिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव सेणं तत्थ चोयालीसाए भवणवाससयसहस्साणं छण्हं सामाणिय साहस्सीणं, तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं, छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं आणियाणं, सत्तण्हं अणीयाहिवईणं; चउवीसाए आयरक्ख-

भावार्थ

करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! धरण नामक नाग कुमारेन्द्र को ४४ लाख भुवन, छ हजार सामानिकदेव तेत्तीस त्रायत्रिंशक, चार लोकपाल, परिवार सहित छ अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति, चौवीस हजार आत्मरक्षक देव और अन्य भी अनेक प्रकार के देवों की ऋद्धि है. और जैसे काम पीडित पुरुष युवती का निरंतर हस्त ग्रहण कर रखता है या गाडे की नाभी में आरा रहता है वैसे ही नाग कुमार रत्नादिक सार पुद्गलों को ग्रहण कर वैक्रेय बनावे. उस में से बादर पुद्गलों

शब्दार्थ — कैवल कल्प जं० जंबूद्वीप भा० कहना से० शेष तं० तैसे णि० निर्विशेष णे० जानना णा० नाना प्रकार जा० जानना भ० भवन सा० सामानिक स स० एवं स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार वि० विचरते हैं ॥ १२ ॥ त० तब दो० दूसरे गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर ए० ऐसा व० बोले ज० यदि भं० भगवन् व० बलि व०

सूत्र — एवं साइरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं भाणियव्वं, सेसं तंचेव णिरवसेसं णेयव्वं, णवरं णाणत्तं जाणियव्वं, भवणेहिं, सामाणिएहिं सेवं भंते भंते! त्ति, तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे जाव विहरइ ॥ १० ॥ तएणं से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ एवं वयासी, जइणं भंते ! बली वइरोयणिंदे वइरो-

भावार्थ — जानना. बलि नामक वैरोचनेन्द्र को तीस लाख भुवन व साठ सहस्र सामानिक देवता जानना. अहो भगवन् ! जैसे आप कहते हैं वैसे ही हैं. इस तरह सुनकर वंदना नमस्कार करके श्री वायुभूति अनगार विचरने लगे ॥ १० ॥ पुनः अग्निभूति नामक अनगारने श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार करके ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो भगवन् ! बलि नामक वैरोचनेन्द्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय रूप करने को समर्थ है तब अहो भगवन् ! धरणेन्द्र नामक नाग कुमारेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय रूप

शब्दार्थ

दक्षिण का स० सर्व अ० अग्निभूति पु० पूछे उ० उत्तर का स० सर्व वा० वायुभूति पु० पूछे ॥१२॥ भं० भगवन् ति० ऐसे भ० भगवन्त गो० गौतम दो० दूसरा अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर न० नमस्कारकर ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भं० भगवन् जो० ज्योतिषी राजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देव राजा के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को

सूत्र

पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥१२॥ भंतोत्ति भगवं गोयमे दोच्चे आग्गिभूई अणगारे समणं भगवं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी जइ णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया ए महिड्ढीए जाव एवइयंचणं पभू विउव्वित्तए सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया के माहिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! सक्केणं देविंदे देवराया माहिड्ढीए जाव महाणुभागे सेणं बत्तीसाए विमाणावास सय सहस्साणं, चउरासीए

भावार्थ

अग्निभूतिने पूछा है ॥ १२ ॥ पुनः अग्निभूति नामक गणधर प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! जब ज्योतिषीका इन्द्र इतनी ऋद्धिवाला यावत् इतना वैक्रेय कर सकता है तब शक्रेन्द्र कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितना वैक्रेय कर सके ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र को बत्तीस लाख विमान, चौरासी हजार सामानिक उस से चौगुने आत्मरक्षक, और अन्य भी परिवार कहा है. वैक्रेय करने की शक्ति वगैरह चमरेन्द्र जैसे

शब्दार्थ कपाल छ० छ अ० अग्रमहिषी स० परिवार सहित ति० तीन प० परिपदा स० सात अनिक स० सात अनिक के अधिपति च० चौवीस आ० आत्मरक्षक देव सा० सहस्र अ० अन्य जा० यावत् वि० विचरते हैं. ॥ ११ ॥ ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी ण० विशेष दा०

सूत्र देव साहस्सीणं, अन्नेसिंच जाव विहरइ, एवइयंचणं पभू विउव्वित्तए । से जहा नामए जुवइ जुवाणे जाव पभू केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं जाव तिरियं संखेज्जे दीव समुद्दे बहूहिं नाग कुमारीहिं जाव विउव्विस्संतिवा । सामाणिय तावत्तीस लोगपाल, अग्गमहिसीओय तहेव जहा चमरस्स णवरं संखेज्जे दीवसमुद्दे भाणियव्वं ॥ ११ ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ वाणमंतर जोइसियावि, णवरं दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूई

भावार्थ को छोडकर दूसरी वक्त वैक्रेय बनावे और एक लाख योजन का जम्बूद्वीप यावत् तिर्च्छे संख्याते द्वीप समुद्र को देव देवियों के नविनरूप बनाकर भर देवे. इनके सामानिक, त्रायत्रिंशक, लोकपाल व अग्रमहिषियों का चमरेन्द्र जैसे जानना. इस में संख्यात द्वीप समुद्र पूरे उतने वैक्रेय रूप बनाने की शक्ति है वैसा कहना ॥ ११ ॥ ऐसे ही शेष सब भुवनपति वाणव्यंतर व ज्योतिषि का जानना. इस में इतना अधिक जानना कि उत्तर दिशाके देवता संबंधी प्रश्न वायुभूतिने पूछा है और दक्षिण दिशा संबंधी सब प्रश्न

दक्षिण का स० सर्व अ० अग्निभूति पु० पूछे उ० उत्तर का स० सर्व वा० वायुभूति पु० पूछे ॥१२॥ भं० भगवन् ति० ऐसे भ० भगवन्त गो० गौतम दो० दूसरा अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर न० नमस्कारकर ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भं० भगवन् जो० ज्योतिषी राजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देव राजा के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को

सूत्र

पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥१२॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे दोच्चे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी जइ णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया ए महिड्डीए जाव एवइयंचणं पभू विउव्वित्तए सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया के महिड्डीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! सक्केणं देविंदे देवराया महिड्डीए जाव महाणुभागे सेणं बत्तीसाए विमाणावास सय सहस्साणं, चउरासीए

भावार्थ

अग्निभूतिने पुछा है ॥ १२ ॥ पुनः अग्निभूति नामक गणधर प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! जब ज्योतिषीका इन्द्र इतनी ऋद्धिवाला यावत् इतना वैक्रेय कर सकता है तब शक्रेन्द्र कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितना वैक्रेय कर सके ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र को बत्तीस लाख विमान, चौरासी हजार सामानिक उस से चौगुने आत्मरक्षक, और अन्य भी परिवार कहा है. वैक्रेय करने की शक्ति वगैरह चमरेन्द्र जैसे

गो० गौतम स० शक्रेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग व० बत्तीस वि० विमान स० लक्ष च० चौरासी सा० सामानिक सा० सहस्र जा० यावत् च० चार च० चौरासी आ० आत्मरक्षक सा० सहस्र अ० अन्य जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १३ ॥ ज० यदि भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को दे० देवानुप्रिय का अं० अंतेवासी ती० तिष्यक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत छ०

सामाणिय साहस्सीणं, जाव चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेव साहस्सीणं अण्णेसिंच जाव विहरइ, ए महिड्ढीए, जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव चमरस्स तहेव भाणियव्वं, णवरं दोकेवलकप्पे जंबूदीवे दीवे, अवसेसं तंचेव एसणं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए णो चेवणं संपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वइवा, विकुव्विस्संतिवा, ॥ १३ ॥ जइणं भंते !

कहना परंतु बहुत देव देवियों के रूप व अन्य अनेक प्रकार के रूप से दो जम्बूद्वीप संपूर्ण भर देवे इतनी शक्ति है परंतु संपत्ति नहीं है. ऐसा किसीने किया नहीं है, करते नहीं हैं और करेंगे भी नहीं ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्र ऐसी ऋद्धिवाले यावत् इतना वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत हैं तब आपका अंतेवासी प्रकृतिभद्रिक यावत् विनीत तिष्यक नामक अनगार निरंतर छठ छठ के तप से आत्मा को भावते हुवे

शब्दार्थ छठ भक्त से अ० अंतर रहित त० तप कर्म से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे व० बहुत प० प्रतिपूर्ण अ० आठवर्ष सा० दीक्षा पर्याय पा० पालकर मा० मासकी सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स०साठ भक्त अ०अनशन छे०छेदकर आ०आलोच कर प० प्रतिक्रमणकर स० समाधि प्राप्त का० काल के अवसर में; का० काल करके सो० सौधर्म देवलोक में स० अपने वि० विमान में उ० उपपात

सूत्र सक्के देविंदे देवराया ए महिड्ढीए जाव एवइयं चणं पभूविकुव्वित्तए एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी तीसएनामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए छट्ठं छट्ठेणं आणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सठिंभत्ताइं अणसणाए छेदित्ताइं अणसणाए छेदित्ता, आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे का-

भावार्थ पूर्ण आठ वर्ष तक साधु की पर्याय पालकर, एक मास की संलेखना से आत्मा को झोंस कर, साठ भक्त अनशन करके, आलोचना प्रतिक्रमण करके समाधि प्राप्त हुए; और काल के अवसर में काल करके सौधर्म देवलोक में तिष्यक नामक विमान में उपपात सभा की देवशैय्या में देव दूष्य वस्त्र नीचे अंगुल के असंख्यातवे भाग प्रमाण की अवगाहना से शक्रेन्द्र देवेन्द्र के सामानिक देवतापने उत्पन्न हुए; वहां उत्पन्न होकर आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोश्वास पर्याप्ति व भाषा मन पर्याप्ति ऐसी पांच

शब्दार्थ गो० गौतम स० शक्रेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग ब० बत्तीस वि० विमान स० लक्ष च० चौरासी सा० सामानिक सा० सहस्र जा० यावत् च० चार च० चौरासी आ० आत्मरक्षक सा० सहस्र अ० अन्य जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १३ ॥ ज० यदि भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को दे० देवानुप्रिय का अं० अंतेवासी ती० तिष्यक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत छ०

सूत्र

सामाणिय साहस्सीणं, जाव चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेव साहस्सीणं अण्णेसिंच जाव विहरइ, ए महिड्ढीए, जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव चमरस्स तहेव भाणियव्वं, णवरं दोकेवलकप्पे जंबूद्दीवे दीवे, अवसेसं तंचेव एसणं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए णो चेवणं संपत्तीए, विकुव्विंसुवा, विकुव्वइवा, विकुव्विस्संतिवा, ॥ १३ ॥ जइणं भंते !

कहना परंतु बहुत देव देवियों के रूप व अन्य अनेक प्रकार के रूप से दो जम्बूद्वीप संपूर्ण भर देवे इतनी शक्ति है परंतु संपत्ति नहीं है. ऐसा किसीने किया नहीं है, करते नहीं हैं और करेंगे भी नहीं ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्र ऐसी ऋद्धिवाले यावत् इतना वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत हैं तब आपका अंतेवासी प्रकृतिभद्रिक यावत् विनीत तिष्यक नामक अनगार निरंतर छठ छठ के तप से आत्मा को भावते हुवे

शब्दार्थ

मनःपर्याप्ति तं० तब ती० तिष्यकदेव को पं० पांच प्रकार की प०पर्याप्ति के प०पर्याप्तिके भाव को, ग०गये हुवे सा० सामानिक प० परिषदा में उ० उत्पन्न हुवे दे० देव क० करतल प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्षसे आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजली करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसा

सूत्र

दिव्वादेवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे, लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए जारिसाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी, देवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए, तारिसियाणं सक्कोणं देविंदेणं देवरण्णो दिव्वादेविड्ढी जाव आभिसमण्णागया,जारिसिणं सक्कणं देविंदेणं देवरण्णो दिव्वादेविड्ढि जाव आभिसमण्णागया, तारिसियाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वादेविड्ढी जाव आभिसमण्णागया सेणं भंते तीसए देवे के महिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे, सेणं तत्थ सयस्स विमाणस्स चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं वेमाणियाणं देवाणय जाव विहरइ, ए महि

भावार्थ

वगैरह है वैसे ही आप को है. अहो भगवन् ! ऐसा तीसक नामक देवता कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितने रूप वैक्रेय करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! वह अपने विमान चार हजार सामानिक देवता, चार अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति, सोलह हजार आत्म-

शब्दार्थ सभा में दे० देवशैय्या में दे० देवदूष्य के अंतर में अं० अंगुल के अ० असंख्यातवे भा० भाग मात्र ओ० अवगाहना स० शक्रेन्द्र के दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के सा० सामानिक दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवा त० तब ती० तिष्यकदेव अ० तुर्त का उ० उत्पन्न हुवा पं० पांच प्रकार की प० प्रर्याप्ति से प० प्रर्याप्ति भाव को ग० जावे आ० आहार पर्याप्ति स० शरीर इं० इन्द्रिय आ० श्वासोश्वास पर्याप्ति भा० भाषा

सूत्र लंकिच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्ज भागमेत्तीए ओगाहणाए, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणिय देवत्ताए उववण्णे। तएणं तीसए देवे अहुणोव वण्णमेत्ते समाणे पंचविहाए पज्जुत्तीए पज्जत्ति भावं गच्छइ तंजहा आहारपज्जत्ती सरीर इंदिय आणापाणपज्जत्तीए, भासामणपज्जत्तीए। तएणं तं तीसयं देवं पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गयं समाणं सामाणिय परिसोव वण्णया देवया करयल परिग्गाहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेइत्ता एवं वयासी अहोणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वं देविड्ढी,

भावार्थ पर्याप्ति से पर्याप्त बने. उन पर्याप्त बने हुवे देव को सामानिक परिषदावाले देवोंने हस्तद्वय जोडकर दश नख एकत्रित करके मस्तक को आवर्तन करके "जय-विजय" शब्दों से वधाये. वधाकर ऐसा बोले अहो ! आप देवानुप्रिय को दीव्य देव ऋद्धि, देवद्युति, व देवानुभाव प्राप्त हुवा है. जैसे आप को दीव्यदेव ऋद्धि, द्युति व महानुभाव है वैसे ही शक्रेन्द्र को है; और जैसे शक्रेन्द्र को दीव्य देव ऋद्धि कांति

शब्दार्थ मनःपर्याप्ति तं० तत्र ती० तिष्यकदेव को पं० पांच प्रकार की प०पर्याप्ति के प०पर्याप्तिके भाव को, ग०गये हुवे सा० सामानिक प० परिषदा में उ० उत्पन्न हुवे दे० देव क० करतल प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्पसे आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजली करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसा

सूत्र दिव्वादेवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे, लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए जारिसाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी, देवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए, तारिसियाणं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णो दिव्वादेविड्ढी जाव आभिसमण्णागया, जारिसिणं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णो दिव्वादेविड्ढि जाव आभिसमण्णागया, तारिसियाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वादेविड्ढी जाव आभिसमण्णागया सेणं भंते तीसए देवे के महिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे, सेणं तत्थ सयस्स विमाणस्स चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं वेमाणियाणं देवाणय जाव विहरइ, ए महि

भावार्थ वगैरह है वैसे ही आप को है. अहो भगवन् ! ऐसा तीसक नामक देवता कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितने रूप वैक्रेय करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! वह अपने विमान चार हजार सामानिक देवता, चार अग्रमाहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति, सोलह हजार आत्म-

शब्दार्थ सभा में दे० देवशैय्या में दे० देवदूष्य के अंतर में अं० अंगुल के अ० असंख्यातवे भा० भाग मात्र ओ० अवगाहना स० शक्रेन्द्र के दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के सा० सामानिक दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवा त० तब ती० तिष्यकदेव अ० तुर्त का उ० उत्पन्न हुवा पं० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से प० पर्याप्ति भाव को ग० जावे आ० आहार पर्याप्ति स० शरीर इं० इन्द्रिय आ० श्वासोश्वास पर्याप्ति भा० भाषा

सूत्र लंकिच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्ज भागमेत्तीए ओगाहणाए, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणिय देवत्ताए उववण्णं। तएणं तीसए देवे अहुणोव वण्णमेत्ते समाणे पंचविहाए पज्जुत्तीए पज्जत्ति भावं गच्छइ तंजहा आहारपज्जत्ती सरीर इंदिय आणापाणपज्जत्तीए, भासामणपज्जत्तीए। तएणं तं तीसयं देवं पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गयं समाणं सामाणिय परिसोव वण्णया देवया करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेइत्ता एवं वयासी अहोणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वं देविड्ढी,

भावार्थ पर्याप्ति से पर्याप्त बने. उन पर्याप्त बने हुवे देव को सामानिक परिषदावाले देवोंने हस्तद्वय जोडकर दश नख एकत्रित करके मस्तक को आवर्तन करके "जय-विजय" शब्दों से वधाये. वधाकर ऐसा बोले अहो ! आप देवानुप्रिय को दीव्य देव ऋद्धि, देवद्युति, व देवानुभाव प्राप्त हुवा है. जैसे आप को दीव्यदेव ऋद्धि, द्युति व महानुभाव है वैसे ही शक्रेन्द्र को है; और जैसे शक्रेन्द्र को दीव्य देव ऋद्धि कांति

पदार्थ

समर्थ वि० विकुर्वणा करने को स० शक्र के अ० अवशेष सा० सामानिक दे० देव के० कितनें म० महर्द्धिक त० तैसे स० सर्व जा० यावत् ए० यह गो० गौतम स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ति० ऐसे दो० दूसरे गो० गौतम जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १५ ॥ भं० भगवान् त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ज० यदि भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करनेको ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

सूत्र

विसए विसयमेत्ते बुइए णोचेवणं संपत्तीए विकुव्विसुवा २ तावत्तीसया, लोगपाला, अग्गमहिसीणं, जहेव चमरस्स णवरं दो केवलकप्पे जंबूद्दीवे दीवे अण्णं तंचेव ॥ सेवं भंते भंते त्ति दोच्चे गोयमे जाव विहरइ ॥ १५ ॥ भंते त्ति भगवं तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे समणं भगवं जाव एवं वयासी जइणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया जाव माहिड्ढीए एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए । ईसाणेणं भंते ! देविंद देव-

भावार्थ

शक्र, लोकपाल, अग्रमहिषी का अधिकार चमरेन्द्र जैसे कहना. परंतु ये दो जम्बूद्वीप वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन वैसे ही हैं ऐसा कहकर अग्निभूति अनगार विचरने लगे ॥ १५ ॥ अब वायुभूति नामक अनगार श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! जब शक्रेन्द्र इतनी ऋद्धिवाले हैं यावत् इतने रूप वैक्रेय कर सकते हैं तब ईशा-

शब्दार्थ व० बोले अ० अहो दे० देवानुप्रिय दि०दीव्य दे० देवऋद्धि दे० देवद्युति दि०दीव्य देवानुभाव ल०लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुवे ॥ १४ ॥ ज० यदि भं० भगवन् ती० तिष्यकदेव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सूत्र ड्ढीए जाव एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए, से जहानामए जुवइ जुवाणे हत्थे गेण्हेज्जा, जहेव सक्कस्स तहेव जाव एसणं गोयमा ! तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुच्चइ, नो चेवणं संपत्तीए विकुव्विसुवा ३ ॥ १४ ॥ जइणं भंते तीसए देवे महिड्ढीए जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए । सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा के महिड्ढीया तहेव सव्वं जाव एसणं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स देवस्स इमेयारूवे

भावार्थ रक्षक देव, और बहुत अन्य देवता का स्वामी है और वैक्रेय करने की शक्ति शक्रेन्द्र जितनी है. यह मात्र विषय परंतु इतनी संपत्ति नहीं है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! जब तिष्यक नामक देवता इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत है तब अन्य सामानिक देव कितने महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय रूप करने को समर्थ हैं ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र के एक २ सामानिक देव तिष्यक देव जितनी ऋद्धिवाले हैं. और वैक्रेय का विषय तीष्यक देव जितना है परंतु इतनी संपत्ति नहीं है. इतने रूप अतीत काल में किये नहीं, वर्तमान में करते नहीं हैं और आगामिक में करेंगे नहीं. उन के त्रायत्रिं-

अर्थ ब्रह्मदेवलोक ण० विशेष अ० आठ ए० ऐसे लं० लंतक ण० विशेष सा० अधिक अ० आठ के० संपूर्ण म० महाशुक्र सो० सोलह स० सहस्रार में सा० अधिक सो० सोलह ए० ऐसे पा०

सूत्र

सणंकुमाराओ आरद्ध उवरिल्ला, लोगपाला सव्वेवि असंखेज्जे दीवसमुद्दे विकुव्वंति एवं माहिंदेवि, णवरं साइरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे एवं बंभलोएवि, णवरं अट्ठकप्पे ॥ एवं लंतएवि, णवरं साइरेगे अट्ठ केवलकप्पे महासुक्के सोलस

भावार्थ

व अन्यदेव हैं. + ऐसेही इनके सामानिक देव, त्रायत्रिंशक, लोकपाल व अग्रमहिषियों असंख्यात द्वीप समुद्र वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ हैं. माहेन्द्र चार जम्बूद्वीप से कुछ विशेष वैक्रेयरूप से भरने को समर्थ है, ब्रह्मेन्द्र आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, लांतक साधिक आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, महाशुक्र सोलह जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, सहस्रारेन्द्र साधिक सोलह जम्बूद्वीप भरने हैं. आणत प्राणत बत्तीस जम्बूद्वीप और आरण अच्युत साधिक बत्तीस जम्बूद्वीप भरने को समर्थ हैं. अन्य सब अधिकार पहिले जैसा है परंतु प्रथक् २ ऋद्धि बताते हैं. सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख, ईशान देवलोक में अठा-

+ सनत्कुमार नामक तीसरे देवलोकसे आगे देविओंकि उत्पत्ति नही है. तथापि प्रथम देवलोककी अपरिग्रही देवी एकसमयाधिक पल्योपम से दश पल्योपमकी स्थिति वाली बारह वे देवलोक के देवोंको उपभोगमें आती हैं इससे यहां उसका प्रतिपेध नहीं किया है.

शब्दार्थ ता० त्रायत्रिंशक लो० लोकपाल अ० अग्रमहिषी जा० यावत् वि० विकुर्वणा की ॥ १८ ॥ ए० ऐसे स० सनत्कुमार ण० विशेष च० चार के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप अ० अथवा ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात ए० ऐसे सा० सामानिक ता० त्रायत्रिंशक लो० लोकपाल अ० अग्रमहिषी अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र स० सर्व वि० विकुर्वे स० सनत्कुमार से उ० उपर के लो० लोकपाल स० सर्व अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र वि० विकुर्वे ए० ऐसे मा० माहेन्द्र ण० विशेष सा० अधिक च० चार के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप वं०

सूत्र तंचेव ॥ १७ ॥ एवं सामाणिय तावत्तीसग लोगपाल अग्गमहिसीणं जाव एसणं गोयमा ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो, एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयंमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए । णो चेवणं संपत्तीए विकुव्विसुवा ॥ १८ ॥ एवं सणंकुमारेवि णवरं चत्तारि केवल कप्पे जंबूदीवे दीवे अदुत्तरं चणं, तिरिय मसंखेज्जे ॥ एवं सामाणिय, तावत्तीसग लोगपाल, अग्गमहिसीणं, असंखेज्जे दीवे समुद्दे सव्वे विकुव्वंति

भावार्थ त्रायत्रिंशक, लोकपाल, व अग्रमहिषियों का जानना. और वैक्रेय का विषय भी उतना ही जानना. परंतु इतनी संपत्ति नहीं है ॥ १८ ॥ जैसे ईशानेन्द्र का कहा वैसे ही सनत्कुमारेन्द्र का जानना. विशेष इतना कि सनत्कुमार चार जम्बूद्वीप प्रमाण वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ है. असंख्यात द्वीप समुद्र भरने की शक्ति है परंतु संपत्ति नहीं है. इस में बारह लाख विमान, बहत्तर हजार सामानिक, चौगने आत्मरक्षक

अर्थ ब्रह्मदेवलोक ण० विशेष अ० आठ ए० ऐसे लं० लंतक ण० विशेष सा० अधिक अ० आठ के० संपूर्ण म० महाशुक्र सो० सोलह स० सहस्रार में सा० अधिक सो० सोलह ए० ऐसे पा०

सूत्र

सणंकुमाराओ आरद्ध उवरिल्ला, लोगपाला सव्वेवि असंखेज्जे दीवसमुद्दे विकुव्वंति एवं माहिंदेवि, णवरं साइरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे एवं बंभलोएवि, णवरं अट्ठकप्पे ॥ एवं लंतएवि, णवरं साइरेगे अट्ठ केवलकप्पे महासुक्के सोलस

भावार्थ

व अन्यदेव हैं. + ऐसेही इनके सामानिक देव, त्रायत्रिंशक, लोकपाल व अग्रमहिषियों असंख्यात द्वीप समुद्र वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ हैं. माहेन्द्र चार जम्बूद्वीप से कुछ विशेष वैक्रेयरूप से भरने को समर्थ है, ब्रह्मेन्द्र आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, लांतक साधिक आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, महाशुक्र सोलह जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, सहस्रारेन्द्र साधिक सोलह जम्बूद्वीप भरने हैं. आणत प्राणत बत्तीस जम्बूद्वीप और आरण अच्युत साधिक बत्तीस जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है. अन्य सब अधिकार पहिले जैसा है परंतु प्रथक् २ ऋद्धि बताते हैं. सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख, ईशान देवलोक में अठा-

---

+ सनत्कुमार नामक तीसरे देवलोकसे आगे देवीओंकि उत्पत्ति नही है. तथापि प्रथम देवलोककी अपरिग्रही देवी एकसमयाधिक पल्योपम से दश पल्योपमकी स्थिति वाली बारह वे देवलोक के देवोंको उपभोगमें आती हैं इससे यहां उसका प्रतिपेध नहीं किया है.

शब्दार्थ प्राणत ण० विशेप व० वत्तीस के० संपूर्ण ए० ऐसे अ० अच्युत में ण० विशेप सा० अधिक व० वत्तीस के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप अ० निश्चय स० वह ए० ऐसे भं० भगवान् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर वि०

सूत्र केवलं सहस्सारे साइरेगे सोलस एवं पाणएवि, णवरं बत्तीस केवलं एवं अच्चुएवि, णवरं साइरेगे बत्तीसं केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे, अण्णं तं चेव ॥ सेवं भंते भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वाउभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ जाव विहरइ

भावार्थ इस लाख, सनत्कुमार में बारह लाख, माहेन्द्र में आठ लाख, ब्रह्मदेवलोक में चार लाख, लांतक में पचास हजार, महाशुक्र में चालीस हजार, सहस्रार में छ हजार, आणत प्राणत में चारसो, आरण अच्युत में तीनसो. अब सामानिक देव कहते हैं सौधर्मेन्द्र को चौरासी हजार, ईशानेन्द्र को अस्सी हजार, सनत्कुमारेन्द्र को बहत्तर हजार, माहेन्द्र को सीत्तर हजार, ब्रह्मेन्द्र को साठ हजार, लांतकेन्द्र को पचास हजार, महाशुक्रेन्द्रको चालिस हजार, सहस्रारेन्द्र को तीस हजार, प्राणतेन्द्र को बीस हजार, और अच्युतेन्द्र को दश हजार सामानिक जानना. सामानिक देवता से आत्मरक्षक चौगुने जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर वायुभूति नामक अनगार श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर विचरने

पदार्थ

विचरने लगे ॥ १९ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर अ० कोई वक्त मो० मोया न० नगरी के नं० नंदन चे० उद्यान से प० निकलकर ब० बाहिर ज० अन्य देश में वि० विचरने लगे॥२०॥ ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर हो०था व० वर्णनवाला जा० यावत् प० परिपदा प० पूजते ते० उस काल ते० उस समय में ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा सू० सूल पा० हस्त में व० वृपभ वा० वाहन वाले उ० उत्तरार्ध लोक के अ० अधिपति अ० अठावीस वि० विमान स० लक्ष के

सूत्र

॥ १९ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं मोयाओ नगरीओ नंदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता बहिया जणवय विहारं विहरइ ॥ २० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे होत्था वण्णओ जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी, वसहवाहणे, उत्तरड्ढ-

भावार्थ

लगे ॥ १९ ॥ एकदा श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी मोया नामक नगरी के नंदन नामक उद्यान में से विचरने लगे ॥ २० ॥ अब ईशानेन्द्र के पूर्व भव का तामली तापसका अधिकार कहते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था. वहां श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे. परिपदा वंदन करने को आई. उस काल उस समय में हस्त में सूलका आयुध धारन करनेवाले, वृपभ का वाहन वाले, उत्तर के ऊर्ध्व दिशा के स्वामी, अठाइस लाख विमान के अधिपति, रजरहित वस्त्र धारन करनेवाले,

शब्दार्थ माणत ण० विशेष व० बत्तीस के० संपूर्ण ए० ऐसे अ० अच्युत में ण० विशेष सा० अधिक व० बत्तीस के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप अ० निश्चय स० वह ए० ऐसे भं० भगवान् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर वि०

सूत्र केवलं सहस्सारे साइरेगे सोलस एवं पाणएवि, णवरं बत्तीस केवलं एवं अच्चुएवि, णवरं साइरेगे बत्तीसं केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे, अण्णं तं चेव ॥ सेवं भंते भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वाउभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ जाव विहरइ

भावार्थ इस लाख, सनत्कुमार में बारह लाख, माहेन्द्र में आठ लाख, ब्रह्मदेवलोक में चार लाख, लांतक में पचास हजार, महाशुक्र में चालीस हजार, सहस्रार में छ हजार, आणत प्राणत में चारसो, आरण अच्युत में तीनसो. अब सामानिक देव कहते हैं सौधर्मेन्द्र को चौरासी हजार, ईशानेन्द्र को अस्सी हजार, सनत्कुमारेन्द्र को बहत्तर हजार, माहेन्द्र को सित्तर हजार, ब्रह्मेन्द्र को साठ हजार, लांतकेन्द्र को पचास हजार, महाशुक्रेन्द्रको चालिस हजार, सहस्रारेन्द्र को तीस हजार, प्राणतेन्द्र को बीस हजार, और अच्युतेन्द्र को दश हजार सामानिक जानना. सामानिक देवता से आत्मरक्षक चौगुने जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर वायुभूति नामक अनगार श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर विचरने

शब्दार्थ

भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर व० बोले अ० अहो भं० भगवन् ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक ई० ईशान की भं० भगवन् सा० वह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि क० कहां ग० गइ क० कहां अ० प्रवेश हुइ गो० गौतम स० शरीर में ग० गइ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है स० शरीर में ग० गइ से० वह ज० जैसे कू० कूटागार सा० शाला सि० होवे दु० दोनो बाजु लि० लिप्त गु० गुप्त गु० गुप्तद्वार णि० वायुविना की नि० वायुरहित गंभीर ती० उस कू०

सूत्र

त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी अहोणं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्डीए, ईसाणस्सणं भंते ! सा दिव्वा देविड्डी कहिं गते कहिं अणुप्पविट्ठे? गोयमा! सरीरंगए ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सरीरंगए? गोयमा ! से जहा नामए कूडागार साला सिया, दुहओ लित्ता, गुत्ता, गुत्तदुवारा णिवाया,

भावार्थ

वंदना नमस्कार कर ऐसा पूछा कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र देवताने जो ऐसी महा ऋद्धि बताई थी. वह ऋद्धि पीछी कहां गई ? अहो गौतम ! शरीर में गइ. अहो भगवन् ! किस तरह से यह ऋद्धि शरीरमें गई ? अहो भगवन् ! जैसे कोई कूटागारशाला होवे इस के दोनों पास लीपा हुवा होवे और उस के द्वार भी गुप्त होवे. वायु का संचार इस में नहीं हो सकता होवे. ऐसी कूटागार शाला की बाहिर बहुत जन-समुदाय एकत्रित हुवा होवे और मेघप्रमुख होता देखकर सब मनुष्यों उस कूटाशाला में चले जाने से

शब्दार्थ अ० अधिपति अ० रजरहित व० श्रेष्ट व० वस्त्र ध० पहिनने वाले आ० रहीहुई मा० माला म० मुकुट न० नवा हे० सुवर्ण चा० सुंदर चि० चित्त चं० चंचल कुं० कुंडल वि० अंकित होते गं० गंडस्थल जा० यावत् द० दशदिशा में उ० उद्योत करते प० प्रकाश करते ई० ईशान देवलोक ई० ईशान व० वडिंशक वि० विमान ज० जहां रायप्रसेणी में जा० यावत् दी० दिव्य दे० देव ऋद्धि जा० यावत् जा० जिस दि० दिशिसे पा० आये ता० उसदिशि में प० गये ॥ २१ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ०

सूत्र लोगाहिवई, अट्ठावीस विमाण वास सयसहस्साहिवइ, अरयंवरवत्थधरे, आलईय माल मउडे नवहेम चारु चित्तचल चंचल कुंडल विलिहिज्जमाणगंडे जाव दसदिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे, ईसाणेकप्पे, ईसाणवडिंसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव दिव्वं देविड्ढिं जाव जामेव दिसि पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए॥ २१ ॥ भंते !

भावार्थ यथायोग्य स्थान पर माला, मुकुटवाले, नविन सुवर्ण के मनोहर व चित्त समान चंचलकुंडल की रेसायुक्त गंडस्थल वालेयावत् दशोंदिशि में उद्योत करनेवाले ईशानेन्द्र ईशान देवलोक के ईशान वडिंशक नामक विमान में रहते हुवे वगैरह सब अधिकार रायप्रसेणि सूत्र में जैसे सूर्याभ देवता का कहा, वैसे ही यहां कहना. ऐसी सब ऋद्धि सहित भगवंत को वंदना नमस्कार करने को आये. मनोज्ञ दीव्य देव ऋद्धि, कान्ति, प्रभाव वगैरह गौतमादि साधुओं को बताकर पीछे गये ॥ २१ ॥ उस समय में गौतम स्वामीने श्री भगवन्त को

शब्दार्थ कूटागार जा० यावत् कू० कूटागार सा० शाला दि० दृष्टान्त भा० कहना ॥ २२ ॥ ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजाको सा० वह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि दे० देवद्युति दे० देवानुभाव कि० किससे ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुइ के० कौन ए० यह आ० था० पु० पूर्व भव में किं० कौनसा ना० नाम किं० कौनसा गो० गोत्र क० कौनसे गा० गाव में न० नगर जा० यावत् स० सन्निवेश में किं० क्या द० देकर भो० भोगवकर कि० करके .किं० क्या स० समाचर क० किस त० तथारूप स० श्रमण

सूत्र णिवाय गंभीरा, तीसेणं कूडागारं जाव कूडागार सालादिट्ठंतो भाणियव्वो ॥२२॥ ईसाणेणं भंते ! देविंदे देवरण्णो सा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वादेवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे किण्णा पत्ते किण्णा अभिसमण्णागए, केवा एस आसि पुव्वभवे, किंणामएवा, किंगोत्तेवा, कयरंसि गामंसिवा नयरंसिवा जाव सण्णिवेसंसिवा, किंवा दच्चा, किंवा भोच्चा, किंवा किच्चा, किंवा समायरित्ता, कस्सवा तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्स वा

भावार्थ बाहिर कोई नहीं दीखते हैं. इसी दृष्टांत से अहो गौतम ! सब ऋद्धि ईशानेन्द्र के शरीरमें चली गइ॥२२॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र को ऐसी दीव्य देव ऋद्धि. देव कान्ति व ऐसा महानुभाव कैसे प्राप्त हुवा ? वे पूर्व भव में कौन थे, उन का पूर्व भव में नाम क्या था, गोत्र क्या था, किस ग्राम, नगर व सन्निवेश में रहते थे, इन्होंने क्या दान दिया, क्या अंत प्रांतादि आहार भोगवा, क्या तप किया, क्या प्रति-

दार्थ

मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० सुवचन सो० सुनकर नि० अवधारकर ज० जिससे ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सा० वह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुइ ॥ २३ ॥ गो० गौतम ते० उस समय में इ० इस जं० जंबूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त त० तहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में ता० तामली ना० नाम का मो० मौर्यपुत्र गा० गाथापति हो० था अ० ऋद्धिवंत दि० दिप्त जा० यावत् ब० बहुत मनुष्यों

सूत्र

अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म जण्णं ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया ? ॥ २३ ॥ एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलि-त्तीनामं णयरी होत्था, वण्णओ । तत्थणं तामलित्तीए नयरीए तामलीनामं मोरिय-

भावार्थ

लेखनादि समाचारी की, अथवा कौनसे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धर्म श्रवण कर अवधारकर ऐसी ईशानेन्द्र की दीव्य ऋद्धि द्युति वगैरह प्राप्त की ? ॥ २३ ॥ अहो गौतम ! उस काल उस समय में जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्र में ताम्रलिप्ती नामक नगरी थी. उस नगरी में मौर्य पुत्र तामली नामक गाथापति रहता था. वह गाथापति बहुत ऋद्धिवंत, दीप्त यावत् अन्य जनों से अपराभूत

शब्दार्थ से अ० अपराजित हो० था० ॥ २५ ॥ त० तब त० उस मो० मौर्यपुत्र ता० तामलि गा० गाथापति अ० कोइ वक्त पु० पुर्वरात्रि अ० अपरात्रि का० वक्त में कु० कुटुंब जा० चिंता जा० करते ए० इसरूप अ० आत्मचिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा अ० है पु० पूर्व के पो० पुराणा सु० सुचरितरूप सु० अच्छा पराक्रम रूप सु० शुभ क० कल्याणरूप क० किये क० कर्म के क० कल्याण कारी फ० फल वि० विशेष जे० जिस से अ० मैं हि० चांदी से सु० सुवर्ण से ध० धन से ध० धान्य से पु० पुत्र से प० पशु

सूत्र पुत्ते गाहावई होत्था, अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥ २४ ॥ तएणं तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि, कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेएयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पण्णे, अत्थि तामे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुप्परिक्कंताणं सुभाणं, कल्लाणाणं, कडाणं कम्माणं, कल्लाणफलवित्तिविसेसो, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिंच, पसूहिंच वड्ढामि, विउल, धण, कणग

भावार्थ था ॥ २५ ॥ एकदा तामली गाथापति को मध्यरात्रि में कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय हुवा कि मैंने गतकाल में पूर्व जन्म में दानादि सुकृत किये हैं, तपश्चरणादि किये हैं, इस से ऐसे शुभ कल्याणकारी कर्म के अच्छे फल मुझे हो रहे हैं. और इस से मेरे हिरण्य, सुवर्ण, धन, धान्य बढ रहे हैं

शब्दार्थ — से व० वृद्धिपाता हूं वि० विपुल ध० धन क० कनक र० रत्न म० मणि मो० मौक्तिक सं० शंख सि० शिला प० प्रवाल र० रक्त र० रत्न सं० विद्यमान सा० अच्छा सा० द्रव्य से अ० अतीव अ० वृद्धिपाता हूं जा० जहांलग मे० मुझे मि० मित्र ना० ज्ञाति नि० स्वजाति सं० संबंधि प० परिवार आ० आदर करते हैं प० अच्छा जाने स० सत्कारकरे स० सन्मानदेवे क० कल्याण कारी मं० मांगलीक दे० देव वि० विनय से चे० ज्ञानवन्त प० पूजते हैं ता० वहांलग मे० मुझे से० श्रेय क० काल पा० प्रभात में र० रजनी

सूत्र — रयण, माणि, मोत्तिय संख, सिलप्पवाल, रत्त, रयण, संतसारसावएज्जेणं, अईव अईव आभिवड्ढामि. तं किणं अह पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं जाव कडाणं कम्माणं एगंत सोक्खयं उवेहमाणे विहरामि तं जाव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि, जाव अईव २ आभिवड्ढामि, जावं च मे मित्तनाइ नियग संबंधि परियणो आढाइ परियाणाइ, सक्कारेइ सम्माणेइ, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासेइ, ताव तामे सेयं कल्लं

भावार्थ — वैसे ही पुत्र पशु वगैरह से मैं बढरहा हूं. और विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मौक्तिक, शंख, शिला, वगैरह श्रेष्ट द्रव्य मुझे बहुत २ बढरहा है. इस से मैं पूर्व के संचित किये हुवे शुभ कर्मों को एकान्त क्षय करता हुवा विचरता हूं. अब जहांलग मुझे मेरे मित्र, ज्ञाति, संबंधि परिजन आदर देते हैं, स्वामी तरीके मानते हैं, सत्कार करते हैं, सन्मान देते हैं, कल्याणकारी, मांगलीक, देवता समान पूजा करते हैं वहांलग

शब्दार्थ से अ० अपराजित हो० था० ॥ २४ ॥ त० तब त० उस मो० मौर्यपुत्र ता० तामलि गा० गाथापति अ० कोइ वक्त पु० पुर्वरात्रि अ० अपरात्रि का० वक्त में कु० कुटुंब जा० चिंता जा० करते ए० इसरूप अ० आत्मचिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा अ० है पु० पूर्व के पो० पुराणा सु० सुचरितरूप सु० अच्छा पराक्रम रूप सु० शुभ क० कल्याणरूप क० किये क० कर्म के क० कल्याण कारी फ० फल वि० विशेप जे० जिस से अ० मैं हि० चांदी से सु० सुवर्ण से ध० धन से ध० धान्य से पु० पुत्र से प० पशु

सूत्र पुत्ते गाहावई होत्था, अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥ २४ ॥ तएणं तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि, कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेएयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पण्णे, अत्थि तामे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुप्परिक्कंताणं सुभाणं, कल्लाणाणं, कडाणं कम्माणं, कल्लाणफलवित्तिविसेसो, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिंच, पसूहिंच वड्ढामि, विउल, धण, कणग

भावार्थ था ॥ २४ ॥ एकदा तामली गाथापति को मध्यरात्रि में कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय हुवा कि मैंने गतकाल में पूर्व जन्म में दानादि सुकृत किये हैं, तपश्चरणादि किये हैं, इस से ऐसे शुभ कल्याणकारी कर्म के अच्छे फल मुझे हो रहे हैं. और इस से मेरे हिरण्य, सुवर्ण, धन, धान्य बढ रहे हैं

दार्थ पा० प्रणाम प० प्रव्रज्यामें प० प्रवर्तनेको प० प्रवर्तवा हुवा ए० इसरूप अ० अभिग्रह अ०ग्रहण करूंगा क० कल्पता है मे० मुझे जा० यावज्जीव छ० छठ भक्त से अ० अंतर रहित त० तप कर्म से उ० ऊर्ध्व वा० बाहु प० करके सू० सूर्याभिमुख आ० आतापनाभूमि में आ० आतापनालेता वि० विचरने को छ० छठ के पारणे में आ० आतापना भूमि से उ० नीकलकर स० स्वयं दा० काष्ट के प० पात्र ग० ग्रहण कर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में ऊंच नी० नीच म० मध्यम कु० कुल के घ० गृह समुदाय में भि० भिक्षाचरी के

सूत्र आपुच्छित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहं गहाय मुंडे भवित्ता, पाणामाए पव्वज्जाए, पव्वइत्तए, पव्वइएवियणं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं आभिगिण्हिस्सामि. कप्पइ मे जावज्जीवाए छटुं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं, उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए, आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्सावियणं पारणयंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहित्ता, सयमेव दारुमयं पडिग्गहं गहाय तामलि- त्तीए णयरीए उच्चणीयमज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडेत्ता

भावार्थ मुझे श्रेय है. इस तरह प्रव्रज्या अंगीकार किये पीछे छठ २ का निरंतर तप करके ऊंचे बाहु से आतापना भूमि में आतापना लेना मुझे श्रेय है. वैसे ही छठ भक्त के पारणे के दिन उस आतापना भूमि से नीकलकर काष्टमय पात्र लेकर ताम्रलिप्ती नगरीमें उच्च, नीच, मध्यम कुलमें बहुत घरोंके समुदाय में फीरकर

शब्दार्थ जा० यावत् ज०सूर्य उदित होते स०स्वयं दा०काष्ट के प०पात्र क०करके वि० विपुल अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० नीपजाकर मि० मित्र णा० ज्ञाति नि० स्वजन सं० संबंधि प०परिवार को आ० आमंत्रणकर तं० उन को अ० अशन पा० पान खा० खाइम सा० स्वादिम व० वस्त्र गं० गंध अ० अलंकार से स० सत्कारकर स० सन्मानदेकर तं० उन की पु० आगे जे० ज्येष्ठ पुत्र को कु० कुटुम्ब में ठा० स्थापकर तं० उन को आ० पूछकर स० स्वयं दा० काष्ट के प० पात्र ग० ग्रहणकर मुं० मुंड होकर

मूल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहं करेत्ता, विउलं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं उवक्खडावेत्ता, मित्त, णाइ, नियग, सयण, संबंधि, परियणं आमंतेत्ता, तं मित्त, णाइ, नियग, सयण, संबंधि, परियणं विउलेणं असण पाणखाइमं साइमेणं वत्थगंध मल्लालंकारेणय सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ नियग संबंधि परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावित्ता, तं मित्त, नाइ, नियग, संबंधि, परियण, जेट्ठपुत्तंच

भावार्थ कलप्रभात में सूर्य का उदय होते स्वयं काष्टमय एक पात्र बनाकर, बहुत अशन, पान, खादिम स्वादिम बनाकर मित्र, ज्ञाति, सगे संबंधी को आमंत्रणा करके और उन मित्रादि वर्ग को अशन, पान, खादिम, स्वादिम वस्त्र, गंध, माला अलंकार वगैरह वस्तु से सत्कार करके उन की सन्मुख ज्येष्ट पुत्र को कुटुम्ब में स्थाप कर और उन मित्र ज्ञाति स्वजन तथा ज्येष्ट पुत्र को पूछकर पीछे स्वयमेव काष्ट मय पात्र को ग्रहण कर मुंड बनकर प्रणाम करने योग्य नाम की प्रवर्ज्या अंगीकार करना

शब्दार्थ कर अ० अल्प म० मोंघे अ० अलंकृतकर स० शरीर भो० भोजन वक्त में भो० भोजन का मंडप में सु० शुभासन पे ग० बैठे त० तब मि० मित्र णा० ज्ञाति नि० स्वजन सं० संबंधि प० परिवार स० साथ

सूत्र कियसरीरे, भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए. तएणं मित्तनाइ नियग सयण संबंधि परियणेणं सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिसाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥ जेमिय भुतुत्तरागएवियणं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्तं जाव परियणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणय सक्कारेइ, सक्कारेइत्ता तस्सेवमित्तनाइ जाव परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेइ २ त्ता तं मित्तनाइ जाव परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ २त्ता मुंडे भवित्ता, पाणामाए

भावार्थ अल्पभार व बहुत मूल्यवाले आभूषणों से शरीर अलंकृत किया, भोजन तैयार होने पर स्वजन मित्रजन की साथ भोजन मंडप में प्रवेश कर शुभसिंहासनपे बैठकर मित्रादि सब की साथ विपुल निपजाये हुए अशनादि स्वयं आस्वादते व अन्य को परुसते विचर रहे हैं. इस प्रकार जीमकर उपर जो कुच्छ भोगवना था उसे भोगवकर पानी के कुल्ले कर शुद्ध बने. फीर बहुत वस्त्र गंध व मालाअलंकार से आये हुए स्वजनादि का सत्कार सन्मान किया और सब स्वजन मित्र ज्ञाति प्रमुख की सन्मुख ज्येष्ट पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित किया. फीर ज्ञाति स्वजन व ज्येष्ट पुत्र को पूछकर मुंड बनकर प्रणाम नाम की प्रवर्ज्या अंगीकार कर

शब्दार्थ लिये अ० विचरनां सु० शुद्ध ओदन प० ग्रहणकर ति० तीन स० सात वक्त उ० पानी से प० धोकर त० पीछे आ० आहार करने को त्ति० ऐसा क० करके सं० विचार करे ॥ २५ ॥ सं० विचारकर क० काल पा० प्रभात में जा० यावत् ज० सूर्य उदित होते स० स्वयं दा० काष्ट का प० पात्र का० कराके वि० विपुल अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० नीपजाकर त० पीछे ण्हा० स्नान किया क० पीठीलगाइ क० कोगले किये पा० तीलमसादि किये सु० शुद्ध मं० मांगलीक व० वस्त्र प० पहन

सूत्र सुद्धोदणं पडिग्गहेत्ता, तं तिसत्तक्खुत्तो उदएणं पक्खालेत्ता, तओपच्छा आहारं आहारित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहइ ॥ २५ ॥ संपेहेइत्ता कल्लं पाउप्पाभायाए जाव जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं कारेइ कारेइत्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेइत्ता, तओ पच्छा ण्हाए कयबालिकम्मे, कयकोउयमंगल पायच्छित्ते, सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए, अप्पमहग्घाभरणालं-

भावार्थ घृत शाकादि रहित शुद्ध ओदन ग्रहण करके फीर उसे इक्कीस वक्त पानी से धोकर उस का आहार करना मुझे श्रेय है ॥ २५ ॥ इस प्रकार का विचार करके सूर्योदय होते काष्टमय पात्र बनवाया और अशन, पान, खादिम व स्वादिम ऐसे चारों आहार निपजाये. पीछे स्नान किया, पीठी प्रमुख का विलेपन किया, पानी के कोगले किये, तिलमसादि शुभ चिन्ह किये और शुद्ध मंगलिक वस्त्र पहिने.

शब्दार्थ

कर अ० अल्प म० मोंघे अ० अलंकृतकर स० शरीर भो० भोजन वक्त में भो० भोजन का मंडप में सु० शुभासन पे ग० वैठे त० तत्र मि० मित्र णा० ज्ञाति नि० स्वजन सं० संबंधि प० परिवार स० साथ

सूत्र

कियसरीरे, भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए. तएणं मित्तनाइ नियग सयण संबंधि परियणेणं सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिसाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥ जेमिय भुतुत्तरागएवियणं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्तं जाव परियणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणय सक्कारेइ, सक्कारेइत्ता तस्सेवमित्तनाइ जाव परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेइ २ त्ता तं मित्तनाइ जाव परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ २त्ता मुंडे भवित्ता, पाणामाए

भावार्थ

अल्पभार व बहुत मूल्यवाले आभूपणों से शरीर अलंकृत किया, भोजन तैयार होने पर स्वजन मित्रजन की साथ भोजन मंडप में प्रवेश कर शुभसिंहासनपे वैठकर मित्रादि सब की साथ विपुल निपजाये हुए अशनादि स्वयं आस्वादते व अन्य को परुसते विचर रहे हैं. इस प्रकार जीमकर उपर जो कुच्छ भोगवना था उसे भोगवकर पानी के कुल्ले कर शुद्ध बने. फीर बहुत वस्त्र गंध व मालाअलंकार से आये हुए स्वजनादि का सत्कार सन्मान किया और सब स्वजन मित्र ज्ञाति प्रमुख की सन्मुख ज्येष्ट पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित किया. फीर ज्ञाति स्वजन व ज्येष्ट पुत्र को पूछकर मुंड वनकर प्रणाम नाम की प्रवज्या अंगीकार कर

शब्दार्थ वि० विपुल अ० असनं पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम आ० आस्वादते वी० भोगवते प० परुसते प० जीमते वि०विचरतेहैं जे० जीमकर भु० जीमे पीछे आ०आचमन किया चो० शुद्ध हुवे प०वहुत शुद्धहुवे

सूत्र पव्वज्जाए पव्वइएवियणं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, कप्पइ मे जाव-जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव आहारित्तए त्तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हइत्ता, जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं आनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आयावण भूमीए आयावेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ छट्ठस्स वियणं पारणयंसि, आयावण भूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता, सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं गहाय, तामलित्तीए नयरीए उच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुयाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडइत्ता सुद्धोयणं पडिग्गहेइ २ त्ता तिसत्तखुत्तो उदएणं पक्खालेइ,

भावार्थ ऐसा अभिग्रह किया कि मुझे निरंतर छठ छठ का तप करना कल्पता है. इसतरह अभिग्रह ग्रहण करके ऊंचे बाहु रखकर सूर्याभिमुख आतापना भूमि में आतापना लेते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ छठ के पारणे के दिन आतापना भूमि से आकर स्वयमेव काष्ट पात्र लेकर ताम्रलिसी नगरी में ऊंच नीच व मध्यम कुल के घर समुदाय में भिक्षाचरी के लिये परिभ्रमण करते हैं और शुद्धोदन (पकेहुवे चांवल) लेकर इक्कीस वार

पदार्थ

॥ २६ ॥ २७ ॥ से० वह कं० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है पा० प्रणाम प० प्रव्रज्या गो० गौतम पा० प्रणाम प्रव्रज्या से प० दीक्षित हुवा जं० जिसको ज० जहां पा० देखे तं० उनको इं० इन्द्र खं० कार्तिकेय रु० महादेव सि० व्यंतर वे० वैश्रमण अ० चंडिका को० कोटिक रा० राजा जा० यावत् स० सार्थवाह का० काक सा० श्वान पा० चंडाल उ० ऊंच को पा० देखे उ० ऊंचको प० प्रणामकरे नी० नीच को पा० देखे नी० नीचको प० प्रणामकरे जं० जिसको ज० जैसे पा० देखे उ० उसको त०

सूत्र

पक्खालेइत्ता तओ पच्छा आहारं आहारेइ ॥ २७ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ पाणामाए पव्वज्जा ? गोयमा ! पाणामाएणं पव्वजाए पव्वइए समाणे जं जत्थ पासइ तं इंदंवा, खंदंवा, रुद्दंवा, सिवंवा, वेसमणंवा, अज्जंवा, कोट्टाकिरियंवा, रायंवा जाव सत्थवाहंवा; काकंवा, साणंवा, पाणंवा, उच्चं पासइ, उच्चं पणामं करेइ, नीयं पासइ नीयं पणामं करेइ, जं जहा पासइ तस्स तहा पणामं करेइ. से तेणट्ठेणं जाव

भावार्थ

पानी से धोकर उस का आहार करते हैं ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! तामली तापसकी प्रणाम प्रव्रज्या कैसे कही ? अहो गौतम ! प्रणाम प्रव्रज्या अंगीकार करनेवाला इन्द्र, स्कंध, रुद्र, शिव, वैश्रमण, चंडिका, कोटिकादि, राजा को, शेठ को, सेनापति, सार्थवाह, काकपक्षी, श्वान, चांडाल को, ऊंचको देखकर ऊंचको प्रणाम करे, नीचको देखकर नीचको प्रणाम करे जिसे जहां देखे उसे वहां प्रणाम करे. इस से अहो गौतम !

शब्दार्थ वि० विपुल अ० असन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम आ० आस्वादते वी० भोगवते प० परसते प० जीमते वि०विचरतेहैं जे० जीमकर भु० जीमे पीछे आ०आचमन किया चो० शुद्ध हुवे प०बहुत शुद्धहुवे

सूत्र पव्वजाए पव्वइएवियणं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं आभिगिण्हइ, कप्पइ मे जाव-जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव आहारित्तए त्तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हइत्ता, जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आयावण भूमीए आयावेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ छट्ठस्स वियणं पारणयंसि, आयावण भूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता, सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं गहाय, तामलित्तीए नयरीए उच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुयाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडइत्ता सुद्धोयणं पडिग्गहेइ २ त्ता तिसत्तखुत्तो उदएणं पक्खालेइ,

भावार्थ ऐसा अभिग्रह किया कि मुझे निरंतर छठ छठ का तप करना कल्पता है. इसतरह अभिग्रह ग्रहण करके ऊंचे बाहु रखकर सूर्याभिमुख आतापना भूमि में आतापना लेते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ छठ के पारणे के दिन आतापना भूमि से आकर स्वयमेव काष्ठ पात्र लेकर ताम्रलिप्ती नगरी में ऊच्च नीच व मध्यम कुल के घर समुदाय में भिक्षाचरी के लिये परिभ्रमण करते हैं और शुद्धोदन (पकेहुवे चांवल) लेकर इक्कीस वार

शब्दार्थ उ० उदात्त उ० उत्तम म० महानुभाग त० तपकर्म से सु० सुका भु० भुखा जा० यावत् ध० हड्डी नाडी जा० हुई अ० है जा० जितना मे० मेरा उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ता० तहां लग मे० मुझे से० श्रेय क० कल्याण जा० यावत् ज० सूर्य उदीर होते ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी दि० देखकर भ० बोलाकर पा० परिचित गि० गृहस्थ पु० पूर्व संगति प० पीछे के संगति प० दीक्षाके संगति को आ० पुछकर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी की म० मध्य से नि० निकलकर पा०

सूत्र कम्मणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसंतए जाए, तं अत्थि जामे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ताव तामे सेयं कल्लं जाव जलंते तामलित्तीए णगरीए दिट्ठा भट्ठेय पासंडत्थेय, गिहत्थेय, पुव्वसंगतिएय, पच्छासंगतिएय, परियायसंगतिएय आपुच्छित्ता तामलित्तीए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता पाओगकुंडियमादीयं उवगरणं दारुमयंच

भावार्थ मांस रहित नाडियोंवाला हुवा हूं.। अब जहां लग मेरे में उत्थान कर्म, बल, वीर्य व पुरुषात्कार पराक्रम है वहां लग सूर्योदय होते ताम्रलिप्ती नगरी में रहनेवाले कि जिन को देखने का बहुत प्रसंग पडा है, जो मेरे भक्त है, पाखण्ड धर्म के आचरण करनेवाले हैं परंतु मेरे परिचय में आये हुवे है, जो गृहस्थ हैं, जो दर्शनाभिलाषी हैं, दीक्षा लीये पहिले जिन की संगति में रहा सो पूर्व संगतिवाले और दीक्षा लिये पीछे जिन की संगति में रहा सो पश्चात् संगतिवाले और अन्य तापसादि कि जो मेरे परिचित हैं उन

शब्दार्थ तैसे प० प्रणामकरे से० यह ते० इसलिये जा० यावत् प० प्रव्रज्या ॥ २८ ॥ त० तब से० वह ता० तामलि मो० मोर्यपुत्र ते० उस उ० उदार वि०विपुल पं०अनुज्ञा प० ग्रहीहुई बा० अज्ञान त० तप कर्म से सु०सुका भु० भुखा जा० यावत् ध० नाडी हड्डी ज० हुइ हो० था ॥ २९ ॥ त० तब त० उस ता० तामली बा० अज्ञान त०तपस्वी को अ०कोई वक्त पु०रात्रिको अ०अनित्य जा०जागरण जा०जागते को ए०इसरूप अ० आत्मिक चिं० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा अ० मैं इ० इस उ० उदार वि० विपुल जा० यावत्

सूत्र पव्वज्जा॥२८॥तएणं से तामली मोरियपुत्ते तेणं उरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवो कम्मेणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसंतए, जाएयावि होत्था ॥ २९ ॥ तएणं तस्स तामलिस्स बाल तवस्सिस्स अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि सि अणिच्च जागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं विपुलेणं जाव उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेणं तवो

भावार्थ प्रणाम प्रव्रज्या कही है ॥ २८ ॥ तब वह तामली मौर्य पुत्र उदार, विपुल, गुरुकी आज्ञा से कराया हुवा, बहुत मान पूर्वक कराया हुवा बाल तप कर्म से शुष्क यावत् रक्त मांस रहित नसोंवाला हुवा ॥ २९ ॥ एकदा मध्यरात्रि में उन तामली मौर्य पुत्र तपस्वी को अनित्य जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय चिन्तवन उत्पन्न हुवा कि ऐसे उदार, विपुल, उदात्त, उत्तम, व महानुभाग तप कर्म से शुष्क यावत् रक्त-

शब्दार्थ उ० उदात्त उ० उत्तम म० महानुभाग त० तपकर्म से सु० सुका भु० भुखा जा० यावत् ध० हड्डी नाडी जा० हुई अ० है जा० जितना मे० मेरा उ० उत्थान क० कर्म व० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ता० तहां लग मे० मुझे से० श्रेय क० कल्याण जा० यावत् ज० सूर्य उदीर होते ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी दि० देखकर भ० बोलाकर पा०परिचित गि० गृहस्थ पु० पूर्व संगति प०पीछे के संगति प० दीक्षाके संगति को आ० पुछकर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी को म० मध्य से नि० निकलकर पा०

सूत्र कम्मणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसंतए जाए, तं अत्थि जामे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ताव ताम सेयं कल्लं जाव जलंते तामलित्तीए णगरीए दिट्ठा भट्ठेय पासंडत्थेय, गिहत्थेय, पुव्वसंगतिएय, पच्छासंगतिएय, परियायसंगतिएय आपुच्छित्ता तामलित्तीए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता पाओगकुंडियमादीयं उवगरणं दारुमयंच

भावार्थ मांस रहित नाडियोंवाला हुवा हूं.। अब जहां लग मेरे में उत्थान कर्म, बल, वीर्य व पुरुषात्कार पराक्रम है वहां लग सूर्योदय होते ताम्रलिप्ती नगरी में रहनेवाले कि जिन को देखने का बहुत प्रसंग पडा है, जो मेरे भक्त है, पाखण्ड धर्म के आचरण करनेवाले हैं परंतु मेरे परिचय में आये हुवे है, जो गृहस्थ हैं, जो दर्शनाभिलाषी हैं, दीक्षा लीये पहिले जिन की संगति में रहा सो पूर्व संगतिवाले और दीक्षा लिये पीछे जिन की संगति में रहा सो पश्चात् संगतिवाले और अन्य तापसादि कि जो मेरे परिचित हैं उन

शब्दार्थ पादुका कुं० कमंडल आ० वगैरह उ० उपकरण दा० काष्ट के प० पात्र ए० एकान्त में ए० रखकर ता० ताम्रलिप्ती नगरी की उ० ईशान कोन में णि० प्रमाण मात्र भूमि आ० देखकर सं० संलेखना झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भक्त पा० पानी प० प्रत्याख्याकर पा० पादोपगमन का० काल को अ० नहीं वांछता वि० विचरने को त्ति० ऐसा करके सं० संकल्पकर ॥ ३० ॥ क० काल जा० यावत् ज० सूर्य उदीत होते जा० यावत् आ० पूछकर ता० तामली ए० एकान्त में ए० रखे जा० यावत् भ० भक्त

सूत्र पडिग्गहयं एगंते एडेत्ता तामलित्तीए णगरीए उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए णियत्तणि-यमंडलं आलिहित्ता संलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाण पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए, त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहेइत्ता ॥ ३० ॥ कल्लं जाव जलंते जाव आपुच्छइ, आपुच्छइत्ता तामली एगंते एडेइ,

भावार्थ सब से मीलकर व उन को पूछकर ताम्रलिप्ती नगरी की मध्य में से नीकलकर मेरी पादुका, कमंडल, काष्ट-मय पात्र वगैरह सब को एकान्त में डालकर इस नगरी की ईशान कौन में मेरे शरीर प्रमाण क्षेत्र की मर्यादा करके शरीर दुर्बल होवे वैसी संलेखना झूसणा युक्त भक्त पानी का प्रत्याख्यान करके कालको नहीं वांच्छता हुवा विचरूंगा ॥ ३० ॥ ऐसा विचार कर सूर्योदय होते सब को पूछकर व भंडोपकरण एका-

शब्दार्थ

पा० पानी के प० प्रत्याख्यान कर पा० पादोपगमन से नि० रहा ॥३१॥ ते० उस काल ते० उस समय में व० वलीचंचा रा० राज्यधानि अ० इन्द्र रहित अ० पुरोहित रहित हो० थी ॥३२॥ त० तब ते उस व० वली चंचा रा० राज्यधानि में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामली बा० बाल तपस्वी को ओ० अवधिज्ञान से आ० देखकर अ० अन्योन्य स० तेडाकर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय व० वलिचंचा रा० राज्यधानी अ० इन्द्र विना की अ० पुरोहित विना की अ० अहो

सूत्र

जाव भत्तपाण पडियाइक्खिए, पाओवगमणं निवण्णे ॥ ३१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं बलिचंचारायहाणी अणिंदा अपुरोहिया यावि होत्था ॥ ३२ ॥ तएणं तेबलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिं बालतवस्सिं ओहिणा आहोयंति आहोयंतित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेंतित्ता, एवं वयासी एवं

भावार्थ

न्तमें रखकर आहार पानीका प्रत्याख्यान कर काल को नहीं वांच्छता हुवा पादोपगमन संथारा ग्रहण किया ॥ ३१ ॥ उस काल उस समय में वलीचंचा राज्यध्यानी में इन्द्र काल कर जाने से इन्द्र रहित बनी हुई थी ॥ ३२ ॥ तब वलीचंचा राज्यधानी में रहनेवाले बहुत देव व देवियोंने तामली तापस को संलेखना करते हुवे देखे. और परस्पर बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! वलीचंचा राज्यधानी इन्द्र रहित, पुरोहित-रहित है. और हम इन्द्राधीन, इन्द्राधिष्ठित व इन्द्र के आधीन कार्य करनेवाले हैं. और अहो देवानुप्रिय ! ता-

शब्दार्थ पादुका कुं० कमंडल आ० वगैरह उ० उपकरण दा० काष्ट के प० पात्र ए० एकान्त में ए० रखकर ता० ताम्रलिप्ती नगरी की उ० ईशान कोन में णि० प्रमाण मात्र भूमि आ० देखकर सं० संलेखना झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भक्त पा० पानी प० प्रत्याख्याकर पा० पादोपगमन का० काल को अ० नहीं वांछता वि० विचरने को त्ति० ऐसा करके सं० संकल्पकर ॥ ३० ॥ क० काल जा० यावत् ज० सूर्य उदीत होते जा० यावत् आ० पूछकर ता० तामली ए० एकान्त में ए० रखे जा० यावत् भ० भक्त

सूत्र

पडिग्गहयं एगंते एडेत्ता तामलित्तीए णगरीए उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए णियत्तणि-यमंडलं आलिहित्ता संलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाण पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए, त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहेइत्ता ॥ ३० ॥ कल्लं जाव जलंते जाव आपुच्छइ, आपुच्छइत्ता तामली एगंते एडेइ,

भावार्थ सब से मीलकर व उन को पूछकर ताम्रलिप्ती नगरी की मध्य में से नीकलकर मेरी पादुका, कमंडल, काष्ट-मय पात्र वगैरह सब को एकान्त में डालकर इस नगरी की ईशान कौन में मेरे शरीर प्रमाण क्षेत्र की मर्यादा करके शरीर दुर्बल होवे वैसी संलेखना झूसणा युक्त भक्त पानी का प्रत्याख्यान करके कालको नहीं वांच्छता हुवा विचरुंगा ॥ ३० ॥ ऐसा विचार कर सूर्योदय होते सब को पूछकर व भंडोपकरण एका-

शब्दार्थ रा० राज्यधानी में ठिं० स्थिति प० संकल्प प० करानेको ॥ ३३ ॥ अ० अन्योन्य की अं० पास ए० यह अर्थ प० सूनकर ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी की म० मध्य से नि० निकले जे० जहां रु० रुचकेन्द्र उ० उत्पातपर्वत ते० तहां उ० आये वे० वैक्रेय स० समुद्घात स० नीकाले जा० यावत् उ० उत्तर वैक्रेय रू० रूप वि० विकुर्वणाकर ता० उस उ० उत्कृष्ट तु० त्वरासे चं० रौद्रगति से ज० अन्यगति से छे०

सूत्र ठिइप्पकप्पं पकरावेत्तए त्तिकट्टु,॥ ३ ३॥अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति पडिसुणंतित्ता बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छंति २ त्ता, जेणेव रुयइंद उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणंति २त्ता जाव उत्तर वेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंति, विकुव्वंतित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए, चवलाए, चंडाए, जयणाए, छेयाए, सीहाए, सिग्घाए, दिव्वाए, उद्धुयाए, देवगईए, तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूद्दीवे दीवे, जेणेव भारहेवासे, जेणेव तामलित्तीए णगरीए,

भावार्थ चपलतावाली, क्रोध में आकर चले ऐसी रौद्र, अन्य गति का जय करे वैसी, निपुणतावाली, शीघ्रतावाली, दीव्य, और वस्त्रादिक के उद्धूनपने की देवगति से तिर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में ताम्रलिप्ती नामक नगरी में तामली मौर्य पुत्र की पास आये. वहां आकर तामली तपस्वी की उपर, व दिशी विदिशी में खडे रहकर मनोज्ञ दीव्य देव ऋद्धि, मनोज्ञकान्ति, दीव्य

शब्दार्थ दे० देवानुप्रिय इं० इन्द्राधीन इं० इन्द्राधिष्ठित इं० इन्द्राधीन क० कार्य अ० इसलिये दे० देवानुप्रिय ता० तामली बा० बालतपस्वी ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी की ब० बाहिर उ० ईशान कोन में नि० प्रमाण माथ भूमि आ० देखकर सं० संलेखना झू० झूसकर भ० भक्त पा० पानी प० प्रत्याख्यान कर पा० पादोप गम से णि० रहा तं० उन को से० श्रेय दे० देवानुप्रिय ता० तामलि बा० बालतपस्वी को ब० बलिचंचा

सूत्र खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हेणं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा, इंदाहिट्ठिया, इंदाहीण कज्जा, अयंचणं देवाणुप्पिया ! तामली बालतवस्सी तामलित्तीए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए नियत्तणियमंडलं आलिहित्ता संलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णं ॥ तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तामलिं बालतवस्सिं बलिचंचाए रायहाणीए

भावार्थ मली तपस्वीने ताम्रलिप्ती नगरी की बाहिर ईशान कोनमें शरीर प्रमाण क्षेत्र मंडल आलेख कर संलेखना से झूसित भक्तपान का प्रत्याख्यान करके पादोपगमन अनशन किया है. इसलिये तामली तपस्वी को बलिचंचा राज्यधानी में रहनेका संकल्प कराना श्रेष्ठ है ॥ ३३ ॥ परस्पर ऐसे वार्तालाप सुनकर बलिचंचा राज्यधानी की मध्य में से नीकलकर रुचकेन्द्र नाम का उत्पात पर्वत पर आये. वहां आकर वैक्रेय समुद्घात प्रदेश बाहिर नीकालकर उत्तर वैक्रेय रूप बनाये. वैक्रेय रूप बनाकर उत्कृष्ट, आकुलतावाली,

शब्दार्थ

रा० राज्यधानी में ठिं० स्थिति प० संकल्प प० करानेको ॥ ३३ ॥ अ० अन्योन्य की अं० पास ए० यह अर्थ प० सूनकर ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी की म० मध्य से नि० निकले जे० जहां रु० रुचकेन्द्र उ० उत्पातपर्वत ते० तहां उ० आये वे० वैक्रेय स० समुद्घात स० नीकाले जा० यावत् उ० उत्तर वैक्रेय रू० रूप वि० विकुर्वणाकर ता० उस उ० उत्कृष्ट तु० त्वरासे चं० रौद्रगति से ज० अन्यगति से छे०

सूत्र

ठिइप्पकप्पं पकरावेत्तए त्तिकट्टु,॥ ३ ३॥अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति पडिसुणंतित्ता बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छंति २ त्ता, जेणेव रुयइंदे उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणंति २त्ता जाव उत्तर वेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंति, विकुव्वंतित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए, चवलाए, चंडाए, जयणाए, छेयाए, सीहाए, सिग्घाए, दिव्वाए, उद्धुयाए, देवगईए, तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूदीवे दीवे, जेणेव भारहेवासे, जेणेव तामलित्तीए णगरीए,

भावार्थ

चपलतावाली, क्रोध में आकर चले ऐसी रौद्र, अन्य गति का जय करे वैसी, निपुणतावाली, शीघ्रतावाली, दीव्य, और वस्त्रादिक के उद्धूनपने की देवगति से तिर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में ताम्रलिप्ती नामक नगरी में तामली मौर्य पुत्र की पास आये. वहां आकर तामली तपस्वी की उपर, व दिशी विदिशी में खडे रहकर मनोज्ञ दीव्य देव ऋद्धि, मनोज्ञकान्ति, दीव्य

शब्द

निपुनगति सी० सिंहगति सि० शीघ्रगति से दि० दीव्यगति से उ० उद्धृत दे० देवगति से ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र म० मध्य में जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि मो० मौर्यपुत्र ते० तहां उ० आकर ता० तामलि बा० बालतपस्वी की उ० उपर स० सवादिशा में स० प्रतिदिशा में ठि० रहकर दि० दीव्य दे० देवऋद्धि

सूत्र

अनुवादक

जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छंतित्ता तामलिस्स बालतव-सिस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा, दिव्वं देविद्धिं, दिव्वं देवजुत्तिं. दिव्वं देवाणु-भावं दिव्वं बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसंति, उवदंसंतित्ता, तामलिं बालतवस्सिं [illegible]ो आयाहिणपयाहिणं करंति वंदंति नमंसंति, नमंसंतित्ता, एवं वयासी एवं [illegible]ाणुप्पिया ? अम्हे बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया, बहवे असुर कुमारा देवाय [illegible]य देवाणुप्पिया ! वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो । अम्हाणं देवाणुप्पिया !

[illegible]व और देवता के बत्तीस प्रकार के नाटक बतलाये. बतलाकर तामली तापस को तीन वार प्रद-[illegible]रके वंदना नमस्कार किया. और ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! हम बलिचंचा राज्यधानी में [illegible]वाले देव व देवियों तुम को वांदते हैं यावत् तुम्हारी पर्युपासना करते हैं. अहो देवानुप्रिय हमारी बलिचंचा राज्यधानी इन्द्र रहित व पुरोहित रहित है. और हम इन्द्राधीन, इन्द्राधिष्ठित, व इन्द्राधीन कार्य करने-

शब्दार्थ दे० देवद्युति दे० देवानुभाव दि० दीव्य ब० बत्तीस प्रकार के न० नाटकविधि उ० बताकर ता० तामलि बा० बालतपस्वी को ति० तीनवार आदान प० प्रदक्षिणा क० करे वं० वांदे न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० हम ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी वं० वंदन करते हैं न० नमस्कार करते हैं प० पर्युपासना करते हैं ॥ ३२ ॥ त० तब से० वह ता० तामलि बालतपस्वी ते० उन ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब०

सूत्र बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हेणं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा, इंदाहिट्ठिया, इंदाहीणकज्जा तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया बलिचंचा रायहाणिं आढह, परियाणह, सुमरह, अट्ठंबंधह, निहाणं पकरेह; ठिइप्पकप्पं पकरेह; तएणं तुज्झे कालमासे कालं किच्चा बलिचंचा रायहाणीए उववज्जिस्सह, तएणं तुब्भे अम्हं इंदा भविस्सह तएण तुब्भे अम्हेहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरिस्सह॥ ३३॥ तएणं से ता-

भावार्थ वाले हैं. इसलिये अहो देवानुप्रिय ! तुम बलिचंचा राज्यधानी का आदर करो, अच्छी जानो, उस का मन में स्मरण करो, वहां उत्पन्न होने का निदान (नियाणा) करो और वहां रहने का संकल्प करो. इस से तुम यहां से काल के अवसर में काल कर के बलिचंचा राज्यधानी में उत्पन्न होवोगे और हमारी साथ दीव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरोगे ॥३३॥ इस तरह बलिचंचा राज्यधानी के रहने वाले बहुत असुर

शब्दार्थ निपुनगति सी० सिंहगति सि० शीघ्रगति से दि० दीव्यगति से उ० उद्धूत दे० देवगति से ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र म० मध्य में जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि मो० मौर्यपुत्र ते० तहां उ० आकर ता० तामलि बा० बालतपस्वी की उ० उपर स० सर्वदिशा में स० प्रतिदिशा में ठि० रहकर दि० दीव्य दे० देवऋद्धि

सूत्र जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छंतित्ता तामलिस्स बालतव-सिस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा, दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुत्तिं, दिव्वं देवाणु-भावं, दिव्वं बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसंति, उवदंसंतित्ता, तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करंति वंदंति नमंसंति, नमंसंतित्ता, एवं वयासी एवं खलु देवाप्पुप्पिया ? अम्हे बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया, बहवे असुर कुमारा देवाय देवीओय देवाणुप्पिया ! वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो । अम्हाणं देवाणुप्पिया !

भावार्थ महानुभाव और देवता के बत्तीस प्रकार के नाटक बतलाये. बतलाकर तामली तापस को तीन वार प्रदक्षिणा करके वंदना नमस्कार किया. और ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! हम बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देव व देवियों तुम को वांदते हैं यावत् तुम्हारी पर्युपासना करते हैं. अहो देवानुप्रिय हमारी बलिचंचा राज्यधानी इन्द्र रहित व पुरोहित रहित है. और हम इन्द्राधीन, इन्द्राधिष्ठित, व इन्द्राधीन कार्य करने-

शब्दार्थ

वा० बालतपस्वी से अ० अनादर कराये हुवे अ० अच्छा नहीं जाने हुवे जा० जिस दि० दिशिसे पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ३६ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में ई० ईशान देवलोक अ० इन्द्र रहित अ० पुरोहित रहित हो० था ॥ ३७ ॥ त० तब से० वह ता० तामली बा० बालतपस्वी ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण स० साठ सहस्रवर्ष प० पर्याय पा० पालकर दो० दोमास की सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० वीससहित भ० भक्त शत अ० अनशन छे० छेदकर का० काल के अवसर में का०

सूत्र

रायहाणि वत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाइज्जमाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया॥३६॥तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे कप्पे अणिंदे अपुरोहिए यावि होत्था; ॥३७॥ तएणं से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं सट्ठिं वास सहस्साइं परियागं पाउणित्ता दो मासियाए संले-हणाए अत्ताणंझूसित्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता, कालमासे कालं किच्चा

भावार्थ

इस तरह बलिचंचा राज्यधानी में रहने वाले देवता देवियों का कहना तामली तापस ने सुना नहीं वैसे ही अच्छा जाना नहीं इस से वे जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥ ३६ ॥ उस काल उस समय में ईशान नामक देवलोक में इन्द्र चवने से वह भी इन्द्र रहित पुरोहित रहित हुवा ॥ ३७ ॥ तामली तापस साठ हजार वर्ष पर्यंत प्रवर्ज्या पालकर, दो मास की संलेखना से आत्मा को झूसकर, एकसो वीस भक्त अनशन

शब्दार्थ वहुतं अ० असुर कुमार के दे० देव देवी से ए० ऐसे वु० कहते हुवे ए० इस अर्थ को नो० नहीं आ० आदरकरे नो० नहीं प० अच्छा जाने तु० तुष्णित सं० रहे ॥ ३४ ॥ त० तब ते० वे व० बालिचंचा रा० राज्यधानि में व० रहते व० वहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामलि मो० मोर्यपुत्र को दो० दूसरीवक्त त० तीसरी वक्त ति० तीनवक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके ॥ ३५ ॥ ता० तामलि

सूत्र मली बालतवस्सी तेहिं बलिचंचारायराणि वत्थव्वेहिं बहुंहिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय, एवं वुत्तेसमाणे, एयमट्ठं णो आढाइ, णो परियाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ॥ ३४ ॥ तएणं ते बालिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिं मोरियपुत्तं दोच्चंपि तच्चंपि तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ करेइत्ता, जाव अम्हं चणं देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणी आणिंदा जाव ठिइप्पकप्पं पकरेह जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तेसमाणे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ॥ ३५॥तएणं ते बालिचंचा-

भावार्थ कुमार देवत देवियोंने जो कहा उस का अज्ञान तपस्या करने वाला तामली तापस ने आदर नहीं किया अच्छा नहीं जाना परंतु मौन रहा ॥ ३४ ॥ पुनः वे असुर कुमार देवताओंने तीन वक्त प्रद-क्षिणा कर दो तीन वार वैसा ही कहा कि अहो देवानुप्रिय हम इस बलिचंचा राज्यधानी में रहने वाले देव यावत् तुम वहां उत्पन्न होने का नियाना करो परंतु तामली तापस मौन खडा रहा. ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ

में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामलि बा० बालतपस्वी को का० काल को प्राप्त जा० जानकर ई० ईशान देवलोक में दे० देवेन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा पा० देखकर आ० आसुरक्त कु० कुपित हुवे चं० रौद्ररूप वाले हुवे मि० देदीप्यमान होते ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी के म० मध्य से नि० नीकलकर ता० उस उ० उत्कृष्टगति से जा० यावत् जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि बा० बालतपस्वी का स० शरीर ते० तहां उ० आकर

सूत्र

देवीओय तामलिं बालतवस्सिं कालगयं जाणित्ता ईसाणेय कप्पे देविंदत्ताए उववण्णं पासित्ता, आसुरुत्ता कुविया चंडिकिया, मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निगच्छंति, निगच्छंतित्ता, ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव भारहेवासे जेणेव ता- मलित्ती णयरी, जेणेव तामलिस्स बाल तवसिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, उवाग-

भावार्थ

देव देवियोंने तामली तपस्वी को काल प्राप्त हुवा जानकर व ईशान देवलोक में इन्द्र बना हुवा देख कर क्रोध में आसुरक्त हुए, कोप में धमधमायमान हुए, अत्यंत द्रेप भाव प्रगट हुवा, और मीसमीस दांत पीसने लगे. फीर बलिचंचा राज्यधानी में से नीकलकर उत्कृष्ट चंडा, चपला, शीघ्र, दीव्य देवगति से ताम्रलिप्ती नगरी के बाहिर तामली तापसका शरीर था वहां आये. और उस का बायां पांव रस्सी से बांधकर तीन

शब्दार्थ काल करके ई० ईशान क० देवलोक में ई० ईशान वडिंशक विमान में उ० उपपात सभा में दे० देवशैय्या में दे० देवदूष्य वस्त्र के अं० अतर में अं० अंगुलका अं० असंख्यातवा भाग ओ० अवगाहना ई० ईशान दे० देवेन्द्र वि० विरह काल में ई० ईशान देवेन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा ॥ ३८ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा अ० तुर्त का उत्पन्न पं० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से, पं० पर्याप्त भाव को ग० जावे तं० वह ज० जैसे आ० आहार पर्याप्ति जा० यावत् भा० भाषामन पर्याप्ति ॥ ३९ ॥ त० तब व० बलिचंचा रा० राज्यधानी

सूत्र ईसाणे कप्पे ईसाणवडिंसए विमाणे उववाय सभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरियं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणे देविंदे विरहिय कालसमयंसि ईसाण देविंदत्ताए उववण्णे ॥ ३८ ॥ तएणं से ईसाणे देविंदे देवराया अहुणो ववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ तंजहा आहार पज्जत्तीए, जाव भासामन पज्जत्तीए ॥ ३९ ॥ तएणं बलिचंचा रायहाणि वत्थव्वया, बहवे असुरकुमारा देवाय

अर्थ करके काल के अवसर में काल कर ईशान देवलोक के ईशान वडिंशक नामक विमान की उपपात सभा में देवशैय्या में देवदूष्य वस्त्र की नीचे अंगुल के असंख्यात भाग की अवगाहना से ईशान देवेन्द्र के विरह काल में ईशानेन्द्रपने उत्पन्न हुवे ॥ ३८ ॥ वह तत्काल का उत्पन्न हुवा ईशानेन्द्र आहार पर्याप्ति आदि पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्त हुवा ॥ ३९ ॥ उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले बहुत

दार्थ
में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामलि वा० बालतपस्वी को का० काल को प्राप्त जा० जानकर ई० ईशान देवलोक में दे० देवेन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा पा० देखकर आ० आसुरक्त कु० कुपित हुवे चं० रौद्ररूप वाले हुवे मि० देदीप्यमान होते व० बलिचंचा रा० राज्यधानी के म० मध्य से नि० नीकलकर ता० उस उ० उत्कृष्टगति से जा० यावत जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि वा० बालतपस्वी का स० शरीर तं० तहां उ० आकर

सूत्र
देवीओय तामलिं बालतवस्सिं कालगयं जाणित्ता ईसाणेय कप्पे देविंदत्ताए उववण्णं पासित्ता, आसुरुत्ता कुविया चंडिक्किया, मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निगच्छंति, निगच्छंतित्ता, ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव भारहेवासे जेणेव ता- मलित्ती णयरी, जेणेव तामलिस्स बाल तवसिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, उवाग-

भावार्थ
देव देवियोंने तामली तपस्वी को काल प्राप्त हुवा जानकर व ईशान देवलोक में इन्द्र बना हुवा देख कर क्रोध में आसुरक्त हुए, कोप में धमधमायमान हुए, अत्यंत द्वेष भाव प्रगट हुवा, और मीसमीस दांत पीसने लगे. फीर बलिचंचा राज्यधानी में से नीकलकर उत्कृष्ट, चंडा, चपला, शीघ्र, दीव्य देवगति से ताम्रलिप्ती नगरी के बाहिर तामली तापसका शरीर था वहां आये. और उस का बायां पांव रस्सी से बांधकर तीन

शब्दार्थ वा० बाये पांव सुं० रस्सी से बं० बांधे बं० बांधकर ति० तीनवार मु० मुख में उ० थुंके उ० थुंककर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीन च० चार च० चच्चर च० चतुर्मुख म० बडा रस्तापर आ० इधर उधर क० करते म० मोटे मोटे स० शब्द से उ० उद्घोषणा करते ए० ऐसा व० बोले से० वह के० कोन ता० तामली बा० बाल तपस्वी स० स्वयं ग० लीया हुवा पा० प्रणाम प्रव्रज्यासे प० दीक्षित के० कोन से० वह ई० ईशान देवलोक में ई० ईशान देवेन्द्र दे० देवराजा ति० ऐसा करके ता० तामली बा० बालतपस्वी का स० शरीर की ही० हीलना करे निं० निंदाकरे खि० विशेष निंदाकरे ग० गर्हा करे

सूत्र च्छइत्ता, वामे पाए सुंवेणं बंधांति बंधइत्ता, तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुहंति २ त्ता तामलित्तीए णयरीए सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह पहेसु आकड्ढविकड्ढि करेमाणा महया महया सद्दणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयासी सेकेणं भो तामली बालतवस्सी सयं गहियलिंगे पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए, के सणं से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविंदे देवरायातिकट्टु, तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलेंति, निंदंति

भावार्थ वक्त उस के मुंह में थुंके. थुंककर उस नगरी के सिंघाडे के आकारवाले यावत् बहुत रस्तेवाले चौक में रस्सी से उस के शरीर को घसीटते हुवे लाये. और उद्घोषणा करने लगे कि अहो लोको ! स्वयं मनः कल्पित प्रणाम प्रव्रज्या अंगीकार करनेवाला ऐसा तामली तापस कोन ? ईशान देवलोक में देवतापने

शब्दार्थ

अ० अवज्ञाकरे त० तर्जनाकरे ता० ताडनकरे प० कदर्थनाकरे प० दुःखदे आ० इधर उधर क० करे हीं० हीलनाकर जा० यावत् आ० इधर उधर क० करके ए० एकान्त में ए० रखकर दा० जिसदिशि से पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ४० ॥ त० तब ई० ईशान देवलोक में रहने वाले वे० वैमानिक दे० देव दे० देवी व० बलीचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी से ता० तामलि बा० बालतपस्वी का स० शरीर को हीं० हीलना करते निं० निंदाकरते जा० यावत् आ०इधर उधर की०करते पा०देखकर आ०शीघ्र आसुरक्त जा०यावत् मि० देदीप्यमान होते जे०जहां

सूत्र

खिंसंति, गरहंति, अवमण्णंति, तज्जिंति, तालेंति, परिवहेंति, पव्वहंति, आकड्ढ विकड्ढिं करंति, हीलेत्ता जाव आकड्ढ विकड्ढिंकरेत्ता, एगंते एडंति २ त्ता, जामेवदिसिं पाउब्भूया, तामेवादिसिं पडिगया ॥ ४० ॥ तएणं ते ईसाण कप्पवासी बहवे वेमाणिया देवाय देवीओय बलिचंचा रायहाणि वत्थव्वएहिं, बहूहिं असुरकुमारेहिं, देवेहिय देवीहिय तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलिज्जमाणं, निंदिज्जमाणं, खिंसिज्जमाणं जाव

भावार्थ

उत्पन्न हुवा सो कौन ? इस तरह तामली तापस के शरीर की हिलना, निंदा तिरस्कार व गर्हा करनेलगे. अवगणना करने लगे, हस्तादि से ताडना करने लगे, और जात्यादिक की हिलना, विशेष हिलना करने लगे. ऐसा करके उस के शरीर को एकान्त में डालकर जहां से आये थे वहां पीछे चलेगये ॥ ४० ॥ उस समय में ईशान देवलोक में रहनेवाले बहुत देव व देवियोंने बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देव देवी को

शब्दार्थ वा० बाये पांव सुं० रस्सी से बं० बांधे बं० बांधकर ति० तीनवार मु० मुख में उ० थुंके उ० थुंककर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीन च० चार च० चच्चर च० चतुर्मुख म० बडा रस्तापर आ० इधर उधर क० करते म० मोटे मोटे स० शब्द से उ० उद्घोषणा करते ए० ऐसा व० बोले से० यह के० कोन ता० तामली बा०बाल तपस्वी स०स्वयं ग०लीया हुवा पा०प्रणाम प्रवर्ज्यासे प०दीक्षित के० कोन से० वह ई० ईशान देवलोक में ई० ईशान देवेन्द्र दे० देवराजा ति० ऐसा करके ता० तामली बा० बालतपस्वी का स० शरीर की ही० हीलनाकरे निं० निंदाकरे खिं० विशेष निंदाकरे ग० गर्हा करे

सूत्र च्छइत्ता, वामे पाए सुंबेणं बंधंति बंधइत्ता, तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुहंति २ त्ता तामलि- त्तीए णयरीए सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणा महया महया सद्दणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयासी सेकेणं भो तामली वालतवस्सी सयं गहियलिंगे पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए, के सणं से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविंदे देवरायातिकट्टु, तामलिस्स वालतवस्सिस्स सरीरयं हीलेंति, निंदंति

भावार्थ पक उस के मुंह में थुंके. थुंककर उस नगरी के सिंघाडे के आकारवाले यावत् बहुत रस्तेवाले चौक में रस्सी से उस के शरीर को घसीटते हुवे लाये. और उद्घोषणा करने लगे कि अहो लोको ! स्वयं मनः कल्पित प्रणाम प्रवर्ज्या अंगीकार करनेवाला ऐसा तामली तापस कोन ? ईशान देवलोक में देवतापने

शब्दार्थ

पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ४१ ॥ त० तव से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ते० उन ई० ईशान देवलोक निवासी ब० बहुत वे० वैमानिक दे० देव दे० देवी अं० पास ए० यह अर्थ सो०सूनकर नि० अवधार कर आ० असुरक्त जा० यावत् मि० देदीप्यमान त० तहां स० शैयाये ग० गये हुवे ति० त्रिवली भि० भृकुटी सा० चढाकर व० बलिचंचा रा० राज्यधानी अ० अधो स० दिशा म० विदिशा को स० देखे ॥ ४२ ॥ त० तव सा० वह व० बलिचंचा रा० राज्धानी ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

सूत्र

जाव एगंते एडंति एडंतित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ४१ ॥ तएणं से ईसाणे देविंदे देवराया, तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाणय देवी-णय अंतिए एयमट्ठं सोच्चानिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलीयं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचा रायहाणिं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएइ॥ ४२॥ तएणं सा बलिचंचा रायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा अहे सपक्खिं

भावार्थ

लना, निंदा की. फीर आप के शरीर को एकान्त में डालकर अपने २ स्थान पीछे गये ॥ ४१ ॥ फीर ईशान देवलोक में रहनेवाले देव देवियों से ऐसा सुननेसे ईशानेन्द्रने क्रोधित बनकर वहां ईशान देवलोक में शैय्या पर बैठे हुए ललाट में भृकुटि चढाकर बलिचंचा राज्यधानी की नीचे, उपर सब दिशा व विदिशिओं में अवलोकन किया ॥ ४२ ॥ इस तरह बलिचंचा राज्यधानी की ऊपर, नीचे, दिशी विदिशिओं में

शब्दार्थ ई० ईशान देवेन्द्र दे० देवराजा जे० जहां उ० जाकर क० करकेतल प०इकठेकर द०दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजलि करके ज० जयविजय व० वधाकर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय व० वलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी दे० देवानुप्रिय का० काल को प्राप्त जा० जानकर ई० ईशान देवलोक में इं० इंद्रपने उ० उत्पन्न हुवे पा०देखकर आ० शीघ्रअसुरक्त जा० यावत् ए० एकान्त में ए०रखकर जा० यावत् जा० जिसदिशि से

मूल आकड्ढ विकड्ढिं कीरमाणं पासंति, पासइत्ता आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता, करयल परिग्गाहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिंकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावइत्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय देवाणुप्पिए कालगए जाणेत्ता, ईसाणेयकप्पे इंदत्ताए उववण्णे पासेत्ता, आसुरुत्ता

भावार्थ तामली तापस के शरीर की हीलना, निन्द्रा, खिसना करते और उन के शरीर को मार्ग में घसीटते हुवे देखा. इस से बहुत क्रोधित बनकर ईशानेन्द्र की पास आये और हस्तद्वय से मस्तक को आवर्तना करके जय विजय शब्द से वधाये. वधाकर ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! आप को काल प्राप्त हुवे व ईशानेन्द्र बने हुवे जानकर बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देव देवियोंने आपका मृतक शरीर की हि-

शब्दार्थ

पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ४१ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ते० उन ई० ईशान देवलोक निवासी ब० बहुत वे० वैमानिक दे० देव दे० देवी अं० पास ए० यह अर्थ सो०सूनकर नि० अवधार कर आ० असुरक्त जा० यावत् मि० देदीप्यमान त० तहां स९ शैयापे ग० गये हुवे ति० त्रिवली भि० भृकुटी सा० चढाकर व० बलिचंचा रा० राज्यधानी अ० अधो स० दिशा स० विदिशा को स० देखे ॥ ४२ ॥ त० तब सा० वह ब० बलिचंचा रा० राज्धानी ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

सूत्र

जाव एगंते एडंति एडंतित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ४१ ॥ तएणं से ईसाणे देविंदे देवराया, तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय अंतिए एयमट्ठं सोच्चानिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलीयं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचा रायहाणिं अहे सपक्खि सपडिदिसिं समभिलोएइ॥४२॥ तएणं सा बलिचंचा रायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा अहे सपक्खि

भावार्थ

लना, निंदा की. फीर आप के शरीर को एकान्त में डालकर अपने २ स्थान पीछे गये ॥ ४१ ॥ फीर ईशान देवलोक में रहनेवाले देव देवियों से ऐसा सुननेसे ईशानेन्द्रने क्रोधित बनकर वहां ईशान देवलोक में शैय्या पर बैठे हुए ललाट में भृकुटि चढाकर बलिचंचा राज्यधानी की नीचे, उपर सब दिशा व विदिशिओं में अवलोकन किया ॥ ४२ ॥ इस तरह बलिचंचा राज्यधानी की ऊपर, नीचे, दिशी विदिशिओं में

शब्दार्थ देवराजा अ० अधो स० दिशा स० प्रतिदिशा को स० देखते ते० उस दि० दिव्य प्रभाव से इं० अंगार सरिखा मु०मुर्मुरभूत त०तप्त वेलुकण त०तप्त अग्निसरिखी जा०उत्पन्न हुइ॥४३॥त०तब ते० वे व०बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी तं० उस ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी को इं० अग्निभूत जा० यावत् स० समज्योति भूत पा० देखकर भी० डरेहुवे उ० कंपहुवे ता० त्रासेहुवे उ० उद्वेग पायेहुवे सं० भयसे व्याप्त स० सवबाजु आ० दोडे प० विशेष दोडे अ० अन्योन्य

सूत्र सपडिंदिसिं समभिलोइया समाणा तेणं दिव्वप्पभावेणं,इंगालभूया,मुम्मुरभूया छारिभूया,तत्तकवेल्लयभूया, तत्तासमजोइभूया जाया यावि होत्था. ॥ ४३ ॥ तएणंते बलिचंचा रायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तं बलिचंचा रायहाणिं इंगालभूयं जाव समजोइभूयं पासंति पासतित्ता भीया उतत्था तासिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावेंति परिधावेंति परिधावतित्ता अण्णमण्णस्सकायं समतुरंगेमाणा चिट्ठंति

भावार्थ देखने से उन के दीव्य प्रभाव से वह राज्यधानी अग्नि के अंगार समान, मुर्मुरे समान, राख समान, तपेली समान व अति उष्ण अग्नि समान हुई ॥ ४३ ॥ उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देवों नगरी को अंगारे समान, यावत् अग्नि समान देखकर भयभीत हुवे, कंपनेलगे, उद्वेग करने लगे; इस तरह भयभीत बने हुवे चारों तरफ दौडने लगे और एक २ की काया में प्रवेश करने लगे ॥ ४४ ॥

पदार्थ

की का० काय को स० मवश करते चि० रहते हैं ॥ ४४ ॥ त० तब ते० वे ब० बलिचंचा रा० राज्य धानी में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ई० ईशान दे० देवेन्द्र को प० कुपित हुवे जा० जानकर ई० ईशान दे० देवेन्द्र दि० दीव्य दे० देवऋद्धि दे० देवद्युति दे० देवानुभाग ते० तेजोलेश्या अ० नहीं सहते हुवे स० सव स० मवदिशा में स० मतिदिशा में ठि० रहकर क०करके तल द० दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजलि क० करके ज० जयतिजय से व०

सूत्र

॥ ४९ ॥ तएणं ते बलिचंचा रायहाणि वत्थव्वा बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय ईसाणं देविंदं देवरायं परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तंदिव्वं देविड्ढिं दिव्वदेवजुत्तिं, दिव्वं देवाणुभागं, दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणा सव्वे सपक्खि सपडि दिसिं ठिच्चा करयलपरिग्गाहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिंकट्टु जएणं विजएणं

भावार्थ

उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले असुर कुमार जाति के बहुत देव देवियोंने ईशानेन्द्र को कुपित जानकर उन की एसी दीव्य देवर्द्धि, देवद्युति, देवमहानुभाग, और दीव्य तेजोलेश्या नहीं सहन करने से सब दिशी विदिशी में रहकर हस्तद्वय के दश नखों को एकत्रित कर मस्तक से आवर्तना करके जय विजय शब्द से वधाये. और ऐसा बोले—अहो देवानुप्रिय ! आपको प्राप्त

शब्दार्थ देवराजा अ० अधो स० दिशा स० प्रतिदिशा को स० देखते तें० उस दि० दिव्य प्रभाव से इं० अंगार सरिखा मु०मुंर्मुरभूत त०तप्त वेलुकण त०तप्त अग्निसरिखी जा०उत्पन्न हुइ॥४३॥त०तब ते० वे ब०बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी तं० उस ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी को इं० अग्निभूत जा० यावत् स० समज्योति भूत पा० देखकर भी० डरेहुवे उ० कंपेहुवे ता० त्रासेहुवे उ० उद्वेग पायेहुवे सं० भयसे व्याप्त स० सबबाजु आ० दोडे प० विशेष दोडे अ० अन्योन्य

सूत्र सपडिंदिसिं समभिलोइया समाणा तेणं दिव्वप्पभावेणं, इंगालभूया, मुम्मुरभूया छारिभूया, तत्तकवेल्लयभूया, तत्तासमजोइभूया जाया याविहोत्था. ॥ ४३ ॥ तएणंते बलिचंचा रायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तं बलिचंचा रायहाणिं इंगालभूयंजाव समजोइभूयं पासंति पासतित्ता भीया उतत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावंति परिधावंति परिधावतित्ता अण्णमण्णस्सकायं समतुरंगेमाणा . चिट्ठंति

भावार्थ देखने से उन के दीव्य प्रभाव से वह राज्यधानी अग्नि के अंगार समान, मुर्मुरे समान, राख समान, तप्तरेती समान व अति ऊष्ण अग्नि समान हुई ॥ ४३ ॥ उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देवों नगरी को अंगारे समान यावत् अग्नि समान देखकर भयभीत हुवे, कंपनेलगे, उद्वेग करने लगे. इस तरह भयभीत बने हुवे चारों तरफ दौडने लगे और एक २ की काया में प्रवेश करने लगे ॥ ४४ ॥

शब्दार्थ कुमार दे० देव देवी के ए० इस अर्थ म० सम्यक् वि० विनय से भुं० वारंवार खा० खमाते तं० उस दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् ते० तेजोलेश्या प० साहरण करे॥४८॥ त० उस दिन गो० गौतम ते० वे व० वलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले व० वहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी ई० ईशान दे० देवेन्द्र को आ० आदरकरे जा०यावत् प०पर्युपासना करे ई० ईशान दे० देवेन्द्र की आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहे गो० गौतम ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सा०

सूत्र असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामिएसमाणे तं दिव्वं देविड्ढिं जाव तेयलेस्सं पडिसाहरइ ॥४६॥ तप्पभिइचणं गोयमा ! ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वा बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति जाव पज्जुवासंति ईसाणस्सयस्स देविंदस्स देवरण्णो आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठंति ॥ एवंखलु गोयमा ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव

भावार्थ ईशानेन्द्रने अपनी दीव्य देवर्द्धि यावत् तेजोलेश्या पीछी ले ली ॥ ४६ ॥ उस दिन से वलिचंचा राज्यधानी के असुर कुमार देव ईशानेन्द्रका आदर सत्कार करते हैं यावत् उन की पर्युपासना करते हैं. और उन की आज्ञा, उपपात, वचन व निर्देश में रहते हैं. अहो गौतम ! ईशानेन्द्रने ऐसी दीव्य देवर्द्धि

शब्दार्थ

वयाकर ए० ऐसा व० बोले अ० अहो दे० देवानुप्रिय दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुई दि० देखी दे० देवानुप्रिय की दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् ल० लब्ध प० प्राप्त स० सन्मुखहुई खा० खमाते हैं दे० देवानुप्रिय ख० क्षमाकरो तु० तुम्हे ण० नहीं भु० वारंवार ए० ऐसा क० करने को ए० ऐसे स० सम्यक् वि० विनय से भुं० वारंवार खा० खमाते हैं ॥ ४५ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र ते० उन ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर

सूत्र

वद्धवंति वद्धावतित्ता एवं वयासी अहोणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया तं दिट्ठाणं देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी जावलद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, खामेमोणं देवाणुप्पिया ? खमं तुमं देवाणुप्पिया ! खमंतुमरिहंतुणं देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो भुज्जो एवं करणयाएत्तिकट्टु, एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामंति ॥ ४५ ॥ तएणं से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिचंचारायहाणि वत्थव्वेहिं बहूहिं

भावार्थ

हुई यावत् सन्मुख ऋद्धि हमने देखी हुई है अहो देवानुप्रिय ! हम आपका अपराध खमाते हैं. तुम हमारा अपराध की क्षमा करो. अहो देवानुप्रिय ! तुम हमारा अपराध क्षमा करने योग्य हो. हम ऐसा कार्य वारंवार नहीं करेंगे. इस तरह समभावसे विनय नम्रता सहित क्षमा मांगने लगे ॥४५॥ जब बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देवों इस तरह बहुत विनय व नम्रता सहित समभाव से वारंवार खमानेलगे तब

पदार्थ

कुमार दे० देव देवी के ए० इस अर्थ स० सम्यक् वि० विनय से भुं० वारंवार खा० खमाते तं० उस दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् ते० तेजोलेश्या प० साहरण करे॥४६॥ त० उस दिन गो० गौतम ते० वे ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी ई० ईशान दे० देवेन्द्र को आ० आदरकरे जा०यावत् प०पर्युपासना करे ई० ईशान दे० देवेन्द्र की आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहे गो० गौतम ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सा०

सूत्र

असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामिएसमाणे तं दिव्वं देविड्ढिं जाव तेयलेस्सं पडिसाहरइ ॥४६॥ तप्पाभिइचणं गोयमा ! ते बलि-चंचारायहाणिवत्थव्वा बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति जाव पज्जुवासंति ईसाणस्सयस्स देविंदस्स देवरण्णो आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठंति ॥ एवंखलु गोयमा ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव

भावार्थ

ईशानेन्द्रने अपनी दीव्य देवर्द्धि यावत् तेजोलेश्या पीछी ले ली ॥ ४६ ॥ उस दिन से बलिचंचा राज्यधानी के असुर कुमार देव ईशानेन्द्रका आदर सत्कार करते हैं यावत् उन की पर्युपासना करते हैं. और उन की आज्ञा, उपपात, वचन व निर्देश में रहते हैं. अहो गौतम ! ईशानेन्द्रने ऐसी दीव्य देवर्द्धि

शब्दार्थ यह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुइ ॥ ४७ ॥ ई० ईशान भं० भगवन् दे० देवेन्द्र की के० कितनी ठि० स्थिति गो० गौतम सा० अधिक दो० दोसागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ४८ ॥ ई० ईशान भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां ग० जायेंगे क० कहां उ० उपजेंगे गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि०. सिझेंगे जा० यावत् अं० अंतकरेंगे ॥ ४९ ॥ स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र का वि० विमान से ई० ईशान का

सूत्र अभिसमण्णागए ॥ ४७ ॥ ईसाणस्स भंते देविंदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! साइरेगाइं दोसागरोवमाणि ठिई प० ॥४८॥ ईसाणेणं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं गच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अंतं काहिंति ॥ ४९ ॥ सक्कस्सणं भंते!

भावार्थ यावत् महानुभाव ऐसे प्राप्त कीया॥४७॥अहो भगवन्! ईशानेन्द्रकी कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! ईशानेन्द्र की दो सागरोपमसे अधिक स्थिति कही ॥४८॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र आयुष्य का क्षय होने पर कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! ईशानेन्द्र महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सीझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र के विमान से ईशानेन्द्रके विमान क्या ऊंचे व

शब्दार्थ

वि० विमान ई० थोडे उ० ऊंचे ई० थोडे उ० उन्नत ई० ईशान दे० देवेन्द्र के विमान से स० शक्र दे० देवेन्द्र के वि० विमान ई० थोडे नी० नीचे णि० न्यून हं० हां गो० गौतम स० शक्र का स० सर्व ने० जानना से० वह के० कैसे गो० गौतम ज० जैसे क० हथेली सि० होवे दे० देश में उ० ऊंची उ० उन्नत णी० नीची नि० न्यून से० वह ते० इसलिये ॥ ५० ॥ प० समर्थ भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे०

सूत्र

देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चयरा ईसिं उण्णयराचेव; ईसाणस्सवा देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं णीययराचेव, ईसिं निण्णयराचेव ? हंता गोयमा ! सक्कस्स तंचेव सव्वं नेयव्वं । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहा नामए करयले सिया देसे उच्चे, देसे उण्णए, देसे णीए, देसे णिण्णे से तेणट्ठेणं ॥ ५० ॥ पभूणं भंते ! सक्के

भावार्थ

उन्नत (गुण में अधिक) हैं? अथवा ईशानेन्द्र के विमान से शक्रेन्द्र के विमान क्या नीचे या न्युन हैं? हां गौतम ! शक्रेन्द्र से ईशानेन्द्र के विमान ऊंचे व उन्नत हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जैसे हस्त का तला क्वचित् देश से ऊंचा, क्वचित् देश से उन्नत, क्वचित् देश से नीचा व क्वचित् देश से न्युन होता है वैसे ही अहो गौतम ! शक्रेन्द्र देवेन्द्र के विमान हैं ॥ ५० ॥ अहो

शब्दार्थ यह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुइ ॥ ४७ ॥ ई० ईशान भं० भगवन् दे० देवेन्द्र की के० कितनी ठि० स्थिति गो० गौतम सा० अधिक दो० दोसागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ४८ ॥ ई० ईशान भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां ग० जावेंगे क० कहां उ० उपजेंगे गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि०. सिझेंगे जा० यावत् अं० अंतकरेंगे ॥ ४९ ॥ स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र का वि० विमान से ई० ईशान का

सूत्र अभिसमण्णागए ॥ ४७ ॥ ईसाणस्स भंते देविंदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! साइरेगाइं दो सागरोवमाणि ठिई प० ॥४८॥ ईसाणेणं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं गच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अंतं काहिंति ॥ ४९ ॥ सक्कस्सणं भंते!

भावार्थ यावत् महानुभाव ऐसे प्राप्त किया॥४७॥अहो भगवन्! ईशानेन्द्रकी कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! ईशानेन्द्र की दो सागरोपमसे अधिक स्थिति कही ॥४८॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र आयुष्य का क्षय होने पर कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! ईशानेन्द्र महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सीझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र के विमान से ईशानेन्द्रके विमान क्या ऊंचे व

शब्दार्थ

कि० क्या आ० बोलाया अ० विना बोलाया गो० गौतम आ० बोलाया अ० विना बोलाया ॥ ५२ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् स० शक्रेंद्र दे० देवेंद्र ई० ईशान दे० देवेंद्र को स० सब दिशा स० विदिशामें स० देखने को ज० जैसे पा० आने में त० तैसे दो० दो आ० आलापक ने० जानना ॥ ५३ ॥ प० समर्थ स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे० देवेन्द्र की स० साथ आ० आलाप सं० संलाप क० करने को हं० हां प० समर्थ ॥ ५४ ॥ अ० है भं० भगवन् तें० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र को कि० कार्य क०

सूत्र

गोयमा ! आढामाणेवि पभू, अणाढामाणेवि पभू ॥ ५२ ॥ पभूणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंदं देवरायं सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएत्तए? जहा पाउब्भवणा तहा दोवि आलावगा णेयव्वा ॥ ५३ ॥ पभूणं भंते! सक्के देविंदे देवराया ईसा-णेणं देविंदेणं सद्धिं आलावंवा संलावंवा करेत्तए ? हंता पभू, जहा पाउब्भवणा॥ ५४॥

भावार्थ

और विना बोलाये हुए भी आने को समर्थ है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की बाजु पर या उस की दिशी विदिशी में देखने को समर्थ है ? अहो गौतम ! जैसे आने के दो आलापक कहे वैसे ही देखने के दो आलापक जानना ॥ ५३ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को समर्थ है. वगैरह आने के दो आलापक जैसे कहना ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! क्या उन शक्र ईशानेन्द्र देवों को करने

शब्दार्थ देवेन्द्र की अं० पास पा० आने को हं० हां प० समर्थ से० वह भं० भगवन् किं० क्या आ० बोलाया अ० विना बोलाया गो० गौतम आ० बोलाया णो० नहीं अ० विना बोलाया ॥ ५१ ॥ प० समर्थ ई० ईशान दे० देवेंद्र स० शक्र दे० देवराजा की अं० पास पा० आने को हं० हां प० समर्थ से० वह भं० भगवन्

मूल देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ? हंता पभू । से भंते किं आढाभाणे पभू अणाढामाणे पभू ? गोयमा ! आढामाणे पभू, णो अणाढामाणे पभू ॥ ५१ ॥ पभूणं भंते ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आढामाणे पभू, अणाढामाणे पभू ?

भावार्थ भगवन् ! शक्र देवेन्द्र ईशान देवेन्द्र की पास प्रगट होने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की पास आने को समर्थ है. तब अहो भगवन् ! क्या वह बोलाये हुवे या विना बोलाये हुए आने को समर्थ है ? अहो गौतम ! ईशानेन्द्रकी पास शक्रेन्द्र बोलानेपर आने को समर्थ है परंतु विना बोलाये आने को समर्थ नहीं है ॥ ५१ ॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र शक्रेन्द्र की पास आने को समर्थ है ? हां गौतम ! ईशानेन्द्र शक्रेन्द्र की पास आने को समर्थ है. अहो भगवन् ! वह क्या बोलाये हुए आने को समर्थ है या विना बोलाये हुए आने को समर्थ है ? अहो गौतम ! बोलाये हुए भी आने को समर्थ है.

शब्दार्थ कि० क्या आ० बोलाया अ० विना बोलाया गो० गौतम आ० बोलाया अ० विना बोलाया ॥ ५२ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् स० शक्रेंद्र दे० देवेंद्र ई० ईशान दे० देवेंद्र को स० सब दिशा स० विदिशायें स० देखने को ज० जैसे पा० आने में त० तैसे दो० दो आ० आलापक ने० जानना ॥ ५३ ॥ प० समर्थ स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे० देवेन्द्र की स० साथ आ० आलाप सं० संलाप क० करने को हं० हां प० समर्थ ॥ ५४ ॥ अ० है भं० भगवन् तें० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र को कि० कार्य क०

सूत्र गोयमा ! आढामाणेवि पभू, अणाढामाणेवि पभू ॥ ५२ ॥ पभूणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंदं देवरायं सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएत्तए? जहा पाउब्भवणा तहा दोवि आलावगा णेयव्वा ॥ ५३ ॥ पभूणं भंते! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेणं देविंदेणं सद्धिं आलावंवा संलावंवा करेत्तए? हंता पभू, जहा पाउब्भवणा॥४४॥

भावार्थ और विना बोलाये हुए भी आने को समर्थ है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की बाजु पर या उस की दिशी विदिशी में देखने को समर्थ है ? अहो गौतम ! जैसे आने के दो आलापक कहे वैसे ही देखने के दो आलापक जानना ॥ ५३ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को समर्थ है. वगैरह आने के दो आलापक जैसे कहना ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! क्या उन शक्र ईशानेन्द्र देवों को करने

शब्दार्थ करते का हं० हां अ० है से० वह क० क्या प० करे गो० गौतम से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे० देवेन्द्र की अं० पास पा० जावे ई० ईशान दे० देवेन्द्र स० शक्र दे० देवेन्द्र की अं० पास पा० जावे स० शक्र दे० देवेन्द्र दा० दक्षिणार्ध लोक के अ० अधिपति ई० ईशान दे० देवेन्द्र उ० उत्तरार्ध लोकके अ० अधिपति ते० वे अ० अन्योन्य के कि० कार्य क० करने योग्य प० करते हुवे वि० विचरते हैं ॥ ५५ ॥

सूत्र अत्थिणं भंते! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं? हंता अत्थि, । से कहमियाणिं पकरेइ? गोयमा! ताहे चेवणं से सक्के देविंदे देवराया, ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवइ । ईसाणेवा देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवइ । इति भो सक्का देविंदा देवराया दाहिणड्ढलोगाहिवई । इति भो ईसाणा देविंदा देवराया उत्तरड्ढ लोगाहिवई । इति भो इति भोत्ति, ते अण्णमण्णस्स किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥ ५५ ॥

भावार्थ योग्य कार्य हैं? हां गौतम! उन को कार्य है. अहो भगवन्! वे कैसे करते हैं? अहो गौतम! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की पास प्रगट होवे. ईशानेन्द्र शक्रेन्द्र की पास प्रगट होवे. और भी शक्रेन्द्र दक्षिणार्ध लोक का अधिपति है और ईशानेन्द्र उत्तरार्ध लोक का अधिपति है. इति भो इति भो ऐसे परस्पर वार्तालाप करते परस्पर के कार्य करते हुवे विचरते हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्र व ईशानेन्द्र को

शब्दार्थ अ० है भं० भगवन् ते० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्रको वि० विवाद स० उत्पन्न होता है हं० हां अ० है से० वह क० क्या इ० उसवक्त प० करे गो० गौतम स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र म० सनत्कुमार दे० देवेन्द्रको म० मनसे चिन्तवना क० करे त० तब से० वह स० सनत्कुमार तं० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र से म० चिन्तवन क० कराये खि० शीघ्र स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र की अं० पास पा० जावे जं० जो से० वह व० कहे त० उन को आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देशमें चि० रहे ॥ ५६ ॥ स० सनत्कु

सूत्र अत्थिणं भंते! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं विवादा समुप्पज्जंति? हंता अत्थि। से कहमिदाणिं पकरेइ ? गोयमा ! ताहेचेवणं सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमारं देविंदं देवरायं मणसी करेइ, । तएणं से सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कीसाणेहिं देविंदेहिं देवराईहिं मणसी कएसमाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं अंतियं पाउब्भवंति । जंसेवयइ तस्स आणाउववायवयणणिद्देसे चिट्ठंति॥ ५६॥ सणंकुमा-

भावार्थ क्या विवाद उत्पन्न होता है ? हां गौतम ! उन को विवाद उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! विवाद के अवसर में वे क्या करे ? अहो गौतम ! ये दोनों सनत्कुमारेन्द्रकी मन से चिन्तवना करे. इस तरह उनको चिन्तवना करते हुये जानकर सनत्कुमारेन्द्र शीघ्र शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की पास आवे. और जो वह कहे वैसे उन की आज्ञा, उपपात, वचन व निर्देश में रहे ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! सनत्कुमारेन्द्र क्या भवसिद्धिक है

मार भं० भगवन् किं० क्या भ० भवसिद्धिक अ० अभवसिद्धिक स० समदृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि प० परत्त संसारी अ० अनंत संसारी सु० सुलभबोधि दु० दुर्लभ बोधि आ० आराधिक वि० विराधिक च० चरम अ० अचरम गो० गौतम स० सनत्कुमार दे० देवेन्द्र भ० भवसिद्धिक णो० नहीं अ० अभवसिद्धिक ए० ऐसे स० समदृष्टि प० परत सु० सुलभ बोधि आ० आराधिक च० चरम प० प्रशस्त ने० जानना से० वह के० कैसे भं० भगवन् गो० गौतम स० सनत्कुमार दे० देवेन्द्र ब० बहुत स० साधु स० साध्वी सा०

रेणं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए, अभवसिद्धिए, सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी. परित्तससारिए, अणंतसंसारिए, सुलहबोहिए, दुल्लभबोहिए, आराहए, विराहए, चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सणंकुमारेणं देविंदे देवराया भवसिद्धिए णो अभवसिद्धिए, एवं सम्ममिच्छ, परित्त अणंत, सुलहबोहिए दुल्लभबोहिए, आराहए विराहिए चरिमे पसत्थं नेयव्वं ॥ से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! सणंकुमारे देविंदे देवराया बहूणं सम-

या अभवसिद्धिक है, सम्यग् दृष्टि है या मिथ्यादृष्टि है, परत संसारी है या अनंत संसारी है, सुलभ बोधी है या दुर्लभ बोधी है, आराधक है या विराधक है और चरिम या अचरिम है ? अहो गौतम ! सनत्कुमारेन्द्र भव सिद्धिक, सम्यग् दृष्टि, परत संसारी, सुलभ बोधी, आराधक व चरिम शरीरी हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! सनत्कुमारेन्द्र बहुत साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका के

शब्दार्थ

श्रावक सा० श्राविका का हि० हितका इच्छक सु० सुख का इच्छक प० पथ्य का इच्छक अ० अनुकंपा सहित नि० मोक्ष हि० हित सुख नि० मोक्ष का इच्छक ते० इसलिये गो० गौतम स० सनत्कुमार भ० भवसिद्धिक जा० यावत् नो० नहीं अ० अचरिम ॥ ५७ ॥ स० सनत्कुमार भं० भगवन् दे० देवेन्द्र की के० कितनी ठि० स्थिति प० प्ररूपी स० सात सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ५८ ॥ से० वह भं०

सूत्र

णाणं, बहूणं समणीणं, बहूणं सावयाणं, बहूणं सावियाणं हियकामए, सुहकामए, पत्थकामए, आणुकंपिए, निस्सेयसिए, हिय, सुह, निस्सेसकामए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! सणंकुमारेणं भवसिद्धिए जाव णो अचरिमे ॥ ५७ ॥ सणंकुमारस्स भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्तसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥५८॥ सेणं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिंति? गोयमा !

भावार्थ

हित के कामी, सुख के कामी, पथ्य के कामी, अनुकम्पावाले, मोक्षके वांच्छक वैसे ही हित, सुख, व मोक्ष के कामी है; इसलिये अहो गौतम ! वे समदृष्टि यावत् चरिम शरीरी हैं ॥५७॥ अहो भगवन् सनत्कुमारेन्द्र की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! सनत्कुमारेन्द्र की स्थिति सात सागरोपम की कही ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! वह सनत्कुमारेन्द्र आयुष्य का क्षय हुवे पीछे वहां से कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होवेंगे सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे अब इस उद्देशे में जो अधि-

शब्दार्थ भगवन् ता० उस दे० देवलोक से आ०-आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उपजेगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि०.सिझेगा जा० यावत् अं०. अंतकरेगा स० वह ए०. ऐसे भं० भगवन् त्ति० ऐसे ॥ ३ ॥ १ ॥ * * *

सूत्र महाविदेह वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ सेवं भंते भंते त्ति ॥ गाहाओ छट्ठट्ठममासोअद्धअद्ध, मासो वासाइं अद्ध छम्मासा, तीसग कुरुदत्ताणं, तव भत्त परित्त परियाओ ॥ १ ॥ उच्चत्त विमाणाणं पाउब्भव पेच्छणाय संलावे ॥ किच्चवि वादुप्पत्ती, सणंकुमारेय भवियत्तं ॥२॥ मोया सम्मत्तो ॥ इति तइए सए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १ ॥ * * * *

भावार्थ कार कहा है उस का संक्षेप से गाथा द्वारा बतलाते हैं. तिष्यक अनगारने. बेले २ पारणे किये, कुरुदत्त अनगारने तेले तेले पारने किये, तिष्यक अनगार का एक मासका संथारा और कुरुदत्त को १५ दिन का संथारा तिष्यक अनगार को आठ वर्ष की दीक्षा और कुरुदत्त को छ मास की दीक्षा. विमानों की ऊंचाई इन्द्रों का मीलना, इन्द्रों का अवलोकन, इन्द्रों का संभाषण, इन्द्रों का कार्य, इन्द्रों का विवाद, सनत्कुमारेन्द्र द्वारा समाधान और भव्य अभव्य का प्रश्न कहा. यह मोया नामक नगरी का अधिकार समाप्त हुवा. यह तीसरे शतकका प्रथम उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १ ॥

शब्दार्थ ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर हो० था जा० यावत् प०परिषदा प० पर्युपासना करते ॥ * ॥ ते० उस काल ते० उस समय में च० चमर अ० असुरेन्द्र च० चमर चंचा रा० राज्यधानी स० सभा सु० सुधर्मा के च०चमर सी० सिंहासन च० चौसठ सा० सामानिक सा०सहस्र जा०यावत् न० नाट्यविधि उ० बताकर जा० जिसदिशि से पा० आया ता० उसदिशि में प० पीछागया ॥ १ ॥

सूत्र तेणं कालेणं, तेणं समएणं रायगिहे नयरे होत्था, जाव परिसा पज्जुवासइ, ॥ * ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमर चंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव नट्टविहं उवदंसेत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ १ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे

भावार्थ प्रथम उद्देशे में देवता की विकुर्वणा का स्वरूप कहा. अब दूसरे उद्देशे में देव की शक्ति का प्रश्न पूछते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था. उस के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे. परिषदा आकर सेवा भक्ति करने लगी.॥*॥ उस काल उस समय में चमर नामक असुरेन्द्र असुरदेव के राजा चमर चंचा राज्यधानि में सुधर्मा सभा के चमर नामक सिंहासन पर चौसठ हजार सामानिक देव साहित बैठे हुए थे. श्री श्रमण भगवन्त को राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में बैठे हुवे अवधि ज्ञान से देखकर सब परिवार साहित वंदन करने को आये, यावत्

शब्दार्थ भगवन् ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उपजेगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अं० अंतकरेगा स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् सि० ऐसे ॥ ३ ॥ १ ॥ * * *

सूत्र महाविदेह वासे सिज्झहिइ जाव अंतं करेहिइ सेवं भंते भंते त्ति ॥ गाहाओ छट्ठट्ठममासोअद्धअद्ध, मासो वासाइं अद्ध छम्मासा, तीसग कुरुदत्ताणं, तव भत्त परित्त परियाओ ॥ १ ॥ उच्चत्त विमाणाणं पाउब्भव पेच्छणाय संलावे ॥ किंचावि वादुप्पत्ती, सणंकुमारेय भवियत्तं ॥२॥ मोया सम्मत्तो ॥ इति तइए सए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १ ॥ * * * *

भावार्थ कार कहा है उस का संक्षेप से गाथा द्वारा बतलाते हैं. तिष्यक अनगारने, बेले २ पारणे किये, कुरुदत्त अनगारने तेले तेले पारने किये, तिष्यक अनगार का एक मासका संथारा और कुरुदत्त को १५ दिन का संथारा तिष्यक अनगार को आठ वर्ष की दीक्षा और कुरुदत्त को छ मास की दीक्षा. विमानों की ऊंचाई इन्द्रों का मीलना, इन्द्रों का अवलोकन, इन्द्रों का संभाषण, इन्द्रों का कार्य, इन्द्रों का विवाद, सनत्कुमारेन्द्र द्वारा समाधान और भव्य अभव्य का प्रश्न कहा. यह मोया नामक नगरी का अधिकार समाप्त हुवा. यह तीसरे शतकका प्रथम उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १ ॥

शब्दार्थ ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर हो० था जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपासना करते ॥ * ॥ ते० उस काल ते० उस समय में च० चमर अ० असुरेन्द्र च० चमर चंचा रा० राज्य धानी स० सभा सु० सुधर्मा के च० चमर सी० सिंहासन च० चौसठ सा० सामानिक सा० सहस्र जा० यावत् न० नाट्यविधि उ० बताकर जा० जिसदिशि से पा० आया ता० उसदिशि में प० पीछागया ॥ १ ॥

सूत्र तेणं कालेणं, तेणं समएणं रायगिहे नयरे होत्था, जाव परिसा पज्जुवासइ, ॥ * ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमर चंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव नट्टविहं उवदंसेत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ १ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे

भावार्थ प्रथम उद्देशे में देवता की विकुर्वणा का स्वरूप कहा. अब दूसरे उद्देशे में देव की शक्ति का प्रश्न पूछते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था. उस के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे. परिषदा आकर सेवा भक्ति करने लगी.॥*॥ उस काल उस समय में चमर नामक असुरेन्द्र असुरदेव के राजा चमर चंचा राज्यधानि में सुधर्मा सभा के चमर नामक सिंहासन पर चौसठ हजार सामानिक देव सहित बैठे हुए थे. श्री श्रमण भगवन्त को राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में बैठे हुवे अवधि ज्ञान से देखकर सब परिवार सहित वंदन करने को आये, यावत्

शब्दार्थ — भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले अ० हैं भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी की अ० नीचे अ० असुर कुमार देव प० रहते हैं गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे जा० यावत् अ० नीचे स० सातवी पु० पृथ्वी की सो० सौधर्म क० देवलोक की अ० नीचे जा० यावत् ई० ईषत्प्राग्भार पृं० पृथ्वी की अ० असुर कुमार दे० देव प० रहते हैं णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ २ ॥ से० वे क० किस

सूत्र — समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंति, ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे. एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव अत्थिणं भंते ! ईसिप्पभाए पुढवीए असुरकुमारा देवा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥२॥ से कहिं

भावार्थ — बत्तीस प्रकार के नाटक बताकर जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥ १ ॥ उस समय में श्री गौतम स्वामीने श्रमण भगवंत श्रीमहावीर को वंदना नमस्कारकर ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! असुर कुमार जाति के देव क्या रत्नप्रभा पृथ्वी की नीचे रहते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! क्या वे दूसरी, तीसरी यावत् सातवी पृथ्वी की नीचे रहते हैं अथवा सौधर्म देवलोक यावत् ईषत् प्राग्भार पृथ्वी की नीचे रहते हैं ! अहो गौतम ? यह अर्थ योग्य नहीं है. ॥ २ ॥ जब अहो

शब्दार्थ — स्थान भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव प० रहते हैं गो० गौतम इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी का अ० अस्सी उ० उत्तर जो० योजन स० लाख बा० जाडपने ए० ऐसे अ० असुर कुमारदेव व० वक्तव्यता जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगते वि० विचरते हैं ॥ ३ ॥ अ० है भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव अ० अधोगति में वि० विषय हं० हां अ० है के० कितना भं० भगवन् अ०

सूत्र — खाइणं भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स, बाहल्लाए, एवं असुर देव वत्तव्वयाए, जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥३॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गति

भावार्थ — भगवन् ! वे असुर कुमार कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है. इस में एक हजार उपर व एक हजार नीचे छोड़ कर एक लाख अठ्ठत्तर हजार योजन की पोलार है. जिस में प्रथम नरक के बारह आंतरे व तेरह पाथडे हैं. जिस में उपर का एक व नीचे का एक ऐसे दो आंतरे छोडकर शेष दश आंतरे में दश जातिके भुवनपति देव के सात क्रोड बहत्तर लाख विमान हैं. प्रथम अंतर में असुरकुमार जाति के देवता के ६४००००० भवन हैं. वहां असुरकुमार देवता दीव्य ऋद्धि व उत्तम भोग भोगवते हुए विचरते हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार जाति के देवों को नीचे जाने की क्या शक्ति है?

शब्दार्थ अ० असुर कुमार दे० देवका अ० अधो ग० गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी त० तीसरी पु० पृथ्वी को गये ग० जावेंगे ॥४॥ किं० क्या प० प्रयोजनसे भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव त० तीसरी पु० पृथ्वी में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम पु० पूर्व वैरी की वे० वेदना उ० उदीरना करने को पु० पूर्वसंगति की वे० वेदना उ० उपशमाने को ॥ ५ ॥ अ० है

विसए? हंता अत्थि केवयाणं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए पण्णत्ते? गोयमा! जाव अहे सत्तमाए पुढवीए, तच्चं पुण पुढविं गयाय गमिस्संतिय, ॥ ४ ॥ किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय, गमिस्संतियं ? गोयमा ! पुव्ववेरियस्सवा, वेयणउदीरणयाए, पुव्वसंगइयस्स वेयण उवसामणयाए ; एवंखलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय गमिस्संतिय ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं

भावार्थ हां गौतम ! वे नीचे सातवी नरक तक जासकते हैं परंतु तीसरी पृथ्वी तक गये है और जावेंगे ॥४॥ अहो भगवन् ! किस कारनसे देवता नीचे तीसरी पृथ्वी तक गये हैं और जावेंगे ? अहो गौतम ! पूर्व जन्म का वैरी नरक में उत्पन्न हुआ होवे तो उन की वेदना की उदीरणा करने केलिये अथवा पूर्व जन्म का मित्र नरक में उत्पन्न हुवा होवे उन की वेदना उपशमाने के लिये असुरकुमार जाति के देव तीसरी नरक तक गये हैं और जावेंगे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ? असुरकुमार देव तिर्च्छा गमन कर सकते हैं ? हां गौतम !

शब्दार्थ भं० भगवन् अ० असुरकुमार दे० देवका ति० तिर्यक् गति में वि० विषय हं० हां अ० है के० कितना भं० भगवन् अ० असुरकुमार देवोंका ति० तिर्यक् गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे किं० क्या प० कारन से भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त का ज० जन्म महोत्सव नि० दीक्षा महोत्सव णा० ज्ञान उत्पात महोत्सव प० निर्वाण महोत्सव में

सूत्र देवाणं तिरियगति विसए पण्णत्ते ! हंता अत्थि। केवइयाणं भंते असुरकुमाराणं देवाणं तिरियगइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जाव असंखेज्जा दीव समुद्दा नंदिस्सरवरं पुण दीवं गयाय गमिस्संतिय ॥ किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गयाय, गमिस्संतिय? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो एएसिणं जंमणमहेसुवा, निक्खमण महेसुवा, णाणुप्पायमहिमासुवा, परिनिव्वाण महिमासुवा, एवंखलु असुर

भावार्थ असुरकुमार देव तिर्च्छे जाते हैं. अहो भगवन् ! असुरकुमार देव तिर्च्छे कहांतक जाते हैं ? अहो गौतम ! उन की जाने की शक्ति असंख्यात द्वीप समुद्र तक की है परंतु आठवा नंदीश्वर द्वीप तक गये हैं और जावेंगे. अहो भगवन् ! वे असुर कुमार देव किस कारनसे नंदीश्वर द्वीप में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! अरिहंत भगवंत के जन्म महोत्सव, दीक्षा महोत्सव, ज्ञान का उत्पन्न होने का

शब्दार्थ — असुर कुमार दे० देवका अ० अधो ग० गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी त० तीसरी पु० पृथ्वी को गये ग० जावेंगे ॥४॥ किं० क्या प० प्रयोजनसे भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव त० तीसरी पु० पृथ्वी में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम पु० पूर्व वैरी की वे० वेदना उ० उदीरना करने को पु० पूर्वसंगति की वे० वेदना उ० उपशमाने को ॥ ५ ॥ अ० है

सूत्र — विसए? हंता अत्थि केवयाणं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए पण्णत्ते? गोयमा! जाव अहे सत्तमाए पुढवीए, तच्चं पुण पुढविं गयाय गमिस्संतिय, ॥ ४ ॥ किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय, गमिस्संतिय ? गोयमा ! पुव्ववेरियस्सवा, वेयणउदीरणयाए, पुव्वसंगइयस्स वेयण उवसामणयाए ; एवंखलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय गमिस्संतिय ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं

भावार्थ — हां गौतम ! वे नीचे सातवी नरक तक जासकते हैं परंतु तीसरी पृथ्वी तक गये है और जावेंगे ॥४॥ अहो भगवन् ! किस कारनसे देवता नीचे तीसरी पृथ्वी तक गये हैं और जावेंगे ? अहो गौतम ! पूर्व जन्म का वैरी नरक में उत्पन्न हुआ होवे तो उन की वेदना की उदीरणा करने केलिये अथवा पूर्व जन्म का मित्र नरक में उत्पन्न हुआ होवे उन की वेदना उपशमाने के लिये असुरकुमार जाति के देव तीसरी नरक तक गये हैं और जावेंगे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ? असुरकुमार देव तिर्च्छा गमन कर सकते हैं ? हां गौतम !

शब्दार्थ

भं० भगवन् अ० असुरकुमार दे० देवका ति० तिर्यक् गति में वि० विषय है० हां अ० है के० कितना भं० भगवन् अ० असुरकुमार देवोंका ति० तिर्यक् गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे किं० क्या प० कारन से भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त का ज० जन्म महोत्सव नि० दीक्षा महोत्सव णा० ज्ञान उत्पात महोत्सव प० निर्वाण महोत्सव में

सूत्र

देवाणं तिरियगति विसए पण्णत्ते ! हंता अत्थि। केवइयाणं भंते असुरकुमाराणं देवाणं तिरियगइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जाव असंखेज्जा दीव समुद्दा नंदिस्सरवरं पुण दीवं गयाय गमिस्संतिय ॥ किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गयाय, गमिस्संतिय? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो एएसिणं जंमणमहेसुवा, निक्खमण महेसुवा, णाणुप्पायमहिमासुवा, परिनिव्वाण महिमासुवा, एवंखलु असुर

भावार्थ

असुरकुमार देव तिर्च्छे जाते हैं. अहो भगवन् ! असुरकुमार देव तिर्च्छे कहांतक जाते हैं ? अहो गौतम ! उन की जाने की शक्ति असंख्यात द्वीप समुद्र तक की है परंतु आठवा नंदीश्वर द्वीप तक गये हैं और जावेंगे.. अहो भगवन् ! वे असुर कुमार देव किस कारनसे नंदीश्वर द्वीप में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! अरिहंत भगवंत के जन्म महोत्सव, दीक्षा महोत्सव, ज्ञान का उत्पन्न होने का

शब्दार्थ भ० असुर कुमार देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे ॥ ६ ॥ अ० है भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय हं० हां अ० है के० कितनी भं० भगवन् अ० असुर कुमार देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अच्युत देवलोक सो० सौधर्म देवलोक ग० गये ग० जावेंगे कि० किस प० प्रयोजन से भं० भगवन् अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक को ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम ते० उन दे० देवों का भ० भवप्रत्यय का वे० वैरसे ते० वे दे० देव वि०

सूत्र कुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गयाय गमिस्संतिय ॥ ६ ॥ अत्थिणं भंते ! असुर कुमाराणं देवाणं उड्ढगइविसए ? हंता अत्थि । केवइयं चणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं उड्ढं गतिविसए ? गोयमा ! जाव अच्चुएकप्पे सोहम्मं पुणकप्पं गयाय गमिस्संतिय, । किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गयाय गामिस्संतिय ?

भावार्थ महोत्सव और निर्वाण का महोत्सव इन चार कारन से नंदीश्वर द्वीप को असुर कुमार देवता गतकाल में गये और भविष्य में जावेंगे ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देवों को उपर जाने की शक्ति का विषय है ? हां गौतम! असुर कुमार देवों को उपर जाने की शक्ति है. अहो भगवन् ! वे ऊर्ध्व लोकमें कहां लग जा सकते हैं ! अहो गौतम ! उन मे अच्युत देवलोक तक जाने की शक्ति है किन्तु सौधर्म देवलोक तक गये हैं और जावेंगे. अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस कारन से सौधर्म देवलोक में

शब्दार्थ — विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते आ० आत्मरक्षकदेव को वि० त्रास उपजावे अ० यथा ल० लघु र० रत्न ग० ग्रहणकर आ० स्वतः ए० एकान्त में अ० जावे ॥ ७ ॥ अ० है भं० भगवन् ते० उन दें० देवोको अ० यथा ल० लघु र० रत्न हं० हां अ० है से० वह क० क्या इ० इनको प० करे त० पीछे का० काया को प० पीडा उपजावे ॥ ८ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् अ० असुर कुमार देव त० तहां

सूत्र — गोयमा ! तेसिणं देवाणं भवपच्चइय वेराणुबंधे तेणं देवा विकुव्वमाणा परियारेमाणावा, आयरक्खे देवे वित्तासेंति, अहा लहुसगाइं रयणाइं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमंति ॥७॥ अत्थिणं भंते ! तेसिं देवाणं अहा लहुसगाइं रयणाइं ? हंता अत्थि। से कहमिदाणि पकरेइ, तओसे पच्छाकायं पव्वहंति ॥ ८ ॥ पभूणं भंते ! तेसिं अ-

भावार्थ — गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! भवप्रत्ययिक वैरसे वे देव विकुर्वणा करते हुए या अन्य देवी की साथ परिचारणा करने की वांच्छा करते हुए आत्म रक्षक देवको त्रास उत्पन्न करते हैं. अथवा बहुत छोटे रत्नों ग्रहण करके एकान्त में चलेजाते है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! उन वैमानिक देवों को क्या यथा-योग्य छोटे रत्न है ? हां गौतम ! उन को छोटे रत्नों रहे हुवे हैं. फीर उन रत्नों की चौरी करनेवाले को क्या करते हैं ? अहो गौतम ! उन लेनेवाले को रत्नका मालिक देवता महार करता है जिस से उन को महावेदना होती वह 'जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छमास तक रहती है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार

शब्दार्थ अ० असुर कुमार देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे ॥ ६ ॥ अ० है भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय हं० हां अ० है के० कितनी भं० भगवन् अ० असुर कुमार देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अच्युत देवलोक सो० सौधर्म देवलोक ग० गये ग० जावेंगे कि० किस प० प्रयोजन से भं० भगवन् अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक को ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम ते० उन दे० देवों का भ० भवप्रत्यय का वे० वैरसे ते० वे दे० देव त्रि०

सूत्र कुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गयाय गमिस्संतिय ॥ ६ ॥ अत्थिणं भंते ! असुर कुमाराणं देवाणं उड्ढगइविसए ? हंता अत्थि । केवइयं चणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं उड्ढं गतिविसए ? गोयमा ! जाव अच्चुएकप्पे सोहम्मं पुणकप्पं गयाय गमिस्संतिय, । किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्संतिय ?

भावार्थ महोत्सव और निर्वाण का महोत्सव इन चार कारन से नंदीश्वर द्वीप को असुर कुमार देवता गतकाल में गये और भविष्य में जावेंगे ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देवों को उपर जाने की शक्ति का विषय है ? हां गौतम! असुर कुमार देवों को उपर जाने की शक्ति है. अहो भगवन् ! वे ऊर्ध्व लोकमें कहां तक जा सकते हैं ? अहो गौतम ! उन मे अच्युत देवलोक तक जाने की शक्ति है किन्तु सौधर्म देवलोक तक गये हैं और जावेंगे. अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस कारन से सौधर्म देवलोक में

शब्दार्थ कुमारदेव ता० उन अ० देवियों की स० साथ दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगवते वि० विचरने को ए० ऐसे गो० गौतम अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे ॥ ९ ॥ के० कितने काल में अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊंड जा० यावत् सो० सौधर्म दे० देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम अ० अनंत ओ० उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी म० समय व्यतीत हुवे अ० है ए० ऐसे लो०

सूत्र पभू ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए ॥ एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्संति ॥९॥ केवइयकालस्सणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्संतिय ? गोयमा ! अणंताहिं ऊसप्पिणीहिं अणंताहिं अवसप्पिणीहिं समइक्कंताहिं । अत्थिणं एस भवे लोयत्थेरयभूए समुप्पज्जइ, जण्णं असुरकुमारा देवा

भावार्थ समर्थ हैं परंतु यदि वे अप्सराओं उन को आदर करे नहीं या उन को स्वामीपने जाने नहीं तो उन की साथ भोग भोगने को वे समर्थ नहीं हैं. अहो गौतम ! इस कारन से असुर कुमार देव सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! कितने काल में असुर कुमार देव ऊंचे जावे यावत् सौधर्म देवलोक में गये या जावेंगे ? अहो गौतम ! अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हुए पीछे ऐसा होता

शब्दार्थ ग० गये हुवे ता० उन अ० अप्सरा की स० साथ दि० दिव्य भो० भोगोपभोग भुं० भोगवते वि० विचरने को णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ त० तहां से प० नीकलकर इ० यहां आ० आकर ज० जो अ० देवियों आ० आदर करती हैं प० परिचारणा इच्छे प० समर्थ ते० वे अ० असुर कुमार दे० देव ता० उन अ० देवियों की स० साथ दि० दिव्य भो० भोग भुं० भोगते वि० विचरने को अ० अथवा ता० वे अ० देवियों नो० नहीं आ० आदर करे नो० नहीं प० परिचारणा इच्छे णो० नहीं प० समर्थ ते० वे अ० असुर

सूत्र सुरकुमारा देवा तत्थगया चेव समाणा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे । तेणं तओ पडिनियत्तंति पडिनियत्त इत्ता इहमागच्छइ इहमागच्छइत्ता, जइणं ताओ अच्छराओ आढायंति परि-याणंति पभूण ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए ॥ अहणं ताओ अच्छराओ नो आढायंति नो परियाणंति णोणं

भावार्थ देव वैमानिक में रही हुई अप्सराओं की साथ भोग भोगवने को क्या समर्थ हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अर्थात् वे वैमानिक देवलोक में वहां की अप्सराओं की साथ भोग भोगवने को समर्थ नहीं हैं. वे असुर कुमार देव वहां से अप्सराओं को लेकर पीछे अपने विमान में आते हैं, विमान में आये पीछे यदि वे अप्सराओं उन को आलिंगन करे या स्वामीपने जाने तो वे उन की साथ भोग भोगने को

शब्दार्थ कुमारदेव ता० उन अ० देवियों की स० साथ दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगवते वि० विचरने को ए० ऐसे गो० गौतम अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे ॥ ९ ॥ के० कितने काल में अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म दे० देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम अ० अनंत ओ० उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी स० समय व्यतीत हुवे अ० है ए० ऐसे लो०

सूत्र पभू ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए ॥ एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्संति ॥९॥ केवइयकालस्सणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्संतिय ? गोयमा ! अणंताहिं ऊसप्पिणीहिं अणंताहिं अवसप्पिणीहिं समइक्कंताहिं । अत्थिणं एस भवे लोयत्थेरयभूए समुप्पज्जइ, जण्णं असुरकुमारा देवा

भावार्थ समर्थ हैं परंतु यदि वे अप्सराओं उन को आदर करे नहीं या उन को स्वामीपने जाने नहीं तो उन की साथ भोग भोगने को वे समर्थ नहीं हैं. अहो गौतम ! इस कारन से असुर कुमार देव सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! कितने काल में असुर कुमार देव ऊंचे जावे यावत् सौधर्म देवलोक में गये या जावेंगे ? अहो गौतम ! अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हुए पीछे ऐसा होता

आश्रय भूत स० उत्पन्न होवे ज० जिससे अ० असुर कुमारदेव उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो०सौधर्म देवलोक में॥ १० ॥ कि० किस नि० निश्राय से भं० भगवन् अ० असुरकुमार देव उ०ऊर्ध्व जा० यावत् सो०सौधर्म देवलोक गो० गौतम से० वह ज० जैसे इ० यहां स०अनार्य व०बर्बर के अनार्य के टं० टंकण देशके अनार्य भू०भूचुकदेश के प० मक्षदेश के पु०भिल्लादि ए०एक म०बडा व० वन ग० खड्डा दु० दूर्ग द० गुफा वि० विषम प० पर्वतकी णी० निश्राय सु० अतिशय अ० अश्वबल ह० हस्तिबल जो० योधबल ध० धनुष्यबल

सूत्र

उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मेकप्पे ॥ १० ॥ किं निस्साएणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! से जहानामए इह सव्वराइवा, वव्वराइवा, टंकणाइवा, भूचयाइवा, पण्हायाइवा, पुलिंदाइवा, एगं महं वणंवा, गड्ढंवा, दुग्गंवा, दरिंवा, विसमवा, पव्वयंवा, णीसाए सुमहल्लमवि, अस्सबलंवा, हत्थिबलंवा, जोहबलंवा धणुबलंवा, आगिलंति; एवामेव असुरकुमारा देवा णण्णत्थ अरहंतेवा,

भावार्थ

है. और जब ऐसा होता है तब यहां मनुष्य लोक में आश्चर्यरूप (अच्छेरा) गिना जाता है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस की नेश्राय (आश्रय) लेकर उपर जाते हैं ? अहो गौतम ! जैसे जंगल के निवासी भील लोक, बर्बर देश के अनार्य लोक, टंकण देश के अनार्य लोक, भूच देश के अनार्य लोक, मक्ष देश के अनार्य लोक, और भील्ल वगैरह लोकों एक बडा वन, खड्डा, दुर्ग, गुफा, विषम-

शब्दार्थ — को आ० खेदित करे ए० ऐसे अ० असुरकुमार देव अ० अरिहंत अ० छद्मस्थ अरिहंत अ० अनगार भा० भवितात्मा की नि० नेश्राय उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सौधर्म देवलोक ॥११॥ स० सब अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ म० महर्द्धिक अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ॥१२॥ ए० यह भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ०

सूत्र — अरहंतचेइयाणिवा, अणगारे, भावियप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ ११ ॥ सव्वेवियणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ! गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । महिड्ढियाणं, असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ १२ ॥ एसवियणं भंते ! चमरं असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्प-

भावार्थ — स्थान व पर्वत के आश्रय से बहुत बडा अश्वबल, हस्ती बल, योध बल, और धनुष्य बल को पराजित कर सकते हैं; ऐसे ही असुर कुमार देव अरिहंत भगवन्त, अरिहंत चैत्य सो द्रव्य अरिहंत छद्मस्थ, अनगार और भवितात्मा का आश्रय लेकर ऊंचे सौधर्म देवलोक तक जाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब असुर कुमार देव ऊंचे जाने की शक्तिवाले यावत् सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. महर्द्धिक असुरकुमार देव मात्र सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ १२ ॥

आश्रय भूत स० उत्पन्न होवे ज० जिससे अ० असुर कुमारदेव उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो०सौधर्म देवलोक में॥ १० ॥ कि० किस. नि० निश्राय से भं० भगवन् अ० असुरकुमार देव उ०ऊर्ध्व जा०यावत् सो०सौधर्म देवलोक गो० गौतम से० वह ज० जैसे इ० यहां स०अनार्य व०बर्बर के अनार्य के टं० टंकण देशके अनार्य भू०भूचुकदेश के प० प्रश्नदेश के पु०भिल्लादि ए०एक म०बडा व० वन ग० खड्डा दु० दुर्ग द० गुफा वि० विषम प० पर्वतकी णी० निश्राय सु० अतिशय अ० अश्वबल ह० हस्तिबल जो० योधबल ध० धनुष्यबल

सूत्र

उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मेकप्पे ॥ १० ॥ किं निस्साएणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! से जहानामए इह सव्वराइवा, बव्व-राइवा, टंकणाइवा, भूचुयाइवा, पण्हायाइवा, पुलिंदाइवा, एगं महं वणंवा, गड्डंवा, दुग्गंवा, दरिंवा, विसमंवा, पव्वयंवा, णीसाए सुमहल्लमवि, अस्सबलंवा, हत्थिबलंवा, जोहबलंवा धणुबलंवा, आगिलंति; एवामेव असुरकुमारा देवा णण्णत्थ अरहंतेवा,

भावार्थ

और जब ऐसा होता है तब यहां मनुष्य लोक में आश्चर्यरूप (अच्छेरा) गिना जाता है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस की नेश्राय (आश्रय) लेकर उपर जाते हैं ? अहो गौतम ! जैसे जंगल के निवासी भील लोक, बबर देश के अनार्य लोक, टंकण देश के अनार्य लोक, भूच देश के अ-नार्य लोक, प्रश्न देश के अनार्य लोक, और भील्ल वगैरह लोकों एक बडा वन, खड्डा, दुर्ग, गुफा, विषम-

शब्दार्थ को आ० वेदित करे ए० ऐसे अ० असुरकुमार देव अ० अरिहंत अ० छद्मस्थ अरिहंत अ० अनगार भा० भवितात्मा की नि० नेश्राय उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सौधर्म देवलोक ॥११॥ स० सब अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ म० महर्द्धिक अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ॥१२॥ ए० यह भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ०

सूत्र अरहंतचेइयाणिवा, अणगारे, भावियप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ ११ ॥ सव्वेवियणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । महिड्ढियाणं, असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ १२ ॥ एसवियणं भंते ! चमरं असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्प-

भावार्थ स्थान व पर्वत के आश्रय से बहुत बडा अश्वबल, हस्ती बल, योध बल, और धनुष्य बल को पराजित कर सकते हैं; ऐसे ही असुर कुमार देव अरिहंत भगवन्त, अरिहंत चैत्य सो द्रव्य अरिहंत छद्मस्थ, अनगार और भवितात्मा का आश्रय लेकर ऊंचे सौधर्म देवलोक तक जाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब असुर कुमार देव ऊंचे जाने की शक्तिवाले यावत् सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. महर्द्धिक असुरकुमार देव मात्र सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

असुर राजा उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ॥ १२ ॥ अ० अहो भं० भगवन् च० चमर राजा की म० महा ऋद्धि मं० महाद्युति जा०यावत् क०कहां प० प्रवेश हुइ कू०कूडागार शाला दि० दृष्टान्त भा० कहना ॥ १४ ॥ च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा की सा० वह दीव्य दे० देवऋद्धि कि० किमसे ल० लब्ध ए० ऐसे गो० गौतम ते० उस काल से० उस समय में इ० इस जं० जंबूद्वीप में भ० भरत क्षेत्र में विं० विंध्याचल पर्वत की प० नजदीक वे० वेभेल स० सन्निवेश हो० था

सूत्र

इयं पुव्वे जाव सोहम्मे कप्पे ? हंता गोयमा ! एसन्नियणं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइयं पुव्वे जाव सोहम्मे कप्पे ॥ १३ ॥ अहोणं भंते चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए महज्जुत्तीए जाव काहिं पविट्ठा ? कूडागारसाला दिट्ठंतो भाणियव्वो॥ १४॥ चमरेणं भंते ! असुरिंदेणं असुररण्णो सा दिव्वा देवड्ढी तंचेव किण्णालद्धा ३, एवं खलु

भावार्थ

अहो भगवन् ! यह चमर नामक असुरेंद्र पहिले क्या सौधर्म देवलोक में गया ? हां गौतम ! यह चमर नामक असुरेंद्र पहिले सौधर्म देवलोक में गया ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! इस चमर नामक असुरेंद्र की महाऋद्धि महाद्युति वगैरह कहां चलीगई ? अहो गौतम ! कूटागार शाला जैसे पीछी शरीर में चलीगई ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेंद्र असुरराजाको ऐसी दीव्य देवर्द्धि कैसे प्राप्त हुई यावत् सन्मुख हुई ? अहो गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में विन्ध्याचल पर्वत

शब्दार्थ व० वर्णन युक्त त० तहां वे० वेभेल सन्निवेश में पू० पूरण गा० गाथापति प० रहता था अ० ऋद्धिवंत दि० दिप्त ज० जैसे ता० तामली की व० वक्त व्यता त० तैसे ने० जानना ण० विशेष च० चारपुड वाला

सूत्र गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं, इहेव जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे विंज्झगिरिपायमूले वेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था वण्णओ तत्थणं बेभेले सण्णिवेसे पूरणेनामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे दित्ते जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेयव्वा, णवरं चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं करेत्ता जाव विपुलं असणं पाणं, खाइमं, साइमं, जाव सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं गहाय मुंडे भवित्ता दाणामाए पव्वजाए पव्वइए, पव्वइएवियणं समाणे तंचेव जाव आयावण भूमीए पच्चोरुहित्ता, सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडि-

भावार्थ की मूल में वेभेल नामक सन्निवेश था. उस सन्निवेश में पूरण नामक गाथापति रहता था. वह गाथापति ऋद्धिवंत, दीप्त यावत् सब अधिकार तामली तापस जैसे कहना. अर्थात् पूरण गाथापति को कुटुम्ब जागरणा करते विचार हुवा कि मुझे पूर्व संचित पुण्य के उदय से कुटुम्ब आदि सब सुख की सामग्री मीली है इस से जहां लग मेरे पुण्य प्रबल हैं और शरीर में शक्ति है वहां लग प्रभात होते चार पुडवाला काष्टमय पात्र बनाकर अशनादि चारों आहार नीपजाकर, ज्ञाति स्वजनादि की साथ भोजन कर, सब को यथोचित् सत्कारादि कर, ज्येष्ठ पुत्र को गृह के कार्य पर रखकर सब को पूछकर मुंडित बनकर दान

शब्दार्थ प० प्रथम पु० पुड में प० डाले क० कल्पता है मे० मुझे प० मार्थित प० पथिक को द० देनेको जं० जो दो० दूसरे पु० पुड में प० डाले क० कल्पता है मे० मुझे का० काक सु० श्वान को द० देना जं० जो

सूत्र ग्गहयं गहाय वेभेल सण्णिवेसे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडेत्ता जंमे पढमे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं पत्थिय पहियाणं दलइत्तए, जंमे दोच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे कागसुणयाणं दलायित्तए, जंमे तच्चे पुडए पडइ कप्पइ मे तं मच्छ कच्छभाणं दलइत्तए, जं मे चउत्थे पुडए पडइ कप्पइमे तं अप्पणा आहारं आहरेत्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ संपेहइत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तं चेव निरवसेसं चउत्थे पुडए पडइ तं अप्पणा आहारं आहारेइ ॥ १५ ॥ तएणं

भावार्थ नामक प्रवर्ज्या ग्रहण करना मुझे श्रेय है. दान प्रवर्ज्या अंगीकार किये पीछे आतापना भूमि से पीछे आकर स्वयं ही चार पुडवाला काष्टमय पात्र लेकर वेभेल सन्निवेश में ऊंच, नीच व मध्यम कुल के गृहों की भिक्षाचरी ग्रहण करूंगा. और चार पुडवाले पात्र में से प्रथम पुड में जो भिक्षा डालेंगे उसे मैं पथिक जनों को देऊंगा, दूसरें पुड में भीक्षा डालेंगे उसे मैं काग प्रमुख पक्षी व श्वान प्रमुख को डालूंगा, तीसरे पुडमें जो भीक्षा डालेंगे उसे मत्स्य कच्छ वगैरह को डालूंगा और चौथे पुड में जो भीक्षा डालेंगे उस का मैं आहार करूंगा. ऐसा विचार करके प्रभात होते सब क्रिया की यावत्

शब्दार्थ काल ते॰ उस समय में अ॰ मैं गो॰ गौतम छ॰ छद्मस्थ अवस्था में ए॰ अग्यारह वर्षकी प॰ दीक्षा से छ॰ छठ भक्त अ॰ अंतर रहित त॰ तपकर्म से सं॰ संयम से त॰ तप से अ॰ आत्मा को भा॰ भावता पु॰ अनुक्रम से च॰ चलता गा॰ ग्रामानुग्राम दू॰जाता जे॰ जहां सुं॰सुंसुमार पुर न॰नगर जे॰ जहां अ॰ शोक वनखंड उ॰ उद्यान जे॰ जहां अ॰ अशोक वृक्ष जे॰ जहां पु॰ पृथ्वी शिलापट उ॰ आकर ॰ अशोक वृक्ष की हे॰ नीचे पु॰ पृथ्वी शिलापट पे अ॰ अठम भक्त प॰ ग्रहणकर दो॰ दोपाँव सा॰

तेणं कालेणं, तेणं समएणं अहं गोयमा ! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, जेणेव सुंसुमार पुरे नगरे जेणेव असोयवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छामि उवाग-

भावार्थ वर्ष की साधु की पर्याय पालता हुवा, निरंतर छठ्ठ के पारणे का तप कर्म व संयम से आत्मा को चिन्तवता हुवा, पूर्वानुपूर्व चलता हुवा और ग्रामानुग्राम विचरता हुवा मैं सुंसुमारपुर नगर के अशोक वनखंड नामक उद्यान में अशोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शिलापट की पास आया. वहां आकर अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शीला पटपर अठम भक्त (तेला) किया. दोनों पांव संहर कर (जिन मुद्रासे) लम्बी बाहु करके एक ही पुद्गल पर दृष्टिस्थापकर, अनिमेष-दृष्टि रखकर, थोडासा मस्तक नमाकर यथास्थित गात्रों को

शब्दार्थ

इकठेकर उ० लंबा पा० हस्त ए० एक पुद्गल में नि० स्थापन की दि० दृष्टि अ० अनिमिषनेत्र ई० थोडी प० नमीहुइ का० काया से अ० यथा प० स्थापित ग० गात्र स० सर्व इ० इन्द्रिय गु० गुप्त ए० एकरात्रि की म० महाप्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरता हूं ॥ १७ ॥ तं० उस काल तं० उस समय में च० चमर चंचा रा० राज्यधानी अ० इन्द्र रहित अ० पुरोहित रहित हो० थी ॥ १८ ॥ त० तत्र मे० वह पू० पूरण वा० बालतपस्वी व० बहुत प० प्रतिपूर्ण दु० बारह वा० वर्ष प० पर्याय पा० पालकर मा० मासकी सं०

सूत्र

च्छइत्ता असोयवर पायवस्स हेट्ठे पुढविसिला पट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हामि दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी, एगपोग्गल निविट्ठदिट्ठी, अणमिसनयणे, ईसिं पब्भार-गएणं काएणं अहापणिहिएहिं गत्तेहिं, सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं, एगराइयं महापडिमं उव-संपज्जित्ता विहरामि ॥ १७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरचंचा रायहाणी अणिं-दा अपुरोहिया यावि होत्था, ॥ १८ ॥ तएणं से पूरणे बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं

भावार्थ

स्थापकर सब इन्द्रियों को गोपकर एक रात्रि की महापडिमा अंगीकार करता हुवा विचरता था ॥ १७ ॥ उस काल उस समय में चमर चंचा राज्यधानी इन्द्र रहित पुरोहित रहित थी ॥ १८ ॥ उस समय में वह पूरण नामक बालतपस्वी बारह वर्ष पर्यंत दान प्रवर्ज्या पालकर एक मास की संलेखना से आत्मा को

शब्दार्थ काल ते० उस समय में अ० मैं गो० गौतम छ० छद्मस्थ अवस्था में ए० अग्यारह वर्षकी प० दीक्षा से छ० छठ भक्त अ० अंतर रहित त० तपकर्म से सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावता पु० अनुक्रम से च० चलता गा० ग्रामानुग्राम दू०जाता जे० जहां सुं०सुंसुमार पुर न०नगर जे० जहां अ० अशोक वनखंड उ० उद्यान जे० जहां अ० अशोक वृक्ष जे० जहां पु० पृथ्वी शिलापट उ० आकर अ० अशोक वृक्ष की हे० नीचे पु० पृथ्वी शिलापट पे अ० अठम भक्त प० ग्रहणकर दो० दोपाँव सा०

मूल तेणं कालेणं, तेणं समएणं अहं गोयमा ! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, जेणेव सुंसुमार पुरे नगरे जेणेव असोयवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छामि उवाग-

भावार्थ र्ष की साधु की पर्याय पालता हुवा, निरंतर छठ के पारणे का तप.कर्म व संयम से आत्मा को चिन्तवता हुवा, पूर्वानुपूर्व चलता हुवा और ग्रामानुग्राम विचरता हुवा मैं सुंसुमारपुर नगर के अशोक वनखंड नामक उद्यान में अशोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शिलापट की पास आया. वहां आकर अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शीला पटपर अठम भक्त (तेला) किया. दोनों पांव मेहर कर (जिन मुद्रासे) लम्बी बाहु करके एक ही पुद्गल पर दृष्टिस्थापकर, अनिमेष-दृष्टि रखकर, थोडासा मस्तक नमाकर यथास्थित गात्रों को

शब्दार्थ यावत् सो० सौधर्म देवलोक प० देखे ॥ २१ ॥ त० तहां स० शक्र दे० देवेन्द्र म० मघव पा० पाक शासन स० शतक्रतु स० सहस्रनेत्र वाला व० वज्र पा० हस्त में पु० पुरंदर जा० यावत् द० दशादिशा में उ० उद्योत करते प० प्रकाश करते सो० सौधर्म देवलोक सो० सौधर्म व० वडिंशक विमान सु० सुधर्मा सभा में स० शक्र के सी० सिंहासनपे जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगते पा० देखे पा० देखकर ॥२२॥ ए० इसरूप अ० आत्मिक चिं० चिन्तवन प० स्मरण रूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुवा

सूत्र

गए समाणे उड्ढं वीससाए ओहिणा आभोइए जाव सोहम्मे कप्पे पासइय ॥ २१ ॥ तत्थ सक्कं देविंदं देवरायं मघवं, पागसासणं, सयक्कउं, सहस्सक्खं, वज्जपाणिं, पुरंदरं, जाव दसदिसाओ उज्जोवेमाणं, पभासेमाणं सोहम्मेकप्पे सोहम्म वडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ,

भावार्थ देवलोक देखने लगा ॥ २१ ॥ वहां पर मेघमाली को वश में रखनेवाला, पाक नामक बलिष्ट रिपु को पराजित करनेवाला, कार्तिक शेठ के भव में एक सो प्रतिमा का अभिग्रह करनेवाला, सहस्र नयनवाला, हस्त में वज्र धारण करनेवाला, और असुर कुमार देव का विदारन करनेवाला ऐसा शक्रेन्द्र को उद्योत कराता व प्रकाशता हुवा सौधर्म देवलोक में सौधर्म वडिंसग नामक विमान की सुधर्मा सभा में सिंहासन पर दीव्य भोग भोगवता हुवा देखा ॥२२॥ फीर ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनोगत संकल्प हुवा कि अप्रार्थित की

संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठभक्त अ० अनशन छे० छेदकर का० काल के अवसर में का० काल करके च० चमर चंचा रा० राज्यधानी में उ० उपपात सभा में जा० यावत् इं० इन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा ॥ १९ ॥ त० तब से० वह च० चमर अ० असुरेंद्र अ० तुरत का उत्पन्न पं० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त भाव को ग० जावे तं० वह ज० जैसे आ० आहार पर्याप्ति जा० यावत् भा० भाषा मनपर्याप्ति ॥ २० ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र पं० पांच प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त भाव को ग० प्राप्त उ० ऊर्ध्व वी० स्वभाव से ओ० अवधि ज्ञान से आ० देखे जा०

सूत्र

अणसणाए छेदेत्ता कालमासे कालंकिच्चा चमरचंचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इंदत्ताए उववन्ने ॥ १९ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववन्ने पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ तंजहा आहार पज्जत्तीए जाव भासामण पज्जत्तीए॥२०॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं

भावार्थ

झूसकर, साठ भक्त अनशन कर व काल के अवसर में काल करके चमर चंचा राज्यधानी में उपपात सभा में देव दूष्य वस्त्र की नीचे इन्द्रपने उत्पन्न हुवा ॥ १९ ॥ वहां चमर नामक असुरेन्द्र आहारादि पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्त बना ॥ २० ॥ फीर पांच पर्याप्ति से पर्याप्त बना हुवा अवधि ज्ञान से देखते सौधर्म

पदार्थ — विचरता है ॥ २३ ॥ तं० तब मे० वे सा० सामानिक दे० देव च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसे बु० बोलाते हुवे ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् ह० आनंद पामे क० करके तले प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजलि क० करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसे व० बोले ए० यह दे० देवानुप्रिय स० शक्र दे० देवेन्द्र जा० यावत् वि० विचरता है ॥ २४ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र अ० असुर राजा ते० उन सा० सामानिक दे० देवों की अं० पास ए०

सूत्र — एवं संपेहेइ २ त्ता सामाणिय परिसोववण्णए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी केसणं एस देवाणुप्पिया ! अप्पत्थिय पत्थए जाव भुंजमाणे विहरइ ॥२३॥ तएणंसे सामाणिय परिसोववण्णगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो एवं वुत्तासमाणा हट्ठतुट्ठ जाव हय-हियया करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिंकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया जाव विहरइ ॥२४॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए

भावार्थ — यह कौन है ? ॥ २३ ॥ जब चमरेन्द्रने सामानिक परिषदा के देवों को ऐसा कहा तब वे बहुत हृष्ट तुष्ट हुवे और हस्त द्वय जोडकर मस्तकों से आवर्तना देकर जय विजय शब्द से वधाये और कहा. अहो देवानुप्रिय ! यह शक्रेन्द्र ऐसा भोग भोगवता हुवा विचरता है ॥ २४ ॥ तब चमरेन्द्र उन सामानिक की

शब्दार्थ के० कोन ए० यह अ० अप्रार्थित की प० प्रार्थना करता है दु० दुष्ट अंत पं० अमनोज्ञ ल० लक्षण वाला, हि० लज्जा सि० लक्ष्मी प० रहित ही० हीन पु० पुन्य. चतुर्दशी को जन्मा जे० जिससे म० मेरा इ० यह ए० ऐसे दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् दे० देवानुभाव ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुवा. उ० उपर अ० थोडा उ० उछंग. दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगते वि० विचरता है ए० ऐसा सं० विचार कर सा० सामानिक प० परिषदा में उ० उत्पन्न दे० देवोंको स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोला के० कोन ए० यह दे० देवानुप्रिय अ० अप्रार्थित की प० प्रार्थना करता है जा० यावत् भुं० भोगवता वि०

मूत्र ॥ २२ ॥ पासइत्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए, पत्थिए, मणोगए संकप्पे समुप्प-ज्जित्था. केसणं एस अप्पत्थिय पत्थए दुरंतपंतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए, हीणपुण्णचाउद्दसे जेणं मम इमे एयारूवाए दिव्वाए देवड्ढीए जाव दिव्वे देवाणुभावे लद्धे, पत्ते, अभिसमण्णागए उप्पि अप्पुस्सुए दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ

भावार्थ प्रार्थना करनेवाला [मरण की वांच्छा करनेवाला] अमनोज्ञ लक्षणवाला, लज्जा, लक्ष्मी रहित, हीन पुण्य चतुर्दशी में उत्पन्न होनेवाला ऐसा यह कोन है, मुझ जो ऐसी दीव्य देवर्द्धि यावत् दीव्य महानुभाग प्राप्त हुवा है उनकी उपर यह अल्प उत्सुक बनकर दीव्य भोग भोगवता हुवा विचरता है. ऐसा विचार करके सामानिक परिषदा के देवोंको बोलाये और पूछाकि मरण की वांच्छा करनेवाला यावत् भोग भोगवता हुवा जो विचरता है

पदार्थ

विचरता है ॥ २३ ॥ त० तब मे० वे सा० सामानिक दे० देव च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसे वु० बोलाते हुवे ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् ह० आनंद पामे क० करके तले प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजलि क० करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसे व० बोले ए० यह दे० देवानुप्रिय स० शक्र दे० देवेन्द्र जा० यावत् वि० विचरता है ॥ २४ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र अ० असुर राजा ते० उन सा० सामानिक दे० देवों की अं० पास ए०

सूत्र

एवं संपेहेइ २ त्ता सामाणिय परिसोववण्णए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी केसणं एस देवाणुप्पिया ! अप्पत्थिय पत्थए जाव भुंजमाणे विहरइ ॥ २३ ॥ तएणंसे सामाणिय परिसोववण्णगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो एवं वुत्तासमाणा हट्ठतुट्ठ जाव हय-हियया करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिंकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया जाव विहरइ ॥ २४ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए

भावार्थ

यह कौन है ? ॥ २३ ॥ जब चमरेन्द्रने सामानिक परिषदा के देवों को ऐसा कहा तब वे बहुत हृष्ट तुष्ट हुवे और हस्त द्वय जोडकर मस्तकों से आवर्तना देकर जय विजय शब्द से वधाये और कहा. अहो देवानुप्रिय ! यह शक्रेन्द्र ऐसा भोग भोगवता हुवा विचरता है ॥ २४ ॥ तब चमरेन्द्र उन सामानिक की

शब्दार्थ यह अर्थ सो० सुनकर नि०अवधार कर आ० आसुरत्व रु० रुष्ट कु० कुपित चं० विशेष कुपित मि० देदीप्यमान ते० उन सा० सामानिक दे० देवको ए० ऐसे व० बोले अ० अन्य से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र अ० अन्य से० वह च० चमर अ० असुरेंद्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र अ० अल्पऋद्धि वाला से० वह च० चमर अ० असुरेन्द्र तं० उस इ० इच्छता हूं दे० देवानुप्रिय स० शक्र दे० देवेन्द्र को स० स्वयं अ० भ्रष्ट करने को ति० ऐसा करके उ० अत्यंत कुपित जा० हुवा हो० था

सूत्र एयमट्ठं सोचा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणिय परिसोववण्णए देवे एवं वयासी अण्णे खलु भो! से सक्के देविंदे देवराया अन्नेखलु भो! से चमरे असुरिंदे असुरराया, महिड्ढीए खलु भो ! से सक्के देविंदे देवराया, अप्पिढ्ढिए खलुभो ! से चमरे असुरिंदे असुरराया, तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाहित्तए त्तिकट्टु, उसिणे उसिणब्भूए, जाएयावि होत्था ॥ २५॥

भावार्थ पास से ऐसा वचन सुनकर हृदय में धारकर आसुरत्व को प्राप्त हुवा, (क्रोधित बना) रुष्ट हुवा, कुपित हुवा, रौद्र बना, दांत पीसने लगा और सामानिक देव से कहने लगा, अहो शक्र नामक देवेन्द्र देवता का राजा दूसरा है और चमर नामक असुरेन्द्र भी दूसरा है. वह शक्रेन्द्र निश्चय ही महर्द्धिक है और चमरेंद्र अल्प ऋद्धिवाला है. उस को शोभा से भ्रष्ट करने को मैं स्वयं वहां जाऊं ऐसा करके कोप संताप से

शब्दार्थ ॥ २५ ॥ त० तब से० वह च० चमर अ० असुरेंद्र ओ० अवधिज्ञान को प० प्रयुंजकर म० मुझे आ० देखकर ए० इसरूप अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जं० जंबूद्वीप में भ० भरत क्षेत्र में सुं० सुंसुमार न० नगर में अ० अशोक वनखंड उ० उद्यान में अ० अशोक वृक्ष की अ० नीचे पु० पृथ्वी शिलापट्टे अ० अठम भक्त प० ग्रहणकर ए० एक रात्रिकी म० महाप्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरते हैं ॥ २६ ॥ तं० वह से० श्रेय मे० मुझे स० श्रमण भ०

सूत्र

तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया ओहिं पउंजइ, पउंजइत्ता ममं ओहिणा आभोएइ आभोएइत्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, एवंखलु समणे भगवं महावीरे जंबूदीवे दीवे भारहेवासे सुंसुमारपुरे नगरे असोगवणसंडे उज्जाणे, असोगवरपायवस्स अहे पुढवि सिला पट्टयंसि, अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता, एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ २६ ॥ तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं

भावार्थ

ऊण हुवा ॥ २५ ॥ उस समय में चमरेन्द्रने अवधि ज्ञान प्रयुंजा और मुझे देखा. मुझे देखकर ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन उत्पन्न हुवा कि श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सुंसुमारपुर नामक नगर के अशोक वन खंड उद्यान में अशोक वृक्ष की नीचे पृथ्वीशीला पटपर अठम भक्त का प्रत्याख्यान कर एक रात्रि की महा प्रतिमा अंगीकार करते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ इस से

शब्दार्थ भगवन्त म० महावीर की नी० नेश्राय से स० शक्र दे० देवेन्द्र को स० स्वयं अ० भ्रष्ट करने को त्ति० ऐसा करके सं० विचारकर स० शय्या से अ० उठकर दे० देवदूष्य प० पहिनकर जे० जहां स० सुधर्मा सभा जे० जहां चो० चउफाले प० आयुधशाला ते० तहां उ० आकर फ० परिग र० रत्न पे० ग्रहणकर ए० एक अ० अद्वितीय फ० परिघ र० रत्नमय म० बड़ा अ० अमर्श व० धरता च० चमर चंचा रा० राज्यधानी की म० मध्य से नि० नीकलकर जे० जहां ति० तिगिच्छ कूट उं० उत्पात प० पर्वत ते० तहां

सूत्र नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ, संपेहेइत्ता, सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता, देवदूसं परिहेइ, परिहेइत्ता जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता फलिहरयणं परामुसइ, परामुसइत्ता एगे अबीए फलिहरयणमयाए महया अमरिसं वहमाणे चमरचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छइत्ता, जेणेव तिगिच्छकूडे

भावार्थ श्री श्रमण भगवंत महावीर की नेश्राय लेकर शक्र देवेन्द्र की आसातना करना मुझे श्रेय है ऐसा विचार कर अपने आसन से उठकर देव दूष्य वस्त्र पहिना और चउफाल नामक शस्त्र का भंडार था वहां आया. वहां आकर परिघ रत्न नामक आयुध को हस्त में धारन किया. परिघ रत्न को धारन करके अन्य किसी को साथ नहीं लेते हुवे अमर्षभाव धारण करके चमर चंचा राजधानी की बीच में होकर तिगिच्छकूट

पदार्थ

उ० आकर वे० वैक्रेय समुद्घात स० नीकालकर जा० यावत् उ० उत्तर वैक्रेय रूप वि० विकुर्वणा कर ता० उस उ० उत्कृष्ट जे० जहां पु० पृथ्वी शिलापट जे० जहां म० मेरी पास ते० तहां उ० आकर म० मुझे ति० तीनवक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० कर जा० यावत् न० नमस्कार कर व० बोले इ० इच्छताहूं भं० भगवन् तु० तुमारी नी० नेश्राय से स० शक्र दे० देवेन्द्र को स० स्वयं भ० भ्रष्ट करने को ति० ऐसा करके ॥ २७ ॥ उ० ईशान कोन का अ० अतिक्रम वे० वैक्रेय समुद्घात स० नीकालकर

सूत्र

उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइत्ता जाव उत्तर वेउव्वियरूवं विकुव्वइ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव पुढवि सिलावट्टए जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ जाव नमंसित्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुब्भं नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्तिकट्टु ॥ २७ ॥ उत्तर पुरच्छिमंदिसी

भावार्थ

नामक उत्पात पर्वत पर आये, वहां आकर वैक्रेय समुद्घात यावत् उत्तर वैक्रेय रूप करके मेरी समीप आया. और मुझे तीन आदान प्रदक्षिणा यावत् नमस्कार करके ऐसा बोला कि अहो पूज्य ! तुमारी नेश्राय से मैं स्वयं शक्रेन्द्र की आसातना करने को इच्छता हूं ॥ २७ ॥ ऐसा कहकर ईशान कोन में गया वहां जाकर

शब्दार्थ जा० यावत् दो० दूसरी वक्त वे० वैक्रेय समुद्घात स० नीकालकर ए० एक म० बडा घो० घोर घो० घोराकार भी० विकराल भा० भयंकर भ० भयानीत ग० गंभीर उ० उद्वेग उपजावे का० कृष्ण मध्य रात्रि मा० उडद सं० सरिखा जो० योजन स० लाख प० बडा शरीर को वि० विकुर्वणा कर अ० पछाडे व० कूदकर ग० गर्जना कर ह० हयस्वर क० करके ह० हस्तिका शब्द क० करके र० रथका घन घन क० करके पा० पांव पछाड कर भू० भूमि को च० चपेटा द० देकर सी० सिंहनाद न० करके उ० उछा

सूत्र भागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता जाव दोचंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता, एगं महं घोरं, घोरागारं, भीमं, भीमागारं, भासुरं, भयाणीयं, गंभीरं उत्तासणयं कालड्डरत्तंमासरासि संकासं जोयण सयसाहस्सीयं महाबोंदिं विउव्वइ, विउव्वइत्ता अप्फोडेइ, अप्फोडइत्ता वग्गइ वग्गइत्ता गज्जइ, गज्जइत्ता हयहेसियं करेइ, करेइत्ता हत्थिगुलगुलाइयं करेइ, करेइत्ता

भावार्थ वैक्रेय समुद्घात करके प्रदेश बाहिर नीकाले यावत् दूसरी वक्त वैक्रेय समुद्घात करके एक बडा, घोर, घोर आकारवाला, भीम, भीम आकारवाला, देदीप्यमान, भयलानेवाला, गंभीर, उद्वेग उत्पन्न करनेवाला, श्याम आधीरात्रि व उडद समान एक लक्ष योजन का शरीर बनाया. शरीर बना करके दोनों हाथ की हथेलियों या दोनों भुजाओं को करस्फोट करता, हाथ से कूदता हुवा, जोर से बगासी खाता हुवा, घन

ला उ० उछलकर प० पछोडा पछोडकर ति० त्रिपद छि० छेदकर वा० वायां हाथ को ऊ० ऊंचाकर दा० दक्षिण हाथ को प० नीचाकर अं० अंगुठा के नख ति० तिर्च्छा मु० मुख वि० विटम्बनाकर म० बडे बडे स० शब्द से क० कल कल अवाज क० करके ए० एक अ० अद्वितीय फ० परिघ र० रत्नमय उ० ऊर्ध्व वि० आकाश में उ० उछालता खो० क्षोभ पमाडता अ० अधोलोक को कं० कंपावता मे० पृथ्वी

सूत्र

रहघण घणाइयं करेइ, करेइत्ता पायदद्दरगं करेइ, करेइत्ता भूमिचवेडं दलयइ, दलय- इत्ता सीहनादं नदइ, नदइत्ता उच्छोलेइ, उच्छोलेइत्ता पच्छोलेइ, पच्छोलेइत्ता ति- वतिं छिंदइ, तिवतिं छिंदइत्ता वामं भुयं ऊसवेइ, ऊसवेइत्ता दाहिण हत्थपएसिणीए अंगुट्ठनहेणय, वितिरिच्छं मुहं विडवइ, विडंवइत्ता महया महया सद्दणं कलकलरवं

भावार्थ

गर्जारव समान शब्द करता हुवा, घोडे के हेसार समान हेंकार करता हुवा, हाथी की समान गुलगुलाट करता हुवा, रथ की समान घणघगाट करता हुवा, भूमि पर पांव आस्फालता हुवा, हाथों के चपेटे भूमि पर मारता हुवा, सिंहसमान नाद करता हुवा, मर्कट की तरह उछल उछल कर आता हुवा, मल्ल की माफक रंगभूमि में त्रिपद छेद करता हुवा, वॉयी भुजा को उपर ऊंची रखता हुवा, दक्षिण भुजा के पांव की अंगुलीयों मरोडता हुवा, मुच्छों को वल घालता हुवा, अत्यंत जोर से कल कलाट करता हुआ, मात्र परिघ रत्न नामक आयुध को धारण करता हुआ, ऊर्ध्व आकाश में ऊछाला खाता हुआ, क्षोभ उत्पन्न करता

शब्दार्थ आत्मरक्षक देव सा० सहस्र क० कहां ता० उन की अ० अनेक अ० अप्सरा को० क्रोडी अ० आज ह० हनता हूं म०मन्थन करताहूं व०वधकरताहूं अ०आज म०मुझे अ०अवश अ०अप्सरा व०वशसे उ०नमस्कार करो ति० ऐसा करके तं० उन को अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ०अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम फ०कठोर गि०भाषा नि० कही ॥२८॥ त० तब स०शक्र दे०देवेन्द्र तं०उस अ० अनिष्ट जा०यावत्

सूत्र चउरासीइ सामाणिय साहस्सीओ, जाव कहिणं ताओ चत्तारिचउरासीओ आयरक्ख-देवसाहस्सीओ, कहिणं ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्जवहेमि, अज्जममं अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमंतु त्तिकट्टु, तं आणिट्ठं, अकंतं, अप्पियं, असुभं, अमणुण्णं, अमणामं, फरुसंगिरं निसिरइ ॥ २८ ॥ तएणं

मारा और बडे बडे शब्द से बोलने लगा अरे शक्र देवेन्द्र देवराजा कहां हैं? उसके चौरासी हजार सामानिक यावत् तीन लाख छत्तीस हजार आत्म रक्षक देव और अनेक क्रोड अप्सरा का परिवार कहां है ? आज मैं उन को मारूंगा, इन सब का मैं वध करूंगा; आज मैं दधि समान मन्थन करूंगा, आजदिन तक तू मेरे वश में नहीं था अब देवियों सहित वश होकर मुझे नमस्कार करो ऐसा अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम यावत् कठोर वचन निकालने लगा. ॥ २८ ॥ उस समय में ऐसी अनिष्ट

अ० अमनाम अ० नहीं सुनी फ० कठोर गि० भाषा सो० सूनकर नि० अवधारकर आ० आसुरत्व जा० यावत् मि० देदीप्यमान ति० तीनरेखा रूप भिं० भृकुटी नि० कपाल में सा० चढाकर च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसा व० बोले च० चमर अ० असुरेंद्र अ० अप्रार्थितका प० प्रार्थित जा० यावत् ही० हीन पु० पुन्य चतुर्दशी वाला अ० आज न० नहीं भ० है ना० नहीं ते० तुझे सु० सुख अ० है त्ति० ऐसा करके सी० सिंहासन पे ग० बैठे हुवे व० वज्र प० ग्रहणकर तं० उस को ज० जलता फु० फुट फुट शब्द

सूत्र

से सक्के देविंदे देवराया तं आणिट्ठं जाव अमणामं अस्सुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वयासी हं भो चमरा असुरिंदा असुरराया अप्पत्थियपत्थिया जाव हीणपुण्णचाउद्दसा ! अज्ज न भवसि, नाहि ते सुहमत्थि त्तिकट्टु तत्थेव सीहासणवरगए वज्जं परामुसइ परामुसइत्ता, तं जलंतं, फुडंतं, तथतडंतं उक्कासहस्साइं

भावार्थ

यावत् अमनोज्ञ, पहिले कदापि नहीं सुनी वैसी कठोर भाषा सुनकर शक्रेन्द्र क्रोधित हुवा, और दांत पीसता हुवा भृकुटी चढाकर चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा को ऐसा कहा अरे असुरेन्द्र, असुर का राजा चमर ! तू अप्रार्थित की प्रार्थना करनेवाला यावत् हीन पुण्यचतुर्दशी में उत्पन्न होनेवाला है. आज तुझे सुख नहीं होगा. ऐसा कहकर सिंहासन पर बैठे हुवे शक्रदेवेन्द्र देवराजाने वज्र उठाया उठाकर

शब्दार्थ करता त० त्रट त्रट अवाज करता उ० उल्का सहस्र मु० मूकता हुवा जा० ज्वाला सहस्र मु० मूकता इं० अंगारे स० शत सहस्र प० विखेरता फु० अग्नि कण जा० ज्वाला मा० माल्य स० सहस्र च० चक्षु वि० विक्षेप दृष्टि का प० प्रतिघात प० करता हु० अग्नि ब० बहुत ते० तेज दिं० देदीप्यमान वे० वेगवन्त फु० फुल्या हुवा किं० किंशुक समान म० महाभयंकर च० चमर अ० असुरेंद्र का व०, वध केलिये व० वज्र नि० नीकाला ॥ ५१ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र तं० उस ज० जलता जा० यावत् भ० भयंकर

सूत्र

विणि मुयमाणं २ जाला सहस्साइं मुयमाणं इंगाल सय सहस्साइं पविक्खिरमाणं; पविक्खिरमाणं, फुलिंग जाला माला सहस्सेहिं चक्खु विक्खेवदिट्ठिपडिघायं त्रि पकरें माणे हुयवहुयतिरगतेयदिप्पंतं, जइणवेगं, फुल्लकिंसुयसमाणं महब्भयं भयंकरं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए वज्जं निसिरइ, ॥ २१ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया तं जलंतं जाव भयंकरं वज्जमभिमुहं आवयमाणं पासइ, पासइत्ता

भावार्थ अग्नि समान जलता हुआ, फुट फुट शब्द करताहुवा, और त्रट त्रट करता हुवा सहस्र विद्युत समान भलभलाट करता हुवा, ज्वाला को छोडता हुवा, हजारों अंगार की वर्षा वर्षाता हुवा, बहुत प्रकाश करता हुवा, अग्निसे अधिक तेजवाला, किंशुक कुसुम समानफुला हुवा, और महाभय उत्पन्न करता हुवा ऐसा भयंकर वज्र चमर असुरेन्द्र के वध के लिये छोडा ॥ २१ ॥ फीर ऐसा जलता हुवा यावत् महाभय करने-

शब्दार्थ — व० वज्र अ० सन्मुख आ० आता पा० देखकर झि० चिन्तवनकर पि० इच्छकर त० तैसे सं० भगा हुवा म० मुकुट वि० विस्तार सा० आलंबन सहित ह० हस्त आ० आभरण उ० उर्ध्व पांव अ० नीचाशिर क० कक्षा ग० रहा हुवा से० स्वेद मु० मूकता ता० उस उ० उत्कृष्ट जा० यावत् ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र म० मध्य से वी० अतिक्रमता जे० जहां जं० जंबूद्वीप जा० यावत् म० मेरी अं०

सूत्र — झियाइ, पिहाइ, झियाइत्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्ग मउड विडए, सालंबहत्थाभरणे उड्ढंपाए अहो सिरे कक्खागयसेयंपिव विणिं मुयमाणे मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरिय मसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं वीईवयमाणे २ जेणेव जंबूदीवे दीवे जाव जेणेव असोगवर पायवे, जेणेव ममअंतिए तेणेव उवागच्छइ उवा-

भावार्थ — वाला वज्र को सामने आता हुवा देखकर वह चमरेन्द्र यह क्या होगा ऐसा चिन्तवन करने लगा, यह मुझे होवे ऐसी इच्छा करने लगा, अपने स्थान जाने को वांच्छने लगा, और वज्र का आताप नहीं सहन होने से चक्षु बंध करता हुवा व्याकुल होने लगा. इस तरह चिन्तवन करके पीछा फीरा, सिर का मुकुट नीचे पडने लगा, आभरणों हस्त से पकडे, अधो गमन होने से ऊंचे पांव नीचा सिर हुवा और जैसे मनुष्य के शरीर में से स्वेद छूटता है वैसे ही चमरेन्द्र के शरीर में से स्वेद रूप पुद्गल टपकनेलगा. फीर देव की दीव्य गति से यावत् असंख्यात दीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में संसुमार नगर के

व० वज्र दो० दो से जं० जिस को व० वज्र दो० दो से तं० उसको च० चमर ति० तीन से स० सब से थोडा स० शक्र दे० देवेन्द्र का उ० ऊर्ध्व लोक कं० कंड अ० अधोलोक कं० कंड सं० संख्यात गुणा जा० जितना खि० क्षेत्र च० चमर अ० अधो उ० जावे ए० एक समय में तं० उस को स० शक्र दो० दो से व० वज्र ति० तीन से स० सब से थोडा च० चमर अ० असुरेंद्र का अ० अधोलोक कं० कंड उ० ऊर्ध्व लोक का कंड सं०

तं वज्जे दोहिं, तं चमरं तिहिं ॥ सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकंडए अहेलोय कंडए संखेज्जगुणे जावइयंखेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया अहे उवयइ एक्केणं समएणं, तं सक्के दोहिं, तं वज्जे तिहिं, ॥ सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहेलोयकंडए, उड्ढलोयकंडए संखेज्जगुणे, एवं खलु गोयमा ! सक्केणं

समय में जाता है और चमरेन्द्र तीन समय में जाता है. शक्र देवेन्द्रको उपर जाने में सब से थोडा काल लगता है उस से अधो लोक में जाने में संख्यात गुना (द्विगुना.) काल लगता है. * एक समय में चमरेंद्र जितना नीचे उतरता है उतना शक्रेंद्र दो समय में उतरता है और वज्र तीन समय में उतरता है

---

* यहां पर द्विगुना काल लेनेका मतलब यह है कि शक्रेंद्रको ऊंचा जानेका व चमरेंद्र को नीचा आने में दोनों बराबर हैं. एक समय में चमरेंद्र जितना नीचे जाता है उतनाही क्षेत्र नीचे आने में को दो समय लगते हैं.

शब्दार्थ व० वज्र अ० सन्मुख आ० आता पा० देखकर झि० चिन्तवनकर पि० इच्छकर त० तैसे सं० भगा हुवा म० मुकुट वि० विस्तार सा० आलंबन सहित ह० हस्त आ० आभरण उ० उर्ध्व पांव अ० नीचाशिर क० कक्षा ग० रहा हुवा से० स्वेद मु० मूकता ता० उस उ० उत्कृष्ट जा० यावत् ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र म० मध्य से वी० अतिक्रमंता जे० जहां जं० जंबूद्वीप जा० यावत् म० मेरी अं०

सूत्र झियाइ, पिहाइ, झियाइत्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्ग मउड विडए, सालंबहत्थाभरणे उड्ढंपाए अहो सिरे कक्खागयसेयंपिव विणिं मुयमाणे मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरिय मसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं वीईवयमाणे २ जेणेव जंबूदीवे दीवे जाव जेणेव असोगवर पायवे, जेणेव ममअंतिए तेणेव उवागच्छइ उवा-

भावार्थ वाला वज्र को सामने आता हुवा देखकर वह चमरेन्द्र यह क्या होगा ऐसा चिन्तवन करने लगा, यह मुझे होवे ऐसी इच्छा करने लगा, अपने स्थान जाने को वांच्छने लगा, और वज्र का आताप नहीं सहन होने से चक्षु बंध करता हुवा व्याकुल होने लगा. इस तरह चिन्तवन करके पीछा फीरा, सिर का मुकुट नीचे पडने लगा, आभरणों हस्त से पकडे, अधो गमन होने से ऊंचे पांव नीचा सिर हुवा और जैसे मनुष्य के शरीर में से स्वेद छूटता है वैसे ही चमरेन्द्र के शरीर में से स्वेद रूप पुद्गल टपकनेलगा. फीर देव की दीव्य गति से यावत् असंख्यात दीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में संसुमार नगर के

पास उ० आकर भी० डरा हुवा भ० भय से ग० घर्घर स्वर भ० भगवन् स० सरण मे० मुझे त्ति० एसो वू० कहता म० मेरे दो० दोनों पा० पांव के अं० अंतर में वे० त्वरासे स० पडा ॥ ३० ॥ त० तब त० उस स० शक्र दे० देवेन्द्र को ए० इसरूप अ० अध्यसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा णो० नहीं ख० निश्चय प० शक्ति वंत च० चमर अ० असुरेंद्र णो० नहीं० स० समर्थ च० चमर असुरेंद्र नो० नहीं वि० विपय च० चमर अ० असुरेंद्र का आ० स्वत की णि० नेश्राय से उ० ऊर्ध्व उ० उडकर जा० यावत् सो० सौधर्म देव-

मूत्र

गच्छइत्ता, भीए भयगग्गरसरे भगवं सरणं मेत्ति वूयमाणे ममं दोण्हवि पायाणं अं-तरंसि झत्तिवेगेणं समोवडिए ॥ ३० ॥ तएणं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था णो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया णोखलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, णो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो णिस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मेकप्पे. णण्णत्थ अरिहंतेवा,

भावार्थ

अशोक वनखण्ड के अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शिला पट्टपर जहां मैं ध्यानस्थ था वहां वह चमरेन्द्र आया. आकरके डरता हुवा भग्न स्वर से अहो भगवन् ! आपका मुझे शरण हो ऐसे बोलता हुवा मेरे दोनों पांवों की बीच में शीघ्र वेग से गिरपडा ॥ ३० ॥ फीर शक्रेन्द्र को ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन हुवा कि स्वयं चमरेंद्र यहां आने को समर्थ नहीं है वैसे ही अन्य किसी की नेश्राय विना ऊंचे सौधर्म देवलोक में

शब्दार्थ लोक ण० नहीं अ० अन्यथा अ० अरिहंत अ० छद्मस्थ अरिहंत अ० अनगार भा० भवितात्मा णि०नेश्राय से उ० ऊर्ध्व उ० उडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक तं० वह म० महा दुःख त० तथारूप अ० अरिहंत भ० भगवन्त अ० अनगारकी अ० आशातनाकरे॥३१॥ ति० ऐसा करके ओ० अवधिज्ञान को प०प्रयुंजकर म०मुझे ओ०अवधि ज्ञान से आ०देखकर हा०हाहा अ० अहो ह०हणाया अ०मैं अ०हूं त्ति०ऐसा करके ता० उस उ०उत्कृष्ट जा०यावत् दि०दीव्य दे०देवगति से व०वज्र की वी० रस्ते अ०पीछे जाना ति०तिर्च्छा अ०

सूत्र अरिहंतचेइआणिवा, अणगारेवा भावियप्पाणो णिस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मे कप्पे तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं अणगाराणय अच्चासायणयाए ॥ ३१ ॥ त्तिकट्टु, ओहिं पउंजइ, पउंजइत्ता ममं ओहिणा आभोएइ २ त्ता, हाहा अहो हतो अहंमासि त्तिकट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देव गईए वज्जस्स

भावार्थ आने का विषय नहीं है. अरिहंत, अरिहंत चैत्य सो छद्मस्थ, अनगार और भवितात्मा की नेश्राय विना ऊंचे उडने को यावत् सौधर्म देवलोक में आने को समर्थ नहीं है. इस से अरिहंत भगवंत यावत् अनगार को आसातना से महा दुःख होगा ॥ ३१ ॥ ऐसा करके अवधि ज्ञान प्रयुंजा. (लगाया) और अवधि ज्ञान से मुझे देखकर हा हा अरे अरे ऐसा खेद करके उस उत्कृष्ट यावत् देव की दीव्य गति से वज्र के

शब्दार्थ पाम उ०आकर भी०डरा हुवा भ०भय से ग०घर्घर स्वर भ०भगवन् स०सरण मे०मुझे त्ति०एसो वू० कहता म० मेरे दो० दोनों पा० पांव के अं० अंतर में वे० त्वरासे स० पडा ॥ ३० ॥ त० तब त० उस स० शक्र दे० देवेन्द्र को ए० इसरूप अ० अध्यसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा णो० नहीं ख० निश्चय प० शक्ति वंत च० चमर अ० असुरेंद्र णो० नहीं० स० समर्थ च० चमर असुरेंद्र नो० नहीं वि० विषय च० चमर अ० असुरेंद्र का आ० स्वत की णि० नेश्राय से उ० ऊर्ध्व उ० उडकर जा० यावत् सो० सौधर्म देव-

मूल गच्छइत्ता, भीए भयगग्गरसरे भगवं सरणं मेत्ति बूयमाणे ममं दोण्हवि पायाणं अं-तरंसि झत्तिवेगेणं समोवडिए ॥ ३० ॥ तएणं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था णो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया णोखलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, णो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो णिस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मेकप्पे. णण्णत्थ अरिहंतेवा,

भावार्थ अशोक वनखण्ड के अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शिला पट्टपर जहां मैं ध्यानस्थ था वहां वह चमरेन्द्र आया. आकरके डरता हुवा भय स्वर से अहो भगवन् ! आपका मुझे शरण हो ऐसे बोलता हुवा मेरे दोनों पांवों की बीच में शीघ्र वेग से गिरपडा ॥ ३० ॥ फीर शक्रेन्द्र को ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन हुवा कि स्वयं चमरेंद्र यहां आने को समर्थ नहीं है वैसे ही अन्य किसी की नेश्राय विना ऊंचे सौधर्म देवलोक में

दार्थ

तव कु० कुपित होते च० चमर अ० असुरेंद्र का व० वध केलिये व० वज्र नि० नीकाला त० तब म० मुझे ए० इसरूप अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा णो० नहीं प० समर्थ च० चमर अ० असुरेंद्र त० तैसे जा० यावत ओ० अवधि ज्ञान को प० प्रयुंजता हूं दे० देवानुप्रिय को. ओ० अवधिज्ञान से आ० देखे जा० यावत् जे० जहां दे० देवानुप्रिय ते० तहां उ० आया दे० देवानुप्रिय का च० चार अंगुल अ० अप्राप्त व० वज्र प० ग्रहण करता हूं व० वज्र को प० ग्रहण करने केलिये आ० आया इ० यहां

सूत्र

अहं तुब्भं नीसाए चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो सयमेव अच्चासाइए, तएणं मए कुविएणं समाणेणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए वज्जे निसिट्ठे, तएणं ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था, णो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया तहेव जाव ओहिं पउंजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, हाहा जाव जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि देवाणुप्पियाणं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरामि. वज्जं पडिसाहरणट्ठयाएणं इह मागए,

भावार्थ

का शरण लेकरके चमरेन्द्रने मेरी आसातना की इस से बहुत क्रोधित होकर मैंने असुरेन्द्र का वध के लिये वज्र फेंका. फीर मुझे ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन हुवा कि चमर असुरेन्द्र ऊर्ध्व सौधर्म देवलोक में आने को समर्थ नहीं है, अरिहंत यावत् अनगार का शरण लिये विना नहीं आसकता है. इस से मैंने अवधि ज्ञान प्रयुंजा और अवधि ज्ञान से आप को देखे. फीर खेद करता हुवा आपकी समीप आया

शब्दार्थ असंख्यात दी० द्वीप समुद्र म० मध्य से जाँ० यावत् जे० जहाँ अशोक पा० वृक्ष म० मेरी अं० पास ते० तहां उ० आकर म० मुझे च० चार अंगुल अ० अमाप्त च० वज्र प० संहरन करे मु० मुष्टिकेवात से के० केशाग्र वी० चलित हुवे ॥ ३२ ॥ त० तब से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र व० वज्र को प० संहरन कर म० मुझे ति० तीनवक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले भं० भगवन् अ० मैं तु० तुमारी नी० नेश्राय से च० चमर अ० असुरेंद्र स० स्वयं अ० भ्रष्टकरने को त०

सूत्र वीहिं अणुगच्छमाणे तिरिय मसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव मंम अंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, ममंचणं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसारइ अभियाइमे गोयमा ! मुट्ठिवाएणं केसग्गे वीइत्था ॥ ३२ ॥ तएणं से सक्के देविंदे देवराया वज्जं पडिसाहरित्ता, ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करेइत्ता वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता एवं वयासी एवं खलुभंते !

भावार्थ रस्ते को अनुसरता हुवा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सुंसुमार नामक नगर के अशोक वनखण्ड के अशोक वृक्ष नीचे मेरी समीप आया. और मेरे से चार अंगुल दूर रहते वज्र पीछा खींच लिया. वज्र खींचने के लिये जो मुष्टिबंध की, उस के वायु से मेरे केशाग्र चले ॥ ३२ ॥ वज्र खींचे पीछे मुझे तीन आदान प्रदक्षिणाकर वंदना नमस्कार कर ऐसा बोला अहो भगवन् ! आप

शब्दार्थ

कहा मु० मुक्त अ० है भो० भो च० चमर अ० असुरेंद्र स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के प० प्रभाव से न० नहीं ते० तुझे इ० अब म० मुझ से भ० भय अ० है. त्ति० ऐसा करके ज० जिस दिशि से पा० आये ता० उसदिशा में प० पीछे गये ॥ ३३ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को न० नमस्कार कर व० बोले दे० देव भं० भगवन्त म० महाऋद्धि म० महाद्युति जा० यावत् म० महानुभाग पु० पहिले पो० पुद्गल खि० फेंक कर प० समर्थ तं० उसको अ० पीछे जाकर गे०

सूत्र

असुरिंदं असुररायं एवं वयासी-मुक्कोसि णं भो चमरा असुरिंदा असुरराया। समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं, नाहिं तेदाणिं ममाओ भयमत्थि त्तिकट्टु, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ३३ ॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी देवेणं भंते ? महिड्ढीए महज्जुईए जाव महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए

भावार्थ

अरे असुरेन्द्र असुरका राजा चमर ! श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के प्रभाव से मेरी तर्फ से तुझे भय नहीं है ऐसा करके जहां से आया था वहां पीछा गया ॥ ३३ ॥ यहां पर प्रस्तरादि [पत्थर] पुद्गल फेंके पीछे मनुष्य पीछा लेने को समर्थ नहीं होता है तो देव क्या समर्थ होवे. शक्रने वज्र फेंका और पीछा वज्र ले लिया इसलिये उस का यहां पर प्रश्न करते हैं. श्री गौतम स्वामी महावीर

शब्दार्थ — मं० प्राप्त इ० यहां अ० आज उ० उपशम को प्राप्त होकर वि० विचरता हूं खा० क्षमाता हूं दे० देवानुप्रिय ख०क्षमाकरो मं०मुझे ख०क्षमाकरने अ० योग्य दे० देवानुप्रिय न०नहीं भु०वारंवार ए०ऐसा क० करने को त्ति० ऐसा करके म० मुझे वं० वंदना कर न० नमस्कार कर उ० ईशान कोन में अ० अतिक्रम, वा० वांया पा० पांव से ति० तीनवक्त भू० भूमि को दा० विदार च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसा व०

सूत्र — इह समोसढे, इह संपत्ते, इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ तं खामेमिणं देवाणुप्पिया ? खमं तुमं देवाणुप्पिया ? खंतुमरिहंतुणं देवाणुप्पिया ! नांइ भुज्जो २ एवं करणयाए त्तिकट्टु ममं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता उत्तर पुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता, वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमिं दालेइ: चमर अ-

भावार्थ — और आप से चार अंगुल प्रमाण वज्र दूर रहते मैंने पीछा खींच लीया. वज्र पीछा खींचने के लिये मैं यहां पर आया हुवा हूं. यहां समोसर्या, व प्राप्त हुवा हूं. यहां पर इस उद्यान में आज पाप को उपशमाता हुवा विचरता हूं. इस से अहो देवानुप्रिय ! मैं आप की क्षमा याचता हूं, आप मुझे क्षमा करें. आप क्षमा करने योग्य हो. अब मैं वारंवार ऐसा नहीं करूंगा ऐसा कहकर वंदना नमस्कार करके ईशान कोन में गया. और बायें पांव से भूमि को तीन वक्त विदार कर चमरेन्द्र को ऐसा कहने लगा कि

शब्दार्थ कहा मु० मुक्त अ० है भो० भो च० चमर अ० असुरेंद्र स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के प० प्रभाव से न० नहीं ते० तुझे इ० अब म० मुझ से भ० भय अ० है. त्ति० ऐसा करके ज० जिस दिशि से पा० आये ता० उसदिशा में प० पीछे गये ॥ ३२ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को न० नमस्कार कर व० बोले दे० देव भं० भगवन्त म० महाऋद्धि म० महाद्युति जा० यावत् म० महानुभाग पु० पहिले पो० पुद्गल खि० फेंक कर प० समर्थ तं० उसको अ० पीछे जाकर गे०

सूत्र असुरिंदं असुररायं एवं वयासी-मुक्कोसि णं भो चमरा असुरिंदा असुरराया । समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं, नाहिं तेदाणिं ममाओ भयमत्थि त्तिकट्टु, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ३२ ॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी देवेणं भंते ? महिड्ढीए महज्जुईए जाव महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए

भावार्थ अरे असुरेन्द्र असुरका राजा चमर ! श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के प्रभाव से मेरी तर्फ से तुझे भय नहीं है ऐसा करके जहां से आया था वहां पीछा गया ॥ ३२ ॥ यहां पर प्रस्तरादि [पत्थर] पुद्गल फेंके पीछे मनुष्य पीछा लेने को समर्थ नहीं होता है तो देव क्या समर्थ होवे. शक्रने वज्र फेंका और पीछा वज्र ले लिया इसलिये उस का यहां पर प्रश्न करते हैं. श्री गौतम स्वामी महावीर

शब्दार्थ सं० प्राप्त इ० यहां अ० आज उ० उपशम को प्राप्त होकर वि० विचरता हूं खा० क्षमाता हूं दे० देवानुप्रिय ख० क्षमाकरो मं० मुझे ख० क्षमाकरने अ० योग्य दे० देवानुप्रिय न० नहीं भु० वारंवार ए० ऐसा क० करने को त्ति० ऐसा करके म० मुझे वं० वंदना कर न० नमस्कार कर उ० ईशान कोन में अ० अतिक्रम, वा० वांया पा० पांव से ति० तीनवक्त भू० भूमि को दा० विदार च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसा व०

सूत्र इह समोसढे, इह संपत्ते, इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ तं खामेमिणं देवाणुप्पिया ? खमं तुमं देवाणुप्पिया ? खंतुमरिहंतुणं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो २ एवं करणयाए त्तिकट्टु ममं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता उत्तर पुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता, वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमिं दालेइ: चमर अ-

भावार्थ और आप से चार अंगुल प्रमाण वज्र दूर रहते मैंने पीछा खींच लीया. वज्र पीछा खींचने के लिये मैं यहां पर आया हुवा हूं. यहां समोसर्या, व प्राप्त हुवा हूं. यहां पर इस उद्यान में आज पाप को उपशमाता हुवा विचरता हूं. इस से अहो देवानुप्रिय ! मैं आप की क्षमा याचता हूं, आप मुझे क्षमा करें. आप क्षमा करने योग्य हो. अब मैं वारंवार ऐसा नहीं करूंगा ऐसा कहकर वंदना नमस्कार करके ईशान कोन में गया. और वायें पांव से भूमि को तीन वक्त विदार कर चमरेन्द्र को ऐसा कहने लगा कि

शब्दार्थ संख्यात गुणा ए० ऐसे ॥ ३५ ॥ स० शक्र दे० देवेंद्र का उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्च्छा ग० गति विषय क०कितना क०किससे अ०अल्प व०बहुत तु०तुल्य वि०विशेषाधिक गो०गौतम स०सर्व से थोडा खे० क्षेत्र स० शक्र दे० देवेन्द्र अ० अधो उ० जावे ए० एक समय में ति० तिर्च्छा सं० संख्यातवा भागमें ग०

सूत्र देविंदेणं देवरण्णा चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाएइ साहत्थिं गेण्हित्तए ॥ ३५ ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उड्ढं अहेतिरियंच गइविसयस्स कयरे कयरे-हिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तं सक्के दे-विंदे देवराया अहे उवयइ, एक्केणं समएणं तिरियं संखेज्जेभागे गच्छइ, उड्ढं संखे-

भावार्थ चमर असुरेंद्र को नीचे आने में सब से थोडा काल लगता है उस से ऊर्ध्व जाने में संख्यात गुना काल लगता है. इस से अहो गौतम ! शक्रेन्द्र असुरेन्द्र को हाथ से पकडने को समर्थ नहीं है ॥ ३५ ॥ अब शक्रेंद्र, चमरेंद्र व वज्र इन की गति का अल्पाबहुत्व करते हैं. अहो भगवन् ! शक्र देवेंद्र का ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् गति विषय में से कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ?, अहो गौतम ! सब से थोडा क्षेत्र शक्र देवेंद्र नीचे उतरता है, इस से संख्यात भाग अधिक तिर्च्छी दिशा के क्षेत्रका आक्रमण करता है उस से ऊर्ध्व दिशा का क्षेत्र संख्यात भाग अधिक जाता है. जैसे शक्र नामक देवेन्द्र एक समय में एक योजन नीचे आवे, उस के दो भाग करके उस में का एक भाग उक्त योजन में मीलाने से

सूत्र

वं वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं ॥ सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्डुलोयकंडए अहेलोय कंडए संखेज्जगुणे जावइयंखेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया अहे उवयइ एक्केणं समएणं, तं सक्के दोहिं, तं वज्जे तिहिं, ॥ सव्वत्थोवें चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहेलोयकंडए, उड्डुलोयकंडए संखेज्जगुणे, एवं खलु गोयमा ! सक्केणं

शब्दार्थ

व० वज्र दो० दो मे जं० जिस को व० वज्र दो० दो से त०उसको च०चमर ति०तीन से स०सर्व से थोडा स० शक्र दे० देवेन्द्र का उ० ऊर्ध्व लोक कं० कंड अ० अधोलोक क०कंड सं०संख्यात गुणा जा०जितना खि० क्षेत्र च० चमर अ० अधो उ० जावे ए० एक समय में तं० उस को स० शक्र दो० दो से व० वज्र ति०तीन से स०सर्वसे थोडा च०चमर अ०असुरेंद्र का अ० अधोलोक कं० कंड उ०ऊर्ध्व लोक का कंड सं०

भावार्थ

दो समय में जाता है और चमरेन्द्र तीन समय में जाता है. शक्र देवेन्द्रको उपर जाने में सब से थोडा काल लगता है उस से अधो लोक में जाने में संख्यात गुना (द्विगुना.) काल लगता है. * एक समय में असुरेंद्र जितना नीचे उतरता है उतना शक्रेंद्र दो समय में उतरता है और वज्र तीन समय में उतरता है

* यहां पर द्विगुना काल लेनेका मतलब यह है कि शक्रेंद्रको ऊंचा जानेका व चमरेंद्र को नीचा आने का काल में दोनों बराबर हैं. एक समय में चमरेंद्र जितना नीचे जाता है उतनाही क्षेत्र नीचे आने में शक्रेंद्र को दो समय लगते हैं.

शब्दार्थ अधो ति० तिर्च्छी ग० गति विषय क० कितना क० किस से अ० अल्प ब० बहुत तु० तुल्य वि० विशेषाधिक गो० गौतम स० सर्व से थोडा खे० क्षेत्र च० चमर अ० असुरेंद्र उ० ऊर्ध्व जा० जावे ए० एक समय में ति० तिर्च्छा सं० संख्यातवा भाग में अ० अधो सं० संख्यातवा भाग में स० शक्र दे० देवेन्द्र

सूत्र रियंच गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा, बहुएवा तुल्लेवा, विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयइ एक्केणं समएणं, तिरियं संखेज्जेभागे गच्छइ, अहे संखेज्जेभागे गच्छइ । सक्के देविंदे देवराया उड्ढं

भावार्थ भाग ऊना तीन गाउ, इस प्रकार एकेक गाउ के तीन भाग करने से एक योजन के बारह और दो योजन के चौवीस भाग होते हैं इस से यहां विचारते हैं तीन भाग कम तीन गाउ तब आठ भाग रहे. इतना एक समय में ऊंचे जावे, उस से तिर्च्छा उक्त आठ भाग से दुगुने करे इतना क्षेत्र अधिक जावे इतना तिर्च्छी गति का विषय शीघ्र कहा है. उक्त दो विभाग कम छ गाऊ है उस में एक विभाग कम तीन गाऊ मीलाने से अर्थात् दो योजन पूर्ण होवे उतना अधिक अधो लोक में जावे. अहो भगवन् ! वज्र का ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् गति में ज्यादा, कमी, बराबर किस प्रकार कहा है ? अहो गौतम ! जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही वज्र का जानना. वज्र सब से थोडा अधो गति में जावे, क्यों कि अधो गति में जाने में उन की गति की मंदता है. तिर्च्छा विशेषाधिक जावे और ऊर्ध्व गति में विशेषाधिक जावे. यहां

शब्दार्थ जावे उ० ऊर्ध्व सं० संख्यातवा भाग में ग० जावे ॥ ३६ ॥ च० चमर अ० असुरेंद्र उ० ऊर्ध्व अ०

सूत्र ज्झभागे गच्छइ ॥ ३६ ॥ चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो उड्ढं अहे ति-

भावार्थ देढ योजन होवे इसलिये तीन संख्यात भाग तिर्च्छा लोक में जावे. तिर्च्छा लोक में योजन का आधा विभाग रहा था वह आधा विभाग उक्त देढ योजन में मीलाने से पूरे चार भाग संख्यात गुने होते हैं ÷ ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र का ऊर्ध्व अधो व तिर्यक् गति का विषय में कौन किससे अल्प, बहुत, तुल्य या विशेपाधिक है ? अहो गौतम ! एक समय में चमर असुरेन्द्र सब से थोडा ऊर्ध्व लोक में जाता है इस से तिर्च्छा लोक में संख्यात गुणा अधिक क्षेत्र जाता है और उस से अधो लोक में संख्यात भाग अधिक जाता है. एक समय ऊर्ध्व गति के विषय में उस के मंदपने की कल्पना मे तीन

÷ यहां कोई प्रश्न करे कि सूत्र में संख्यात भाग मात्र ही ग्रहण किया है और यह नियमित भाग कैसे बना सकते हो ? जितना क्षेत्र चमरेंद्र नीची दिशामें एक समय में जाता है उतना क्षेत्र जाने को शक्र देवेन्द्र को दो समय लगता है वैसे ही शक्रेन्द्र का ऊर्ध्व गमन काल और चमरेन्द्र का अधो गमन काल तुल्य है इस से निश्चय होता है कि दो समय में जितना क्षेत्र शक्रेन्द्र नीचे आता है उतना क्षेत्र उपर एक समय में जाता है. इस से अधो क्षेत्र दुगुना कहा. और बीच का तीर्च्छा क्षेत्र देढ गुना कहा. वैसे ही चूर्णिकाकार भी कहते हैं कि एगे समएणं तिरियं दिवड्ढं गच्छइ उड्ढं दो जोयणाणि सक्कोत्ति ॥

शब्दार्थ

अधो ति० तिर्च्छा ग० गति विषय क० कितना क० किस से अ० अल्प ब० बहुत तु० तुल्य वि० विशेषाधिक गो० गौतम स० सर्व से थोडा खे० क्षेत्र च० चमर अ० असुरेंद्र उ० ऊर्ध्व उ० जावे ए० एक समय में ति० तिर्च्छा सं० संख्यातवा भाग में अ० अधो सं० संख्यातवा भाग में स० शक्र दे० देवेन्द्र

सूत्र

रियंच गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा, बहुएवा तुल्लेवा, विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयइ एक्कोणं समएणं, तिरियं संखेज्जेभागे गच्छइ, अहे संखेज्जेभागे गच्छइ । सक्के देविंदे देवराया उड्ढं

भावार्थ

भाग ऊना तीन गाउ, इस प्रकार एकेक गाउ के तीन भाग करने से एक योजन के बारह और दो योजन के चौवीस भाग होते हैं इस से यहां विचारते हैं तीन भाग कम तीन गाउ तब आठ भाग रहे. इतना एक समय में ऊंचे जावे, उस से तिर्च्छा उक्त आठ भाग से दुगुने करे इतना क्षेत्र अधिक जावे इतना तिर्च्छा गति का विषय शीघ्र कहा है. उक्त दो विभाग कम छ गाऊ है उस में एक विभाग कम तीन गाऊ मीलाने से अर्थात् दो योजन पूर्ण होवे उतना अधिक अधो लोक में जावे. अहो भगवन् ! वज्र का ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् गति में ज्यादा, कमी, बराबर किस प्रकार कहा है ? अहो गौतम ! जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही वज्र का जानना. वज्र सब से थोडा अधो गति में जावे, क्यों कि अधो गति में जाने में उन की गति की मंदता है. तिर्च्छा विशेषाधिक जावे और ऊर्ध्व गति में विशेषाधिक जावे. यहां

शब्दार्थ उ० ऊर्ध्व उ० जावे ए० एक स० समय में तं० उस को व० वज्र दो० दो से च० चमर ति० तीन से न० विशेष वि० विशेषाधिक का०कहना ॥ ३७ ॥ स० शक्र दे० देवेंद्र का उ० नीचे आनेका उ० उपर जानेका का० काल क० कितना क० किससे अ० अल्प गो० गौतम स० सबै थोडा स० शक्र दे० देवेंद्र

सूत्र उप्पयइ एकेणं समएणं तं वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं, वज्जं जहा सक्कस्स तहेव, नवरं विसेसाहियं कायव्वं ॥ ३७ ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उवयण-कालस्सय उप्पयणकालस्सय कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ?

भावार्थ कल्पना से तीसरा भाग कम एक योजन अधोलोक में जावे. उक्त आठ भाग में से एक गाऊ का तीन भाग करे ऐसे दो भाग अधिक तिर्च्छालोक में जाने से विशेषाधिक, ऊर्ध्व गति में एक योजन पूर्ण जावे इस से विशेषाधिक. यहां कोई प्रश्न करे कि सामान्य से विशेषाधिकपना कहा है तब उस के नियामित भाग कैसे हो सकते हैं ? एक समय में जितना क्षेत्र चमरेन्द्र अधो गति में उल्लंघता है उतना क्षेत्र शक्रेन्द्र दो समय में उल्लंघता है और वज्र तीन समय में उल्लंघता है. इस तरह शक्रेन्द्र की अधोगति की अपेक्षा से वज्र के तीन भाग कम अधोगति हुई. शक्र का नीचे जानेका काल और वज्र का ऊंचा जाने का काल बराबर है इस से जाना जाता है कि जितने समय में शक्रेन्द्र नीचे जाता है उतने समय में वज्र ऊंचे जाता है. ऊर्ध्व व अधोगति के बीच में तिर्च्छी गति है. इन दोनों के बीच में तिर्च्छीगति रही हुई है. इन दोनों के बीच में एक गाऊ के तीन भाग करे ऐसे दश भागवाला तिर्च्छीगति का प्रमाण कहा ॥३७॥

शब्दार्थ

का उ० ऊर्ध्व उ० चडने का काल उ० उतरने का काल सं० संख्यात गुणा च० चमर का ज० जैसे स० शक्र का ण० विशेष स० सर्व से थोडा उ० उतरने का काल उ० उपर जाने का सं० संख्यात गणा व० वज्र की पु० पृच्छा गो० गौतम स० सर्व से थोडा उ० उपर जाने का उ० नीचे आने का वि० विशेपाधिक ॥ ३८ ॥ ए० इस व० वज्र का व० वज्र के अधिपति का च० चमर अ० असुरेंद्र का उ०

सूत्र

गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्करस देविंदस्स देवरण्णो उड्ढं उप्पयण काले, उवयणकाले संखेज्जगुणे, ॥ चमरस्सवि जहा सक्करस णवरं सव्वत्थोवे उवयणकाले, उप्पयणकाले संखेज्जगुणे ॥ वज्जस्स पुच्छा गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, उवयणकाले विसेसाहिए, ॥ ३८ ॥ एयस्सणं भंते ! वज्जस्स वज्जाहिवइस्स, चमरस्सय, असुरिंदस्स

भावार्थ

स्वामी	शक्र	वज्र	चमर
ऊर्ध्व	२४	१२	८
तिर्च्छा	१८	१०	१६
अधो	१२	८	२४

अब काल की अल्पाबहुत्व करते हैं. अहो भगवन् ! शक्रेंद्र को नीचे उतरने के काल में, ऊंचे चडने के काल में कोनसा अल्प, बहुत, तुल्य या विशेपाधिक है ? अहो गौतम ! शक्रेंद्र को ऊंचे जाने में सब से थोडा काल लगता है, क्यों की शक्र की ऊर्ध्व गति शीघ्र है. इस से नीचे उतरने का काल संख्यात गुना. चमरेंद्र को सब से थोडा नीचे उतरने का काल और उस से उपर जाने का काल संख्यात गुना. वज्र को सब से थोडा काल ऊंचे जाने में लगता है उस से नीचे आने में विशेपाधिक काल लगता है ॥ ३८ ॥ अब

शब्दार्थ उ० ऊर्ध्व उ० जावे ए० एक स० समय में तं० उस को व० वज्र दो० दो से च० चमर ति० तीन से न० विशेष वि० विशेषाधिक का०कहना ॥ ३७ ॥ स० शक्र दे० देवेंद्र का उ० नीचे आनेका उ० उपर जानेका का० काल क० कितना क० किससे अ० अल्प गो० गौतम स० सर्व थोडा स० शक्र दे० देवेंद्र

सूत्र उप्पयइ एक्केणं समएणं तं वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं, वज्जं जहा सक्कस्स तहेव, नवरं विसेसाहियं कायव्वं ॥ ३७ ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उव्वयण-कालस्सय उप्पयणकालस्सय कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ?

भावार्थ कल्पना से तीसरा भाग कम एक योजन अधोलोक में जावे. उक्त आठ भाग में से एक गाऊ का तीन भाग करे ऐसे दो भाग अधिक तिर्च्छालोक में जाने से विशेषाधिक, ऊर्ध्व गति में एक योजन पूर्ण जावे इस से विशेषाधिक. यहां कोई प्रश्न करे कि सामान्य से विशेषाधिकपना कहा है तब उस के नियमित भाग कैसे हो सकते हैं ? एक समय में जितना क्षेत्र चमरेन्द्र अधो गति में उल्लंघता है उतना क्षेत्र शक्रेन्द्र दो समय में उल्लंघता है और वज्र तीन समय में उल्लंघता है. इस तरह शक्रेन्द्र की अधोगति की अपेक्षा से वज्र के तीन भाग कम अधोगति हुई. शक्र का नीचे जानेका काल और वज्र का ऊंचा जाने का काल बराबर है इस से जाना जाता है कि जितने समय में शक्रेन्द्र नीचे जाता है उतने समय में वज्र ऊंचे जाता है. ऊर्ध्व व अधोगति के बीच में तिर्च्छी गति है. इन दोनों के बीच में तिर्च्छीगति रही हुई है. इन दोनों के बीच में एक गाऊ के तीन भाग करे ऐसे दश भागवाला तिर्च्छीगति का प्रमाण कहा ॥३७॥

पदार्थ

हणाया म० मनसंकल्प चिं० चिंताशोक सा० सागर में सं० प्रविष्ट क० करतल में प० रहा हुवा मु० मुख अ० आर्तध्यान उ० ध्याते भू० भूमि में दि० दृष्टि झि० ध्यानकरे ॥४०॥ तं० तब तं० उन च० चमर अ० असुरेंद्र को सा० सामानिक देव ओ० हणाया म० मनसंकल्प जा० यावत् झि० ध्यानकरते पा० देखकर क० करतल जा० यावत् व० बोले कि० क्या दे० देवानुप्रिय उ० हणाया म० मनसंकल्प जा० यावत् झि०

सूत्र

सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि उवहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्ठे करयल पल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए, भूमिगयदिट्ठीए झियाइ ॥ ४० ॥ तएणं तं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसंकप्पं जाव झियाइमाणं पासइ पासइत्ता करयल जाव एवं वयासी किण्हं देवाणुप्पिया उवहयमणसंकप्पा जाव झियायह ॥ ४१ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया ते सामाणिय-

भावार्थ

असुरेंद्र वज्र भयसे मुक्त हुवा, और शक्रेंद्र देवेंद्र से अपमान कराया हुवा, चमर चंचा राज्यधानी में सुधर्मा सभा में चमर नामक सिंहासन पर बैठा हुवा व मन का अभिमान हणाने से शोक सागर में डुबा हुवा गंडस्थलपर हथेली रखकर व भूमि पर दृष्टि रखकर आर्तध्यान करने लगा ॥४०॥ तब चमर असुरेंद्र की परिषदा के सामानिक देवोंने चमरेन्द्रको ऐसा आर्तध्यान करता हुवा देखकर पूछा कि अहो देवानुप्रिय! आप क्यों ऐसा आर्तध्यान करते हो ? ॥४१॥ उस समय में चमर नामक असुरेंद्रने उन सामानिक परिषदा के

शब्दार्थ नीचे आने का उ० उपर जाने का क० कितना क० किस से अ० अल्प ॥ ३९ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र व० वज्र का भ० भय से वि० मुक्त स० शक्र दे० देवेंद्र से व० बहुत अ० अपमान से अ० अपमानित हुवा च० चमर चंचा रा० राज्यधानी की स० सुधर्मा सभा में चं० चमर सीं० सिंहासनपे उ०

सूत्र

असुररण्णो उवयणकालस्सय, उप्पयणकालस्सय, कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा ४, ? गोयमा ! सक्कस्सय उप्पयणकाले चमरस्सय उवयणकाले एसणं दोण्हवि तुल्ले, सव्वत्थोवे सक्कस्सय उवयण काले, वजस्सय उप्पयणकाले एसणं दोण्हवि तुल्ले संखेज्जगुणे, चमरस्सय उप्पयणकाले वज्जस्सय उवयणकाले एसणं दोण्हवि तुल्ले विसेसाहिए ॥ ३९ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के सक्केणं देविंदेणं देवरण्णो महया अवमाणेणं अवमाणिए समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सभाए

भावार्थ

तीनों की परस्पर अल्पाबहुत्व करते हैं अहो भगवन् ! वज्र, वज्राधिपति जो शक्र और चमर इन तीनों को उपर, नीचे जाने का काल में अल्प, बहुत्व तुल्य या विशेषाधिक यह किस प्रकार है ? अहो गौतम ! शक्र को उपर जाने का काल और चमर को नीचे जानेका काल परस्पर तुल्य व सब से थोडा, इस से शक्र का नीचे उतरने का और वज्र का उपर जाने का काल परस्पर तुल्य और संख्यात गुना इस से चमर का उपर जाने का और वज्र का नीचे आने का काल परस्पर तुल्य और विशेषाधिक ॥ ३९ ॥ अब चमर

सूत्र

ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु भंते! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए जाव तं भद्दणं भवतु देवाणुप्पियाणं जस्संमि पभावेण आकिट्ठे जाव विहरामि. तं खामेमि णं देवाणुप्पिया जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता जाव बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसेइ उवदंसेइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए एवं खलु गोयमा! चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, ठिई सागरोवमं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिइ ॥४२॥ किं पत्तियणं भंते!

भावार्थ

शोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शीला पटपर मेरी पास आया और मुझे वंदना नमस्कार कर ऐसा कहा अहो भगवन्! आपकी नेश्राय से मैं शक्र देवेन्द्र की आसातना करने को गया यावत् आपका कल्याण होवो कि आप के प्रभाव से मैं बाधा पीडा रहित फीरता हूं. इस से अहो देवानुप्रिय! आप की मैं क्षमा चाहता हूं यावत् ईशान कौन में गया और बत्तीस प्रकार के नाटक बताकर जिस दिशा से आया था उसी दिशा में गया. इस तरह अहो गौतम! चमर असुरेन्द्र को ऐसी दीव्य देवर्द्धि प्राप्त हुई है. स्थिति एक सागरोपम की है और महा विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होवेगा यावत् सब दु,खों का अंत करेगा ॥ ४२ ॥

शब्दार्थ ध्याते हो ॥ ४१ ॥ पूर्ववत् ॥ ४२ ॥ किं० किस प० प्रयोजन से भं० भगवन् अ० असुर कुमार देव उ०

सूत्र पारिसोववण्णए देवे एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया मए समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए. तएणं तेणं परिकुविएणं समाणेणं ममं वहाए वज्जे निसिट्ठे, तं भद्दणं भवतु देवाणुप्पिया समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्संमि पभावेण अकिट्ठे अव्वाहिए अपरिताविए इह मागए, इह समोसढे, इह संपत्ते, इहेव अज्ज उवसंपजित्ताणं विहरामि तं गच्छामोणं देवाणुप्पिया समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो तिकट्टु चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव सव्विड्ढीए जाव जेणेव असोगवर पायवे जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता.

भावार्थ देवों को ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय ! मैंने श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की नेश्राय से शक्र देवेंद्र को भ्रष्ट करनेकी इच्छा की इससे उसने क्रोधित होकर मेरा वध करने को वज्र छोडा. अहो देवानुप्रिय! उन महावीर स्वामी का कल्याण होवो कि जिनके प्रभाव से मैं क्लिष्टता, बाधा, परितापना रहित यहांपर आया हुवा हूं, यहांपर समोसर्या हूं यावत् यहां पर प्रशान्त बना हुवा विचरता हूं. इस से अपन श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीकी पास जावे और उन को वंदना नमस्कार करे यावत् उनकी पर्युपासना करे. इस से चौसठ हजार सामानिक यावत् सब ऋद्धि सहित सुंसुमार नगर के अशोक वन खंड में अ

सूत्र

ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु भंते! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए जाव तं भद्दणं भवतु देवाणुप्पियाणं जस्संमि पभावेण आकिट्ठे जाव विहरामि. तं खामेमि णं देवाणुप्पिया जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता जाव बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसेइ उवदंसेइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए एवं खलु गोयमा ! चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, ठिई सागरोवमं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिइ ॥९२॥ किं पत्तियणं भंते !

भावार्थ

शोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शीला पटपर मेरी पास आया और मुझे वंदना नमस्कार कर ऐसा कहा अहो भगवन् ! आपकी नेश्राय से मैं शक्र देवेन्द्र की आसातना करने को गया यावत् आपका कल्याण होओ कि आप के प्रभाव से मैं बाधा पीडा रहित फीरता हूं. इस से अहो देवानुप्रिय ! आप की मैं क्षमा चाहता हूं यावत् ईशान कौन में गया और बत्तीस प्रकार के नाटक बताकर जिस दिशा से आया था उसी दिशा में गया. इस तरह अहो गौतम ! चमर असुरेन्द्र को ऐसी दीव्य देवर्द्धि प्राप्त हुई है. स्थिति एक सागरोपम की है और महा विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होवेगा यावत् सब दु,खों का अंत करेगा ॥ ४२ ॥

शब्दार्थ भद्रिक जा० यावत् प० पर्युपासना करते एं० ऐसे व० बोले क० कितनी भं० भगवन् कि० क्रिया प० प्ररूपी मं० मंडितपुत्र पं० पांच क्रिया प० प्ररूपी का० कायिकी अ० अधिकरणि की पा० प्रद्वेषिकी पा० पारितापनिकी पा० प्राणातिपात क्रिया ॥ १ ॥ का० कायिकी भं० भगवन् कि० क्रिया क० कितने

सूत्र पज्जुवासमाणे एवं वयासी कइणं भंते किरियाओ पण्णत्ताओ ? मंडियपुत्ता ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया ॥ १ ॥ काइयाणं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता !

भावार्थ था. यहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का मंडितपुत्र नामक शिष्य पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! क्रियाओं कितनी कही हैं ? अहो मंडित पुत्र ! कर्म के हेतु रूप क्रिया के पांच भेद कहे हैं. १ शरीर से होवे सो कायिकी क्रिया २ खड्ग शस्त्रादि अधिकरण से होवे सो अधिकरणिकी ३ मत्सरभाव से होवे सो प्रद्वेषिकी ४ अन्य को परितापना (दुःख) देने से होवे सो परितापनिकी और ५ प्राणों की घात करने से होवे सो प्राणातिपातिकी क्रिया ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कायिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? कायिकी क्रिया के दो भेद १ अनुपरत कायिकी क्रिया-प्रत्याख्यान करके

प्रकार की मं० मंडितपुत्र दु० दोप्रकार की अ० अनुपरत कायक्रिया दु० दुप्रयुक्त कायक्रिया ॥ १ ॥ अ० अधिकरणिकी भं० भगवन् कि० क्रिया क० कितने प्रकार की मं० मंडित पुत्र दू० दोप्रकार की सं० संयोजन अधिकरण क्रिया नि० निवर्तन अधिकरण क्रिया ॥ ३ ॥ पा० प्रद्वेषिकी भं० भगवन् किं० क्रिया क० कितने प्रकार की मं० मंडितपुत्र दु० दोप्रकार की जी० जीव प्रद्वेषिकी अ० अजीव प्रद्वेषिकी

सूत्र

दुविहा पण्णत्ता, तंजहा अणुवरयकाय किरियाय, दुप्पउत्तकाय किरियाय ॥ २ ॥ अहिगराणियाणं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संजोयणाहिगरण किरियाय, निव्वत्तणाहिगरण किरियाय ॥ ३ ॥ पाओसियाणं भंते ! किरिया कइविहा प० ? मंडियपुत्ता ! दुविहा प० तंजहा जीव पाओसियाय अजीव पाओसियाय ॥ ४ ॥ पारियावणियाणं भंते ! किरिया कइ-

भावार्थ

पाप से निवर्तना नहीं सो और दुप्रयुक्त सो दुष्ट प्रयोग के सद्भाव से ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! अधिकरणिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? अहो मंडित पुत्र ! हल घर वगैरह में जो कोई यंत्रादि न होवे उस का संयोग मीलाने से जो क्रिया लगे सो संयोजणाधिकरण क्रिया और खड्गादि नविन उत्पन्न करना सो निवर्तनाधिकरण क्रिया ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! प्रद्वेषिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? अहो मंडितपुत्र ! जीव पर मत्सर भावरखे सो जीव प्रद्वेषिकी और अजीव पर मत्सर भाव रखे सो अजीव

शब्दार्थ भद्रिक जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसे व० बोले क० कितनी भं० भगवन् कि० क्रिया प० प्ररूपी मं० मंडितपुत्र पं० पांच क्रिया प० प्ररूपी का० कायिकी अ० अधिकरणि की पा० प्रद्वेपिकी पा० पारितापनिकी पा० प्राणातिपात क्रिया ॥ १ ॥ का० कायिकी भं० भगवन् कि० क्रिया क० कितने

मूत्र पज्जुवासमाणे एवं वयासी कइणं भंते किरियाओ पण्णत्ताओ ? मंडियपुत्ता ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया ॥ १ ॥ काइयाणं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता !

भावार्थ था. यहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत श्री श्रमण भगवंत महावीरस्वामी का मंडितपुत्र नामक शिष्य पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! क्रियाओं कितनी कही हैं ? अहो मंडित पुत्र ! कर्म के हेतु रूप क्रिया के पांच भेद कहे हैं. १ शरीर से होवे सो कायिकी क्रिया २ खड्ग शस्त्रादि अधिकरण से होवे सो अधिकरणिकी ३ मत्सरभाव से होवे सो प्रद्वेपिकी ४ अन्य को परितापना (दुःख) देने से होवे सो परितापनिकी और ५ प्राणों की घात करने से होवे सो प्राणातिपातिकी क्रिया ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कायिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? कायिकी क्रिया के दो भेद १ अनुपरत कायिकी क्रिया-प्रत्याख्यान करके

शब्दार्थ

कि० क्रिया ॥ ७ ॥ अ० है भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को कि० क्रिया क० करे हं० हां अ० है क० कैसे भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ कि० क्रिया क० करे मं० मंडितपुत्र प० प्रमाद प्रत्ययिक जो० योग निमित्त ॥ ८ ॥ जी० जीव भं० भगवन् स० सदैव ए० कम्पे वे० विशेष कम्पे च० चले फं० थोडाकंपे घ० सबदिशा में चले खु० क्षोभपामें उ० उदीरे तं० उस उस भाव को प० परिण

सूत्र

पुव्विं किरिया पच्छा वेयणा णो पुव्विं वेयणा पच्छाकिरिया ॥७॥ अत्थिणं भंते समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि. कहिणं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? मंडियपुत्ता ! पमायपच्चया, जोगनिमित्तंच. एवं खलु समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ॥८॥ जीवेणं भंते ! सयासमियं एयइ, वेयइ, चलइ, फंदइ, घट्टइ, खुब्भइ, उदीरेइ, तंतं

भावार्थ

पीछे क्रिया होती है ? अहो मण्डितपुत्र ! पहिले कर्मबंध के कारण भूत क्रिया होती है फीर उन का उदय होने से वेदना होती है. इस से पहिले क्रिया और पीछे वेदना होती है; परंतु पहिले वेदना और पीछे क्रिया नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्या क्रिया करते हैं ? हां मण्डित पुत्र ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्रिया करते हैं. अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ कैसे क्रिया करते हैं ? अहो मण्डित पुत्र ! प्रमाद प्रत्ययिक और योग निमित्त श्रमण निर्ग्रंथ क्रिया करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या चले, विशेष चले, एक स्थान से अन्य स्थान जावे, स्पर्श करे, क्षुब्ध होवे

शब्दार्थ

॥ ४ ॥ पा० पारितापनिकी दु० दोप्रकार की स० अपने हस्त से प० दुसरे के हस्त से ॥ ५ ॥ पा० प्रणातिपातिकी क्रिया दु० दोप्रकार की स० स्वहस्त प्राणातिपात क्रिया प० परहस्त प्राणातिपात क्रिया ॥ ६ ॥ पु० पहिली भं० भगवन् किं० क्रिया प० पीछे वे० वेदना पु० पहिली वे० वेदना प० पीछे कि० क्रिया मं० मंडित पुत्र पु० पहिली क्रिया प० पीछे मं०वेदना णो० नहीं पु० पहिली वेदना प० पीछे

सूत्र

विहा प० ? मंडियपुत्ता ! दुविहा प० तंजहा सहत्थ पारियावणियाय, परहत्थ पारियावणियाय, ॥ ५ ॥ पाणाइवाय किरियाणं भंते ! पुच्छा मंडियपुत्ता ! दुविहा प० तंजहा सहत्थ पाणाइवायाकिरिया परहत्थ पाणाइवाय किरियाय ॥ ६ ॥ पुव्विं भंते ! किरिया पच्छा वेयणा ; पुव्विं वेयणा पच्छा किरिया ? मंडियपुत्ता !

भावार्थ

प्रद्वेषिकी ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! परितापनिकी क्रिया के कितने भेद ? अहो मण्डित पुत्र ! परितापनिकी क्रिया के दो भेद १ स्वहस्त मे स्वतः को तथा अन्य को परितापना उत्पन्न करे और २ पर हस्त से स्वतः को तथा अन्य को परितापना उत्पन्न करे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! प्राणातिपातिकी क्रिया के कितने भेद ! प्राणातिपातिकी क्रिया के दो भेद १. स्वहस्त से स्वतः की तथा अन्य की घात करे सो और २ पर हस्त से स्वतः की तथा अन्य की घात करे ॥ ६ ॥ क्रिया मे वेदना होती है इस से वेदना का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! पहिले क्रिया और पीछे वेदना होती है अथवा पहिले वेदना होती है और

शब्दार्थ कि० क्रिया ॥ ७ ॥ अ० हे भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को कि० क्रिया क० करे हं० हां अ० है क० कैसे भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ कि० क्रिया क० करे मं० मंडितपुत्र प० प्रमाद प्रत्ययिक जो० योग निमित्त ॥ ८ ॥ जी० जीव भं० भगवन् स० सदैव ए० कम्पे वे० विशेष कम्पे च० चले फं० थोडाकंपे घ० सर्वदिशा में चले खु० क्षोभपावे उ० उदीरे तं० उस उस भाव को प० परिण

सूत्र पुव्विं किरिया पच्छा वेयणा णो पुव्विं वेयणा पच्छाकिरिया ॥७॥ अत्थिणं भंते समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि. कहिणं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? मंडियपुत्ता ! पमायपच्चया, जोगनिमित्तंच. एवं खलु समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ॥८॥ जीवेणं भंते ! सयासमियं एयइ, वेयइ, चलइ, फंदइ, घट्टइ, खुब्भइ, उदीरेइ, तंतं

भावार्थ पीछे क्रिया होती है ? अहो मण्डितपुत्र ! पहिले कर्मबंध के कारण भूत क्रिया होती है फीर उन का उदय होने से वेदना होती है. इस से पहिले क्रिया और पीछे वेदना होती है; परंतु पहिले वेदना और पीछे क्रिया नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्या क्रिया करते हैं ? हां मण्डित पुत्र ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्रिया करते हैं. अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ कैसे क्रिया करते हैं ? अहो मण्डित पुत्र ! प्रमाद प्रत्ययिक और योग निमित्त श्रमण निर्ग्रंथ क्रिया करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या चले, विशेष चले, एक स्थान से अन्य स्थान जावे, स्पर्श करे, क्षुब्ध होवे

शब्दार्थ

में हं० हां मं० मंडितपुत्र जी० जीव स० सदैव ए० कंपे जा० यावत् प० परिणमे ॥ ९ ॥ जा० जितना भं० भगवन् जी०जीव स०सदैव जा०यावत् प०परिणमता ता० उतना त०उस जीव की अं० अंत में अं० अक्रिया भ० होवे णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् मं० मंडितपुत्र जा० जितना से० वह जी० जीव स० सदैव जा० यावत् प० परिणमे ता० उतना से० वह जी० जीव आ० आरंभ करे सा० सारंभ करे स० समारंभ करे आ० आरंभ में व० वर्ते सा० सारंभ में व० वर्ते

सूत्र

भावं परिणमइ ? हंता मंडियपुत्ता ! जीवेणं सयासमियं एयइ जाव तंतं भावं परिणमइ ॥ ९ ॥ जावंचणं भंते ! से जीवे सयासमियं जाव परिणमइ तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, जावंचणं से जीवे सयासमियं जाव अंते अंतकिरिया न भवइ ? मंडियपुत्ता ! जावंचणं से जीवे सयासमियं जाव परिणमइ तावंचणं से जीवे आरंभइ, सारंभइ, समा-

भावार्थ

उदीरे वगैरह पूर्वोक्त भावों में परिणवे ? हां मण्डित पुत्र ! सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त चलता है यावत् पूर्वोक्त भावों में परिणमता है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! जहां लग सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त चलता है यावत् पूर्वोक्त भावों में परिणमता है वहां लग क्या उन को अंत क्रिया होती है ? यह अर्थ योग्य नहीं है. किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो मण्डित पुत्र ! जहां लग सयोगी जीव

शब्दार्थ स० समारंभ में व० वर्ते आ० आरंभ करता सा० सारंभ करता स० समारंभ करता आ० आरंभ में सा० सारंभ में स० समारंभ में व० वर्तता व० वहुत पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व के दुःख देने से सो० शोचकराने से जू० जूरणा कराने से ति० आक्रंद कराने से पि० मारने से प० परितापना उपजाने से व० वर्ते से० वह ते० इसलिये मं० मंडित पुत्र ॥ १० ॥ से० वह ज० जैसे के० कोई

सूत्र रंभइ; आरंभे वट्टइ, सारंभेवट्टइ, समारंभेवट्टइ; आरंभमाणे, सारंभमाणे, समारंभमाणे, आरंभेवट्टमाणे, सारंभेवट्टमाणे, सामारंभेवट्टमाणे, बहूणं पाणाणं, भूयाणं, जीवाणं, सत्ताणं दुक्खावणताए, सोयावणताए, जूरावणताए, तिप्पावणताए, पिट्टावणताए, परियावणताए वट्टइ से तेणट्ठेणं मंडियपुत्ता! एवं वुच्चइ, जावंचणं से जीवे सयासमियं एयइ जाव परिणमइ, तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया न भवइ ॥ १० ॥

भावार्थ सदैव चलता है यावत् उन पूर्वोक्त भावों में परिणमता है वहां लग वह जीवों का आरंभ, सारंभ व समारंभ करता है, आरंभ, सारंभ व समारंभ में वर्तता है. इस तरह आरंभ, सारंभ व समारंभ करता हुवा यावत् उन में प्रवर्तता हुवा प्राण, भूत, जीव व सत्वोंको दुःख, शोक, झुरणा, वेदना, पिटना व परितापना करने में प्रवर्तता है. इस से अहो मण्डित पुत्र! ऐसा कहा गया है कि सयोगी जीव जहां लग चलता है यावत् उन पूर्वोक्त भावों में परिणमता है वहांलग उन को अंत क्रिया नहीं होती है ॥ १० ॥ अहो

शब्दार्थ पुरुष मु० सुका तु० तृण कापूला जा० अग्नि में प० डाले से० वह मं० मंडितपुत्र सु०० शुष्क त० तृणका पुला आ० अग्नि में प० डालते खि० शीघ्र म० जल जावे हं० हां म० जल जावे, ज० जैसे के० कोई पुरुष त० तप्त अ० लोहके गोलेप उ० पानी का बिंदु प० डाले से० वह मं० मंडितपुत्र उ० पानी का बिन्दु त०

सूत्र जीवेणं भंते! सयासमियं णो एयइ जाव णो तंतं भावं परिणमइ ? हंता मंडियपुत्ता! जीवेणं सयासमियं जाव णो परिणमइ जावंचणं भंते ! से जीवे नो एयइ जाव नो तंतं भावं परिणमइ, तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ? हंता जाव भवइ ॥ से केणट्ठेणं जाव भवइ ? मंडियपुत्ता ! जावंचणं च से जीवे सयासमियं णोएयइ जाव परिणमइ, तावंचणं से जीवे णो आरंभइ, णोसारंभइ, णोसमारंभइ, णो आरंभेवट्टइ, णो सारंभेवट्टइ णो समारंभेवट्टइ, अणारंभमाणे, असारंभमाणे,

भावार्थ भगवन् ! अयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या नहीं चलते हैं यावत् उक्त भावों में नहीं परिणमते हैं ? हां मण्डित पुत्र ! वे अयोगी जीव नहीं चलते हैं यावत् पूर्वोक्त भावों में नहीं परिणमते हैं. अहो भगवन् ! जहांलग वे जीवों नहीं चलते हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग उन को क्या अंत क्रिया होती है ? हां मण्डित पुत्र ! उन को अंत क्रिया होती है. किस तरह उन को अंत क्रिया होती है ? अहो मण्डित पुत्र ! जहांलग वे जीव चलते नहीं हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग वे आरंभ, सारंभ

शब्दार्थ

तप्त अ० लोहे के कडे पे प० डाला हुवा खि० शीघ्र वि० नाशपावे हं० हां वि० विनाश पावे ज० जैसे ह० द्रह पु० पूर्ण पु० पूर्ण प्रमाण वो० उछलता वो० उल्लास पामता स० भरा हुवा चि० होवे अ० अब के० कोई पुरुष तं० उस ह० द्रह में ए० एक बडा ना० नाव स० शतछिद्रवाली ओ० रखे मं० मंडितपुत्र सा०

सूत्र

असमारंभमाणे; आरंभे अवट्टमाणे, सारंभे अवट्टमाणे, समारंभे अवट्टमाणे बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खावणत्ताए, जाव अपरियावणत्ताए वट्टइ, से जहा नामए केइपुरिसे सुक्कतणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, सेणूणं मंडियपुत्ता! से सुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसा विज्जइ ? हंता मसमसा विज्जइ ॥ सेजहा नामए केइपुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदयबिंदु पक्खिवेज्जा ? सेनूणं मंडियपुत्ता ! से उदयबिन्दू तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव

भावार्थ

व समारंभ नहीं करते हैं यावत् उन में नहीं परिणमते हैं. इस तरह आरंभ, सारंभ व समारंभ नहीं करने वाला यावत् उस में नहीं प्रवर्तनेवाला प्राण, भूत, जीव व सत्वों को दुःख यावत् परितापना नहीं करता है. परंतु योग निरुंधन रूप शुक्ल ध्यान से सकल कर्म ध्वंस रूप अंत क्रिया करता है. उस के ऊपर तीन दृष्टांत कहते हैं. १. जैसे सूका हुवा घास अग्नि में डालने से क्या भस्म होता है ! हां भगवन् ! वह भस्म होता है, अहो मण्डित पुत्र ! तप्त लोहे पर पानी का बिन्दु पडने से क्या वह शीघ्र नष्ट होता है ? हां भग-

शब्दार्थ पुरुष सु० सुका तृ० तृण कापूला जा० अग्नि में प० डाले मं० वह मं० मंडितपुत्र सु०० शुष्क त० तृणका पुला आ० अग्नि में प० डालते खि० शीघ्र म० जल जावे हं० हां म० जल जावे, ज० जैसे के० कोई पुरुष त० तप्त अ० लोहेके गोलेप उ० पानी का बिंदु प० डाले से० वह मं० मंडितपुत्र उ० पानी का बिन्दु त०

सूत्र जीवेणं भंते! सयासमियं णो एयइ जाव णो तंतं भावं परिणमइ ? हंता मंडियपुत्ता ! जीवेणं सयासमियं जाव णो परिणमइ जावंचणं भंते ! से जीवे नो एयइ जाव नो तंतं भावं परिणमइ, तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ? हंता जाव भवइ ॥ से केणट्ठेणं जाव भवइ ? मंडियपुत्ता ! जावंचणं च से जीवे सयासमियं णोएयइ जाव परिणमइ, तावंचणं से जीवे णो आरंभइ, णोसारंभइ, णोसमारंभइ, णो आरंभेवट्टइ, णो सारंभेवट्टइ णो समारंभेवट्टइ, अणारंभमाणे, असारंभमाणे,

भावार्थ भगवन् ! अयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या नहीं चलते हैं यावत् उक्त भावों में नहीं परिणमते हैं ? हां मण्डित पुत्र ! वे अयोगी जीव नहीं चलते हैं यावत् पूर्वोक्त भावों में नहीं परिणमते हैं. अहो भगवन् ! जहांलग वे जीवों नहीं चलते हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग उन को क्या अंत क्रिया होती है ? हां मण्डित पुत्र ! उन को अंत क्रिया होती है. किस तरह उन को अंत क्रिया होती है ? अहो मण्डित पुत्र ! जहांलग वे जीव चलते नहीं हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग वे आरंभ, सारंभ

शब्दार्थ पानी में उ० नीकालते खि० शीघ्र उ० उपरं उ० आवे हं० हां उ० आवे ए० ऐसे मं० मंडितपुत्र अ० अत्मा से संवृत अ० अनगार इ० ईर्या समिति वाले जा० यावत् वं० गुप्तब्रह्मचारी आ० उपयोग पूर्वक ग० जाते चि० खडा रहते नि० वैठते तु० सोते व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण गे० ग्रहण करते नि० रखते जा० यावत् च० चक्षु पक्ष नि० निपात वे० बेमात्रा सु० सूक्ष्म इ० ईर्या पथिक क्रिया क० करे सा० वह प० प्रथम समय में ब० बंधी पु० स्पर्शी बि० दूसरा समय में वे० वेदी त०

सूत्र अत्ता संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स जाव बंभगुत्तयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स, चिट्ठमाणस्स. निसियमाणस्स, तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुंछणं गेण्हमाणस्स निक्खेवमाणस्स जाव चक्खुपम्ह निवायमवि बेमाया सुहुमा इरियावहिया किरिया कज्जइ, सा पढमसमय बद्धा पुट्ठा, वितिय समय वेइया, तइय समय निज्जरिया, सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेदिया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्मं-

भावार्थ साफ करनो क्या वह नावा शीघ्र पानीपर आती है ? हां भगवन्! खाली नावा पानीपर आती है. वैसेही अहो मंडित पुत्र ! आत्मा को संवरने वाले, ईर्यासमिति यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य पालने वाले, यत्ना पूर्वक चलने वाले, खडे रहने वाले, वैठने वाले, सोने वाले, वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण ग्रहण करने वाले, रखने वाले अनगार को उन्मेष निमेष मात्र ईर्या पथिक क्रिया लगती है. उसक्रिया का प्रथम समयमें बंध होता है

शब्दार्थ वह नाव उ० उस आ० आश्रव द्वार से आ० भरी हुई पु० पूर्ण वो० उछलती वो० उल्लास पामती स० भरी हुइ चि० रहे हं० हां चि० रहे के० कोई पुरुष ता० उस नाव को स० सब बाजु आ० आश्रव द्वार पि० ढांक कर ना० नाव का उ० बरतन से उ० पानी उ० नीकाले सा० वह ना० नाव तं० उस उ०

सूत्र

विद्धंसमागच्छइ ? हंता विद्धंसमागच्छइ ॥ से जहा नामए हरएसिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठइ, अहेणं केइपुरिसे तंसि हरयंसि एगंमहं णावं सयासयंसयच्छिद्दं उग्गाहेज्जा ? सेनूणं मंडियपुत्ता ! सा नावा तिहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ ॥ अहेणं केइपुरिसे तीसे नावाए सव्वओ समंता आसवदाराइं पिहेइ २ त्ता नावा उरिंसचणएणं उदयं उरिंसचेज्जा ? सेणूणं मंडियपुत्ता ! सा नावा तंसि उदयंसि उस्सित्तंसि समाणंसि खिप्पामेव उड्ढं उदाइ ? हंता उदाइ, एवामेव मंडिय पुत्ता !

भावार्थ

न्न ! वह विन्दु शीघ्र नष्ट होता है. और जैसे बहुत परिपूर्ण घट समान एक द्रह है. पानी बाहिर नीकल रहा है ऐसा वह भराहुवा है. अब कोई पुरुष छिद्रवाली नावा इस मे डाले तो छिद्रसे नावा में पानी आने २ क्या वह नावा पानी के तल में जाकर बैठती है ? हां वह नावा छिद्रों से पानी भर जाने से तलेपर जाकर बैठती है. यदि कोई पुरुष उस के छिद्रों बंधकर के उस में रहा हुवा पानी नीकालकर

शब्दार्थ पानी में उ० नीकालते खि० शीघ्र उ० उपर उ० आवे हं० हां उ० आवे ए० ऐसे मं० मंडितपुत्र अ० अत्मा से संवृत अ० अनगार इ० ईर्या समिति वाले जा० यावत् वं० गुप्तब्रह्मचारी आ० उपयोग पूर्वक ग० जाते चि० खडा रहते नि० बैठते तु० सोते व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण गे० ग्रहण करते नि० रखते जा० यावत् च० चक्षु पक्ष नि० निपात वे० बेमात्रा सु० मूक्ष्म इ० ईर्या पथिक क्रिया क० करे सा० वह प० प्रथम समय में व० बंधी पु० स्पर्शी वि० दूसरा समय में वे० वेदी त०

सूत्र

अत्तत्ता संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स जाव बंभगुत्तयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स, चिट्ठमाणस्स, निसियमाणस्स, तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुंछणं गेण्हमाणस्स निक्खेवमाणस्स जाव चक्खुपम्ह निवायमवि बेमाया सुहुमा इरियावहिया किरिया कज्जइ, सा पढमसमय बद्धा पुट्ठा, बितिय समय वेइया, तइय समय निज्जरिया, सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेदिया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्मं-

भावार्थ साफ करनो क्या वह नावा शीघ्र पानीपर आती है ? हां भगवन्! खाली नावा पानीपर आती है. वैसेही अहो मंडित पुत्र ! आत्मा को संवरने वाले, ईर्यासमिति यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य पालने वाले, यत्ना पूर्वक चलने वाले, खडे रहने वाले, बैठने वाले, सोने वाले, वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण ग्रहण करने वालेद, रखने वाले अनगार को उन्मेष निमेष मात्र ईर्या पथिक क्रिया लगती है. उसक्रिया का प्रथम समयमें बंध होता है

शब्दार्थ

तीसरा समय नि० निर्जरी सा० वह ब० बंधी पु० स्पर्शी उ० उदीरी वे० वेदी नि० निर्जरी से० आगामिक काल में अ० अकर्म भ० होवे से० वह त० इसलिये ॥ ११ ॥ प० प्रमत्त संयति भं० भगवन् प० प्रमत्त संयम में व० वर्तता स० सर्व प० प्रमत्त अ० काल से के० कितना हो० होवे मं० मंडितपुत्र ए० एक जीव प० आश्री ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट दे० देशऊणा पु० पूर्वक्रोड णा० विविध जीव प० आश्री स० सर्व काल ॥ १२ ॥ अ० अप्रमत्त संयति भं० भगवन् अ० अप्रमत्त स० संयम में व०

सूत्र

वाव भवइ । से तेणट्ठेणं मंडियपुत्ता ! एवं वुच्चइ जाव चणं से जीवे सयासमियं नो एयइ जाव अंते अंतकिरिया ॥११॥ पमत्त संजयस्सणं भंते ! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वावियणं पमत्तद्धाकालओ केवचिरं होइ ? मंडिया ! एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा ॥ १२ ॥

दूसरे समय में वेदना होती है और तीसरे समय में नीर्जरा होती है. इस तरह बंध, स्पर्श, उदीरणा, वेदना, व निर्जरा होने से अनागत काल में कर्म रहित जीव होता है. इस से अहो मंडित पुत्र ! अयोगी जीव नहीं चलता है यावत् उन को अंतक्रिया होती है ऐसा कहा है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! प्रमत्त संयत गुण स्थान में रहने वाला प्रमत्त संयतीको सब काल आश्रित कितनी स्थिति है ? अहो मंडित पुत्र ? एक जीव आश्रित जघन्य एक समय उत्कृष्ट देशऊणी क्रोडपूर्व और बहुत जीव आश्री सदा काल रहते हैं. क्यों कि इस का विरह नहीं होता है वे महा विदेह क्षेत्र में सदैव रहते हैं. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! अप्रमत्त संयम

शब्दार्थ वर्तता अ० अप्रमत्त काल से के० कितना हो० होवे मं० मंडित ए० एक जीव प० आश्री ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट पु० पूर्वक्रोड दे० देशऊणा णा० विविध जीव प० आश्री स० सर्व काल ॥ १३ ॥ भं० भगवान् मं० मंडितपुत्र अ० अनगार स० श्रमण भं० भगवान् म० महावीर को न० नमस्कार कर सं० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ १४ ॥ भं० भगवान् गो० गौतम स०

सूत्र अप्पमत्त संजयस्सणं भंते ! अप्पमत्ता संजमे वट्टमाणस्स सव्वावियणं अप्पमत्तद्धाकालओ केवचिरं होइ ? मंडिया ! एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी-देसूणा णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं ॥ १३ ॥ सेवं भंते, भंतेत्ति भयवं मंडियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १४ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमं-

भावार्थ में रहनेवाला अप्रमत्त संयति सब काल आश्री कितने काल तक रहता है ? अहो मण्डितपुत्र ! एक जीव आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट देश ऊना पूर्व क्रोड; क्यों कि अप्रमत्त अवस्था में रहनेवाला जीव अंतर्मुहूर्त से पहिले काल नहीं करता है और आठ वर्ष कम क्रोड पूर्व सो केवल ज्ञान आश्री जानना. बहुत जीव आश्री निरंतर सब काल जानना. क्योंकि अप्रमत्त संयति सदैव पाते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! आप के वचन तथ्य हैं ऐसा कहकर श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना नमस्कार कर मण्डित

शब्दार्थ

तीसरा समय नि० निर्जरी मा० वह व० बंधी पु० स्पर्शी उ० उदीरी वे० वेदी नि० निर्जरी से० आगा-
मिक काल में अ० अकर्म भ० होवे से० वह ते० इसलिये ॥ ११ ॥ प० प्रमत्त संयति भं० भगवन् प०
प्रमत्त संयम में व०वर्तता स० सर्व प०प्रमत्त अ० काल से के० कितना हो० होवे मं० मंडितपुत्र ए०एक
जीव प० आश्री ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट दे० देशउणा पु० पूर्वक्रोड णा० विविध जीव
प० आश्री स० सर्व काल ॥ १२ ॥ अ० अप्रमत्त संयति भं० भगवन् अ० अप्रमत्त स० संयम में व०

सूत्र

वावि भवइ । से तेणट्ठेणं मंडियपुत्ता ! एवं वुच्चइ जाव चणं से जीवे सयासमियं
नो एयइ जाव अंते अंतकिरिया ॥११॥ पमत्त संजयस्सणं भंते ! पमत्तसंजमे वट्टमा-
णस्स सव्वावियणं पमत्तद्धाकालओ केवचिरं होइ ? मंडिया ! एगं जीवं पडुच्च जह-
ण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा ॥ १२ ॥

दूसरे समय में वेदना होती है और तीसरे समय में नीर्जरा होती है. इस तरह बंध, स्पर्श, उदीरणा, वेदना, व
निर्जरा होने से अनागत काल में कर्म रहित जीव होता है. इस से अहो मंडित पुत्र ! अयोगी जीव नहीं
चलता है यावत् उन को अंतक्रिया होती है ऐसा कहा है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! प्रमत्त संयत गुण
स्थान में रहने वाला प्रमत्त संयतीकी सब काल आश्रित कितनी स्थिति है. ? अहो मंडित पुत्र ? एक जीव
आश्रित जघन्य एक समय उत्कृष्ट देशऊणी क्रोडपूर्व और बहुत जीव आश्री सदा काल रहते हैं. क्यों कि
इस का विरह नहीं होता है वे महा विदेह क्षेत्र में सदैव रहते हैं. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! अप्रमत्त संयम

शब्दार्थ लोकस्थिति लो० लोकानुभाव ॥ ३ ॥ ३ ॥ ÷ ÷

अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा दे० देव को वे० वैक्रेय स० समुद्घात से स० नीकालता जा० यानरूप से जा० जाते को जा०जाने पा० देखे गो० गौतम अ०कितनेक दे० देवको पा० देखे नो० नहीं जा० यान को पा० देखे अ० कितनेक नो० नहीं दे० देवको नो० नहीं जा० यान को पा० देखे

रिया सम्मत्ता ॥ तइयसयस्स तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ३ ॥ * ॥

सूत्र अणगारेणं भंते भावियप्पा देवं वेउव्विय समुग्घाएणं समोहय जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं पासइ नो जाणं पासइ, अत्थेगइएणं जाणं पासइ नो देवं पासइ, अत्थेगइए देवंपि जाणंपि पासइ, अत्थे-

भावार्थ जानना. अहो भगवन् ! आप जो कहते हैं वह सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी विचरने लगे. यह क्रिया का अधिकार संपूर्ण हुवा यह तीसरे शतकका तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ३ ॥ ÷

तीसरे उद्देशे में क्रिया का अधिकार कहा. वह ज्ञानवंत को प्रत्यक्ष होती है सो बताते हैं. श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन्! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके विमानादि रूप बना कर जाते हुवे देव को भावितात्मा अनगार क्या ज्ञान से जानते हैं और दर्शन से देखते हैं ? यहां पर अवधिज्ञान की विचित्रता से चौभंगी जानना. १ कितनेक देव को देखते हैं परंतु विमान को नहीं देखते हैं २ कितनेक विमान को देखते हैं परंतु देव को नहीं देखते हैं ३ कितनेक देव व विमान दोनों

शब्दार्थ श्रमण भगवंत म० महावीर को न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले क० कैसे भं० भगवन् ल० लवण समुद्र चा० चतुर्दशी उ० अमावास्या पु० पूर्णिमा को अ० अपेक्षा से व० वृद्धिपावे हा० हानिपावे ज० जैसे जी० जीवा भिगम में ल० लवण समुद्र की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् लो०

सूत्र सइ, नमंसइत्ता एवं वयासी-कम्हाणं भंते ! लवणसमुद्दे चाउद्दसट्ठमुदिट्ठ पुण्णमासिणीसु अइरेगं वड्ढइवा हायइवा ? जहा जीवाभिगमे लवण समुद्द वत्तव्वया नेयव्वा ॥ जाव लोयट्ठिइ । लोयाणुभावे ॥१४॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ कि-

भावार्थ पुत्र संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ १४ ॥ भगवान् गौतम श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन्! अन्य तिथी की अपेक्षासे चतुर्दशी अमावास्या व पूर्णिमाको लवण समुद्र में पानी क्यों अधिक बढता है व क्षीण होता है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की चारों दिशी में चार महा पाताल कलश एक२ लक्ष योजन के ऊंडे कहे हैं. उनको तीन २ कांड है उन चारों कलश की बीच में एक २ हजार योजन के छोटे कलश की ९ लडों कही है. उन को भी तीन २ काण्ड हैं. उन के नीचे के काण्ड में वायु है, बीच के काण्ड में वायु और हवा है व उपर के काण्ड में पानी है. नीचे के काण्ड का वायु गुंजायमान होने से सोलह हजार योजन की दगमाले पर दो कोश पानी चढता है इस से इन तिथियों में पानी प्रसरता है वगैरह अधिकार जीवाभिगम सूत्र से

शब्दार्थ लोकस्थिति लो० लोकानुभाव ॥ ३ ॥ ३ ॥

अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा दे० देव को वे० वैक्रेय स० समुद्घात से स० नीकालता जा० यानरूप से जा० जाते को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम अ० कितनेक दे० देवको पा० देखे नो० नहीं जा० यान को पा० देखे अ० कितनेक नो० नहीं दे० देवको नो० नहीं जा० यान को पा० देखे

सूत्र रिया सम्मत्ता ॥ तइयसयस्स तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ३ ॥ * ॥

अणगारेणं भंते भावियप्पा देवं वेउव्विय समुग्घाएणं समोहय जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं पासइ नो जाणं पासइ, अत्थेगइएणं जाणं पासइ नो देवं पासइ, अत्थेगइए देवंपि जाणंपि पासइ, अत्थे-

भावार्थ जानना. अहो भगवन् ! आप जो कहते हैं वह सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी विचरने लगे. यह क्रिया का अधिकार संपूर्ण हुवा यह तीसरे शतकका तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ३ ॥

तीसरे उद्देशे में क्रिया का अधिकार कहा. वह ज्ञानवंत को प्रत्यक्ष होती है सो बताते हैं. श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन्! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके विमानादि रूप बना कर जाते हुवे देव को भावितात्मा अनगार क्या ज्ञान से जानते हैं और दर्शन से देखते हैं ? यहां पर अवधिज्ञान की विचित्रता से चौभंगी जानना. १ कितनेक देव को देखते हैं परंतु विमान को नहीं देखते हैं २ कितनेक विमान को देखते हैं परंतु देव को नहीं देखते हैं ३ कितनेक देव व विमान दोनों

शब्दार्थ ॥ १ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा दे० देवी को वि० वैक्रेय स० समुद्घात से स० किया हुवा यानरूप से जा० जाती जा० जाने पा० देखे गो० गौतम ए० ऐसे ही ॥ २ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा रु० वृक्ष की अं० अंतर पा० देखे बा० बाहिर पा० देखे

सूत्र गइए नो देवं पासइ नो जाणं पासइ ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा देविं विउव्विय समुग्घाएणं समोहिय जाणरूवेणं जायमाणिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! एवं चेव ॥ २ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा देवं सदेवीयं विउव्विय समुग्घाएणं समोहय जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं सदेवीयं पासइ, नो जाणं पासइ, एएणं अभिलावेणं चत्तारिभंगा ॥ ३ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ बाहिं पासइ चउभंगो, ॥ एवं किं मूलं पासइ,

भावार्थ को देखते हैं और ४ कितनेक देव व विमान दोनों को नहीं देखते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके यानरूप जाती हुई देवी को क्या भावितात्मा अनगार ज्ञान से जानते हैं व दर्शन से देखते हैं ? अहो गौतम ! देव जैसे यहां पर चौभंगी जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके यान रूप से देवी सहित जाते हुवे देव को भावितात्मा अनगार क्या ज्ञान से जानता है व दर्शन से देखता है ? अहो गौतम ! देव जैसे इस के भी चार भांगे जानना ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

च० चारभांगे ए० ऐसे किं० क्या मू० मूल को पा० देखे कं० कंदको पा० देखे च० चारभांगे मू० मूल को पा० देखे खं० स्कन्ध को पा० देखे च० चारभांगे ए० ऐसे मू० मूल से बी० बीज को सं० जोडना कं० कंद से स० सम्यक् सं० जोडना जा० यावत् बी० बीज को ए० ऐसे पु० पुष्प से बी० बीज को सं०

सूत्र

कंदं पासइ चउभंगो, मूलं पासइ खंधं पासइ चउभंगो, एवं मूलेणं बीजं संजोए-यव्वं एवं कंदणवि समं संजोएयव्वं जाव बीयं! एवं जाव पुप्फेण समं बीयं संजोएयव्वं

भावार्थ

अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार अवधिज्ञानादि लब्धि से क्या वृक्षको अंदरसे देखे या बाहिरसे ? अहो गौतम ! अवधि ज्ञान की विचित्रता से इसके चार भांगे होते हैं. १ कितनेक वृक्ष को अंदर से देखते हैं और बाहिर से नहीं देखते हैं २ कितनेक बाहिर से देखे परंतु अंदर से नहीं देखे ३ कितनेक अंदर से व बाहिर से देखे और ४ कितनेक अंदर से व बाहिर से नहीं देखे. ऐसे ही मूल और कंद के चार भांगे, मूल और स्कंध के चार भांगे, मूल और बीज के चार भांगे जानना. तैसे ही कंद और स्कंध, कंद और बीज, ऐसे ही पुष्प और बीज का जानना. ॥ ४ ॥ १ मूल २ कन्द ३ स्कन्ध ४ त्वचा ५ शाखा ६ प्रवाल ७ पत्र ८ पुष्प ९ फल और १० बीज. यह दश प्रकार की वनस्पति कही है. इन की द्विसंयोगी ४५ चौभंगी होती हैं १ मूल और कंद २ मूल स्कंध ३ मूल त्वचा ४ मूल शाखा ५ मूल प्रवाल ६ मूल पत्र ७ मूल पुष्प ८ मूल फल और ९ मूल बीज ये नव भांगे मूल के साथ वैसे ही कंद के

शब्दार्थ जोड़ना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बड़ा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० घूंसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शीबिका सं० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

सूत्र ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

भावार्थ ८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वीं चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ म० बडा प० पताका का सं० संस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० वडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को हं० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

सूत्र गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएणं विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियंरूवं वि-कुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूणं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणे-गाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए ग-च्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

भावार्थ योग्य नहीं है. वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का संस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है. अहो भगवन् ! वह क्या स्वतः की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वतः की ऋद्धि से जा सकती है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है. ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वतः के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

शब्दार्थ जोडना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० घूंसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शिबिका सं० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

सूत्र ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो. ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

भावार्थ ८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ म० बडा प० पताका का सं० संस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० बडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को हं० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

सूत्र गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएणं विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियंरूवं विकुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूणं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

भावार्थ योग्य नहीं है. वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का संस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है. अहो भगवन् ! वह क्या स्वतः की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वतः की ऋद्धि से जा सकती है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है. ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वतः के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

शब्दार्थ जोड़ना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० धूंसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शिविका सं० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

सूत्र ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ. चउभंगो. ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

भावार्थ ८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिविका का, वैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ

म० वडा प० पताका का सं० संस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० वडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को हं० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

सूत्र

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएणं विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियंरूवं विकुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूणं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

भावार्थ

योग्य नहीं है. वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का संस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है. अहो भगवन् ! वह क्या स्वतः की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वतः की ऋद्धि से जा सकती है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है. ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वतः के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

शब्दार्थ

जोड़ना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० वडा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० धूसरा गि० अबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शिबिका सं० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यहअर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

सूत्र

॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

भावार्थ

८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ म० बडा प० पताका का सं० संस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० बडा प० पताका रूप की वि० विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग० जाने को हं० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

सूत्र गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएणं विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियंरूवं वि-कुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूणं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागारांठियं रूवं विउव्वित्ता अणे-गाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए ग-च्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीएं गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

भावार्थ योग्य नहीं है. वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का संस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है. अहो भगवन् ! वह क्या स्वतः की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वतः की ऋद्धि से जा सकती है परंतु अन्य की ऋद्धिं से नहीं जासकनी है. ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वतः के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

शब्दार्थ जोड़ना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप पु० पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० धूंसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शिबिका सं० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

सूत्र ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो. ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए !

भावार्थ ८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ वा० वायुकाय प० पताका गो० गौतम वा० वायुकाय से० वह नो० नहीं सा० वह प० पताका ॥ ८ ॥ पं० समर्थ व० मेघ ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप जा० यावत् सं० रथरूप प० परिणमाने को

सूत्र

से नो खलु सा पडागा ॥ ८ ॥ पभूणं भंते ! वलाहगे एगंमहं इत्थिरूवंवा जाव संद-माणियरूवंवा परिणामेत्तए ? हंता पभू ॥ १३ ॥ पभूणं भंते ! वलाहए एगं महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? णो आयड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ. एवं णो आयकम्मुणा, परकम्मुणा नो आयप्पओगेणं, परप्पओगेणं, ऊसितोदयंवा गच्छइ, पयोदयवां गच्छइ, । से भंते किं वलाहए इत्थी ? गोयमा ! वलाहएणं से णो खलु सा इत्थी। एवं

भावार्थ उसे वायुकाया कहना परंतु पताका नहीं कहना. ॥ ८ ॥ अहो गौतम ! क्या मेघ एक बडा स्त्री का रूप यावत् शिविका का रूप परिणमाने में समर्थ है ? अथवा अनेक योजन तक जाने को समर्थ है ? हां भगवन् ! वह स्त्री यावत् शिविकाकारूप बनाने को समर्थ है. वह क्या स्वतः की ऋद्धि से या अन्य की ऋद्धि से जासकते हैं ? अहो गौतम ! वह मेघ अजीव होने से स्वतः की शक्ति से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य की शक्ति से जासकते हैं. वैसे ही स्वतः के कर्म से नहीं जासकते है परंतु अन्य के कर्मों से जा सकते हैं, स्वतः के प्रयोग से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य के प्रयोग से जाते हैं. अहो भगवन् !

शब्दार्थ ए० ऐसे आ० आत्म कम से आ० आत्म प्रयोग से भा० कहना ॥ ७ ॥ से० वह किं० क्या ऊ० ऊर्ध्व पताका जैसे ग० जावे प० नीचीपताका जैसे ग० जावे गो० गौतम ऊ० ऊर्ध्व पताका जैसे ग० जावे प० नीचीपताका जैसे ग० जावे से० वह भं० भगवन् किं० क्या ए० एक दिशा में प० पताका जैसे ग० जावे दु० दोनों दिशामें प० पताका जैसे ग० जावे गो० गौतम ए० एकदिशा में प० पताका जैसे ग० जावे नो० नहीं दु० दोनों दिशा में प० पताका जैसे ग० जावे से० वह भं० भगवन् किं० क्या

सूत्र आयकम्मुणावि, आयप्पयोगेवि भाणियव्वं ॥ ७ ॥ से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ, पतोदयं गच्छइ ? गोयमा ! ऊसिओदयंपि गच्छइ पयोदयंपि गच्छइ, ॥ से भंते ! किं एगओ पडागं गच्छइ, दुहओ पडागं गच्छइ ? गोयमा ! एगओ पडागं गच्छइ, नो दुहओ पडागं गच्छइ. ॥ से भंते ! किंवाउकाए पडागा ? गोयमा ! वाउकाएणं

भावार्थ जासकती है. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या वह वायुकाय ऊंची पताका के आकार से जाती है या नीची पताका के आकार से जाती है ? अहो गौतम ! ऊंची पताका के आकार से भी जाती है और नीची पताका के आकार से भी जाती है. अहो भगवन् ! क्या यह एक पताका या दो पताका से जाती है ? अहो गौतम ! एक पताका का रूप बनाकर जाती है परंतु दो पताका का रूप बनाकर नहीं जाती है. अहो भगवन् ! उसे क्या वायुकाय कहना या पताका कहना ? अहो गौतम !

शब्दार्थ — वा० वायुकाय प० पताका गो० गौतम वा० वायुकाय से० वह नो० नहीं सा० वह प० पताका ॥ ८ ॥ पं० समर्थ व० मेघ ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप जा० यावत् सं० रथरूप प० परिणमाने को

सूत्र — से नो खलु सा पडागा ॥ ८ ॥ पभूणं भंते ! वलाहगे एगंमहं इत्थिरूवंवा जाव संद-माणियरूवंवा परिणामेत्तए ? हंता पभू ॥ १३ ॥ पभूणं भंते ! वलाहए एगं महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? णो आयड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ. एवं णो आयकम्मुणा, परकम्मुणा नो आयप्पओगेणं, परप्पओगेणं, ऊसितोदयंवा गच्छइ, पयोदयंवा गच्छइ, । से भंते किं वलाहए इत्थी ? गोयमा ! वलाहएणं से णो खलु सा इत्थी। एवं

भावार्थ — जैसे वायुकाया कहना परंतु पताका नहीं कहना. ॥ ८ ॥ अहो गौतम ! क्या मेघ एक बडा स्त्री का रूप यावत् शिविका का रूप परिणमाने में समर्थ है ? अथवा अनेक योजन तक जाने को समर्थ है ? हां भगवन् ! वह स्त्री यावत् शिविकाकारूप बनाने को समर्थ है. वह क्या स्वतः की ऋद्धि से या अन्य की ऋद्धि से जासकते हैं ? अहो गौतम ! वह मेघ अजीव होने से स्वतः की शक्ति से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य की शक्ति से जासकते हैं. वैसे ही स्वतः के कर्म से नहीं जासकते है परंतु अन्य के कर्मों से जा सकते हैं, स्वतः के प्रयोग से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य के प्रयोग से जाते हैं. अहो भगवन् !

शब्दार्थ हं० हां प० समर्थ ॥ ९ ॥ जी० जीव भं० भगवन् जे० जो ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे से० वह भं० भगवन् कि० किम ले० लेश्या से उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम जं० जिस ले० लेश्या

सूत्र पुरिसे, आसे, हत्थी। पभूणं भंते बलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए, जहा इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं। नवरं एगओ चक्कवालंपि, दुहओ चक्कवालंपि भाणियव्वं॥ जुग्गगिल्लिथिल्लिसीयासंदमाणियाणंतहेव॥ ९॥ जीवेणं भंते जेभविए नेरइएसु उववज्जित्तए, सेणं भंते! किं लेस्सेसु उववज्जइ? गो-

भावार्थ जब मेघ स्त्री आदि का रूप बना सकता है तब क्या उसे स्त्री वगैरह कहना. अहो गौतम! उसे मेघही कहना परंतु स्त्री पुरुष वगैरह नहीं कहना. अहो भगवन्! वे बद्दल विमान का रूप बनाकर अनेक योजन तक क्या जा सकते हैं? हां गौतम! वे जा सकते हैं वगैरह जैसा स्त्री का अधिकार कहा वैसे ही यहां कहना. विशेष उपर जो यान का रूप बनाकर विमान की गति का कथन किया सो एक चक्र से भी जासकते हैं, और दो चक्र से भी जासकते हैं. इसी प्रकार धूंसरा, अंबाडी, थिल्ली शिबिका, व संदमनी वगैरह का कथन जानना. ॥ ९ ॥ गमन के अधिकार से गति गमनका प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! जो जीव नारकी में उत्पन्न होनेवाला है वह कृष्ण लेश्यादि छ लेश्या में से कौनसी लेश्या सहित उत्पन्न

शब्दार्थ के द० द्रव्य को प० ग्रहणकर का० काल करे त० उस लेश्या में उ० उत्पन्न होवे तं० वह ज० जैसे क० कृष्ण लेश्या नी० नीललेश्या का० कापोत लेश्या ए० ऐसे ज० जिसको जा० जो लेश्या सा० वह भा० कहना जा० यावत् जी० जीव भं० भगवन् जे० जो भ० ज्योतिषी में उ० उत्पन्न होने की

सूत्र यमा ! जं लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ, तल्लेसेसु उववज्जइ. तंजहा कण्हलेसेसुवा, नीललेसेसुवा, काउलेसेसुवा, एवं जस्स जा लेसा सा तस्स भाणियव्वा, जाव जीवेणं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए पुच्छा ? गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तंजहा तेउलेस्सेसु । जीवेणं भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! किं लेस्सेसु उववज्जइ ? गोयमा ! जल्ले-

भावार्थ होता है ? अहो गौतम ! जिस लेश्या के द्रव्य एकत्रित कर काल करता है उसी लेश्या में उत्पन्न होता है. नरक में तीन लेश्या सहित जीव जाता है. कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या. यावत् कृष्ण, नील, कापोत और तेजोलेश्यावाले दश प्रकार के भवनपति में उत्पन्न होते हैं. इनही चार लेश्यावाले पृथ्वी, पानी व वनस्पति में उत्पन्न होते हैं. कृष्ण, नील और कापुतवाले तेउ वायु और विकलेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं. कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म, और शुक्ल लेश्यावाले मनुष्य तीर्यंच में उत्पन्न होते हैं. पहिली चार लेश्यावाले वाणव्यंतर में, मात्र एक तेजो लेश्यावाले ज्योतिषी और प्रथम द्वितीय देवलोक में

शब्दार्थ भ० भव्य पु० पृच्छा गो० गौतम ज० जिस ले० लेश्या द० द्रव्य भाव से प० ग्रहणकर का० काल करे त० उस ले० लेश्या में उ० उत्पन्न होवे ते० तेजो लेश्या ॥ १० ॥ पूर्ववत् ॥ ११ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण करे प० समर्थ वे० वेभार प० पर्वत को

सूत्र साइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तंजहा तेउ लेसेसुवा, पम्हलेसेसुवा, सुक्कलेसेसुवा ॥ १०—११ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभार पव्वयं उल्लंघेत्तएवा, पल्लंघेत्तएवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभारपव्वयं

भावार्थ उत्पन्न होते हैं. पद्म लेश्यावाले तीसरे, चौथे, पांचवे देवलोक में; शुक्ल लेश्यावाले छठे देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध तक में उत्पन्न होते हैं. अर्थात् वैमानिक देवों में तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्याही है ॥ १०—११ ॥ शुभ लेश्यावाले साधु लब्धिवंत होते हैं इस से लब्धि आश्री प्रश्न पुछते हैं- अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिर के वैक्रेय शरीर के पुद्गल ग्रहण किये विना राजगृही नगरी की पास का वेभार पर्वत क्या उल्लंघने को समर्थ होते हैं ! अहो गौतम वे बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना वेभार पर्वत उल्लंघने को समर्थ नहीं होसकते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण

शब्दार्थ उ० उल्लंघन करने को प० विशेष उल्लंघन करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥१२॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण कर जा० यावत् इ० इतने रा० राजगृह न० नगर में रू० रूप वि० विकुर्वणा कर वे० वेभार पर्वत की अं० अंदर अ० प्रवेश कर प० समर्थ स० सम को वि० विषम क० करने को वि० विषम को स० सम क० करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे बि० दूसरा आ० आलापक ण० विशेष प० ग्रहणकर

सूत्र उल्लंघेत्तएवा पल्लंघेत्तएवा ? हंता पभू ॥ १२ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरएपोग्गले अपरियाइत्ता जाव इयाइं रायगिहे नयरे रूवाइं एवइयाइं विउव्वित्ता वेभारं पव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समंवा विसमंवा करेत्तए विसमंवा समं करेत्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं चेव बितीओवि आलावगो णवरं परियाइ-

भावार्थ कर क्या वेभार पर्वत उल्लंघ सकते हैं? हां गौतम! वे भावितात्मा अनगार बाहिर के पुद्गलग्रहण कर वेभार पर्वत का उल्लंघन कर सकते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा लब्धिवंत साधु बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना राजगृही नगरी में जितने मनुष्य पशु हैं उतने रूप बनाकर वेभार पर्वत में प्रवेश कर सम को विषम व विषम को सम करने क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् लब्धिवन्त साधु बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना उक्त कार्य करने को समर्थ नहीं होते हैं. परंतु

शब्दार्थ प० समर्थ ॥ १३ ॥ से० वह भं० भगवन् किं० क्या मा० मायी वि० विकुर्वणा करे अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे गो० गौतम मा० मायी वि० विकुर्वणा करे नो० नहीं अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे से० वह के० कैसे गो० गौतम मा० मायी प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन भो० भोगवकर वा० वमनकरे त० उन को ते० उस प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन से अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज व० पुष्ट

सूत्र पभू ॥ १३ ॥ से भंते ! किं माई विकुव्वइ अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! माई विकुव्वइ, णो अमाई विकुव्वइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो अमाई विकुव्वई ? गोयमा ! माईणं पणीयं पाणभोयणं भोच्चा भोच्चा वामेइ, तस्सणं तेणं पणीएणं पाण भोयणेणं अ[illegible] अट्ठिमिंजा बहुली भवंति, पयंणुए मंससोणिए भवइ, जेवियसे अहाबायरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति ॥ सोइंदियत्ताए जाव फा-

भावार्थ बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण कर राजगृही में रहेहुवे मनुष्य व पशु जितने रूप बनाकर वैभार पर्वत में प्रवेश करके सम की विषम भूमि और विषम की सम भूमि कर सकते हैं ॥ १३ ॥ अब वैक्रेय रूप कौन बनाते हैं सो कहते हैं. अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायी-माया कपट रहित पुरुष बनाते हैं ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार के रूप मायी प्रमादी साधु करते हैं परंतु अमायी नहीं करते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से मायी विकुर्वणा करता है और अमायी नहीं करता है ?

शब्दार्थ भ० होवे प० पतला मं० मांस सो० रुधिर भ० होवे जे० जो अ० यथा वा० बादर पो० पुद्गल ते० वे प० परिणमे सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज के० केश मं० दाढी रो० रोम न० नखपने सु० शुक्रपने सो० रुधिरपने अ० अमायी लू० रूक्ष पा० पानी

सूत्र सिंदियत्ताए, अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमंसुरोमनहत्ताए सुक्कत्ताए सोणियत्ताए। अमाईणं लूहं पाण-भोयणं भोच्चा भोच्चा णो वामेइ, तस्सणं तेणं लूहेणं पाण भोयणेणं अट्ठि अट्ठिमिंजा पयणु भवंति, बहले मंस सोणिए जेवियसे अहाबादरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति, तंजहा-उच्चारत्ताए, जाव सोणियत्ताए से तेणट्ठेणं जाव नो अमाई विकुव्वइ॥ माईणं तस्स ठाणस्स

भावार्थ अहो गौतम ! जो मायावी साधु होते हैं वे स्निग्ध सरस आहार पानी का भोजन करते हैं. बलवृद्धि के लिये वमन विरेचनादिक क्रियाओं करते हैं. ऐसे स्निग्ध पान भोजन से उन की हड्डीव हड्डीकी मिंजी बढती है मांस शोणित पतले होते हैं यथाबादर पुद्गल श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय, अस्थी, अस्थि की मिंजी, केश, श्मश्रु, रोम, नख, शुक्र व रुधिरपने परिणमते हैं और इस से वैक्रेय रूप बना सकते हैं. जो अमायी होते हैं वे रूक्ष निरस आहार करते हैं और वमन विरेचनादि क्रियाओं नहीं करते हैं. उन को रूक्ष आहार से हड्डी और हड्डी की मींजी पतली होती है. मांस व लोही सघन होता है. उन को पानी व आहार रूप से ग्रहण किये हुवे पुद्गल बडीनीत, लघुनीत, श्लेष्म, खेंकार, वमन, पित्त, यावत् रुधिरपने

शब्दार्थ प० समर्थ ॥ १३ ॥ से० वह भं० भगवन् किं० क्या मा० मायी वि० विकुर्वणा करे अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे गो० गौतम मा० मायी वि० विकुर्वणा करे नो० नहीं अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे से० वह के० कैसे गो० गौतम मा० मायी प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन भो० भोगवकर वा० वमनकरे त० उन को ते० उस प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन से अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज ब० पुष्ट

सूत्र दा पभू ॥ १३ ॥ से-भंते ! किं माई विकुव्वइ अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! माई विकुव्वइ, णो अमाई विकुव्वइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो अमाई विकुव्वई ? गोयमा ! माईणं पणीयं पाणभोयणं भोच्चा भोच्चा वामेइ, तस्सणं तेणं पणीएणं पाण भोयणेणं अ[illegible] अट्ठिमिंजा बहुली भवंति, पयणुए मंससोणिए भवइ, जेवियसे अहाबायरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति ॥ सोइंदियत्ताए जाव फा-

भावार्थ ... वैक्रेय पुद्गल ग्रहण कर राजगृही में रहहुवे मनुष्य व पशु जितने रूप बनाकर वेभार पर्वत में प्रवेश [स]म भूमि और विषम की सम भूमि कर सकते हैं ॥ १३ ॥ अब वैक्रेय रूप कौन बनाते अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायी-माया कपट बनाते हैं ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार के रूप मायी प्रमादी साधु करते हैं परंतु अमायी नहीं करते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से मायी विकुर्वणा करता है और अमायी नहीं करता है ?

शब्दार्थ भ० होवे प० पतला मं० मांस सो० रुधिर भ० होवे जे० जो अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल ते० वे प० परिणमे सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज के० केश मं० दाढी रो० रोम न० नखपने सु० शुक्रपने सो० रुधिरपने अ० अमायी लू० रूक्ष पा० पानी

सूत्र सिंदियत्ताए, अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमंसुरोमनहत्ताए सुक्कत्ताए सोणियत्ताए। अमाईणं लूहं पाण-भोयणं भोच्चा भोच्चा णो वामेइ, तस्सणं तेणं लूहेणं पाण भोयणेणं अट्ठि अट्ठिमिंजा पयणु भवंति, बहले मंस सोणिए जेवियसे अहाबादरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति, तंजहा-उच्चारत्ताए, जाव सोणियत्ताए से तेणट्ठेणं जाव नो अमाई विकुव्वइ॥ माईणं तस्स ठाणस्स

भावार्थ अहो गौतम ! जो मायावी साधु होते हैं वे स्निग्ध सरस आहार पानी का भोजन करते हैं. बलवृद्धि के लिये वमन विरेचनादिक क्रियाओं करते हैं. ऐसे स्निग्ध पान भोजन से उन की हड्डीव हड्डीकी मिंजी बढती है मांस शोणित पतले होते हैं यथाबादर पुद्गल श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय, अस्थी, अस्थि की मिंजी, केश, श्मश्रु, रोम, नख, शुक्र व रुधिरपने परिणमते हैं और इस से वैक्रिय रूप बना सकते हैं. जो अमायी होते हैं वे रूक्ष निरस आहार करते हैं और वमन विरेचनादि क्रियाओं नहीं करते हैं. उन को रूक्ष आहार से हड्डी और हड्डी की मींजी पतली होती है. मांस व लोही सघन होता है. उन को पानी व आहार रूप से ग्रहण किये हुवे पुद्गल बडीनीत, लघुनीत, श्लेष्म, खेंकार, वमन, पित्त, यावत् रुधिरपने

शब्दार्थ भो० भोजन भो० भोगव कर णो० नहीं वा० वमनकरे त० उन को ते० उस ऌ० रूक्ष पा० पानी भो० भोजन से० अस्थि अ० अस्थिमिंज प० पतली भ० होती है ॥ ३ ॥ ४ ॥ *

अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा वा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण किये प० समर्थ ए०

मूत्र

अणालोइय पडिक्कंते कालं करेइ, नत्थितस्स आराहणा अमाईणं तस्स ठाणस्स आले.इय पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति तईयसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ४ ॥ × × +

अणगारेणं भंते ! भावियअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं इत्थिरू-

भावार्थ

परिणमते हैं इस तरह शक्ति कम होने से अमायी वैक्रेयादि लब्धि नहीं करते हैं. अब मायी और अमायी को फल बताते हैं. मायावी प्रमादी वैक्रेय करनेमें लब्धि फोडने से अथवा सरस आहारादि के दोष लगने से यदि उस की आलोचना प्रतिक्रमण करे नहीं तो वह जिनाज्ञा का आराधक नहीं होसकता है. और जो अमायी अप्रमादी होते हैं वे निर्दोष आहार भोगवने से व वैक्रेयादि नहीं करने से अल्प दोषी होते हैं. जो कुच्छ छद्मस्थपना मे दोष लगता है उस की गुरु की समक्ष आलोचना करने मे जिनाज्ञा का आराधक होता है. अहो भगवन् ! आपके वचन तथ्य हैं. आप जैसे कहते हैं वैसे ही हैं. यह तीसरा शतकका चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ४ ॥ = =

शब्दार्थ एक म० बडा इ० स्त्रीरूप जा० यावत् सं० पालखी रूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ १ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भ० भावितात्मा के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम ज० जैसे जु० युवतीको जु० युवान ह० हस्त से ह० हस्त में गे० ग्रहण करे च० चक्र

सूत्र

वंचा जाव संदामाणियरूवं वा विकुव्वित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं इत्थिरूवं वा जाव संदामाणियरूवं वा विकुव्वित्तए ? हंता पभू ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू इत्थिरूवाइं विउव्वित्तए ? गोयमा ! से जहानामए जुवइं जुवाणे हत्थेणं

भावार्थ अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिरके वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना क्या एक महा स्त्री का रूप यावत् पालखी का रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वे वैसा वैक्रेय रूप नहीं बनासकते हैं. तब अहो भगवन् ! क्या वह बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण कर एक महा स्त्रीका रूप यावत् पालखी का रूप बनाने को समर्थ है ? हां गौतम ! वह महा स्त्रीका रूप यावत् पालखी बनाने को समर्थ है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा साधु स्त्री के कितने रूप बनासकते हैं ? अहो गौतम ! जैसे काम पीडित पुरुष अपने हस्त से स्त्री का हस्त मजबुत पकडता है अथवा जैसे गाडी के चक्र की नाभी

शब्दार्थ भो० भोजन भो० भोगव कर णो० नहीं वा० वमनकरे त० उन को ते० उस ल्ह० रूक्ष पा० पानी भो० भोजन से० अस्थि अ० अस्थिमिंज प० पतली भ० होती है ॥ ३ ॥ ४ ॥ *

अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा वा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण किये प० समर्थ ए०

सूत्र अणालोइय पडिकंते कालं करेइ, नत्थितस्स आराहणा अमाईणं तस्स ठाणस्स आले.इय पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति तईयसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ४ ॥ × × +

अणगारेणं भंते ! भावियअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं इत्थिरू-

भावार्थ परिणमते हैं इस तरह शक्ति कम होने से अमायी वैक्रेयादि लब्धि नहीं करते हैं. अब मायी और अमायी को फल बताते हैं. मायावी प्रमादी वैक्रेय करनेमें लब्धि फोडने से अथवा सरस आहारादि के दोष लगने से यदि उस की आलोचना प्रतिक्रमण करे नहीं तो वह जिनाज्ञा का आराधक नहीं होसकता है. और जो अमायी अप्रमादी होते हैं वे निर्दोष आहार भोगवने से व वैक्रेयादि नहीं करने से अल्प दोषी होते हैं. जो कुच्छ छद्मस्थपना मे दोष लगता है उस की गुरु की समक्ष आलोचना करने मे जिनाज्ञा का आराधक होता है. अहो भगवन् ! आपके वचन तथ्य हैं. आप जैसे कहते हैं वैसे ही हैं. यह तीसरा शतकका चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ४ ॥ = =

शब्दार्थ जैसे के० कोई पुरुष अ० खड्ग च० चर्मका पा० पात्र ग० ग्रहण कर ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा अ० म्यान पा० पात्र ह० हस्त में लेकर अ० आत्मा से उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० जावे हं० हां उ० जावे ॥ ३ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा ए० एकदिशि में प०

सूत्र रिसे असिचम्मपायं गहाय गच्छेज्जा एवामेव अणगारेवि भावियप्पा असिचम्मपायं हत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ? हंता उप्पइज्जा। अणगारेणं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू असिचम्महत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ? गोयमा ! से जहा नामए जुवइं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा तं चेव जाव विउव्विंसुवा ३ ॥३॥ से जहा नामए केइपुरिसे एगओ पडागं काउं गच्छेज्जा एवामेव अ-

भावार्थ खड्ग का म्यान हस्त में लेकर कोई पुरुष जावे वैसे ही क्या गगनगामिनी विद्या से भावितात्मा साधु खड्ग चर्म पत्र [म्यान] हस्त में लेकर आकाश में जावे ? हां गौतम ! वैसे आकाश में जावे. अहो भगवन् ! हस्त में म्यान होवे वैसे कितने रूप वह भावितात्मा अनगार बनावे ? अहो गौतम ! जैसे काम पीडित युवान पुरुष युवती को अपने हस्त से पकडता है यावत् एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप भरे. यह मात्र वैक्रेय का विषय है परंतु इतना रूप किसीने किया नहीं, करते नहीं, और करेंगे नहीं ॥३॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ

की ना० नाभी अ० आरासे उ० युक्त सि० होवे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा वि० वैक्रेय स० समुद्घात स० नीकाले जा० यावत् प० समर्थ गो० गौतम अ० अनगार भा० भावितात्मा के० संपूर्ण जं० जम्बूद्वीप को ब० बहुत इ० स्त्रीरूप से आ० आकीर्ण वि० विकीर्ण जा० यावत् ए० यह गो० गौतम अ० अनगार भा० भावितात्मा का अ० यह ए० ऐसा वि० विषय वि० विषय मात्र बु० कहा नो० नहीं सं० संपत्ति वि० विकुर्वणा की ए० ऐसे प० परिपाटी ने० जानना जा० यावत् सं० पालखीरूप ॥ २ ॥ ज०

सूत्र

हत्थंसि गेण्हेज्जा, चक्कस्सवा नाभी अरगाउत्ता सिया एवामेव अणगारेवि भावियप्पा विउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ जाव पभूणं ? गोयमा ! अणगारेणं भावियप्पा केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं बहूहिं इत्थिरूवेहिं आयन्नं वितिकिण्णं जाव एसणं गोयमा ! अणगारस्स भावियप्पणो अयमेवारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए नोचेवणं संपत्तीए, विकुव्विसुवा ३, एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव संदमाणिया ॥ २ ॥ सेजहा नामए केइपु-

भावार्थ

में आरे को भीडते हैं वैसे ही लब्धिवंत साधु वैक्रेय समुद्घात करके एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप स्त्रीके रूप से भरने को समर्थ है. अहो गौतम ! भावितात्मा अनगार को वैक्रेय करने का यह विषय कहा है परंतु इतने रूप किसीने गत काल में किये नहीं है, वर्तमान में नहीं करते हैं, और आगामिक में करेंगे नहीं. जैसे स्त्री रूप का कहा वैसे ही पुरुष वगैरह का अनुक्रम से पालखी तक का कहना ॥ २ ॥ जैसे

शब्दार्थ ऊडे ॥ ४ ॥ से० वह ज० जैसे के० कोई पुरुप ए० एकादिशा में प० पलांठी का० करके चि० खडारहे ॥ ५ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् वा० वाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण किये प० समर्थ ए० एक म०

सूत्र ॥ ४ ॥ से जहा नामए केइपुरिसे एगओ पल्हत्थियं काउं चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे भावियप्पा तं चेव जाव विकुव्विसुवा ३ । एवं दुहओ पल्हत्थियंपि । से जहा नामए केइ पुरिसे एगओ पलियंकं काउं चिट्ठिज्जा तं चेव विकुव्विसुवा ३ । एवं दुहओ पलियंकंपि ॥ ५ ॥ अणगारेणं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवंवा, हत्थिरूवंवा, सीहरूवं वा वग्घ-वग्ग-दीविय-अच्छ-तरच्छ-परासर-

भावार्थ कार कहा वैसे ही यहां जानना ऐसे ही दो उपवितों का जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जैसे कोई पुरुप एक तरफ पल्हांठी से खडा रहता है, ऐसे ही क्या भावितात्मा अनगार आकाश में गमन कर सकते हैं ? हां गौतम ! वे आकाश में गमन कर सकते हैं यावत् एक लक्ष योजन जम्बूद्वीप भर सकते हैं. ऐसे दो पल्हांठी से भी आकाश में जा सकते हैं. ऐसे ही एक पर्यंकासन और दो तरफ पर्यंकासन मे आकाश में जा सकते हैं यावत् एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप भर सकते है. परंतु इतना किसीने किया नहीं, करते नहीं व करेंगे नहीं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! लब्धिवंत भावितात्मा अनगार वाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना क्या अश्व का रूप, हस्ती का रूप, सिंह का रूप, व्याघ्र का रूप, चित्ता का

शब्दार्थ पताका जैसे ह० हस्त में लेकर अ० स्वतः से उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० ऊडे अ० अनगार भा० भावितात्मा ए० एकदिशा में ज० यज्ञोपवित कि० लेकर अ० स्वतः से उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ०

सूत्र णगारे भाविअप्पा एगओ पडागाहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढंवेहासं उप्पएज्जा? हंता गोयमा! अणगारेणं भंते! भावियप्पा केवइयाइं पभू एगओ पडागा हत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए, एवं जाव विकुव्विसुवा ३। एवं दुहओ पडागंपि। से जहानामए केइपुरिसे एगओ जणोवइ तंकाउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारेवि भावियप्पा एगओ जनोवइयं किच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पाएज्जा? हंता उप्पाएज्जा। अणगारेणं भंते! भाविअप्पा केवइयाइं पभू एगओ जणोवइयं किच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए तं चेव जाव विकुव्विसुवा ३,। एवं दुहओ जणोवइयंपि

भावार्थ जैसे कोई पुरुष एकदिशी में पताका करके जावे वैसे ही कोई भावितात्मा अनगार वैक्रेय रूप से एकदिशा की पताका हस्त में रखकर क्या जाने को समर्थ है? हां गौतम! वह जासकते हैं वगैरह सब पहिले जैसे कहना. ऐसे ही दो पताका का अधिकार जानना. अहो भगवन्! जैसे कोई एक तरफ यज्ञोपवित धारन कर जावे वैसे ही क्या भावितात्मा साधु एकदिशा की उपवित का रूप धारन कर आकाश में जावे? हां गौतम! जासकते है अहो भगवन्! ऐसे कितने रूप बना सकते हैं? अहो गौतम! जैसे म्यान का अधि

शब्दार्थ हां प० समर्थ से० वह भं० भगवन् कि० क्या आ० आत्म ऋद्धि से प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे

सूत्र माईणं भंते ! तस्सठाणस्स अणालोइय पडिक्कंते कालं करेइ कहिं उववज्जइ ? गोयमा ! अण्णयरेसु अभियोगेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ अमाईणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते कालं करेइ कहिं उववज्जइ; गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ सेवंभंते भंतेत्ति ॥ गाहा-इत्थी, असी,

भावार्थ है या अन्य की ऋद्धि से जाता है ? अहो गौतम ! आत्म ऋद्धि से जाता है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जाता है. आत्म कर्म से जाता है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाता है, आत्म प्रयोग से जाता है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं जाता है, ऊर्ध्व पताका के आकार से जाता है परंतु अधो पताका के आकार से नहीं जाता है. अहो भगवन् ! क्या वह अनगार अश्व कहाता है ? अहो गौतम ! अनगार अश्व नहीं कहाता है परंतु अनगार कहता है. ऐसे ही अष्टापद तक जानना. अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायावी-अप्रमादी बनाते हैं ? अहो गौतम! वे रूप मायावी साधु बनाते हैं परंतु अमायावी नहीं बनाते हैं वगैरह सब चौथे उद्देशे जैसे जानना. अहो भगवन् ! मायावी उस की आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह किये विना वहांपर काल कर जावे तो कहां जावे ? अहो गौतम ! वैसे प्रथम देवलोक से बारहवे देवलोक तक में इन्द्रादि देवों के सेवकपने उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! अमायावी आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह करके कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वे सेवकपने नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु सामानिक देव व अहमेंद्र देवपने सर्वार्थ सिद्ध विमान तक

शब्दार्थ घडा आ० अश्वरूप ह० हस्ति सी० सिंहरूप व० व्याघ्र व० चित्ता दी० दीपडा अ० रींछ त० तरख प० अष्टापद अ० वैक्रेय करने को णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ ८ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा ए० एक म० बडा आ० अश्वरूप अ० वैक्रेयकर अ० अनेक जो० योजन ग० जाने को हं०

सूत्र रूवंवा अभिजुंजित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अणगारेणं एवं बाहिरए पोग्गले परिया-इत्ता पभू ॥ ६ ॥ अणगारेणं भंते ! भावि‌अप्पा एगं महं आसरूवंवा अभिउंजित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए एवं आयकम्मुणा परकम्मुणा, आयप्पयोगेणं परप्पयोगेण, उस्सिओदयंवा गच्छइ, पयोदयंवा गच्छइ । सेणं भंते ! किं अणगारे आसे ? गोयमा ! अणगारेणंसे नो खलु से आसे एवं जाव परासर रूवं वा से भंते किं माई विकुव्वइ, अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमायीविकुव्वइ ।

भावार्थ रू,दीवडीका रूप, रींछका रूप,तरखका रूप, अष्टापदका रूप और अन्य भी ऐसे रूप क्या बना सकते हैं ? अहो गोतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है,अर्थात् बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना वैसे रूप नहीं बना सकते हैं. परंतु बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर ऐसे रूप बनासकते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार एक बडा अश्वका रूप बनाकर अनेक योजन तक जाने को क्या समर्थ है ? हां गोतम ! अश्वका रूप बनाकर अनेक योजन तक जाने को समर्थ है. अहो भगवन् ! क्या वह आत्म ऋद्धि से जाता

शब्दार्थ हां प० समर्थ से० वह भं० भगवन् किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे

सूत्र माईणं भंते ! तस्सठाणस्स अणालोइय पडिक्कंते कालं करेइ कहिं उववज्जइ ? गोयमा ! अण्णयरेसु अभियोगेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ अमाईणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते कालं करेइ कहिं उववज्जइ; गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ सेवंभंते भंतेत्ति ॥ गाहा-इत्थी, असी,

भावार्थ है या अन्य की ऋद्धि से जाता है ? अहो गौतम ! आत्म ऋद्धि से जाता है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जाता है. आत्म कर्म से जाता है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाता है, आत्म प्रयोग से जाता है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं जाता है, ऊर्ध्व पताका के आकार से जाता है परंतु अधो पताका के आकार से नहीं जाता है. अहो भगवन् ! क्या वह अनगार अश्व कहाता है ? अहो गौतम ! अनगार अश्व नहीं कहाता है परंतु अनगार कहाता है. ऐसे ही अष्टापद तक जानना. अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायावी-अप्रमादी बनाते हैं ? अहो गौतम! वे रूप मायावी साधु बनाते हैं परंतु अमायावी नहीं बनाते हैं वगैरह सब चौथे उद्देशे जैसे जानना. अहो भगवन् ! मायावी उस की आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह किये विना वहांपर काल कर जावे तो कहां जावे ? अहो गौतम ! वैसे प्रथम देवलोक से बारहवे देवलोक तक में इन्द्रादि देवों के सेवकपने उत्पन्न होवे हैं अहो भगवन् ! अमायावी आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह करके कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वे सेवकपने नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु सामानिक देव व अहमेंद्र देवपने सर्वार्थ सिद्ध विमान तक

शब्दार्थ गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि नो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ५ ॥ ×

अ० अनगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्या दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वि० विभंग ज्ञान. लब्धि से वा० वाणारसी न० नगरी में स० विकुर्वणा कर रा० राजगृह न० नगर में रू० रूप ना० जाने पा०

सूत्र पडागा, जण्णोवइएय होइ बोधव्वे । पल्हत्थिय पलियंके, अभियोगविकुव्वणा मायी

तइयसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ५ ॥ * ॥ ÷ ÷ ÷

अणगारेणं भंते भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंग-

भावार्थ उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है. अब इस में उद्देशा का स्वरूप गाथा द्वारा संक्षेप से कहते हैं. स्त्रीरूप का, खड्ग म्यान का, पताका का, उपवित का, पलहांठी का, पर्यंकासन का, और मायी आभियोगिक देव-सेवकपने उत्पन्न होते हैं वैसा कहा. यह तीसरा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ५ ॥ + ÷

अब इस छठे उद्देशे में भी वैक्रेय संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से वाणारसी नगरी की विकुर्वणा करके क्या राजगृही नगरी में मनुष्य पशु वगैरह के रूप जाने देखे? हां गौतम! विभंग ज्ञान से जाने और अवधि दर्शन से देखे. अहो भगवन्! क्या वे यथातथ्य भाव जाने, देखे या अन्यथा भाव जाने देखे? अहो गौतम! यथा

पदार्थ

देखे हं० हां जा० जाने पा० देखे से० वह किं० क्या त० तथा भाव जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भा० भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम णो० नही त० तथाभाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे से० वह के० कैसे ए० एसा वु० कहा जाता है णो० नहीं त० तथा भाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० मैं रा० राजगृहनगर की स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न० नगरी में रू०

सूत्र

नाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए समोह-

भावार्थ

तथ्य जाने नहीं व देखे नहीं परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे. अहो भगवन् ! किस तरह वह यथातथ्य भाव जाने, देखे नहीं; परंतु अन्यथा भाव जाने, देखे ? अहो गौतम ! उन को ऐसा होवे कि अहो मैंने राजगृह नगरी का वैक्रेय किया और वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह के रूप देख रहा हूं. इस तरह उन अन्य दर्शनियों को दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. जैसे

शब्दार्थ गो॰ गौतम आ॰ आत्म ऋद्धि नो॰ नहीं प॰ दूसरे की ऋद्धि से पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ५ ॥ ×

अ॰ अनगार भं॰ भगवन् मा॰ मायी मि॰ मिथ्या दृष्टि वी॰ वीर्य लब्धि से वि॰ विभंग ज्ञान, लब्धि से वा॰ वाणारसी न॰ नगरी में स॰ विकुर्वणा कर रा॰ राजगृह न॰ नगर में रू॰ रूप जा॰ जाने पा॰

सूत्र पडागा, जण्णोवइएय होइ बोधव्वे । पल्हत्थिय पलियंके, अभियोगविकुव्वणा मायी तइयसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ५ ॥ * ॥ ÷ ÷ ÷

अणगारेणं भंते भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंग-

भावार्थ उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है. अब इस में उद्देशा का स्वरूप गाथा द्वारा संक्षेप से कहते हैं. स्त्रीरूप का, खड्ग म्यान का, पताका का, उपवित का, पल्हांठी का, पर्यंकासन का, और मायी आभियोगिक देव-सेवकपने उत्पन्न होते हैं वैसा कहा. यह तीसरा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ५ ॥ + ÷

अब इस छठे उद्देशे में भी वैक्रेय संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से वाणारसी नगरी की विकुर्वणा करके क्या राजगृही नगरी में मनुष्य पशु वगैरह के रूप जाने देखे ! हां गौतम ! विभंग ज्ञान से जाने और अवधि दर्शन से देखे. अहो भगवन् ! क्या वे यथातथ्य भाव जाने, देखे या अन्यथा भाव जाने देखे ? अहो गौतम ! यथा

पदार्थ — देखे हं० हां जा० जाने पा० देखें से० वह किं० क्या त० तथा भाव जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भा० भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम णो० नहीं त० तथाभाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे से० वह के० कैसे ए० एसा वु० कहा जाता है णो० नहीं त० तथा भाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखें गो० गौतम त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० मैं रा० राजगृहनगर की स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न० नगरी में रू०

सूत्र — नाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए समोह-

भावार्थ — तथ्य जाने नहीं व देखे नहीं परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे. अहो भगवन् ! किस तरह वह यथातथ्य भाव जाने, देखे नहीं; परंतु अन्यथा भाव जाने, देखे ? अहो गौतम ! उन को ऐसा होवे कि अहो मैंने राजगृह नगरी का वैक्रेय किया और वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह के रूप देख रहा हूं. इस तरह उन अन्य दर्शनियों को दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. जैसे

शब्दार्थ गो॰ गौतम आं॰ आत्म ऋद्धि नो॰ नहीं प॰ दूसरे की ऋद्धि से पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ५ ॥ ×

अ॰ अनगार भं॰ भगवन् मा॰ मायी मि॰ मिथ्या दृष्टि वी॰ वीर्य लब्धि से त्रि॰ त्रिभंग ज्ञान, लब्धि से वा॰ वाणारसी न॰ नगरी में स॰ विकुर्वणा कर रा॰ राजगृह न॰ नगर में रू॰ रूप जा॰ जाने पा॰

सूत्र पडागा, जण्णोवइएय होइ बोधव्वे । पल्हत्थिय पलियंके, अभियोगविकुव्वणा मायी तइयसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ५ ॥ * ॥ ÷ ÷ ÷

अणगारेणं भंते भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंग-

भावार्थ उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है. अब इस में उद्देशा का स्वरूप गाथा द्वारा संक्षेप से कहते हैं. स्त्रीरूप का, खड्ग म्यान का, पताका का, उपवित का, पलहांठी का, पर्यंकासन का, और मायी आभियोगिक देव-सेवकपने उत्पन्न होते हैं वैसा कहा. यह तीसरा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ५ ॥ + ÷

अब इस छठे उद्देशे में भी वैक्रेय संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से वाणारसी नगरी की विकुर्वणा करके क्या राजगृही नगरी में मनुष्य पशु वगैरह के रूप जाने देखे? हां गौतम! विभंग ज्ञान से जाने और अवधि दर्शन से देखे. अहो भगवन्! क्या वे यथातथ्य भाव जाने, देखे या अन्यथा भाव जाने देखे? अहो गौतम! यथा

पदार्थ — देखे हं० हां जा० जाने पा० देखे से० वह किं० क्या त० तथा भाव जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भा० भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम णो० नहीं त० तथाभाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है णो० नहीं त० तथा भाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० मैं रा० राजगृहनगर की स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न० नगरी में रू०

सूत्र — नाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए समोह-

भावार्थ — तथ्य जाने नहीं व देखे नहीं परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे. अहो भगवन् ! किस तरह वह यथातथ्य भाव जाने, देखे नहीं; परंतु अन्यथा भाव जाने, देखे ? अहो गौतम ! उन को ऐसा होवे कि अहो मैंने राजगृह नगरी का वैक्रेय किया और वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह के रूप देख रहा हूं. इस तरह उन अन्य दर्शनियों को दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. जैसे

शब्दार्थ रूप जा० जानता हूं पा० देखता हूं से० उस से०उस दं०दर्शन में वि० विपरीतता भ०होवे ते०इस लिये जा० यावत् पा० देखे ॥ १ ॥ पूर्ववत् ॥ २ ॥ अ० अणगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि वी०

सूत्र णित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणामि पासामि, से से दंसणे विवच्चासे भवइ, से तेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छादिट्ठी जाव रायगिहे नयरे समोहए समोहएत्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । तंचेव जाव तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणामि पासामि । से से दंसणे विवच्चासे भवइ से तेणट्ठेणं जाव अण्णहाभावं जाणइ पासइ ॥ २ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा मायी

भावार्थ किसी दिशी मूढ पुरुष पूर्वादि दिशा नहीं जानसकता है; वैसे ही वह भी नहीं जान सकता है. इसलिये अहो गौतम ! वैसा अनगार यथातथ्य भाव नहीं जानसकता है परंतु अन्यथा भाव जान सकता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मायी मिथ्या दृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्यलब्धि, वैक्रेय लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से राजगृह नगर का वैक्रेय करके क्या बाणारसी में मनुष्यादि के रूप जान व देख सकता है ? हां गौतम ! वह राजगृहीकी विकुर्वणा करके बाणारसीमें मनुष्यादिक के रूप जान व देख सकता है वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना. और उसे भी ऐसा विचार होवे कि मैंने बाणारसी का रूप

शब्दार्थ

वीर्यलब्धि से वि० वैक्रेय लब्धिसे वि० विभंगज्ञान लब्धिसे वा० वाणारसी नगरी रा० राजगृह न० नगर की अं० बीच में ए० एक म० बडा ज० देशसमुह स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी नगरी. रा० राजगृह न० नगर की अं०बीचमें ए० एक म०बडा ज०देश समुह जा०जाने पा०देखे हं०हां जा०जाने पा० देखे त०

सूत्र

मिच्छदिट्ठी वीरिय लद्धीए विउव्वियलद्धीए विभंग णाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं रायगिहंच नगरं अंतरा य एगं महं जणवयवग्गं समोहए समोहएत्ता वाणारसिं नगरिं रायगिहं तंच अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणइ पासइ? हंता जाणइ पासइ। से भंते! किं तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहाभावं जाणइ पासइ? गोयमा! णो तहाभावं

भावार्थ

बनाया और राजगृही में मनुष्यादि के रूप जान व देख सकता हूं. इस तरह दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. इस से वह यथार्थ भाव नहीं जान सकता है व देख सकता है परंतु अन्यथा भाव जान सकता है व देख सकता है ॥ २ ॥ अहो भगवन्! मायी, मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से राजगृही व वाणारसी नगरी के बीच में एक बडाजन-पद की विकुर्वणा करके क्या इन दोनों नगरी के बीच के जनपद को जान व देख सकता है? हां गौतम! ऐसा मायावी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार जान व देख सकता है. अहो भगवन्! क्या वह तथा भाव जाने या अन्यथा भाव जाने? अहो गौतम! वह तथा भाव जाने परंतु अन्यथा भाव जाने नहीं.

शब्दार्थ रूप जा० जानता हूं पा० देखता हूं से० उस से० उस दं० दर्शन में वि० विपरीतता भ० होवे ते० इस लिये जा० यावत् पा० देखे ॥ १ ॥ पूर्ववत् ॥ २ ॥ अ० अणगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि वी०

सूत्र णित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणामि पासामि, से से दंसणे विवच्चासे भवइ, से तेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छादिट्ठी जाव रायगिहे नयरे समोहए समोहएत्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । तंचेव जाव तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणामि पासामि । से से दंसणे विवच्चासे भवइ से तेणट्ठेणं जाव अण्णहाभावं जाणइ पासइ ॥ २ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा मायी

भावार्थ किसी दिशी मूढ पुरुष पूर्वादि दिशा नहीं जानसकता है; वैसे ही वह भी नहीं जान सकता है. इसलिये अहो गौतम ! वैसा अनगार यथातथ्य भाव नहीं जानसकता है परंतु अन्यथा भाव जान सकता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मायी मिथ्या दृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्यलब्धि, वैक्रेय लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से राजगृह नगर का वैक्रेय करके क्या वाणारसी में मनुष्यादि के रूप जान व देख सकता है ? हां गौतम ! वह राजगृहीकी विकुर्वणा करके वाणारसीमें मनुष्यादिक के रूप जान व देख सकता है वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना. और उसे भी ऐसा विचार होवे कि मैंने वाणारसी का रूप

शब्दार्थ प्राप्त अ० सन्मुख हुवे से० उस से० उस दं० दर्शन की वि० विपरीतता भ० होवे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् पा० देखे ॥ ३ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् अ० अमायी स० सम्यक् दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वे० वैक्रेय

सूत्र भिसमण्णागए से से दंसणे विवच्चा से भवइ से तेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ ३ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा अमायी सम्मादिट्ठी वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए, ओहिनाणलद्धीए रायगिहे नयरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहा भावं जाणइ पासइ, णो अण्णहाभावं जाणइ पासइ से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे

भावार्थ सम्यग् दृष्टि अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि व अवधि ज्ञान की लब्धि से राजगृह नगर की विकुर्वणा कर वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह को क्या जान व देख सके ? हां गौतम ! वे जान व देख सके. अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने व देखे या अन्यथा भाव जाने व देखे ? अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारण से वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ? अहो गौतम ! उन को ऐसा विचार होवे कि मैं राजगृही नगरी की विकुर्वणा करके वाणारसी नगरी में मनुष्यादिक के रूप देखता हूं इस

शब्दार्थ उस को ए० ऐसा भ० होवे ए० यह वा० वाणारसी न० नगरी ए० यह रा० राजगृह न० नगर ए० यह अं० बीच में ज० देश नो० नहीं ए० यह मु० मुझे वी० वीर्य लब्धि वे० वैक्रेय लब्धि वि० विभंग ज्ञान लब्धि इ० ऋद्धि जु० द्युति ज० यश ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार पराक्रम ल० लब्ध प०

सूत्र जाणइ पासइ, अण्णहाभावं जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते जाव पासइ ? गोयमा ! तस्स खलु एवं भवइ एस खलु वाणारसीए नयरीए एस खलु रायगिहे नयरे, एस खलु अंतरा एगं महं जणवयवग्गं, नो खलु एस महं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी, विभंगनाणलद्धी, इड्ढी, जुत्ती, जसे, बले, वीरिए, पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अ-

भावार्थ अहो भगवन् ! वह किस कारन से तथा भाव जाने व देखे अन्यथा भाव जाने नहीं देखे नहीं ? अहो गौतम ! उसे ऐसा विचार होवे कि यह वाणारसी नगरी है, यह राजगृही नगरी है. यह इन दोनों की बीच का प्रदेश है. परंतु वह ऐसा नहीं जान सकता है कि यह मुझे वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि, ज्ञान लब्धि, ऋद्धि, द्युति, कान्ति, यश, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम से मीला है, प्राप्त हुवा है यावत् सन्मुख हुवा है. इस तरह उसे दर्शन की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है अर्थात् ये मेरे बनाये हुवे नहीं है परंतु स्वाभाविक है यों विभंग ज्ञान से विपरीत मानता है. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि यथार्थ भाव नहीं जान व देख सकता है परंतु अन्यथा भाव जान व देख सकता है ॥ ३ ॥ अमायी

शब्दार्थ भाप्त अ० सन्मुख हुवे से०उस से०उस दं० दर्शन की वि० विपरीतता भ०होवे से०वह ते०इसलिये जा०यावत् पा०देखे ॥ ३ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् अ० अमायी स० सम्यक् दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वे० वैक्रेय

सूत्र भिसमण्णागए से से दंसणे विवच्चा से भवइ से तेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ ३ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा अमायी सम्मादिट्ठी वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए, ओहि नाणलद्धीए रायगिहे नयरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहा भावं जाणइ पासइ, णो अण्णहाभावं जाणइ पासइ से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे

भावार्थ सम्यग् दृष्टि अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि व अवधि ज्ञान की लब्धि से राजगृह नगर की विकुर्वणा कर वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह को क्या जान व देख सके ? हां गौतम ! वे जान व देख सके. अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने व देखे या अन्यथा भाव जाने व देखे ? अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारण से वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ? अहो गौतम ! उन को ऐसा विचार होवे कि मैं राजगृही नगरी की विकुर्वणा करके वाणारसी नगरी में मनुष्यादिक के रूप देखता हूं इस

शब्दार्थ ल० लब्धि से ओ० अवधि ज्ञान लब्धि से रा० राजगृह नगर में स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न०

सूत्र नगरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणामि पासामि, से से दंसणे अविवच्चा से भवइ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ॥ बीओवि आलावगो एवं चेव, णवरं वाणारसीए नयरीए समोहणा वेयव्वो ॥ रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरिय लद्धीए वेउव्विय लद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं वाणारसिं नगरिंच अंतरा एगं महं जणवयवग्गं समोहए समोहएत्ता रायगिहं नगरं वाणारसिं च नगरिं तंच अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ

भावार्थ तरह उन को दर्शन के समपने से मति की विपरीतता नहीं होती है इसलिये अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे नहीं. इसी तरह दुसरा आलापक जानना. परंतु इस में राजगृही का वैक्रेय करके वाणारसी में मनुष्यादि के रूप देखने के स्थान वाणारसी का वैक्रेय करके राजगृही में मनुष्यादिक के रूप देखे ॥ ४ ॥ अमायी सम्यग् दृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि, व अवधि ज्ञान की लब्धि से राजगृह नगर व वाणारसी के मध्य का एक बडा जनपद देश की विकुर्वणा करके उन दोनों की बीच का जनपद को क्या जाने व देखे ? हां गौतम ! वे जाने देखे. अहो भगवन् !

शब्दार्थ नगरी में रू० रूप जा० जाने पा० देखे हं० हां जा० जाने पा० देखे ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ अ० अण-

सूत्र अण्णहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहाभावं जाणइ पासइ, नो अण्णहा भावं जाणइ पासइ । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ नो खलु एस रायगिहे, णो खलु एस बाणारसी नगरी णो खलु एस अंतरा एगे जणवयवग्गे, एस खलु ममं वीरिय लद्धी वेउव्विय लद्धी, ओहिनाण लद्धी, इड्ढी, जुत्ती, जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, सेसे दंसणे अविवच्चासे भवइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, तहा भावं जाणइ पासइ, नो अण्हाभावं जाणइ पासइ ॥ ५ ॥ अण-

भावार्थ क्या वे यथातथ्य भाव जाने देखे या अन्यथा भाव जाने देखे ? अहो गौतम ! वे यथा तथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारन से वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ? अहो गौतम ! उन को ऐसा विचार होवे कि यह राजगृह नगर नहीं है, यह बाणारसी नगरी नहीं है यह उन के बीचका जनपद नहीं है, परंतु यह वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि, अवधि ज्ञान की लब्धि, ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य, पुरुषात्कार पराक्रम मुझे प्राप्त हुवा है. इस तरह दर्शन के समपरिणाम से मति सम होती है. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि वे यथातथ्य भाव जाने व देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो

शब्दार्थ गार भं० भगवन् भा० भवितात्मा वा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहणकिये प० समर्थ ए० एक म० वडा गा० ग्रामरूप न० नगर रूप जा० यावत् स० सन्निवेश वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे वि० दूसरा आ० आलापक न० विशेष वा० बाह्य पो० पुद्गल प० ग्रहण कर प० समर्थ ॥ ६ ॥ पूर्ववत् ॥ ७ ॥ च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र को क० कितने

सूत्र गारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवंवा, नगररूवंवा, जाव सण्णिवेसरूवंवा विकुव्वित्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठेसमट्ठे, एवं विती ओवि आलावओ । नवरं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता, पभू ॥६॥ अणगारेणं भंते ! केइवयाइं पभू गामरूवाइं, विकुव्वित्तए ? गोयमा ! से जहा नामए जुवइं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, तं चेव जाव विकुव्वितिवा ३, ॥ एवं जाव सण्णिवेसरूवंवा

भावार्थ भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना क्या ग्राम, नगर यावत् सन्निवेश के रूप बनासकते हैं ? अहो गौतम ! वे बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना ऐसे रूप नहीं बना सकते हैं. परंतु बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर ऐसे रूप बना सकते हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वे भावितात्मा अनगार कितने वैक्रेय रूप बना सकते हैं ? अहो गौतम ! जैसे काम पीडित तरुण पुरुष तरुणी स्त्री को अपने हस्त से पकडता है ऐसे ही वे अनगार एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप को ग्राम नगर यावत् सन्निवेश

शब्दार्थ आ० आत्मरक्षक देव सा० सहस्र गो० गौतम च० चार च० चौसठ आ० आत्मरक्षक देव सा० सहस्र ए० इस आ० आत्म रक्षक का व० वर्णन स० सर्व इं० इन्द्रका ज० जिस को ज० जितने आ० आत्मरक्षक ते० उतने भा० कहना ॥ ३ ॥ ६ ॥ = = =

रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसा व० बोले स० शक्र दे० देवेन्द्र

सूत्र ॥ ७ ॥ चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ आयरक्खदेवसाहस्सीओ ? गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ एएणं आयरक्खवण्णओ ॥ एवं सव्वेसिं इंदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ तईय सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ६ ॥ *

रायगिहे नयरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो

भावार्थ के रूप से भर देवे. यह मात्र विषय है. इतने रूप किसीने किये नहीं, करते नहीं व करेंगे नहीं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र को कितने हजार आत्मरक्षक देव कहे हैं ? अहो गौतम ! चमरेंद्र को दो लाख छप्पन्न हजार आत्म रक्षक देव कहे हैं. ऐसे ही सब भुवनपति यावत् अच्युतेंद्र तक के भिन्न २ आत्म रक्षक देव जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं ऐसा कहकर तप व संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे. यह तीसरा शतकका छट्ठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥३॥६॥

शब्दार्थ को क० कितने लो० लोकपाल गो० गौतम च० चार लोकपाल प० प्ररूपे सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ॥ १ ॥ ए० इन भं० भगवन् च० चार लो० लोकपाल के क० कितने विमान प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार वि० विमान प० प्ररूपे सं० संध्यप्रभ व० वरशिष्ट स० स्वयंजल व० वल्गु ॥ २ ॥

सूत्र कइलोगपाला पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता तंजहा-सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥ १ ॥ एएसिणं भंते ! चउण्हं लोगपालाणं कइविमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा प० तंजहा-संझप्पभे, वरसिट्ठे, सयंजले, वग्गू ॥ २ ॥

भावार्थ छट्ठ उद्देशे के अंत में आत्मरक्षक देव का वर्णन कहा. आगे उद्देशे में लोकपालोंका वर्णन कहते हैं. राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में भगवंत पधारे परिषदा वंदन करने को आइ और धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में श्री गौतम स्वामी श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न करनेलगे कि अहो भगवन्! शक्र देवेंद्र को कितने लोकपाल कहे हैं ?अहो गौतम! शक्रदेवेंद्र को चार लोकपाल कहे हैं. उन के नाम सोम, यम, वरुण और वैश्रमण. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! उन चार लोकपालों के कितने विमान कहे हैं अहो गौतम ! उन के चार विमान कहे हैं १ सोम का संध्यप्रभ २ यम का वराशिष्ट ३ वरुण का स्वयंजल और ४ वैश्रमण का वल्गु ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्रदेवेंद्र देवराजा

शब्दार्थ क० कहां भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा का सं० संध्यप्रभ म० महाविमान गो० गौतम जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की दा० दक्षिण में इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के ब० बहुत स० समरमणीय भूमिभाग से उ० ऊर्ध्व चं० चंद्र सू० सूर्य ग० ग्रह ग० समुह न० नक्षत्र ता० तारे ब० बहुत जो० योजन जा० यावत् पं० पांच अ० अवतंसक अ० अशोक अवतंसक स० सप्तपर्ण अवतंसक चं० चंपक अवतंसक चू० च्युत अवतंसक म० मध्य में सो० सौधर्म अवतंसक त० उस सो० सौधर्म अव-

सूत्र कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे णामं महाविमाणे प० ? गोयमा ! जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरिमगहगणनक्खत्ततारा - रूवाणं बहूइं जोयणाइं जाव पंच वडंसया प० तंजहा-असोयवडंसए, सत्तिवण्णं वडंसए, चंपयवडंसए, चूयवडंसए, मज्झे सोहम्म वडंसए ॥ तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स

भावार्थ का सोम नामक लोकपाल का संध्यप्रभ नामक विमान किस स्थान पर है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण दिशामें रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत मध्य भाग से बहुत योजन ऊंचे चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारे रहे हुवे हैं. वहां से सो, हजार, क्रोड व क्रोड क्रोड योजन उपर ऊंचे सौधर्म देवलोक रहा हुवा है. वह पूर्व पश्चिम लम्बा व उत्तर दक्षिण चौडा, अर्धचंद्रमां के आकार वाला महातेजवाला देदीप्यमान असंख्यात

शब्दार्थ तंसक म० महाविमान की पु० पूर्व में सो० सौधर्म देवलोक में अ० असंख्यात योजन वी० अतिक्रमकर ए० तहां स० शक्र दे० देवेन्द्र का सो० सोम म० महाराजा का मं० संध्यप्रभ म० महाविमान अ० अर्ध ते० तेरह जो० योजन स० लाख आ० लंबा वि० चौडा उ० गुनचालीस जो० योजन ल० लाख बा० बावन स० सहस्र अ० आठ अ० उडतालीस जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक

सूत्र महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं सोहम्मेकप्पे असंखेज्जाइं जोयणाइं वीईवइत्ता एत्थणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संज्झप्पभेनामं महाविमाणे प० अद्धतेरस जोयण सय सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं उयालीसं जोयणसयसहस्साइं बावण्णचसहस्साइं अट्ठ अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥

भावार्थ योजन का लम्बा चौडा व असंख्यात योजन की परिधि वाला है. उस में बत्तीस लाख विमान हैं वे सब रत्नमय निर्मल यावत् दर्शनीय हैं. उस के बहुत मध्य भाग में सब विमानों में मुकुट समान श्रेष्ठ पांच महा विमान हैं. जिन के नाम. १ अशोकावतंसक २ सप्तपर्णावतंसक ३ चम्पकावतंसक ४ चूतावतंसक और ५ मध्य में सौधर्मावतंसक विमान हैं. उस सौधर्मावतंसक विमान से पूर्व में असंख्यात योजन जावे तो वहां शक्र देवेंद्र का सोम नामक लोकपाल का स्वयंप्रभ नामक विमान कहा है. वह साढेबारह लाख योजन का लम्बा चौडा है. उस की परिधि ३९५२८४८ योजन से कुछ अधिक की है. इस का सब वर्णन

शब्दार्थ — प० परिधि ज० जैसे सू० सूर्याभ वि० विमान की व० वक्तव्यता सा० वह अ० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् अ० अभिषेक न० विशेष सो० सोमदेव ॥ ३ ॥ सं० संध्यप्रभ म० महाविमान की अ० नीचे स० दिशा स० विदिशा में अ० असंख्यात जो० योजन स० लाख ओ० अवगाहकर स० शक्र दे० देवेन्द्र का सो० सोम म० महाराजा की सो० सोमा रा० राज्यधानी ए० एक जो० योजन स० लाख आ० लंबी वि० चौडी जं० जंबूद्वीप प्रमाण वे० वैमानिक के प० प्रमाण से अ० अर्ध ने० जानना जा०

सूत्र — जहेव सूरियाभ विमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव आभिसेयो । नवरं सोमे देवे ॥ ३ ॥ संझप्पभस्सणं महाविमाणस्स अहे सपक्खि सपडिदिसिं असंखेज्जाइं जोयण सय सहस्साइं उगाहित्ता एत्थणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्समहारण्णो सोमानामं रायहाणी पण्णत्ता, एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं जंबूदीव

भावार्थ — सूर्याभ देवता के विमान का अधिकार में जैसा कहा है वैसे ही कहना मात्र यहां सोम देव कहना. ॥ ३ ॥ इस संध्यप्रभ विमान से असंख्यात योजन नीचे अवगाहकर चारों विदिशि में जावे तो वहां शक्र देवेंद्र के सोम महाराजा की सोमा नामक राज्यधानी कही है. एक लक्ष योजन की लम्बी व चौडी है. इस में प्रासाद द्वारादिक के सब प्रमाण सौधर्म देवलोक के प्रासादिक से आधा है. अर्थात् १५० योजन का कोट है, २५० योजन का प्रासाद ऊंचा है, चारों तरफ चार प्रासाद १२५ योजन के हैं, इस के परिवारवाले १६

शब्दार्थ यावत् उ० चौकी पीठ सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लंबे वि० चौडे प० पचास स०सहस्र योजन पं० पांच स० सत्तानव जो० योजन स० शत कि० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि पा० प्रासाद की च० चार प० परिपाटी ने० जानना से० शेष न० नहीं है ॥४॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा के इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि०निर्देश में चि० रहे सो० सोमनिकाय सो० सोमदेव निकाय वि० विद्युत्कुमार वि० विद्युत्कुमारी अ० अग्निकुमार

सूत्र प्पमाणा वेमाणियाणं पमाणस्स अद्धं नेयव्वं जाव उवगारियलेणं सोलस जोयण सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं पण्णासं जोयण सहस्साइं पंचय सताणउए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणंप०।पासायाणंचत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ सेसानत्थि।४।सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठंति तंजहा सोमकाइयाइवा, सोमदेवयकाइयाइवा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा,

भावार्थ विमान ६२॥ योजन के हैं और परिवारवाले ६४ विमान ३१। योजन के हैं. यावत् वे सोलह हजार योजन के लम्बे चौडे कहे हैं ५०५९७ योजन से कुछ अधिक की परिधि कही है. इस में सौधर्म सभा, उत्पत्ति स्थान, व्यवसाय सभा वगैरह नहीं है ॥ ४ ॥ शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा की आज्ञा, उपपात व निर्देश में सोम महाराजा की जाति के देव, सोम देव की जाति के देव, विद्युत् कुमार, अग्नि कुमार व

शब्दार्थ

अ० अग्निकुमारी वा० वायुकुमार वा० वायुकुमारी चं० चंद्र सू० सूर्य ग० ग्रह न० नक्षत्र ता० तारा जे० जो अ० अन्य त० तथा प्रकार स० सर्व ते० वे उ० उन के सेवक त० उन के साहायक त० उन की भार्या जैसे स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा के आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहे ॥ ५ ॥ जं० जम्बूद्वीप में मं० मेरु की दा० दक्षिण में जा० जो इ० ये स० उत्पन्न होते हैं तं० वह ज० जैसे ग० ग्रहदंड ग० ग्रहमुशल ग० ग्रह गर्जना ग० ग्रहयुद्ध ग० ग्रह शृंगा-

सूत्र

अग्गिकुमारीओ, वायुकुमारा, वायुकुमारीओ, चंदा, सूरा, गहा, नक्खत्ता, तारारूवा, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया तप्पक्खिया तब्भारिया. ॥ सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा उववाय वयणनिद्देसे चिट्ठंति ॥ ५ ॥ जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति तं० गहदंडाइवा, गहमुस-

भावार्थ

वायुकुमार जाति के देव देवियों और चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र तारे व ऐसे अन्य भी देव रहते हैं. वे सोम महाराजा की भक्ति करते हैं, उन के पक्ष में रहते हैं, उन से बताया हुवा कार्य पूर्ण करते हैं. इस तरह वे उन की आज्ञा में प्रवर्तते हैं ॥ ५ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण में जब दंड की तरह तीर्च्छे श्रेणी बन्ध मंगलादि तीन चार ग्रह का दंडाकार होवे, मूशल जैसे उपर नीचे श्रेणीबंध ग्रह होवे,

शब्दार्थ यावत् उ० चौकी पीठ सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लंबे वि० चौडे प० पचास स०सहस्र योजन पं० पांच स० सत्तानव जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि पा० प्रासाद की च० चार प० परिपाटी ने० जानना से० शेष न० नहीं है ॥४॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा के इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि०निर्देश में चि० रहे सो० सोमनिकाय सो० सोमदेव निकाय वि० विद्युत्कुमार वि० विद्युत्कुमारी अ० अग्निकुमार

मूल प्पमाणा वेमाणियाणं पमाणस्स अद्धं नेयव्वं जाव उवगारियलेणं सोलस जोयण सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं पण्णासं जोयण सहस्साइं पंचय सत्ताणउए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणंप०।पासायाणंचत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ सेसानत्थि।४।सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणाउववाय वयण निद्देसे चिट्ठंति तंजहा सोमकाइयाइवा, सोमदेवयकाइयाइवा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा,

भावार्थ विमान ६२॥ योजन के हैं और परिवारवाले ६४ विमान ३१। योजन के हैं. यावत् वे सोलह हजार योजन के लम्बे चौडे कहे हैं ५०८९७ योजन से कुछ अधिक की परिधि कही है. इस में सौधर्म सभा, उत्पत्ति स्थान, व्यवसाय सभा वगैरह नहीं है ॥ ४ ॥ शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा की आज्ञा, उपपात व निर्देश में सोम महाराजा की जाति के देव, सोम देव की जाति के देव, विद्युत् कुमार, अग्नि कुमार व

शब्दार्थ अ० अमोघ पा० पूर्वका वायु प० पश्चिम का वायु जा० यावत् सं० संवर्तक वायु गा० ग्राम में दा० अग्नि जा० यावत् सं० सन्निवेश में दा० अग्नि पा० प्राणक्षय ज० जनक्षय ध० धनक्षय कु० कुलक्षय व० व्यसन भूत अ० अनार्य जे० जो अ० अन्य त० तथा प्रकार स० शक्र दे० देवेन्द्र का सो० सोम म० महाराजा का

सूत्र जाव संवट्टयवायाइवा, गामदाहाइवा, जाव सन्निवेसदाहाइवा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया. अणारिया जेयावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया, अदिट्ठा, असुया, अमुया, अवि-

भावार्थ श्वेत वर्ण से धूंअर पडे. दिशा का रजस्वलपना होवे, चंद्र ग्रहण होवे, सूर्य ग्रहण होवे, चंद्र की चारों बाजु में कुंडाला, सूर्य की चारों बाजु में कुंडाला, दो चंद्र देखने में आवे, दो सूर्य देखने में आवे, इन्द्र धनुष्य होवे, इन्द्र धनुष्य के खंड होवे, बद्दल रहित आकाश में कपिहसन समान विद्युत् होवे, सूर्य के उदय व अस्त समय में किरणों के विकार से रक्त कृष्णवर्ण वाले गाडे की धूरीके आकारवाला दंड होवे, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की वायु संवर्तक होवे, ग्राम दाह यावत् सन्निवेश दाह वगैरह लक्षण होवे तव प्राणियों का, बल का, मनुष्य का, धन का, कुल का क्षय होवे, आपत्ति में पडे, अनार्य लोगों का आगमन होवे वगैरह अनेक प्रकार के उपद्रव होवे. उक्त वातों शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा से अजानपने से नहीं हैं, विना देखी, विना सुनी, स्मरण बिना की, या अवधि ज्ञान से नहीं देखी वैसी नहीं हैं.

शब्दार्थ २क ग० ग्रहा का अ० वद्दल होवे अ० वद्दल के वृक्ष होवे सं० संध्या होवे गं० गंधर्व नगर होवे उ० उल्कापात होवे दि० दिशा में दाह होवे ग० गर्जना वि०विजली होवे पं० धूलकी वु० वर्षा होवे जु०वाल चंद्र ज० यक्षांतर से अग्नि ध० धूसर म० महिका र० दिशाका रजस्वलपना चं० चंद्रका ग्रहण सू०सूर्य का उ०उपराग चं०चंद्र परिवेष सू०सूर्यपरिवेष प०प्रतिचंद्र प०प्रतिसूर्य इं०इंद्र धनुष्य उ०वहुत इंद्रधनुष्य के खण्ड क०कपिहसन

सूत्र लाइवा, गहगजियाइवा, एवं गहजुद्धाइवा, गहसिंघाडगाइवा. गहावसव्वाइवा, अब्भरुक्खाइवा, अब्भाइवा, संझाइवा, गंधव्वनगराइवा, उक्कापायाइवा, दिसादाहाइवा, गज्जियाइवा, विज्जुयाइवा, पंसुवुट्ठीइवा, जुयजक्खालित्तय, धमियमहियरउग्घाय, चंदोवरागाइवा, सूरोवरागाइवा, चंद परिवेसाइवा, सूरपरिवेसाइवा, पडिचंदाइवा, पडिसूराइवा, इंदधणूइवा, उदगमच्छकविहसियअमोह पाईणवायाइवा, पडीणं

भावार्थ ग्रह चलने से मेघ समान गर्जना होवे, एक नक्षत्र में दक्षिण उत्तर श्रेणि के ग्रह का रहना सो ग्रह युद्ध होवे, शृंगाटक के आकार से ग्रह होवे, ग्रह पीछे जावे, वद्दल होवे, वृक्षाकार वद्दल होवे, संध्या फूले, आकाश में यक्षांतर के बनाये हुवे नगर होवे, उद्योत सहित ताराओं का पडना ऐसा उल्कापात होवे, दिशाओं में रक्त-पीत समान रंगवाला दाह होवे, मेघादिक की गर्जना होवे विद्युतका उद्योत होवे, रजोवृष्टि होवे, प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीयाके दिन भी चंद्र रहे वहां लग संध्या फूली हुई रहे, व्यंतरोंने किया हुवा अग्नि आकाशमें रहे, धूंअर पडे,

शब्दार्थ सो० सोम महाराजा ॥ ७ ॥ क० कहां ज० जप म० महाराजा का व० वराशिष्ठ म० महाविमान प० प्ररूपा गो० गौतम सो० सौधर्म अवतंसक म० महाविमान की दा० दक्षिण में सो० सौधर्म देवलोक की अ० असंख्यात जो० योजन वी० व्यतिक्रान्त हुवे ए० तहां स० शक्र के ज० यमका व० वराशिष्ठ वि० विमान प० प्ररूपा अ० अर्ध ते० तेरह जो० योजन स० लाख ज० जैसे सो० सोम का वि० विमान त० तैसे

सूत्र एगं पलिओवमंठिईं पण्णत्ता. ए महिड्ढीए जाव ए महाणुभागे सोमे महाराया ॥ ७ ॥ कहिणं भंते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठेणामं महाविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स दाहिणेणं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइ जोयण सहस्साइं वीईवइत्ता एत्थणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठेनामं विमाणे पण्णत्ते. अद्धतेरस्स जोयण सयसहस्साइं जहा सोमस्स

भावार्थ पूर्व दिशा के लोकपाल सोम की यह ऋद्धि और यह विवक्षा की है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र के यम महाराजा का वराशिष्ठ नामक महा विमान कहां कहा है ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतंसक नामक महा विमान से दक्षिण में असंख्यात योजन जावे तब वहां यम महाराजा का वराशिष्ट नामक विमान कहा है. वह साढे बारह योजन का लम्बा चौडा वगैरह सोम महाराजा का

शब्दार्थ अ० अजान अ० अदृष्ट अ० नहीं सूना अ० नहीं स्मरा अ० नहीं जाना ॥ ६ ॥ ते० उन सो० सोम निकाय स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा को इ० यह अ० अपत्यदेव अ० जानेहुवे हो० थे इं० अंगारक वि० वैताल लो० लोहिताक्ष स० शनैश्चर चं० चन्द्र सू० सूर्य सु० शुक्र बु० बुध ब० बृहस्पति रा० राहु स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराज की स० तीनभाग प० पल्योपम की ठि० स्थिति अ० अपत्यदेव की ए० एक प० पल्योपम की ठि० स्थिति म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग

सूत्र ण्णाया ॥ ६ ॥ तेसिंवा सोमकाइयाणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे अहावच्चादेवा अभिण्णाया होत्था तंजहा-इंगालए, वियालए, लोहियक्खे, सणिंचरे, चंदे, सूरे, सुक्के, बुहे, बहस्सई, राहू ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सइभागं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥ अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं

भावार्थ अर्थात् सोम महाराजा उक्त सब बातों को जानते हैं यावत् देखते हैं ॥ ६ ॥ उन शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा को पुत्रवत् आज्ञा पालनेवाले मंगल, केतु, लोहिताक्ष, शनैश्चर, चंद्र, सूर्य, शुक्र बृहस्पति, वराह नामक देव हैं. उन की स्थिति एक पल्योपम व एक पल्योपम के तीन भाग में का एक भाग अधिक की कही. और उन के अपत्य स्थान जो देव हैं उन की एक पल्योपम की स्थिति कही. ÷ अहो गौतम !

÷ यद्यपि चंद्र की एक लक्ष वर्ष अधिक व सूर्य की एक सहस्र वर्ष अधिक की स्थिति कही है. परंतु यहां पर अधिकता की विवक्षा नहीं की गई है.

शब्दार्थ इ० इसे स० उत्पन्न करते हैं डिं० विघ्नहोवे ड० राजकुमार कृत उपद्रव क० कलह वो० महाध्वनि होवे खा० मत्सर होवे म० महायुद्ध होवे म० महासंग्राम होवे म० बडे नि०पडे ए०ऐसे म० महान् पुरुषका नि० पडे म० बहुतरुधिर नि० पडे दु० दूर्भूव कु० कुलरोग होवे गा० ग्रामरोग होवे मं० मंडलरोग न० नगर रोग सी० शीर्ष अ० अक्षि क० कर्ण न० नख दं० दांत वे०वेदना इं० इंद्रग्रह खं० स्कन्धग्रह कु० कुमारग्रह ज० यक्षग्रह भू० भूतग्रह ए० ज्वरविशेष वे०दो दिनांतर ते० तीन दिनांतर चा० चार दिनांतर उ० उद्वेग

सूत्र इमाई समुप्पज्जंति, तंजहा-डिंबाइवा, डमराइवा, कलहाइवा, वोलाइवा, खाराइवा, महाजुद्धाइवा, महासंगामाइवा, महासत्थ निवडणाइवा, एवं महापुरिस निवणइवा, महारुहिर निवडणाइवा, दुब्भूयाइवा, कुलरोगाइवा, गामरोगाइवा, मंडलरोगाइवा, नगररोगा-सीस-अच्छि-कण्ण-नह-दंत-वेयणा, इंदग्गहा, खंदग्गहाइवा, कुमारग्गह, जक्खग्गह, भूयग्गह, एगाहियाइवा; बेहिय, तेहिय चाउत्थयाइवा, उव्वेगाइवा, का-

भावार्थ क्लेश वृद्धि करनेवाले शब्दोच्चार, परस्पर कुसंप, महायुद्ध, महा संग्राम, महा शस्त्रका निपात, महा पुरुष का काल होना, महा रुधिर का पडना, सर्प वृश्चिकादिक की उत्पत्ति, कुल में क्षय रूप रोग, ग्राम में क्षय रूप रोग, बहुत ग्राम के मनुष्यों में क्षय रूप रोग, नगर जन में क्षय रूप रोग, मस्तक, आंख, कर्ण, नख व दांत की वेदना, इन्द्र ग्रहादिके उपद्रव, स्कंध देवादि के उपद्रव, कुमार ग्रह, यक्ष ग्रह, भूतग्रह के उपद्रव, एकान्तर

शब्दार्थ जा० यावत् अ० अभिषेक रा० राज्यधानी त० तैसे जा० यावत् पा० प्रासादपंक्ति ॥ ८ ॥ स० शक्र के ज० यम के इं०ये दे०देव आ०आज्ञा उ०उपपात जा०यावत् चि०रहे ज०यम के परिवार ज०यम के सामानिक के परिवार अ० असुर कुमार अ० असुर कुमारी कं० कंदर्प नि० नरक रक्षक अ० अभियोग जे० जो अ० अन्य त० तथा प्रकार स० सर्व ते० वे ॥ ९ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में

सूत्र

विमाणं तहा जाव अभिसेओ रायहाणी तहेव जाव पासायपंतीओ ॥ ८ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा उववाय जाव चिट्ठंति, तंजहा-जमकाइयाइवा, जमदेवयकाइयाइवा, पेयकाइयाइवा, पेयदेवकाइयाइवा, असुरकुमारा, असुरकुमारीओ, कंदप्पा निरयपाला, अभियोगा, जेयावण्णे तहप्पगारा, सव्वे ते तब्भत्तिया, तप्पक्खिया, तब्भारिया, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो, ॥ ९ ॥ जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाई

भावार्थ विमान जैसे कहना ॥ ८ ॥ यम कायिक, यमदेव कायिक, प्रेत कायिक, प्रेतदेव कायिक, असुर कुमार, असुर कुमार की देवियों, कंदर्प, नरकपाल, अभियोगिक-सेवक और भी ऐसे अन्य देव यम महाराजा की आज्ञा, निर्देश व उपपात में रहते हैं, वैसे ही वे उन का पक्ष धारन करते हैं, और उन की भार्या की समान सेवा करते हैं ॥ ९ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में विघ्न, एक राजकुमारादिकृत उपद्रव,

अनार्य ॥ १० ॥ इ० ये दे० देव अ० यथा अपत्य अ० जाने हो० थे अं० अंब अंबरिष सा० श्याम स० सबल रु० रुद्र वे० वैरुद्र का० काल म० महाकाल अ० असिपत्र ध० धनुष्य कुं० कुंभ वा० वालुक वे० वैतरणी ख० खर स्वर म० महाघोष प० पन्नरह आ० कहे ज० यम म० महाराजा की स० तीन भाग प० पल्योपम की ठि० स्थिति अ० यथाअपत्य की ए० एक प० पल्योपम की म० महर्द्धिक जा० यावत्

सूत्र

ण्णे तहप्पगारा न ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया ॥१०॥ तेसिंवा जमकाइयाणं देवाणं सक्कस्स जमस्स इमेदेवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तंजहा-अंबे, अंबरिसे चेव; सामे, सबलेत्तियावरे; रुद्दे, वरुद्दे, कालेय; महाकाले त्तियावरे (१) असिपत्ते, धणूकुंभे वालुया; वेयरणीतिय; खरस्सरे, महाघोसे, एमेपण्णरसाहिया। सक्कस्सणं देविंस्स देवरण्णो जम्मस्स महारणो सति भागं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता ॥ अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता । ए माहिड्ढीए जाव

भावार्थ

गुप्त नहीं होती है इन को जानते हैं, देखते हैं, व स्परण करते हैं ॥ १० ॥ अम्ब, अम्बरिश, साम, सबल, रुद्र, वैरुद्र, काल, महाकाल, असिपत्र, धनुष्य, कुंभ, वालुक, वैतरणी, खरस्वर और महाघोष ये पंद्रह परमाधर्मी यम महाराजा को अपत्यवत् विनयवंत रहते हैं. यम महाराजा की एक पल्योपम और एक पल्योपम के तीसरे भाग अधिक की स्थिति कही है. उन के पुत्र स्थान कार्य करनेवाले देव की एक

पदार्थ का० काम खा० खासी सा० श्वास ज० ज्वर दा० दाह क० कच्छ को० कोड अ० अजीर्ण पं० पंडुरोग अ० हरसरोग भ० भगंदर हि० हृदयशूल म० मस्तकशूल जो० योनिशूल पा० पसली शूल कु० कुक्षिशूल गा० ग्राममरकी न० नगर खे० खेड क० कर्वट दो० द्रोणमुख म० मडंप प० पट्टन आ० आश्रम सं० संवाह स० सन्निवेश मरकी पा० प्राणक्षय ध० धनक्षय ज० जनक्षय कु० कुलक्षय व० वसनभूत अ०

सूत्र साइवा, खासाइवा, जराइवा, दाहाइवा, कच्छ कोहाइवा, अजीरया, पंडुरोगा ; अरसाइवा, भगंदलाइवा, हियय सूलाइवा मत्थय सूलाइवा, जोणिसूल, पाससूल, कुच्छिसूल, गाममारिइवा, नगर खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसमसंवाह-सण्णिवेस मारिइवा, पाणक्खय, धणक्खय-जणक्खय-कुलक्खय-वसणब्भूयमणारिया जेयाव-

भावार्थ ज्वर, दो दिनांतर ज्वर, तीन दिनांतर ज्वर, चार दिनांतर ज्वर, इष्ट के वियोग से उद्वेग, श्वास, खांसी, ज्वर, दाह, कच्छ, कोड, अजीर्ण, पांडुरोग, हरस (मसा) भगंदर, हृदय शूल, मस्तक शूल, योनि शूल, पसली शूल, कुक्षि शूल, ग्राम की मारी, नगर, खेड, कवड, द्रोण मुख, मंडप, पट्टण, आश्रम, संवाह व सन्निवेश में मरकी, प्राणियों का क्षय, धन का क्षय, मनुष्यों का क्षय, गृहों का क्षय, वस्त्राभूषणों का क्षय, व अनार्य म्लेच्छ लोगों का आगमन होवे वैसे, ही अन्य भी ऐसे उपद्रव होवे. उक्त बातों यम महाराजा से

पदार्थ

अनार्य ॥ १० ॥ इ० ये दे० देव अ० यथा अपत्य अ० जाने हो० थे अं० अंब अंबरिप सा० श्याम स० सबल रु० रुद्र वे० वैरुद्र का० काल म० महाकाल अ० असिपत्र ध० धनुष्य कुं० कुंभ वा० वालुक वे० वैतरणी ख० खर स्वर म० महाघोष प० पन्नरह आ० कहे ज० यम म० महाराजा की स० तीन भाग प० पल्योपम की ठि० स्थिति अ० यथाअपत्य की ए० एक प० पल्योपम की म० महर्द्धिक जा० यावत्

सूत्र

ण्णे तहप्पगारा न ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया ॥१०॥ तेसिंवा जमकाइयाणं देवाणं सक्कस्स जमस्स इमेदेवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तंजहा-अंबे, अंबरिसे चेव; सामे, सबलेत्तियावरे; रुद्दे, वरुद्दे, कालेय; महाकाले त्तियावरे (१) असिपत्ते, धणूकुंभे वालुया; वेयरणीतिय; खरस्सरे, महाघोसे, एमेपण्णरसाहिया। सक्कस्सणं देविंस्स देवरण्णो जम्मस्स महारणो सति भागं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता ॥ अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता । ए माहिड्डीए जाव

भावार्थ

गुप्त नहीं होती है इन को जानते हैं, देखते हैं, व स्मरण करते हैं ॥ १० ॥ अम्ब, अम्बरिश, साम, सबल, रुद्र, वैरुद्र, काल, महाकाल, असिपत्र, धनुष्य, कुंभ, वालुक, वैतरणी, खरस्वर और महाघोष ये पंद्रह परमाधर्मी यम महाराजा को अपत्यवत् विनयवंत रहते हैं. यम महाराजा की एक पल्योपम और एक पल्योपम के तीसरे भाग अधिक की स्थिति कही है. उन के पुत्र स्थान कार्य करनेवाले देव की एक

पदार्थ — का० काम खा० खासी सा० श्वास ज० ज्वर दा० दाह क० कच्छ को० कोढ अ० अजीर्ण पं० पांडुरोग अ० हरसरोग भ० भगंदर हि० हृदयशूल म० मस्तकशूल जो० योनिशूल पा० पसली शूल कु० कुक्षिशूल गा० ग्राममरकी न० नगर खे० खेड क० कर्वट दो० द्रोणमुख म० मडंप प० पट्टन आ० आश्रम सं० संवाह स० सन्निवेश मरकी पा० प्राणक्षय ध० धनक्षय ज० जनक्षय कु० कुलक्षय व० वसनभूव अ०

सूत्र — साइवा, खासाइवा, जराइवा, दाहाइवा, कच्छ कोहाइवा, अजीरया, पंडुरोगा; अरसाइवा, भगंदलाइवा, हियय सूलाइवा मत्थय सूलाइवा, जोणिसूल, पाससुरु, कुच्छिसूल, गाममारिइवा, नगर खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसमसंवाह-सण्णिवेस मारिइवा, पाणक्खय, धणक्खय-जणक्खय-कुलक्खय-वसणब्भूयमणारिया जेयाव-

भावार्थ — ज्वर, दो दिनांतर ज्वर, तीन दिनांतर ज्वर, चार दिनांतर ज्वर, इष्ट के वियोग से उद्वेग, श्वास, खांसी, ज्वर, दाह, कच्छ, कोढ, अजीर्ण, पांडुरोग, हरस (मसा) भगंदर, हृदय सूल, मस्तक शूल, योनि शूल, पसली शूल, कुक्षि शूल, ग्राम की मारी, नगर, खेड, कवड, द्रोण मुख, मंडप, पट्टण, आश्रम, संवाह व सन्निवेश में मरकी, प्राणियों का क्षय, धन का क्षय, मनुष्योंका क्षय, गृहों का क्षय, वस्त्राभूषणोंका क्षय, व अनार्य म्लेच्छ लोगों का आगमन होवे वैसे, ही अन्य भी ऐसे उपद्रव होवे. उक्त बातों यम महाराजा से

शब्दार्थ कुमार ना० नाग कुमारी उ० उदधिकुमार उ० उदधिकुमारी थ० स्थनित कुमार थ० स्थनित कुमारी जे० जो अ० अन्य त० तथारूप स० सर्व ते० ने उ० उन के सेवक जा० यावत् चि० रहते हैं ॥ १३ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में जा० जो इ० ये स० उत्पन्न होवे अ० अतिवृष्टि मं० मंदवृष्टि सु० सुवृष्टि दु० खराब वृष्टि उ० पानीका उद्भेद उ० तलावादि भरावे उ० थोडा पानी वहे उ० बहुत पानी वहे प० प्रवाहचले गा० ग्राम में पानीचले जा० यावत् स० सन्निवेश में पानी चले पा० प्राणक्षय जा०

सूत्र नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीओ, थणियकुमारा, थणियकुमारीओ, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया. जाव चिट्ठंति ॥ १३ ॥ जंबुदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तंजहा-अइवासाइवा, मंदवासाइवा, सुवुट्ठीइवा, दुवुट्ठीइवा, उदुब्भेयाइवा, उदप्पीलाइवा, उदवाहाइवा, पवाहाइवा, गामवाहाइवा, जाव सन्निवेसवाहाइवा, पाणक्खया जाव तेसिं वा,

भावार्थ कुमार, उदधि कुमारियों, स्थनित कुमार व स्थनित कुमारियों यावत् उनका भार्यासमान कार्य करते हैं ॥१३॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी दक्षिणमें अतिवृष्टि, मंदवृष्टि, सुवृष्टि, दुवृष्टि, पर्वतकेतट व नदियोंमें पानीका चलना, तलावादिक भर कर पानी का चलना, थोडा पानी चलना, बहुत पानी चलना, ग्राम यावत् सन्निवेश वह जावे इतना पानी चलना वगैरह होवे. इस से प्राणियों का क्षय यावत् धन वगैरह का क्षय होवे. यह सब वरुण

शब्दार्थ ज० यम म० महाराजा ॥ ११ ॥ क० कहां भं० भगवन् व० वरुण म० महाराजा का स० स्वयं जल म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्म अवतंसक म० महाविमान की प० पश्चिम में सो० सौधर्म देवलोक में अ० असंख्यात जा० यावत् ज० जैसे सो० सोम का त० तैसे वि० विमान राज्यधानी भा० कहना जा० यावत् पा० प्रासाद अवतंसक ण० विशेष ना० नाम ना० नाना प्रकार ॥ १२ ॥ व० वरुण के जा० यावत चि० रहते हैं व० वरुण का परिवार व० वरुण के० सामानिक का परिवार ना० नाग

सूत्र जमे महाराया महाराया ॥११॥ कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारन्नो, सयंजले नामं महाविमाणे पन्नते ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सोहम्मेकप्पे असंखेज्जाइं, जहा सोमस्स तहा विमाण रायहाणीओ भाणियव्वा जाव पासाय वडंसया. णवरं नामं नाणत्तं ॥ १२ ॥ सक्कस्सणं वरुणस्सणं जाव चिट्ठंति तंजहा-वरुणकाइयाइवा, वरुणदेवकाइयाइवा,

अर्थ पल्योपम की स्थिति कही है. इस तरह अहो गौतम ! यह महर्द्धिक यावत् महाराजा है.॥११॥ अहो भगवन्! शक्र देवेन्द्र के वरुण नामक महाराजा का सतंजला नामक महाविमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्मावतंसक विमान की पश्चिम में असंख्यात योजन जावे वहां वरुण महाराजा की सतंजला नामक राज्यधानी कही उसका वर्णन सोममहाराजा जैसे करना॥१२॥वरुण कायिक, वरुणदेव कायिक, नागकुमार, नागकुमारियों, उदधि

शब्दार्थ कुमार ना० नाग कुमारी उ० उदधिकुमार उ० उदधिकुमारी थ० स्थनित कुमार थ० स्थनित कुमारी जे० जो अ० अन्य त० तथारूप स० सर्व ते० वे उ० उन के सेवक जा० यावत् चि० रहते हैं ॥ १३ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में जा० जो इ० ये स० उत्पन्न होवे अ० अतिवृष्टि मं० मंदवृष्टि सु० सुवृष्टि दु० खराब वृष्टि उ० पानीका उद्भेद उ० तलावादि भरावे उ० थोडा पानी वहे उ० बहुत पानी वहे प० प्रवाहचले गा० ग्राम में पानीचले जा० यावत् स० सन्निवेश में पानी चले पा० प्राणक्षय जा०

सूत्र नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीओ, थणियकुमारा, थणियकुमारीओ, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया. जाव चिट्ठंति ॥ १३ ॥ जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तंजहा-अइवासाइवा, मंदवासाइवा, सुवुट्ठीइवा, दुवुट्ठीइवा, उदुब्भेयाइवा, उदप्पीलाइवा, उदवाहाइवा, पवाहाइवा, गामवाहाइवा, जाव सन्निवेसवाहाइवा, पाणक्खया जाव तेसिं वा,

भावार्थ कुमार, उदधि कुमारियों, स्थनित कुमार व स्थनित कुमारियों यावत् उनका भार्यासमान कार्य करते हैं ॥१३॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी दक्षिणमें अतिवृष्टि, मंदवृष्टि, सुवृष्टि, दुवृष्टि, पर्वतकेतट व नदियोंमें पानीका चलना, तलावादिक भर कर पानी का चलना, थोडा पानी चलना, बहुत पानी चलना, ग्राम यावत् सन्निवेश वह जावे इतना पानी चलना वगैरह होवे. इस से प्राणियों का क्षय यावत् धन वगैरह का क्षय होवे. यह सब वरुण

शब्दार्थ

ज० यम म० महाराजा ॥ ११ ॥ क० कहां भं० भगवन् व० वरुण म० महाराजा का स० स्वयं जल म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्म अवतंसक म० महाविमान की प० पश्चिम में सो० सौधर्म देवलोक में अ० असंख्यात जा० यावत् ज० जैसे सो० सोम का त० तैसे वि० विमान राज्यधानी भा० कहना जा० यावत् पा० प्रासाद अवतंसक ण० विशेष ना० नाम ना० नाना प्रकार ॥ १२ ॥ व० वरुण के जा० यावत चि० रहते हैं व० वरुण का परिवार व० वरुण के० सामानिक का परिवार ना० नाग

सूत्र

जमे महाराया महाराया ॥११॥ कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारन्नो, सयंजले नामं महाविमाणे पन्नते ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडं सयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सोहम्मेकप्पे असंखेज्जाइं, जहा सोमस्स तहा विमाण रायहाणीओ भाणियव्वा जाव पासाय वडंसया. णवरं नामं नाणत्तं ॥ १२ ॥ सक्कस्सणं वरुणस्सणं जाव चिट्ठंति तंजहा-वरुणकाइयाइवा, वरुणदेवकाइयाइवा,

भावार्थ

पल्योपम की स्थिति कही है. इस तरह अहो गौतम ! यह महर्द्धिक यावत् महाराजा है.॥११॥ अहो भगवन्! शक्र देवेन्द्र के वरुण नामक महाराजा का सतंजल नामक महाविमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्मावतंसक विमान की पश्चिम में असंख्यात योजन जावे वहां वरुण महाराजा की सतंजला नामक राज्यधानी कही उसका वर्णन सोममहाराजा जैसे करना॥१२॥वरुण कायिक,वरुणदेव कायिक,नागकुमार,नागकुमारियों, उदधि

शब्दार्थ

के० वल्गु ना० नाम का म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्मावतंसक म० महाविमान की उ० उत्तर में ज० जैसे सो० सोम वि० विमान की रा०राज्यधानी की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् पा० प्रासादावतंसक ॥ १५ ॥ स० शक्र के वे० वैश्रमण को इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहते हैं वे० वैश्रमण कायिक वे० वैश्रमण देव कायिक सु० सुवर्ण कुमार सु० सुवर्ण कुमारिका दी० द्वीपकुमार दी० द्वीप कुमारी का दि० दिशाकुमार दि० दिशा कुमारी का वा०

सूत्र

महाविमाणे पं० ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरेणं जहा सोमस्स विमाणस्स रायहाणियवत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव पासायवडंसया ॥ १५॥ सक्कस्सणं वेसमणस्स इमे देवा आणाउववायवयणानिद्देसे चिट्ठंति, तंजहा-वेसमण काइयाइवा, वेसमणदेवकाइयाइवा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, दीवकुमारा,

भावार्थ

मण महाराजा का वल्गु नामक महा विमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतंसक महाविमान की उत्तर में असंख्यात योजन जावे वहां वल्गु नाम का महा विमान आता है. उस का सब वर्णन सोम महाराजा की राज्यधानी जैसे कहना ॥ १५ ॥ वैश्रमण कायिक, वैश्रमण देवकायिक, सुवर्ण कुमार, द्वीप कुमार, दिशा कुमार व वाणव्यंतर देव व उन की देवियों वैश्रमण महाराजा की

शब्दार्थ यावत् ते० उन व० वरुण के० जा० यावत् अ० यथा अपत्य क० कर्कोटक क० कर्दम अं० अंजन सं० शंखपाल पुं० पुंड्र प० पलाश मो० मोज ज० जय द० दधिमुख अ० अयंपुल का० कातरिक व० वरुण की दे० देशऊणे दो० दोपल्योपम की ठि० स्थिति अ० अपत्य देव की ए० एक पल्योपम की म० महर्द्धिक प० कहे व० वरुण म० महाराजा ॥ १४ ॥ क० कहां भं० भगवन् स० शक्र के वे० वैश्रमण

सूत्र वरुणकाइयाणं देवाणं सक्कस्सणं वरुणस्स जाव अहावच्चाभिंण्णाया होत्था, तंजहा-कक्कोडए, कद्दमए, अंजणे, संखवालए, पुंडे, पलासे, मोये, जये, दहिमुहे, अयंपुले, कायरिए ॥ सक्कस्सणं वरुणस्स देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, अहावच्चा भिण्णायाणं देवाणं एगंपलिओवमं ठिई पण्णत्ता, ए महिड्डीए जाव वरुणे महाराया ॥ १४ ॥ कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गूनामं

भावार्थ महाराजा जानते हैं यावत् याद करते हैं. वरुण महाराजा को कर्कोटक, कर्दमक, अंजन, शंखपाल, पुंड्र, पलाश, मोय, जय, दधिमुख, अयंपुल कातरिक नामक देवों पुत्रवत् विनयवाले आदेशमें प्रवर्तनेवाले होते हैं. इन की देशऊने दो पल्योपम की स्थिति कही है, और अपत्य समान देवकी एक पल्योपम की स्थिति कही. अहो गौतम ! वरुण राजा की ऐसी ऋद्धि कही है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र का वैश्र-

शब्दार्थ के० वल्गु ना० नाम का म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्मावतंसक म० महाविमान की उ० उत्तर में ज० जैसे सो० सोम वि० विमान की रा०राज्यधानी की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् पा० प्रासादावतंसक ॥ १५ ॥ स० शक्र के वे० वैश्रमण को इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहते हैं वे० वैश्रमण कायिक वे० वैश्रमण देव कायिक सु० सुवर्ण कुमार सु० सुवर्ण कुमारिका दी० द्वीपकुमार दी० द्वीप कुमारी का दि० दिशाकुमार दि० दिशा कुमारी का वा०

सूत्र महाविमाणे पं० ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरेणं जहा सोमस्स विमाणस्स रायहाणियवत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव पासायवडंसया ॥१५॥ सक्कस्सणं वेसमणस्स इमे देवा आणाउववायवयणानिद्देसे चिट्ठंति, तंजहा-वेसमण काइयाइवा, वेसमणदेवकाइयाइवा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, दीवकुमारा,

भावार्थ मण महाराजा का वल्गु नामक महा विमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतंसक महाविमान की उत्तर में असंख्यात योजन जावे वहां वल्गु नाम का महा विमान आता है. उस का सब वर्णन सोम महाराजा की राज्यधानी जैसे कहना ॥ १५ ॥ वैश्रमण कायिक, वैश्रमण देवकायिक, सुवर्ण कुमार, द्वीप कुमार, दिशा कुमार व वाणव्यंतर देव व उन की देवियों वैश्रमण महाराजा की

सूत्र

दीवकुमारीओ ; दिसाकुमारा, दिसाकुमारीओ, वाणमंतरा, वाणमंतरीओ, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वेते तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति ॥१६॥ जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति. तंजहा-अयागराइवा, तउयागराइवा, तंबागराइवा, एवं सीसागराइवा, हिरण्ण सुवण्ण रयण वइरागराइवा, वसुहाराइवा, हिरण्णवासाइवा, सुवण्णवासाइवा, रयण-वइर-आभरण-पत्त-पुप्फ-फल-बीय-मल्ल-वण्ण-चुण्ण-गंध-वत्थ-

शब्दार्थ वाणव्यंतर वा० वाण व्यंतरी जे० जो अ० अन्य त० तैसे स० सब ए० ये त० उस की भक्तिवाले जा० यावत् चि० रहते हैं ॥ १६ ॥ जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में जा० जो इ० ये स० उत्पन्न होते हैं तं० वह ज० जैसे अ० लोहे की खान त० चांदीकी खान तं० तांबेकी खान ए० ऐसें सी० सीसे की खान हि० चांदीकी खान सु० सुवर्ण की खान र० रत्नकी खान व० वज्र रत्न की खान व० द्रव्य वृष्टि हि० चांदी सु० सुवर्ण की वर्षा र० रत्न व० वज्र आ० आभरण प० पत्र पु० पुष्प फ० फल बी० बीज म० माला व० वर्ण चु० चूर्ण गं० गंध व० वस्त्र की वा० वर्षा हि० हिरण्य की वु० वृष्टि सु० सुवर्ण

भावार्थ आज्ञा, निर्देश व उपपात में रहते हैं उन की सेवा भक्ति करते हैं यावत् उनका भार्या समान कार्य करते हैं ॥ १६ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में लोहे की खान, ताम्बे की खान, सीसे की खान, हिरण्य [चांदी] की खान, सुवर्ण की खान, रत्न, वज्र, आभरण, पत्र, पुष्प, फल, बीज, माल्य, वर्ण, चूर्ण,

शब्दार्थ की र० रत्न व० वज्र आ० आभरण प० पत्र पु० पुष्प फ० फल बी० बीज म० माल्य व० वर्ण गं० गंध व० वस्त्र भा० भाजन की वु० वृष्टि खी० क्षीर की वु० वृष्टि सु० सुकाल दु० दुष्काल अ० अल्पघ्र्य म० महर्घ्य सु० सुभिक्ष दु० दुर्भिक्ष क० क्रय वि० विक्रय स० सन्निधि सं० संचय नि० निधि नि० निधान चि० बहुत काल के पो० जीर्ण प० रहित सा० स्वामीवाले प० सेवक रहित प० मार्ग रहित ग० गोत्रा

सूत्र वासाइवा, हिरण्णवुट्ठीइवा, सुवण्ण-रयण-वइर-आभरण-पत्त-पुप्फ-फल-बीय-मल्ल-वण्ण-गंध-वत्थ भायण-वुट्ठीइवा, खीरवुट्ठीइवा-सुयालाइवा, दुक्कालाइवा, अप्पुग्घाइवा, महग्घाइवा, सुभिक्खाइवा दुब्भिक्खाइवा, कयविक्कयाइवा, सन्निहीइवा, सन्निचयाइवा, निहीइवा; निहाणाइवा, चिरपोराणाइं, पहीणसामियाइवा, पहीणसेउयाइवा, पहीण-मग्गाणिवा, पहीण गोत्तागाराइवा, उच्छिण्ण सामियाइवा, उच्छिण्णसेउयाइवा, उच्छिन्नगोत्तागाराइवा, सिंघाडग-तिग - चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु, नगर-

भावार्थ गंध व वस्त्र की वर्षा, हिरण्य, सुवर्ण, रत्न, वज्र, आभरण, यावत् वस्त्र भाजन की वृष्टि, क्षीर की वृष्टि, सुकाल, दुष्काल, अल्प मूल्य, बहु मूल्य, सुभिक्ष, दुभिक्ष, क्रयविक्रय, संचय, संग्रह, निधि, निधान, बहुत काल का संचित कियाहुवा द्रव्य, स्वामी रहित बना हुवा द्रव्य, सेवक रहित बना हुवा द्रव्य, नष्ट मार्ग, नष्ट गोत्राकार, विच्छिन्न स्वामी, विच्छिन्न सेवक, विच्छिन्न गोत्राकार वैसे ही श्रृंगाटक के आकार में

शब्दार्थ गार रहित उ० विछिन्न स्वामी वाले सिं० शृंगाटक ति० तीन च० चौक च० चचर च० चउमुख म० महापथ प० पथ में न० नगर की मोरी में सु० श्मशान में गि० पर्वत कं० गुफा सं० शान्ति स्थान से० शैलोपस्थान भ० भवन गृहमें स० रखा हुवा चि० रहता है ण० नहीं ता० उसे स० शक्र दे० देवेंद्र दे० देवराजा का वे० वैश्रमण म० महाराजा अ० अज्ञात अ० अश्रुत अ० अजान अ० अविज्ञात ॥ १७ ॥ ते० उन वे० वैश्रमण कायिक दे० देवों को स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा वे० वैश्रमण को इ० ये

सूत्र निद्धमणेसुवा, सुसाण गिरि कंदर संति सेलोवट्ठाण भवणगिहेसु सण्णिक्खित्ताइं चिट्ठंति, ण ताइं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा, अस्सुया, अम्मुया, अविण्णाया, ॥ १७ ॥ तेसिंवा वेसमणकाइयाणं देवाणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था,

भावार्थ तीन रस्ते मीले वहां, चौक, चचर, चउमुख, महापथ, राजमार्ग, नगर की नालियों में, श्मशान, गिरि, गुफा, शान्तिगृह, शैलोपस्थान, व भवनगृहमें रखाहुवा द्रव्य वगैरह होते हैं वे शक्र देवेन्द्रके वैश्रमण महाराजा से अज्ञात, अदृष्ट, अश्रुत, अविज्ञात नहीं हैं. वे सब वार्तों जानते हैं ॥ १७ ॥ पूर्णभद्र, माणभद्र, शालिभद्र, सुवर्णभद्र, शक्ररक्ष, पूर्णरक्ष, सर्वाण, सर्वयश, सर्व कार्य समिद्ध, अमोघ अशान्त वगैरह

शब्दार्थ दे०देव अ०यथाअपत्य अ०अभिज्ञात हो० हैं पु०पूर्णभद्र मा० माणिभद्र सा०शालिभद्र सु०सुमन भद्र च०चक्र रक्ष पु० पूर्णरक्ष स० सर्वाण स० सर्व यश स० सर्व कामसिद्ध अ०अमोघ अ०अशान्त स०शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की वे० वैश्रमण म० महाराजा की दो० दोपल्योपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी अ० यथा अपत्य अ० अभिज्ञात दे० देवों की ए० एक प० पल्योपम की ठि० स्थिति प०प्ररूपी ए० यह म०महर्द्धिक जा० यावत् वे० वैश्रमण म० महाराजा से० ऐसे ही भं० भगवन् ॥ ३ ॥ ७ ॥ =

सूत्र तंजहा-पुण्णभद्दे, माणिभद्दे, सालिभद्दे, सुमणभद्दे, चक्करक्खे, पुण्णरक्खे, सव्वाणे, सव्वजसे, सव्वकाम समिद्धे, अमोहे, असंते, ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो दो पलिओवमाइं ठिई प० ॥ अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं, एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ए महिड्ढीए जाव वेसमणे महाराया. सेवं भंते भंतेत्ति ॥

तइयसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ वैश्रमण महाराजा को अपत्यवत् विनय करनेवाले देवों हैं. उन की दो पल्योपम की स्थिति कही है और अपत्य देवों की एक पल्योपम की स्थिति कही है. अहो गौतम ! यह वैश्रमण की ऋद्धि यावत् महानुभाग का वर्णन कहा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! आप जैसे फरमाते हो वैसे ही हैं. यह तीसरा शतकका सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ७ ॥

÷ ÷

शब्दार्थ — रा० राजगृह न० नगर जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसे व० बोले अ० असुर कुमार भं० भगवन् दे० देव को क० कितने दे० देव आ० आधिपत्य जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम द० दश दे० देव आ० आधिपत्य जा० यावत् वि० विचरते हैं तं० वह ज० यथा च० चमर अ० असुरेन्द्र सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण व० बलि व० वैरोचनेन्द्र व० वैरोचन राजा ॥ १ ॥ ना० नाग

सूत्र — रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी- असुरकुमाराणं भंते देवाणं कइ-देवा आहेवच्चं जाव चिट्ठंति ? गोयमा ! दसदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तंजहा- चमरे असुरिंदे असुरराया सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥ बली वइरोयणिंदे वइरोयण-राया, सोमे, जमे वरुणे, वेसमणे ॥ १ ॥ नागकुमाराणं भंते ! पुच्छा । गोयमा !

भावार्थ — सातवे उद्देशे में लोकपालों की वक्तव्यता कही. अब इस उद्देशे में देवताओं के स्वामी का कथन करते हैं. राजगृही नगरी में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे. परिषदा वंदन करने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समयमें श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी ऐसा प्रश्न पूछने लगे कि अहो भगवन्! असुरकुमार जाति के देवों को कितने देव स्वामीपने रहते हैं? अहो गौतम ! असुर कुमार जाति के देवों को दश देव स्वामीपने रहते हैं. दक्षिण दिशा के चमर नामक असुर का राजा असुरेन्द्र और सोम, यम, वरुण व वैश्रमण यह चार उन के लोकपाल. उत्तर दिशा के

शब्दार्थ

कुमार की पु० पृच्छा गो० गौतम द० दश दे० देव आ० आधिपत्य जा० यावत् वि० विचरते हैं ध० धरण ना० नागकुमारेन्द्र ना० नाग कुमार राजा का० कालवाल को० कोलवाल सं० शंखवाल से० शेलवाल भू० भूतानेन्द्र ज० जैसे ना० नागकुमारेन्द्र की ए० इस व० वक्तव्यता से ए० यह ए० ऐसे इ० इनका ने० जानना ॥ २ ॥ सु० सुवर्ण कुमार का वे० वेणुदेव वे० वेणुदाल चि० चित्र वि० विचित्र

सूत्र

दसदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति तंजहा-धरणे, नागकुमारिंदे, नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, सेलवाले, संखवाले ॥ भूयाणिंदे नागकुमारिंदे नागकुमारराया कालवाले, कोलवाले, संखवाले, सेलवाले ॥ जहा नागकुमारिंदाणं एयाए वत्तव्वयाए, एतं एवं इमाणं नेयव्वं ॥ २ ॥ सुवण्णकुमाराणं वेणुदेवे, वेणुदाली, चिते, विचित्ते ।

भावार्थ

बलि नामक वैरोचनेन्द्र और उन के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण नामक लोकपाल यह दश हुए ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नाग कुमार देव के कितने आधिपति देव कहे हैं ? अहो गौतम ! दश आधिपति देव कहे हैं. दक्षिण दिशा के धरण नामक नाग कुमारेन्द्र और उन के कालवाल, कोलवाल, संखवाल व सेलवाल यह चार लोकपाल; और उत्तर दिशा के भूतानेन्द्र व उन के कालवालादि चार लोकपाल मीलकर दश हुए ॥ २ ॥ सुवर्ण कुमार को दश देव अधिपतिपना करनेवाले हैं. वेणुदेव और वेणुदाल ये दोनों

शब्दार्थ चि० चित्रपक्ष वि० विचित्रपक्ष वि० विद्युत्कुमार को ह० हरिकंत ह० हरिसिंह प० प्रभ सु० सुप्रभ प० प्रभकान्त सु० सुप्रभकान्त ॥ ४ ॥ अ० अग्निकुमार को अ० अग्निसिंह अ० अग्निमानव ते० तेउ ते० तेउसिंह ते० तेउकान्त ते० तेउप्रभ ॥ ५ ॥ दी० द्वीप कुमार को पु० पूर्ण व० वसिष्ठ रू० रूप रू० रूपांश रू० रूपसिंह रू० रूपप्रभ ॥ ६ ॥ उ० उदधिकुमार को ज० जलकान्त ज० जलप्रभ ज० जल ज० जल

सूत्र चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे, ॥ ३ ॥ विज्जुकुमाराणं-हरिकंते, हरिस्सहे. पभे, सुप्पभे, पभकंते, सुप्पभकंते ॥ ४ ॥ अग्गिकुमाराणं-अग्गिसीहे, अग्गिमाणवे, तेउ, तेउ-सीहे, तेउकंते, तेउप्पभे ॥ ५ ॥ दीवकुमाराणं-पुण्ण वासिट्ठ रूय, रूयंस, रूयसीहे, रूयप्पभा ॥ ६ ॥ उदहिकुमाराणं-जलकंत, जलप्पभ, जल, जलरूय, जलकंत,

भावार्थ इन्द्र और प्रत्येक के चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष व विचित्र पक्ष ये चार लोकपाल कहे हैं ॥ ३ ॥ विद्युत् कुमार को दश देव अधिपतिपना करनेवाले हैं. हरिकंत हरिसिंह ये दो इन्द्र और प्रत्येक को प्रभ, सुप्रभ, प्रभकान्त, सुप्रभकान्त ये चार २ लोकपाल मीलकर दश हुए ॥ ४ ॥ अग्निकुमार को अग्निसिंह व अग्नि मानव ये दो इन्द्र और उन के तेउ, तेउसिंह, तेउ कान्त व तेउ प्रभ ऐसे चार २ लोकपाल कहे हैं ॥ ५ ॥ द्वीप कुमार को पूर्ण व वशिष्ट ऐसे दो इन्द्र और उन के रूप, रूपांश, रूपसिंह व रूपप्रभ ऐसे चार २ लोकपाल ॥ ६ ॥ उदधि कुमार के जलकान्त और जलप्रभ ऐसे दो इन्द्र उन के जल, जलरूप, जलकांत व

शब्दार्थ रूप ज० जलकान्त ज० जलप्रभ ॥ ७ ॥ दि० दिशांकुमार को अ० अमितगति अ० अमितवाहन तु० त्वरितगति खि० क्षिप्रगति सी० सिंहगति सी० सिंह विक्रमगति ॥ ८ ॥ वा० वायुकुमार को वे० वेलंब प० प्रभंजन का० काल म० महाकाल अं० अंजन रि० रिष्ठ ॥ ९ ॥ थ० स्थनित कुमार को घो० घोष म० महाघोष आ० आवर्त वि० व्यावर्त नं० नांदियावर्त म० महानंदियावर्त ऐ० ऐसे भा० कहना ज० जैसे अ० असुरकुमार को ॥ १० ॥ पि० पिशाच की पु० पृच्छा गो० गौतम दो० दो दे० देव आ० आधि

सूत्र जलप्पभा ॥ ७ ॥ दिसाकुमाराणं अमियगई, अमियवाहणे, तुरियगई, खिप्पगई, सीहगई, सीहविक्कमगई ॥ ८ ॥ वाउकुमाराणं वेलंब, पभंजण, काल, महाकाल, अंजण, रिट्ठा, ॥ ९ ॥ थणियकुमाराणं घोस, महाघोस, आवत्त, वियावत्त, नंदियावत्त, महानंदियावत्ता एवं भाणियव्वं ॥ जहा असुरकुमाराणं ॥ १० ॥ सोमेय.

भावार्थ जलप्रभ एसे चार २ लोकपाल कहे हैं. ॥७॥ दिशा कुमार को अमितगति अमितवाहन ऐसे दो इन्द्र उन के त्वरित गति, क्षिप्रगति, सिंहगति व सिंह विक्रमगति ऐसे चार २ लोकपाल हैं ॥८॥ वायुकुमार को वेलम्ब व प्रभंजन ऐसे दो इन्द्र और उन के काल, महाकाल, अंजन व रिष्ठ ऐसे चार २ लोकपाल ॥९॥ स्थनित कुमार के घोष व महाघोष ऐसे दो इन्द्र और आवर्त, वियावर्त, नंदियावर्त व महानंदियावर्त ऐसे चार २ लोकपाल इस तरह भुवनपति के २० इन्द्र व ८० लोकपाल मीलकर १०० हुए. ॥१०॥ सोम नामक लोकपाल का नाम कहते

शब्दार्थ चि० चित्रपक्ष वि० विचित्रपक्ष वि० विद्युत्कुमार को ह० हरिकंत ह० हरिसिंह प० प्रभ सु० सुप्रभ प० प्रभकान्त सु० सुप्रभकान्त ॥ ४ ॥ अ० अग्निकुमार को अ० अग्निसिंह अ० अग्निमानव ते० तेउ ते० तेउसिंह ते० तेउकान्त ते० तेउप्रभ ॥ ५ ॥ दी० द्वीप कुमार को पु० पूर्ण व० वसिष्ठ रू० रूप रू० रूपांश रू० रूपसिंह रू० रूपप्रभ ॥ ६ ॥ उ० उदधिकुमार को ज० जलकान्त ज० जलप्रभ ज० जल ज० जल

सूत्र चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे, ॥ ३ ॥ विज्जुकुमाराणं-हरिकंते, हरिस्सहे. पभे, सुप्पभे, पभकंते, सुप्पभकंते ॥ ४ ॥ अग्गिकुमाराणं-अग्गिसीहे, अग्गिमाणवे, तेउ, तेउ-सीहे, तेउकंते, तेउप्पभे ॥ ५ ॥ दीवकुमाराणं-पुण्ण वासिट्ठ रूय, रूयंस, रूयसीह, रूयप्पभा ॥ ६ ॥ उदहिकुमाराणं-जलकंत, जलप्पभ, जल, जलरूय, जलकंत,

भावार्थ इन्द्र और प्रत्येक के चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष व विचित्र पक्ष ये चार लोकपाल कहे हैं ॥ ३ ॥ विद्युत् कुमार को दश देव अधिपतिपना करनेवाले हैं. हरिकंत हरिसिंह ये दो इन्द्र और प्रत्येक को प्रभ, सुप्रभ, प्रभकान्त, सुप्रभकान्त ये चार २ लोकपाल मीलकर दश हुए ॥ ४ ॥ अग्निकुमार को अग्निसिंह व अग्नि मानव ये दो इन्द्र और उन के तेउ, तेउसिंह, तेउ कान्त व तेउ प्रभ ऐसे चार २ लोकपाल कहे हैं ॥ ५ ॥ द्वीप कुमार को पूर्ण व वशिष्ट ऐसे दो इन्द्र और उन के रूप, रूपांश, रूपसिंह व रूपप्रभ ऐसे चार २ लोकपाल ॥ ६ ॥ उदधि कुमार के जलकान्त और जलप्रभ ऐसे दो इन्द्र उन के जल, जलरूप, जलकांत व

शब्दार्थ जो॰ ज्योतिषियों के दो॰ दो दे॰ देव च॰ चंद्र सू॰ सूर्य ॥ १३ ॥ सो॰ सौधर्म ई॰ ईशान में क॰ कितने दे॰ देव आ॰ आधिपत्य वि॰ विचरते हैं गो॰ गौतम द॰ दशदेव वि॰ विचरते हैं स॰ शक्र दे॰ देवेन्द्र दे॰ देवराजा सो॰ सोम ज॰ यम व॰ वरुण वे॰ वैश्रमण ई॰ ईशान ए॰ यह व॰ वक्तव्यता स॰

सूत्र वाणं दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति. तंजहा- चंदे, सूरेय ॥ १३ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु कइदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति ? गोयमा ! दसदेवा जाव विहरंति, तंजहा-सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे वेसमणे ; ईसाणे देविंदे देवराया सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥१४॥ एसा वत्तव्वया सव्वेसुवि कप्पेसु एएचेव

भावार्थ जाति के देव कहते हैं. आणपन्नी, पाणपन्नी, इसीवाय, भुइवाय, कान्दिय, महाकान्दिय, कोहंग व पयंग देव. इन आठों को दो २ देव आधिपतिपना करते हैं. उन के नाम सन्निहित, सामानिक, धाइ, वधाइ, इसी, इसीवाल, ईश्वर, महेश्वर, सुवत्थ, विशाल, हास, हासरति, सेय, महासेय, पयग, पयगवति. यों सोलह वाणव्यंतर के ३२ देव होते हैं ॥ १२ ॥ ज्योतिषी देव को दो देव अधिपतिपना करते हैं. चन्द्र व सूर्य ॥ १३ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में दश देव आधिपतिपना करते हैं. शक्र देवेन्द्र, ईशान देवेन्द्र और उन के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण नामक चार २ लोकपाल ॥ १४ ॥ तीसरे चौथे देवलोक में दश देव अधिपति हैं. सनत्कुमारेन्द्र व माहेन्द्र और उन के सोमादि चार २ लोकपाल. ऐसे ही पांचवे छठे

शब्दार्थ पत्य जा० यावत् वि० विचरते हैं का० काल म० महाकाल सु० सुरूप प० प्रतिरूप पु० पूर्णभद्र अ० देवपति मा० माणिभद्र भी० भीम त० तैसे म० महाभीम किं० किंनर किं० किंपुरुप स० सत्पुरुप म० महापुरुप अ० अतिकाय म० महाकाय गी० गीतरति गी० गीतयश ऐ० ऐसे वा० वाणव्यंतर ॥ १२ ॥

सूत्र कालवाले, चित्त, पभ, तेओ, तहरूवेचेव, जल, तहतुरियगतिया काल, आवत्त पढमाओ ॥ ११ ॥ पिसायकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा ! दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तंजहा-कालेय, महाकाले , सुरूव, पडिरूव ; पुण्णभद्देय, अमरवइ, माणिभद्दे, भीमेय तहा महाभीमे ॥१॥ किंनर किंपुरिसे खलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे। अइकाय महाकाए-गीयरई चेवगीयजसे एए वाणमंतराणं ॥१२॥ जोइसियाणं दे-

भावार्थ हैं १ सोम, २ कालवाल ३ चित्र ४ प्रभ, ५ तेउ, ६ रूप ७ जल ८ त्वरितगति ९ काल व १० आवर्त ॥११॥ अब व्यंतर जाति के देवता का प्रश्न पूछते हैं- अहो भगवन् ! पिशाच जाति के देव को कितने देव अधिपति हैं ! अहो गौतम ! दो देव अधिपति हैं काल व महाकाल. ऐसे ही भूत के दो देव रूप, प्रतिरूप, यक्ष के दो देव पूर्णभद्र, मान भद्र, राक्षस के दो देव भीम, महाभीम, किन्नरजाति के दो देव किन्नर, किंपुरुप, किं पुरुप के दो देव सत्पुरुप महापुरुप; महोरग के दो देव अतिकाय, महाकाय; गंधर्व के दो देव १ गीतरति २ गीतयश यह आठ व्यंतर जाति के देव कहे; और अन्यभी आठ व्यंतर

शब्दार्थ — जो० ज्योतिषियों के दो० दो दे० देव चं० चंद्र सू० सूर्य ॥ १३ ॥ सो० सौधर्म ई० ईशान में क० कितने दे० देव आ० आधिपत्य वि० विचरते हैं गो० गौतम द० दशदेव वि० विचरते हैं स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ई० ईशान ए० यह व० वक्तव्यता स०

सूत्र — वाणं दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति. तंजहा- चंदे, सूरेय ॥ १३ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु कइदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति ? गोयमा ! दसदेवा जाव विहरंति, तंजहा-सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे वेसमणे ; ईसाणे देविंदे देवराया सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥१४॥ एसा वत्तव्वया सव्वेसुवि कप्पेसु एएचेव

भावार्थ — जाति के देव कहते हैं. आणपन्नी, पाणपन्नी, इसीवाय, भुइवाय, कान्दिय, महाकान्दिय, कोहंग व पयंग देव. इन आठों को दो २ देव अधिपतिपना करते हैं. उन के नाम सन्निहित, सामानिक, धाइ, वधाइ, इसी, इसीपाल, ईश्वर, महेश्वर, सुवत्थ, विशाल, हास, हासराति, सेय, महासेय, पयग, पयगवाति. यों सोलह वाणव्यंतर के ३२ देव होते हैं ॥ १२ ॥ ज्योतिषी देव को दो देव अधिपतिपना करते हैं. चन्द्र व सूर्य ॥ १३ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में दश देव आधिपतिपना करते हैं. शक्र देवेन्द्र, ईशान देवेन्द्र और उन के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण नामक चार २ लोकपाल ॥ १४ ॥ तीसरे चौथे देवलोक में दश देव अधिपति हैं. सनत्कुमारेन्द्र व माहेन्द्र और उन के सोमादि चार २ लोकपाल. ऐसे ही पांचवे छठे

शब्दार्थ सब में क० देवलोक में ए० यही भा० कहना जे० जो इं० इन्द्र ते० वे भा० कहना ॥ ३ ॥ ८ ॥

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितने भं० भगवन् इं० इन्द्रिय विषय प० कहे गो० गौतम पं० पांच प्रकार के इं० इन्द्रिय विषय प० कहे तं० वह ज० जैसे सो० श्रोतेन्द्रिय विषय जी०

सूत्र

भाणियव्वा ॥ जे य इंदा ते भाणियव्वा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईयसए अट्ठमोद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ८ ॥ * * *

रायगिहे जाव एवं वयासी कइविहेणं भंते ! इंदिय विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंच-विहे इंदियविषए पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदिय विसए, जीवाभिगमे जोइसियउद्देसओ

भावार्थ सातवे आठवे, नववे दशवे, अग्यारहवे, बारहवे तक का जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन तथ्य हैं. यह तीसरा शतकका आठवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ८ ॥ ÷ ÷

राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवंत पधारे. परिषदा वंदने को आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर को भगवंत गौतम स्वामीने प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! इन्द्रिय के विषय कितने प्रकार के हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रिय के विषय पांच प्रकार के हैं. १ श्रोतेन्द्रिय का विषय, चक्षुइन्द्रिय का विषय, घ्राणेन्द्रिय का विषय, रसनेन्द्रिय का विषय, व स्पर्शेन्द्रिय का विषय. अहो भगवन् ! श्रोतेन्द्रिय का विषय कितने प्रकार का कहा है. अहो गौतम ! श्रोतेन्द्रिय

शब्दार्थ जीवाभिगम में जो० ज्योतिपि का उ० उद्देशा ने० जानना अ० अपरिशेप ॥ ३ ॥ ९ ॥ *

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसे व० बोले च० चमर का भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर

सूत्र

नेयव्वो अपरिसेसो । सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥३॥ ९ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तंजहा-समिया, चंडा, जाया.

भावार्थ का विपय दो प्रकार का कहा है. सुशब्द व दुशब्द, ऐसे ही पांचो इन्द्रियों के विषय जानना. इस का विस्तार पूर्वक कथन जीवाभिगम सूत्र के ज्योतिपी उद्देशे में से जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन यथातथ्य हैं. यह तीसरा शतकका नववा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ९ ॥ +

राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिपदा वंदने को आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में गौतम स्वामीने वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र को कितनी परिपदा कही हैं ? अहो गौतम ! उन को समिया, चंडा व जाया ऐसी तीन परिपदा कही हैं. समिया आभ्यंतर परिपदा है, इन के देव बोलाये आते हैं. विना बोलाये नहीं आते हैं. चंडा बीचकी परिपदा है, इन के देव बोलाये, विना बोलाये आते हैं. जाया बाहिरकी परि-

शब्दार्थ राजा की क० कितनी प० परिषदा प० कही गो० गौतम त० तीन प० परिषदा प० कही तं० वह ज० जैसे स० समिता चं० चंडा जा० जाया ए० ऐसे ज० जैसे अ० अनुक्रम से जा० यावत् अ० अच्युत कल्प ॥ ३ ॥ १० ॥ ३ ॥ × +

सूत्र एवं जहाणुपुव्वीए जाव अच्चुओ कप्पो । सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईय सए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १० ॥ तईयं सयं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ * *

भावार्थ पदा है. इन के देव विना बोलाये कार्य करने के अवसर पर हाजर रहते हैं. समिया के चौवीस हजार, चंडा के अठावीस हजार व जाया के ३२ हजार देव कहे हैं. ऐसे ही तीन प्रकार की देवी की परिषदा कही है. उस में समिया की ३५० चंडा की ३०० और जाया की २५० देवियों कही हैं. आभ्यंतर परिषदा की देवियों का अढाइ पल्योपम का, मध्य परिषदा की देवियों का दो पल्योपम का और बाह्य परिषदा की देवियों का १॥ पल्योपम का आयुष्य जानना. जैसे असुरेन्द्र की तीन परिषदा कही वैसे ही बलेन्द्र की तीन परिषदा जानना. ऐसे ही अच्युतेन्द्रतक के चौसठ इन्द्र की तीन २ परिषदाओं का अधिकार जानना. उन का आयुष्य वगैरह सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र से जानना. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं. ऐसा कहकर तप व संयम से आत्मा को भावते हुए विचरने लगे. यह तीसरा शतकका दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १० ॥ तीसरा शतकका भावार्थ संपूर्ण हुवा ॥ ३ ॥

* चतुर्थ शतकम्. *

शब्दार्थ

च० चमर वि० विमान से च० चार हो० होते हैं रा० राज्यधानी मे ने० नारकी ले० लेश्या से द० दश उ० उद्देशा च० चौथे शतक में ॥ १ ॥ रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को क० कितने लो० लोकपाल गो० गौतम च० चार लो० लोकपाल तं० वह ज० जैसे सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ए० इन भं० भगवन् लो०लोकपालोंका क०

सूत्र

चत्तारि विमाणेहिं, चत्तारिय होंति रायहाणीहिं । नेरइए लेस्साहिय, दस उद्देसा चउत्थसए ॥ १ ॥ रायगिहे णगरे जाव एवं वयासी- ईसाणस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कइलोगपाला पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तंजहा-

भावार्थ

तीसरे शतक में देवता का अधिकार कहा है. इस में भी देवता का अधिकार कहते हैं. इस शतक के दश उद्देशे कहे हैं. पहिले चार उद्देशे में ईशानेन्द्र के चार लोकपालों के चार विमानोंका कथन है. पांचवे, छठे, सातवे व आठवे में उन की चार राज्यधानियों का कथन है. नववे में नरक के जीवों का और दशवे में लेश्या का वर्णन है. ॥ १ ॥ राजगृह नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में श्री श्रमण भगवंत

शब्दार्थ राजा की क० कितनी प० परिषदा प० कही गो० गौतम त० तीन प० परिषदा प० कही तं० वह ज० जैसे स० समिता चं० चंडा जा० जाया ए० ऐसे ज० जैसे अ० अनुक्रम से जा० यावत् अ० अच्युत कल्प ॥ ३ ॥ १० ॥ ३ ॥ × +

सूत्र एवं जहाणुपुव्वीए जाव अच्चुओ कप्पो । सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईय सए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १० ॥ तईयं सयं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ * *

भावार्थ पदा है. इन के देव विना बोलाये कार्य करने के अवसर पर हाजर रहते हैं. समिया के चौवीस हजार, चंडा के अठावीस हजार व जाया के ३२ हजार देव कहे हैं. ऐसे ही तीन प्रकार की देवी की परिषदा कही है. उस में समिया की ३५० चंडा की ३०० और जाया की २५० देवियों कही हैं. आभ्यंतर परिषदा की देवियों का अढाइ पल्योपम का, मध्य परिषदा की देवियों का दो पल्योपम का और बाह्य परिषदा की देवियों का १॥ पल्योपम का आयुष्य जानना. जैसे असुरेन्द्र की तीन परिषदा कही वैसे ही बलेन्द्र की तीन परिषदा जानना. ऐसे ही अच्युतेन्द्रतक के चौसठ इन्द्र की तीन २ परिषदाओं का अधिकार जानना. उन का आयुष्य वगैरह सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र से जानना. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं. ऐसा कहकर तप व संयम से आत्मा को भावते हुए विचरने लगे. यह तीसरा शतकका दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १० ॥ तीसरा शतकका भावार्थ संपूर्ण हुवा ॥ ३ ॥

शब्दार्थ वडंसक फ० स्फटिकावतंसक र० रत्नावतंसक जा० जातिरूपावतंसक म०मध्य में ई०ईशानावतंसक म० महा-विमान पु० पूर्व में ति० तीर्च्छे अं० असंख्यात जो० योजन वी० व्यतिक्रान्त होते ए० यहां ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा का सो० सोम म० महाराजा का सु० सुमन म० महाविमान अ० अर्ध तेरह जो० योजन ज० जैसे स० शक्र की व० वक्तव्यता त० तीसरे स० शतक में त० तैसे ई० ईशान की भी जा०

सूत्र कवडंसए, फलिह वडंसए, रयण वडंसए, जाइरूव वडंसए, मज्झे तत्थ ईसाण वडंसए ॥ तत्थणं ईसाणं वडंसयस्स महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं तिरिय मसंखेज्जाइं जोयणाइं वीइवइत्ता एत्थणं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरस जोयण जहा सक्कस्स वत्तव्वया, तईयसए, तहा

भावार्थ हुवे हैं. उन से क्रोडा क्रोड योजन ऊंचे ईशान नामक दूसरा महा विमान रहा हुवा है. उस में पांच अव-तंसक (मुकुट समान) विमान हैं. १ अंकावतंसक, २ स्फटिकावतंसक ३ रत्नावतंसक ४ जातिरूपावतंसक और मध्य में ईशानावतंसक. उन ईशानावतंसक से पूर्व में असंख्यात योजन तीर्च्छा जावे वहां ईशानेन्द्र के सोम महाराजा का सुमन नामक महा विमान कहा है. वह साढे बारह योजन का लम्बा चौडा यावत् सब वक्तव्यता शक्रेन्द्र के सोम महाराजा जैसे कहना. जैसे ईशानेन्द्र के सोम महाराजा की वक्तव्यता कही वैसे ही यम का स्फटिकावतंसक, वरुण का रत्नावतंसक, व वैश्रमण का जातरूपावतंसक का जानना.

शब्दार्थ कितने वि० विमान प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार वि० विमान प० प्ररूपे सु० सुमन स० सर्वतोभद्र व० वल्गु सु० सुवल्गु ॥ २ ॥ क० कहाँ ई० ईशान के सो० सोम म० महाराजा का सु० सुमन म० महा-विमान प० प्ररूपा गो० गौतम जं० जम्बूद्वीप में मं० मेरु प० पर्वत की उ० उत्तर में इ० इस र० रत्न प्रभा पृ० पृथ्वी से जा० यावत् ई० ईशान क० देवलोक में त० वहां पं० पांच व० अवतंसक अं० अंका-

सूत्र सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥ एएसिणं भंते ! लोगपालाणं कइ विमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता तंजहा-सुमणे, सव्वओभद्दे, वग्गू, सुवग्गू ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणेनामं महाविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव ईसाणे नामं कप्पे पण्णत्ते ? तत्थणं जाव पंचवडेंसया प० तं० अं-

भावार्थ महावीर स्वामी को श्री गौतम स्वामी ने प्रश्न पुछा कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र को कितने लोकपाल कहे हैं ? अहो गौतम ! सोम, यम, वरुण व वैश्रमण ऐसे चार लोकपाल कहे हैं. अहो भगवन् ! उन के विमान कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! उन के चार विमान कहे हैं. सुमन, सर्वतोभद्र, वल्गु और सुवल्गु ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! ईशान देवेन्द्र का सोम नामक महा विमान कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर में इस रत्नप्रभा पृथ्वी से अनेक सो योजन ऊपर चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारे हैं

पदार्थ

रा० राज्यधानी में च० चार उ० उद्देशा भा० कहना जा० यावत् व० वरुण म० महाराजा ॥४॥८॥ ने० नारकी ने० नारकी में उ० उत्पन्न होते हैं अ० नारकी से, अन्य प० पन्नवणा में ले० लेश्या पद

अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ८ ॥ × × ×

सूत्र

नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ, अनेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाएवि लेस्सापए तईओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं चउत्थसए नवमो

भावार्थ

स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र के सोम महाराजा की सोमा नामक राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! सुमन नामक महा विमान की नीचे वगैरह सब वर्णन शक्रेन्द्र के सोम महाराजा जैसे जानना. यों चारों राज्यधानी अपने २ विमान नीचे तीर्च्छे लोक में रही हुई हैं. यों चारों राज्यधानी के चार उद्देशे भिन्न२ कहना. यह चौथा शतकका पांचवा, छठा, सातवा, व आठवा ऐसे चार उद्देशे पूर्ण हुए॥४॥८॥

उक्त उद्देशे में देवता का अधिकार कहा. देव वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं. वैसे ही नरक के जीव भी वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं. इसलिये आगे नरक का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! नरक के आयुष्यका बंध करनेवाले नरक में उत्पन्न होते हैं या अन्य जीव नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जिनोंने नरक के आयुष्य का बंध किया है वेही नरक में उत्पन्न होते हैं; परंतु अन्य जीव नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. जो नरक में उत्पन्न हुवे हैं उन को आयुष्य बंध से छोडाने को कोई भी समर्थ नहीं है

शब्दार्थ यावत् अ० अर्चनीय स० संपूर्ण च० चार लो० लोकपालों का वि० विमान २ का उ० उद्देशा च० चार वि० विमान के चा० चार उ० उद्देशे अ० अपरिशेष न० विशेष ठि० स्थिति में णा० नाना प्रकार आ० आदि दु० दो ति० तीन भाग ऊ० कम प० पल्योपम ध० वैश्रमण की हो० है दो० दो स० तीन भाग व० वरुण प० पल्योपम अ० अपसत्त् दे० देवोंकी ॥४॥४॥

सूत्र ईसाणस्सवि जाव अच्चणिया सम्मत्ता चउण्हविलोगपालाणं विमाणे २ उद्देसओ. चउसुवि विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा णवरं ठिईए नाणत्तं, आइ दुय ति भागूणा पलिया धणयस्स होंति दो चेव ॥ दोसइ भागा वरुणे पलिय महावच्च देवाणं ॥ १ ॥ चउत्थसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ४ ॥ * * रायहाणिसुवि चत्तारि उद्देसया भाणियव्वा । जाव वरुणे महाराया ॥ चउत्थसए

भावार्थ मात्र स्थिति में भिन्नता है. सोम व यम महाराजा की स्थिति त्रीभाग कम दो पल्योपम, वैश्रमण की दो पल्योपम की, और वरुण की स्थिति त्रीभाग अधिक दो पल्योपम जानना. इन के अपत्य देवों की एक पल्योपम की स्थिति जानना. यह चौथे शतक के चार उद्देशे पूर्ण हुवे ॥ ४ ॥ ४ ॥

राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम

शब्दार्थ

रा० राज्यधानी में च० चार उ० उद्देशा भा० कहना जा० यावत् व० वरुण म० महाराजा ॥४॥८॥ ने० नारकी ने० नारकी में उ० उत्पन्न होते हैं अ० नारकी से, अन्य प० पन्नवणा में ले० लेश्या पद

अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ८ ॥ × × ×

सूत्र

नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ, अनेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाएवि लेस्सापए तईओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं चउत्थसए नवमो

भावार्थ

स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र के सोम महाराजा की सोमा नामक राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! सुमन नामक महा विमान की नीचे वगैरह सब वर्णन शक्रेन्द्र के सोम महाराजा जैसे जानना. यों चारों राज्यधानी अपने २ विमान नीचे तीर्च्छे लोक में रही हुई हैं. यों चारों राज्यधानी के चार उद्देशे भिन्न२ कहना. यह चौथा शतकका पांचवा, छठा, सातवा, व आठवा ऐसे चार उद्देशे पूर्ण हुए॥४॥८॥

उक्त उद्देशे में देवता का अधिकार कहा. देव वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं. वैसे ही नरक के जीव भी वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं. इसलिये आगे नरक का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! नरक के आयुष्यका बंध करनेवाले नरक में उत्पन्न होते हैं या अन्य जीव नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जिनोंने नरक के आयुष्य का बंध किया है वेही नरक में उत्पन्न होते हैं; परंतु अन्य जीव नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. जो नरक में उत्पन्न हुवे हैं उन को आयुष्य बंध से छोडाने को कोई भी समर्थ नहीं है

शब्दार्थ का त० तीसरा उ० उद्देशा भा० कहना जा० यावत् ना० ज्ञान ॥४॥९॥

से० अथ क० कृष्ण लेश्या वाला नी० नील लेश्या को प० प्राप्त कर के त० तद्रूप ता० तद्वर्णपने

सूत्र उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ९ ॥ * * *

से नूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए एवं चउत्थो

भावार्थ यावत् कृष्ण लेश्यावाले जीव नीची दो नरक में उत्पन्न होते हैं वगैरह सब अधिकार पन्नवणा सूत्र जैसे कहना. यह चौथा शतक का नववा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ४ ॥ ९ ॥ * *

इस उद्देशे में लेश्याका अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाला नील लेश्या के द्रव्य ग्रहण कर यदि काल करेतो क्या वह नील लेश्या में उत्पन्न होता है ? हां गौतम ! जिस लेश्या के पुद्गल परि-णमा कर काल करता है उसी लेश्या में उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाला नील लेश्या पने वारंवार परिणमता है तो किस प्रकार वह परिणमता है ? अहो गौतम ! जैसे दूध तकर (छाछ) रूप परिणमता है, अथवा शुद्ध श्वेत वस्त्र को जैसे रंग चढावे वैसे रूपपने परिणमता है इसी प्रकार कृष्ण लेश्या वाला नीललेश्या पने परिणमता है, नील कापोत पने, कापोत तेजोपने, तेजो पद्मपने, व पद्म शुक्ल लेश्या पने परिणमे. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या का वर्ण कैसा है ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्या का वर्ण मेघ की घटा समान श्याम, नील लेश्या का तोते के रंग समान, कापोत लेश्या का कबुतर जैसा,

शब्दार्थ ऐसे च० चौथा उ० उद्देशा प० पन्नवणा में ले० लेश्या पद में ने० जानना जा० यावत् परिणाम व० वर्ण र० रस गं० गंध सु० शुद्ध अ० अप्रशस्त सं० संक्लिष्ट उ० ऊष्ण ग० गतिपरिणाम प० प्रदेश ओ० अव-

सूत्र उद्देसओ पण्णवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो । जाव परिणाम वण्ण रसगंध सुद्ध अपसत्थ संकिलिट्ठुण्हा, गइ परिणाम पएसोगाहण वग्गणाट्ठाण मप्पबहुं । सेवं भंते

भावार्थ तेजो लेश्या का उदित होता सूर्य जैसा, पद्म लेश्या का हलदी जैसा व शुक्ल लेश्या का चन्द्र जैसा श्वेत वर्ण है. अब छ लेश्या के रस कहते हैं. कृष्ण लेश्या का निम्ब वृक्ष जैसा कटु, नील लेश्या का नागर जैसा कटु, कापोत लेश्या का कच्चे बोर जैसा कषायला तेजो लेश्या का आम्र फल जैसा खट्टामिठ पद्म लेश्या का खारक जैसा मधुर और शुक्ल लेश्या का खांड सक्कर जैसा मिष्ट. अब गंध कहते हैं. कृष्ण, नील व कापोत लेश्या के पुद्गलों की मृतक देहकी गंध समान गंध, और तेजो, पद्म व शुक्ल की कुसुम समान. पहिली तीन लेश्या अशुभ है और पीछे की तीन लेश्या शुभ है. पहिले की तीन लेश्या संक्लिष्ट हैं और पीछे की तीन लेश्या संक्लिष्ट नहीं हैं. पहिले की तीन लेश्या शीत व रूक्ष हैं, और पीछे की तीन लेश्या ऊष्ण व स्निग्ध हैं. पहिली तीन लेश्या दुर्गति में लेजानेवाली हैं, और पीछे की तीन लेश्या सुगति में लेजाने वाली हैं. जघन्य, उत्कृष्ट व मध्यम तथा उत्पातादि भेद से परिणाम विचारना. सब लेश्या के अनंत प्रदेश हैं. प्रत्येक प्रदेश असंख्यात प्रदेशावगाढ है. कृष्ण लेश्या योग्य पुद्गल वर्गणा अनंत हैं वह उदारिक

शब्दार्थ गांहना व० वर्गणा ठा० स्थान अं० अल्पा बहुत्व ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥ ÷ +

सूत्र भंतेत्ति ॥ चउत्थसए दसमो उद्देसो ॥ ४ ॥ १० ॥ चउत्थं सयं सम्मत्तं ॥ ४ ॥÷

भावार्थ जैसे जानना. तारतम्यता की विचित्रता से अध्यवसाय निबन्ध कृष्णादि द्रव्य समुह असंख्यात हैं. इसा लिये अध्यवसाय स्थानक असंख्यात हैं. अल्पाबहुत्व सब से थोडा जघन्य कापोत लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान, उससे जघन्य नील लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने, उस से जघन्य कृष्ण लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने, उस से जघन्य तेजो लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से जघन्य पद्म लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से शुक्ल लेश्या के जघन्य द्रव्यार्थ स्थान, असंख्यात गुने. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह चौथा शतक का दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा, यह चौथा शतक समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ पंचम शतकम् ॥

चं० चंपा र० सूर्य अ० वायु गं० ग्रन्थि स० शब्द छ० छद्मस्थ आ० आयुष्य ए० कंपना नि० निर्ग्रन्थ रा० राजगृह चं० चपा चं० चंद्र द० दश पं० पाचवे स० शतक में ॥ १ ॥ तं० उस का० काल ते० उस स० समय में चं० चपा ना० नाम की न० नगरी हो० थी व० वर्णन योग्य ती० उस चं०

सूत्र

चंपाए, रवि, अनिल, गंठिय सद्दे, छउ, माउ, एयण, णियंठे ॥ रायगिहं चंपा चंदिमाय दस पंचमम्मि सए ॥१॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानामं नयरी होत्था, वण्णओ ॥ तीसेणं चंपाए नयरीए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था, वण्णओ सामीस-

भावार्थ

चौथे शतक के अंत में लेश्या कही. वह लेश्या लेश्यावन्त पुरुषों को आयुष्य का बंध करती है. आयुष्य का बंध को क्षय करनेवाला काल है इसलिये पांचवे शतक में काल की वक्तव्यता करेंगे. इस पांचवे शतक के दश उद्देशे कहे हैं. प्रथम उद्देशे में चंपा नगरी में सूर्य संबंधि प्रश्न पूछे हैं, दूसरे में वायु संबंधी प्रश्न पूछे हैं, तीसरे में जालग्रन्थिका निर्णय किया है, चौथे में शब्द का निर्णय, पांचवे में छद्मस्थ की वक्तव्यता, छठे में आयुष्य के बंध का अधिकार, सातवे में पुद्गल चलने का अधिकार, आठवे में निग्रन्थ पुत्र के प्रश्नोत्तर, नववे में राजगृह नगर का अधिकार व दशवे में चंपा में चंद्रमा संबंधि प्रश्न ॥१॥ उस काल उस समय में चंपा नामकी नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना. उस चंपा नगरी

गाहना व० वर्गणा ठा० स्थान अ० अल्पा बहुत्व ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥ ÷ +

भंतेत्ति ॥ चउत्थसए दसमो उद्देसो ॥ ४ ॥ १० ॥ चउत्थं सयं सम्मत्तं ॥ ४ ॥÷

जैसे जानना. तारतम्यता की विचित्रता से अध्यवसाय निबन्ध कृष्णादि द्रव्य समुह असंख्यात हैं. इसा लिये अध्यवसाय स्थानक असंख्यात हैं. अल्पाबहुत्व सब से थोडा जघन्य कापोत लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान, उससे जघन्य नील लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुन, उस से जघन्य कृष्ण लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने, उस से जघन्य तेजो लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से जघन्य पद्म लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से शुक्ल लेश्या के जघन्य द्रव्यार्थ स्थान, असंख्यात गुने. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह चौथा शतक का दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा, यह चौथा शतक समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥

अर्थ उदित होकर प० वायव्य कौन में आ० जाता है प० वायव्य कौन में उ० उदित होकर उ० ईशान कौन में आ० जाता है हं० हां गो० गौतम जं० जम्बूद्वीप में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर जा० यावत् उ० ईशान कौन में आ० जाता है ॥ ३ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप में

सूत्र पाईणदाहिण मुग्गच्छ दाहिणपडीण मागच्छंति, दाहिण पडीण मुग्गच्छ पडीण-उदीण मागच्छंति, पडीणउदीण मुग्गच्छ उदीचिपाईण मागच्छंति? हंता गोयमा! जंबुदीवेणं दीवे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जाव उदीचि पाईण मागच्छंति ॥३॥ जयाणं भंते! जंबुदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तयाणं

भावार्थ वायव्य कौन में अस्त होता है? और वायव्य कौन में उदित होकर क्या ईशान कौन में अस्त होता है? हां गौतम! जम्बूद्वीप में सूर्य ईशान कौन में उदित होकर अग्नि कौन में अस्त होता है. यावत् वायव्य कौन में उदित होकर ईशान कौन में अस्त होता है * ॥ ३ ॥ यद्यपि सूर्य का सब दिशि में गमन है तथापि प्रकाशके भेद से रात्रि दिन के विभाग किये हैं. अहो भगवन्! जब जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण

* यहां पर सूर्य का उदय व अस्त देखनेवाले लोकों की विवक्षा से लिया है. अदृश्य सूर्य दीखने में आवे जब उदय कहाजाता है, और दृश्य सूर्य अदृश्य होवे तब अस्त कहा जाता है. परंतु वास्तविक रीति से सूर्य का उदय अस्त नहीं है.

शब्दार्थ

चंपा न० नगरी से पू० पूर्णभद्र चे० उद्यान हो० था सा० स्वामी प० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगइ ॥ २ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भगवन्त म० महावीर के जे० ज्येष्ठ अं० शिष्य इं० इन्द्रभूति अ० अनगार गो० गौतम गो० गौत्र से जा० यावत् ए० ऐसे व० बोले जं० जम्बूद्वीप में भं० भगवन् दी० द्वीप में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर पा० अग्नि कौन में आ० जाता है पा० अग्नि कौन में उ० उदित होकर दा० नैऋत्य कौन में आ० जाता है दा० नैऋत्य कौन में उ०

सूत्र

मोसढे, जाव परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगव-
ओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूईणामे अणगारे गोयम गोत्तेणं जाव एवंवयासी-
जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे सूरिया उईणपाईण मुग्गच्छ पाईणदाहिण मागच्छंति ।

भावार्थ

की ईशान कौन में पूर्णभद्र यक्ष का उद्यान था. उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना. वहां पर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे. परिषदा वंदन करने को आई. धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई ॥ २ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अंतेवासी गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति अनगारने ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में सूर्य उत्तर पूर्व-ईशान-कौन में उदित होकर पूर्वदक्षिण-अग्नि कौन में क्या अस्त होता है ? अग्नि कौन में उदित होकर दक्षिणपश्चिम-नैऋत्य कौन में क्या अस्त होता है ? नैऋत्य कौन में उदित होकर पश्चिमउत्तर

शब्दार्थ

पु० पूर्व में प० पश्चिम रा० रात्रि भ० होती है हं० हां० गो० गौतम ज० जब जं० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में दि० दिन भ० होता है जा० यावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ४ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तर में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है ज० जब

सूत्र

भवइ, तयाणं जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबूमंदरस्स पुरच्छिमेणं दिवसे जाव राई भवइ ॥ ४ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तयाणं उत्तर जाव उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ जयाणं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते

भावार्थ

त्र दश भाग में का छ भाग रात्रि क्षेत्र होवे. यह दिन के ताप क्षेत्र व रात्रि क्षेत्र की स्थापना कही. जब दिन छोटा होवे तब रात्रिक्षेत्र जितना तापक्षेत्र व तापक्षेत्र जितना रात्रिक्षेत्र जानना. जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व में दिन होता है तब पश्चिम में भी दिन होता है और जब पूर्व पश्चिम में दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के उत्तर व दक्षिण में रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम में दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में रात्रि होती है ॥४॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के दक्षिण विभाग में अठारह मुहूर्तका दिन होता है तब उत्तर विभाग में भी अठारह मुहूर्तका दिन होता है

शब्दार्थ मं० मेरु पर्वत के दा० दक्षिणार्ध में दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तरार्ध में दि० दिन भ० होता है. ज० जब उ० उत्तरार्ध में दि० दिन भ० होता है त० तब जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की

सूत्र

उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ जयाणं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ तयाणं जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ जाव राई भवइ ॥ जयाणं भंते ! जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं दिवसे भवइ, तयाणं पच्चच्छिमेणवि दिवसे भवइ, जयाणं पच्चच्छिमेणं दिवसे

भावार्थ में दिन होता है तब मेरु से उत्तर में भी दिन होता है; और जब उत्तर दिशा में दिन होता है तब क्या मेरु पर्वत की पूर्व पश्चिम में रात्रि होती है ? हां गौतम ! मेरु पर्वत की उत्तर दिशा में जब दिन होता है तब पूर्व पश्चिम दिशा में रात्रि होती है. जम्बूद्वीप में दो चंद्र व दो सूर्य फीरते हैं. अब जम्बूद्वीप के उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम ऐसे चार विभाग करना. जब उत्तर दक्षिण में दोनों सूर्य रहने से दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में दोनों सूर्य के अभावसे रात्रि होती है. मेरु पर्वत की पास ९४०० योजन व एक योजन के दश भाग में का नव भाग इतने क्षेत्र में दिन रहता है और, लवण समुद्र की पास ९५८६८ और एक योजन के दश भाग में का चार भाग दिन रहता है. मेरु पर्वत की पास ३१२२४ योजन और दश के छ भाग रात्रिक्षेत्र होता है और लवण समुद्र की पास ६३२४९ योजन

शब्दार्थ पु० पूर्व में प० पश्चिम रा० रात्रि भ० होती है हं० हां० गो० गौतम ज० जब जं० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में दि० दिन भ० होता है जा० यावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ४ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तर में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है ज० जब

सूत्र भवइ, तयाणं जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबूमंदरस्स पुरच्छिमेणं दिवसे जाव राई भवइ ॥ ४ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तयाणं उत्तर जाव उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ जयाणं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते

भावार्थ व दश भाग में का छ भाग रात्रि क्षेत्र होवे. यह दिन के ताप क्षेत्र व रात्रि क्षेत्र की स्थापना कही. जब दिन छोटा होवे तब रात्रिक्षेत्र जितना तापक्षेत्र व तापक्षेत्र जितना रात्रिक्षेत्र जानना. जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व में दिन होता है तब पश्चिम में भी दिन होता है और जब पूर्व पश्चिम में दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के उत्तर व दक्षिण में रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम में दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में रात्रि होती है ॥४॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के दक्षिण विभाग में अठारह मुहूर्तका दिन होता है तब उत्तर विभाग में भी अठारह मुहूर्तका दिन होता है

शब्दार्थ उ० उत्तरार्ध में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है त० तब जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की पु० पूर्व में प० पश्चिम में ज० जघन्य दु० द्वादश मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है हं० हां गो० गौतम ज० जब जा० यावत् दु० द्वादश मुहूर्त की रा० रात्रि भं० होती है ॥५॥

सूत्र दिवसे भवइ, तयाणं जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू जाव दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ॥ ५ ॥ जयाणं भंते ! जंबू मंदरस्स पुरच्छिम उक्कोसए अट्ठारस जाव

भावार्थ और जब उत्तर दिशा में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब क्या पूर्व पश्चिम दिशा में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बूद्वीप के उत्तर व दक्षिण विभाग में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब पूर्व, पश्चिम दिशा में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है = ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के

= सूर्य के सब १८४ मांडले हैं इस में से ६५ मांडले जगति सहित जम्बूद्वीप मे हैं और ११९ मांडले लवण समुद्र में हैं. जब सब आभ्यंतर मांडले में सूर्य आता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है. और जब सब बाहिर मांडले पर सूर्य चलता है तब बारह मुहूर्तका दिन होता है, वहां से सूर्य पलटता है तब दूसरे मांडले से प्रत्येक मांडले पर एक मुहूर्त के एकसठीये दो भाग दिन बढता है. ऐसे १८२ वे मांडले पर छ मुहूर्त दिन बढकर १८ मुहूर्त का दिन होता है.

शब्दार्थ

ज० जब भं० भगवन् ज० जम्बू के मेरु पर्वत की पु० पूर्व में अ० अठारह जा०यावत् त० तब भं०भगवन् जं० जम्बूद्वीप के उ० उत्तर में दु० बारह मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है हं० हां गो० गौतम जा० यावत् भ० होती है ॥ ६ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिणार्ध में अ० अठारह मु० मुहूर्तांतर दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तरार्ध अ० अठारह मु० मुहूर्तांतर दि० दिन भ० होवे पु० पूर्व प० पश्चिम में सा० अधिक दु० बारह मु० मुहूर्त रा० रात्रि भ० होती है हं०

सूत्र

तयाणं भंते ! जंबू उत्तरं दुवालस जाव राई भवइ ? हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥ ६ ॥ जयाणं भंते ! जंबू दाहिणड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तयाणं उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जयाणं उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तयाणं जंबू मंदर पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं साइरेगा दुवालस मुहुत्ता

भावार्थ

मेरु से पूर्व दिशा में उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है, तब क्या उत्तर दक्षिण में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू के मेरु की दक्षिण में अठारह मुहूर्त की अंतर में दिनहोताहै तब उत्तर में भी इतनाही दिन होता है. जब उत्तर में अठारह मुहूर्त के अंतर में दिन है तब पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त से अधिक की रात्रि होती है ? हां गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दक्षिण

हां गो० गौतम ज० जब ज० जम्बूद्वीप जा० जावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ७ ॥ पूर्ववत् ॥ ८ ॥ ए० ऐसे इ० इस क० क्रम से उ० कहना स० सत्तरह मु० मुहूर्त का दि० दिन ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है स० सत्तरह मु० मुहूर्तान्तर दि० दिवस सा० अधिक ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा०

सूत्र

राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू जाव राई भवइ ॥ ७ ॥ जयाणं भंते ! जंबू मंदरस्स पुरच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं पच्चच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जयाणं पच्चच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं जंबूमंदरउत्तर दाहिणेणं साइरेगा दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ? हंता गोयमा! जाव भवइ ॥८॥ एवं एएणं कमेणं उच्चारेयव्वं सत्तरस मुहुत्ते दिवसे, तेरस मुहुत्ता राई भवइ। सत्तरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगतेरसमुहुत्ता राई। सोलसमुहुत्ते दिवसे चोदस मुहुत्ता राई. सोलस मुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेग चोदस मुहुत्ताराई ॥ पण्ण-

भावार्थ

में जब अठारह मुहूर्त से कम का दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब क्या उत्तर दक्षिणमें बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बू मंदर के पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब बारह मुहूर्त से अधिक की रात्रि होती है. ॥ ८ ॥ ऐसे ही अनुक्रम से सत्तरह मुहूर्त का दिन तेरह मुहूर्त की रात्रि, सत्तरह मुहूर्त से कुछ कम दिन व तेरह मुहूर्त

शब्दार्थ रात्रि स० सोलह मु० मुहूर्त का दि० दिन चो० चौदह मुहूर्त की रा० रात्रि सो० सोलह मु० मुहूर्तान्तर

सूत्र रसमुहुत्ते दिवसे, पण्णरस मुहुत्ताराई पण्णरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेग पण्णरस मुहुत्ता राई चोद्दसमुहुत्ते दिवसे सोलस मुहुत्ताराई। चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगा सोलस मुहुत्ता राई॥ तेरस मुहुत्ते दिवसे सत्तरस मुहुत्ता राई। तेरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा सत्तरस मुहुत्ता राई॥ जयाणं जंबू दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवइ तयाणं उत्तरड्ढेवि। जयाणं उत्तरड्ढे तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई? हंता गोयमा! एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव राई भवइ ॥ ९ ॥ जयाणं भंते! जंबू मंदर पुरच्छिमेणं जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं

भावार्थ से अधिक रात्रि, सोलह मुहूर्त का दिन चौदह मुहूर्त की रात्रि; सोलह मुहूर्त से कुच्छ कम दिन; चौदह मुहूर्त से अधिक रात्रि; पन्नरह मुहूर्त का दिन, पन्नरह मुहूर्तकी रात्रि, पन्नरह मुहूर्त में कुछ कम दिन व पन्नरह मुहूर्त से अधिक रात्रि; चौदह मुहूर्त का दिन सोलह मुहूर्त की रात्रि, चौदह मुहूर्त से कम दिन सोलह मुहूर्त से अधिक रात्रि तेरह मुहूर्त का दिन सत्तरह मुहूर्तकी रात्रि, तेरह मुहूर्त से कम दिन व सत्तरह मुहूर्त से अधिक रात्रि और बारह मुहूर्त का दिन व अठारह मुहूर्तकी रात्रि जानना. ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! जब जम्बू मंदर की पूर्व में जघन्य बारह मुहूर्त का दिन है तब क्या उत्तर दक्षिण में उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती

शब्दार्थ हां गो० गौतम ज० जब ज० जम्बूद्वीप जा० जावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ७ ॥ पूर्ववत् ॥ ८ ॥ ए० ऐसे इ० इस क० क्रम से उ० कहना स० सत्तरह मु० मुहूर्त का दि० दिन ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है स० सत्तरह मु० मुहूर्तान्तर दि० दिवस सा० अधिक ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा०

सूत्र राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू जाव राई भवइ ॥ ७ ॥ जयाणं भंते ! जंबू मंदरस्स पुरच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं पच्चच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जयाणं पच्चच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं जंबूमंदरउत्तर दाहिणेणं साइरेगा दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ? हंता गोयमा! जाव भवइ ॥८॥ एवं एएणं कमेणं उच्चारेयव्वं सत्तरस मुहुत्ते दिवसे, तेरस मुहुत्ता राई भवइ। सत्तरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगतेरसमुहुत्ता राई । सोलसमुहुत्ते दिवसे चोद्दस मुहुत्ता राई. सोलस मुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेग चोद्दस मुहुत्ताराई ॥ पण्ण-

भावार्थ में जब अठारह मुहूर्त से कम का दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब क्या उत्तर दक्षिणमें बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बू मंदर के पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब बारह मुहूर्त से अधिक की रात्रि होती है. ॥ ८ ॥ ऐसे ही अनुक्रम से सत्तरह मुहूर्त का दिन तेरह मुहूर्त की रात्रि, सत्तरह मुहूर्त से कुछ कम दिन व तेरह मुहूर्त

शब्दार्थ ज० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिण में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तैसे ही जा० यावत् प० होता है. ॥ ११ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप के मं मेरु की पु० पूर्व में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब प० पश्चिम में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय में प० होता है. ज० जब प० पश्चिम में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब जा० यावत् मं० मेरु पर्वत की उ० उत्तर दा० दक्षिण में अ० अनंतर प० पश्चात् कृत स० समय में

सूत्र पुरक्खकडं समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू दाहिणड्ढे वासाणं पढमसमए पडिवज्जइ, तहचेव जाव पडिवज्जइ ॥ ११ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पुरच्छिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तयाणं पच्चाच्छिमेणंवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, जयाणं पच्चाच्छिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तयाणं जाव मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतर पच्छाकड

भावार्थ ऋतु का प्रथम समय होता है तब पूर्व पश्चिम में अनंतर आगामिक वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है. ॥ ११ ॥ जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व व पश्चिम दिशा में वर्षा का प्रथम समय होता है तब क्या उत्तर व दक्षिण दिशा में अनंतर अतीत काल में वर्षा का प्रथम समय होता है ? हां गौतम ! जब पूर्व पश्चिम में वर्षा का प्रथम समय होता है तब उत्तर व दक्षिण में

शब्दार्थ दिवस सा० कुछ अधिक चो० चौदह मुहूर्त रा० रात्रि प० पन्नरह शेष पूर्ववत् ॥ ९ ॥ १० ॥ ज० जब ज० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिणार्ध में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब उ० उत्तरार्ध में भी वा० वर्षा का प०प्रथम समय प०होता है ज०जब उ०उत्तरार्ध में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब जं० जम्बूद्वीप में मं० मेरु की पु० पूर्व में प० पश्चिम में अ० अनंतर पु० आगामिक स० समय में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है हं० हां गो० गौतम ज० जब

सूत्र पच्चत्थिमेण वि जयाणं पच्चत्थिमेण वि तयाणं जंबू मंदर उत्तरदाहिणेणं उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई? हंता गोयमा! जाव राई भवइ ॥ १० ॥ जयाणं भंते! जंबूद्दीवेदीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, जयाणं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समये पडिवज्जइ तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदर पुरच्छिमे पच्चच्छिमेणं अणंतर

भावार्थ है? हां गौतम! जब जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त का दिन होता है तब दक्षिण में अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है ॥ १० ॥ अहो भगवन्! जब जम्बूद्वीप के मेरु की दक्षिण में वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है तब उत्तर में वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है. जब उत्तर में वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है तब क्या जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम मे अनंतर आगामिक काल का वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है? हां गौतम! जब उत्तर दक्षिण में वर्षा

शब्दार्थ प० होता है ज० जैसे वा० वर्षा का अ० अभिलाप त० तैसे हे० हेमंत का गि० ग्रीष्म का भी भा० कहना जा० यावत् उ० ऋतु ए० ऐसे ए०उन ति० तीन प० पद की साथ ती०तीस आं० आलापक भा० कहना ॥१३॥ ज०जब दा० दक्षिण में प०प्रथम अ०अयन प० होती है त०तब उ०उत्तरार्ध में प०प्रथम अ० अयन प० होती है ज० जैसे स० समय का अ० अभिलाप त० तैसे,अ० अयन से भा० कहना जा०

सूत्र हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ, जहेव वासाणं अभिलावो तहेव हेमंताणवि गिम्हाणवि भाणियव्वो जाव उऊ ॥ एवं एए तिण्णिवि पएसिं तीसं आलावगा भाणियव्वा ॥ १३ ॥ जयाणं भंते ! जंबू दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समएणं अभिलावो तहेव अयणेणावि

भावार्थ मेरु पर्वत की उत्तर, दक्षिण में हेमन्त ऋतु का प्रथम समय होता है तब क्या पूर्व पश्चिम में अनंतर अनागत काल में हेमन्त का प्रथम समय होता है ? अहो गौतम ! जैसे वर्षा ऋतु का कहा, वैसे ही हेमन्त ऋतु का जानना. और ऐसे ही ग्रीष्म ऋतु का जानना. इस तरह तीन ऋतु की साथ समयादिक के तीस आलापक हुए ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जब दक्षिण व उत्तर विभाग में अयन होती है तब क्या पूर्व पश्चिम में अनंतर आगामिक अयन होती है ? हां गौतम ! इस का सब कथन समय जैसे कहना

शब्दार्थ

वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० हुवा भ० होता है. हं० हां गो० गौतम ज० जब जं० जम्बू मं० मेरु पु० पूर्व में ए० ऐसे उ० कहना जा० यावत् प० हुवा भ० होवे ए० ऐसे ज० जैसे स० समय से अ० अभिलाप भा० कहा व० वर्षा का त० तैसे आ० आवलिका से भा० कहना आ० श्वासोश्वास थो० थोव ल० लव मु० मुहूर्त अ० अहोरात्रि प० पक्ष मा० मास उ० ऋतु से ए० इन स० सब से ज० जैसे स० समय का अ० अभिलाप त० तैसे भा० कहना ॥ १२ ॥ ज० जब हे० हेमंत का प० प्रथम स० समय

सूत्र

समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवण्णे भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबूमंदर पुरच्छिमेणं एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव पाडिवण्णे भवइ, एवं जहा समएणं अभिलावो भणिओ वासाणं तहा आवलियाएवि भाणियव्वो, आणा पाणूणवि, थोवेणंवि, लवेणावि, मुहुत्तेणवि, अहोरत्तेणवि, पक्खेणवि, मासेणवि, उऊणावि । एएसिं सव्वेसिं जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो ॥ १२ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे

भावार्थ

अनंतर अतीत काल में वर्षा का प्रथम समय होता है. अर्थात् प्रथम दक्षिण उत्तर विभाग में वर्षा काल होता है फीर पूर्व पश्चिम में होता है. ऐसे ही जैसे समय का कहा वैसे ही आवलिका, श्वासोश्वास, स्तोक, लव, मुहूर्त, अहोरात्रि, पक्ष, मास व ऋतुका जानना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के

शब्दार्थ द्वीप के दा० दक्षिण में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० है त० तव उ० उत्तर में भी प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० होती है ज० जब उ० उत्तर में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की पु० पूर्व में प० पश्चिम में भी ने० नहीं अ० है ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी अ० अवस्थित त० वहां का० काल प० प्ररूपा स० श्रमण आ० आयुष्मन् हं० हां गो० गौतम तं० वैसे ही उ० कहना जा० यावत् स० श्रमण आ० आयुष्मन् ज० जैसे ओ० अवसर्पिणी आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे

सूत्र पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरद्धेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जयाणं भंते ! उत्तरद्धे पडिवज्जइ तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं पच्चाच्छिमेणवि नेवत्थि ओसप्पिणी उस्सप्पिणी अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ? हंता गोयमा ? तंचेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो जहा ओसप्पिणीए

भावार्थ दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब उत्तरविभाग में भी अवसर्पिणी होती है और जब उत्तर विभाग में अवसर्पिणी है तब क्या पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है ? क्या वहां अवस्थित काल होता है ? हां गौतम ! जब उत्तर दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ नहीं होती है परंतु वहां पर अवस्थित काल होता है. ऐसे उत्सर्पिणी का

शब्दार्थ यावत् अ० अनंतर प० पश्चात् क० कृत स० समय में प० प्रथम अ० अयन प० प्रतिपन्न भ० होती है. ज० जैसा अ० अयन का अ० अभिलाप त० तैसे सं० संवत्सर से भा० कहना जु० युग वा० शतवर्ष वा० सहस्र वर्ष से वा० वर्ष लक्ष पु० पूर्वांग से पु० पूर्व से तु० त्रुटितांग तु० तुटित ए० ऐसे पु० पूर्व तु० तुटित अ०अडड अ०अवव हू०हूहूय उ०उप्पल प०पद्म न०नलिन अ० अत्थिनिउर अ०अउय न०नउय प० पउय चू०चूलिका सी०शीर्पप्रहेलिका प०पल्योपम सा० सागरोपम भा० कहना ॥ १४ ॥ ज० जब जं०जम्बू-

सूत्र भाणियव्वो, जाव अणंतरपच्छाकडसमयंसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ. ॥ जहा अयणेणं अभिलावा तहा संवच्छरेणवि भाणियव्वो ॥ जुएणवि, वाससएणवि, वाससहस्सेणवि, वाससयसहस्सेणवि, पुव्वंगेणवि, पुव्वेणवि, तुडियंगेणवि, तुडिएणवि, एवं पुव्वे, २ तुडिए २, अडडे २, अववे २, हूहूय २ उप्पले २, पउमे २, नलिणे २, अत्थिणेउरे २, अउए २,णउए२,पउए २,चूलिए २,सीसपहेलिया पलिओवमेणवि, सागरेणवि, भाणियव्वो ॥ १४ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे

र्थ जैसे अयन का कहा वैसे ही दो अयन का संवत्सर, पांच संवत्सर का युग, सो वर्ष, सहस्र वर्ष, लक्षवर्ष, चौरासी लक्ष वर्ष का एक पूर्वांग, चौरासी पूर्वांग का पूर्व, वे ही हूहूय २ उप्पल ३ पद्म २ नलिण २ अत्थिणेउर २ अउय २ नउय २ पउय २ चूलिए, शीर्पप्रहेलिका, पल्योपम व सागरोपम का जानना ॥१४॥ जब जम्बूद्वीप के

शब्दार्थ

द्वीप के दा० दक्षिण में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० है त० तब उ० उत्तर में भी प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० होती है ज० जब उ० उत्तर में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की पु० पूर्व में प० पश्चिम में भी ने० नहीं अ० है ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी अ० अवस्थित त० वहां का० काल प० प्ररूपा स० श्रमण आ० आयुष्मन् हं० हां गो० गौतम तं० वैसे ही उ० कहना जा० यावत् स० श्रमण आ० आयुष्मन् ज० जैसे ओ० अवसर्पिणी आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे

सूत्र

पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जयाणं भंते ! उत्तरड्ढे पडिवज्जइ तयाणं जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणवि नेवत्थि ओसप्पिणी उस्सप्पिणी अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ? हंता गोयमा ? तंचेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो जहा ओसप्पिणीए

भावार्थ

दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब उत्तरविभाग में भी अवसर्पिणी होती है और जब उत्तर विभाग में अवसर्पिणी है तब क्या पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है ? क्या वहां अवस्थित काल होता है ? हां गौतम ! जब उत्तर दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ नहीं होती है परंतु वहां पर अवस्थित काल होता है. ऐसे उत्सर्पिणी का

शब्दार्थ उ० उत्सर्पिणी भा० कहना ॥ १६ ॥ ल० लवण स० समुद्र में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर ज० जैसी जं० जम्बूद्वीप की व० वक्तव्यता भा० कही स० वैसी ही स० सब अ० विशेषता रहित ल० लवण समुद्र की भा० कहना न० विशेष अ० अभिलाप इ० यह जा० जानना. ज० जब ल० लवण समुद्र में दा० दक्षिण में दि० दिन भ० होता है तं० वैसे ही जा० यावत् त० तब ल० लवण समुद्र की पु० पूर्व पश्चिम में रा० रात्रि भं० होती है ए० इस अ० अभिलाप से ने० जानना जा० यावत् ज० जब भं० भगवन् ल० लवण समुद्र में दा० दक्षिण में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० होती है त०

मूत्र आलावओ भाणियव्वो । एवं उस्सप्पिणीएवि भाणियव्वो ॥ १५ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जच्चेव जंबूद्दीवस्स वत्तव्वया भाणिया, सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्सवि भाणियव्वा, णवरं अभिलावो इमो जाणियव्वो जयाणं भंते ? लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तंचेव जाव तयाणं लवण समुद्दे पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं राई भवइ ॥ एएणं अभिलावेणं नेयव्वं जाव जयाणं भंते ?

भावार्थ जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में सूर्य ईशान कौन में उदित होकर अग्नि कौन में क्या अस्त होता है ? हां गौतम ! इस का सब वर्णन जम्बूद्वीप जैसे जानना यावत् लवण समुद्र में दक्षिण भाग में दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में रात्रि होती है यावत् लवण समुद्र के दक्षिण भाग में प्रथम अ-

शब्दार्थ तब उ० उत्तरार्ध में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी ज० जब उ० उत्तरार्ध में ओ० अवसर्पिणी प० है त० तब ल० लवण समुद्र में पु० पूर्व प० पश्चिम में ने० नहीं है ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी स० श्रमण आ० आयुष्मन् हं० हां गो० गौतम जा० यावत् स० श्रमण आ० आयुष्मन् ॥ १६ ॥ धा० धातकी खंड में भं० भगवन् दी० द्वीप में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर ज० जैसे जं० जम्बूद्वीप की व० वक्तव्यता स० सब धा० धातकी खंडकी भा० कहना ण० विशेष इ० इस आ० अभिलाप से स० सब आ० आलापक भा० कहना ॥ १७ ॥ ज० जब भं० भगवन् धा० धातकी खंड दी० द्वीप

सूत्र लवण समुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जयाणं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ तयाणं लवण समुद्दे पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं नेवत्थि ओसप्पिणी उस्सप्पिणी समणाउसो ? हंता गोयमा ! जाव समणाउसो ॥ १६ ॥ धायइखंडेणं भंते ! दीवे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जहेव जंबूद्दीवस्स वत्तव्वया, सव्वेव धायइखंडस्सवि भाणियव्वा, णवरं इमेणं अभिलावेणं सव्वे आलावगा भाणियव्वा ॥ १७ ॥ जयाणं भंते ! धायइखंडेदीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि

भावार्थ वसर्पिणी है तब पूर्व पश्चिम में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ नहीं है, वगैरह अधिकार जानना. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! धातकीखंड में सूर्य ईशान कौन में उदित होकर अग्नि कौन में क्या अस्त होता है ? हां गौतम ! इस का सब अधिकार जम्बूद्वीप जैसे कहना ॥ १७ ॥ जब धातकी खंड के दक्षिण विभाग

शब्दार्थ में दा० दक्षिण में दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तर में भी दि०दिन भ०होता है ज० जब उ० उत्तर में भी त० तब धा० धातकी खंड दी० द्वीपमें मं०मेरु प० पर्वतोंकी पु० पूर्व प०पश्चिम में रा० रात्रि भ० होती है हं० हां गो० गौतम जा० यावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ १८ ॥ पूर्ववत् ॥ १९ ॥ ए०

सूत्र जयाणं उत्तरड्ढेवि तयाणं धायइखंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जाव राई भवइ ॥ १८ ॥ जयाणं भंते ! धायइ खंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिमेणं दिवसे भवइ, तयाणं पच्चच्छिमेणावि, जयाणं पच्चच्छिमेणावि तयाणं धायइ खंडे मंदराणं पव्वयाणं उत्तर दाहिणेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥ १९ ॥ एवं एएणं आभिलावेणं नेयव्वं जाव जयाणं भंते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी तयाणं उत्तरड्ढे, जयाणं उत्तरड्ढे तयाणं धायइ

भावार्थ में दिन होता है तब उत्तर विभाग में दिन होता है और जब उत्तर विभाग में दिन होता है तब पूर्व पश्चिम विभाग में रात्रि होती है ॥ १८ ॥ जब पूर्व पश्चिम विभाग में दिन होता है तब उत्तर दक्षिण विभाग में रात्रि होती है ॥ १९ ॥ इसी तरह अवसर्पिणी उत्सर्पिणी तक जानना. जब धातकी खंड के उत्तर दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ

शब्दार्थ इस अ० अभिलाप से ने० जानना. शेष पूर्ववत् ॥ २० ॥ ज० जैसे ल० लवण समुद्र की व० वक्तव्यता त० तैसे का० कालोदधि की भा० कहना न० विशेष का० कालोदधि ना० नाम भा० कहना. ॥ २१ ॥ अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध में भं० भगवन् सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर ज० जैसे धा० धातकी खंड की व० वक्तव्यता त० तैसे अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध की भा० कहना ण० विशेष अ० अभिलाप जा० जानना जा० यावत् त० तत्र अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध मं० मेरु की पु० पूर्व में प० पश्चिम से णे० नहीं है ओ० अवसर्पिणी णे० नहीं है उ० उत्सर्पिणी, अ० अवस्थित त० वहां का०

सूत्र मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं नेवत्थि ओसाप्पिणी जाव समणाउसो ? हंता गोयमा ! जाव समणाउसो ॥ २० ॥ जहा लवणसमुद्द वत्तव्वया तहा कालोदहिस्सवि भाणियव्वा, णवरं कालोदहिस्स नामं भाणियव्वं ॥ २१ ॥ अब्भिंतर पुक्खरड्ढेणं भंते ! सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जहेव धायइ खंडस्स वत्तव्वया तहेव अब्भिंतर पुक्खरद्धस्सवि भाणियव्वा। णवरं आभिलावो जाणियव्वो, जाव तयाणं अब्भिंतर पुक्खरड्ढे मंदराणं पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं, णेवत्थि ओसप्पिणी, णेव-

भावार्थ नहीं होते हैं ॥ २० ॥ जैसे लवण समुद्र की वक्तव्यता कही वैसे ही कालोदधि समुद्र की वक्तव्यता जानना. इस में कालोदधि नाम कहना ॥ २१ ॥ आभ्यंतर पुष्करार्ध द्वीप का धात की खंड जैसे सब

शब्दार्थ काल प० कहा स० श्रमण आ० आयुष्मन् से० वैसे ही भं० भगवन् पं० पांचवा स० शतक का प० प्रथम उ० उद्देशा सं० संपूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥ ÷ ÷

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले अ० है भं० भगवन् ई० अल्प पु० सस्नेह वा० वायु प० पथ्य वायु मं० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है हं० हां अ० है ॥ १ ॥ अ० है

सूत्र त्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ! सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ १ ॥ * *

रायगिहे णगरे जाव एवं वयासी-अत्थिणं भंते ! ईसिं पुरेवाया, पत्थावाया, मंदावाया महावाया वायंति ? हंता अत्थि ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! पुरिच्छिमेणं ईसिं पुरेवाया

भावार्थ आलापक कहना. यावत् पुष्करार्ध द्वीप में पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुछ नहीं है. परंतु अवस्थित काल रहा हुवा है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतकका पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ १ ॥ + ÷

प्रथम उद्देशे में दिशि में दिवसादिक के विभाग कहे. अब इस में वायु के भेद कहते हैं. राजगृही नगरी में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी ऐसा पूछने लगे कि अहो भगवन् ! अल्प स्नेह सहित वायु, वनस्पत्यादिकको पथ्यकारी वायु, मंद वायु व महा वायु

शब्दार्थ मं० भगवन् पु० पूर्व में ए० ऐसे प० पश्चिम में दा० दक्षिण में उ० उत्तर में उ० ईशान में दा० अग्नि दा० नैऋत्य उ० वायव्य ॥ २ ॥ ज० जब भं० भगवन् पु० पूर्व में ई० थोडा पु० सस्नेह वायु प० पथ्य वायु मं० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है त० तब प० पश्चिम में हं० हां गो० गौतम ए०

सूत्र पत्थावाया, मंदावाया, महावाया वायंति ? हंता अत्थि ॥ एवं पच्चच्छिमेणं, दाहिणेणं उत्तरेणं, उत्तरपुरच्छिमेणं, दाहिणपुरच्छिमेणं, दाहिपच्चाच्छिमेणं, उत्तरपच्चच्छिमेणं ॥ २ ॥ जयाणं भंते ! पुरच्छिमेणं ईसिं पुरेवाया, पत्थावाया, मंदावाया, महावाया वायंति; तयाणं पच्चच्छिमेणंवि ईसिं पुरेयाया, जयाणं पच्चच्छिमेणं ईसिं पुरेवाया, तयाणं पुरच्छिमेणवि ? हंता गोयमा ! जयाणं पुरच्छिमेणं तयाणं पच्चच्छिमेणवि ईसिं) जयाणं पच्च-

भावार्थ क्या चलते हैं ? हां गौतम ! उक्त प्रकार के वायु चलते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या पूर्व दिशा में अल्प स्नेहवाला वायु, पथ्यकारी वायु, मंद वायु व महा वायु चलते हैं ? हां गौतम ! पूर्व दिशा में उक्त प्रकार के वायु चलते हैं. ऐसे ही पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, अग्नि, नैऋत्य व वायव्य कौन में भी ऐसे चार प्रकार के वायु चलते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जब पूर्व दिशि में स्नेहमय, पथ्य, मंद व महा वायु चलते हैं तब पश्चिम दिशा में क्या स्नेहमयादि वायु चलते हैं ? हां गौतम ! जब पूर्व में उक्त प्रकार के वायु चलते हैं तब पश्चिम में भी वैसे वायु चलते हैं. और जब पश्चिम में वैसे वायु चलते

शब्दार्थ काल प० कहा स० श्रमण आ० आयुष्मन् से० वैसे ही भं० भगवन् पं० पांचवा स० शतक का प० प्रथम उ० उद्देशा सं० संपूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥ ÷ ÷

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले अ० है भं० भगवन् ई० अल्प पु० सस्नेह वा० वायु प० पथ्य वायु मं० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है हं० हां अ० है ॥ १ ॥ अ० है

सूत्र त्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ! सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ १ ॥ * *

रायगिहे णगरे जाव एवं वयासी-अत्थिणं भंते ! ईसिं पुरेवाया, पत्थावाया, मंदावाया महावाया वायंति ? हंता अत्थि ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! पुरिच्छिमेणं ईसिं पुरेवाया

भावार्थ आल्पक कहना. यावत् पुष्करार्ध द्वीप में पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुछ नहीं है. परंतु अवस्थित काल रहा हुवा है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतकका पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ १ ॥ + ÷

प्रथम उद्देशे में दिशि में दिवसादिक के विभाग कहे. अब इस में वायु के भेद कहते हैं. राजगृही नगरी में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी ऐसा पूछने लगे कि अहो भगवन् ! अल्प स्नेह सहित वायु, वनस्पत्यादिकको पथ्यकारी वायु, मंद वायु व महा वायु

शब्दार्थ इ० यह अ० अर्थ स० योग्य से० अब के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है गो० गौतम ते० उन वा० वायु को अ०परस्पर वि० विपरीतता से० उस से ल० लवण समुद्र में वे० शिखा ना० उल्लंघे नहीं से० अब ते० इसलिये जा० यावत् वा० वायु वा० वाते हैं ॥ ४ ॥ अ० है भं० भगवन् ई० अल्प पु० स्नेहयम वायु प० पथ्य वायु मं० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है हं० हां अ० है क० कब

सूत्र मट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, जयाणं दीविच्चया ईसिं णो णंतया सामुद्दिया ईसिं जयाणं सामुद्दिया ईसिं णो णंतया दीविच्चया ईसिं ? गोयमा ! तेसिणं वायाणं अण्णमण्ण विवच्चासेणं लवणसमुद्देवेलं नाइक्कमइ, से तेणट्ठेणं जाव वाया वायंति ॥ ४ ॥ अत्थिणं भंते ! ईसिं पुरेवाया पच्छावाया, मंदावाया, महावाया, वायंति ? हंता अत्थि । कयाणं भंते ईसिं जाव वाया वायंति ? गोयमा ! जयाणं वाउयाए अहारियं

भावार्थ हजार योजन की पानी की वेल रही हुई है, उसे लोक के स्वभाव से वायु नहीं उल्लंघ सकता है. इस से अहो गौतम ! जब द्वीप के वायु चलते हैं तब लवण समुद्र के वायु नहीं चलते हैं और जब लवण समुद्र के वायु चलते हैं तब द्वीप के वायु नहीं चलते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! स्नेहमय वायु, पथ्य वायु, मंद वायु व महावायु चलते हैं ? हां गौतम ! चलते हैं. अहो भगवन् ! वे वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! जब यथारीति से वह वायुकाय जावे या उसका गमन होवे तब वायुकाय चले. अहो भगवन् ! क्या

शब्दार्थ ऐसे दि० दिशि वि० विदिशि में ॥ ३ ॥ अ० है भं० भगवन् दी० द्वीप प्रत्यियक ई० अल्प हं० हां अ० है अ० है भं० भगवन् सा० समुद्र संबंधी ई० अल्प हं० हां अ० है जं० जब भं० भगवन् दि० द्वीप प्रत्यियक ई० अल्प पु० स्नेहमय वायु त० तब सा० समुद्र का ई० अल्प पु० स्नेहमय वा० वायु णो० नहीं

सूत्र च्छिमेणवि ईसिं तयाणं पुरच्छिमेणवि ईसिं ॥ एवं दिसासु, विदिसासु, ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते दीवच्चया ईसिं ? हंता अत्थि ॥ अत्थिणं भंते सामुद्दिया ईसिं ? हंता अत्थि ॥ जयाणं भंते ! दिविच्चया ईसिं पुरेवाया, तयाणं सामुद्दिया वि ईसिं पुरेवाया, जयाणं सामुद्दियाईसिं तयाणं दीविच्चया ईसिं ? णोइणट्ठे स-

भावार्थ हैं तब पूर्व में भी वैसे ही वायु चलते हैं, यों चारों दिशि विदिशि का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! द्वीप संबंधी स्नेहमय वायु क्या होता है ? हां गौतम ! द्वीपसंबंधी स्नेहमय वायु होता है. वैसे ही समुद्र संबंधी भी स्नेहमय वायु होता है. अहो भगवन् ! जब द्वीपसंबंधी स्नेहमय, पथ्य वायु, मंद वायु, व महा वायु चलते हैं; तब क्या लवण समुद्र संबंधी उक्त प्रकार के वायु चलते हैं ? अथवा जब समुद्रके वायु चलते हैं तब क्या द्वीप के वायु चलते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! यह अर्थ किस कारन से योग्य नहीं है ? अहो गौतम ! उक्त द्वीप व समुद्र ऐसे दोनों प्रकार के वायु में परस्पर विपरीतपना है अर्थात् ऐसा उन वायुओं का स्वभाव ही रहा हुवा है. अथवा लवण समुद्र में सोलह

पदार्थ

का आ० ऊंचाश्वासलेना पा० नीचाश्वासलेना ज० जैसे ख० स्कदक त० तैसे च० चार आ० आलापक ने० जानना अ० अनेक स० लक्ष पु० स्पर्श्याहुआ उ० घातकर स० शरीर सहित नि० नीकले ॥ ७ ॥ उ० चांवल कु० कुलथ सु० मदिरा ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० कहना गो० गौतम उ० चावल कु० कुलथ सु० मदिरा जे० जो घ० घन द० द्रव्य ए० ये पु० पहिले के भा० भाव प० कहा हुवा प० आश्रित व० वनस्पति जी० जीव स० शरीर त० उस प० पश्चात् स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे

सूत्र

भंते ! वाउयं चेव आणमंतिवा, पाणमंतिवा, जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्सपुट्ठे उद्दाय ससरीरी निक्खमइ ॥ ७ ॥ अह भंते ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा, एएणं किं सरीराति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा य जे घणे दव्वे, एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च वणस्सइजीव सरीरा

भावार्थ

चलती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वायुकाय का क्या श्वासोश्वास लेती है? अहो गौतम ! स्कन्दक के अधिकारमें वायुकाय वायुकायाका श्वासोश्वास लेती है. अनेक लक्षवार मरकर वायुकायके जीव वायुकायमें उत्पन्न होते हैं. वायुकाय शस्त्रादिक के स्पर्श से मरती है, वैक्रेय व उदारिक शरीर की अपेक्षा से वायुकाय के जीव शरीर छोडकर जाते हैं, तेजस कार्माण की अपेक्षा से शरीर सहित जाते हैं ऐसे चार आलापक जानना॥७॥ अब अहो भगवन् ! ओदन, (चांवलं) कुलथ व सूरा इन तीनों को कोनसा शरीर कहा है ? अहो

शब्दार्थ भं० भगवन् ई० अल्प जा० यावत् वा० वायु वा० वाता है गो० गौतम ज० जब वा० वायु अ० यथेच्छ रि० जाता है त० तब ई० अल्प जा० यावत् वा० चलता है. ॥ ५ ॥ वा० वायु काय उ० उत्तर वैक्रेय वा० वायु कुमार वा० वायु कुमारी अ० स्वतः के प० अन्य के उ० दोनों के अ० लिये वा० वायु काया की उ० उदीरणा करे त० तब ई० अल्प पु० स्नेहवाला वायु ॥ ६ ॥ वा० वायु काय वा० वायु

सूत्र रियंति तयाणं ईसिं जाव वायंति ॥ अत्थिणं भंते ईसिं? हंता अत्थि! कयाणं भंते! ईसिं जाव वायंति? गोयमा! जयाणं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ, तयाणं ईसिं ॥ ५ ॥ अत्थिण भंते! ईसिं? हंता अत्थि। कयाणं भंते! ईसिं पुरेवाया पुच्छा? गोयमा! जयाणं वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा, अप्पणो परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकायं उदीरंति, तयाणं ईसिं पुरेवाया ॥ ६ ॥ वाउयाएणं

भावार्थ स्नेहमयादि वायु चलते हैं? हां गौतम! स्नेहमयादि वायु चलते हैं. अहो भगवन्! वे वायु कब चलते हैं? अहो गौतम! वायुकाय का शरीर उदारिक है, उत्तरवैक्रेय करके शरीराश्रितक्रिया से उनका जब गमन होवे तब वे चले ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! क्या स्नेहमयादि चार प्रकार के वायु हैं? हां गौतम! अहो भगवन्! वे स्नेहमयादि वायु कब चलते हैं? अहो गौतम! जब वायुकुमार देव स्वतः के लिये, अन्य के लिये अथवा दोनों के लिये वायुकाय नीकालते हैं तब वायुकाय

शब्दार्थ का आ० ऊंचाश्वासलेना पा० नीचाश्वासलेना ज० जस ख० स्कंदक त० तस च० चार ...
ने० जानना अ० अनेक स० लक्ष पु० स्पर्श्याहुआ उ० घातकर स० शरीर सहित नि० नीकले ॥ ७ ॥
उ० चांवल कु० कुलथ सु० मदिरा ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० कहना गो० गौतम उ०
चावल कु० कुलथ सु० मदिरा जे० जो घ० घन द० द्रव्य ए० ये पु० पहिले के भा० भाव प० कहा
हुवा प० आश्रित व० वनस्पति जी० जीव स० शरीर त० उस प० पश्चात् स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे

सूत्र भंते ! वाउयं चेव आणमंतिवा, पाणमंतिवा, जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्सपुट्ठे उद्दाय ससरीरी निक्खमइ ॥ ७ ॥ अह भंते ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा, एएणं किं सरीराति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा य जे घणे दव्वे, एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च वणस्सइजीव सरीरा

भावार्थ चलती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वायुकाय का क्या श्वासोश्वास लेती है? अहो गौतम! स्कन्दक के अधिकारमें वायुकाय वायुकायाका श्वासोश्वास लेती है. अनेक लक्षवार मरकर वायुकायके जीव वायुकायमें उत्पन्न होते हैं. वायुकाय शस्त्रादिक के स्पर्श से मरती है, वैक्रेय व उदारिक शरीर की अपेक्षा से वायुकाय के जीव शरीर छोडकर जाते हैं, तेजस कार्माण की अपेक्षा से शरीर सहित जाते हैं ऐसे चार आलापक जानना ॥७॥ अब अहो भगवन् ! ओदन, (चांवल) कुलथ व सुरा इन तीनों को कोनसा शरीर कहा है ? अहो

शब्दार्थ — भं० भगवन् ई० अल्प जा० यावत् वा० वायु वा० वाता है गो० गौतम ज० जब वा० वायु अ० यथरूछ रि० जाता है त० तब ई० अल्प जा० यावत् वा० चलता है. ॥ ५ ॥ वा० वायु काय उ० उत्तर वैक्रेय वा० वायु कुमार वा० वायु कुमारी अ० स्वतः के प० अन्य के उ० दोनों के अ० लिये वा० वायु काया की उ० उदीरणा करे त० तब ई० अल्प पु० स्नेहवाला वायु ॥ ६ ॥ वा० वायु काय वा० वायु

सूत्र — रियंति तयाणं ईसिं जाव वायंति ॥ अत्थिणं भंते ईसिं ? हंता अत्थि! कयाणं भंते! ईसिं जाव वायंति ? गोयमा ! जयाणं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ, तयाणं ईसिं ॥ ५ ॥ अत्थिण भंते! ईसिं ? हंता अत्थि । कयाणं भंते ! ईसिं पुरेवाया पुच्छा? गोयमा ! जयाणं वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा, अप्पणो परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकायं उदीरंति, तयाणं ईसिं पुरेवाया ॥ ६ ॥ वाउयाएणं

भावार्थ — स्नेहमयादि वायु चलते हैं ? हां गौतम ! स्नेहमयादि वायु चलते हैं. अहो भगवन् ! वे वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! वायुकाय का शरीर उदारिक है, उत्तरवैक्रेय करके शरीराश्रितक्रिया से उनका जब गमन होवे तब वे चले ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या स्नेहमयादि चार प्रकार के वायु हैं ? हां गौतम ! अहो भगवन् ! वे स्नेहमयादि वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! जब वायुकुमार देव स्वतः के लिये, अन्य के लिये अथवा दोनों के लिये वायुकाय नीकालते हैं तब वायुकाय

शब्दार्थ का आ० ऊंचाश्वासलेना पा० नीचाश्वासलेना ज० जैसे खं० स्कंदक त० तैसे च० चार आ० आलापक ने० जानना अ० अनेक ग० लक्ष पु० स्पर्श्याहुआ उ० घातकर स० शरीर सहित नि० नीकले ॥ ७ ॥ उ० चांवल कु० कुलथ सु० मदिरा ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० कहना गो० गौतम उ० चावल कु० कुलथ सु० मदिरा जें० जो घ० घन द० द्रव्य ए० ये पु० पहिले के भा० भाव प० कहा हुवा प० आश्रित व० वनस्पति जी० जीव स० शरीर त० उस प० पश्चात् स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे

सूत्र भंते ! वाउयं चेव आणमंतिवा, पाणमंतिवा, जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगलयसहस्सपुट्ठे उद्दाय ससरीरी निक्खमइ ॥ ७ ॥ अह भंते ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा, एएणं किं सरीराति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा य जे घणे दव्वे, एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च वणस्सइजीव सरीरा

भावार्थ चलती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वायुकाय का क्या श्वासोश्वास लेती है? अहो गौतम ! स्कन्दक के अधिकारमें वायुकाय वायुकायाका श्वासोश्वास लेती है. अनेक लक्षवार मरकर वायुकायके जीव वायुकायमें उत्पन्न होते हैं. वायुकाय शस्त्रादिक के स्पर्श से मरती है, वैक्रेय व उदारिक शरीर की अपेक्षा से वायुकाय के जीव शरीर छोडकर जाते हैं, तेजस कार्माण की अपेक्षा से शरीर सहित जाते हैं ऐसे चार आलापक जानना॥७॥ अब अहो भगवन् ! ओदन, (चांवलं) कुलथ व सुरा इन तीनों को कोनसा शरीर कहा है ? अहो

शब्दार्थ हुवे श० शस्त्र से प० परिणमेहुवे अ० अग्नि से झा० जले हुवे अ० अग्नि से झु० शोषन हुवे अ० अ अग्नि से प० परिणमित अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर व० वक्तव्यता सि० होवे सु० मदिरा ए० यह जे० जो द० प्रवाही ए० वह पु० पूर्वभाव प० आश्रित प० कहा हुवा आ० अपूकाय जी० जीव स० शरीर त० उस की प० पीछे स० शस्त्र अ० अतिक्रमे जा० यावत् अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर ॥ ८ ॥ अ० अथ भं० भगवन् अ०लोहा तं०ताम्बा त०तरूआ सा० सीसा उ०पत्थर क०

सूत्र तओ पच्छा सत्थातीया, सत्थ परिणामिया, अगणिज्झामिया, अगणिज्झूसिया अगणि सेविया अगणिपरिणामिया, अगणिजीवसरीरातिवा वत्तव्वंसिया । सुरा एय जे दव्वे एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च आउजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीरातिवत्तव्वं सिया ॥८॥ अहणं भंते ! अये तंबे तउए सीसए उवले

गौतम ! द्रव्य के दो भेद घनद्रव्य व द्रव (प्रवाही) द्रव्य. जो ओदन व कुलथ घनद्रव्य हैं वे पूर्व पर्याय आश्री वनस्पतिकायिक हैं; फीर शस्त्र से अतिक्रमाये हुवे, शस्त्र से परिणमाये हुवे, अग्नि से धमित, अग्निसे शोषित, व अग्नि से परिणमित उक्त पदार्थों अग्नि के शरीरवाले कहाते हैं. और सूरा (शराब) प्रवाही द्रव्य होने से पूर्व पर्याय आश्री अपूकायिक कहाता है. फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने पर अग्नि कायिक कहाता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! लोहा, ताम्बा, तरूआ, सीसा, पाषाण, दग्ध कसोटा वगैरह कौन

थ

कसोटा ए० ये किं० कोन से स० शरीर वाले गो० गौतम पु० पृथ्वी स० शरीर वाले त० उस प० पीछे अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर वाले ॥ ९ ॥ अ० अथ भं० भगवन् अ० अस्थी अ० जलीहुई अस्थी च० चर्म च० जला हुवा चर्म रो० रोम रो० जला हुवा रोम सिं० शृंग सिं०जला हुवा शृंग खु०खुर खु० जलाहुवा खुर न० नख न० जला हुवा नख ए० ये किं० कोन से श० शरीर वाले व० वक्तव्यता सि० है गो० गौतम अ० अस्थी च० चर्म रो० रोम सिं० शृंग, खु० खुर न० नख ए० ये त० त्रस प्राण जी० जीव श० शरीर वाले अ० जलीहुइ हड्डी च० जला चर्म रो० जला रोम सिं० जलाशृंग खु० जला

सूत्र

कसाट्टिया एएणं किं सरीराइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा! अये, तंबे, तउए, सीसए, उव-ले कसाट्टिया एएणं, पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढवी जीव सरीरा, तओ पच्छा सत्थाईया जाव अगणि जीव सरीराइ वत्तव्वंसिया ॥ ९ ॥ अह भंते ! अट्ठी, अट्ठिज्झामे चम्मे, चम्मज्झामे, रोमे, रोमज्झामे सिंगे, सिंगज्झामे, खुरे, खुरज्झामे, नहे, नहज्झामे एएणं किं सरीराइ वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! अट्ठी चम्मे रोमे सिंगे

वार्थ

से शरीरवाले हैं ? अहो गौतम ! पूर्व पर्याय आश्रित पृथ्वी शरीरवाले हैं और शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने से अग्नि शरीरी है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! हड्डी, जली हुई हड्डी, चर्म, जलाहुवा चर्म, ऐसे ही विना जलाहुवा व जलाहुवा रोम, शृंग, खुर, व नख को कौनसा शरीर कहा है ? अहो गौतम ! अस्थी,

पदार्थ

खुर ण० जलाहुवा नख ए० ये पु० पहिले के भाव प० कहा हुवा प० आश्रित त० त्रस पा० प्राण जीव स० शरीर त० उन प० पीछे स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे जा० जावत् अ० अग्नि जीव व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १० ॥ अ० अथ भं० भगवन् इं० अंगार छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम इं० अंगारे छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने पु० पूर्व भाव प० कहा हुवा ए० ये ए० एकेन्द्रिय जीव स० शरीर प० प्रयोग परिणामित जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय स० शरीर प० प्रयोग प० परिणमित त० उस प० पीछे स० शस्त्र अ० अतिक्रमे

सूत्र

खुरे नहे एएणं तसपाणजीवसरीरा । अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, सिंगखुर णहज्झामे एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च तस पाण जीव सरीरा तओ पच्छा सत्थाईया जाव अगणिजीवत्ति वत्तव्वं सिया ॥ १० ॥ अह भंते ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएणं किं सरीराइ वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएणं पुव्वभाव पण्णवणं एए एगिंदियजीवसरीरप्पयोग परिणामियावि जाव पंचिंदिय जीव सरीरप्पयोग परिणामियावि, तओ पच्छा सत्थाईया

भावार्थ

चर्म, रोम, शृंग, खुर व नख त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं और जली हुई अस्थी, चर्म, रोम वगैरह पूर्व भव आश्री त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं. फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने पर अग्नि जीव शरीर कहाते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अंगारे, राख, भूसा व गोबर को कोनसा शरीर कहा ?

शब्दार्थ जा० यावत् अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ ११ ॥ ल० लवण भं० भगवन् स० समुद्र में के० कितना च० चक्रवाल वि० विष्कंभपना प० प्ररूपा ए० ऐसे ने० जानना. जा० यावत् लो० लोकस्थिति लो० लोकानुभाव ॥ १२ ॥ से० ऐसे ही भं० भगवन् भ० भगवान जा० यावत् वि० विचरते हैं पं० पांचवे स० शतक में बी० दूसरा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ५ ॥ २ ॥

सूत्र जाव अगणि जीव सरीराइ वत्तव्वंसिया ॥ ११ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे केव-इयं चक्कवाल विक्खंभेणं पण्णत्ते एवं नेयव्वं जाव लोगट्ठिई, लोयाणुभावे ॥ १२ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति भगवं जाव विहरइ ॥ पंचमसए बीईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ २ ॥

भावार्थ अहो गौतम ! पूर्व पर्याय आश्रित एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय का शरीर कहा है. फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणम ने से अग्नि जीव शरीर कहाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की परिधि कितनी कही ? अहो गौतम ! लवण समुद्र दो लाख योजन का लम्बा चौडा है और १५८११३९ योजन से कुच्छ अधिक की उसकी परिधि कही है वगैरह जीवाभिगम सूत्र से अनुभाव तक कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं ऐसा कहकर तप संयम से आत्मा को भावते हुए श्री गौतम स्वामी विचरने लगे. यह पांचवा शतकका दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ २ ॥

शब्दार्थ

खुर ण० जलाहुवा नख ए० ये पु० पहिले के भाव प० कहा हुवा प० आश्रित त० त्रस पा० प्राण जीव स० शरीर त० उस प० पीछे स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे जा० जावत् अ० अग्नि जीव व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १० ॥ अ० अथ भं० भगवन् इं० अंगार छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम इं० अंगार छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने पु० पूर्व भाव प० कहा हुवा ए० ये ए० एकेन्द्रिय जीव स० शरीर प० प्रयोग परिणमित जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय स० शरीर प० प्रयोग प० परिणमित त० उस प० पीछे स० शस्त्र अ० अतिक्रमे

सूत्र

खुरे नहे एएणं तसपाणजीवसरीरा । अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, सिंगखुर णहज्झामे एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च तस पाण जीव सरीरा तओ पच्छा सत्थाईया जाव अगणिजीवत्ति वत्तव्वं सिया ॥ १० ॥ अह भंते ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएणं किं सरीराइ वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएणं पुव्वभाव पण्णवणं एए एगिंदियजीवसरीरप्पयोग परिणामियावि जाव पंचिंदिय जीव सरीरप्पयोग परिणामियावि, तओ पच्छा सत्थाईया

भावार्थ

चर्म, रोम, शृंग, खुर व नख त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं और जली हुई अस्थी, चर्म, रोम वगैरह पूर्व भव आश्री त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं. फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने पर अग्नि जीव शरीर कहाते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अंगारे, राख, भूसा व गोबर को कौनसा शरीर कहा ?

पदार्थ गुण्य स० सहस्र आ० अनुक्रम से गं० गुंथा हुवा जा० यावत् चि० है ए० एक ही जी० जीव ए० एक स० समय में दो० दो आ० आयुष्य प० वेदते हैं तं० वह ज० यथा इ० इस भवका प० परभवका जं० जिस स० समय में इ० इस भवका प० वेदता है तं० उस स० समय में प० परभव का प० वेदता है

सूत्र तंजहा इह भवियाउयं च, परभवियाउयंच, जंसमयं इह भवियाउयं पडिसंवेदेइ तं समयं परभावियाउयं पडिसंवेदेइ, जाव से कहमेयं भंते! एवं? गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया तं चेव जाव परभवियाउयंच जे ते एव माहंसु तंमिच्छा. अहं पुण गोयमा! एवं माइक्खामि जाव अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स बहूहिं आजाइसहस्सेहिं, बहूहिं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगंठि-

भावार्थ हजारों आयुष्य अनुक्रम से गुन्थे हुवे, बांधे हुवे, यावत् परस्पर वीस्तीर्ण व भारवाले[1] रहते हैं. और इस से एक जीव एक समय में इस भव संबंधी व परभव संबंधी ऐसे दो आयुष्य वेदता है. जिस समय में इस भव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में वह जीव परभव संबंधी आयुष्य वेदता है. और जिस समय में परभव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में इस भव संबंधी आयुष्य वेदता है. अहो भगवन्! यह किस तरह है? अहो गौतम! अन्य तीर्थिक यावत् परभव संबंधी आयुष्य वेदते हैं वहांतक का

१ यहां कर्म पुद्गल की अपेक्षा से भारपना ग्रहण कियागया है.

शब्दार्थ

अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं प० प्ररूपते हैं से० अब ज० जैसे जा० जाल ग्रंथिका आ० अनुक्रम से गं० गुंथीहुई प० परंपरा से गं० गुंथीहुई अ० परस्पर गं० गुंथीहुई अ० परस्पर गु० विस्तार युक्त अ० परस्पर भा० वजनदार अ० परस्पर गु० विस्तीर्ण सं० वजनदार अ० परस्पर घ० रचीहुई चि० हैं ए० ऐसे ही व० बहुत जी०जीवों के व०बहुत आ०आजाति स०सहस्र व०बहुत आ० आ-

सूत्र

अण्णउत्थियाणं भंते ! एव माइक्खंति भासेंति पण्णवेंति, एवं परूवेंति, से जहा नामए जाल गंठियाइवा आणुपुव्विगंठिया अणंतरगंठिया, परंपरगंठिया, अण्णमण्णगंठिया, अण्णमण्ण गुरुयत्ताए, अण्णमण्णभारियत्ताए, अण्णमण्णगुरुसंभारियत्ताए, अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति एवामेव बहूणं जीवाणं बहूसु आजाइसहस्सेसु, बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्वि गंठियाइं जाव चिट्ठंति । एगे वियणं जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पडिसंवेदेइ-

भावार्थ

दूसरे उद्देशे में समुद्रादिक का सत्यज्ञान ज्ञानियोंने कहा, अब आगे मिथ्यात्वीयोंका असत्यज्ञान कहते हैं. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को गौतम स्वामी वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पुछने लगे कि अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जैसे मत्स्य पकडने की जाली अनुक्रम से गुंथी हुई, परंपरा (एक ग्रन्थी अनंतर दूसरी ग्रन्थी) से गुन्थी हुई, परस्पर गुन्थी हुई, परस्पर वीस्तीर्ण परस्पर वजनवाली और वीस्तीर्ण व वजनवाली होती हैं वैसे ही बहुत देवतादि जन्म में अनेक जीवों के

चि॰ हैं ए॰ ऐसे ही ए॰ एक ही जी॰ जीव का ब॰ बहुत आ॰ आजाति स॰ सहस्र ब॰ बहुत आ॰ आयुष्य स॰ सहस्र आ॰ अनुक्रम से गं॰ ग्रथित चि॰ है शेष पूर्ववत् ॥ १ ॥ जी॰ जीव भं॰ भगवन् भ॰ योग्य ने॰ नारकी में उ॰ उपजने को से॰ वह किं॰ क्या सा॰ आयुष्य सहित सं॰ जाता है. नि॰ आयुष्य रहित सं॰ जाता है. गो॰ गौतम सा॰ आयुष्य सहित सं॰ जाता है नो॰ नहीं नि॰ आयुष्य रहित सं॰जाता है. से॰उसने भं॰भगवन् आ॰आयुष्य क॰कहा क॰किया स॰ संचित किया गो॰ गौतम पु॰ पहिले भ॰ भव में क॰ किया पु॰ पहिले भव में सं॰ संचित किया ए॰ ऐसे जा॰

सूत्र

खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ, तं जहा इहभवियाउयंवा, परभवियाउयंवा ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते किं साउए संकमइ निराउए संकमइ ? गोयमा साउए संकमइ नो निराउए संकमइ ॥ सेणं भंते ! आउए कहिं कडे कहिं समाइण्णे ? गोयमा ! पुरिमे

भावार्थ

समय में इस भव के आयुष्य की वेदना नहीं होती है. इसलिये जीव एक समयमें इस भव का अथवा परभव का ऐसा एक ही आयुष्य वेदता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जो जीव यहां से नरक में जाता है वह यहांपर नरक के आयुष्य का बंध करके जाता है या विना बंध किये हुए जाता है ? अहो गौतम ! नारकी में उत्पन्न होनेवाला नेरया यहांपर नरक का आयुष्य बांधकर जाता है विना बांधे नहीं जा

शब्दार्थ जा० यावत् से० वह क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम ज० जो ते० वे अ० अन्यतीर्थिक तं० वैसे ही जा० यावत् प० परभव का आ० आयुष्य जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं तं० वह मि० मिथ्या अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् अ० परस्पर व० बनाने को

सूत्र याइं जाव चिट्ठंति ॥ एगे वियणं जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ तं जहा इह भवियाउयंवा, परभावियाउयंवा. जं समयं इह भवियाउयं पडिसंवेदेइ नो तंसमयं परभावियाउयं पडिसंवेदेइ, जं समयं परभावियाउयं पडिसंवेदेइ णो तं समयं इहभावियाउयं पडिसंवेदइ, इह भावियाउस्स पडिसंवेदणयाए णो परभवियाउयस्स पडिसंवेदणा, परभावियाउयस्स पडिसंवेदणयाए णो इहभावियाउयस्स पडिसंवेदणा एवं

भावार्थ जो कथन करते हैं वह सब मिथ्या है. परंतु मैं ऐसा कहता हूं कि ग्रन्थिजाल समान बहुत देवादिक जन्म में एक जीव के बहुत हजार आयुष्य अनुक्रम से गुन्थाये हुवे रहते हैं और एक जीव एक समय में इस भव संबंधी अथवा परभव संबंधी ऐसा एक ही आयुष्य वेद सकता है. अर्थात् जिस समय में इस भव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में परभव संबंधी आयुष्य नहीं वेदता है और जिस समय में परभव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में इस भव संबंधी आयुष्य नहीं वेदता है. क्योंकि इस भव के आयुष्य की वेदना होते परभव के आयुष्य की वेदना नहीं होती है, और परभव के आयुष्य की वेदना के

शब्दार्थ

प० करते स० सात प्रकार का प० करता है तं० वह ज० जैसे र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के ने० नारकी का आ० आयुष्य जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी के ने० नारकी का आ० आयुष्य ति० तिर्यंच जो० योनिका आ०आयुष्य प० करते पं० पांच प्रकार का प० करते हैं तं०वह ज०जैसे ए० एकेन्द्रिय ति० तिर्यंच योनिका आ० आयुष्य भे० भेद स० सब भा० कहना म० मनुष्य का आ० आयुष्य दु० दोप्रकार का दे० देवका आ० आयुष्य च० चार प्रकार का प० करते हैं. ५ ॥ ३ ॥

सूत्र

रयणप्पभापुढवी नेरइयाउयंवा जाव अहे सत्तमा पुढवी नेरइयाउयंवा, ॥ तिरिक्ख जोणियाउयं पकरेमाणे पंचविहं पकरेइ तंजहा एगिंदिय तिरिक्ख जोणियाउयंवा भेदो सव्वो भाणियव्वो । मणुस्साउयं दुविहं पकरेइ देवाउयं चउव्विहं पकरेइ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसए तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ ३ ॥ *

भावार्थ

सात प्रकार के आयुष्य का बंध करता है, रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी का आयुष्य यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी के नारकी का आयुष्य. तिर्यंच योनि के आयुष्य का बंध करनेवाला एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि ऐसे पांच प्रकारके आयुष्यका बंध करताहै. कर्मभूमि व अकर्मभूमि ऐसे दो प्रकार के आयुष्य का बंध मनुष्य करता है. और भुवनवाति, वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक ऐसे चार प्रकार के आयुष्य का बंध देवों करते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतकका तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ३ ॥

यावत् वे० वैमानिक का दं० दंडक ॥ २ ॥ से० अथ णू० शंकादर्शी भं० भगवन् जे० जो जं० जिस भ० योग्य जो० योनि उ० उत्पन्न होने को से० वह त० उस आ० आयुष्य प० करता है तं० वह ज० जैसे ने० नारकी का आ०आयुष्य जा० यावत् दे० देवताका आ० आयुष्य हं० हां गो० गौतम जे० जो जं० जिस भ० योग्य जो० योनि उ० उत्पन्न होने को से० वह त० उस आ० आयुष्य प० करता है तं० वह ज० जैसे ने० नारकी का आ० आयुष्य दे० देवता का आ० आयुष्य ना० नारकी का आ०आयुष्य

भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे । एवं जाव वेमाणियाणं दंडओ ॥२॥ से णूणं भंते! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ तंजहा नेरइयाउयंवा, जाव देवाउयंवा ? हंता गोयमा ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ, तंजहा नेरइयाउयंवा जाव देवाउयंवा । नेइयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ तंजहा

सकता है. अहो भगवन् ! उस जीवने ऐसा आयुष्य कहां उपार्जित किया ? अहो गौतम ! जीवने ऐसा आयुष्य पूर्वभव में उपार्जित किया. जैसे नारकीका कहा वैसे ही वैमानिक तक के चौविसही दंडक का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नरक यावत् देवयोनि में से जीव जिस योनि में उत्पन्न होने योग्य होता है उसी योनि के आयुष्य का बंध क्या वह करता है ? हां गौतम ! जिस योनि में उत्पन्न होने योग्य होता है उसी योनि के आयुष्य का बंध करता है. नारकी के आयुष्य का बंध करनेवाला

शब्दार्थ भं० भगवन् कि० क्या पु० स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं गो० गौतम पु० स्पर्शे हुए सु० सुनते हैं णो० नहीं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं जा० यावत् नि० निश्चय ही. छ० छदिशी सु० सुनते हैं त० तैसे भं० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य कि० क्या आ० इन्द्रिय विषयिक स० शब्द सु० सुनते हैं पा० इन्द्रिय विषय से दूर के स० शब्द सु० सुनते हैं गो० गौतम आ० इन्द्रिय

सूत्र

तंजहा-संखसद्दाणिवा जाव झूसिराणिवा ॥ ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ, अपुट्ठाइं सुणेइ ? गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, णो अपुट्ठाइं सुणेइ ; जाव नियमा छदिसिं सुणेइ ॥ तहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, पारगयाइं सद्दाइं

भावार्थ प्रमुख का सुषिर शब्द सुन सकते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य हस्त मुख दंडादि से संयोजित शंख के शब्द, यावत् सुषिर के शब्द सुन सकते हैं. अहो भगवन् ! कान को स्पर्शाये हुवे शब्दों सुने जाते हैं या विना स्पर्शाये हुए शब्दों सुने जाते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शाये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु नहीं स्पर्शाये हुए शब्दों नहीं सुन सकते हैं यावत् प्रथम शतक में जैसे आहार का अधिकार कहा वैसे ही यावत् छ दिशी के शब्दों सुन सकते हैं वहांतक कहना. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुए शब्दों सुन सकते हैं या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में नहीं आये हुए शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय के बाहिर

छ० छद्मस्थ भं० भगवन् म० मनुष्य आ० संयोग वाले सं०शब्द सु०सुनते हैं सं० शंख का शब्द सिं० शृंगका शब्द सं० छोटे शंख का शब्द ख० खरमुखी पो० बडे बांके प० पीपी का सं० शब्द प० छोटा ढोल प० बडा ढोल भं० बांकीया हो० होरंभक स० शब्द भे० भेरी झ० झालर दुं० दुंदुभीका स० शब्द त० तत वि० वितत घ० घन झू० झुसिर हं० हां गो० गौतम छ० छद्मस्थ म० मनुष्य आ० संबंध वाले स० शब्द सु० सुनते है तं० वह ज० जैसे सं० शंख शब्द जा० यावत् झू० झूषिर शब्द ता० उनको

छउमत्थेणं भंते ! मणूसे आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा संख सद्दाणिवा, सिंगसद्दाणिवा; संखिय खरमुहिय, पोया, परिपिरिया सद्दाणिवा पंणव, पडह, भंभा, होरंभ-सद्दाणिवा, भेरि- झल्लरि- दुंदभि-सद्दाणिवा, तयाणि वितयाणिवा, घणाणिवा, झूसिराणिवा ? हंता गोयमा ! छउमत्थेणं मणूसे आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइं

तीसरे उद्देशे में छद्मस्थ अन्यतीर्थीकी वक्तव्यता कही. चौथे उद्देशे में छद्मस्थ केवली की वक्तव्यता करते हैं. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या हस्त मुख दंडादि से संयोजित शंख का शब्द, शृंगका शब्द, छोटे शंख का शब्द, खरमुखी (बांके) का शब्द, बडे बांके का शब्द, पींपी का शब्द, छोटे पडह का शब्द, ढोल का शब्द, ढक्का का शब्द, होरंभ का शब्द, भेरी का शब्द, झालर का शब्द, दुंदुभी का शब्द, विणादि तत का शब्द, सतारादि वितत का शब्द, कांस्य तालादिक घन का शब्द, और वांसली

शब्दार्थ भं० भगवन् किं० क्या पु० स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं गो० गौतम पु० स्पर्शे हुए सु० सुनते हैं णो० नहीं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं जा० यावत् नि० निश्चय ही छ० छदिशी सु० सुनते हैं त० तैसे भं० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य किं० क्या आ० इन्द्रिय विषयिक स० शब्द सु० सुनते हैं पा० इन्द्रिय विषय से दूर के स० शब्द सु० सुनते हैं गो० गौतम आ० इन्द्रिय

सूत्र तंजहा-संखसद्दाणिवा जाव झूसिराणिवा ॥ ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ, अपुट्ठाइं सुणेइ ? गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, णो अपुट्ठाइं सुणेइ ; जाव नियमा छदिसिं सुणेइ ॥ तहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, पारगयाइं सद्दाइं

भावार्थ प्रमुख का सुषिर शब्द सुन सकते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य हस्त मुख दंडादि से संयोजित शंख के शब्द, यावत् सुषिर के शब्द सुन सकते हैं. अहो भगवन् ! कान को स्पर्शाये हुवे शब्दों सुने जाते हैं या विना स्पर्शाये हुए शब्दों सुने जाते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शाये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु नहीं स्पर्शाये हुए शब्दों नहीं सुन सकते हैं यावत् प्रथम शतक में जैसे आहार का आधिकार कहा वैसे ही यावत् छ दिशी के शब्दों सुन सकते हैं वहांतक कहना. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुए शब्दों सुन सकते हैं या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में नहीं आये हुए शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय के वाहिर

विषयिक स० शब्द सु० सुनते हैं णो० नहीं पा० इन्द्रिय विषय से दूरके स० शब्द सु० सुनते हैं ॥ १ ॥ ज० जैसे भं० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य त० तैसे के० केवली गो० गौतम आ० इन्द्रिय विषयिक पा० इन्द्रिय विषय से दूरके स० सब दू० दूर मू० पास अ० पासनहि ऐसे स० शब्द जा० जानते हैं पा० देखते हैं से० अथ के० कैसे तं० वैसे के० केवली आ० इन्द्रिय विषयिक पा० इन्द्रिय विषय से बाहिर के जा० यावत् पा० देखते हैं गो० गौतम के० केवली पु० पूर्व में मि० मर्यादा जा० जानते

सूत्र

सुणेइ ? गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, णो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ॥ १ ॥ जहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ णो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ तहाणं केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! केवलीणं आरगयंवा पारगयंवा सव्वदूरमूलमणंतियं सद्दं जाणइ पासइ, ॥ से केणट्ठेणं तंचेव केवलीणं आरगयंवा पारगयंवा जाव पासइ ? गोयमा ! केवली पुरच्छिमेणं

भावार्थ

के शब्दो नहीं सुन सकते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जब छद्मस्थ विषय के अंदर के शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय की बाहिर के शब्दों नहीं सुन सकते हैं तब क्या केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में रहे हुए शब्दों सुन सकते हैं या विषय से बाहिर के शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय के अंदर के व बाहिर के सर्वथा दूर के, पास के, व बीच के ऐसे सब शब्द जानते व देखते हैं.

शब्दार्थ

हैं अ० अमर्यादा जा० जानते हैं ऐ० ऐसे दा० दक्षिण में प० पश्चिम में उ० उत्तर में उ० ऊर्ध्व अ० नीचे मि० मर्यादित जा० जानते हैं अ० अमर्यादित जा० जानते हैं स० सब जा० जानते हैं के० केवली स० सब पा० देखते हैं के० केवली स० सर्वथा स० सब काल स० सब भाव अ० अनंत णा० ज्ञान के० केवली को अ० अनंत दं० दर्शन नि० प्रगट ज्ञा० ज्ञान ते० इसलिये जा० यावत् पा० देखते हैं ॥२॥

सूत्र

मियंपि जाणइ, अमियंपि जाणइ, एवं दाहिणेणं, पच्चच्छिमेणं, उत्तरेणं, उड्ढं, अहे मियंपि जाणइ, अमियंपि जाणइ, सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली, सव्वओ सव्वकालं, सव्वभावे, अणंते णाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स, निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स, सेतेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ २ ॥

भावार्थ

अहो भगवन् ! किस तरह केवली दूरके व नजीक, विषयवाले व विषय विनाके सब शब्दों जान व देखसकते हैं ? अहो गौतम ! केवली पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा में प्रमाण सहित गर्भज मनुष्य जीवादि वस्तु जानते हैं और प्रमाण रहित अनंत असंख्यात वनस्पति जीव तथा पृथ्वीजीवादि वस्तु जानते हैं. इस तरह केवली सब जानते हैं व देखते हैं, केवली अतीत, अनागतादि सब काल, उदय उपशमादि सब भाव व उत्पाद व्यय ध्रौव्यादि सब भाव को केवल ज्ञान से जानते हैं व केवल दर्शन से देखते हैं. क्योंकि केवल ज्ञानी को निरावरण शुद्ध निर्मल अनंत केवल ज्ञान व अनंत केवल दर्शन है. इसलिये केवली

शब्दार्थ

विषयिक स० शब्द सु० सुनते हैं णो० नहीं पा० इन्द्रिय विषय से दूरके स० शब्द सु० सुनते हैं ॥ १ ॥ ज० जैसे भं० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य त० तैसे के० केवली गो० गौतम आ० इन्द्रिय विषयिक पा० इन्द्रिय विषय से दूरके स० सब दू० दूर मू० पास अ० पासनहि ऐसे स० शब्द जा० जानते हैं पा० देखते हैं से० अथ के० कैसे तं० वैसे के० केवली आ० इन्द्रिय विषयिक पा० इन्द्रिय विषय से बाहिर के जा० यावत् पा० देखते हैं गो० गौतम के० केवली पु० पूर्व में मि० मर्यादा जा० जानते

सूत्र

सुणेइ ? गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, णो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ॥ १ ॥ जहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ णो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ तहाणं केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! केवलीणं आरगयंवा पारगयंवा सव्वदूरमूलमणंतियं सद्दं जाणइ पासइ, ॥ से केणट्ठेणं तंचेव केवलीणं आरगयंवा पारगयंवा जाव पासइ ? गोयमा ! केवली पुरच्छिमेणं

के शब्दों नहीं सुन सकते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जब छद्मस्थ विषय के अंदर के शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय की बाहिर के शब्दों नहीं सुन सकते हैं तब क्या केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में रहे हुए शब्दों सुन सकते हैं या विषय से बाहिर के शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय के अंदर के व बाहिर के सर्वथा दूर के, पास के, व बीच के ऐसे सब शब्द जानते व देखते हैं.

पदार्थ

ह० हसे उ० उत्सुक होवे ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ह० हसते हुवे उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों वं० बांधे गो० गौतम स० सात प्रकार का वं० बंध अ० आठ प्रकार का बं० बंध ॥ ४ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् ह० हसते हुए उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों बं०

सूत्र

हसेज्जवाउस्सुया एज्जवा ॥३॥ जीवेणं भंते ! हसमाणेवा उस्सुयमाणेवा कइकम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा. ॥ ४ ॥ णेरइएणं भंते ! हसमाणे उस्सुयमाणे कतिकम्म पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा. एवं जाव वेमाणिए ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! हसमाणावा, उस्सुयमाणावा कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगावा, अट्ठविह

भावार्थ

इसलिये केवली हसते नहीं हैं व उत्सुक नहीं होते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव हसताहुवा व उत्सुक होता हुवा कितने कर्म बांधे ? अहो गौतम ! जिन को आयुष्य कर्म का बंध नहीं होवे उस को सात कर्म प्रकृतियों और जिस को आयुष्य कर्म का बंध होवे उस को आठ कर्म प्रकृतियों का बंध होता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी इस तरह हसता हुवा व उत्सुक होता हुवा कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! सात कर्म प्रकृतियों का अथवा आठ कर्म प्रकृतियों का बंध करे. ऐसे ही वैमानिकतक के

शब्दार्थ छ० छद्मस्थ म० मनुष्य ह० हसे उ० उत्सुक होवे हं० हां ह० हसे उ० उत्सुक होवे ज० जैसे छ० छद्मस्थ म० मनुष्य त० तैसे के० केवली णो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य से० वह के० किसलिये गो० गौतम ज० जिसलिये जी० जीव च० चारित्र मो० मोहनीय क० कर्म के उ० उदय मे ह० हसते हैं उ० उत्सुक होते हैं से० वह के० केवली को न० नहीं है ते० इसलिये जा० यावत् नो० नहीं त० तैसे के० केवली

सूत्र छउमत्थेणं भंते! मणसे हसेज्जवा, उस्सुयाएज्जवा? हंता हसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा जहाणं भंते! छउमत्थे मणूसे हसेज्जवा उस्सुआएज्जवा, तहाणं केवलीवि हसेज्जवा, उस्सुयाएज्जवा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं, जाव नोणं तहा केवली हसेज्जवा उस्सुआएज्जवा? गोयमा! जण्णं जीवा चरित्तमोहणिज्जकम्मस्स उदएणं हसंतिवा उस्सुयायंतिवा, सेणं केवलिस्स नत्थि, से तेणट्ठेणं जाव नोणं तहा केवली

भावार्थ दूर के, नजीक के सब शब्दों जान व देख सकते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! छद्मस्थ मनुष्य क्या हसते हैं व उत्सुक होते हैं? हां गौतम! छद्मस्थ मनुष्य हसते हैं व उत्सुक होते हैं. अहो भगवन्! जैसे छद्मस्थ मनुष्य हसते हैं व उत्सुक होते हैं वैसे ही क्या केवली हसते हैं व उत्सुक होते हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन्! किस कारन से केवली नहीं हसते हैं यावत् उत्सुक नहीं होते हैं? अहो गौतम! चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से जीव हसते हैं व उत्सुक होवे हैं वह केवली को नहीं है

शब्दार्थ ह० हसे उ० उत्सुक होवे ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ह० हसते हुवे उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों बं० बांधे गो० गौतम स० सात प्रकार का बं० बंध अ० आठ प्रकार का बं० बंध ॥ ४ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् ह० हसते हुए उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों बं०

सूत्र हसेजवाउस्सुया एज्जवा ॥३॥ जीवेणं भंते ! हसमाणेवा उस्सुयमाणेवा कइकम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा. ॥ ४ ॥ णेरइएणं भंते ! हसमाणे उस्सुयमाणे कतिकम्म पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा. एवं जाव वेमाणिए ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! हसमाणावा, उस्सुयमाणावा कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगावा, अट्ठविह

भावार्थ इसलिये केवली हसते नहीं हैं व उत्सुक नहीं होते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव हसताहुवा व उत्सुक होता हुवा कितने कर्म बांधे ? अहो गौतम ! जिन को आयुष्य कर्म का बंध नहीं होवे उस को सात कर्म प्रकृतियों और जिस को आयुष्य कर्म का बंध होवे उस को आठ कर्म प्रकृतियों का बंध होता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी इस तरह हसता हुवा व उत्सुक होता हुवा कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! सात कर्म प्रकृतियों का अथवा आठ कर्म प्रकृतियों का बंध करे. ऐसे ही वैमानिकतक के

शब्दार्थ — बांधते हैं गो० गौतम स० सात प्रकार से आ० आठ प्रकार से बं० बांधते हैं ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ५ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ह० हसते हुवे पूर्ववत् ॥ ६ ॥ छ० छद्मस्थ भं० भगवन् नि०

सूत्र — वंधगावा, ॥ णेरइयाणं भंते ! हसमाणा उस्सुयमाणा कतिकम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज सत्तविह बंधगा, अहवा सत्तविह बंधगावि, अट्ठविह बंधगावि, अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय, एवं पोहत्तिएहिं, जीवेगिंदिय वज्जो तियभंगो, ॥ ६ ॥ छउमत्थेणं भंते ! मणूसे निद्दाएज्जवा, पयलाएज्जवा ? हंता

भावार्थ — चौविस दंडक का जानना ॥ ५ ॥ अब बहुत जीव आश्रित पृच्छा करते हैं. अहो भगवन् ! बहुत जीव हसते व उत्सुक होते कितनी प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! आयुष्य रहित सात का बंध करे व आयुष्य सहित आठ का बंध करे. अहो भगवन् ! बहुत नारकी हसते उत्सुक होते कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! सब जीव आयुष्य विना सात का भी बंध करते हैं और आयुष्य सहित आठ का बंध करते हैं. वैसे ही यहां कहना १ सब सात का बंध करनेवाले होते हैं २ सात का बंध करनेवाले अथवा आठ का बंध करनेवाले ३ सात और आठ का बंध करनेवाले. ऐसे तीन भांगे एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर शेष १९ दंडक में पाते हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ जीव सुख से शयन

शब्दार्थ निद्रालेवे प० प्रचलालेवे हं० हां नि० निद्रालेवे प० प्रचलालेवे ज० जैसे ह० हसे त० तैसे ण० विशेष द० दर्शनावरणीय क० कर्म का उ० उदय से नि०निद्रालेवे प० प्रचलालेवे से० वह के० केवली को म०नहीं है अ० अनंत ॥ ७ ॥ जी० जीव भं० भगवन् नि० निद्रालेते प० प्रचलालेते क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों बं० बांधता है गो० गौतम स० सात प्रकार का अ० आठ प्रकार का बं० बंध ऐ० ऐसे जा० यावत् वे०

सूत्र निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा, जहा हसेज्जा तहा. णवरं दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, निद्दायइवा, पयलाइवा ॥ सेणं केवलिस्स नत्थि अणंतं चेव ॥ ७ ॥ जीवेणं भंते ! निद्दायमाणेवा पयलायमाणेवा कतिकम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा अट्ठविहबंधएवा, एवं जाव वेमाणिए ॥ पोहत्तिएसु जीवेगिंदि-

भावार्थ किया जावे वैसी निद्रा या चलते, बैठते जो निद्रा आवे वैसी निद्रा क्या लेते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ उक्त प्रकार की निद्रा लेते हैं वगैरह सब वर्णन छद्मस्थ जीव को हसने का आलापक कहा वैसे ही जानना परंतु यहां पर दर्शनावरणीय कर्म के उदयसे निद्रा आती है वह कर्म केवली को नहीं होने से केवली निद्रा नहीं लेते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीव निद्रा, व प्रचला करते कितनी प्रकृतियों का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! जीव निद्रा व प्रचला करते सात अथवा आठ कर्म प्रकृतियों का बंध करता है. ऐसे ही चौविसही

शब्दार्थ वैमानिक में पो० बहुत जी० जीव ए० एकेन्द्रियवर्जित ति० तीन भं० भांगे ॥ ८ ॥ ह० इन्द्रका भं० भगवन् ह० हरिणगमेषी स० शक्र का दू० दूत इ० स्त्री का ग० गर्भ सा० साहरते हुवे किं० क्या ग० गर्भ से ग० गर्भ में सा० लेजाता है ग० गर्भ से जो० योनिमें सा० लेजाता है जो० योनिसे ग० गर्भ में सा० लेजाता है जो० योनिसे जो० योनि में सा० लेजाता है गो० गौतम नो० नहीं ग० गर्भ से ग०

मूल यव्वजो तिय भंगो ॥ ८ ॥ हरीणं भंते ! हरिणेगमेसी सक्कदूए इत्थीगब्भं साहरमाणे किं गब्भाओ गब्भं साहरइ, गब्भाओ जोणिं साहरइ, जोणीओ गब्भं साहरइ, जोणीओ जोणिं साहरइ ? गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भं साहरइ, नो गब्भाओ जोणिं

भावार्थ दंडक का जानना. बहुत जीव आश्रित एकेन्द्रिय छोडकर शेष के तीन भांगे जानना ॥ ८ ॥ अवस्थापिनी निद्रा में गर्भ का साहरण होता है, इसलिये गर्भ साहरण का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्रका दूत [पादात्यानिकका अधिपति] हरिणगमेषी स्त्रीगर्भका साहरण करते क्या जीव सहित पुद्गल पिंड रूपी गर्भ को १ एक गर्भाशय से दूसरे गर्भ में रखता है ? २ गर्भाशय से योनि में रखता है ? ३ योनि से लेकर गर्भ में रखता है ? अथवा ४ योनि से लेकर योनि में रखता है ? अहो गौतम ! शक्र देवेन्द्र का दूत हरिणगमेषी गर्भ को १ गर्भाशय से नीकालकर गर्भाशय में नहीं रखता है, २ गर्भाशय से लेकर योनिद्वार में नहीं रखता है, और ३ योनि से लेकर योनि में नहीं रखता है परंतु ४ योनि से नीका-

शब्दार्थ गर्भ में सा० लेजाता है नो० नहीं ग० गर्भ से जो० योनि में सा० लेजाता है नो० नहीं जो० योनि से जो०योनि में सा०लेजाता है प० स्पर्श कर अ०सुख पूर्वक जो०योनि से ग०गर्भ में सा०लेजाता है ॥२॥ प० समर्थ भं० भगवन् ह० हरिणगमेषी स० शक्र का दू० दूत इ० स्त्री का ग० गर्भ न० नखाग्र से रो० रोमकूप से सा० रखने को नी० नीकालने को हं० हां प० समर्थ नो० नहीं त० उसको ग० गर्भ की किं० कुच्छ भी आ० आबाधा वि० दुःख उ० उत्पात छ० चर्मछेद पु० पुनः क० करे ए० यह सु० सूक्ष्म

सूत्र साहरइ, नो जोणीओ जोणिं साहरइ, परामुसिय २ अव्वाबाहेणं अव्वाबाहं जोणीओ गब्भं साहरइ ॥ ९ ॥ पभूणं भंते ! हरिणेगमेसी सक्कस्सणं दूए इत्थीए गब्भं नहसिरंसिवा रोमकुवंसिवा, साहरित्तएवा, नीहरित्तएवा ? हंता पभू । णो चेवणं तस्स गब्भस्स किंचि आबाहंवा, विबाहंवा, उप्पाएज्ज, छविच्छेदं पुण करेज्जा, ए सु-

भावार्थ लेकर गर्भाशय में रखता है. और गर्भ साहरण करते गर्भ को किसी प्रकार की बाधा पीडा नहीं होती है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र का दूत हरिणगमेषी नखाग्र से या रोम कूप से स्त्री का गर्भ रखने को अथवा बाहिर नीकालने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! वह हरिणगमेषी देवता गर्भ को नखाग्र से रखने को व नीकालने को समर्थ है ताहंपि उस गर्भ को किसी प्रकारकी बाधा, पीडा उत्पात व चर्म का छेद नहीं होता है. गर्भ साहरण करने का इतना सूक्ष्मपना रहा हुवा है. देव शक्ति से गर्भ नीकालते व रखते

शब्दार्थ सा० रखना नी० नीकालना ॥ १० ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का अं० शिष्य अ० अतिमुक्तक ना० नाम के कु० छोटे स० साधु प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत त० तब से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण अ० एकदा म० बहुत वृ० वृष्टि में नि० पडती हुई क० कक्षा में प० पात्र र० रजोहरण आ० लेकर ब० बाहिर सं० नीकला वि० स्थंडिलकेलिये त० तब से० उस उ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमणने वा० प्रवाह को प० वहता हुवा

सूत्र हुमं च णं साहरिज्जवा, नीहरिज्जवा, ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्तेनामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए तएणं से अइमुत्ते णामं कुमारसमणे अण्णयाकयाइं महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गहरयहरण मायाए बहिया संपट्ठिए विहाराए तएणंसे अइमुत्ते कुमार समणे वाहयं वहयमाणं पासइ २ त्ता, मट्टियपालिं बंधइ २ णावियामे २ नाविओवि

भावार्थ जाना नहीं जाता है ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के भद्रिक यावत् विनीत प्रकृतिवान् अतिमुक्त (अइमंते) कुमार श्रमण एकदा महावृष्टि हुए पीछे रजोहरण व पात्र लेकर

१ आठ वर्ष पहिले दीक्षा ग्रहण नहीं करते हैं, परंतु अतिमुक्त कुमारने छ वर्ष में ही दीक्षा ग्रहण की थी जिससे कुमार श्रमण नाम रखा था.

शब्दार्थ पा० देखकर मृ० मृत्तिका की पा० पाल बं० बांधकर ना० नाव मे० मेरी ना० नाविक समान णा० नावा को अ० यह प० पात्र उ० पानी में प० वहाते हुवे अ० क्रीडा करते हैं तं० उसे थे० स्थविरोंने अ०देखा जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० वहां उ० आये ऐ० ऐसा व० बोले ए० ऐसे ख० निश्चय दे० देवानुप्रिय का अं० शिष्य अ० अतिमुक्त णा० नामके कु० कुमार श्रमण से० वह भं० भगवन् क०कितने भ० भवग्रहण में सि० सिझेंगे बु० बुझेंगे जा० यावत् अं० अंतकरेंगे अ० आर्य स० श्रमण भं० भगवन् म० महावीर ते० उन थे० स्थविर को ए० ऐसे व० बोले ए० ऐसे अ० आर्य म०मेरा अं०शिष्य

सूत्र वणावमयं पडिग्गहयं उदगंसि पवाहमाणे अभिरमइ तंच थेरा अदक्खु जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी, अइमुत्तेनामं कुमारसमणे । सेणं भंते ! अइमुत्ते कुमारसमणे कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति? अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी. अइमुत्तेणामं कुमारसमणे पगइभदए जाव विणीए,

भावार्थ वाहिर भूमिका को गये. वहांपर उन अतिमुक्त कुमार श्रमणने पानी का प्रवाह वहता हुवा देखकर मृत्तिका से पाल बांधकर पानी को रोका. इस तरह पानी को रोककर 'यह मेरी नाव है यह मेरी नाव है.' ऐसा संकल्प किया. जैसे नाविक नाव को चालता है वैसे ही अतिमुक्त कुमार श्रमण नाव रूप पात्र को

शब्दार्थ

सा० रखना नी० नीकालना ॥ १० ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का अं० शिष्य अ० अतिमुक्तक ना० नाम के कु० छोटे स० साधु प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत त० तब से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण अ० एकदा म० बहुत वृ० वृष्टि में नि० पडती हुई क० कक्षा में प० पात्र र० रजोहरण आ० लेकर ब० बाहिर सं० नीकला वि० स्थंडिलकेलिये त० तब से० उस उ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमणने वा० प्रवाह को प० वहता हुआ

सूत्र

हुमं च णं साहरिज्जवा, नीहरिज्जवा, ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्तेनामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए तएणं से अइमुत्ते णामं कुमारसमणे अण्णयाकयाइं महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गहरयहरण मायाए बहिया संपाट्ठिए विहाराए तएणंसे अइमुत्ते कुमार समणे वाहयं वहयमाणं पासइ २ त्ता, मट्टियपालिं बंधइ २ णावियामे २ नाविओवि

भावार्थ

जाना नहीं जाता है ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के भद्रिक यावत् विनीत प्रकृतिवान् अतिमुक्त (अइमंते) कुमार श्रमण एकदा महावृष्टि हुए पीछे रजोहरण व पात्र लेकर

१ आठ वर्ष पहिले दीक्षा ग्रहण नहीं करते हैं, परंतु अतिमुक्त कुमारने छ वर्ष में ही दीक्षा ग्रहण की थी जिससे कुमार श्रमण नाम रखा था.

शब्दार्थ

श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा वु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना करते हैं अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानिरहित सं० अंगीकार करते हैं जा० यावत् वे० वैयावृत्य क० करते हैं ॥ ११ ॥ ते० उस का०काल ते० उस स० समय में म० महाशुक्र क० देवलोक से म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सूत्र

सारीरिए चेव, ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तासमाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावडियं करंति ॥ ११ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ

भावार्थ

अंत करेंगे. इसलिये अहो आर्यों ! तुम उन की हीलना, निंदा, खिसना, गर्हा व तिरस्कार मत करो परंतु अग्लानपने उन को अंगीकार करो, उपष्टंभ करो और भक्त, पान व विनय से उन की वैयावृत्य करो. क्योंकि अतिमुक्त कुमारश्रमण अंत करनेवाले चरिम शरीरी हैं. जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब वे स्थविर भगवंत श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर अतिमुक्त कुमार श्रमण को अग्लानपने अंगीकार करनेलगे यावत् भक्त पान व विनय से उन की वैय्यावृत्य करनेलगे ॥ ११ ॥ उस काल उस समयमें महाशुक्र देवलोकमेंसे महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले दो देव श्रीश्रमण भगवंत महावीर

शब्दार्थ अ० अतिमुक्त कु० कुमारश्रमण प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण ए० इस भ० भव में सि० सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे ते० इसलिये मा० मत तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण की ही० हीलना करो नि० निंदाकरो खिं० खिसना करो ग० गर्हाकरो अ० तिरस्कार करो तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानि रहित सं० अंगीकार करो उ० ग्रहण करो भ० भक्त पा० पान वि० विनय से वे० वैय्यावृत्य क० करो अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण अं० अंत करने वाले अं० अंतिम शरीरी त० तब थे० स्थविर भ० भगवंत स०

सूत्र सेणं अइमुत्ते कुमारसमणे एमेणंचेव भवग्गहणेणं, सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ ॥ तं मा णं अज्जा ! तुब्भे अइमुत्तं कुमारसमणं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह अवमण्णह, तुब्भेणं देवाणुप्पिया अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह अगिलाए भंत्तेणं, पाणेणं विणएणं, वेयावडियं करेह, अइमुत्तेणं कुमारसमणे अंतकरे चेव, अंतिम-

पानी में बहता हुवा रखकर खेलने लगे. इस तरह करते हुवे अतिमुक्त कुमार को स्थविरने देखे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आकर ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! आपका अतिमुक्त नामक शिष्य कितने भव में सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बोले कि अहो आर्यों मेरा शिष्य अतिमुक्त नामक कुमार-साधु इसी भव में सिझेंगे यावत् सब दुःखों का

शब्दार्थ

श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा वु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना करते हैं अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानिरहित सं० अंगीकार करते हैं जा० यावत् वे० वैयावृत्य क० करते हैं ॥ ११ ॥ ते० उस का०काल ते० उस स० समय में म० महाशुक्र क० देवलोक से म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सूत्र

सारीरिए चेव, ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तासमाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावाडियं करंति ॥ ११ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ

भावार्थ

अंत करेंगे. इसलिये अहो आर्यों ! तुम उन की हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा व तिरस्कार मत करो परंतु अग्लानपने उन को अंगीकार करो, उपष्टंभ करो और भक्त, पान व विनय से उन की वैयावृत्य करो. क्योंकि अतिमुक्त कुमारश्रमण अंत करनेवाले चरिम शरीरी हैं. जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब वे स्थविर भगवंत श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर अतिमुक्त कुमार श्रमण को अग्लानपने अंगीकार करनेलगे यावत् भक्त पान व विनय से उन की वैयावृत्य करनेलगे ॥ ११ ॥ उस काल उस समयमें महाशुक्र देवलोकमेंसे महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले दो देव श्रीश्रमण भगवंत महावीर

शब्दार्थ — अ० अतिमुक्त कु० कुमारश्रमण प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण ए० इस भ० भव में सि० सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे ते० इसलिये मा० मत तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण की ही० हीलना करो निं० निंदाकरो खिं० खिंसना करो ग० गर्हाकरो अ० तिरस्कार करो तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानि रहित सं० अंगीकार करो उ० ग्रहण करो भ० भक्त पा० पान वि० विनय से वे० वैय्यावृत्य क० करो अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण अं० अंत करने वाले अं० अंतिम शरीरी त० तब थे० स्थविर भ० भगवंत म०

सूत्र — सेणं अइमुत्ते कुमारसमणे एमेणंचेव भवग्गहणेणं, सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ ॥ तं मा णं अज्जो ! तुब्भे अइमुत्तं कुमारसमणं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह अवमण्णह, तुब्भेणं देवाणुप्पिया अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह अगिलाए भंत्तेणं, पाणेणं विणएणं, वेयावडियं करेह, अइमुत्तेणं कुमारसमणे अंतकरे चेव, अंतिम-

भावार्थ — पानी में वहता हुवा रखकर खेलने लगे. इस तरह करते हुवे अतिमुक्त कुमार को स्थविरने देखे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आकर ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! आपका अतिमुक्त नामक शिष्य कितने भव में सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बोले कि अहो आर्यों मेरा शिष्य अतिमुक्त नामक कुमार साधु इसी भव में सिझेंगे यावत् सब दुःखों का

शब्दार्थ श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा वु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना करते हैं अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानिरहित सं० अंगीकार करते हैं जा० यावत् वे० वैयावृत्य क० करते हैं ॥ ११ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में म० महाशुक्र क० देवलोक से म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सूत्र सारीरिए चेव, ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तासमाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावडियं करंति ॥ ११ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ

भावार्थ अंत करेंगे. इसलिये अहो आर्यों ! तुम उन की हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा व तिरस्कार मत करो परंतु अग्लानपने उन को अंगीकार करो, उपष्टंभ करो और भक्त, पान व विनय से उन की वैयावृत्य करो. क्योंकि अतिमुक्त कुमारश्रमण अंत करनेवाले चरिम शरीरी हैं. जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब वे स्थविर भगवंत श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर अतिमुक्त कुमार श्रमण को अग्लानपने अंगीकार करनेलगे यावत् भक्त पान व विनय से उन की वैय्यावृत्य करनेलगे ॥ ११ ॥ उस काल उस समयमें महाशुक्र देवलोकमेंसे महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले दो देव श्रीश्रमण भगवंत महावीर

शब्दार्थ महानुभाग वाले स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० समीप पा० आये त० तव ते० वे दे० देव स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को म० मन से वं० वंदना करते हैं न० नमस्कार करते हैं न०नमस्कार करके इ० यह ए० ऐसा वा० प्रश्न पु० पुछते हैं क० कितने दे०देवानुप्रिय के अं० शिष्य स० सो सि०सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत क० करेंगे त०तव स०श्रमण भ०भगवन्त म० महावीर ते० उन दे० देवों से म० मन से पु० पुछाये हुवे ते० उन दे० देवोंको म० मनसे ही इ० यह ए० ऐसा म० मेरे स० सात अं० शिष्य स० सो० सि० सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे त० तव ते० वे दे० देवों स० श्रमण

सूत्र महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया ॥ तएणं ते देवा समणं भगवं महावीरं मणसाचेव वंदंति नमंसंति नमंसंतित्ता, मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं पुच्छंति-कइणं देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं, सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति ? ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे, तेसिं देवाणं मणसाचेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ - एवं खलु देवाणुप्पिया ममं सत्त अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति

भावार्थ स्वामीकी पास आयें और उनोंने श्रमण भगवंत महावीर स्वामीको मन से ही वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो देवानुप्रिय ! आप के कितने सो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे? उन मन से पूछे हुवे प्रश्नोंका महावीर स्वामीने मन से ही उत्तर दिया कि मेरे सात सो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे

सूत्र

च्छेदं करेंति? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुचइ लोगस्सणं एगम्मि आगासप्पदेसे जे एगिंदियप्पदेसा जाव चिट्ठंति णत्थिणं अण्णमण्णस्स किंचि आबाहं वा जाव करेंति? गोयमा! से जहा णामए नट्टिया सिया, सिंगारागार चारुवेसा जाव कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइ विहस्स नट्टस्स अण्णयरं नट्टविहिं उवदंसिज्जा, सेणूणं गोयमा! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएन्ति? हंता भंते! समभिलोए ॥ ताओणं गोयमा! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता सण्णिपडियाओ हंता सण्णिपडियाओ

भावार्थ

भगवन्! किस कारन से उन जीव प्रदेशों को बाधा, विबाधा व विच्छेद नहीं होता है? अहो गौतम! नृत्य करनेवाली शृंगार का गृह रूप मनोहर रूप धारन करनेवाली यावत् राग के स्थानों के भाव भेद जाननेवाली होवे. वह लाखों मनुष्यों के समूह में बत्तीस प्रकार के नाटकों में से किसी प्रकार का नाटक कर लोकों को बतलावे तो क्या गौतम! वे देखनेवाले हजारों लाखों मनुष्यों उस नृत्य करनेवाली की तरफ मेषोन्मेष क्या देखते हैं.? गौतम स्वामी बोले कि हां देखते हैं. अहो गौतम! सब मनुष्यों की दृष्टि से उस को क्या किसी प्रकार की बाधा विबाधा होती है? अहो भगवन्! वैसे बाधा

अत्थिणं गोयमा! ताओ दिट्टिओ तीसे नट्टीयाए किंचि आवाहंवा, वावाहंवा उप्पायेंति छविच्छेदंवा करेंति? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अहवा सा नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पाएइ छविच्छेदंवा करेति? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अहवा ताओ दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पाएइ छविच्छेदंवा करेति? णोइ-णट्ठे समट्ठे ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ तंचेव जाव छविच्छेदंवा करेइ २१ ॥ लोगस्सणं भंते! एगम्मि आगासप्पदेसे जहण्णप्पए जीवप्पदेसाणं उक्कोसपदे जीवप्पए-साणं सव्व जीवाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासप्पदेसे जहण्णपदे जीवप्पदेसा सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपदे

भावार्थ

विबाधा नहीं होती है. अहो गौतम! जैसे उस नृत्य करनेवाली की तरफ चारों तरफ मनुष्य देखते हुवे किन्चिन्मात्र बाधा विबाधा नहीं होती है वैसे ही लोक के एक आकाश प्रदेश पर एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय अनेन्द्रिय के प्रदेशों होने पर उन को किंचिन्मात्र बाधा विबाधा नहीं होती है ॥ २१ ॥ अहो भगवन्! एक आकाश प्रदेश में जघन्य जीव प्रदेश, उत्कृष्ट जीव प्रदेश व सर्व प्रदेश में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे लोक के एक आकाश प्रदेश में जघन्य पद से जीव

च्छेदं करेंति? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुचइ लोगस्सणं एगम्मि आगासप्पदेसे जे एगिंदियप्पदेसा जाव चिट्ठंति णात्थिणं अण्णमण्णस्स किंचि आबाहं वा जाव करेंति? गोयमा ! से जहा णामए नट्टिया सिया, सिंगारागार चारुवेसा जाव कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइ विहस्स नट्टस्स अण्णयरं नट्टविहिं उवदंसिज्जा, सेणूणं गोयमा ! ते पेच्छागा तं नट्टियं अणिमि-साए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति? हंता भंते! समभिलोए ॥ ताओणं गोयमा! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता सण्णिपडियाओ हंता सण्णिपडियाओ

भावार्थ

भगवन् ! किस कारन से उन जीव प्रदेशों को बाधा, विबाधा व विच्छेद नहीं होता है ? अहो गौतम ! नृत्य करनेवाली शृंगार का गृह रूप मनोहर रूप धारन करनेवाली यावत् राग के स्थानों के भाव भेद जाननेवाली होवे. वह लाखों मनुष्यों के समूह में बत्तीस प्रकार के नाटकों में से किसी प्रकार का नाटक कर लोकों को बतलावे तो क्या गौतम ! वे देखनेवाले हजारों लाखों मनुष्यों उस नृत्य करने-वाली की तरफ मेषोन्मेष क्या देखते हैं. ? गौतम स्वामी बोले कि हां देखते हैं. अहो गौतम ! सब मनु-ष्यों की दृष्टि से उस को क्या किसी प्रकार की बाधा विबाधा होती है ? अहो भगवन् ! वैसे बाधा

प० पर्युपासना करे ॥ १ ॥ त० तब से० वह सु० सुदर्शन से० श्रेष्ठी इ० इस क० कथा को ल० प्राप्त होते ण्हा० स्नान किया क० किया जा० यावत् पा० तिलमसादि किये स० सर्व अ० अलंकार वि० विभूपित सा०अपना गि० गृह से.प० नीकलकर स० कोरंटक की मं० पुष्पमाला छ०छत्र ध० धरते पा० पादविहार से म० बडे पु० पुरुष व० चाकरसे प० घेराये हुवे वा० वाणिज्यग्राम ण० नगर की म० मध्य से णि० नीकलकर जे० जहां दू० दूतिपलास चे० चैत्य स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ०

सूत्र

सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ॥ १ ॥ तएणं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ तुट्ठे ण्हाए कय जाव पायच्छित्ते सव्वालंकार विभूसिए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सकोरंटमल्ल दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पाद विहार चारेणं महया पुरिसवग्गुरा परिक्खित्ते वाणियगामं णयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २

भावार्थ

यावत् अपराभूत श्रमणोपासक था. जीवाजीवादि नव तत्त्व को जानता हुवा यावत् विचरता था. उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदने को आई ॥ १ ॥ उस काल उस समय में सुदर्शन शेठ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी दूतिपलाश उद्यान में पधारे हैं ऐसी कथा सुनकर बहुत हर्षित हुवे फीर स्नान किया यावत् तीलमसादिक करके सर्वालंकार से विभूपित बने. फीर स्वतः के गृह से नीकलकर कोरंटक वृक्ष के पुष्पों की मालावाला छत्र धारण कर पाद विहार से (पग से चलते हुवे)

शब्दार्थ: ते० उस काल तं० उस समय में वा० वाणिज्यग्राम न० नगर हो० था व० वर्णन युक्त दू० दूति पलास चे० चैत्य व० वर्णन जा० यावत् पु० पृथ्वी शिलापट्टक त० तहां वा० वाणिज्यग्राम न० नगर में सु० सुदर्शन से० श्रेष्ठी प० रहता है अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत स० श्रमणोपासक अ० जाने जी० जीव अजीव जा० यावत् वि० विचरता है सा० स्वामी स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा

सूत्र: जीवप्पदेसा विसेसाहिया ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगारस सयस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ १० ॥ * * *

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे णामं णयरे होत्था, वण्णओ दूइ पलासे चेइए वण्णओ, जाव पुढवी सिलापट्टए तत्थणं वाणियगामे णयरे सुदंसणे णामं सेट्ठी परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए समणोवासए अभिगय जीवाजीवे जाव विहरइ,

भावार्थ: प्रदेश हैं इस से सब जीव असंख्यातगुने इस से उत्कृष्ट पद से जीव प्रदेश विशेषाधिक हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह अग्यारवा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ ११ ॥ १० ॥

दशवे उद्देशे में लोक का स्वरूप कहा अब लोक द्रव्य वर्ती काल का स्वरूप कहते हैं. उस काल उस समय में वाणिज्य नामक नगर बहुत वर्णन योग्य था. उस की ईशान कोन में दूतिपलाश नामक उद्यान था यावत् पृथ्वी शिला पट्ट था. उस वाणिज्य नगर में सुदर्शन नाम का श्रेष्ठि रहता था. वह ऋद्धिवंत

अर्थ

हृष्ट तु० तुष्ट उ० स्थान से उ० उठकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीनवक्त जा० यावत् ण० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार का भं० भगवन् का० काल प० प्ररूपा सु० सुदर्शन च० चार प्रकार का प० प्ररूपा प० प्रमाण काल आ० आयुर्निवर्तिक काल म० मरण काल

सूत्र

उट्ठाए २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एवं वयासी कइविहेणं भंते! काले पण्णत्ते सुदंसणा ! चउव्विहे काले प० तं० पमाण काले, अहाउणिव्वत्ति काले, मरण काले, अद्धाकाले ॥ ४॥ से किंतं पमाण काले २ दुविहे पण्णत्ते तंजहा दिवसप्पमाण कालेय, रत्तिप्पमाणकालेय, चउपोरिसीए दिवसे चउपोरिसीए राई भवइ॥ उक्कोसिया अद्ध पंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईएवा पोरिसी भवइ ॥ जयाणं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचम

भावार्थ

सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को तीन आदान व नमस्कार करके ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! काल के कितने भेद कहे हैं ? अहो सुदर्शन ! काल के चार भेद कहे हैं १ प्रमाण काल २ यथायुःकाल ३ मरण काल और ४ अद्धा समय काल ॥४॥ अहो भगवन् ! प्रमाण काल किसे कहते हैं ? अहो सुदर्शन ! प्रमाण काल के दो भेद कहे हैं ? दिन का प्रमाण काल व रात्रि का प्रमाण काल. दिन का प्रमाण काल चार पौरुषी का होता है और रात्रि का प्रमाण काल भी

शब्दार्थ आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को पं० पांच प्रकार का अ० अभिगम से अ० जावे तं० वह ज० जैसे स० सचित्त द० द्रव्य ज० जैसे उ० ऋषभदत्त जा० यावत् तिं० तीन प्रकार की प० पर्युपासना से प० पूजे ॥२॥ त० तब से० वह स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर सु०सुदर्शन से० श्रेष्टीकी तीं० उस म० बडी जा० यावत् आ० आराधिक भ० होवे ॥ ३ ॥ त० तब से० वह सु० सुदर्शन से० श्रेष्टी स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर णि० अवधारकर ह०

सूत्र त्ता जेणेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ तंजहा सचित्ताणं दव्वाणं जहा उसभदत्तो जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥ २ ॥ तएणं से समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसेय महइ जाव आराहए भवइ ॥ ३ ॥ तएणं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ

भावार्थ बहुत पुरुषों की साथ वाणिज्य नगर की बीच में होकर दूतिपलाश उद्यान में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास जाते सचित्त द्रव्यों का त्याग करना ऐसे पांच अभिगम से श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास गये और मन वचन व काया के योग से पर्युपासना की ॥ २ ॥ फीर श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने उस महती परिषदा में सुदर्शन शेठ को धर्मकथा सुनाइ ॥ ३ ॥ सुदर्शन शेठ भी महावीर स्वामी से धर्म

अर्थ

हृष्ट तु० तुष्ट उ० स्थान से उ० उठकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीनवक्त जा० यावत् ण० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार का भं० भगवन् का० काल प० प्ररूपा सु० सुदर्शन च० चार प्रकार का प० प्ररूपा प० प्रमाण काल आ० आयुर्निर्वर्तिक काल म० मरण काल

सूत्र

उट्ठाए २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एवं वयासी कइविहेणं भंते! काले पण्णत्ते सुदंसणा ! चउव्विहे काले प० तं० पमाण काले, अहाउणिव्वत्ति काले, मरण काले, अद्धाकाले ॥ ४॥ से किंतं पमाण काले २ दुविहे पण्णत्ते तंजहा दिवसप्पमाण कालेय, रत्तिप्पमाणकालेय, चउपोरिसीए दिवसे चउपोरिसीए राई भवइ॥ उक्कोसिया अद्ध पंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईएवा पोरिसी भवइ ॥ जयाणं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचम

भावार्थ

सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवा और श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को तीन आदान व नमस्कार करके ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! काल के कितने भेद कहे हैं ? अहो सुदर्शन ! काल के चार भेद कहे हैं १ प्रमाण काल २ यथायुःकाल ३ मरण काल और ४ अद्धा समय काल ॥४॥ अहो भगवन् ! प्रमाण काल किसे कहते हैं ? अहो सुदर्शन ! प्रमाण काल के दो भेद कहे हैं ? दिन का प्रमाण काल व रात्रि का प्रमाण काल. दिन का प्रमाण काल चार पौरुषी का होता है और रात्रि का प्रमाण काल भी

सूत्र

मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ तयाणं कइ भाग मुहुत्त भागेणं परिहाय-माणी २ जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स राईएवा पोरिसी भवइ ॥ जयाणं जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ तदाणं कइ भाग मुहुत्त भागेणं परिवड्ढमाणी २ उक्कोसिया अद्धपंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ? सुदंसणा! जदाणं उक्कोसिया अद्धपंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ, तदाणं बावीससय भाग मुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स-वा राईएवा पोरिसी भवइ, जयाणं जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ तदाणं बावीससय भागमुहुत्त भागेणं परिवड्ढमाणी २

भावार्थ

चार पौरुषी का होता है. जघन्य तीन मुहूर्त व उत्कृष्ट साढे चार मुहूर्त की एक पौरुषी होती है. अहो भगवन् ! जब साढे चार मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुषी होती है तब कितने भाग कमी करते जघन्य तीन मुहूर्त की पौरुषी होवे और जब जघन्य तीन मुहूर्त की दिन की व रात्रि की पौरुषी होती है तब कितने भाग बढाते उत्कृष्ट साढे चार मुहूर्त की पौरुषी होती है ? अहो सुदर्शन ! साढे चार मुहूर्त से तीन मुहूर्त तक में देढ मुहूर्त की वधघट १८३ दिन में होती है इन से जब साढे चार मुहूर्त का दिन होता है तब एक मुहूर्त के १२२ भाग में का एक भाग प्रतिदिन कम करते हुवे जघन्य तीन मुहूर्त

सूत्र

उक्कोसिया अद्धपंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ ॥ ५ ॥ कयाणं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ कदाणं भंते! जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ ? सुदंसणा! जयाणं उक्कोसिए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवइ तयाणं उक्कोसिया अद्धपंचम मुहुत्ता दिवसस्सवा पोरिसी भवइ. जहण्णिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जयावा उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तयाणं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ,

भावार्थ

की पौरुषी होती है और जब जघन्य तीन मुहूर्त की पौरुषीवाला रात्रि अथवा दिन है तब प्रतिदिन एक मुहूर्त के १२२ भाग में का एक २ भाग बढाते हुवे साढे चार मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुषी होती है ॥५॥ अहो भगवन् ! साढे चार मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुषी कब होती है और तीन मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुषी कब होती है ? अहो सुदर्शन ! जब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्तकी रात्रि होती है तब साढे चार मुहूर्तकी दिन की व तीन मुहूर्तकी रात्रिकी पौरुषी होतीहै और जब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्तकी रात्रि होतीहै और जघन्य बारह मुहूर्तका दिन होता है तब उत्कृष्ट

सूत्र

जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ ॥ ६ ॥ कयाणं भंते! उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, कयावा उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवइ; जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ? सुदंसणा! आसाढ पुण्णिमाएणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ; पोस पुण्णिमाएणं उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ ७ ॥ अत्थिणं भंते! दिवसाय राईओय समाचेव भवंति? हंता अत्थि। कयाणं भंते! दिवसाय राईओय समाचेव भवंति? सुदंसणा!

भावार्थ

साढे चार मुहूर्त की रात्रि की पौरुषी व तीन मुहूर्त की दिन की पौरुषी होती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! अठारह मुहूर्त का दिन व बारह मुहूर्त की रात्रि कब होती है और बारह मुहूर्त का दिन व अठारह मुहूर्त की रात्रि कब होती है? अहो सुदर्शन! आषाढ पूर्णिमा को उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन व जघन्य बारह मुहूर्त की रात्रि होती है और पोष पूर्णिमा को उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि व बारह मुहूर्त का दिन होता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! क्या दिन रात्रि सम होते हैं? हां सुदर्शन! दिन रात्रि सरिखे होते हैं. अहो भगवन्! दिन रात्रि कब सरिखे होते हैं? अहो सुदर्शन! चैत्र व आसोज पूर्णिमा को

चित्तासोय पुण्णिमासुणं दिवसाय राईओय समाचेव भवंति; पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, चउभागमुहुत्त भागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ सेत्तंप्पमाणकाले ॥ ८ ॥ सेकिंतं अहाउणिव्वत्तिकाले ? अहाउनिव्वत्तिकाले जण्णं णेरइएणवा तिरिक्खजोणिएणवा मणुस्सेणवा देवेणवा अहाउणिव्वत्तियं सेत्तं ॥ पालेमाणे अहाउणिव्वत्तिकाले ॥ ९ ॥ सेकिंतं मरणकाले ? मरणकाले जीवोवा सरीराओ सरीरंवा जीवाओ सेत्तं मरणकाले ॥१० ॥ सेकिंतं अद्धा काले ? अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा समयट्ठयाए, आवलियट्ठयाए, जाव

भावार्थ दिन रात्रि सरिखे होते हैं. उस समय पन्नरह मुहूर्त की रात्रि व पन्नरह मुहूर्त का दिन होता है. और एक मुहूर्त के १२२ भागवाले चार भाग कम चार मुहूर्त की दिन की अथवा रात्रि की पौरुषी होती है ? यह प्रमाण काल हुवा ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! यथायुष्य निवृत्ति काल किसे कहते हैं ? अहो सुदर्शन ! नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव में जिस आयुष्य का बंध किया है उसे पालना सो यथायुष्य निवृत्ति काल ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! मरण काल किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! नरक, तिर्यंच मनुष्य व देवगतिवाले जीवों एक शरीर का त्याग करके अन्य शरीर में जाते हैं सो मरण काल कहा जाता है ॥ १० ॥ अहो

सूत्र

उस्सप्पिणीट्ठयाए, एसणं सुदंसणा ! अद्धा दोहारच्छेयणेणं छिज्जमाणा जाहे विभागं णो हव्वमागच्छइ सेत्तं समए ॥ समयट्ठयाए असंखेज्जाणं समयाणं समुदय समिति समागमेणं एगा आवलियत्ति पवुच्चइ, संखेज्जाओ आवलियाओ जहा सालिउद्देसए जाव तं सागरोवमस्स एगस्स भवे परीमाणं ॥ एएहिणं भंते ! पलिओवम सागरोवमेहिं किं पओयणं? सुदंसणा! एएहिं पलिओवम सागरोवमेहिं णेरइय तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवाणं आउयाइं मविज्जंति ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? एवं ठिईपदं णिरवसेसं भाणियव्वं जाव अज-

भावार्थ

भगवन् ! अद्धा काल किसे कहते हैं ? अहो सुदर्शन ! अद्धा काल के अनेक भेद कहे हैं जैसे समय, आवलिका, श्वासोश्वास, थोव, लव, मुहूर्त, अहोरात्रि, पक्ष, मास, वर्ष यावत् उत्सर्पिणी अवसर्पिणी. अहो सुदर्शन ! छेदने से जिस के दो विभाग होवे नहीं उसे समय कहते हैं. संख्याते समय की एक आवलिका होती है, यों जैसे छट्ठे शतक के सातवे उद्देशे में कहा वैसे ही जानना. यावत् दश क्रोडाक्रोड सागरोपम की एक उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी होती है. अहो भगवन्! इन पल्योपम सागरोपम का क्या प्रयोजन है? अहो सुदर्शन ! इन पल्योपम, सागरोपम से नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव का आयुष्य जाना जाता है ॥ ११ ॥

अ० अद्धाकाल ॥ ४-१२ ॥ अ० है भं० भगवन् प० पल्योपम सा० सागरोपम ख० क्षय अ० अपचय हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० ए० इन प० पल्योपम सा० सागरोपम का जा० यावत् अ० अपचय सु० सुदर्शन ते० उस काल ते० उस समय में ह० हस्तिनापुर न० नगर ब० बल रा० राजा हो० था० व० वर्णन युक्त त० उस ब० बल र० राजा

हण्णमणुक्कोसं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ १२ ॥ अत्थिणं भंते ! एए किं पलिओवम सागरोवमाणं खएइवा अवचएइवा ? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, अत्थिणं एएसिं पलिओवम सागरोवमाणं जाव अवचएइवा एवं खलु सुदंसणा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे णयरे होत्था. वण्णओ सहसंववणे णामं उज्जाणे वण्णओ॥तत्थणं हत्थिणापुरे णामं णयरे, बले णामं राया होत्था वण्णओ

अहो भगवन् ! नारकी की कितनी स्थिति कही ? अहो सुदर्शन ! स्थिति पद से जानना यावत् सर्वार्थ सिद्ध की अजघन्य अनुत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! क्या इन पल्योपम व सागरोपम की स्थिति का क्षय व अपचय होता है ? हां ऐसी पल्योपम की स्थिति का क्षय होता है. अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहा है ? अहो सुदर्शन ! उस काल उस समय में हस्तिनापुर नामक नगर था. उसकी बाहिर सहस्राम्रवन नामक उद्यान था. उस हस्तिनापुर नगर में बल नामक राजा

ो प० प्रभावती दे० देवी हो० थी सु० सुकुमार व० वर्णन युक्त जा० यावत् व० विचरता है ॥ १३ ॥ त० तब से० वह प० प्रभावती दे० देवी अ० एकदा तं० उस वा० वासगृह में अ० आभ्यंतर स० सचित्र काम बा० बाह्य दू० सफेद घ० घीसा म० अच्छाकिया वि० विचित्र उ० उपरभाग दे० देदिप्यमान त० तला म० मणि र० रत्न प० नाशकिया अं० अंधकार ब० बहुसम सु० विभक्त दे० देशभाग पं० पांचवर्ण के स० सरस सु० सुरभि मु० युक्त पु० पुष्प पुं० पुंज उ० उपचार क० युक्त का० कृष्णागरू प० प्रवर कुं० कुंद उ० उरुक धू० धूप म० मघमघायमान गं० गंध उ० उद्भूत अ० रम्य सु० सुगंध प० प्रधान गं०

तस्सणं बलस्स रण्णो पभावई णामं देवी होत्था सुकुमाल वण्णओ जाव विहरइ ॥ १३॥ तएणं से पभावई देवी अण्णयाकयाइं तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भितरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय घट्ठमट्ठे विचित्त उल्लोगचिल्लियतले, मणिरयण पणासियं धकारे बहु समसुविभत्तदेसभाए, पंच वण्णसरस सुरभि मुक्कपुप्फ पुंजोवयार कलिए कालागरुपवर कुंदरुक्क तुरुक्कधूव मघमघंत, गंधुद्धुयाभिरामे, सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए

राज्य करता था. उस बल राजा को प्रभावती नामक राणी थी. वह सुकुमाल यावत् मनोहर थी ॥१३॥ एकदा समय में प्रभावती राणी अंदर से चित्रामणयुक्त व बाहिर से कोमल प्रमाणादिक से घीसने मृदु स्पर्शवाला, विविध प्रकार के चित्रोंयुक्त उपर का भागवाला, देदीप्यमान अधो भागवाला, चंद्रकान्तादि

गंधवाला गं० गंधगुटिका सारिखी तं० उस ता० तादृश स० शय्या में सा० शरीर प्रमाण शय्या में उ० दोनों बाजु वि० ओसी से दु० दोनों उ० उन्नत म० मध्य में गं० गंभीर गं० गंगातट की वा० वालु उ० सुकोमल शरीर ओ० अच्छा खो० सफेद दु० वस्त्र पट प० अच्छादन सु० सुरचित र० वस्त्र स० रक्त वस्त्र सं० संवृत सु० सुरम्य आ० चर्म का वस्त्र रू० रूत वू० वूर ण० नवनीत तु० तूल फा० स्पर्श सु० सुगंध व० प्रधान कु० कुसुम चु० चूर्ण, स० शयन उ० उपचार क० कलित अ० अर्ध र० रात्रि का०

तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टीए उभओ विव्वोयणे दुहओ उण्णए मज्झे-णयलुगंभीरे गंगापुलिणं वालुय उद्दाल सालिसए, ओयविय खोमिय दुगुल्लपट्ट पडिच्छ-यणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे आईणगरूय वूरणवणीय तुल्लफासे सुगंध वरकुसुम चुण्णसयणोवयारकलिए अद्धरत्ताकाल समयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी

मणियों व कर्केतनकादि रत्नों से उज्वल, बहुत सम भूमि भागवाला, पांच वर्ण व सरस सुगंध युक्त पुष्प पुंज की पूजासे सहित, काला अगर व श्रेष्ट चौड, सील्ह वगैरह धूप मे मघमधायमान, श्रेष्ट सुगंध से सुवा-सित, और गंध द्रव्य गुटिका समान ऐसे गृह में शिर व पांव दोनों पास ओसीसावाला, दोनों तरफ ऊंचा व बीच में नीचा गंभीर, गंगा नदी के तट की उपर की वालु समान मृदु, अच्छी तरह से पकाया हुवा कपासमय वस्त्र अथवा अतसीमय वस्त्र सो युगल की अपेक्षा से एक पटांपट आच्छादनवाला, भोग अवस्था

काल में सु० सूती जा० जागती ओ० चलायमान होती ए० इसरूप उ० उदार क० कल्याणकारी सि० शृंगार रूप ध० धन्य मं० मंगलकारी स० श्री वाला म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागृत हुइ हा० हार र० रजत खी० क्षीरसागर स० चंद्र कि० किरण द० उदक र० रजत म० महाशैल पं० पांडुर र० रमणिय पि० देखने योग्य थि० स्थिर ल० लष्ट प० प्रकोष्ट व० वृत्त पी० पीवर सु० सुश्लिष्ट वि० विशिष्ट ति० तीक्ष्ण दा० दांत वि० विवृत मुख प० परिकर्मित क० कमल को० कोमल मा० ममाण सो० शोभते म०

ओहीरमाणी अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धण्णं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुविणं पासि-त्ताणं पडिबुद्धा तं० हाररययखीरसागर ससंककिरण दगरयय महासेल पंडुरतरोरु रमणिज्ज पिच्छणिज्जं, थिरलट्ठपउट्ठ वट्ट पीवरसुसिलिट्ठ विसिट्ठ तिक्खदाढा विडंबि-यमुहं परिकम्मिय जच्चकमल, कोमल माइय सोभंत लट्ठउट्ठं रत्तुप्पल पत्तमउय

के समय में अच्छाअच्छा दनवाला, रक्तवस्त्र से ढका हुवा, सुरम्य, व शरीर प्रमाण पर्यंक पर सुकुमार, रूप, बूर, माखण, व तूल के स्पर्श समान कोमल स्पर्शवाली व सुगंधित पुष्पों के चूर्णोंवाली शय्या में अर्धरात्रि में अतिशय नहीं सोते व अतिशय नहीं जागते एक बडा प्रधान कल्याणकारी महा स्वप्न देखकर जागृत हुइ. अब स्वप्न का वर्णन करते हैं मोती का हार, चांदी, क्षीर समुद्र, चंद्रमा के किरण, पानी के कण व चांदी का वैताढ्य पर्वत समान अतिशय उज्वल, मनोहर व प्रेक्षणीय, स्थिर व मनोज्ञ कलाई तथा वर्तुला-

शब्दार्थ लष्ठ र० रक्त उ० उत्पल प० पत्र म० मृदु सु० सुकुमार ता० तालु जी० जीव्हा मू० मूशाभाजन में ग० रहा हुवा प० प्रधान क० सुवर्ण ता० तपायाहुवा आ० आवर्त करता व० वृत्त त० तडित जैसे वि० विमल साहिस न० नयन वि० विशाल पी० स्थूल उ० उरु प० प्रतिपूर्ण वि० विपुल खं० स्कन्ध मि० मृदु वि० सफेद सु० सूक्ष्म ल० लक्षण प० प्रशस्त वि० विस्तीर्ण के० केशवली सो शोभित ऊ० उच्छ्रित सु० सुनिर्मित सु० सुजात अ० आस्फोटित लां० लांगूल सो० सौम्य सो० सौम्याकार ली०

सूत्र

सुकुमालतालुजीहं मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायंतवट्टतडियविमलसरिसनयणं विसा-लपीवरोरुपडिपुण्णविउलखंधं मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थविच्छिण्णकेसराडोव सोभियं ऊसियसुनिम्मियसुजायअप्फोडियलांगूलं सोमं सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं नहय

भावार्थ कार, स्थूल, श्रेष्ठ व तीक्ष्ण दाढों युक्त मुखवाला, संस्कारित जात्य कमल समान कोमल व प्रमाणोपेत शोभनिक व मनोज्ञ ओष्ठवाला, रक्त कमल के पत्र समान सुकुमार तालु व जीव्हा वाला, सुवर्ण को मूषा में रखकर तप्त किया फीर वह चक्रावे उस के जैसे वृत्त, तडित समान विमल लोचनवाला विस्तीर्ण स्थूल जंघा वाला, परिपूर्ण स्कंधवाला, कोमल, श्वेत, प्रशस्त व विस्तीर्ण केसरा वाला, ऊंचाकियाहुआ, अच्छी तरह नीचा मुख करके रहा हुवा शोभनिक, व भूमिको आस्फालता हुआ लांगूलवाला, सौम्य व सौम्याकार सिंह लीला व क्रीडा करता हुवा आकाश तल में से नीचे उतरकर अपने मुख में प्रवेश करता हुवा

शब्दार्थ

क्रीला करता जं० बडाइ करता न० नभतल से उ० उतरता नि० अपना व० वदन में प० प्रवेश करता तं० उस सी० सिंहको सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जागृत हुई ॥ १४ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी ए० इसरूप उ० उदार जा० यावत् स० श्रीरूप म० महास्वप्न सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जागृत होती ह० हृष्ट जा० यावत् हि० खुशहुइ धा० धारासे हणाया क० कदंब पुष्प जैसे म० विकसित रो० रोमकूप तं० उस सु० स्वप्न को उ० ग्रहणकर स० शय्या से अ० उठकर अ० त्वरा रहित अ० चपलता रहित अ० असंभ्रम अ० विलम्ब रहित रा० राजहंस स० सरिखी ग० गति से ज० जहां ब०

सूत्र

लाओ उवयमाणं नियगवयणं पतिकंतं तं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा ॥१४॥ तएणं सा पभावई देवी अयमेयारूवं उरालं जाव सस्सिरीयं महासुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धासमाणी हट्ठ जाव हियया धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूसवियरोमकूवा तं सुविणं उगिण्हइ उगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता अतुरियमचवलमसं भंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवा०

अर्थ

उस प्रभावती राणीने स्वप्न में देखा और इस तरह स्वप्न देखकर शीघ्र जागृत हुई. ॥ १४ ॥ तब वह प्रभावती देवी इस प्रकार का उदार, प्रधान, व कल्याणकारी महास्वप्न देखकर जागृत होते ही हृदय में अत्यंत हर्षित हुई मेघ की धारासे हणाया हुवा कदम्ब वृक्ष का पुष्प जैसे विकसित होता है वैसे विकसित

शब्दार्थ

ब० बल रा० राजाकी स० शय्या ते० तहां उ० आकर ब० बलराजा को इ० इष्ट कं० कांत पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनाम उ० उदार क० कल्याण सि० सुखरूप ध० धन्य मं० मांगलिक स० अच्छे मि० मृदु म० मधुर मं० मंजुल गि० वाणी से सं० बोलती प० जागृतकर ब० बल र० राजा से अ० आज्ञा पाइहुई णा० विविध म० मणि र० रत्न भ० रचे हुवे सी० सिंहासनपे णि० बैठकर आ० आश्वासलेती वि० विश्राम करती सु० सुखासनपर ब० बैठी हुइ ब० बलराजा को इ० इष्ट कं० कांत जा० यावत् सं० बोलती ए० ऐसा व० बोली ए० ऐसा ख० निश्चय अ० मैं दे० देवानुप्रिय अ० आज तं० उस ता० तैसी स०

सूत्र

गच्छइ २त्ता, बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालाहिं फल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिउमहुरमंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेइ २ त्ता, बलेणं रण्णो अब्भणुण्णायासमाणी णाणामणि-रयणभत्तिचित्तंसि सीहासणंसि णिसीयइ २ त्ता, आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया

भावार्थ

मान उसका हृदय हुआ और स्वप्न को धारन कर शैय्या में से खडी हुई. शारीरिक व मानसिक चपलता रहित असंभ्रांत बनकर राजहंस समान गति से चलती हुइ बलराजा के शयनगृह में आई और बलराजा को इष्ट, मनोहर, प्रीतिकारी, मनोज्ञ, अभिराम, उदार, कल्याणकारी, उपद्रव रहित, मंगलिक, मृदु, मधुर, व मंजुलवाणी से बोलाकर जागृत किया। बल राजाने जागृत होकर अनेक प्रकार के रत्नों से

शब्दार्थ

क्रीला करता जं० बडाइ करता न० नभतल से उ० उतरता नि० अपना व० वदन में प० प्रवेश करता तं० उस सी० सिंहको सु० स्वम में पा० देखकर प० जागृत हुई ॥ १४ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी ए० इसरूप उ० उदार जा० यावत स० श्रीरूप म० महास्वम सु० स्वम में पा० देखकर प० जागृत होती ह० हृष्ट जा० यावत् हि० खुशहुइ धा० धारासे हणाया क० कदंब पुष्प जैसे स० विकसित रो० रोमकूप तं० उस सु० स्वम को उ० ग्रहणकर स० शय्या से अ० उठकर अ० त्वरा रहित अ० चपलता रहित अ० असंभ्रम अ० विलम्ब रहित रा० राजहंस स० सरिखी ग० गति से ज० जहां ब०

सूत्र

लाओ उवयमाणं नियगवयणं पतिवंतं तं सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा ॥१४॥ तएणं सा पभावई देवी अयमेयारूवं उरालं जाव सस्सिरीयं महासुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धासमाणी हट्ठ जाव हियया धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा तं सुविणं उगिण्हइ उगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता अतुरियमचवलमसं भंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवा०

भावार्थ

उस प्रभावती राणीने स्वम में देखा और इस तरह स्वम देखकर शीघ्र जागृत हुई. ॥ १४ ॥ तब वह प्रभावती देवी इस प्रकार का उदार, प्रधान, व कल्याणकारी महास्वम देखकर जागृत होते ही हृदय में अत्यंत हर्षित हुई मेघ की धारासे हणाया हुवा कदंब वृक्ष का पुष्प जैसे विकसित होता है वैसे विकसित

शब्दार्थ शरीर ऊ० रोमांचित तं० उस सु० स्वप्न को उ० ग्रहणकर ई० बुद्धिमें से प० प्रवेशकर अ० अपनी सा० स्वाभाविक म० मतिपूर्वक बु० बुद्धिविज्ञान से त० उस सु० स्वप्न का अ० अर्थ अ० ग्रहण क० करके प० प्रभावती दे० देवी को इ० इष्ट जा० यावत् मं० मंगल मि० मृदु म० मधुर स० श्रीरूप सं० बोलते ए० ऐसा व० बोले उ० उदार तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा क० कल्याणकारी तु० तुमने दे०

सूत्र सुरभिकुसमचुंचुमालइयतणुयऊसवियरोमकूवे तं सुमिणं उगिण्हइ २ त्ता ईहं पविसइ २ त्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ २ त्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव मंगल्लाहिं, मिउमहुरस-रिसरीयाहिं संलवमाणे २ एवं वयासी उरालेणं तुम्मे देवी? सुविणे दिट्ठे, कल्लाणेणं

भावार्थ स्वप्न में देखकर मैं जागृत हुई आप की पास आई हूं. अब अहो देवानुप्रिय ! ऐसा उदार यावत् महा स्वप्न का मुझे कैसा कल्याणकारी फल प्राप्त होगा ? बल राजा प्रभावती राणी से ऐसा अर्थ सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुआ. मेघ की धारा से हणाया हुवा कदम्ब वृक्ष जैसे विकसित होता है वैसे ही इन के रोमांकूर विकसित हुवे. राणीने कहे हुवे स्वप्न को ग्रहण किया, उस का हृदय में विचार किया, और आभिनिबोधिक ज्ञान व उत्पातादि बुद्धि से उस स्वप्न के फल को निश्चित किया. इस तरह स्वप्न का अर्थ ग्रहण कर प्रभावती राणी को इष्ट, कांत, प्रिय व मनोज्ञ वचन से कहने लगे कि अहो

शब्दार्थ — शैय्या में सा० अंग सहित तं० तैसे जा० यावत् णि० अपना व० वदन में अ० प्रवेश करता सी० सिंहको सु० स्वप्नमें पा० देखकर प० जागृत हुई दे० देवानुप्रिय ए० इस उ० उदार जा० यावत म० महास्वप्न का के० क्या म० मानाजावे क० कल्याण फ० फलवृत्ति वि० विशेष भ० होगा त० तब से० वह ब० बलराजा प० प्रभावती दे० देवीकी अं० पास ए० इस अर्थ को सो० सुनकर णि० अवधार कर ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् हि० खुशहुवा धा० धाराहत णी० कदम्ब वृक्ष के सु० सुगंधित कु० कुसुम पुं० पुलकित म०

सूत्र — बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणी २ एवं वयासी एवं खलु अहं देवा॰णुप्पिया अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण तंचेव जाव णियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणं पासित्ताणं पडिबुद्धा ॥ तंणं देवाणुप्पिया! एयस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स केमण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? तएणं से बले राया पभावईए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा जाव हियए धाराहयणीव॰

भावार्थ — जडित व अनेक चित्रों से चित्रित ऐसे सिंहासन पर बैठने की राणी को आज्ञा दी. राजा की आज्ञानुसार राणी सिंहासन पर बैठी और मार्ग गमन से प्राप्त परिश्रम का निवारन किया. फीर अंजलि हृदय में हस्तद्वय जोडकर इष्टकारी यावत् मंजुल भाषा से वार्तालाप करती हुई ऐसा बोली कि अहो देवानुप्रिय! आज मैं पुण्यवन्त जीव को योग्य शैय्या में सोती हुई थी यावत् मेरे मुख में प्रवेश करता हुआ एक सिंह को

शब्दार्थ शरीर ऊ० रोमांचित तं० उस सु० स्वप्न को उ० ग्रहणकर ई० बुद्धिमें से प० प्रवेशकर अ० अपनी सा० स्वाभाविक म० मतिपूर्वक बु० बुद्धिविज्ञान से त० उस सु० स्वप्न का अ० अर्थ अ० ग्रहण क० करके प० प्रभावती दे० देवी को इ० इष्ट जा० यावत् मं० मंगल मि० मृदु म० मधुर स० श्रीरूप मं० बोलते ए० ऐसा व० बोले उ० उदार तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा क० कल्याणकारी तु० तुमने दे०

सूत्र सुरभिकुसुमचुंचुमालइयतणुयऊसवियरोमकूवे तं सुमिणं उगिण्हइ २ त्ता ईहं पविसइ २ त्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ २ त्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव मंगल्लाहिं, मिउमहुरसस्सिरीयाहिं संलवमाणे २ एवं वयासी उरालेणं तुम्मे देवी? सुविणे दिट्ठे, कल्लाणेणं

भावार्थ स्वप्न में देखकर मैं जागृत हुई आप की पास आई हूं. अब अहो देवानुप्रिय ! ऐसा उदार यावत् महा स्वप्न का मुझे कैसा कल्याणकारी फल प्राप्त होगा ? बल राजा प्रभावती राणी से ऐसा अर्थ सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् अनंदित हुआ. मेघ की धारा से हणाया हुवा कदम्ब वृक्ष जैसे विकसित होता है वैसे ही इन के रोमांकूर विकसित हुवे. राणीने कहे हुवे स्वप्न को ग्रहण किया, उस का हृदय में विचार किया, और आभिनिबोधिक ज्ञान व उत्पातादि बुद्धि से उस स्वप्न के फल को निश्चित किया. इस तरह स्वप्न का अर्थ ग्रहण कर प्रभावती राणी को इष्ट, कांत, प्रिय व मनोज्ञ वचन से कहने लगे कि अहो

शब्दार्थ देवी सु० स्वप्न दि० देखा जा० यावत् सि० श्रीरूप तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा आ० आरोग्य तु० तुष्ट दी० दीर्घायुः क० कल्याण मं० मंगल कारी तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा अ० अर्थ लाभ भो० भोग लाभ पु० पुत्र लाभ र० राज्यलाभ तु० तुमको दे० देवानुप्रिये न० नव मा० मास व० बहुत प० प्रतिपूर्ण अ० अर्ध अ० आठ रा० रात्रिदिवस वी० व्यतीत होते अ० हमारा कु० कुल केतु कु० कुलपर्वत कु० कुल अवतंसक कु० कुलतिलक कु० कुलकी कीर्ति करने वाला कु० कुल की

सूत्र तुम्मे देवी सुविणे दिट्ठे जाव सस्सिरीएणं तुम्हे देवी सुविणे दिट्ठे, आरोग्गतुट्ठिदीहा-उकल्लाण मंगलकारएणं तुम्हेदेवी ! सुविणे दिट्ठे; अत्थलाभो देवाणुप्पिए भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो देवाणुप्पिए, एवं खलु तुम्हे देवाणुप्पिए ! णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठराइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडिंसयं, कुलतिलयं, कुलकित्तिकरं, कुलनंदिकरं

भावार्थ देवी ! तुमने उदार स्वप्न देखा है, तुमने कल्याणकारी स्वप्न देखा है, यावत् लक्ष्मीवंत स्वप्न तुमने देखा है, तुमने आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष्य, कल्याण व मंगल का करनेवाला स्वप्न देखा है, इस से अहो देवानुप्रिये ! तुम को अर्थ लाभ, भोगलाभ, पुत्र लाभ, राज्य लाभ होगा. इस तरह अहो देवानुप्रिये ! सवानवमास पूर्ण हुए पीछे हमारे कुल में केतु [ध्वजा] समान, कुल दीपक, कुल पर्वत, कुल

शब्दार्थ — समृद्धि करने वाला कु० कुलकायश करने वाला कु० कुलाधार कु० कुलपादप कु० कुल वृद्धि करने वाला सु० सुकुमार पा० हस्तपाद अ० अक्षीण प० प्रतिपूर्ण पं० पंचेन्द्रिय स० शरीर जा० यावत् स० चंद्र सो० सौम्याकार कं० कान्त पि० प्रियदर्शन वाला सु० सुरूप दे० देवकुमार स० सरिखी प्रभावाला दा० पुत्र को प० जन्मदोगे से० वह दा० पुत्र उ० मुक्त बा० बाल भावसे वि० विज्ञान प० परिणमते जो० यौवन अ० प्राप्त सू० शूरवीर वि० विक्रान्त वि० विस्तीर्ण विपुल ब० बल वा० वाहन र० राज्यपति का

सूत्र — कुलजसकरं, कुलाधारं, कुलपायवं, कुलविवड्ढणकरं, सुकुमालपाणिपायं अहीण पडिपुण्णपंचिंदियसरीरं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं, सुरूवदेवकुमार समप्पभं दारगं पयाहिसि सेवियणं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णाय परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते, सूरे वीरे विक्कंते विच्छिण्णविपुलबलवाहणे रज्जवई राया भविस्सई तं उरालेणं तुम्हे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग तुट्ठि जाव मंगलकारएणं

भावार्थ — अवतंसक, कुल तिलक, कुल की कीर्ति करनेवाला, कुल में समृद्धि करनेवाला, कुल में यश करनेवाला, कुल को आधारभूत, कुल में वृक्ष समान, कुल की वृद्धि करनेवाला, सुकुमार हस्तपांववाला, अक्षीण इन्द्रियोंवाला व पूर्ण पांचों इन्द्रियों युक्त शरीरवाला यावत् शशि समान शांत, सौम्याकार, कांत, प्रिय, दर्शनीय, सुरूप और देव कुमार समान कान्तिवाला ऐसा पुत्र रत्न तुम को उत्पन्न होगा. और जब

पदार्थ

अं० पास से प० नीकलकर सि० शीघ्र तु० त्वरित च० चपलता से चं० चंडगति से वे० वेगसे ह० हस्तिनापुर न० नगर की म० मध्य से णि० जाकर जे० जहां ते० उन सु० स्वप्न ल० लक्षण पा० पाठक के गि० गृह ते० तहां उ० जाकर ते० उन सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक के स० बोलावे ॥१८॥ त० तब ते० वे सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक ब० बलराजा के को० कौटुम्बिक पु० पुरुष से स० बोलाये हुवे ह० हृष्ट तु० तुष्ट ण्हा० स्नान किया जा० यावत् स० शरीर सि० सिद्धार्थक ह० हरताल से क० किये

सूत्र

वेइयं हत्थिणापुरं णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छंति २ त्ता जेणेव तेसिं सुविण लक्खण पाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता, ते सुविण लक्खण पाढए सदावेंति ॥ १८ ॥ तएणं ते सुविण लक्खण पाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ तुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा, सिद्धत्थगहरियालिया, कयमंगलमुद्धाणा सएहिं २ गेहेहिंतो णिग्गच्छंति २ त्ता, हत्थिणापुरं णयरं मज्झं

भावार्थ

करनेवाले व विविध प्रकार के शास्त्र में कुशल ऐसे स्वप्न पाठक को बोलावो. वे कौटुम्बिक पुरुषों बल राजा की पास ऐसा सुनकर वहां से नीकलकर शीघ्रता, चपलता सहित हस्तिनापुर नगर की मध्य में होकर स्वप्न पाठक की पास गये और उन को राजसभा में आने का कहा ॥ १८ ॥ स्वप्न लक्षण पाठक बल राजा के कौटुम्बिक पुरुषों से राजसभा में आने का सुनकर बहुत हर्षित हुवे. स्नान किया यावत् अपने

शब्दार्थ

मं० मंगल मु० शिर स० अपने गे० गृह से णि० नीकलकर ह० हस्तिनापुर ण० नगर की म० मध्य से जे० जहां ब० बलराजा का भ० भुवन अवतंसक के प० प्रतिद्वारपर ए० इकठे मे० मीलकर जे० जहां बा० बाहिर की उ० उपस्थान शाला जे० जहां ब० बलराजा ते० तहां उ० आकर क० करतल व० बलराजा को ज० जय वि० विजय से व० वधाये ॥ १९ ॥ त० तब ते० वे सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक व० बलराजा से वं० वंदन कराये पू० पूजन कराए स० सत्कार कराए स० सन्मान कराए हुवे प० प्रत्येक पु० पूर्वाभि

सूत्र

मज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडिंसए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भवणवर वडिंसए पडिदुवारंसि एगओ मेलंति २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण साला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति ॥ १९ ॥ तएणं ते सुविण लक्खण पाढगा बलेणं रण्णा वंदियपूइयसक्कारिय

भावार्थ

शरीर को वस्त्रालंकार से विभूषित किया. अर्थसिद्धि के लिये सर्षप हरिताल रूप लक्षणवाले मंगल मस्तक में धारन किये और अपने २ गृह से नीकलकर हस्तिनापुर नगर की बीच में होकर बल राजा के भवन की तरफ जाने लगे और उन के प्रतिद्वार पर एकत्रित होने लगे. फीर वहां से सब उपस्थान-शाला में बल राजा की समीप जाकर बल राजा को 'जय हो विजय हो' ऐसे शब्दों से वधाये ॥ १९ ॥ बल राजाने उन सब स्वप्न लक्षण पाठक को वंदना, पूजा, सत्कार सन्मानादि किये. और वे सब पहिले के

अं० पास से प० नीकलकर सि० शीघ्र तु० त्वरित च० चपलता से चं० ... से वे० वेगसे ह०
हस्तिनापुर न० नगर की म० मध्य से णि० जाकर जे० जहां ते० उन सु० स्वप्न ... पा० पाठक
के गि० गृह ते० तहां उ० जाकर ते० उन सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक को स० बोलावे ॥१८॥ त० तब
ते० वे सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक ब० बलराजा के को० कौटुम्बिक पु० पुरुष से ... हृ० हृष्ट
हष्ट तु० तुष्ट ण्हा० स्नान किया जा० यावत स० शरीर सि० सिद्धार्थक ह० हरताल से क० किये

वेइयं हत्थिणापुरं णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छंति २ त्ता जेणेव तेसिं सुविण लक्खण पाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता, ते सुविण लक्खण पाढए सद्दावेंति ॥ १८ ॥ तएणं ते सुविण लक्खण पाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ तुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा, सिद्धत्थगहरियालियकया, कयमंगलमुद्धाणा सएहिं २ गेहेहिंतो णिग्गच्छंति २ त्ता, हत्थिणापुरं णयरं मज्झं

करनेवाले व विविध प्रकार के शास्त्र में कुशल ऐसे स्वप्न पाठक को बोलावो. वे कौटुम्बिक पुरुषों बल राजा की पास ऐसा सुनकर वहां से नीकलकर शीघ्रता, चपलता सहित हस्तिनापुर नगर की मध्य में होकर स्वप्न पाठक की पास गये और उन को राजसभा में आने का कहा ॥ १८ ॥ स्वप्न लक्षण पाठक बल राजा के कौटुम्बिक पुरुषों से राजसभा में आने का सुनकर बहुत हर्षित हुवे. स्नान किया यावत् अपने

पदार्थ

भ० होगा ॥ २० ॥ त० तब सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक ब० बलराजाकी अं० पास ए० इस अर्थ को सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट तं० उस सु० स्वप्न को ओ० ग्रहणकरे तं० उस में ई० बुद्धिमें प० प्रवेशकरे तं० उस सु० स्वप्न का अ० अर्थावग्रह क० करे ते० वे अ० अन्योन्य स० साथ सं० संचालनकर त० उस सु० स्वप्न का ल० प्राप्त कीया अर्थ ग० ग्रहण किया अर्थ पु० पूछा अर्थ वि० निश्चय किया अर्थ अ० जाना अर्थ ब० बलराजा की पु० आगे सु० स्वप्न का अर्थ उ० करते ए० ऐसा ब० बोले दे० देवानुप्रिय अ० हमने सु० स्वप्न शास्त्र बा० बीयालीस सु० स्वप्न ती० तीस म० महास्वप्न

सूत्र

तएणं ते सुविण लक्खण पाढगा बलस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा तं सुविणं ओगिण्हंति, तं ईहं पविसंति २ त्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति २ त्ता, ते अण्णमण्णेणं सद्धिं संचालेंति २ त्ता, तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा, विणिच्छियट्ठा,अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणे २ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा

भावार्थ

की पास ऐसा सुनकर हर्षित हुए, और उन स्वप्न को अच्छी तरह समझ लिया, उस पर विचार किया, अर्थ ग्रहण किया, और परस्पर संचालन (पृच्छा) किया. फीर उस स्वप्न का अर्थ की प्राप्ति करनेवाले, पृच्छा करनेवाले, निश्चितार्थवाले, विनिश्चितार्थवाले ऐसे स्वप्न पाठक बल राजा की आगे स्वप्न का अर्थ

शब्दार्थ

मुख भ० भद्रासनपे नि० बैठे त० तब से वह ब० बलात्मा प० प्रभावती दे० देवीको अ० पर्दा के अं० बैठाकर पु० पुष्प फ० फल से प० पूर्ण ह० हाथ प० बहुत वि० विनय से ते० उन सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक को ए० ऐसा व० बोला ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवी अ० आज ते० उस ता० तादृश वा० गृह में जा० यावत् सी० सिंह सु० स्वप्न सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जागृत हुई दे० देवानुप्रिय ए० इस उ० उदार जा० यावत् के० क्या म० मानो क० कल्याणरूप वि० वृत्ति वि० विशेष

सूत्र

सम्माणिया समाणा पत्तेयं २ पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति॥ तएणं से बलेराया पभावइं देविं जवणितरियं ठावेइ २ त्ता, पुप्फफल पडिपुण्णहत्थे, परेणं विणएणं ते सुविण लक्खण पाढए एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावई देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा;तंणं देवाणुप्पिया! एयस्स उरालस्स जाव के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? ॥ २० ॥

अर्थ

ढके हुवे सिंहासनपे बैठे. प्रभावती देवी को भी उस परदे के अंदर बैठने को कहा. फीर पुष्प फल से परिपूर्ण हस्त सहित अतिशय विनय पूर्वक उन स्वप्न लक्षण पाठक को ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय ! आज प्रभावती देवीने पुण्यवंत को योग्य ऐसे आवास में यावत् सिंह को अपने मुख में प्रवेश करता हुवा स्वप्न में देखा. इस स्वप्न का हम को क्या कल्याणकारी फल होगा ? ॥ २० ॥ स्वप्न लक्षण पाठकने बल राजा

पदार्थ — भ० होगा ॥ २० ॥ त० तब सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक ब० बलराजाकी अं० पास ए० इस अर्थ को सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट तं० उस सु० स्वप्न को ओ० ग्रहणकरे तं० उस में ई० बुद्धिमें प० प्रवेशकरे तं० उस सु० स्वप्न का अ० अर्थावग्रह क० करे ते० वे अ० अन्योन्य स० साथ सं० संचालनकर त० उस सु० स्वप्न का ल० प्राप्त कीया अर्थ ग० ग्रहण किया अर्थ पु० पूछा अर्थ वि० निश्चय किया अर्थ अ० जाना अर्थ ब० बलराजा की पु० आगे सु० स्वप्न का अर्थ उ० करते ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० हमने सु० स्वप्न शास्त्र बा० बीयालीस सु० स्वप्न ती० तीस म० महास्वप्न

सूत्र — तएणं ते सुविण लक्खण पाढगा बलस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा तं सुविणं ओगिण्हंति, तं ईहं पविसंति २ त्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति २ त्ता, ते अण्णमण्णेणं सद्धिं संचालेंति २ त्ता, तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा, विणिच्छियट्ठा,अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओसुविणसत्थाइं उच्चारेमाणे २ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा

भावार्थ — की पास ऐसा सुनकर हर्षित हुए, और उन स्वप्न को अच्छी तरह समझ लिया, उस पर विचार किया, अर्थ ग्रहण किया, और परस्पर संचालन (पृच्छा) किया. फीर उस स्वप्न का अर्थ की प्राप्ति करनेवाले, पृच्छा करनेवाले, निश्चितार्थवाले, विनिश्चितार्थवाले ऐसे स्वप्न पाठक बल राजा की आगे स्वप्न का अर्थ

शब्दार्थ

मुख भ० भद्रासनपे नि० बैठे त० तब से वह ब० बलराजा प० प्रभावती दे० देवीको ज० परदा में ठा० बैठाकर पु० पुष्प फ० फल से प० पूर्ण ह० हाथ प० बहुत वि० विनय से ते० उन सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक को ए० ऐसा व० बोला ए० ऐसे दे०देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवी अ० आज तं० उस वा० वासघर में जा० यावत् सी० सिंह सु० स्वप्न मु० स्वप्न में पा० देखकर प० जागृत हुई दे० देवानुप्रिय ए० इस उ० उदार जा० यावत् के० क्या म० मानो क० कल्याणकारी वि० वृत्ति वि० विशेष

सूत्र

सम्माणिया समाणा पत्तेयं २ पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति॥ तएणं से बलेराया पभावइं देविं जवणितरियं ठावेइ २ त्ता, पुप्फफल पडिपुण्णहत्थे, परेणं विणएणं ते सुविण लक्खण पाढए एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावई देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा;तंणं देवाणुप्पिया! एयस्स उरालस्स जाव के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? ॥ २० ॥

भावार्थ

हके हुवे सिंहासनपे बैठे. प्रभावती देवी को भी उस परदे के अंदर बैठने को कहा. फीर पुष्प फल से परिपूर्ण हस्त सहित अतिशय विनय पूर्वक उन स्वप्न लक्षण पाठक को ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय ! आज प्रभावती देवीने पुण्यवंत को योग्य ऐसे आवास में यावत् सिंह को अपने मुख में प्रवेश करता हुवा स्वप्न में देखा. इस स्वप्न का हम को क्या कल्याणकारी फल होगा ? ॥ २० ॥ स्वप्न लक्षण पाठकने बल राजा

शब्दार्थ भ० होगा ॥ २० ॥ त० तब सु० स्वप्न लक्षण पा० पाठक व० बलराजाकी अं० पास ए० इस अर्थ को सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट तं० उस सु० स्वप्न को ओ० ग्रहणकरे तं० उस में ई० बुद्धिमें प० प्रवेशकरे तं० उस सु० स्वप्न का अ० अर्थावग्रह क० करे ते० वे अ० अन्योन्य स० साथ सं० संचालनकर त० उस सु० स्वप्न का ल० प्राप्त कीया अर्थ ग० ग्रहण किया अर्थ पु० पूछा अर्थ वि० निश्चय किया अर्थ अ० जाना अर्थ ब० बलराजा की पु० आगे सु० स्वप्न का अर्थ उ० करते ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० हमने सु० स्वप्न शास्त्र बा० बीयालीस सु० स्वप्न ती० तीस म० महास्वप्न

सूत्र तएणं ते सुविण लक्खण पाढगा बलस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा तं सुविणं ओगिण्हंति, तं ईहं पविसंति २ त्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति २ त्ता, ते अण्णमण्णेणं सद्धिं संचालेंति २ त्ता, तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणे २ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा

भावार्थ की पास ऐसा सुनकर हर्षित हुए, और उन स्वप्न को अच्छी तरह समझ लिया, उस पर विचार किया, अर्थ ग्रहण किया, और परस्पर संचालन (पृच्छा) किया. फीर उस स्वप्न का अर्थ की प्राप्ति करनेवाले, पृच्छा करनेवाले, निश्चितार्थवाले, विनिश्चितार्थवाले ऐसे स्वप्न पाठक बल राजा की आगे स्वप्न का अर्थ

शब्दार्थ — वा० वहोत्तर स० सर्व सु० स्वप्न दि० देखे त० तहां दे० देवानुप्रिय ति० तीर्थंकर की मा० माता च० चक्रवर्ती की मा० माता ति० तीर्थंकर च० चक्रवर्ती ग० गर्भ में व० उत्पन्न होते ए० इन ती० तीस म० महास्वप्नमें से च० चौदह म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं ग० गज उ० वृषभ सी० सिंह अ० लक्ष्मी दा० माला स० चंद्र दि० सूर्य झ० ध्वजा कुं० कुंभ प० पद्म स० सरोवर सा० सागर वि० विमान भ० भवन र० रत्नोच्चय सि० अग्निशिखा वा० वासुदेवकी माता वा० वासुदेव ग० गर्भ में व०

सूत्र — तीसं महासुविणा वावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा. तत्थणं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमाय-रोवा चक्कवट्टिमायरोवा, तित्थगरंसिवा चक्कवट्टिंसिवा गब्भंवक्कममाणंसि एतेसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चउदस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति तं० गयवसहसीह अभिसेय दामससी दिणयरं झयकुंभं, पउमसरसागर विमाण (भवण) रयणुच्चयसिहिंच ॥ १ ॥ वासुदेवमायरोवा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउदसण्हं महासुविणाणं

भावार्थ — करने लगे. अहो देवानुप्रिय ! हमारे स्वप्न शास्त्र में बीयालीस सामान्य स्वप्न व तीस महास्वप्न ऐसे सब मीलकर वहोत्तर स्वप्न कहे हैं. जब तीर्थंकर व चक्रवर्ती अपनी माता के गर्भ में आते तब उन की माता उन तीस महास्वप्न में से चौदह स्वप्न देखकर जागृत होती है. उन के नाम. १ हस्ती २ वृषभ ३ सिंह ४ अभिषेक (लक्ष्मी का) ५ दो पुष्पमाला ६ चंद्र ७ सूर्य ८ ध्वजा ९ कुंभ १० पद्म सरोवर

शब्दार्थ व्यतीक्रमते ए० इन च० चौदह म० महास्वप्न में से अ० अन्यतर स० सात म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं ब० बलदेव की माता ब० बलदेव ग० गर्भ में व० व्यतीक्रमते ए० इन च० चौदह म० महास्वप्न के अ० अन्यतर च० चार म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं मं० मंडलीक की मा० माता मं० मंडलीक ग० गर्भ में व० व्यतीक्रमते ए० इन च० चौदह म० महास्वप्न में से अ० अन्यतर ए० एक ए० एक म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवीने ए० एक

सूत्र अण्णयरे सत्तमहासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥ बलदेवमायरोवा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति मंडलियमायरोवा मंडलियंसि गब्भंवक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥ इमंचणं देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे तं उरालेणं देवाणुप्पिया! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव

भावार्थ ११ समुद्र १२ देव विमान १३ रत्नों की राशि और १४ धूम्र रहित अग्नि शिखा. जब वासुदेव गर्भ में आते हैं तब वासुदेव की माता इन चौदह महास्वप्न में से किसी सात स्वप्न देखती हैं, बलदेव जब गर्भ में आते हैं तब बलदेव की माता चार स्वप्न देखती हैं और मंडलिक की माता इन में से किसी एक महा

१ जब तीर्थंकर, चक्रवर्ती वैमानिक में से चवते हैं तब विमान देखती हैं और नारकी में से आते है तब भवन देखती हैं.

शब्दार्थ

वा० वहोत्तर स० सर्व सु० स्वप्न दि० देखे त० तहां दे० देवानुप्रिय ति० तीर्थंकर की मा० माता च० चक्रवर्ती की मा० माता ति० तीर्थंकर च० चक्रवर्ती ग० गर्भ में व० उत्पन्न होते ए० इन ती० तीस म० महास्वप्नमें से च० चौदह म० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती हैं ग० गज उ० वृषभ सी० सिंह अ० लक्ष्मी दा० माला स० चंद्र दि० सूर्य झ० ध्वजा कुं० कुंभ प० पद्म स० सरोवर सा० सागर वि० विमान भ० भवन र० रत्नोच्चय सि० अग्निशिखा वा० वासुदेवकी माता वा० वासुदेव ग० गर्भ में व०

सूत्र

तीसं महासुविणा बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा. तत्थणं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमाय-रोवा चक्कवट्टिमायरोवा, तित्थगरंसिवा चक्कवट्टिंसिवा गब्भंवक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चउद्दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति तं० गयउसभसीह अभिसेय दामससी दिणयरं झयकुंभं, पउमसरसागर विमाण (भवण) रयणच्चयसिहिंच ॥ १ ॥ वासुदेवमायरोवा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं

भावार्थ

करने लगे. अहो देवानुप्रिय ! हमारे स्वप्न शास्त्र में बीयालीस सामान्य स्वप्न व तीस महास्वप्न ऐसे सब मीलकर वहोत्तर स्वप्न कहे हैं. जब तीर्थंकर व चक्रवर्ती अपनी माता के गर्भ में आते हैं तब उन की माता उन तीस महास्वप्न में से चौदह स्वप्न देखकर जागृत होती है. उन के नाम. १ हस्ती २ वृषभ ३ सिंह ४ अभिषेक (लक्ष्मी का) ५ दो पुष्पमाला ६ चंद्र ७ सूर्य ८ ध्वजा ९ कुंभ १० पद्म सरोवर

शब्दार्थ देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा जा० यावत् आ० आरोग्य तु० तुष्टि दी० दीर्घायुष्यवाला क० कल्याणकारी जा० यावत् दि० देखा ॥२१॥ त०तब मे०वह ब०बलराजा सु०स्वप्न लक्षण पा० पाठक की अं० पास ए० इस अर्थ को सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट क० करतल जा० यावत् क० करके ते० उन स० स्वप्न लक्षण के पा० पाठक को ए० ऐसा व० बोला ए० ऐसे ही दे० देवानुप्रिय जा० यावत् ज० जैसे तु० तुम क० कहते हो त्ति० ऐसा करके तं० उन सु० स्वप्न को

सूत्र जाव आरोग्ग तुट्ठि दीहाउ कल्लाण जाव दिट्ठे ॥ २१ ॥ तएणं से बले राया सुविण लक्खण पाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ करयल जाव कट्टु ते सुविण लक्खण पाढगे एवं वयासी एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव सेजहेयं तुज्झे वदहात्तिकट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ २ त्ता, सुविण लक्खणपाढए विउलेणं असणपाण खाइम

भावार्थ पुत्र होगा. पुत्र की बाल्यावस्था व्यतीत हुए पीछे सब राजाओं का राजा होगा अथवा भावितात्मा अनगार होगा. इस मे प्रभावतीने कल्याणकारी आरोग्य तुष्ट यावत् दीर्घायुष्यवाला स्वप्न देखा है ॥२१॥ फीर बलराजा स्वप्न लक्षण पाठक की पास से ऐसा अर्थ सुनकर हृष्ट तुष्ट हुवे और हस्त जोडकर बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! तुमने जो कहा वह वैसे ही है. इस तरह स्वप्न इच्छकर स्वप्न लक्षण

म० म६.स्वप्न दि० देखा तं० उस उ० उदार दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा जा० यावत् आ० आरोग्य तु० तुष्टि क० कल्याणकारी मं० मंगलकारी दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवीने सु० स्वप्न दि० देखा अ० अर्थ लाभ भो० भोग पु० पुत्र र० राज्य लाभ दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवी ण० नवमास ब० बहुत प० पूर्ण होते जा० यावत् वी० व्यतीक्रमते सु० सुकुमार कु० कुलकेतु जा० यावत् दा० पुत्र का प० जन्मदेगी से० वह दा० पुत्र उ० मुक्त बा० बालभाव जा० यावत् र० राज्यपति रा० राजा भ० होगा अ० अनगार भा० भावितात्मा तं० उस उ० उदार दे०

आरोग्गतुट्ठि दीहाउकल्लाण मंगलकारएणं देवाणुप्पिया! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगपुत्तरज्जलाभो देवाणुप्पिया! एवं खलु देवाणुप्पिया पभावई देवी णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कंताणं तुब्भं कुलकेउं जाव दारगं पयाहिसि, सेवियणं दारए उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई राया भविस्सइ; अणगारे वा भावियप्पा ॥ तं उरालेणं देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे

स्वप्न देखकर जागृत होती है. ऐसे ही यह एक महास्वप्न प्रभावती देवीने देखा है. अहो देवानुप्रिय ! प्रभावती देवीने आरोग्य, उदार, तुष्टि व दीर्घायुष्य करनेवाला स्वप्न देखा है इस से अर्थ लाभ, भोग लाभ, पुत्र लाभ, व राज्यलाभ होगा. और सवानवमास पूर्ण हुवे पीछे तुम को कुल में केतु समान यावत्

माता जा० यावत् अ० अन्यतर ए० महास्वप्न पा० देखकर प० जागती है तु० तुमने दे० देवानुप्रिय ए० एक म० महास्वप्न दि० देखा जा० यावत् र० राज्यपति रा० राजा भ० होगा अ० अनगार भा० भावितात्मा तं० उस उ० उदार तु० तुमने दे० देवी सु० स्वप्न दि० देखा त्ति० ऐसा करके प० प्रभावती देवी को ता० उस इ० इष्ट दो० दूसरी वक्त त० तीसरी वक्त अ० कहा ॥ २२ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी ब० बलराजा की अं० पास ए० यह अर्थ सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु०

सूत्र

बावत्तरिं सव्वसुविणा ॥ तत्थणं देवाणुप्पिए! तित्थयरमायरोवा चक्कवट्टिमायरोवा तंचेव जाव अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति ॥ इमेणं तुम्हे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे जाव रज्जवईराया भविस्सइ, अणगारेवा भावियप्पा तं उरालेणं तुम्हे देवी! सुविणे दिट्ठेत्तिकट्टु, पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं दोच्चंपि तच्चंपि अणुबूहइ ॥ २२ ॥ तएणं सा पभावईदेवी बलस्सरण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म

भावार्थ

की माता तीर्थंकर व चक्रवर्ती गर्भ में आते समय चौदह स्वप्न देखती हैं यावत् तुमने इन में से एक स्वप्न देखा है इस से तुम को सवानव मास पूर्ण हुवे पीछे एक पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी. उन की बाल्यावस्था जब पूर्ण होगी तब वह अनेक राजाओं का राजा होगा अथवा भावितात्मा अनगार होगा. अहो देवी! इस से तुमने अच्छा स्वप्न देखा है-ऐसा कहकर प्रभावती देवी को दो तीनवार मिष्ट वचन से बोलाइ

शब्दार्थ स० सम्यक् प० अंगीकार करके सु० स्वप्न ल० लक्षण पा० पाठक को वि० विपुल अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम पु० पुष्प व० वस्त्र गं० गंध अ० अलंकार से स० सत्कार से स० सन्मान से वि० विपुल जी० आजीविका पी० प्रीतिदान द० देकर प० विसर्जन किये सी० सिंहासन से अ० उठकर जे० जहां प० प्रभावती देवी त० तहां उ० जाकर प० प्रभावती दे० देवी को ता० उन इ० इष्ट जा० यावत् सं० बोलते ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय ति० तीर्थंकर की मा० माता च० चक्रवर्ती की मा०

सूत्र

साइम पुप्फवत्थ गंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ २ त्ता पडिविसज्जेइ २ त्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता जेणेव पभावई देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव संलवमाणे २ एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा तीसं महासुविणा

भावार्थ पाठकों को अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र, गंध, माल्य व अलंकार से सत्कार सन्मानादि करके बहुत आजीविका योग्य प्रीतिकारी दान देकर विसर्जित किये और स्वयं प्रभावती देवी की पास आये. प्रभावती देवी को इष्टकारी, कांतकारी शब्दों से बोलाते हुवे ऐसा कहने लगे कि स्वप्न शास्त्र में बीयालीस सामान्य स्वप्न और तीस महास्वप्न ऐसे बहोत्तर स्वप्न कहे हैं. उन में से तीर्थंकर व चक्रवर्ती

स० सर्वालंकारसे वि० विभूषित तं० उस ग० गर्भ को ण० नहीं अ० अतिशीत से अ० अतिऊष्ण स अ० अति तिक्त से अ० अतिकटुक से अ० अतिकपाय से अ० अति अंबट से अ० अति मधुर से उ० ऋतु में भोग्य सु० सुख से भो० भोजन आ० आच्छादन गं० गंध म० माला से त० उस ग० गर्भ का हि० हित मि० परिमित प० पथ्य ग० गर्भ पोषण दे० देश का० काल आ० आहार करती वि० विविक्त म० मृदु स० शयन आ० आसन से प० विरक्त सु० सुख म० मनोनुकूलता से वि० विहारभूमि में प० प्रशस्त दो० दोहला सं० संपूर्ण दोहला स० सन्मानित दो० दोहला अ० अवमानित दो० दोहला वि० विच्छिन्न दो० दोहला वि०

तं गब्भं णाइसीतेहिं, णाइउण्हेहिं, णाइतित्तेहिं, णाइकडुएहिं, णाइकसाएहिं, णाइअंबिलेहिं, णाइमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं भोअणच्छादणगंधमल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हितं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसेय कालेय आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पतिरिक्कसुहाए मणाणुकुलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला, संपुण्णदोहला, सम्माणिय

भावार्थ हुइ अतिशीत, ऊष्ण, तिक्त, कटुक, कपाय, अम्बट व मधुर पदार्थ नहीं सेवने लगी. इस प्रकार ऋतु के प्रमाण से भोजन, वस्त्र, गंध, माला, अलंकार कि जो गर्भ को हित करनेवाले पथ्यकर हैं ऐसे भोजन से गर्भ को पोषती हुई देश काल उचित आहार पानी करती हुई, विविध प्रकार के सुकोमल शैय्यासन भोगवती हुई, जैसे गर्भ को सुख होवे वैसे करती हुई, मनोज्ञ विहार भूमि में विचरती हुई,

शब्दार्थ

तुष्ट क० करतल जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय जा० यावत् तं० उस सु० स्वप्न को स० सम्यक् प० ग्रहणकरे ब० बल र० राजा से अ० आज्ञापाई हुई णा० विविध म० मणि र० रत्न भ० खचित जा० यावत् अ० उठकर अ० त्वरा रहित अ० चपलता रहित जा० यावत् ग० गति से जे० जहां स० अपना भ० भुवन ते० तहां उ० आकर स० अपना भ० भुवन में अ० प्रवेश कीया २३ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी ण्हा० स्नान कीया क० कीया ब० बलीकर्म जा० यावत्

सूत्र

हट्ठतुट्ठकरयल जाव एवं वयासी एवमेयं देवाणुप्पिया! जाव तं सुविणंसम्मं पडिच्छइ२ त्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणिरयणभत्ति जाव अब्भुट्ठेइ, अतुरिय मचवल जाव गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ२त्ता, सयं भवणं अणुपविट्ठा ॥ २३ ॥ तएणं सा पभावई देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकार विभूसिया

भावार्थ

॥ २२ ॥ प्रभावती देवी भी बलराजा से ऐसा सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुई और बोली कि जो आपने कहा वह वैसे ही है यावत् इस तरह स्वप्न का अर्थ ग्रहणकर बल राजा की आज्ञा से अनेक प्रकार के मणि रत्नोंवाला सिंहासन से उपस्थित हुए और शीघ्रता व चंचलता रहित अपने भवन में गई ॥ २२ ॥ वहां प्रभावती देवीने स्नान किया, कोगले किये, तीलक मसादिक किये यावत् सर्वालंकार से विभूषित [illegible]

स० सर्वालंकारसे वि० विभूषित तं० उस ग० गर्भ को ण० नहीं अ० अतिशीत से अ० अतिऊष्ण स अ० अति तिक्त से अ० अतिकटुक से अ० अतिकषाय से अ० अति अंबट से अ० अति मधुर से उ० ऋतु में भोग्य सु० सुख से भो० भोजन आ० आच्छादन गं० गंध म० माला से त० उस ग० गर्भ का हि० हित मि० परिमित प० पथ्य ग० गर्भ पोषण दे० देश का० काल आ० आहार करती वि० विविक्त म० मृदु स० शयन आ० आसन से प० विरक्त सु० सुख म० मनोनुकूलता से वि० विहारभूमि में प० प्रशस्त दो० दोहला सं० संपूर्ण दोहला स० सन्मानित दो० दोहला अ० अवमानित दो० दोहला वि० विच्छिन्न दो० दोहला वि०

तं गब्भं णाइसीतेहिं, णाइउण्हेहिं, णाइतित्तेहिं, णाइकडुएहिं, णाइकसाएहिं, णाइअंबिलेहिं, णाइमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं भोअणच्छादणगंधमल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हितं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसेय कालेय आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पतिरिक्कसुहाए मणाणुकुलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला, संपुण्णदोहला, सम्माणिय

हुइ अतिशीत, ऊष्ण, तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट व मधुर पदार्थ नहीं सेवने लगी. इस प्रकार ऋतु के प्रमाण से भोजन, वस्त्र, गंध, माला, अलंकार कि जो गर्भ को हित करनेवाले पथ्यकर हैं ऐसे भोजन से गर्भ को पोषती हुई देश काल उचित आहार पानी करती हुई, विविध प्रकार के सुकोमल शैय्यासन भोगवती हुई, जैसे गर्भ को सुख होवे वैसे करती हुई, मनोज्ञ विहार भूमि में विचरती हुई,

सूत्र

दोहला, अवमाणियदोहला, विच्छिण्णदोहला, विणीयदोहला, ववगयरोगसोगमोह भयपरित्तासा तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥ २४ ॥ तएणं सा पभावई देवी णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीण पडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाता ॥ २५ ॥ तएणं तीसेय पभावईए देवीए अंगपडियारियाओ

शब्दार्थ

विनीत दो० दोहला व० रहित रो० रोग सो० शोक मो० मोह भ० भय प० परिमान मं० उस ग० गर्भ को सु० सुख से प० वृद्धि करे ॥ २४ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी न० नवमास व० बहुत प० पूर्ण अ० अर्ध अ० आठ रा० रात्रि दिवस वी० व्यतीक्रांत सु० सुकुमार पा० हस्तपांव अ० अहीन प० प्रतिपूर्ण पं० पंचेन्द्रिय स० शरीर ल० लक्षण वं० व्यंजन गु० गुणयुक्त जा० यावत् स० चंद्र सो० सौम्याकार कं० कांत पि० प्रियदर्शन सु० सुरूप दा० पुत्र का प० जन्म दिया ॥ २५ ॥

उत्पन्न हुए अच्छे दोहले पूर्ण करती हुई, वांच्छित दोहले करती हुई और रोग, शोक, भय व त्रास दूर करती हुई सुख पूर्वक गर्भ की वृद्धि करने लगी ॥ २४ ॥ अब प्रभावती देवी को सवानव मास पूर्ण हुए पीछे सुकोमल हस्तपांववाला, प्रतिपूर्ण पांचों इन्द्रियों व शरीरवाला, सब लक्षण व्यंजनादि गुणोंवाला यावत् शशी समान सौम्याकारवाला, कांत, प्रिय, दर्शनीय और सुरूप ऐसा पुत्र रत्न का जन्म हुआ

थ

त० तब प० प्रभावती दे० देवी की अं० अंग परिचारिका प० प्रभावती दे० देवी को प० प्रसूता जा० जानकर जे० जहां ब० बल रा० राजा ते० तहां उ० जाकर क० करतल ब० बल रा० राजा को ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसा व० बोली ए० ऐसे ख० खलु दे० देवानुप्रिय प० प्रभावती दे० देवीने ण० नव मा० मास ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण जा० यावत् दा० पुत्र प० जन्मदीया दे० देवानुप्रिय को पि० प्रिय के लिये णि० निवेदन करतीहूं पि० प्रिय भे० तुमको भ० होवे ॥२८॥ त० तब से० वह ब०

सूत्र

पभावतीं देवीं पसूयं जाणित्ता जेणेव बलेराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, करयल बलं रायं जएणं विजएणं बद्धावेंति २ त्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावई देवी णवण्हं मासाणं बहु पडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाता तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियंणिवेदेमो पियं भे भवउ ॥ २६ ॥ तएणं से बलेराया अंगपडियारियाणं

भावार्थ

॥ २८ ॥ उस समय में प्रभावती देवी की पास रहनेवाली दासी प्रभावती देवी को पुत्र का जन्म हुवा जानकर बल राजा की पास आइ. और दोनों हाथ जोडकर जयविजय शब्द से बल राजा को वधाकर कहने लगी अहो देवानुप्रिय ! प्रभावती देवी को सवानव मास पूर्ण होने से सर्व गुण लक्षण संपन्न पुत्र का जन्म हुवा है. आप को प्रीति उत्पन्न करने के लिये ऐसे समाचार की मैं वधाई देती हूं. आपकी प्रीति की वृद्धि होवो. और आप का कल्याण होवो ॥ २९ ॥ बल राजा अंगरक्षक दासी से ऐसा सुनकर

शब्दार्थ

विनीत दो० दोहला व० रहित रो० रोग सो० शोक मो० मोह भ० भय प० परिमाण सं० [illegible] गर्भ को सु० सुख से प० वृद्धि करे ॥ २४ ॥ त० तब सा० वह प० प्रभावती दे० देवी न० नवमास ब० बहुत प० पूर्ण अ० अर्ध अ० आठ रा० रात्रि दिवस वी० व्यतीक्रांत सु० सुकुमार पा० हस्तपांव अ० अहीन प० प्रतिपूर्ण पं० पंचेन्द्रिय स० शरीर ल० लक्षण वं० व्यंजन गु० गुणयुक्त जा० यावत् स० चंद्र सो० सौम्याकार कं० कांत पि० प्रियदर्शन सु० सुरूप दा० पुत्र का प० जन्म दिया ॥ २५ ॥

सूत्र

दोहला, अवमाणियदोहला, विच्छिण्णदोहला, विणीयदोहला, ववगयरोगसोगमोह भयपरित्तासा तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥ २४ ॥ तएणं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीण पडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाता ॥ २५ ॥ तएणं तीसेय पभावईए देवीए अंगपडियारियाओ

उत्पन्न हुए अच्छे दोहले पूर्ण करती हुई, वांच्छित दोहले करती हुई और रोग, शोक, भय व त्रास दूर करती हुई सुख पूर्वक गर्भ की वृद्धि करने लगी ॥ २४ ॥ अब प्रभावती देवी को सवानव मास पूर्ण हुए पीछे सुकोमल हस्तपांववाला, प्रतिपूर्ण पांचों इन्द्रियां व शरीरवाला, सब लक्षण व्यंजनादि गुणोंवाला यावत् शशी समान सौम्याकारवाला, कांत, प्रिय, दर्शनीय और सुरूप ऐसा पुत्र रत्न का जन्म हुवा

अर्थ

को० कौटुम्बिक पु० पुरुष को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय ह० हस्तिनापुर ण० नगर चा० बंदीवान को मुक्त क० करो मा० मान उ० उन्मान प० प्रमाण व० वृद्धि क० करो ह० हस्तिनापुर ण० नगर को स० आभ्यंतर बा० बाह्य आ० सिंचन स० संमार्जित ओ० उपलिप्त क० करो जू० यूप स० सहस्र च० चक्र स० सहस्र पू० पूजा म० महामहिमा स० सत्कार उ० उत्सव करो म० मुझ आ० आज्ञा प० पीछीदो त० तब से० वे को० कौटुम्बिक पुरुष व० बलराजा से ए० ऐसा

सूत्र

राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे णयरे चारगसोहणं करेह चारगसोहणं करेइत्ता माणुम्माणप्पमाणवद्धणं करेह, माणुमाणप्पमाणवद्धणं करेइत्ता, हत्थिणाउरं नयरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसम्मज्जिओवलित्तं जाव करेहिय कारवेहिय करेत्ताय कारवेत्ताय, जूवसहस्संवा चक्कसहस्संवा, पूयामहामहिमसक्कारंवा ऊसवेह २ त्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥ तएणं

भावार्थ

देवानुप्रिय ! तुम हस्तीनापुर नगर के कारागृह शीघ्र शुद्ध करो उन में रहेहुवे बंदी जनों को मुक्त करो. मान उन्मान प्रमाण की वृद्धि करो. हस्तिनापुर नगर की अंदर व बाहिर सुगंधि जल का सिंचन करो, कचवर दूर करो, गोबर प्रमुख से लींपों ऐसे सब कार्य करके मुझे मेरी आज्ञा पीछी दे दो. कौटुम्बिक पुरुषों ने

शब्दार्थ

बलराजा अं० अंग परिचारिका की अं० पास से ए० यह अर्थ सो० सुनकर नि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् धा० धारा से ह० हणाया जा० यावत् कू० कूप मे० इन अं० अंगपरिचारिका को म० मुकुट व० वर्जकर ज० जैसे मा० पहिने हुवे उ० आभरण द० देवे मे० श्वेत र० रजतमय वि० विमल स० सलिल पु० पूर्ण भि० भृंगार प० ग्रहणकर म० मस्तक धो० धोकर वि० विपुल आ० आजीविका दी० प्रीति दान द० देकर स० सत्कारकर स० सन्मान कर प० विसर्जन की॥२७॥ त० तब से० वह ब० बल रा० राजा

सूत्र

अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जाव कूवे, तासिं अंगपडि-
यारियाणं मउडवज्जं जहा मालियउमोयं दलयइ २ त्ता, सेतं रययामयं विमलसलिल
पुण्णभिंगारं पडिगिण्हइ २ त्ता मत्थए धोवेइ २ त्ता. विउलं जीवियारिहं पीइदाणं
दलयइ २ त्ता, सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ ॥ २७ ॥ तएणं से बले॰

अर्थ

बहुत हर्षित हुए संतुष्ट हुए यावत् रोमांचित हुवे, और अपना मुकुट सिवाय अन्य सब आभूषणों जैसे पहिने हुवे थे वैसेही दे दिये, जलसे भरीहुई झारी अपने हस्तमें लेकर उसदासी के मस्तक का प्रक्षालन किया और उनका दासीपना दूरकिया बहुत कालतक उपभोग में लेवे ऐसी आजीविका कर दी इस तरह सत्कार सन्मान देकर उनको विसर्जितकी॥२७॥फीर बलराजाने आज्ञाकारी पुरुषों को बोलाये और कहा कि अहो

अर्थ

को० कौटुम्बिक पु० पुरुष को स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोले खि० शीघ्र दे० देवानुप्रिय ह० हस्तिनापुर ण० नगर चा० बंदीवान को मुक्त क० करो मा० मान उ० उन्मान प० प्रमाण व० वृद्धि क० करो ह० हस्तिनापुर ण० नगर को स० आभ्यंतर बा० बाह्य आ० सिंचन स० संमार्जित ओ० उपलिप्त क० करो जू० यूप स० सहस्र च० चक्र स० सहस्र पू० पूजा म० महामहिमा स० सत्कार उ० उत्सव करो म० मुझ आ० आज्ञा प० पीछीदो त० तब से० वे को० कौटुम्बिक पुरुष व० बलराजा से ए० ऐसा

सूत्र

राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे णयरे चारगसोहणं करेह चारगसोहणं करेइत्ता माणुम्माणप्पमाणवद्धणं करेह माणुमाणप्पमाणवद्धणं करेइत्ता, हत्थिणाउरं नयरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसम्मज्जिओवलित्तं जाव करेहिय कारवेहिय करेत्ताय कारवेत्ताय, जूवसहस्संवा चक्कसहस्संवा, पूयामहामहिमसक्कारंवा ऊसवेह २ त्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥ तएणं

भावार्थ

देवानुप्रिय ! तुम हस्तीनापुर नगर के कारागृह शीघ्र शुद्ध करो उन में रहेहुवे बंदी जनों को मुक्त करो. मान उन्मान प्रमाण की वृद्धि करो. हस्तिनापुर नगर की अंदर व बाहिर सुगंधि जल का सिंचन करो, कचवर दूर करो, गोबर प्रमुख से लींपों ऐसे सब कार्य करके मुझे मेरी आज्ञा पीछी दे दो. कौटुम्बिक पुरुषों ने

शब्दार्थ

वु० बोलाये हुवे जा० यावत् प० पीछीदेते हैं ॥२८॥ त० तब व० बलराजा जे० जहां उ० दिवान खाना ते० तहां उ० जाकर जा० यावत् प० स्नानगृह से प० नीकलकर उ० उन्मुक्त उ० [illegible] उ० [illegible] अ० देना नहीं अ० प्रमाण रहित अ० भट प्रवेश करे नहीं अ० विना अपराध कु० कुदंड अ० धारणा ग० गणिका व० प्रधान ना० नाटक क० कालत अ० अनेक ता० [illegible] प० [illegible] अ० [illegible] मु० मृदंग अ० विनाकुमलाइ म० पुष्पमाला प० आनंदित प० क्रीडा सहित म० नगर के मनुष्यों अ०

सूत्र

से कोडुंवियपुरिसा बलेणं रण्णा एवं वुत्तसमाणा जाव पच्चप्पिणंति ॥ २८ ॥ तएणं से बलेराया जेणेव उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, तंचेव जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता उस्मुक्कं उक्कारं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्ज कलियं, अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं अमि-

भावार्थ

भी उस अनुसार सब करके उन को उन की आज्ञा पीछी दे दी ॥ २८ ॥ वहां से बल राजा दिवान खाना में गये वैसे ही यावत् मज्जन गृह से नीकलकर बाहिर से आती हुई वस्तुओं का कर, गृहादिक का कर, व अन्य के ऋण वगैरह लेने का प्रतिषेध किया. सुभटों को अन्य के गृह में प्रवेश करने का प्रतिषेध किया, नगर में स्थान २ में गणिका के नाटकों व मादल के आवाजों शुरू होने लगे, विकसित पुष्पों की मालाओं स्थान २ पर लटकाई, नगर के सब लोक प्रमुदित हुए. अनेक प्रकार की

शब्दार्थ

देशके मनुष्यों सहित द० दश दिवस ठि० जन्मोत्सव क० करे॥२९॥ त० तब से० वह ब० बलराजा द० दशदिवस ठि० जन्मोत्सव होते स० शत स० सहस्र स० लक्ष जा० योग वा० व्रत दा० दान भा० भाग द० देते द० दिलवाते स० शत स० सहस्र स० लक्ष ल० लेते प० ग्रहण करते वि० विचरता है ॥ ३० ॥ त० तब त० उस दा० पुत्रके अ० माता पिता प० पहिले दि० दिवस में ठिं० उत्सव क० करे त० तीसरे

सूत्र

लायमल्लदामं पमुदियपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदिवसे ठिइवडियं करेंति ॥ २९ ॥ तएणं से बलेराया दसदिसाए ठिइवडियाए सतएय साहस्सिएय सय साहस्सिएय जाएय वाएय दाएय भावेय दलमाणेय दवावेमाणेय सातिएय साहस्सिएय सयसाहस्सिएय लंभे पडिच्छमाणेय पडिच्छावेमाणेय एवं विहरइ ॥ ३० ॥ तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेंति. तइए दिवसे चंदसूर-

भावार्थ

क्रीडा सहित जनपद देश के लोकों ने दश दिन पर्यंत कुल की मर्यादा अनुसार जन्म महोत्सव किया. ॥ २९ ॥ बल राजा दश दिन तक पुत्र जन्म महोत्सव करते हुवे सेंकडो हजारो व लाखों रुपयों का खर्च कर योग पूजा वगैरह दान में देता हुवा व अन्य को देनेकी इच्छा कराता हुवा विचरता था ॥ ३० ॥ जन्म के पहिले दिन बालक का जन्म महोत्सव किया, तीसरे दिन चंद्रसूर्य का दर्शन कराया, छठे दिन रात्रि जागरणा की, अग्यारहवा दिन पूर्ण हुए

शब्दार्थ वु० बोलाये हुवे जा० यावत् प० पीछा देते हैं ॥२८॥ त० तब म० [illegible] ते० तहां उ० जाकर जा० यावत् म० मज्जनगृह से प० नीकलकर उ० [illegible] अ० देना नहीं अ० प्रमाण रहित अ० भट प्रवेश करे नहीं अ० विना अपराध [illegible] गणिका व० प्रधान ना० नाटक क० कालत अ० अनेक ता० [illegible] मु० मृदंग अ० विनाकुमलाइ म० [illegible] प० आनंदित [illegible] नगर के मनुष्यों [illegible]

सूत्र से कोडुंवियपुरिसा वलेणं रण्णा एवं वुत्तसमाणा जाव पच्चप्पिणंति ॥ २८ ॥ तएणं से बलेराया जेणेव उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, तंचेव जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्ज कलियं, अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमि०

भावार्थ भी उस अनुसार सब करके उन को उन की आज्ञा पीछी दे दी ॥ २८ ॥ वहां से बल राजा [illegible] खाना में गये वैसे ही यावत् मज्जन गृह से नीकलकर बाहिर से आती हुई वस्तुओं का कर, [illegible] का कर, गृहादिक का कर, व अन्य के ऋण वगैरह लेने का प्रतिषेध किया. सुभटों को अन्य के गृह में प्रवेश करने का प्रतिषेध किया, नगर में स्थान २ में गणिका के नाटकों व मादल के आवाजों शुरू होने लगे, विकसित पुष्पों की मालाओं स्थान २ पर लटकाई, नगर के सब लोक प्रमुदित हुए. अनेक प्रकार की

कु० कुलसंतान त० तंतु वि० वृद्धि करने वाला ए० इसरूप गो० गोण गु० गुणनिष्पन्न ना० नाम क० करे ज० जैसे अ० हम इ० यह दा० बालक ब० बलराजा का पु० पुत्र प० प्रभावती दे० देवी का अ० आत्मज अ० हम इ० इस दा० पुत्रका ना० नाम म० महाबल त० तब त० उस दा० पुत्रके अ० माता पिता ना० नाम क० कहते हैं म० महाबल ॥ ३१ ॥ त० तब से० वह म० महाबल पं० पंचधात्री प० रहा हुआ खी० क्षीरधात्री ए० ऐसे ज० जैसे द० दृढप्रतिज्ञ जा० यावत् णि० निपात

अयमेयारूवं गोणं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति, जम्हाणं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए तं होउणं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महब्बले तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति 'महब्बल' इति ॥ ३१ ॥ तएणं से महब्बले दारए पंचधाई परिग्गहिए तं० खीरधाई एवं जहा दढप्पइण्णे जाव

सन्मुख दादा, पडदादा, पिताके दादा, से चला आता, बहुत पुरुषों की परंपरा से आता हुआ कुल को योग्य, कुल संतान तंतु की वृद्धि करनेवाला ऐसा गुण निष्पन्न नाम दिया. यह बालक बल राजा का पुत्र व प्रभावती देवी का आत्मज है इस से इस पुत्रका नाम महाबल होवो ऐसी नामकी स्थापना की और मातपिताने भी महाबल नाम रखा ॥ ३१ ॥ अब महाबल कुमार क्षीरधाई, मंजन धाई, मंडन धाई, खिलानेवाली धाई व अंक धाई यों पांच प्रकार की धाईयों से वृद्धि पाने लगा वगैरह सब कथन जैसे उववाइ

शब्दार्थ — दिवस में चं० चंद्र सू० सूर्य दं० दर्शन क० करे छ० छट्टे दि० दिवस में जा० जागरणा क० करे ए० इग्यारहवा दि० दिवस वी० व्यतिक्रान्त णि० निवृत्ति अ० अशुचि जा० जातिकर्म करन सं० संपन्न बा० बारहवे दि० दिवस अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० तैयारकर जै० जैसे सि० शिवराजर्षि जा० यावत् ख० क्षत्रिय को आ० आमंत्रन कर त० पीछे ण्हा० स्नान कं० किया जै० जैसे जा० यावत् स० सत्कारकर स० सन्मान देकर मि० मित्र णा० ज्ञाति जा० यावत् ख० क्षत्रियों को पु० आदि अ० दादा प० पड़दादा पि० पिताका पड़दादा ब० बहुत पुरुष प० परंपरा प० रूढ़ाने कु० कुलका कु० कुलकी

सूत्र — दंसावणियं करेंति, छट्टेदिवसे जागरियं करेंति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते निव्वत्ते, असुइजाइकम्मकरणे संपत्ते, बारसाहदिवसे विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडा-वेंति २त्ता जहा सिवो जाव खत्तिए आमंतेइ २त्ता तओ पच्छा ण्हाया कय जाव सक्कारेंति सम्माणेंति २ त्ता, तस्सेव मित्तणाइ जाव खत्तियाणय पुरओ अज्जय पज्जय पिउपज्जयागयं, बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कुलाणुरूवं कुलसरिसं कुलसंताणतंतुवद्धणकरं,

पीछे अशुचि कर्म दूर किया और बारह वे दिनमें अशन, पान, खादिम व स्वादिम बना कर जैसे शिव राजर्षि के अध्ययन में अपने ज्ञाति जनों को किया था वगैरह जो अधिकार है वह सब यहां जानना. यावत् क्षत्रियों को आमंत्रणा करके सब की साथ भोजन कर सब का सत्कार सम्मान वैसे ही सब के

कु० कुलसंतान त० तंतु वि० वृद्धि करने वाला ए० इसरूप गो० गौण गु० गुणनिष्पन्न ना० नाम क० करे ज० जैसे अ० हम इ० यह दा० बालक ब० बलराजा का पु० पुत्र प० प्रभावती दे० देवी का अ० आत्मज अ० हम इ० इस दा० पुत्रका ना० नाम म० महाबल त० तब त० उस दा० पुत्रके अ० माता पिता ना० नाम क० कहते हैं म० महाबल ॥ ३१ ॥ त० तब से० वह म० महाबल पं० पंचधात्री प० रहा हुआ खी० क्षीरधात्री ए० ऐसे ज० जैसे द० दृढप्रतिज्ञ जा० यावत् णि० निघात

अयमेयारूवं गोणं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति, जम्हाणं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए तं होउणं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महब्बले तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति 'महब्बल' इति ॥ ३१ ॥ तएणं से महब्बले दारए पंचधाई परिग्गहिए तं० खीरधाई एवं जहा दढप्पइण्णे जाव

सन्मुख दादा, पडदादा, पिताके दादा, से चला आता, बहुत पुरुषों की परंपरा से आता हुआ कुल को योग्य, कुल संतान तंतु की वृद्धि करनेवाला ऐसा गुण निष्पन्न नाम दिया. यह बालक बल राजा का पुत्र व प्रभावती देवी का आत्मज है इस से इस पुत्रका नाम महाबल होवो ऐसी नामकी स्थापना की और मातपिताने भी महाबल नाम रखा ॥ ३१ ॥ अब महाबल कुमार क्षीरधाई, मंजन धाई, मंडन धाई, खिलानेवाली धाई व अंक धाई यों पांच प्रकार की धाईयों से वृद्धि पाने लगा वगैरह सब कथन जैसे उववाइ

पदार्थ — नि० निर्व्याघात सु० सुख से प० वृद्धिपाता है ॥ ३१ ॥ त० तब त० उस म० महाबल दा० पुत्र के अ० माता पिता अ० अनुक्रम से टि० उत्सव चं० चंद्र सू० सूर्य दं० दर्शन [illegible] प० भूमि में चलन प० पांवसे चलना जे० भोजन करना पि० पिंडवृद्धि प० बोलना [illegible] करना उ० कलाभ्यास अ० अन्य ब० बहुत ग० गर्भादान ज० जन्म आ० आदि को० कौतुक [illegible]

सूत्र — णिव्वायणिव्वाघायंति, सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ॥ ३२ ॥ तएणं तस्स महाबलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइपडियंच चंदसूरदंसणावणियंवा, जागरियंवा, नामकरणं वा, परगामणंवा, पयचंकमाणंवा जेमावणंवा पिंडवद्धणंवा पजंपावणंवा [illegible] संवच्छरपडिलेहणंवा चोलोवणगंवा उवणयणंवा अण्णाणि बहूणि गब्भाधाणजम्मण मादियाइं कोउयाइं करेंति ॥ ३३ ॥ तएणं तं महाब्बलं कुमारं अम्मापियरो साइरे-

भावार्थ — सूत्र में दृढप्रतिज्ञ कुमार का कहा वैसे ही यहां कहना यावत् जैसे पर्वत की गुफा में [illegible] सुख से वृद्धि पाता है ऐसे ही महाबल कुमार वृद्धि पाने लगा ॥ ३२ ॥ अब मातपिताने जन्म दिन से अनुक्रम से १ स्थिति कल्प २ चंद्र सूर्य दर्शन ३ जागरणा ४ नाम की स्थापना करना ५ भूमि पर [illegible] रहना ६ पांव से चलने का ७ जिमाने का ८ कवल वृद्धि का ९ बोलने का १० कर्ण छेद का ११ वर्ष गांठ का १२ चोटी रखने का १३ कला शिक्षण का वगैरह और अन्य भी ऐसे अनेक गर्भ धारन, जन्मादि

॥ ३३ ॥ त० तब तं० उस म० महाबल कुमार के अ० माता पिता सा० अधिक अ० आठवर्ष का जा० जानकर सो० शुभ ति० तिथि क० करण मु० मुहूर्त में ए० ऐसे ज० जैसे द० दृढ प्रतिज्ञी ज० यावत् अ० योग्य भो० भोग समर्थ जा० जागृत हो० हुवा त० तब तं० उस म० महाबल कु० कुमार को उ० उन्मुक्त बा० बाल भाव अ० योग्य भो० भोग समर्थ जा० जानकर अ० आठ पा० प्रासाद अ० अवतंसक का० करावे अ० गयेहुवे ऊ० ऊंचे प० हसते हुवे व० वर्णन युक्त ज० जैसे रा० रायप्रश्रेणी जा० यावत् प० प्रतिरूप तं० उन पा० प्रासाद अं० अवतंसक ब० बहुत म० मध्य में म०

सूत्र

गट्ठवासगं जाणित्ता, सोभणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि एवं जहा दढप्पइण्णे जाव अलंभोगसमत्थे जागरेयावि होत्था ॥ तएणं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं अलंभोगसमत्थेवि जाणित्ता अम्मापियरो अट्ठपासायवडिंसए कारेंति, अब्भुग्गय मूसिय पहसिएइव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पडिरूवे; तेसिणं पासायवडिं-

भावार्थ

रत्नाभिसरणादि उत्सव किये ॥ ३३ ॥ जब महाबल कुमार आठ वर्ष से अधिक के हुवे तब शोभनिक (अच्छी) तीथि व मुहूर्त में दृढ प्रतिज्ञी कुमारवत् विद्याभ्यास कराया यावत् भोग पर्याप्त अवस्था अंगो से जानकर महाबल के मातपिताने सब प्रासादों में मुकुट समान ऐसे आठ प्रासाद बनाये. इस का सब

पदार्थ

नि० निर्व्याघात सु० सुख से प० वृद्धिपाता है ॥ ३० ॥ त० तब त० उस म० महाबल दा० पुत्र के [illegible] अ० माता पिता अ० अनुक्रम से ठि० उत्सव चं० चंद्र सू० सूर्य दं० दर्शन जा० जागरणा ना० [illegible] प० भूमि में चलन प० पांवसे चलना जे० भोजनकर्दे पिं० पिंडवृद्धि प० बोलना क० [illegible] करना उ० कलाभ्यास अ० अन्य ब० बहुत ग० गर्भादान ज० जन्म आ० आदि को० कौतुक [illegible]

सूत्र

णिव्वायणिव्वाघायंसि, सुहंसुहेणं परिवढ्इ ॥ ३२ ॥ तएणं तस्स महाबलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइपडियंच चंदसूरदंसणावणियंवा, जागरियंवा, नामकरणं वा, परंगामणंवा, पयचंकमणंवा जेमावणंवा पिंडवद्धणंवा पजंपावणंवा कण्णवेहणंवा संवच्छरपडिलेहणंवा चोलोवणगंवा उवणयणंवा अण्णाणि बहूणि गब्भादाणजम्मण मादियाइं कोउयाइं करेंति ॥ ३३ ॥ तएणं तं महाब्बलं कुमारं अम्मापियरो साइरे०

भावार्थ

सूत्र में दृढप्रतीज्ञ कुमार का कहा वैसे ही यहां कहना यावत् गिरि गुफा में चंपक वृक्ष [illegible] सुख से वृद्धि पाता है ऐसे ही महाबल कुमार वृद्धि पाने लगा ॥ ३२ ॥ अब मातपिताने जन्म दिन में अनुक्रम से १ स्थिति कल्प २ चंद्र सूर्य दर्शन ३ जागरणा ४ नाम की स्थापना करना ५ भूमि पर खडा रहना ६ पांव से चलने का ७ जिमाने का ८ कवल वृद्धि का ९ बोलने का १० कर्ण छेद का ११ वर्ष गांठ का १२ चोटी रखने का १३ कला शिक्षण का वगैरह और अन्य भी ऐसे अनेक गर्भ धारन, जन्मादि

दार्थ

को० कौतुक मं० मंगल उ० उपचार सं० शांतिकर्म स० सदृस स० सरिखी स० सरिखी त्वचावाली स० सरिखी वयवाली स० सरिखा ला० लावण्य रू० रूप जो० यौवन गु० गुणयुक्त वि० विनीत क० किया को० कोगले पा० तीलमसादि स० सरिखे रा० राजकुल से आ० लाइ हुइ अ० आठ रा० राजा में व० श्रेष्ठ क० कन्या का ए० एकदिवस में पा० हस्त गि० ग्रहण कराया ॥३८॥ त० तब त० उस म० महाबल कु० कुमार के अ० माता पिता ए० इसरूप पी० मीतिदान द० देवे अ० आठ हि० हिरण्य कोडी अ० आठ

सूत्र

एहिय वरकोउयमंगलोवयारकयसंतिकम्मं सरिसियाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सारिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं विणीयाणं कयकोउयमंगलपायच्छित्ताणं सरिसएहि रायकुलेहिं अणिल्लियाणं अट्ठण्हं रायवरकण्णाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु ॥ ३५ ॥ तएणं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं पीति-

भावार्थ

अलंकारों से शरीर विभूषित किया, मर्दन, उगटणा, गीत, वादित्र, मंडन विशेष, तीलक, और सौभाग्यवती स्त्री से कुसुम्बी रंग के दोरे का बंधना इतने कार्य किये. फीर मधान मंगलिक वचन बोले मधान कौतुक मंगलरूप उपचारकिया. और शांतिकर्म वगैरह करके महाबल कुमारके एक सरीखी रूपवाली वयवाली वर्णवाली व लावण्यवाली ऐसी आठ राजकुमारियों को भी मांगलिक क्रियाओं कराके एक ही दिन उन सब का महाबल कुमार से पाणि ग्रहण कराया ॥ ३५ ॥ फीर महाबल कुमार के मातपिताने आठ क्रोड चांदी

पदार्थ

एकवडा भ० भुवन का० करवाया अ० अनेक खं० स्तंभ स० शत स० सहित व० वर्णन [illegible] राय प्रसेणीय में पे० प्रेक्षागृह मं० मंडप में जा० यावत् प० प्रतिरूप ॥ ३४ ॥ [illegible] कुमार के अ० माता पिता अ० अन्यदा कदापि सो० शुभ ति० तिथि [illegible] दि० दिवस [illegible] मु० मुहूर्त में ण्हा० स्नान किया क० बलीकर्म कीया क० [illegible] अलंकार वि० विभूषित प० मर्दन ण्हा० स्नान गी० गीत वा० वादित्र [illegible] ति० तिलक कं० कंकण अ० सौभाग्यवंती व० वधू ह० किया मं० मंगल [illegible]

मूल

सगाणं बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महेगेभवणं कारेंति, अणेगखंभसय सन्निविट्ठं वण्णओ जहारायप्पसेणइज्जे, पेच्छाघरमंडवंसि जाव पडिरूवे ॥ ३४ ॥ तएणं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो अण्णयाकयाइं सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हाय कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणगं ण्हाणं गीयवाइयंपसोहणट्ठगं तिलगकंकणअविहयवहुउवणीयं मंगलसुजंपि

वर्णन रायप्रसेणी सूत्र से जानना. उक्त आठ प्रासादावतंसक की मध्य में अनेक स्तंभवाला एक बडा भवन बनवाया. उस का भी वर्णन रायप्रसेणी सूत्र में से जानना ॥ ३४ ॥ अब एकदा किसी शुभ तीथि व मुहूर्त में महाबल कुमार के मातापिताने उन को स्नान कराया, बलिकर्म किया, तीलकादिक किये [illegible]

दार्थ

को० कौतुक मं० मंगल उ० उपचार सं० शांतिकर्म स० सदृश स० सरिखी स० सरिखी त्वचावाली स० सरिखी वयवाली स० सरिखा ला० लावण्य रू० रूप जो० यौवन गु० गुणयुक्त वि० विनीत क० किया को० कौतुक मं० मंगल पा० तीलमसादि स० सरिखे रा० राजकुल से आ० लाइ हुइ अ० आठ रा० राजा में व० श्रेष्ठ क० कन्या का ए० एकदिवस में पा० हस्त गि० ग्रहण कराया ॥३८॥ त० तब त० उस म० महाबल कु० कुमार के अ० माता पिता ए० इसरूप पी० प्रीतिदान द० देवे अ० आठ हि० हिरण्य कोडी अ० आठ

सूत्र

एहिय वरकोउयमंगलोवयारकयसंतिकम्मं सरिसियाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं विणीयाणं कयकोउयमंगलपायच्छित्ताणं सरिसएहि रायकुलेहिं अणिल्लियाणं अट्ठण्हं रायवरकण्णाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु ॥ ३५ ॥ तएणं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं पीति-

भावार्थ

अलंकारों से शरीर विभूषित किया, मर्दन, उगटणा, गीत, वादिंत्र, मंडन विशेप, तीलक, और सौभाग्यवती स्त्री से कुसुम्बी रंग के दोरे का बंधना इतने कार्य किये. फीर प्रधान मंगलिक वचन बोले प्रधान कौतुक मंगलरूप उपचारकिया. और शांतिकर्म वगैरह करके महाबल कुमारके एक सरीखी रूपवाली वयवाली वर्णवाली व लावण्यवाली ऐसी आठ राजकुमारियों को भी मांगलिक क्रियाओं कराके एक ही दिन उन सब का महाबल कुमार से पाणि ग्रहण कराया ॥ ३८ ॥ फीर महाबल कुमार के मातपिताने आठ क्रोड चांदी

एकवडा भ० भुवन का० करवाया अ० अनेक खं० स्तंभ स० शत स० सहित व० वर्णन युक्त म० मैसे रा० राय प्रसेणीय में पे० प्रेक्षागृह मं० मंडप में जा० यावत् प० प्रतिरूप ॥ ३५ ॥ त० तब म० महाबल कुमार के अ० माता पिता अ० अन्यदा कदापि सो० शुभ ति० तिथि क० करण दि० दिवस न० नक्षत्र मु० मुहूर्त में ण्हा० स्नान किया क० बलीकर्म कीया क० कौतुक किये मं० तीलमसादि म० मंगल भ० अलंकार वि० विभूषित प० मर्दन ण्हा० स्नान गी० गीत वा० वादित्र प० मन्डन अ० आठ अंग के ति० तिलक कं० कंकण अ० सौभाग्यवंती व० वधू उ० किया मं० मंगल सु० श्रेष्ठ वचन से प० प्रधान

सगाणं बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महेगंभवणं कारेंति, अणेगखंभसय सण्णिविट्ठं वण्णओ जहारायप्पसेणइज्जे, पेच्छाघरमंडवंसि जाव पडिरूवे ॥ ३५ ॥ तएणं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो अण्णयाकयाइं सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हाय कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणगं ण्हाणं गीयवाइयंपसाहणट्ठंगं तिलगकंकणअविहयवहुउवणीयं मंगलंसुजंपि

वर्णन रायप्रसेणी सूत्र से जानना. उक्त आठ प्रासादावतंसक की मध्य में अनेक स्तंभवाला एक बडा भवन बनवाया. उस का भी वर्णन रायप्रसेणी सूत्र में से जानना ॥ ३५ ॥ अब एकदा किसी शुभ तीथि व मुहूर्त में महाबल कुमार के मातापिताने उन को स्नान कराया, बलिकर्म किया, तीलमसादिक किये सब

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

णिउसो, अट्ठईसो, दुविईसो, तिविंसो, दुईसो, लच्छीसो, अट्ठणवइं, अट्ठ [illegible]
नवइं, अट्ठले तलन्वे, सत्तन्वकायर, निन्नवइ नवनउइं, अट्ठसीइ छन्न-
वइ, अट्ठवइ, वयन्नवइ, (वत्तीसइहिसियं वत्तं) अट्ठ नाडगाइं नाडगन्वइ,
वत्तीसं वद्धं नाडयं, अट्ठ ने आनन्वइ, सत्तन्वयनाद सिरिवाडिस्स,
अट्ठहये इतिवन्वइ, सत्तवयनाद सिरिवाडिस्स, अट्ठसनाइं जानन्वाइं,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

शब्दार्थ सु० सुवर्ण कोडी अ० आठ म० मुकुट म० मुकुट में प्रधान अ० आठ कुंडल जोड कुं० कुंडल जोड में प्रधान अ० आठहार हा० हार में प्रधान अ०आठ अर्धहार अ०अर्धहार में प्रधान अ० आठ ए० एकावली ए० एकावली में प०प्रधान ए० ऐसे मु० मुक्तावली क० कनकावली र० रत्नावली अ० आठ क० कडी जोड तु० बाजु बंध की जोड खो० कपास के वस्त्र जु० युगल प० प्रधान व० टसरिये वस्त्र प० पट्टवस्त्र

सूत्र दाणं दलयति, तंजहा अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ कुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे, अट्ठहारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे. अट्ठएगावलीओ, एगावलिप्पवराओ, एवं मुत्तावलीओ, एवं कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ अट्ठकडगजोए कडगजोयप्पवरे, एवं तुडियजोए, अट्ठ खोमजुयलाइं, खोमजुयलप्पवराइं, एवं वडगजुयलाइं, एवं पट्टजुयलाइं, एवं दुगुल्लजुयलाइं, अट्ठ

भावार्थ के सिक्के आठ क्रोड सौनये, आठ श्रेष्ट मुकुट, आठ कुंडल के जोडे, आठ श्रेष्ठ हार, आठ अर्ध हार, आठ एकावली हार, आठ मुक्तावली, आठ कनकावली, आठ रत्नावली, आठ कडों की जोडी, आठ बाजुबंध, आठश्रेष्ठ क्षोमयुगल [कपास के] वस्त्र, आठ श्रेष्ट टसरीये वस्त्र, आठ पट्टसूत्रय युगल, आठ श्रेष्ठ श्रीदेवी प्रतिमा, आठ ह्री देवी प्रतिमा, आठ धृतिदेवी प्रतिमा, आठ कीर्ति देवी प्रतिमा, आठ बुद्धि देवी प्रतिमा, आठ लक्ष्मी देवी प्रतिमा, आठ नंदासन, आठ भद्रासन, आठ रत्नों के बनाये हुवे ताल वृक्ष, आठ ध्वजा,

पदार्थ — दु० दुकुलवस्त्र सि० श्री हि० ह्री धि० धृति कि० कीर्ति बु० बुद्धि ल० लक्ष्मी नं० नंदादि भ०भद्रासन त० तल त०तालमें श्रेष्ठ स०सर्व र०रत्नामय नि०निजक व०प्रधान भ०भवन केतु अ०आठ ध्वजा अ०आठ व०व्रज ना० नाकट अ० अश्व स०सर्व र०रत्नमय सि०श्रीगृह प०जैसे अ०आठ ह०हस्ती अ०आठ यान अ०आठ युग ए० ऐसे सि० शिविका सं० संदामिनी गि०अबाडी थि० थिल्ली वि० विकटयान र० रथ प०क्रीडा केलिये

सूत्र — सिरीओ, अट्ठहिरीओ, एवंधिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ. लच्छीओ, अट्ठनंदाइं, अट्ठ भद्दाइं, अट्ठतले तलप्पवरे, सव्वरयणामए, णियगवर भवणकेउं, अट्ठज्झए ज्झयप्पवरे, अट्ठवए, वयप्पवरे, (दसगोसाहस्सिएणं वएणं) अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवरे, बत्तीसं बद्धेणं नाडएणं, अट्ठआसे आसप्पवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठहत्थी हत्थिप्पवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठजाणाइं जाणप्पवराइं,

भावार्थ — आठ गोकुल, आठ बत्तीस प्रकार के नाटक करनेवाले, सर्व रत्नमय श्रीगृह को शोभानिक ऐसे आठ श्रेष्ठ अश्व आठ श्रेष्ठ हस्ती, आठ यान, आठ श्रेष्ठ युग, आठ शिविका, आठ संदामनी, आठ हस्ती की अंबाडी, आठ ऊंट की थिल्ली, आठ विकटयान, आठ क्रीडा करने के रथ, आठ संग्राम के रथ, आठ घोडे, आठ हाथी, आठ श्रेष्ठ ग्राम (दश हजार कुल का ग्राम) आठ दास, आठ दासियों, आठ किंकर, आठ कंचुकी आठ वर्षधार भंडारी, आठ हिसाबी, आठ वणिक, आठ पोलिया, आठ सोने की सांकलवाले दीपक,

शब्दार्थ सु० सुवर्ण कोडी अ० आठ म० मुकुट म० मुकुट में प्रधान अ० आठ कुंडल जोड कुं० कुंडल जोड में प्रधान अ० आठहार हा० हार में प्रधान अ०आठ अर्धहार अ०अर्धहार में प्रधान अ० आठ ए० एकावली ए० एकावली में प०प्रधान ए० ऐसे मु० मुक्तावली क० कनकावली र० रत्नावली अ० आठ क० कडेकी जोड तु० बाजु बंध की जोड खो० कपास के वस्त्र जु० युगल प० प्रधान व० टसरिये वस्त्र प० पटवस्त्र

सूत्र दाणं दलयति, तंजहा अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ कुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे, अट्ठहारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे. अट्ठएगावलीओ, एगावलिप्पवराओ, एवं मुत्तावलीओ, एवं कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ अट्ठकडगजोए कडगजोयप्पवरे, एवं तुडियजोए, अट्ठ खोमजुवलाइं, खोमजुवलप्पवराइं, एवं वडगजुवलाइं, एवं पट्टजुवलाइं, एवं दुगुल्लजुवलाइं, अट्ठ

के सिक्के आठ क्रोड सौनये, आठ श्रेष्ठ मकुट, आठ कुंडल के जोडे, आठ श्रेष्ठ हार, आठ अर्ध हार, आठ एकावली हार, आठ मुक्तावली, आठ कनकावली, आठ रत्नावली, आठ कडों की जोडी, आठ बाजुबंध, आठश्रेष्ठ क्षोमयुगल [कपास के] वस्त्र, आठ श्रेष्ठ टसरीये वस्त्र, आठ पटसूत्रमय युगल, आठ श्रेष्ठ श्रीदेवी प्रतिमा, आठ ह्री देवी प्रतिमा, आठ धृतिदेवी प्रतिमा, आठ कीर्ति देवी प्रतिमा, आठ बुद्धि देवी प्रतिमा, आठ लक्ष्मी देवी प्रतिमा, आठ नंदासन, आठ भद्रासन, आठ रत्नों के बनाये हुवे ताल वृक्ष, आठ ध्वजा,

शब्दार्थ दु० दुकुलवस्त्र सि० श्री हि० ह्री धि० धृति कि० कीर्ति बु० बुद्धि ल० लक्ष्मी नं० नंदादि भ० भद्रासन त० तल त० तालमें श्रेष्ठ स० सर्व र० रत्नामय नि० निजक व० प्रधान भ० भवन केतु अ० आठ ध्वजा अ० आठ व० व्रज ना० नाकट अ० अश्व स० सर्व र० रत्नमय सि० श्रीगृह प० जैसे अ० आठ ह० हस्ती अ० आठ यान अ० आठ युग ए० ऐसे सि० शिबिका सं० संदामिनी गि० अवाडी थि० थिल्ली वि० विकटयान र० रथ प० क्रीडा केलिये

सूत्र सिरीओ, अट्ठहिरीओ, एवंधिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ. लच्छीओ, अट्ठनंदाइं, अट्ठ भद्दाइं, अट्ठतले तलप्पवरे, सव्वरयणामए, णियगवर भवणकेउं, अट्ठज्झए ज्झयप्पवरे, अट्ठवए, वयप्पवरे, (दसगोसाहस्सिएणं वएणं) अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवरे, बत्तीसं वद्धेणं नाडएणं, अट्ठआसे आसप्पवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठहत्थी हत्थिप्पवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठजाणाइं जाणप्पवराइं,

भावार्थ आठ गोकुल, आठ बत्तीस प्रकार के नाटक करनेवाले, सर्व रत्नमय श्रीगृह को शोभानेक ऐसे आठ श्रेष्ठ अश्व आठ श्रेष्ठ हस्ती, आठ यान, आठ श्रेष्ठ युग, आठ शिबिका, आठ संदामनी, आठ हस्ती की अंबाडी, आठ ऊंट की थिल्ली, आठ विकटयान, आठ क्रीडा करने के रथ, आठ संग्राम के रथ, आठ घोडे, आठ हाथी, आठ श्रेष्ठ ग्राम (दश हजार कुल का ग्राम) आठ दास, आठ दासियों, आठ किंकर, आठ कंचुकी आठ वर्षधार भंडारी, आठ हिसावी, आठ वणिक, आठ पोलिया, आठ सोने की सांकलवाले दीपक,

शब्दार्थ र०रथ सं०संग्राम केलिये अ०अश्व ह०हस्ती गा०ग्राम दश कुं०कुलसहस्र मे गा०ग्राम दा० दास किं०किंकर कं०कंचुकिनी व० वर्षधर म० महत्तर सो० सोनेकी सांकल रू० चांदी की सु०सोना चांदी की सो० सोना के ओ० ऊंचे दीवे ए० ऐसे ति० तीन सो० सोना के पं० पिंजर वाले दीवे सो० सोना के था० थाल रू० रुपा के था० थाल सो० सोना रुपाके था० थाल प० पगात थो० आयना म० मल्लक भाजन

सूत्र. अट्ठजुग्गाइं, जुग्गप्पवराइं, एवं सिवियाओ संदमाणीओ, एवं गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं, अट्ठरहे पारिजाणीए; अट्ठरहे संगामिए अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठगामे गामप्पवरे (दस कुलसाहस्सि-एणं गामेणं) अट्ठदासे दासप्पवरे, एवं दासीओ, एवं किंकरे, एवं कंचुइज्जे, एवं

आठ रूपे की सांकलवाले दीपक, आठ सोने रूपे की मीली सांकलवाले दीपक, आठ २ सोने, रूपे व सोने रूपे के ऊंचे दण्डवाले दीपक, सोने के, रूपे के, व सोने रूपे के आठ २ पिंजरवाले दीपक. आठ सुवर्ण के थाल, आठ रूपे के थाल, आठ सुवर्ण रूपे के थाल, आठ सुवर्ण पात्र, आठ रूपे के पात्र, आठ सुवर्ण रूपे के पात्र आठसुवर्ण, की आरसी के आकारवाले पात्र, आठ रूपेकी आरसी के आकारवाले पात्र, और आठ सुवर्ण रूपे की आरसी के आकारवाले पात्र, आठ सोने के मल्लक [भाजन] आठ रूपे के मल्लक, आठ सोने,

पदार्थ त० रकाबी क० चमचे अ० भाजन विशेष अ० तवा विशेष पा० पादपीठिका ... लोटा पं० पल्यंक प० प्रतिशय्या हं० हंसासन को० क्रौंचासन ग० गरुडासन उ० उन्नतासन प० अवनतासन दी० दीर्घासन भ० भद्रासन प० पक्षासन म० मकरासन प० पद्मासन दि० दिशा स्वस्तिकासन ते० तेलके दाबडे ज० जैसे रा० रायपसेनी म० सर्षव के दाबडे खु० खोजे ज० जैसे उ० उववाइ में

सूत्र वरिसहरे, एवं महत्तरए. अट्ठसोवण्णिए ओलंवणदीवे, अट्ठरुप्पमए, ओवलंवणदीवे, अट्ठसुवण्णरुप्पमए, ओवलंवणदीवे, अट्ठसोवण्णए ओकंचणदीवे, एवं चेव तिण्णिवि. अट्ठसोवण्णिए पंजरदीवे एवंचेव तिण्णिवि, अट्ठसोवण्णए थाले, अट्ठरुप्पमए थाले, अट्ठ सोवण्णरुप्पमए थाले, अट्ठसोवण्णियाओ पत्तीओ ३, अट्ठसोवण्णियाइं घोसयाइं, अट्ठ सोवण्णियाइं मल्लगाइं ३, अट्ठसोवण्णियाओ तलियाओ ३, अट्ठ

भावार्थ रूपे के मल्लका, सोने की, रूपे की व सोने रूपेकी आठ २ रकेबी, सोने के, रूपे के व सोने रूपेके आठ २ चमचे, सोने के, रूपे के व सोने रूपे के आठ तवे, सोने, रूपे व सोने रूपे की आठ २ कढाइ, सोने, रूपे व सोने रूपे की आठ २ पादपीठिका, सोने, रूपे व सोने रूपे के आठ आसन, सोने, रूपे व सोने रूपे के आठ कलश, सोने के, रूपे के व सोने रूपे के आठ पलंग, सोने, रूपे व सोने रूपे के आठ छोटे पलंग, आठ हंस के आकारवाले आसन, आठ क्रौंच के आकारवाले आसन, आठ गरुडासन, आठ उन्नत आसन,

शब्दार्थ र० रथ सं० संग्राम के लिये अ० अश्व ह० हस्ती गा० ग्राम दश कुं० कुलसहस्र से गा० ग्राम दा० दास किं० किंकर कं० कंचुकिनी व० वर्षधर म० महत्तर सो० सोनेकी सांकल रु० चांदी की सु० सोना चांदी की सो० सोना के ओ० ऊंचे दीवे ए० ऐसे ति० तीन सो० सोना के पं० पिंजर वाले दीवे सो० सोना के था० थाल रु० रूपा के था० थाल सो० सोना रूपाके था० थाल प० पगात धो० आयना म० मल्लक भाजन

सूत्र. अट्ठजुगाइं, जुग्गप्पवराइं, एवं सिवियाओ संदमाणीओ, एवं गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं, अट्ठरहे पारिजाणीए; अट्ठरहे संगामिए अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठगामे गामप्पवरे (दस कुलसाहस्सि- एणं गामेणं) अट्ठदासे दासप्पवरे, एवं दासीओ, एवं किंकरे, एवं कंचुइज्जे, एवं

आठ रूपे की सांकलवाले दीपक, आठ सोने रूपे की मीली सांकलवाले दीपक, आठ २ सोने, रूपे व सोने रूपे के ऊंचे दण्डवाले दीपक, सोने के, रूपे के, व सोने रूपे के आठ २ पिंजरवाले दीपक. आठ सुवर्ण के थाल, आठ रूपे के थाल, आठ सुवर्ण रूपे के थाल, आठ सुवर्ण पात्र, आठ रूपे के पात्र, आठ सुवर्ण रूपे के पात्र आठसुवर्ण, की आरसी के आकारवाले पात्र, आठ रूपेकी आरसी के आकारवाले पात्र. और आठ सुवर्ण रूपे की आरसी के आकारवाले पात्र, आठ सोने के मल्लक [भाजन] आठ रूपे के मल्लक, आठ सोने,

शब्दार्थ करानेवाली प० मंडन कराने वाली चं० चंदन पीसने वाली चु० चूर्णपीसने वाली की० क्रीडा कराने वाली द० हास्य कराने वाली उ० आसनपे बैठाने वाली ना० नृत्य करने वाली को० कौटुम्बिक की स्त्रीयों म० रसोई बनाने वाली भं० भंडार रखने वाली अ० बालक रखने वाली पु० पुष्पधारक पा० पान

सूत्र खज्जाओ जहा उववाइए,जाव अट्ठपारिसीओ,अट्ठछत्ते,अट्ठछत्तधारीओ चेडीओ,अट्ठचामराओ,अट्ठचामरधारीओ चेडीओ, अट्ठतालियंट अट्ठतालियंटधारीओ चेडीओ अट्ठकरोडियधारीओ चेडीओ, अट्ठखीरधाईओ, जाव अट्ठ अंकधाईओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ, अट्ठण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ चंदणपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ, अट्ठ कीडाकारीओ,अट्ठ दवकारीओ, अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ, अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणिसिणीओ, अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ

भावार्थ की आठ २ धायमाताओं, आठ अंग मर्दन करनेवाली दासियों, आठ उन्मर्दिका दासियों, आठ स्नान करानेवाली दासियों, आठ शृंगार करानेवाली दासियों, आठ गंध चूर्ण पीसनेवाली दासियों, आठ क्रीडा करानेवाली दासियों, हसानेवाली आठ दासियों, आसन नजदिक रहनेवाली आठ दासियों, नृत्य करनेवाली आठ दासियों, आठ आज्ञानुसार करनेवाली दासियों, आठ रसोइ बनानेवाली, आठ भंडार रक्षक, बालक को रखनेवाली आठ दासियों, पुष्पों धारन करानेवाली आठ दासियों, पानी का रक्षण करनेवाली

जा० यावत् पा० पारिसी छ० छत्र छ० छत्रधारक चे० दासी चा० चामर चा० चामरधरनेवाली चे० दासा ता० वीझणा ता० वीझणा धरने वाली चे० दासी क० तांबूल धरने वाली अ० आठ खी० क्षीरधात्री जा० यावत् अ० आठ अं० अंकधात्री म० मर्दन करने वाली उ० बहुत मर्दन करने वाली ण्हा० स्नान

सोवण्णियाओ कवाचियाओ ३, अट्ठसोवण्णमए अपवडए, अट्ठसोवण्णियाओ अवक्काओ ३, अट्ठसोवण्णियाए पायपोढए ३, अट्ठसोवण्णियाओ भिसियाओ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लंके ३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ ३, अट्ठ हंसासणाइ, कौंचासणाइं, एवं गरुडासणाइं, उण्णतासणाइं, पणयासणाइं, दीहासणाइं, भद्दासणाइं, अट्ठपक्खासणाइं, मकरासणाइं, अट्ठपउमासणाइं, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ठ तेलसमुग्ग जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठ सरिसवसमुग्गे, अट्ठ

आठ अवनत आसन, आठ दीर्घासन, आठ भद्रासन, आठ पक्षासन, आठ मकरासन, आठ पद्मासन, आठ दिशा स्वस्तिकासन, आठ सुगंधि तेल के भाजन वगैरह रायप्रसेणीमें कहे मुजब (पत्रिवाहक, एलिपेके पात्र, हरताल के पात्र, हिंगूल के पात्र, मनःशिला के पात्र, अंजन के पात्र) यावत् सरसव के पात्र, आठ खोजे, आठ २ अठारह देश की दासियों, आठ छत्र, आठ छत्र धारन करनेवाली दासियों, आठ पंखे, आठ पंखे धारन करनेवाली दासियों, आठ पानदान, पानदान धारक आठ दासियों, पांच प्रकार

शब्दार्थ

॥ ३६ ॥ त० तब से० वह म० महाबल कु० कुमारने ए० एक २ भ० भार्या को ए० एक २ हि० हिरण्य क्रोड सु० सुवर्ण क्रोड दे० दिया ए० एक २ म० मुकुट प० श्रेष्ठ द० दिया ए० ऐसे ही तं० वैसे ही जा० यावत् ए० एक २ पे० प्रेषण करने वाली द० दी अ० अन्य सु० बहुत हि० हिरण्य सु० सुवर्ण जा० यावत् प० विभाग करने को त० तब से० वह म० महाबल कुमार उ० उपर पा० प्रासाद में रहा हुवा ज० जैसे ज० जमाली वि० विचरता है ॥ ३७ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में वि० विमल अ० अरिहंत के प० प्रशिष्य ध० धर्मघोष अ० अनगार जा० जाति संपन्न व० वर्णन युक्त ज० जैसे के० केशिस्वामी

सूत्र

कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ ॥ एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ ॥ अण्णंच सुबहुं हिरण्णंवा सुवण्णंवा जाव परिभाएउं ॥ तएणं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली विहरइ ॥ ३७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे णामं अणगारे जाइसंपण्णे वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव

भावार्थ

उन में से महाबल कुमारने उन आठों भार्याओं को एक २ हिरण्य क्रोड, एक २ सुवर्ण क्रोड, एक २ श्रेष्ट मुकुट यावत् एक २ प्रेषणकारी दीया. और सात पीढी तक अन्य को देते व भोगते भी खूटे नहीं इतना हिरण्य वगैरह दिया. इसतरह महाबल कुमार जमाली जैसे प्रासाद पर भोग भोगता हुवा विचरता था ॥ ३७ ॥ उस काल उस समय में जाति संपन्न कुल संपन्न वगैरह केशीस्वामी जैसे गुणोंवाले धर्मघोष नामक अनगार

शब्दार्थ धरने वाली व० बलीकर्म करने वाली से० शय्या करने वाली अ० आभ्यंतर प० परिचारिका वा० बाहिर की प० परिचारिका मा० माला करने वाली प० प्रेषण करने वाली अ० अन्य सु० बहुत हि० हिरण्य सु० सुवर्ण कं० कांस्य दू० वस्त्र वि० विपुल ध० धन कनक जा० यावत् सं० प्रधान सा० धन अ० देवे जा० यावत् आ० सातवा कु० कुलवंश प० प्रकाम दा० देने को प० भोगने को प० विभाग करने को

सूत्र

अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फाधारिणीओ अट्ठ पाणधारिणीओ, अठ बलिकारियाओ, अट्ठ सेज्जाकारिओ, अट्ठ अब्भिंतरियाओ, पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अण्णेच सुबहु हिरण्णंवा सुवण्णंवा, कंसंवा, दूसंवा, विउलधणकणग जाव संत सावदेज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं परिभोत्तुं परिभाएउं ॥ २६ ॥ तएणं से महब्बले

आठ दासियों, बलपराक्रम करनेवाली आठ दासियों, शैय्या बिछानेवाली आठ दासियों, गुप्त कार्य करनेवाली आठ दासियों, बाह्य कार्य करनेवाली आठ दासियों, माला बनानेवाली आठ दासियों, आठ प्रेषण करनेवाली वगैरह और इस सिवाय अन्य बहुत हिरण्य सुवर्ण, कांस्य, वस्त्र, और विपुल धन, कनक, यावत् प्रधान द्रव्य वगैरहका प्रीति दान दीया कि जो सात वंश तक अन्य को देते व स्वयंभोगते खूटे नहीं॥२६॥

शब्दार्थ

॥ ३६ ॥ त० तब से० वह म० महाबल कु० कुमारने ए० एक २ भ० भार्या को ए० एक २ हि० हिरण्य क्रोड सु० सुवर्ण क्रोड द० दिया ए० एक २ म० मुकुट प० श्रेष्ठ द० दिया ए० ऐसे ही तं० तैसे ही जा० यावत् ए० एक २ पे० प्रेषण करने वाली द० दी अ० अन्य सु० बहुत हि० हिरण्य सु० सुवर्ण जा० यावत् प० विभाग करने को त० तब से० वह म० महाबल कुमार उ० उपर पा० प्रासाद में रहा हुवा ज० जैसे ज० जमाली वि० विचरता है ॥ ३७ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में वि० विमल अ० अरिहंत के प० प्रशिष्य ध० धर्मघोष अ० अनगार जा० जाति संपन्न व० वर्णन युक्त ज० जैसे के० केशिस्वामी

सूत्र

कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ ॥ एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ ॥ अण्णंच सुबहुं हिरण्णंवा सुवण्णंवा जाव परिभाएउं ॥ तएणं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली विहरइ ॥ ३७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे णामं अणगारे जाइसंपण्णे वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव

भावार्थ

उन में से महाबल कुमारने उन आठों भार्याओं को एक २ हिरण्य क्रोड, एक २ सुवर्ण क्रोड, एक २ श्रेष्ठ मुकुट यावत् एक २ प्रेषणकारी दीया. और सात पीढी तक अन्य को देते व भोगते भी खूटे नहीं इतना हिरण्य वगैरह दिया. इसतरह महाबल कुमार जमाली जैसे प्रासाद पर भोग भोगता हुवा विचरता था ॥ ३७ ॥ उस काल उस समय में जाति संपन्न कुल संपन्न वगैरह केशीस्वामी जैसे गुणोंवाले धर्मघोष नामक अनगार

शब्दार्थ धरने वाल व० बलीकर्म करने वाली से० शय्या करने वाली अ० आभ्यंतर प० परिचारिका बा० बाहिर की प० परिचारिका मा० माला करने वाली पे० प्रेषण करने वाली अ० अन्य सु० बहुत हि० हिरण्य सु० सुवर्ण कं० कांस्य दू० वस्त्र वि० विपुल ध० धन कनक जा० यावत् सं० प्रधान सा० धन अ० देवे जा० यावत् आ० सातवा कु० कुलवंश प० प्रकाम दा० देने को प० भोगने को प० विभाग करने को

सूत्र अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फाधारिणीओ अट्ठ पाणधारिणीओ, अठ बलिकारियाओ, अट्ठ सेज्जाकारिओ, अट्ठ अब्भिंतरियाओ, पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अण्णेच सुबहुं हिरण्णंवा सुवण्णंवा, कंसंवा, दूसंवा, विउलधणकणग जाव संत सावदेज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पंकामं दाउं पकामं परिभोत्तुं परिभाएउं ॥ २६ ॥ तएणं से महव्वले

आठ दासियों, बलपराक्रम करनेवाली आठ दासियों, शैय्या बिछानेवाली आठ दासियों, गुप्त कार्य करने-वाली आठ दासियों, बाह्य कार्य करनेवाली आठ दासियों, माला बनानेवाली आठ दासियों, आठ प्रेषण करनेवाली वगैरह और इस सिवाय अन्य बहुत हिरण्य सुवर्ण, कांस्य, वस्त्र, और विपुल धन. कनक, यावत् प्रधान द्रव्य वगैरह का प्रीति दान दीया कि जो सात वंश तक अन्य को देते व स्वयं भोगते खूटे नहीं॥२६॥

शब्दार्थ कुमार का तं० उस म० बहुत ज० मनुष्य. शब्द ज० मनुष्य का समूह ए० ऐसे ज० जैसे ज० जमाली त० तैसे वि० जानकर त० तैसे कं० कंचुकी पु० पुरुषों को म० बोलाकर कं० कंचुकी पु० पुरुषोंने त० वैसे ही अ० कहा ण० विशेष ध० धर्मघोष अ० अनगार का आ० आगमन ग० जाना वि० निश्चय किया क० करतल जा० यावत् णि० नीकले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय वि० विमल अ० अरिहंत प० प्रशिष्य ध० धर्मघोष अ० अनगार से० शेष तं० तैसे जा० यावत् सो० वह भी त० तैसे र० श्रेष्ट रथ से

सूत्र तहेव कंचुइज्जपुरिसे सद्दावेइ, कंचुइज्ज पुरिसो तहेव अक्खाइ, णवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव णिग्गच्छइ ॥ एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहओ पउप्पए धम्मघोसे णामं अणगारे सेसं तंचेव जाव सोवि तहेव रहवरेण णिग्गच्छइ, धम्मकहा जहा केसिसामिस्स सोवि तहेव अम्मापियरं आपुच्छइ, णवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ

भावार्थ अन्य से पूछकर हाथ जोडकर कहने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! श्री विमलनाथ अरिहंत के प्रशिष्य श्री धर्मघोष नामक अनगार पांच सो साधु के परिवार सहित तप संयम से आत्मा को भावते हुवे विचरते हैं. इस तरह वृत्तान्त सुनकर जमाली जैसे रथारूढ होकर महाबल कुमार नीकले. धर्मकथा श्रवण की, और मातपिता की आज्ञा लेकर धर्मघोष अनगारकी पास दीक्षा अंगीकार की. इसमें विशेषता इतनी कि

शब्दार्थ जा० यावत् पं० पांच अ० अनगार स० सो की स० साथ सं० परवरेहुवे पु० पूर्वानुपूर्वी च० चलते हुए गा० ग्रामानुग्राम दु० विचरते हुवे जे० जहां ह० हस्तिनापुर न० नगर जे० जहां स० सहस्त्रवन उ० उद्यान ते० वहां उ० आकर अ० यथा प्रतिरूप उ० अवग्रह उ० याचकर सं० संयम त० तप से अ० आत्माको भा० विचारते जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ ३८ ॥ त० तब ह० हस्तिनापुर न० नगर में सिं० शृंगाटक ति० त्रिक जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपासना करने लगी. त० तब त० उस म० महाबल कु०

सूत्र पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहसंववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हइत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे जाव विहरइ ॥३८॥ तएणं हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडगतिय जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ तएणं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दंवा जणवूहंवा एवं जहेव जमाली तहेव चिन्ता

५०० साधुओं के परिवार से ग्रामानुग्राम विचरते हुवे हस्तीनापुर नगर के सहस्त्रवन उद्यान में यथोक्त अवग्रह याचकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ ३८ ॥ उस समय में शृंगाटकाकार मार्गमें यावत् महान रस्ते पर ऐसा वार्तालाप होने लगा यावत् परिषदा पर्युपासना करने लगी. उस समय में महाबल कुमारने ऐसा शब्द सुनकर जमाली की तरह कंचुकी पुरुषों को बोलाये और कंचुकी पुरुषों

कोः कौटुम्बिक पु॰ पुरुषों को स॰ बोलाये ए॰ ऐसे ज॰ जैसे सि॰ शिवभद्र त॰ तैसे रा॰ राज्याभिषेक भा॰ कहना जा॰ यावत् अ॰ सिंचनकर क॰ करतल म॰ महाबल कु॰ कुमार को ज॰ जय वि॰ विजय से व॰ वधाया ए॰ ऐसे व॰ बोले भ॰ कहे जा॰ पुत्र कि॰ क्या दे॰ देवे कि॰ क्या प॰ विशेष देवे से॰ शेष ज॰ जैसे ज॰ जमाली त॰ तैसे जा॰ यावत् ॥ ४० ॥ त॰ तब से॰ वह म॰ महाबल अ॰ अनगार ध॰ धर्मघोष अ॰ अनगार की अं॰ पास सा॰ सामायिकादि च॰ चउदह पु॰ पूर्व अ॰

विय पुरिसे सद्दावेइ, एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो जाव अभिसिंचइ २ त्ता करयल परिमहब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता, एवं वयासी भण जाया ! किं देमो किं पयच्छामो सेसं जहा जमालिस्स तहेव जाव ॥४०॥ तएणं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतिए सामाइयमाइ-

भद्रकुमार के अधिकार समान राज्याभिषेक की तैयारी कराइ यावत् राज्याभिषेक करके महाबल कुमार को जय विजय शब्द से वधाये और बोले कि अहो पुत्र! तुम कहो कि हम क्या देवे ? शेष सब जमालीवत् जानना ॥ ४० ॥ फीर महाबल कुमारने धर्मघोष अनगार की पास से सामायिकादि चौदह पूर्व का अध्ययन किया, चौथभक्तादि विविध प्रकार के तप किये और बारह वर्ष साधुपना पालकर एक मास की संले-

णि० नीकले ध० धर्म कथा ज० जैसे के० केशी स्वामी की सो० वह भी त० तैसे अ० माता पिताको आ० पुछकर ण० विशेष ध० धर्मघोष अ० अनगार की अं० पास मुं० मुंड भ० होकर अ० गृहवास से अ० साधुपना प० अंगीकार करने का त० तैसे ही वु० उत्तर प० प्रत्युत्तर ण० विशेष इ० ये ते० तेरी जा० पुत्र वि० बहुत रा० राजकुल बा० बालाओं क० कला से० शेष तं० तैसे जा० यावत् ता० उन अ० अकाम म० महाबल कु० कुमार को ए० ऐसे व० बोले तं० इस से इ० इच्छते हैं ते० तेरी जा० पुत्र ए० एक दि० दिवस की रा० राज्यलक्ष्मी पा० देखनेको त० तब से० वह म० महाबल कुमार अ० माता पिता के व० वचन को अ० नहीं उल्लंघते तु० मौन सं० रहा ॥ ३९ ॥ त० तब से० उन म० बलराजाने

सूत्र

अणगारियं पव्वइत्तए, तहेव वुत्त पडिवुत्तयाओ णवरं इमाओय ते जाया! विपुल राजकुल बालियाओ कला सेसं तंचेव जाव ताहे, अकामाइं चेव महव्बलं कुमारं एवं वयासी तं इच्छामो ते जाया ! एग दिवसमवि रज्जसिरिं पासेमि ॥ तएणं से महव्बले कुमारे अम्मापिउवयण मणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ३९ ॥ तएणं से बलेराया कोडुं

भावार्थ

जमाली के कथन में विपुल कुल बालिका कही है और यहां विपुल राज्यकुलोत्पन्न बालिका कहना. और अहो पुत्र ! तुम एक दिन राज्यसुख भोगवो ऐसा हम देखना चाहते हैं. महाबल कुमार मातपिता की ऐसी आज्ञा नहीं उल्लंघने से मौन रहे ॥ ३९ ॥ फीर बल राजाने कौटुम्बिक पुरुषों को बोलाये और शिव-

की ठि० स्थिति प० मरूपी से० अथ तु० तुम सु० सुदर्शन बं० ब्रह्मलोक क० देवलोक में द० दश सा० सागरोपम के दि० दीव्य भो० भोगोपभोग भुं० भोगते हुवे वि० विचरने को त० तत्पश्चात् दे० देवलोक में से आ० आयुष्यक्षय अ० अनंतर च० चवकर इ० इस वा० वाणिज्यग्राम न० नगर में से० श्रेष्टिकुल में पु० पुत्रपने प० उत्पन्न हुवा त० तब तु० तुम सु० सुदर्शन उ० मुक्त बा० बालभाव से विं विज्ञान प० परिणत से जो० यौवन को अ० प्राप्त नहीं हुवे त० तथारूप थे० स्थविर को अं० पास से.. के०

ब्वलस्सवि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ सेणं तुम्मं सुदंसणा ! बंभलोए कप्पे दससागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ॥ तओचेव देवलोगाओ आउक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियगामे णयरे सेट्ठिं कुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए ॥ तएणं तुम्मं सुदंसणा ! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णाय परिणयमेत्तेणं जोव्वणग मणुप्पत्तेणं, तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे

हुवा. वहां पर उन की दश सागरोपम की स्थिति कही. अहो सुदर्शन ! तुम पांचवे ब्रह्मदेवलोक में दश सागरोपम की स्थिति से दीव्य भोग भोगते हुवे विचरते थे. फीर आयुष्य, स्थिति व भव का क्षय होने से वहां से चवकर यहां पर वाणिज्यग्राम नगर में श्रेष्ठिकुल में पुत्रपने उत्पन्न हुए हो. अहो सुदर्शन ! तुमारी वाल्यावस्था मुक्त हुई है, तुम ७२ कला में प्रवीण हुए हो और यौवन अवस्था प्राप्त होवे

शब्दार्थ

पढकर ब० बहुत च० चतुर्थ जा० यावत् वि० विचित्र त० तपकर्म से अ० स्वतः को भा० विचारता ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण दु० बारह वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालकर मा० मास की सं० संलेखना से स० साठ भक्त अ० अनशन आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण सहित का० काल के अवसर में का० काल कि० करके उ० ऊर्ध्व चं० चंद्र सू० सूर्य ज० जैसे अ० अम्बड जा० यावत् बं० ब्रह्मलोक क० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न हुए त० वहां अ० कितनेक दे० देवों की द० दश सा० सागरोपम

सूत्र

याइं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ २ त्ता बहूहिं चउत्थ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरिय जहा अम्मडो जाव बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णे; तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं मह-

खना से आत्मा को झोंसकर साठ भक्त अनशन का छेदन कर आलोचना प्रतिक्रमण कर काल के अवसर में काल कर जैसे अम्बड सन्यासी ऊंचे चंद्र सूर्य में उत्पन्न हुवा वैसे ही पांचवे ब्रह्मदेवलोक में ÷ उत्पन्न

÷ पूर्वधर जघन्य छठे देवलोक मे उत्पन्न होते हैं और यहां पांचवे देवलोक में उत्पन्न होने का कहा है. इस से यहां पर मरण समय में पूर्व का विस्मरण होने का संभव है.

अर्थ

त० तैने अ० आवरणीय कर्म के ख० क्षयोपशम से ई० विचारणा म०मार्ग की ग०गवेषणा क० करते हुए स० संज्ञी पु० पूर्वजाति स० स्मरण स० उत्पन्न हुवा ए० इस अ० अर्थ को स० सम्यक् प्रकार से स० अच्छा जाना ॥ ४२ ॥ त० तब ते० उन सु० सुदर्शन से० श्रेष्ठि स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर सं० स्मरण कराया पु० पूर्वभव दु० दुगुना स० श्रद्धा सं०संवेग आ०आनंद सं० संपूर्ण न० नयन स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को ति० तीन वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोले

सूत्र

ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सण्णी पुव्वजाईसरणे समुप्पण्णे एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति ॥ ४२ ॥ तएणं ते सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारिय पुव्वभवे दुगुणाणिय सड्ढसंवेगे आणंदसंपुण्णणयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आ २ वंदति णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी एवमेतं भंते! जाव से जहेयं

भावार्थ

व शुभ परिणाम मे धारन करने से आवरण रूप कर्म का क्षय किया, विचारणा करते हुवे संज्ञीरूप जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुवा और इस से भगवंत श्री महावीर स्वामीने जो कथन किया था इस को सम्यक् प्रकार से जानने लगा ॥ ४२ ॥ श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामीने सुदर्शन श्रेष्ठि को पूर्व भव कहा जिससे वह दुगुनी श्रद्धा व संवेगवाला हुवा, आनंद से परिपूर्ण हुवा और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करके बोलने लगा कि अहो भगवन्! जो आप कहते हैं. वह ऐसाही है यों कहकर उत्तर

केवली प॰ प्ररूपित ध॰ धर्म नि॰ सुना से॰ वही ध॰ धर्म इ॰ इच्छा प॰ विशेष इच्छा अ॰ रुचि की सु॰ अच्छा तु॰ तुम सु॰ सुदर्शन इ॰ अभी क॰ करते हो ते॰ इसलिये सु॰ सुदर्शन ए॰ ऐसा वु॰ कहा जाता है अ॰ है प॰ पल्योपम सा॰ सागरोपम का ख॰ क्षय अ॰ अपचय ॥ ४१ ॥ त॰ तब त॰ उस सु॰ सुदर्शन से॰ श्रेष्ठि स॰ श्रमण भ॰ भगवंत म॰ महावीर की अं॰ पास ए॰ यह अ॰ अर्थ सो॰ सुनकर णि॰ अवधारकर सु॰ शुभ अ॰ अध्यवसाय से सु॰ शुभ प॰ परिणाम से ले॰ लेश्या भी मु॰ शुद्ध करते

णिसंते, सेवियसे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए तं सुट्ठुणं तुम्मं सुदंसणा! इदाणिं विकरेंति, से तेणट्ठेणं सुदंसणा! एवं वुच्चइ अत्थिणं एतेसिं पलिओवम सागरोवमाइं खएइवा अवचएइवा ॥ ४१ ॥ तएणं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेस्सा विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं

हो, तथारूप स्थविर की पास से केवली प्ररूपित धर्म तुमने सुना है; इस से तुम को ऐसा धर्म की इच्छा, प्रतीच्छा, रुचि व अभिरुचि हुई है. और अद्यापि पर्यंत भी ऐसा धर्म करते हो. अब अहो सुदर्शन! इसलिये ऐसा कहा गया है कि पल्योपम व सागरोपम का क्षय व अपचय होता है ॥ ४१ ॥ सुदर्शन श्रेष्ठिने श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास से ऐसा अर्थ सुनकर अवधार कर शुभ अध्यवसाय व

शब्दार्थ

शंखवन चे० उद्यान व० वर्णन युक्त त० वहां आ० आलंभिका न० नगरी में ब० बहुत इ० ऋषिभद्र पुत्र प० प्रमुख स० श्रमणोपासक प० रहते थे अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत अ० जाने हुवे जी० जीव अजीव जा० यावत् वि० विचरते थे ॥ १ ॥ त० तब ते० उन स० श्रमणोपासकों को अ० एकदा ए० एकत्रित स० मीले हुवे स० साथ स० बैठे हुवे अ० यह ए० ऐसा मि० परस्पर क० कथा अ० अध्यवसाय स० उत्पन्न हुवा दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की कं० कितने काल की ठि० स्थिति प० कही त० तब इ० ऋषिभद्र पुत्र स० श्रमणोपासक दे० देवस्थिति ग० जानी हुई ते० उन स०

सूत्र

वण्णओ, तत्थणं आलंभिया णयरीए बहवे इसिभद्दपुत्तप्पमोक्खा समणोवासगा परिवसंति, अड्ढे जाव अपरिभूए, अभिगय जीवा जीवा जाव विहरंति ॥ १ ॥ तएणं तेसिं समणोवासयाणं अण्णदा कयायि एगयओ समुवागयाणं सहियाणं समुविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था, देवलोए-सुणं अज्जो देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? तएणं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देव

भावार्थ

समय में आलंभिका नामक नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ जैसे जानना. उस की ईशान कौन में शंखवन नामक उद्यान था. उस आलंभिका नगरी में ऋषिभद्र पुत्र प्रमुख बहुत श्रमणोपासक ऋद्धिवाले यावत् अपरिभूत व जीवाजीव के स्वरूप जाननेवाले रहते थे ॥ १ ॥ एकदा वे श्रमणोपासक मीलकर बैठे हुवे थे

शब्दार्थ

ए० ऐसे ए० यह भं० भगवन् जा० यावत् ज० जैसे तु० तुम व० कहते हो त्ति० ऐसा क० करके उ० ईशान कौन में अ० गया से० शेष ज० जैसे उ० ऋषभदत्त जा० यावत् स० सब दु० दुःख प० रहित ण० विशेष च० चतुर्दश पु० पूर्वका अ० अध्ययन किया व० वहुत प० पूर्ण दु० बारहवर्ष सा० साधुपना पा० पालकर से० शेष तं० तैसे से० वैसे ही भं० पूज्य म० महावल म० समाप्त ॥ ११ ॥ ११ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में आ० आलंभिका ण० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त सं०

सूत्र

तुज्झे वदहत्तिकट्टु उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ । सेसं जहा उसभदत्तस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणं णवरं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, वहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ सेसं तंचेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ महव्वलो सम्मत्तो ॥ एगारस सयस्सय एगारसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ ११ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं आलंभिया णामं णयरी होत्था वण्णओ संखवणे चेइए

भावार्थ

पूर्व (ईशान) कौन में गया, वहां जाकर शेष सब ऋषभदत्त ब्राह्मण समान दीक्षा धारन कर कर्म का क्षय कर मुक्ति प्राप्त की वगैरह कहना. विशेष में इतना कि चौदह पूर्व का अध्ययन किया, बारह वर्ष संयम पाला. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह महावल का आधिकार संपूर्ण हुवा. यह अग्यारहवा शतक का अग्यारहवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ११ ॥ ११ ॥ ० ० ०

अग्यारहवे उद्देशे में काल का स्वरूप कहा अब आगे काल के भांगांतर कहते हैं. उस काल उस

पदार्थ — शंखवन चे० उद्यान व० वर्णन युक्त त० वहां आ० आलंभिका न० नगरी में ब० बहुत इ० ऋषिभद्र पुत्र प० प्रमुख स० श्रमणोपासक प० रहते थे अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत अ० जाने हुवे जी० जीव अजीव जा० यावत् वि० विचरते थे ॥ १ ॥ त० तब ते० उन स० श्रमणोपासकों को अ० एकदा ए० एकत्रित स० मीले हुवे स० साथ स० बैठे हुवे अ० यह ए० ऐसा पि० परस्पर क० कथा अ० अध्यवसाय स० उत्पन्न हुवा दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की कं० कितने काल की ठि० स्थिति प० कही त० तब इ० ऋषिभद्र पुत्र स० श्रमणोपासक दे० देवस्थिति ग० जानी हुई ते० उन स०

सूत्र — वण्णओ, तत्थणं आलंभिया णयरीए बहवे इसिभद्दपुत्तप्पमोक्खा समणोवासगा परिवसंति, अड्ढे जाव अपरिभूए, अभिगय जीवा जीवा जाव विहरंति ॥ १ ॥ तएणं तेसिं समणोवासयाणं अण्णदा कयायि एगयओ समुवागयाणं सहियाणं समुविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था, देवलोए-सुणं अज्जो देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? तएणं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देव

भावार्थ — समय में आलंभिका नामक नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ जैसे जानना. उस की ईशान कौन में शंखवन नामक उद्यान था. उस आलंभिका नगरी में ऋषिभद्र पुत्र प्रमुख बहुत श्रमणोपासक ऋद्धिवाले यावत् अपरिभूत व जीवाजीव के स्वरूप जाननेवाले रहते थे ॥ १ ॥ एकदा वे श्रमणोपासक मीलकर बैठे हुवे थे

शब्दार्थ

ए० ऐसे ए० यह भं० भगवन् जा० यावत् ज० जैसे तु० तुम व० कहते हो त्ति० ऐसा क० करके उ० ईशान कौन में अ० गया से० शेष ज० जैसे उ० ऋषभदत्त जा० यावत् स० सब दु०दुःख प० रहित ण० विशेष च० चतुर्दश पु० पूर्वका अ० अध्ययन किया ब० बहुत प० पूर्ण दु० बारहवर्ष सा० साधुपना पा० पालकर से० शेष तं० तैसे से० वैसे ही भं० पूज्य म० महावल म० समाप्त ॥ ११ ॥ ११ ॥

ते० उस का० काल ते० उस स० समय में आ० आलंभिका ण० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त सं०

सूत्र

तुज्झे वदहत्तिकट्टु उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ । सेसं जहा उसभदत्तस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणं णवरं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, वहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ सेसं तंचेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ महव्वलो सम्मत्तो ॥ एगारस सयस्सय एगारसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ ११ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं आलंभिया णामं णयरी होत्था वण्णओ संखवणे चेइए

भावार्थ

पूर्व (ईशान) कौन में गया, वहां जाकर शेष सब ऋषभदत्त ब्राह्मण समान दीक्षा धारन कर कर्म का क्षय कर मुक्ति प्राप्त की वगैरह कहना. विशेष में इतना कि चौदह पूर्व का अध्ययन किया, बारह वर्ष संयम पाला. अहो भगवन्! आप के वचन सत्य हैं. यह महावल का अधिकार संपूर्ण हुवा. यह अग्यारहवा शतक का अग्यारहवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ११ ॥ ११ ॥ ० ० ०

अग्यारहवे उद्देशे में काल का स्वरूप कहा अब आगे काल के भांगांतर कहते हैं. उस काल उस

शब्दार्थ — शंखवन चे० उद्यान व० वर्णन युक्त त० वहां आ० आलंभिका न० नगरी में ब० बहुत इ० ऋषिभद्र पुत्र प० प्रमुख स० श्रमणोपासक प० रहते थे अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत अ० जाने हुवे जी० जीव अजीव जा० यावत् वि० विचरते थे ॥ १ ॥ त० तब ते० उन स० श्रमणोपासकों को अ० एकदा ए० एकत्रित स० मीले हुवे स० साथ स० बैठे हुवे अ० यह ए० ऐसा मि० परस्पर क० कथा अ० अध्यवसाय स० उत्पन्न हुवा दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की कं० कितने काल की ठि० स्थिति प० कही त० तब इ० ऋषिभद्र पुत्र स० श्रमणोपासक दे० देवस्थिति ग० जानी हुई ते० उन स०

सूत्र — वण्णओ, तत्थणं आलंभिया णयरीए बहवे इसिभद्दपुत्तप्पमोक्खा समणोवासगा परिवसंति, अड्ढे जाव अपरिभूए, अभिगय जीवा जीवा जाव विहरंति ॥ १ ॥ तएणं तेसिं समणोवासयाणं अण्णदा कयायि एगयओ समुवागयाणं सहियाणं समुविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था, देवलोएसुणं अज्जो देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? तएणं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देव

भावार्थ — समय में आलंभिका नामक नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ जैसे जानना. उस की ईशान कौन में शंखवन नामक उद्यान था. उस आलंभिका नगरी में ऋषिभद्र पुत्र प्रमुख बहुत श्रमणोपासक ऋद्धिवाले यावत् अपरिभूत व जीवाजीव के स्वरूप जाननेवाले रहते थे ॥ १ ॥ एकदा वे श्रमणोपासक मीलकर बैठे हुवे थे

शब्दार्थ

ए० ऐसे ए० यह भं० भगवन् जा० यावत् ज० जैसे तु० तुम व० कहते हो त्ति० ऐसा क० करके उ० ईशान कौन में अ० गया से० शेष ज० जैसे उ० ऋषभदत्त जा० यावत् स० सब दु०दुःख प० रहित ण० विशेष च० चतुर्दश पु० पूर्व का अ० अध्ययन किया व० बहुत प० पूर्ण दु० बारहवर्ष सा० साधुपना पा० पालकर से० शेष तं० तैसे से० वैसे ही भं० पूज्य म० महाबल म० समाप्त ॥ ११ ॥ ११ ॥

ते० उस का० काल ते० उस स० समय में आ० आलंभिका ण० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त सं०

सूत्र

तुज्झे वदहत्तिकट्टु उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ । सेसं जहा उसभदत्तस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणं णवरं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ सेसं तंचेव ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ महब्बलो सम्मत्तो ॥ एगारस सयस्सय एगारसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ ११ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं आलंभिया णामं णयरी होत्था वण्णओ संखवणे चेइए

भावार्थ

पूर्व (ईशान) कौन में गया, वहां जाकर शेष सब ऋषभदत्त ब्राह्मण समान दीक्षा धारन कर कर्म का क्षय कर मुक्ति प्राप्त की वगैरह कहना. विशेष में इतना कि चौदह पूर्व का अध्ययन किया, बारह वर्ष संयम पाला. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह महाबल का अधिकार संपूर्ण हुवा. यह अग्यारहवा शतक का अग्यारहवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ११ ॥ ११ ॥ ० ० ०

अग्यारहवे उद्देशे में काल का स्वरूप कहा अब आगे काल के भांगांतर कहते हैं. उस काल उस

पदार्थ

शंखवन चे० उद्यान व० वर्णन युक्त त० वहां आ० आलंभिका न० नगरी में ब० बहुत इ० ऋषिभद्र पुत्र प० प्रमुख स० श्रमणोपासक प० रहते थे अ० ऋद्धिवंत जा० यावत् अ० अपरिभूत अ० जाने हुवे जी० जीव अजीव जा० यावत् वि० विचरते थे ॥ १ ॥ त० तब तें० उन स० श्रमणोपासकों को अ० एकदा ए० एकत्रित स० मीले हुवे स० साथ स० बैठे हुवे अ० यह ए० ऐसा मि० परस्पर क० कथा अ० अध्यवसाय स० उत्पन्न हुवा दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की कं० कितने काल की ठि० स्थिति प० कही त० तब इ० ऋषिभद्र पुत्र स० श्रमणोपासक दे० देवस्थिति ग० जानी हुई ते० उन स०

सूत्र

वण्णओ, तत्थणं आलंभिया णयरीए बहवे इसिभद्दपुत्तप्पमोक्खा समणोवासगा परिवसंति, अड्ढे जाव अपरिभूए, अभिगय जीवा जीवा जाव विहरंति ॥ १ ॥ तएणं तेसिं समणोवासयाणं अण्णदा कयायि एगयओ समुवागयाणं सहियाणं समुविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था, देवलोएसुणं अज्जो देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? तएणं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देव

भावार्थ

समय में आलंभिका नामक नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ जैसे जानना. उस की ईशान कौन में शंखवन नामक उद्यान था. उस आलंभिका नगरी में ऋषिभद्र पुत्र प्रमुख बहुत श्रमणोपासक ऋद्धिवाले यावत् अपरिभूत व जीवाजीव के स्वरूप जाननेवाले रहते थे ॥ १ ॥ एकदा वे श्रमणोपासक मीलकर बैठे हुवे थे

शब्दार्थ

श्रमणोपासक को ए० ऐसे व० बोले दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की ज० जघन्य द० दश वा० वर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति प० प्ररूपी ते० उस पीछे स० समयाधिक दु० दो स० समयाधिक जा० यावत् द० दश समयाधिक सं० संख्यात स० समयाधिक अ० असंख्याता स० समयाधिक उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ते० उस पीछे वो० नष्ट दे० देव दे० देवलोक ॥२॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक इ० ऋषिभद्र पुत्र स० श्रमणोपासक को ए०ऐसा आ०कहते जा० यावत्

सूत्र

ट्ठिई गहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी देवलोएसु णं अज्जो! देवाणं जहण्णेणं दसवास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता, तेणपरं समयाहिया दुसमयाहिया जाव दससमयाहिया संखेज्जसमयाहिया असंखेज्जसमयाहिया उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमट्ठिई पण्णत्ता, तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय ॥ २ ॥ तएणं ते समणोवासगा इसि-

उन में परस्पर ऐसा वार्तालाप हुवा कि अहो आर्यो ! देवलोक में देवताओं की कितनी स्थिति कही ? उस समय में देव स्थिति के जाननेवाले ऋषिभद्र पुत्र नामक श्रमणोपासकने कहा कि अहो आर्यो ! देवलोक में देवों की जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति कही और इस में एक समय, दो समय यावत् दश समय संख्यात, असंख्यात समय अधिक होते २ उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही. इस से आगे देवलोक में देवता की स्थिति का विच्छेद होता है ॥२॥ उस समय में उक्त श्रमणोपासकने ऋषिभद्र पुत्र श्रम-

शब्दार्थ

ए० ऐसा प० प्ररूपते ए० यह अ० अर्थ णो० नहीं स० श्रद्धते हैं णो० नहीं प० प्रतीति करते हैं णो० नहीं रो० रुचि करते हैं ए० यह अ० अर्थ अ० नहीं श्रद्धते अ० नहीं प्रतीति करते अ० नहीं रुचि करते जा० जिसदिशि से पा० आये ता० उस दि० दिशी में प० पीछे गये ॥ ३ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर जा० यावत् स० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पर्युपासना की ॥ ४ ॥ त० तब स० श्रमणोपासक इ० इस क० कथा ल० प्राप्त हुई ह० हृष्ट तु०

सूत्र

भद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं णो सद्दहंति, णोपत्तियंति, णो रोयंति. एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ ३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे, जाव परिसा पज्जुवासइ ॥४॥ तएणं ते समणो-

भावार्थ

णोपासक के कथन पर श्रद्धा प्रतीति व रुचि की नहीं. और इस तरह श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं करते हुवे जिस दिशा में से आये थे उसी दिशा में पीछे गये ॥ ३ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उस आलंभिका नगरी में पधारे. परिषदा वंदने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई ॥ ४ ॥ उस समयमें वहां के श्रमणोपासकोंने भगवंत श्रीमहावीर स्वामी के पधारनेकी वार्ता सुनी, और बहुत हर्षित

दार्थ

तुष्ट ए० ऐसे ज० जहां तुं० तुंगिया का उ० उद्देशा जा० यावत् ण० नमस्कार कीया ॥ ५ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० उन म० श्रमणोपासकों को ती० उस म० वडी ध० धर्मकथा जा० यावत् आ० आराधक भ० होता है ॥ ६ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर णि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट उ० उठकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना ण० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे

मूत्र

वासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठा एवं जहा तुंगियोद्देसए जाव णमंसंति ॥ ५ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसेय महइ धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ ॥ ३ ॥ तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु भंते! इसिभद्द

यावत् आनंदित हुवे वगैरह जैसे तुंगिया नगरी के श्रावकों का कथन किया वैसे ही यहांपर कथन जानना॥५॥उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने उस महती परिषदा में धर्मोपदेश सुनाया यावत् आज्ञा का आराधक होता है वहां तक कहना ॥ ६ ॥ भगवंत श्री महावीर स्वामी से ऐसा धर्मोपदेश सुनकर श्रावक बहुत हर्षित हुवे और उठकर वंदना नमस्कार करने लगे. फीर वंदना नमस्कार कर बोलने लगे कि अहो भग-

शब्दार्थ

भं० भगवन् इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक अ० हम को ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ए० ऐसा प० प्ररूपते हैं दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों की ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति प० प्ररूपी ते० इस से स० समयाधिक जा० यावत् ते० इस मे वो० विच्छेद दे० देव दे० देवलोक से० अथ क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे अ० आर्य स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले जं० जो अ० आर्य इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक तु०

सूत्र

पुत्ते समणोवासए अम्हं एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ देवलोएसुणं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता, तेणपरं समयाहिया जाव तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय ॥ से कहमेयं भंते ! एवं ? अज्जोत्ति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी जंणं अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुज्झं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ देवलोगेसुणं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिई

भावार्थ

वन् ! ऋषिभद्र पुत्र नामक श्रमणोपासक हम को ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि अहो आर्यों ! देवलोक में देवताओं की जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति कही है पीछे एक दो यावत् दश, संख्यात असंख्यात समय की वृद्धि करते उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही है. बाद में स्थिति का विच्छेद होता है. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बोले कि अहो आर्यों ! ऋषिभद्रपुत्र

पदार्थ

तुम को ए० ऐसा आ० कहते हैं दे० देवलोक में अ० आर्य दे० देवों को ज० जघन्य द० दश वा० वर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति प० प्ररूपी तं० वैसे ही स० समयाधिक जा० यावत् ते० इस से प० आगे वो० विच्छेद दे० देव दे० देवलोक स० सत्य ए० यह अ० अर्थ ॥ ७ ॥ अ० मैं पु० पुनः अ० आर्य पूर्ववत् ॥ ८ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० पास से ए० यह

सूत्र

पण्णत्ता, तंचेव समयाहिया जाव तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय सच्चेणं एसमट्ठे ; ॥ ७ ॥ अहं पुण अज्जो! एव माइक्खामि जाव परूवेमि, देवलोगेसुणं अज्जो! देवाणं जहण्णेणं दसवास सहस्साइं तंचेव जाव तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय सच्चेणं एसमट्ठे ॥ ८ ॥ तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति

श्रमणोपासकने जो तुम को कहा है कि देवों की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति है आगे नहीं है. यह अर्थ सत्य है ॥ ७ ॥ अहो आर्यों ! मैं भी वैसा ही कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि देवलोक में देवताओं की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही आगे स्थिति का विच्छेद होता है ॥ ८ ॥ फीर उक्त श्रमणोपासक श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीकी पास से ऐसा अर्थ सुनकर अवधार कर भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऋषिभद्र पुत्र

शब्दार्थ अ० अर्थ सो० सुनकर णि० अवधारकर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर जे० जहां इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक ते० वहां उ० आकर इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक को वं० वंदना की ण० नमस्कार किया ए० इस अ० अर्थ स० सम्यक् वि० विनय से भु० वारंवार खा० खमाया ॥ ९ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक प० प्रश्न पु० पुछकर अ० अर्थ प० ग्रहण कर स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर जा० जिस दि० दिशि से पा० आये ता० उस दिशि में प० पीछे गये ॥ १० ॥ भं० पूज्य भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण

सूत्र वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता, इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति णमंसंति एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति ॥ ९ ॥ तएणं ते समणोवासगा पसिणाइं पुच्छंति २ त्ता, अट्ठाइं परियादियंति २ त्ता, समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ १० ॥ भंतेति ! भगवं गोयमे समणं

भावार्थ श्रमणोपासक की पास आये और उन को वंदना नमस्कार कर अपना अपराध की विनय पूर्वक क्षमा मांगी ॥ ९ ॥ फीर उन श्रमणोपासकोंने अन्य अनेक प्रश्न पूछे, उन का अर्थ धारन किया, और श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥१०॥ उस समय में

शब्दार्थ

भ० भगवन्त को वं० वंदना कर ण० नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोले प० समर्थ इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक दे० देवानुप्रिय की अं० पास मुं० मुंड भ० होकर अ० गृहवास से अ० अनगारपना प० अंगीकार करने को गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ गो० गौतम इ० ऋषिभद्रपुत्र स० श्रमणोपासक ब० बहुत सी० शीलव्रत गु० गुणव्रत वे० विरमणव्रत प० प्रत्याख्यान पो० पौषध उ० उपवास अ० यथा प० ग्रहण किये हुवे त० तपकर्म से अ० स्वतः को भा० विचारते ब० बहुत वा० वर्ष

सूत्र

भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभूणं भंते ! इसिभद्द पुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्व- इत्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! इसिभद्दपुत्तेणं समणोवासए बहूहिं सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं

भगवान गौतम स्वामी श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन्! ऋषिभद्र पुत्र नामक श्रमणोपासक क्या आपकी पास मुंडित बनकर गृहस्थपना से साधुपना अंगीकार करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक मुंडित नहीं होवेंगे, परंतु बहुत शीलव्रत, गुण व्रत, विरमण व्रत, पौषधोपवास वगैरह ग्रहण करके तप कर्म से

पदार्थ

स० श्रमणोपासक प० पर्याय पा०पालकर मा० मास की सं० संलेखना से अ० आत्माको झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन छे० छेदकर आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण स० समाधि प्राप्त का० काल के मा० अवसर में का० कालकर सो० सौधर्म क० देवलोक में अ० अरुणाभ वि० विमान में दे० देवपने उ० उत्पन्न होगा त० उस में अ० कितनेक दे० देवों की च० चार प० पल्योपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी त० वहां इ० ऋषिभद्रपुत्र दे० देवकी च० चार प० पल्योपम की ठि० स्थिति भ० होगा ॥ ११ ॥ से०

सूत्र

अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति २ त्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति २ त्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहि छेदेइत्ता, आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालंकिच्चा, सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति ॥ तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता तत्थणं इसिभद्दपुत्तस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई

भावार्थ

आत्मा को भावते हुवे बहुत वर्ष साधु की पर्याय पालकर, एक मास की संलेखना से आत्मा को झोंसकर साठ भक्त अनशन छेदकर, आलोचना प्रतिक्रमण कर, काल के अवसर में काल कर सौधर्म देवलोक में अरुणाभ विमान में देवतापने उत्पन्न होवेंगे. वहां कितनेक देवों की चार पल्योपम की स्थिति कही है उन में ऋषिभद्र पुत्र देव की चार पल्योपम की स्थिति होगी ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! वह ऋषिभद्र पुत्र